Arya Samaj Foundation Chennai and

KERAL JYOTI 1982 G.K.V.

Gurukul Kangri Coll

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
110385

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

110385
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केरल ज्योति

RT-856
110385
16-4-82

केरल हिन्दी प्रचार सभा द्वारा फरवरी 1982 में आयोजित हिन्दी नाटक प्रतियोगिता में कुमारी रामदुलारी ने सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री का पुरस्कार प्राप्त किया । पुरस्कार प्रदानकर रहे हैं तिरुवनन्तपुरम नगर निगम के अध्यक्ष श्री फ्रेडी पेरेरा ।

केरल हिन्दी प्रचार सभा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केरल ज्योति

* प्रधान संपादक
प्रो० पी. जे. जोसफ़

* संपादक
श्री० के. जी. बालकृष्ण पिल्लै

* सह संपादक
श्री० आर. सुकुमारन नायर

* संपादक मण्डल
श्री० वी. के. गोपालन नायर
प्रो० एम. जनार्द्दनन पिल्लै
श्री० के. वी. कृष्णनकुट्टी
श्री० एम. के. वेलायुधन नायर

* विज्ञापन दर

		मासिक		वार्षिक	
आवरण पृष्ठ ४	रु.	५००	००	५०००	००
आवरण पृष्ठ २ एवं ३	रु.	४००	००	४०००	००
साधारण पृष्ठ पूरा	रु.	३००	००	३०००	००
साधारण पृष्ठ ½	रु.	१७५	००	१७५०	००
साधारण पृष्ठ ¼	रु.	१००	००	१०००	००

* पत्र व्यवहार का पता :
मंत्री,
केरल हिन्दी प्रचार सभा
तिरुवनन्तपुरम–६९५ ०१४
केरल

तार :–"जय हिन्दी"
फोन : ६१३७८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केरल ज्योति

पुष्प : १७

दल : १

अप्रैल १९८२

सांस्कृतिक जागरण की मासिक पत्रिका

संपादकीय

तृतीय विश्व हिन्दी सम्मेलन

हिन्दी जगत के लिए यह बड़े हर्ष एवं गौरव की बात है कि दिसंबर १९८२ में तृतीय विश्व हिन्दी सम्मेलन नयी दिल्ली में आयोजित हो रहा है।

तृतीय विश्व हिन्दी सम्मेलन के निम्नलिखित उद्देश्य रखे गये हैं जो सम्मेलन की गरिमा के द्योतक हैं।

(क) प्रथम और द्वितीय विश्व हिन्दी सम्मेलनों की उपलब्धियों तथा निर्णयों पर विचार करना एवं उन्हें कार्यान्वित करने केलिए ठोस कदम उठाना।

(ख) हिन्दी को राष्ट्रीय स्तर से अन्तर राष्ट्रीय स्तर पर ले जाने की प्रक्रिया को बल देना।

(ग) हिन्दी माध्यम से भारत तथा अन्य देशों से मैत्रीपूर्ण संबंध को दृढ़ करना।

(घ) 'वसुधैव कुटुंबकम' के सन्दर्भ में जाति, धर्म, वर्ग और राष्ट्रीयता से परे हिन्दी को प्रेम, सेवा और शांति की भाषा के रूप में प्रतिष्ठित करना।

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी द्वारा स्थापित राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा, जिसने प्रथम विश्व हिन्दी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस अंक में

चन्द्रधर शर्मा गुलेरी—
व्यक्ति एवं अभिव्यक्ति 3
डा० विद्याधर शर्मा गुलेरी
केरल है या है कविता 6
डा० इंदर राज वैद 'अधीर'
जब लार्ड एल्फिन्स्टन ने भारतीय भाषाओं का समर्थन किया था
सत्यनारायण दुबे
माधविक्कुट्टी 8
मूल: वैक्कम चन्द्रशेखरन नायर
अनु: एन. कुमार पिल्लै 13
श्रममेव जयते 20
देव, केरलीय
आठवाँ अखिल भारतीय हिन्दी कार्यकर्ता शिविर 21
अंग्रेज़ी, हिन्दी और दक्षिण की भाषायें 22
श्री० गोविन्द नारायण
मैं थका बटोही 29
वी. के. बालकृष्णन नायर
पुस्तक-निरूपण-प्रेमचन्द्र की श्रेष्ठ कहानियाँ 32
इकले चलना सीख चुकी हूँ 33
सुगतकुमारी
महाविद्यालयों की युवशक्ति प्रौढ शिक्षा में लगायें 34
डा० एन. ए. करीम
अहसास 35
डा० मृत्युंजय उपाध्याय
डा० एन. जी. देवकी का अभिनन्दन 47
पाठकों के पत्र 52

सम्मेलन का सफल आयोजन १९७५ में नागपुर में किया था, इस सम्मेलन का भी आयोजन कर रही है। अतः हमें पूरा विश्वास है कि यह महान राष्ट्रीय यज्ञ अपने लक्ष्यों की सिद्धि में पूर्णतः सफल होगा।

देश विदेश की समस्त हिन्दी सेवी संस्थाओं से विशेष कर हिन्दीतर प्रान्तों की स्वैच्छिक हिन्दी संस्थाओं से हम आशा करते हैं कि सम्मेलन को सफल बनाने में अपना हार्दिक योगदान देंगी।

इस अवसर पर हिन्दी भाषी प्रान्तों का ध्यान हम एक अरोचक किन्तु महत्वपूर्ण बात की ओर आकृष्ट करना चाहते हैं। प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन में भाग लेने आये कई विदेश विद्वानों को यह बात बहुत खटकी थी कि अनेक हिन्दी भाषी विद्वान जो हिन्दी का समर्थन करते हैं, हिन्दी में बात करने की अपेक्षा अंग्रेज़ी में बात करना ही श्रेयस्कर मान बैठे हैं तथा हिन्दी भाषी प्रान्तों का प्रशासन अधिकांशतः अंग्रेज़ी में ही चलता है। अब की बार अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी को प्रतिष्ठित करने के उपाय सोचने के पहले हम यह स्पष्टतः प्रमाणित कर दें कि राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी पूर्णतः प्रतिष्ठित हो चुकी है। इसकेलिए एक तीव्र यज्ञ ही आरंभ कर। ❀

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चंद्रधर शर्मा गुलेरी—व्यक्ति एवं अभिव्यक्ति

डा० विद्याधर शर्मा गुलेरी

संस्कृत में भाषण देकर दस वर्ष की अवस्था में गुलेरी जी ने दिग्गज विद्वानों को आश्चर्यचकित किया ।

पं० चन्द्रधर शर्मा गुलेरी का जन्म वाराणसी तथा जयपुर के राज सम्मान के केन्द्र दार्शनिक, वैयाकरण, संस्कृतज्ञ महामहोपाध्याय पं० शिवराम जी शास्त्री के घर २५ आषाढ़ संवत् वि. १९४० तदनुसार ७ जुलाई सन् १८८३ ई. को जयपुर में हुआ । पण्डित शिवराम जी शास्त्री संस्कृत कालेज जयपुर के प्रधानाचार्य जयपुर राज दरबार के प्रमुख धार्मिक सलाहकार तथा काशी की विद्वद्मंडली तथा शास्त्रार्थ महारथियों में मूर्धन्य तथा सर्वमान्य उद्भट विद्वान थे । घर में संस्कृतमय वातावरण के कारण चार पांच वर्ष की आयु में ही विद्वान पिता के निर्देशन में संस्कृत सम्भाषण के अभ्यस्त हुए । अमरकोष, चार सौ श्लोक तथा अष्टाध्यायी का बडा भाग इस छोटी आयु में ही उन्हें कण्ठस्थ था । दीनदयाल शर्मा तथा पं० मदन मोहन मालवीय जी द्वारा स्थापित भारत धर्म महामंडल के वार्षिकोत्सव पर संस्कृत में भाषण देकर दस वर्ष की अवस्था में गुलेरी जी ने दिग्गज विद्वानों को आश्चर्यचकित किया ।

१८९३ में महाराजा कालेज, जयपुर में प्रविष्ट होने पर अंग्रेजी शिक्षा व विविध विषयों का अध्ययन करते हुए १८९७ ई. में द्वितीय श्रेणी में मिडल परीक्षा तथा सन् १८९९ ई. में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से एन्ट्रेन्स परीक्षा प्रथम श्रेणी में पास की । एन्ट्रेन्स में ऐसा परीक्षा परिणाम जयपुर राज्य के शिक्षा इतिहास में नहीं आ सका था । अतः महाराजा जयपुर ने जयपुर राज्य की ओर से उन्हें स्वर्णपदक और अनेक पुरस्कार दिए । तदनन्तर उन्होंने एफ. ए. की परीक्षा में कलकत्ता के समस्त कालेजों में अंग्रेजी पत्र में द्वितीय स्थान पाया ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन् १९०० में गुलेरी जी ने जवाहरलाल जैन 'जैन वैध' जी से मिलकर जयपुर में पुस्तकालय तथा नागरी भवन की स्थापना की। तब वे मात्र सोलह वर्ष के थे। नार्थबुक स्वर्णपदक प्राप्ति के साथ सन १९०३ में चन्द्रधर जी ने इलाहवाद विश्वविद्यालय की बी. ए. परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की और प्रथम स्थान प्राप्त किया। इसी वर्ष १९०२–१९०३ में जब कर्नल सर स्विण्टन जैकब तथा कैप्टन ए. एफ. गैरट जयपुर की वेधशाला के जीर्णोद्धर के लिए कार्यरत हुए तो उन्होने ऐसे भारतीय विद्वान की खोज की जो भारतीय भाषाओं के साथ साथ पाश्चात्य भाषाओं में भी पूर्ण समर्थ हो। गुलेरी जी अपनी धाक तथा विद्वत्ता की प्रसिद्धि के कारण इस कार्य के निमित्त चुने गए।

जयपुर के मानमन्दिर, ज्योतिष यंत्रालय के सुधार परिवर्तन व पुनरुद्धार के साथ साथ गुलेरी जी ने साम्राट सिद्धान्त जैसे कठिन ज्योतिष ग्रन्थ का अग्रेजी में अनुवाद किया। वेधशाला के निरीक्षण' यंत्रों के सुधार निश्चय के के अतिरिक्त ज्योतिष शास्त्र के अपने असाधारण ज्ञान से १९०२ से १९ वर्ष की वय में ही कैप्टन गैरट के सहयोग से जयपुर ओबजरवेट्री एन्ड बिल्डर नामक विशाल ग्रन्थ का गुलेरीजी ने निर्माण किया। उनके लिखे इस ग्रन्थ पर तथा यंत्रालय संबंधी उपलब्धियों पर जयतुर राज्य ने तीन सौ रुपये की पुस्तकें तथा विशेष सम्मान आपको प्रदत्त किया। सर स्विटन जैकब, कैप्टन गैरट तथा पाश्चात्य विद्वानों ने एक स्वर में स्वीकार किया कि गुलेरीजी भारतीय शास्त्र के प्रकाण्ड तथा असाधारण पण्डित थे। वैदिक संस्कृत, पाली प्राकृत, आपभ्रंश तथा हिन्दी मराठी, बंगला व अग्रेजी के असाधारण पाण्डिप्य के साथ लेटिन फ्रेंच एवं जर्मन का पूर्ण अभ्यास भी इन्होने इस अवधि तक संपादित कर लिया था।

सन् १९०४ में जयपुर दरबार के आदेश से खेतड़ी के राजा जयसिंह बहादुर के अभिभावक तथा शिक्षक होकर इन्हें मेयो कालेज अजमेर जाना पडा। सन् १९०७ में जयपुर राज्य के समस्त सामंतों की शिक्षा के अध्यक्ष हुए। सन् १९१६ में ये जयपुर हाऊस के मोतमिद पद के अधिकारी हुए और साथ ही मेयो कालेज के संस्कृत प्रधानाचार्य बने। मेयो कालेज में काश्मीर के महाराजा हरी सिंह, प्रतापगढ़ के नरेश राम सिंह, ठाकुर कुशल सिंह तथा रोहिट के ठाकुर दलपद सिंह आपके शिष्यों में प्रमुख थे। नौ वर्ष तक मोतमिद का सफल कार्य करते हुए जयपुर से विशेष सम्मानित होते हुए 'रेजीडेन्ट जयपुर द्वारा' गुलेरी जी की विद्वत्ता फली फूली। यही दर्शन शास्त्र में आपने एम. ए. की तैयारी की। सन् १९१९-२० में जब महामना मदन मोहन मालवीयजी काशी हिन्दू विश्वविद्यालय को संगठित करने में जुटे तो अनेकों पत्रों के आग्रहों तथा व्यक्तिगत अनुरोध से मालवीय जी ने १९२१ में मेयो कालेज के प्रधानाचार्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पद से गुलेरीजी को बनारस लाना चाहा। १९२० में बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय की परिषद ने गुलेरीजी को मनीचन्द्र नन्दी चेयर का प्रोफेसर और प्राच्य विभाग का प्रिंसीपिल अध्यक्ष नियुक्त किया।

जयपुर के समालोचक पत्र का १९०३ से १९०७ तक सफल सम्पादन करने के अतिरिक्त १९२० से १९२२ तक गुलेरी जी ने काशी नागरी प्रचारिणी पत्रिका सम्पादन भी किया। सन् १९२१ ई. के चारों अंकों में जो कि ना. प्र. पत्रिका में प्रकाशित हुए थे कुल बाईस लेखों में से स्वयं गुलेरी जी के ही १४ लेख सम्पादिकीय के अतिरिक्त हैं। यह उनकी अध्ययनशीलता, प्रभाव तथा शोध परक विद्वता का स्पष्ट प्रमाण था कि यश एव अर्थ से पूर्ण विरक्त होकर उन्होने चिट्ठी वाला, एक बी. ए, ब्राह्मण कंण्ठा तथा आलोचक आदि छद्म नामों से समालोचक, इन्दु, प्रतिभा, मर्यादा आदि पत्र पत्रिकाओं में '१९०२ से १९२२ तक' लेख लिखे। बनारस विश्वविद्यालय के प्राच्य विभाग के अध्यक्ष रूप में आपने अनथक कार्य किये। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, बाबू श्याम सुन्दर दास तथा महावीर प्रसाद दिवेदी के साथ मिलकर गुलेरी जी ने मानो हिन्दी के उद्धार, संस्कार तथा विकास का व्रत ले लिया था। उन्होंने हिन्दी को कई महत्व पूर्ण योगदान व्रज कविता, कथा साहित्य, निबन्ध साहित्य एवं पत्रकारिता के प्रारम्भिक उत्कर्ष में दिया। समालोचक में १९०३ से १९०७ तक संगीत की धुन तथा हमारी अलमारी आदि को प्रकाशित करके गुलेरी जी ने हिन्दी साहित्य में इन्टरव्यू विधा तथा समालोचना स्तम्भ में पुस्तक समीक्षा के स्थाई प्रस्तुतीकरण का सर्व प्रथम प्रवर्तन किया। १२ सितम्बर सन् १९२२ को वे ३९ वर्ष २ महीने तथा ५ दिन की अल्पआयु में दिवंगत हुए और उन्होने भारतीय विद्वत्ता तथा गरिमा को अनायास ही अनाथ किया।

पं० चन्द्रधर शर्मा गुलेरी की गणना भारत के प्रसिद्ध पुरातत्व-वेत्ता विद्वानों में उस समय की जाती थी।

पं० चन्द्रधर शर्मा गुलेरी की गणना भारत के प्रसिद्ध पुरातत्ववेता विद्वानों में उस समय की जाती थी। डा० श्याम सुन्दर दास, राय कृष्णदास, पुरोहित हरीनारायण बी. ए., डा० ओझा, कामता प्रसाद गुरु, द्वारिका प्रसाद चतुर्वेदी, माधो प्रसाद मिश्र, गिरधर शर्मा चतुर्वेदी, गिरधर शर्मा नवरत्न, पुरुषोत्तमदास टंडन, लज्जा शंकर झा, रत्नाकर जी एवं पाश्चात्य विद्वानों में डा० ग्रियर्सन, डा० भन्डाकर, प्रो० फूसे, किलहरन, ग्राहम, प्रो० क्लानड आदि विद्वानों से गुलेरी जी का घनिष्ठ सम्बन्ध रहा जैसा कि अब भी सुरक्षित उनके

(शेष पृष्ठ ७ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केरल है या है कविता !

डा० इंदर राज वैद 'अधीर'

यह लाल कदलि का कानन है,
यह आँगन कथा कली का;
हिन्दी का भी प्रिय प्रदेश यह,
है सुदेश मलयालम का ।

निर्मल जन का देश, देश यह
सहज सरलता का भी है ;
सब धर्मों का तीर्थ, तीर्थ यह
भव्य मनुजता का भी है ।

यह 'शंकर' की भूमि, ज्ञान का
दीप जलाया था जिसने;
'नारायण' की प्रसू धर्म का
मर्म बताया था जिसने ।

यह परम दुर्लभा धरती है
देवों को भाने वाली,
'मनुज मनुज में भेद नहीं है'
यह पाठ पढाने वाली ।

उमड़ रहे हैं दिशा-दिशा में
गीत 'स्वाति' के भक्ति भरे,
गूंज रहे हैं 'वल्लत्तोल' के
बोल क्रांति के शक्ति भरे ।

भूल नहीं सकता है कोई
इसकी मोहक छवियों को,
बेजोड़ कला के आराधक
'रवि' की रंगावलियों को ।

इस वसुधा पर जनमा जो भी,
धन्य अवतरण है उसका;
इसकी गोदी खेला जो भी
रम्य लड़कपन है उसका ।

जिसने श्री को गले लगाया,
वह यौवन हो गया धन्य,
इस पर जिसने तन-मन वारा,
जीवन वही हुआ अनन्य ।

हरित स्वर्ण से धरती सारी
नंदनवन-सी चमक रही,
फल-फूलों के आभरणों से
प्रकृति-नटी भी दमक रही ।

कल-कल, छल-छल के मधुरव से
क्यारी-क्यारी चहक रही,
सिंधु लहरीयों से क्रीड़ा कर
चाल पवन की बहक रही ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उतर स्वर्ग से आयी तो-
साकार हो गई सुन्दरता,
इसको निरख विधाता बोले,
'केरल है या है कविता' !

दरस मात्र से कर देती जो
तृप्त सभी की आँखों को,
जगा कल्पना देती है जो
खिला हृदय की पाँखों को।

भारत माँ को गर्व सुता पर,
अनुपम इसका पानी है;
लोकोत्तर आनंददायिनी
इसकी छवि वरदानी है।

इसकी गाथा गाते हैं नित
पर गाते नहीं अघाते;
न्यारी प्यारी सुस्मृतियाँ हो
हम संग सँजो ले जाते।

सुबह अनूठी, सुखद दुपहरी
साँझ सुहानी है इसकी;
यह केरल की भूमि अलौकिक
रम्य कहानी है इसकी।

★

आकाशवाणी
मद्रास

(पृष्ठ ५ का शेष)

विस्तृत पत्र व्यवहार से प्रमाणित होता है। स्व० योगेश्वर शर्मा गुलेरी (मेरे, पिता) के नया समाज १९५२ की पत्रिका में प्रकाशित संस्मरणों "गुलेरी जी के अंतिम क्षण" के अनुसार जीवन के अंतिम क्षणों में भी वे विद्वानों से शतपथ ब्राह्मण पर एक जर्मन विद्वान की टीका का खण्डन कर रहे थे। विविध विषयक शोध पूर्ण टिप्पणियों, लेखों-निबन्धों यथा अशोक की धर्म लिपियों 'सह सम्पादन ओझा श्याम सुन्दर दास' जयपुर आबजरवेटरी एण्ट इट्स बिल्डर्स ककातिका मानकस, देवकुल, शैशुनाक की मूर्तियाँ, पुरानी हिन्दी, डिंगल, देवानां प्रिय, गोदानमं, पूर्णपात्र, यंत्रक, वैदिक भाषा में प्राकृतिकपन आदि के द्वारा गुलेरी जी ने साहित्यक दृष्टि से अनुसंधान, भाषा विज्ञान, पुरात्तव आदि के क्षेत्र में अत्यधिक महत्वपूर्ण कार्य हिन्दी जगत को समर्पित किया।

★

चन्द्र भवन, गुलेर (कांगडा) १७६०२४
हिमाचल प्रदेश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब लार्ड एल्फिन्स्टन ने भारतीय भाषाओं का समर्थन किया था।

सत्यनारायण दुबे

प्रारम्भ में अंग्रेजी कम्पनी सरकार भारतवासियों को शिक्षा देने के लिये तैयार नहीं थी। कारण उनके सामने सर्व प्रथम धन की समस्या थी। द्वितीय जनता को किस भाषा में शिक्षित किया जाये इसके निर्णय की समस्या थी। तृतीय यूरोपीय विद्याएँ भारतीय भाषाओं में किस तरह उतारी जायँ उनके सामने यह प्रश्न भी था। अगर यूरोपीय ज्ञान भारतीयों को दिया गया तो वे एक न एक दिन स्वतन्त्रता की मांग करेंगे तथा कंपनी सरकार के सामने एक मुसीबत खड़ी हो जायेगी।

कंपनी चार्टर हर बीस साल के बाद बदला जाता था। चार्ल्स ग्रान्ट के प्रयत्नों से सन् १८१३ में कंपनी ने शिक्षा की जिम्मेदारी ली तथा इसके लिये एक लाख रुपये रखे गये। भारतीयों के बारे में चार्ल्स ग्रान्ट के विचार अच्छे नहीं थे। चार्ल्स ग्रान्ट भारतवासियों को मूर्ख धर्म एवं आचार विहीन तथा पतनशील समझता था। सबसे पहले उसीने इस विचार को प्रोत्साहन दिया। भारतवासियों के सुधार का एक मात्र उपाय यह है कि उन्हें अंग्रजी पढ़ाई जाए। उसका कहना था कि जब विदेशियों को शिक्षित करना होता है तब शिक्षा उन्हीं की भाषा में दी जाती है यह ठीक है। लेकिन भारत का हाल दूसरा है। बहुत से भारतीय खुद ही अंग्रेजी सीख रहे हैं। विदेशियों की प्रारम्भ से ही नीति यह रही कि विजेता अगर विजित समाज को अपने रंग में रंगना चाहे तो इसका सबसे सुगम उपाय यह है कि वह उसे अपनी भाषा सिखा दे। मुसलमानों ने अपने शासन-काल में हिन्दुओं को (फारसी) पढ़ायी थीं तो हिन्दू उन्हें अपने से श्रेष्ठ मानने लगे। यही नीति अंग्रेजों ने अपनाई। ग्राण्ट ने ब्रिटिश सरकार को सबसे बड़ा लोभ यह दिखाया कि अंग्रेजी के जरिये हिन्दुओं को ईसाइयत का पूर्ण ज्ञान हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जायेगा तथा वे क्रिश्चन (क्रिश्चयन) बन जायेंगे। सन १८५४ तक शिक्षा की सारी नीति कंपनी के अधीन थी। इस काल में मुख्य दो प्रश्न थे · प्रथम शिक्षा का माध्यम क्या हो; द्वितीय शिक्षा के तरीके क्या हों। अंग्रेजों ने भारत की नहीं अपनी भी राह पकड़ी तथा एक नयी नीति का अविष्कार किया जिसे वे नीचे का सिद्धांत कहते हैं। जिन दिनों कंपनी सरकार इस द्वंद में पड़ी थी कि भारतवासियों को शिक्षा ठीक माध्यम से दी जाय। उन दिनों भारत के शासकों में तीन प्रकार के मत प्रचलित थे। हेस्टिंग्ज और मिण्टो संस्कृत और अरबी के पक्षपाती थे। उनका विचार था कि इन्हीं भाषाओं को जनता की शिक्षा का माध्यम बनाया जाना चाहिये और इन्हीं भाषाओं के द्वारा यूरोपीय विद्याओं का प्रचार सारे देश में किया जाना चाहिये। हेस्टिंग्ज और मिण्टों से अलग मुनरो और एल्फिन्स्टन थे। जिनका विचार यह था कि संस्कृत, अरबी और फा सी के द्वारा भारतवासियों की शिक्षा व्यापक नहीं बनाई जा सकती उनकी शिक्षा का माध्यम आधुनिक भारतीय भाषायें ही हो सकतो हैं। यदि यूरोप के नये ज्ञान को हमें भारतीय जनता तक ले जाना है, तो यह कार्य केवल उन भाषाओं के जरिये किया जा सकता हैं जो जनता की चालू भाषायें हैं। तृतीय दल चार्ल्स ग्राण्ट के अनुयायियों का था जो यह मानता था कि नवीन विद्यायें भारतवासियों को अंग्रेजी के ही माध्यम से दी जा सकती हैं। इस दल के मिशनरियों का बहुलता थी और नये सिविलियन भी इस मत को मानते थे। प्रारम्भ में यह दल काफी कमजोर था। लेकिन मेकॉले ने इसी पक्ष को सबसे सबल बना दिया।

यह सबसे आश्चर्य की बात है जो देश राष्ट्रीयता के लिये सदैव अग्रणी रहा उसी बंगाल ने सर्वप्रथम भारतीय भाषाओं का सबसे अधिक विरोध किया। बंगाल में जो विवाद उठा था वह संस्कृत तथा अंग्रेजी के बीच का था। उस समय यह किसी ने नहीं सोचा था कि शिक्षा का माध्यम प्रान्तीय भाषाएँ तथा हिन्दी भाषा हो सकती है। मेकॉले के आने से पहले तक मिशनरी के लोग अपना प्रचार बंगला और हिन्दी भाषाओं में कर रहे थे। तब तक बंगला में बाईबिल का अनुवाद भी हो चुका था। लेकिन मेकॉले ने जब यह कहा था कि भारत की सभी भारतीय भाषा (भाषाएँ) बिलकुल बेकार हैं और उनमें यूरोप की नवीन विद्याओं का अनुवाद भी नहीं किया जा सकता। तब भी उसके इस आक्षेप का किसी ने प्रतिवाद नहीं किया। खेद की बात तो यह है कि बहुत से लोग स्वतन्त्रता के ३३ वर्ष बाद भी वही बात कह रहे हैं।

बंगाल में सन १८२३ में जनरल कमेटी ऑफ पब्लिक इंस्ट्रक्शन नामक संस्था बनी। जिस के अन्तर्गत सन १७२३ से लेकर १८३३ तक के लिए कलकत्ते में एक मदरसा और एक संस्कृत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कॉलेज की स्थापना की। बनारस में संस्कृत कॉलेज खोला गया तथा आगरा और दिल्ली में भी ओरियन्टल कॉलेजों की स्थापना की गई। इस समिति ने संस्कृत और अरबी में पुस्तकें छापी एवं विद्वानों को संस्कृत और अरबी में अंग्रेजी की पुस्तकें अनूदित करने के काम पर नियुक्त किया। इस समिति का विरोध भारतीयों ने किया जिस में सबसे प्रमुख भी राजा राममोहनराय थे।

अपनी भाषागत कठिनाइयों का जो समाधान भारत आज खोज रहा है, उस समाधान पर सबसे पहले लॉर्ड एल्फिन्स्टन की दृष्टि गयी थी। लॉर्ड एल्फिन्स्टन सन् १८१९ से १८२७ तक बम्बई राज्य का गवर्नर था। सन् १८२४ में शिक्षा पर उन्होंने जो मिनट तैयार किया था उसके दो उद्देश्य थे। नैतिक और प्राकृतिक विज्ञानों की पुस्तकें भारत की आधुनिक भाषाओं में तैयार करवाई जायें और उन्हीं भाषाओं के द्वारा भारत की जनता को शिक्षित किया जाय। जो लोग एक क्लासिक भाषा के रूप में अंग्रेजी सीखना चाहें तथा अंग्रेजी सीखकर यूरोपीय ज्ञान के संपर्क में सीधे आना चाहें उनके लाभ के लिए अंग्रेजी के स्कूल खास तौर से खोले जायें। लेकिन एल्फिन्स्टन के इस प्रस्ताव को वॉर्डन ने काट डाला जो उस समय एक्जेक्युटिव कौन्सिल का सदस्य था। वह अंग्रेजी का हिमायती जन-शिक्षा का जनक था। अतएव एल्फिन्स्टन का प्रस्ताव अमल में नहीं लाया जा सका। ग्राण्ट वॉर्डन और मेकॉलें भारतीय जनता के हितचिंतक नहीं थे। उनका उद्देश्य भारत को बदलकर उसे नकली इंग्लैंड बनाना था। लेकिन एल्फिन्स्टन उन थोड़े से श्रेष्ठ अंग्रेज़ों में से था जिनका लक्ष्य भारत को आत्मनिर्भरता प्रदान कर के उसे अपने पांवों पर खड़ा होने योग्य बनाना था, एल्फिन्स्टन ने जन-शिक्षा निमित्त बम्बई नेटिव एजुकेशन सोसाइटी की स्थापना की थी जिसका विचार था कि भारतीय जनता की मानसिक और नैतिक उन्नति के कार्य में अंग्रेजी का स्थान गौण है। सोसायटी ने अंग्रेजी स्कूलों का महत्व उनके लिये बताया जिसमें अंग्रेज़ी सीखने की विशेष प्रवृत्ति हो। अथवा जिनके पास उनकेलिए आवश्यक समय और अवकाश हो। सामान्य लोगों के बारे में सोसायटी का निश्चित मत था कि जनता में पाश्चात्य ज्ञान का प्रचार केवल अंग्रेज़ी के द्वारा होना असंभव है। इस सोसायटी ने अपनी १८२५–२६ की रिपोर्ट में कहा था कि पाश्चात्य साहित्य दर्शन और विज्ञान की बातें भारतीय छात्रों को तभी सुगमता से प्रदान की जा सकती हैं, जब शिक्षा का माध्यम उनकी अपनी मातृभाषा हो। यदि ये विचार अंग्रेज़ी के माध्यम से दिये जायेंगे तो यह कार्य न सफल होगा न सुगम। प्रश्नों को लेकर स्वतंत्र भारत के नेता बार बार माथा पच्ची कर रहे हैं। उन प्रश्नों पर एल्फिन्स्टन के सहयोगियों का भी ध्यान गया था। और जो समाधान भारतीय भाषाओं के समर्थकों को आज दिखाई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देता है वही समाधान तत्कालीन भारत-हितैषी अंग्रेजों को भी दिखाई पड़ा था। तत्कालीन बम्बई की शिक्षा नीति पर कैप्टन कैण्डी की एक रिपोर्ट लंडन ग्रन्थालय से इस लेखक को प्राप्त हुई है। उनके अनुसार कैण्डो ने स्पष्ट लिखा है कि भारत के नैतिक और बौद्धिक विकास के कार्य में अंग्रेजी का जरूरत से ज्यादा भरोसा करना भी बेकार है। भारतीयों की शिक्षा के क्रम में अंग्रेजी केवल विषय और विचार दे सकती है। वह शिक्षा का माध्यम नहीं बन सकती। जिस भाषा के द्वारा जनता शिक्षित की जाए वह भाषा जनता की मातृभाषा ही हो सकती है; अंग्रेजी और संस्कृत नहीं। संस्कृत को मैं उस महान भण्डार के रूप में देखता हूँ जिससे आधुनिक भाषाएँ शक्ति सौन्दर्य ग्रहण कर सकती है।

एल्फिन्स्टन की नीति को अगर हम सारांश में देखें तो यह है कि (१) ज्ञान की सामग्री हमें अग्रेजी से लेनी है। (२) जनता तक यह ज्ञान हमें भारतीय भाषाओं के द्वारा पहुँचाना है। और भारतीय भाषाओं की शक्ति बढ़ाने के क्षेत्र में सहायता हमें प्रमुख रूप से संस्कृत से ग्रहण करनी है। एल्फिन्स्टर के समय में बम्बई में जिला प्राइमरी स्कूलों की संख्या काफी अधिक हो गयी थी। ये स्कूल असल में माध्यमिक विद्यालय थे जिनमें इतिहास, भूगोल, रेखागणित ट्रिगॉनोमेट्री, बीजगणित और दर्शन की पढ़ाई मराठी में की जाती थी। इन स्कूलों में मेडिकल कोर्स भी था जिसकी पढाई मराठी में चलती थी। इन विषयों पर उन दिनों भारतीय भाषाओं की अनेक पुस्तकें भी लिखी गई थीं। यदि यह परम्परा कायम रही होती तो नये शब्दों की खोज को लेकर देश में आज जो विवाद चलता है वह उठा ही नहीं होता। क्योंकि सम्बन्धित शब्द अब तक तैयार हो गये होते। एल्फिन्स्टन ने जो नीति निर्धारित की थी उसे कार्यरूप जगन्नाथ शंकर सेठ ने (१८०३–१८६५) दिया। इन्होंने विचार यूरोप से लिये। भाषा जनता की उठायी और नये शब्दों का निर्माण संस्कृत भण्डार से किया। उत्तरभारत की शिक्षा व्यवस्था का नियंत्रण बंगाल से निकलकर प्रान्तीय सरकार के हाथों में सन् १८४३ में आया। यहाँ के भी लेफ्टनेंट गवर्नर थॉमसन बम्बई के गवर्नर एल्फिन्स्टन के ही समान भारतीय जनता के हितैषी थे। उनका भी विचार जनता मात्र को शिक्षित करने का था। अतएव उनका शिक्षा योजना भी मातृभाषा पर ही आधारित थी। थॉमसन ने अपने प्रान्त में मातृभाषा का पक्ष लिया। उत्तरभारत की शिक्षा संबधी एक वार्षिक रिपोर्ट में कहा गया है कि इस भू-भाग में बंगाल की तरह अंग्रेज अधिक नहीं है। जो है भी उनकी माली हालत अच्छी नहीं हैं, विदेश से भी यहाँ अंग्रेज कम आते हैं। और विदेशी उपकरणों का भी यहाँ कम प्रचलन है। अतएव अंग्रेज़ी के अनुकूल वातावरण का यहाँ अभाव है। उत्तरप्रदेश में उन दिनों महाराष्ट्र की तरह जन-शिक्षा का कार्य हिन्दी और उर्दू में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जनता था तथा इन भाषाओं में विविध विषय की पुस्तकें भी प्रकाशित होती थीं। उस समय किसी भी भारतीय दूरदर्शी नेता का ध्यान शिक्षा के माध्यम के लिये भारतीय भाषाओं की ओर नहीं गया। उस समय भारतीय भाषाओं की ओर ध्यान कुछ अंग्रेज़ों का ही गया। वह विशेष गौरव की बात है कि जिस अंग्रेज ने जनता की भाषाओं के प्रति जितनी ही अधिक भक्ति दिखलायी जनता का वह उतना ही अधिक प्यारा हो गया।

एल्फिन्स्टन बम्बई में इतना अधिक लोकप्रिय था कि जब उसने अवकाश ग्रहण किया तब जनता ने दो लाख रुपये चन्दा एकत्र करके उसकी स्मृति में एल्फिन्स्टन इंस्टीयचूट की स्थापना की। इस प्रकार जब मद्रास के गवर्नर सर टॉमस मनुरो मरे तब जनता में हाहाकार मच गया और टॉमस मनुरो बहादुर रैयत का शुभाकांक्षी और जनता का पिता कहकर विलाप करने लगे। ब्रिटिश पार्लियामेंट की प्रवर समिति के सामने गवाही देते हुए इसी मनुरो ने कहा था कि हिन्दू यूरोपवालों से कतई हीन है। अलेक्जेंडर ढ़फ भारत में उस समय धर्म प्रचार के लिये आया था। लेकिन सब से अधिक प्रचार उसने अंग्रेजी का किया धर्म का नहीं। बंगला भाषा वह खाक नहीं जानता था। फिर भी उसने कह दिया कि इस भाषा में ज्ञान की कोई बात नहीं है। और कॉले ने भी ऐसी अनर्गल बात भारतीय भाषाओं के विषय में कही थी जब कि वह भारत की किसी भाषा से परिचित नहीं था। आज भारत में न जाने कितने लोग भारत की किसी भी भाषा को गहराई से जाने बिना ही देश की सभी भाषाओं को अयोग्य और अविकसित कह देते हैं। भारतीय भाषायें बहुत ही अयोग्य नहीं थीं। उसमें बाईबिल के अनुवाद आसानी से किये जा चुके थे। उन दिनों विज्ञान भी अपने बचपन में था। उसका अनुवाद उस समय उतना कठिन नहीं था जितना वह आज है। फिर विज्ञान उस समय था ही कितना जो भारतीय बाषाओं में नहीं अमाता? भारतीय भाषाओं को शिक्षा माध्यम नहीं बनाने से भारत की जो हानि हुई है उसका असली परिणाम आंका नहीं जा सकता। कंपनी सरकार की डांवाडोल भाषा नीति सन् १८५४ के डिस्पेच में आकर निश्चित हो गयी। जिसे वुड़ का एज्युकेशन डिस्पैच कहते हैं। इस डिस्पैच में खुलकर यह घोषणा की कि सरकार का उद्देश्य भारतीय भाषाओं को हटाकर अंग्रेजी लाना नहीं है। सरकार यह ध्यान बराबर रखती है कि देश की विशाल जनता का कार्य जनता की भाषा में हो। इसलिये सरकार ने अदालत में, शासन में तथा जनता के सम्पर्क के काम में फारसी के बदले अंग्रेजी नहीं जनता की भाषाओं को स्थान दिया है। इस डिस्पैच के द्वारा सरकार की शिक्षानीति यह निरूपित हुई कि जो लोग ऊँची शिक्षा पाना चाहेंगे उन्हें वह शिक्षा अंग्रेजी के माध्यम से दी जायेगी। किन्तु जनसाधारण की शिक्षा का माध्यम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मलयालम उपन्यास

माधविक्कुट्टी

(गतांक से आगे)

मूल : वैक्कम चन्द्रशेखरन नायर
अनुवाद : एन. कुमार पिल्लै

(चार)

वह एक छोटा घर है। विशाल बरामदा। दो-तीन कमरे। एक रसोई घर। आंगन में एक कटहल का पेड़। करवीर के पौधे। दो-तीन चमेली की लतायें। गुलाब के पौधे। उनमें कुछ पौधे पानी की कमी से सूखने लगे हैं। फाटक के दोनों ओर कई पौधे हैं। डेढ साल से माधविकुट्टी और कुट्टप्पन यहीं रहते हैं।

कुट्टप्पन नायर अब बीमार पडा है। विवाह होते ही, अर्थात् एक सप्ताह के अन्दर यहाँ रहने लगे। यह कुट्टप्पन का घर है। तेरह सेंट भूमि है। शादी के समय ही दीदी और राधाकृष्ण को इस बात में मानसिक पीडा थी कि माधविकुट्टी और पति शायद वहीं रहेंगे। पिता ने पहले ही कुट्टप्पन से कहा था कि वहाँ से जल्दी ही हट जाना चाहिये। इसलिये अपने घर का मरमत करके इधर रहने लगा।

एक साल से राघवन नायर हाइरेंज के एक ठेकेदार के साथ है। गोपी बंबई में है। उसकी ज़िन्दगी कष्टपूर्ण है। तो भी जन्म स्थान में रहकर कष्ट सहने को ज़रूरत नहीं।

माँ-बाप घर में ही रहते हैं।

प्रथम-रात्रि में माधविकुट्टी खिडकी से चुपचाप देखती रही। एक छोटा सा विवाह मंडप। उसपर सजाये फूल मुरझा गये हैं। उत्तर के आंगन में केले के पत्र-खंड। पचास-साठ लोगों को भोजन दिया गया था। जो लोग श्रम करने आये उनमें दो तीन व्यक्ति मंडप पर ही लेटे सो गये हैं। सब कहीं नीरवता। उसे खुशी हुई। माँ की जायदाद नहीं बिकी। गिर्वी ही रखी गयी। अवसर मिलने पर वापस ले सकेंगी……

मातृभाषा रहेगी। शिक्षा माध्यम की इस द्वैध नीति का परिणाम यह है कि आज तक भी भारत में शिक्षा का व्यापक प्रसार नहीं हुआ और भारतीय भाषाओं के बारे में देश के अनेक शिक्षा विशेषज्ञ वही बात कह रहे हैं जो वुड ने सन १८५४ में कही थी।

शायद मेकॉले सचमुच ही जीत गया और चार्ल्स ग्राण्ट वॉर्डन और मेकॉले के कारण एल्फिन्स्टन की नीति नहीं चल सकी। यदि वह नीति चल गयी होती तो भारत आज उस कठिनाई में न फंसा होता जिसमें वह आज गिरफ्तार है। दुख की बात यही है कि मेकॉले ने एल्फिन्स्टन का पीछा आज भी नहीं छोड़ा है।

(साभार–महाराष्ट्र मानस)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूरी आकाश में तारों के झुंड दीख रहे थे। वहाँ भी शादी हुआ करती है? उसने सोचा। होगी .... तब कुट्टप्पन उसके पास आये। उसका स्पर्श किये बिना वह मुडकर उसे दीखती रही।

परिचित आदमी।

इसी ने उसकी रक्षा की।

उसकी ही नहीं, पिता की, पिता के अभिमान की, माता की, माता के कमज़ोर मन की......

उसने उस आदमी को एक स्नेह संपन्न पैगंबर के समान ही देखा।

दुबला, काला, ऊँचा देहाती आदमी। एक टेबुल लैंप कोने में जल रहा था। पास ही ढके गिलास में दूध।

उस आदमी ने उससे सबसे पहले यों कहा: "तेरे साथ शादी करने की योग्यता मुझ में नहीं थी माधविकुट्टी।"

वह विकसित आँखों से उसके चेहरे पर देखती रही। आँखें भर आयीं। आंसू बह आये। उस आदमी के कथन का अर्थ क्या है? कोई पिछली बातें, अर्थात् उससे संबन्धित कोई बात मन में छिपा कर? नहीं। वह आदमी ऐसा कहनेवाला नहीं। उसे दुख हुआ। जो कुछ भी हो क्या उन्हें ऐसे एक क्षमापण के साथ दांपत्य जीवन आरंभ करना चाहिये?

उसने खुले हृदय से कहा:—"ऐसा मत कहो"......

उसने जल्दी स्मरण किया कि पति बने पुरुष से उसका पहला वाक्य है यह। अच्छा हुआ। वह एक प्रार्थना थी। वही अच्छा है। उसने फिर से उन्हें देखा। उसने उस आदमी के रूप की याद भी नहीं की। वे आज से उसके जीवन का सबसे बडा सत्य है। उस रूप का कोई अर्थ नहीं है। पति, केवल इस याथार्थ्य का ही अर्थ है।

उन्होंने उसे छुये बिना बुलाकर पलंग पर बिठा लिया। जैसे उसे छूने का धैर्य नहीं।

उसने बीडी देते समय जान बूझकर उनकी ऊँगलियों का स्पर्श किया। बडे सवेरे उन्हें जोर की खांसी आयी। सवेरे उसे ऐसा लगा कि वे बहुत थक गये हैं।

कई दिन बीत गये।

खाँसी, खाँसी, खाँसी!

एक दिन रात को उन्होंने उससे कहा कि उन्हें क्षयरोग नहीं। वह रो पडी। क्योंकि उसने ऐसा नहीं सोचा था।

डाक्टर से मिला। वैद्य से मिला। डाक्टर से मिला। वैद्य से मिला। महीने बीत गये। रोज़ दवायें। माधविकुट्टी ने उनके शरीर की बडी लगन से शुश्रूषा की। उन्हें थोडी ही थकावट न हो इस उद्देश्य से बडी सेवा शुश्रूषा की। सोये बिना सेवा की। उनके संग पलंग पर लेटने को तैयार न हुई, उनके चाहने पर भी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुट्टप्पन प्यासी आँखों से देखते तो वह कहती—"नहीं बीमारी कहीं बढ जाए तो ......?

सोचते सोचते उनकी आँखें भर आतीं। तब वह प्रार्थना करती :

"ईश्वर के लिए, ऐसी वैसी बातें सोचकर मन को कष्ट न दें।"

कुट्टप्पन सहानुभूति प्रकट करते। तब वह आश्वासन देती। "यह बीमारी दूर हो जाएगी।"

पिता आये और गये। माता आयी और गयी। एक बार राधकृष्ण भी आये।

पाँच-आठ महीने बीत गये। पास जितना रुपया था सब खर्च हो गया। कुट्टप्पन ने कुछ रुपये जमाकर रखे थे। एक हजार रुपये। पर बीमारी जाने बिना इलाज की गयी। इसलिये ही विविध प्रकार की दवायें खरीदनी पडी। महँगी दवायें। वैद्य ने सहानुभूति पूर्वक जो दवा बतायीं उसे बनाने के लिये ३५ रुपये। सब कुछ किया। बीमारी ऐसी ही रही। रुपये खतम हो गये।

तेरह सेंट भूमि। नारियल के पेड हैं। कभी ७० कभी १०० नारियल मिलेगा। ज्यादा से ज्यादा ५० रुपये। दवा को भी नहीं आयेगा ये ५० रुपये।

एक बार माँ बाप आये तो २० रुपये दिये। माधविकुट्टी ने दुःख के साथ उसे लिया। क्यों कि वह जानती थी घर के खर्च के संबंध में राधाकृष्ण के कटुवचन सुनकर रहने वाले उन बेचारों को रुपये के लिये कोई मार्ग नहीं है।

एक साल बीत गया। कुट्टप्पन नायर बिस्तर पर ही है।

एक दिन रात को माधविकुट्टी पास बैठी थी। उन्होंने कहा :

"पहले मैं मरने को तैयार था। आज तुझसे अलग होने के लिये मुझे धैर्य नहीं है। इसलिये मैं तुझे आँसू पिलाता पडा हूँ।"

वह फूट फूट कर रोयी।

दो दिन के बाद राघवन नायर आये। जाते समय १५ रुपये उसके हाथ में दिये। वह जानती थी कि भैया भी बडी मुसीबत में है। पैसा न रहने पर भी इतना जमा लाये।

उस घर में सहायता केलिये कुट्टप्पन की बिरादरी का एक लडका था। माँ कभी कभी आकर एक सप्ताह ठहरती। फिर यह सोच कर लौट जाती कि उस का बोझ न पडे। वह लडका बडा सहारा है।

अक्सर चुनाव के समाचर आते रहते थे। उस दिन जब अखबार आया तब माधविकुट्टी कुट्टप्पन के पास बैठी थी। उन्होंने अखबार पढा। उस में तटत्तिल भास्करन नायर की जीत की खबर को प्रधानता दी गयी थी। माधविकुट्टी ने वह देखा। उसने यह खबर पढी। उसने यह भी देखा कि वे ध्यान से वह खबर पढ रहे हैं। उन्होंने देर तक-उससे आँखें नही हटायी। उनके मन में कोई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आँदोलन। क्या वे कोई खास बात सोच रहे हैं ?

अखबार धीरे एक ओर रख कर कुट्टप्पन ने कहा —"कुछ दिनों से उस आदमी को एक खत भेजने की बात सोच रहा था "

"किसको ?"

माधविकुट्टी ने उनकी ओर घूर कर देखा।

"भास्करन नायर को" उनके स्वर में कोई ख़ासियत नहीं थी। माधवि के मन में कोई चिन्ता है।

"क्यों"...उसने पूछा।

"योंही देखने"—उन्होंने निर्विकार होकर कहा।

उसने जवाब नहीं दिया। फिर यह प्रश्न नहीं किया "क्यों।"

पर कुट्टप्पन ने उसका विवरण दिया।

"वह आदमी बुरे नहीं। मेरी राय में वे अच्छे आदमी हैं। मैं ने दो एक बार देखा है। बातें की है। उन्हें अपने देश के प्रति बडा प्रम है। दूसरों के प्रति अच्छे विचार भी हैं। वे चाहें तो मुझे अच्छे डाक्टर से मिलाने या तिरुवनन्त-पुरम या और कहीं मेरी इलाज कराने का प्रवंध हो सकेगा।

वह चुप रही। उसका निषेध करने की इच्छा थी। कहने का धैर्य न आया।

विवाह के एक महीने के अन्दर उसने भास्कर जी के बारे में कहा। उन्होंने कैसे उसका विवाह करना चाहा था। इन्दिरा के जरिये उसे कैसे यह बात समझायी गयी थी। पिता से जो बातें हुई थीं। अन्त में जायदाद की कमी से हट जाने की बात। तब कुट्टप्पन ने मुस्कुराते हुये कहा : "यह सब भुला दो माधविकुट्टी।"।

वह नहीं जानती थी कि उन्होंने किस अर्थ में ऐसा कहा। फिर एक बार उसे विशद किया :

"भास्करन नायर का विवाह नहीं हुआ है। आज की परिस्थिति में उसे दहेज में लाख रुपये भी देने वाले मिलेंगे। एक बार इच्छा हुई। पर जब सोचा कि कभी विवाह नही करना है तो उसकेलिये एक ऐसा बहाना ढूंढ लिया होगा।

माधविकुट्टी को लगा कि उसने जान बूझकर इस बहाने का जिक्र किया है।

शायद पति को भास्करन नायर के प्रति विशेष आदर होगा। साथ ही उनकी पार्टी से भी ममता होगी। ऐसे आदरणीय व्यक्ति जो चाहें करें उनके आराधक उसका समर्थन करेंगा। माधविकुट्टी को भी बार बार ऐसा लगा है। इसलिये ही वह राधाकृष्ण की बातें और पिता की बातें चुपचाप सुनती रही।

अब भी खत लिखने से रोकने का धैर्य नहीं आया। इसका कारण...।

और छः महीने बीत गये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह बहुत दुबली हो गयी। भोजन और दवा केलिये रुपये कभी पर्याप्त नहीं। पर केवल वे काली खिली, आत्मा में डुबकी लगायी आँखें दुबली नहीं हुई। घर से माता पिता जब भी आते, घर में होनेवाली व्यंग्य भरी बात-चीत के बारे में मन की वेदना के बारे में ही सुनने को मिलता। माता पिता को भी अपने साथ ठहराने की इच्छा है। पर नहीं हो सकता। माँ की जायदाद विवाह केलिए गिरवी रखते समय यही आशा थी कि किसी न किसी दिन वापस ले सकेंगे। वह सपना दूर हटता जा रहा है...

उस दिन चाँदनी भूमि के हृदय की ओर बह रही थी। मानों जान बूझकर आँगन में साथ बैठने की इच्छा कुट्टप्पन ने प्रकट की। माधविकुट्टी आराम कुरसी आँगन में ले आयी। उन्हें उस पर बिठाया। वे ऊपर आकाश की ओर देखते रहे। वह पास सफेद बालू पर बैठी। चाँद के पास चार-पाँच फीट दूरी पर एक सुन्दर विशुद्ध तारा चमक रहा था।

कुट्टप्पन ने उसकी बाँहें पकड कर धीरे से पूछा :

"तुझे दुख नहीं होता ?" उसने आँखें फाडकर देखा। "क्यों ?" उसने पूछा। धीमी आवाज़ में उसने पूछा :

'कितने दिन हुए साथ साथ लेटे" भरी आँखें ! और फटकते अधरों से उसने कहा : "मुझे इस का दुख नहीं। यह शरीर रोग मुक्त होकर स्वस्थ हो जाये। मुझे कोई इच्छा नहीं। यह शरीर स्वस्थ हो जाये और अन्त तक मेरे पास रहे बस।"

उसने उनके हाथों से आँखें लगायी।

वह शुष्क चर्मावृत हड्डी सिंच गयी...।

बहुत देर तक वह सिंचती रही।

उन्होंने पूछा :

"माता पिता से नफरत है ?

उसने चेहरा उठाया।

"क्यों ?"

"मेरे साथ तेरी शादी कराने से।"

उसका चेहरा निष्प्रभ हो गया। हेमन्त काल के बादल की तरह।

उसने कहा

"माता पिता ने कोई गलती नहीं की। मैं उनकी बेटी हूँ। यह संपत्ति मेरेलिये मिली है। कोई भी अपराध किये बिना अन्त तक जीना चाहती हूँ।......

उन्होंने उसकी आँखों पर हाथ फेरा। आँसू पोंछ लिया। मुख झुकाकर उसका माथा चूम लिया।

उसका चेहरा चमकने लगा। उन्हें ऐसा लगा कि वैशाख का आकाश अधिक खुलकर हँस रहा है। हजारों तारे एक टिमटिमाते हैं। हृदय को मथनेवाले प्रकाश से भूमि और भी विकारवती

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दखाई पड़ी । सभी पत्तों और लताओं में एक नयी चंचलता के इन्द्रजाल की प्रतीति । आवजें चिडियों की लगती है । अव्यक्त होने से ऐसा लगा कि रात कोई मंत्र जप रही है। वे दोनों आत्मायें विस्मृति में मग्न थी ।

तब ......

तब, वह चौंक उठी । फाटक पर एक मोटर कार आकर रुकी । उस ओर देखा । दरवाजे खोलने और बन्द करने की आवाज. कुट्टप्पन ने देखा, माधवि कुट्टी कुछ पीछे हटी । कोई आ रहा है । चाँदनी में, एक अधिकारी के समान । दूर से आनेवाले एक यात्री के समान । वह भास्करन नायर है ।......भास्करन कुट्टि नायर एम. एल. ए. ।

कुट्टप्पन ने जल्दी उनके निकट आने की प्रतीक्षा की । वे पास आये । कुट्टप्पन ने हाथ जोडा । भास्करन नायर ने प्रत्यभिवादन किया ।

माधवि कुट्टी चार कदम हट गयी । कुट्टप्पन जल्दी छाती पर हाथ रखकर कुरसी पर बैठा । हाँफते देख कर माधवि कुट्टी ने उसे थाम लिया । सामने के मान्यातिथि से, अपनी धँसी आँखें यथाशक्ति उठाकर कुट्टप्पन ने हाँफते हुए कहा :

"जल्दी उठा तो हाँफने लगा । बस...

वह एक क्षमानुरोध था, अतिथि के आने पर बैठ जाने का । "ओ, इसमें क्या रखा है ? बीमारी की हालत में उतनी मर्यादा की जरूरत नहीं । क्षमा माँगने की भी जरूरत नहीं ।

'माधवि कुट्टी, एक कुरसी—" कुट्टप्पन के कह चुकने के पहले ही भास्करन नायर बरामदे से एक कुरसी लाकर बैठ गया ।

उन्होंने माधवि कुट्टी को देखा । बडी मर्यादा से बडे स्नेह से ।

उसने सभी भाव भेदों को संभाल लिया ।

"डेढ साल से कोई चैन नहीं"— कुट्टप्पन ने कहा ।

"सब कुछ जानकर ही आया हूँ"— भास्करन ने पति और पत्नी को बारी-बारी से देखा ।

उन दोनों ने दो पल के लिये उन्हें देखा । "सब कुछ जानकर ही आया है" । प्रेम भरा वाक्य जिससे व्यक्त हो रहा था कि उनके मन में उन दोनों को बडी चिंता है । इस विचार ने दोनों के मन में कृतज्ञता जगा दी कि एक बडे आदमी उनका ध्यान रखते हैं ।

फिर वे बातें करते रहे । अपने जीवन के कुछ सत्य पति और पत्नी ने बताये । भास्करन नायर ने अपने सार्वजनिक क्षेत्र के कर्मों की कथायें बतायीं । थोडे मिनटों में वे चिर परिचित हो गये । सभी औपचारिकतायें जैसे उस चाँदनी में घल गयी । मानव जीवन वहाँ खुले पडे हैं । माधवि कुट्टी ने कुछ सँभाला । उसने आशा की कि एक पुरानी स्मृति

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का किवाड खुलने का अवसर जीवन में कभी न आये।

बीच में एक गिलास चाय माधवि कुट्टी ने उनको दिया। कुट्टप्पन हाँफने लगा। खाँसा। लगातार खाँसा। बोलने के बीच में सिसका बंध गयी। भास्करन नायर ने याद दिलायी कि ज्यादा मत बोलना। वे 'एरणाकुलम' से आ रहे हैं। वहाँ मजदूरों का एक अधिवेशन था। उसमें भाग लेकर आते हैं। कुछ दिनों से यहाँ आ नहीं सका। सारी बातें समय समय पर जान लेते रहे थे।

वे विदा लेने लगे।

कुट्टप्पन नायर को फिर खाँसी आ गयी। लगातार खाँसने लगा। दवा लाने के लिये माधवि कुट्टी से कहा। वह अन्दर गयी।

लौट आये तो देखा भास्करन नायर झुककर कुट्टप्पन के हाथों को अपने हाथों में धरा है।

फिर धीरे से कहते हैं:—'बुरा न मानना। यह।" ...... "नहीं चाहिये" कुट्टप्पन कहते हैं।

"ऐसा नहीं मेरी पार्टी द्वारा तुम्हारे लिये की जानेवाली सहायता है यह। हम जानते हैं कि आप हमारे बन्धु हैं।" भास्करन नायर कहते हैं।

माधवि कुट्टी आंगन में उतरी। भास्करन नायर सीधे खडे हुए। माधवि कुट्टी ने देखा कि पति हाथ में कुछ दबाया हुआ है।

दवा दी।

खाँसी, खाँसी, खाँसी......

भास्करन ने विदा ली, पति और पत्नी से। माधवी कुट्टी ने जान बूझकर निर्विकार भाव से हाथ जोडकर जाने की अनुमति दी।

वे गये।

कुछ समय।

"उन्होंने सौ रुपये दिये।" कुट्टप्पन सहमते हुये कहा।

उसकी आँखें खुली थीं। उन्होंने देखा, उसकी आँखें भर आयी थीं।

"हठ से मुझे यह पैसा दिया। इनकार करने का कोई मार्ग न था। उन्होंने एक अपराधी के स्वर में कहा कि हमारी पार्टी का है यह रुपया।"

वह कुछ नहीं बोली।

सन्नाटा।

चाँदनी की शोभा जैसे कम हो गयी।

वह उनके पास बैठी।

कुट्टप्पन को ऐसा लगा कि दूर कहीं एक चिडिया रो रही है। उन्होंने ध्यान दिया। नहीं, पास बैठी वह सिसक कर रो रही थी।

(क्रमशः)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रममेव जयते

जग-हित नूतन वर्ष समागत
जन जन तन मन अति ही पुलकित,
अवनी-अंबर मुखरित नारा,
मधुरिम मोहक यह स्वर-धारा।
'श्रममेव जयते'
श्रममेव जयते'।

देव, केरलीय

प्रिय दर्शिनी- गाँधी का नारा
जन-हित निःसृत अमृत धारा,
श्रम ही श्रम सब करें निरंतर
श्रम-जल सिंचित हो भू उर्वर।
'श्रममेव जयते'
श्रममेव जयते'।

अति दरिद्र यह देश हमारा
ज्ञात नहीं यह, कौन सहारा,
वेकारी का भीषण-तांडव
भटक रहा रोगातुर मानव।
'श्रममेव जयते'
श्रममेव जयते'।

क्रूर पतझड हो निष्कासित
वासन्तिक छबि से जग दीपित,
पावे युग-संकट से मोचन
श्रम ही श्रम हो, जीवन-दर्शन।
'श्रममेव जयते'
श्रममेव जयते'

नाद-ब्रह्ममय यह शुभ 'नारा'
प्राणाधिक हम सबको प्यारा,
जगहित नूतन वर्ष समागत
जन जन तन मन हो आमोदित।
'श्रममेव जयते'
श्रममेव जयते'।

वसुंधरा हम सबकी प्यारी
भारत-भू है जग में न्यारी,
हम क्यों घूमे, बन आवारा
श्रम ही श्रम हो, ध्येय हमारा।
'श्रममेव जयते'
श्रममेव जयते'।

*

हिन्दी संस्कृत विद्याभवन,
कोट्टयम, केरल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आठवाँ अखिल भारतीय हिन्दी कार्यकर्त्ता शिविर

अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ के तत्वावधान में अखिल भारतीय हिन्दी कार्यकर्त्ता शिविर दिनांक २–३-१९८२ से ६–३–१९८२ तक मैसूर हिन्दी प्रचार परिषद्, कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति और दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, कर्नाटक शाखा के सहयोग से बैंगलूर में आयोजित किया। शिविर में सदस्य संस्थाओं के करीब ४० प्रतिनिधियों ने भाग लिया। श्री० के. टी. गर्वासीस और एन. कुमार पिल्लै ने शिविर में केरल हिन्दी प्रचार सभा का प्रतिनिधित्व किया।

शिविर का उद्घाटन कर्नाटक के राज्यपाल श्री० गोविन्द नारायण जी ने किया। (उद्घाटन भाषण अन्यत्र) समारोह की अध्यक्षता अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ के अध्यक्ष डा० गंगाशरण सिंह ने की। आप ने अपने भाषण में कार्यकर्त्ताओं के सामने आनेवाली समस्याओं का विश्लेषण करते हुए हिन्दी के प्रचार काय को आगे बढ़ाने के लिए कई सुझाव दिये।

श्री० जयनारायण तिवारी (सचिव, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय) ने समापन समारोह में भाषण दिया। ❀

घातक रिपोर्ट

इस (ईश्वर भाई पटेल) कमेटी का रिपोर्ट राजभाषा हिन्दी केलिए घातक है। आन्ध्र प्रदेश सरकार ईश्वर भाई पटेल कमेटी के सुझावों को पहली कक्षा से दसवीं कक्षा तक धीरे-धीरे अमल में ला रही है। जब कक्षा ६ से ये सुझाव अमल में आयेंगे तब वहाँ तहलका अवश्य मच जायेगा।

(हिन्दी प्रचार समाचार–जनवरी ८२)

11-03-85

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंग्रेजी, हिन्दी और दक्षिण की भाषायें

श्री० गोविन्द नारायण

राज्यपाल, कर्नाटक

माननीय डा० गंगाशरण सिंह जी, अध्यक्ष, अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ, श्री० बी. रामसंजीवैया, संयोजक एवं महामंत्री, डा० नागप्पा आल्वाजी, श्री० नेनेजी, श्रीमती मुत्तुबाई माने, श्रीमती शान्ताबाई, मंत्री, कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति, अन्य कार्यकर्तागण, हिन्दी प्रेमी गण, उपस्थित भाइयो और बहिनो।

आज अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ के तत्वाधान में आठवें अखिल भारतीय हिन्दी कार्यकर्ता शिविर को इस सुन्दर बैंगलूर नगर में उद्घाटित करते हुये मैं अपने को अत्यन्त सम्मानित समझता हूँ और मुझे इस बात का हर्ष है कि ऐसा सुन्दर अवसर आप सबने मुझे दिया कि आप सबसे मिलकर मैं स्वयं कुछ जानकारी हासिल कर सकूँ और कुछ अपने विचार आपके समक्ष रख सकूँ। माननीय श्री० गंगाशरण सिंह जी को तो मैं दसियों वर्षों से जानता हूँ और उन्होंने जो हिन्दी की निरन्तर सेवा की है वह उल्लेखनीय है। मुझे हर्ष है कि अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ उन्हीं के नेतृत्व में कार्य कर रहा है। मुझे इस बात का भी हर्ष है कि कर्नाटक राज्य में तीन स्वयंसेवी संस्थायें बड़ी रुचि और लगन के साथ हिन्दी के प्रचार और प्रसार का काम प्रेमपूर्वक सालों से करती आ रही हैं। मुझे उनके दीक्षांत समारोहों में जाने का अवसर प्राप्त हुआ है और उन अवसरों पर मैंने अपने कुछ विचार हिन्दी की गति को और अधिक बढाने की दिशा में रखे थे। बैंगलूर नगर में एक और महत्वपूर्ण सम्मेलन आयोजित हुआ था जिसमें अपने देश की सभी भाषाओं को एक ही लिपि में लिखने के सुझाव पर विचार-विमर्श हुआ था। आपको मालूम ही होगा कि परम पूज्य आचार्य विनोबा भावे जी ने ऐसा सिलसिला शुरू भी कर दिया है कि अपनी मासिक पत्रिकायें देश के सभी राज्यों में राज्य की भाषाओं में लेकिन देवनागरी लिपि में भेजे। मुझे ऐसा अनुभव हुआ है

बैंगलूर में मार्च ८२ में आयोजित आठवें अखिल भारतीय हिन्दी कार्यकर्ता शिविर के उद्घाटन सम्मेलन में दिया गया भाषण।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आठवाँ अखिल भारतीय हिन्दी कार्यकर्ता शिविर, बंगलूर

अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ के आठवें अखिल भारतीय हिन्दी कार्यकर्ता शिविर (बंगलूर) का उद्‌घाटन कर रहे हैं कर्नाटक के माननीय राज्यपाल श्री० गोविन्द नारायण। बीच में बैठे हैं मैसूर हिन्दी प्रचार परिषद् के अध्यक्ष श्री० नागप्पा आल्वा।

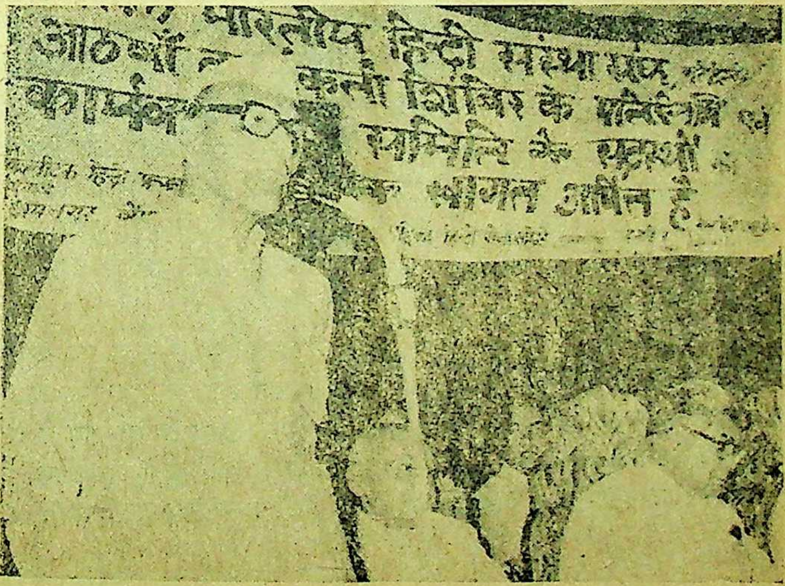

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

उद्‌घाटन समारोह में स्वागत भाषण दे रहे हैं अ. भा. हि. संस्था संघ के कोषाध्यक्ष श्री० गो. प. नेने।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कैसे दुर्भाग्य की बात होगी कि आगे आनेवाले समय में भी देश के एक कोने के नागरिक देश के दूसरे कोने के नागरिकों से एक साधारण भाषा में बातचीत न कर सकें।

कि देश की अन्य भाषाओं को समझने और सीखने में एक लिपि होने से काफी सहायता मिलती है। मेरा निजी अनुभव भी है कि जबसे मैं कर्नाटक राज्य में राजपाल के पद पर आया मैंने पूरा प्रयास किया कि तेज़ी से कन्नड भाषा सीख लूँ। यहाँ की कई संस्थाओं द्वारा तीन–चार सुझाव मेरे सामने आये। उन सबमें से जो सुझाव मुझे सबसे सहज लगा वह था कन्नड भाषा सीखना अपनी निजी देवनागरी लिपि द्वारा। यह विचार आपके सामने मैं इसी स्तर पर छोड़ देता हूँ।

मुझे यह जानकर हर्ष होता है कि देश में अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ की स्थापना हुयी है और इसकी सदस्यदा देश के लगभग सभी राज्यों की हिन्दी संस्थाओं ने प्राप्त की है। इन्हीं सदस्य संस्थाओं के प्रतिनिधि आज यहाँ मौजूद हैं और उनका मैं हार्दिक स्वागत करता हूँ और आप सबका अभिनन्दन भी करता हूँ।

सर्वप्रथम यह विचार तो सभी देशवासियों को अपने सामने रखना है कि देश की एकता और एकता और संगठन के लिए सभी देशवासियों के लिए एक आम भाषा का होना अनिवार्य हैं। कैसे दुर्भाग्य की बात होगी कि आगे आनेवाले समय में भी देश के एक कोने के नागरिक देश के दूसरे कोने के नागरिकों से एक साधारण भाष में बातचीत न कर सकें। अंग्रेज़ी भाषा का सवाल अकसर सामने आता है। लेकिन यह समझने की बात है कि अंग्रेज़ी भाषा का प्रश्न तो एकदम भिन्न है। उससे और देश की समान भाषा से कोई संबंध हो ही नहीं सकता। देश में अंग्रेज़ी जानने-वालों की संख्या केवल दो-तीन प्रतिशत ही है और यह आपस की बातचीत का समान माध्यम नहीं बन सकती। उसके साथ साथ यह भी समझना है कि हमें अंग्रेज़ी भाषा का विरोध नहीं करना है क्योंकि उसके द्वारा हम सारे विश्व से अपना संबंध बनाये रखना चाहते हैं। हम संसार से भिन्न होकर नहीं रह सकते। इसीलिये अंग्रेज़ी भाषा अपने देश में रहे, फले-फूले, पनपे और विद्वानों, वैज्ञानिकों और अनुसंधान के क्षेत्रों में, विश्वविद्यालयों में उसका पूरा पठन-पाठन, अध्ययन और उपयोग होता रहे। अंग्रेज़ी भाषा में और देश की समान भाषा में कोई विरोधाभास का सवाल ही नहीं उठता। न ही यह प्रश्न उठाना चाहिये कि किसी भाषा का प्रचार इसलिये किया जा रहा है कि अंग्रेज़ी को हटाया जाये। अंग्रेज़ी अपने स्थान पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोई कारण नहीं कि हिन्दी अपने विकास में देश की अन्य भाषाओं में से शब्द लेकर अपने में सम्मिलित न करे।

रहे और देश की समान भाषा अपने महत्वपूर्ण स्थान पर रहे।

इसी संदर्भ में यह भी कहना आवश्यक है कि देश में सभी भाषायें जो प्रचलित हैं वे प्राचीन हैं, महत्वपूर्ण हैं और उन सबका हमें आदर करना है और देश की उन्नति में उन सबको आगे बढ़ने का, फलने फूलने का और पनपने का पूरा मौका मिलना चाहिये। देश की सभी भाषाओं में साहित्य के भंडार भरे हैं। उनसे हम सबको परिचित होना हमारे हित में होगा और यह तभी सम्भव होगा जब एक भाषा और साहित्य का अनुवाद दूसरी भाषाओं में सुयोजित और नियोजित ढंग से किया जाये।

जब हिन्दी की बात उठती है तो हमें निर्भीकता से इस बात को मान लेना चाहिये कि यदि हिन्दी को लोकप्रिय बनाना है और इसके उपयोग को सभी क्षेत्रों में बढ़ाना है तो हिन्दी को भी और अधिक विकसित होना पड़ेगा। अंग्रेज़ी भाषा ने भी कई एक अन्य भाषाओं से शब्द लिये हैं। कोई कारण नहीं कि हिन्दी अपने विकास में देश की अन्य भाषाओं में से शब्द लेकर अपने में सम्मिलित न करे। इससे हिन्दी की मान्यता और भी अधिक बढ़ सकेगी और उसके प्रचार और प्रसार में सभी को और सहायता मिलेगी।

हम सबको एक गम्भीर दृष्टिकोण की तरफ यथेष्ठ ध्यान देना है। भाषा किसी पर थोपी नहीं जा सकती। भाषा का प्रचार और प्रसार प्रेम द्वारा ही किया जा सकता है। भाषा वैमनस्य या विरोध का कारण नहीं बनायी जा सकती। भाषा तो हृदयों को समीप लाने का और एक-दूसरे में प्रेम भाव फैलाने का माध्यम ही होनी चाहिये। इसीलिये हिन्दी के प्रचारकों को बड़ी सावधानी बरतनी है और अपने कार्य में किसी के हृदय को ठेस न पहुँचायें बल्कि अपने काम में संयम, प्रेम और सद्व्यवहार द्वारा ही लोगों को आकर्षित करें और हिन्दी की मान्यता को समझायें और हिन्दी प्रेमियों का यथेष्ट आदर करें।

हिन्दी के विषय में दक्षिण भारत में जो विभिन्न संस्थाओं द्वारा कार्य किया जा रहा है वह सराहनीय है। मुझे दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास के दीक्षांत समारोह में भी भाग लेने का अवसर मिला था। मैंने वहाँ भी देखा था कि हज़ारों की संख्या में लोग स्वेच्छापूर्वक हिन्दी को अपना रहे हैं और विभिन्न स्तरों की उपाधियाँ प्राप्त कर रहे हैं। लेकिन दक्षिण भारत निवासियों के हृदय की बात समझना अत्यन्त आवश्यक है। मुझे उनके बीच में रहने का लगभग साढ़े पाँच साल का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अवसर प्राप्त हुआ—एक साल हैदराबाद में और लगभग साढ़े चार साल यहाँ। छः महीने मैं केरल में भी काम कर चुका हूँ। एक बात जो इन क्षेत्रों में नवयुवकों और नवयुवतियों के हृदयों में उठती है उसका जवाब हमें देना होगा। वह यह कि यदि हिन्दी राष्ट्रभाषा रहे और सभी दिशाओं में हिन्दी माध्यम से काम होने लगे तो हिन्दी क्षेत्रों के विद्यार्थियों और नवयुवकों और नवयुवतियों को अहिन्दी क्षेत्रों के विद्यार्थियों और नवयुवकों और नवयुतियों के मुकाबले में अनुचित सहायता और लाभ प्राप्त हो जायेगा। इस बात से हमें इस नतीजे पर पहुँचना चाहिये कि भाषा के मामले में केवल तर्क और कानून ही नहीं चल सकता। भाषा का घनिष्ठ सम्बन्ध हृदय की भावनाओं से मस्तिष्क को सूझ-बूझ से ही लगता है और इसको हम तर्क एवं विधान से नहीं सुलझ सकते। हमें इन बातों की गहराई तक पहुँचना होगा और यदि हम हिन्दी को दक्षिणी क्षेत्रों में और आगे बढ़ाना चाहते हैं और अहिन्दी क्षेत्रों में उसके प्रचार और प्रसार को बढ़ाना चाहते हैं तो हमें अनिवार्य रूप से हिन्दी क्षेत्रों को बाध्य करना होगा कि वे तीसरी भाषा के रूप में किसी दक्षिणी भाषा को मान्यता दें और उसके पठन-पाठन को प्रधानता दें। आप देखेंगे कि ऐसा करने के फलस्वरूप हिन्दी स्वयं अहिन्दी क्षेत्रों में भी अपनाई जाने लगेगी और वह अपने महत्वपूर्ण स्थान तक सहजता से पहुँच सकेगी।

> हमें अनिवार्य रूप से हिन्दी क्षेत्रों को बाध्य करना होगा कि वे तीसरी भाषा के रूप में किसी दक्षिणी भाषा को मान्यता दें।

इसी सिलसिले में एक और प्रश्न उठता है, और वह यह है कि हिन्दी को किस रूप में प्रचलित कराया जाये। एक भाषा तो ऐसी होती है जिसका उपयोग साहित्य में होता है और उसका रूप ही अनोखा होता है। दूसरी वही भाषा जो साधारण जीवन में बोलचाल में काम आती है उसका रूप अत्यन्त साधारण और सहज होता है। जिस उद्देश्य से हम हिन्दी के प्रचार और प्रसार के कार्य को बढावा दे रहे हैं उसके हित में यही होगा कि हिन्दी के साधारण रूप को अपनाया जाये और वह रूप ऐसा हो जो आम लोगों में सहजता से समझा जा सके। यही वह रूप होगा जिसको कि सरकारी कामकाज में भी अपनाया जाये क्योंकि सरकारी कामकाज में भी यही आवश्यकता है कि सरकारी नीतियों और कार्यक्षेत्रों के लेखेजोखों को साधारण जनता सहजता से समझ सके। उस ओर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अवश्य आपके सम्मेलन को ध्यान देना होगा।

आपने इस शिविर का आयोजन दक्षिण भारत में बँगलूर नगर में किया उसकी मैं सराहना करता हूँ। यहाँ आये हुये महानुभाव, विशेषज्ञ और प्रतिनिधि यहाँ की भावनाओं को अच्छीतरह समझ सकेंगे। वैसे तो कर्नाटक राज्य एक प्रगतिशील राज्य है और यहाँ संकीर्णता नहीं दिखाई पड़ती। बँगलूर नगर में भी कन्नड भाषियों के अतिरिक्त तमिल, तेलगू, मलयालम, मराठी, हिन्दी, उर्दू और बंगाली बोलनेवाले अधिक संख्या में हैं। प्राचीन काल से मैसूर के महाराजाओं के समय से मैसूर विश्वविद्यालय में उर्दू का एक विभाग भी चला आ रहा है। फिर भी कन्नड भाषा अपना महत्व रखती है, प्राचीन है, और इसमें ऊँचे दर्जे का साहित्य भरा पड़ा है। इसका हमें आदर करना है। कन्नड और संस्कृत का परस्पर प्रेम सदियों से चला आ रहा है। उससे हमें कुछ सबक सीखना है। अपनी नीति और कार्यकलापों की योजनाओं की दिशा में सुधार लाने में और हिन्दी के प्रचार और प्रसार के काम में तेज़ी लाने के उपायों को सोचने में आपको यहाँ काफी सफलता मिलेगी और जिन निष्कर्षों पर आप यहाँ पहुँचेंगे उन्हीं को अन्य अहिन्दी क्षेत्रों से वहाँ की परिस्थितियों को देखते हुये थोड़ी बहुत कांट-छांट करके अपनाने में आपको सहायता मिलेगी।

जिस पवित्र कार्य को आपने अपने हाथ में लिया है और जिस चेष्टा से आप यहाँ एकत्रित हुये हैं उन सब में आपको पूर्ण सफलता प्राप्त हो ऐसी मैं कामना करता हूँ और इसी के लिये मैं भगवान से प्रार्थना करता हूँ। मुझे पूरा भरोसा है कि आपके विचार विमर्श से इस कार्य में जो मार्गदर्शन होगा वह देश के लिये पूर्ण रूप से हितकर होगा और देश की एकता और संगठन और परस्पर प्रेम और सहानुभूति कायम रखने में पूर्ण रूप से सहायक होगा। ●

जय हिन्द!

दीवार नहीं, दरवाजा

भाषा दीवार नहीं होती। वह दरवाजा होती है। खिडकी होती है। वह हम सब को जोडती है।

अटल बिहारी वाजपेयी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

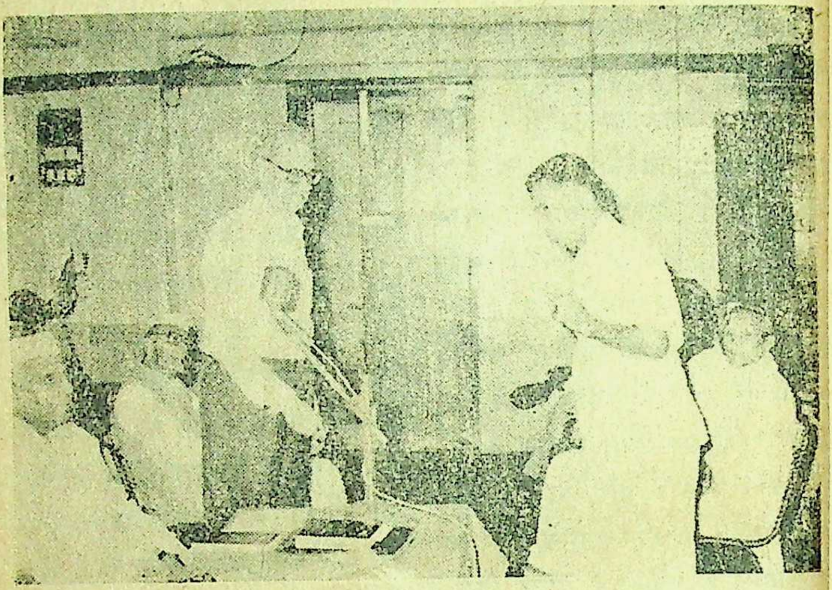

श्री० जयनारायण तिवारी, सचिव, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय से प्रमाण पत्र ग्रहण कर रहे हैं के. हि. प्र. सभा के प्रतिनिधि श्री० एन कुमार पिल्लै ।

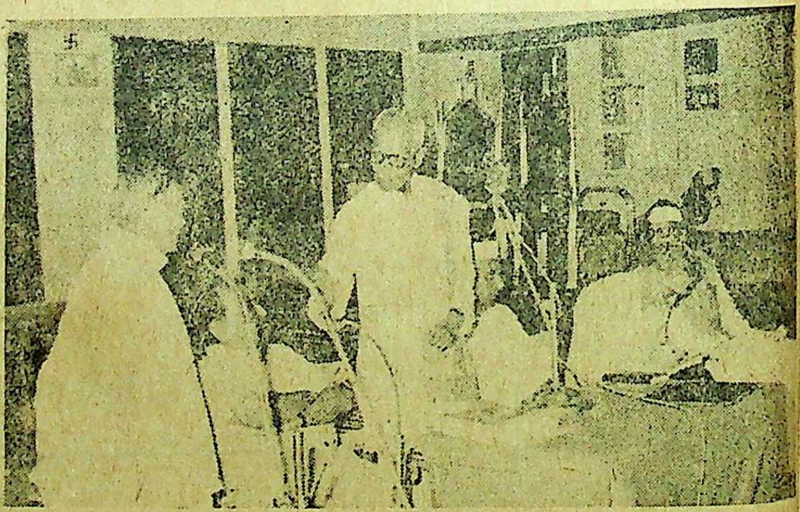

समापन समारोह में कन्नड भाषा में अध्यक्षीय भाषण दे रहे हैं कर्नाटक के उच्च न्यायालय के भूतपूर्व मुख्य न्यायाधीश श्री० निट्टूर श्रीनिवास राव जी। भाषण का अनुवाद हिन्दी में प्रस्तुत कर रहे हैं प्रो० नागप्पा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं थका बटोही

बी. के. बालकृष्णन नायर एम. ए.

धोती एक बिछाकर मैं,
आराम करता इस बसस्टान्ड पर,
एक अनाथ पथिक मैं ।
बस के दीर्घ विलंब का
मुझे ज़रा भी नहीं ख्याल,
एक अनाथ पथिक मैं ।
दौड़ते हुए आते हैं,
कुचल कुचल कर चढ़ते हैं,
ऊपर एक दूसरे के
पर क्या कोई क्षमापण !
एक अनाथ पथिक मैं ।।
लौह-खंभे का एक सहारा
पाकर जय जय बोला मैं
दोनों हाथ ऊपर डंडे पर—
लटक रहा मैं थका बटोही ।

जी जान से प्रार्थना करता
हे भगवान दया करो हम पर
बाल-बच्चों के रखवाले हम
पार-कराओ वैतरणी
मैं एक अनाथ पथिक बटोही ।।

सेन्ट जोसफ्स बी. एच. एस.
तलशेरी, केरल–६७० १०१

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अम्मावन की बिदाई

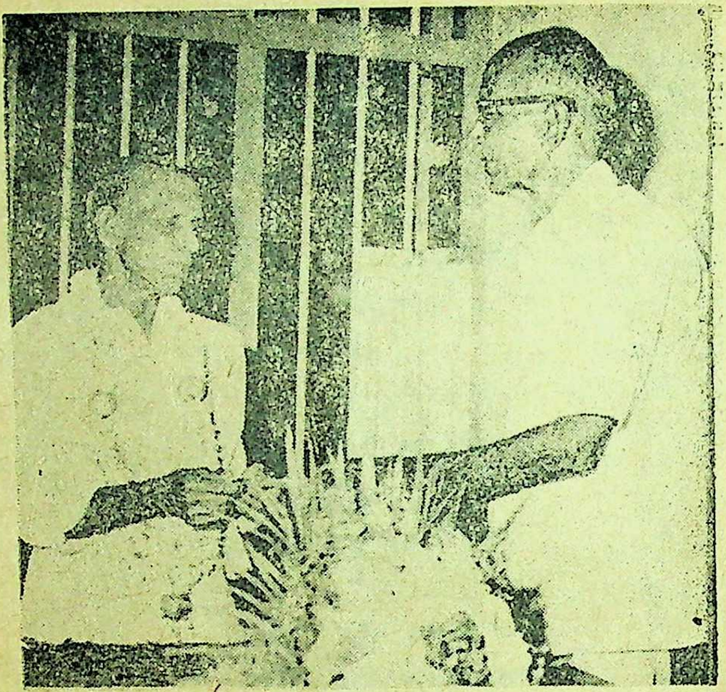

केरल हिन्दी प्रचार सभा के चौकीदार पद से सेवानिवृत्त होनेवाले श्री० ए. वेलुपिल्लै को संतोषधन प्रदान कर रहे हैं सभा के अध्यक्ष श्री० एस. वी. कुक्किल्लाया। श्री० पिल्लै को सभा के कर्मचारी ही नहीं, प्रचारक बन्धु भी प्रेम से अम्मावन (मामाजी) पुकारते हैं।

सभा कार्यालय के कर्मचारियों की ओर से रकम प्रदान कर रही हैं श्रीमती वी. शान्तकुमारी अम्मा (अधीक्षक, केरल हिन्दी प्रचार सभा) बीच में बैठे हैं प्रो० एम. जनार्दनन पिल्लै

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

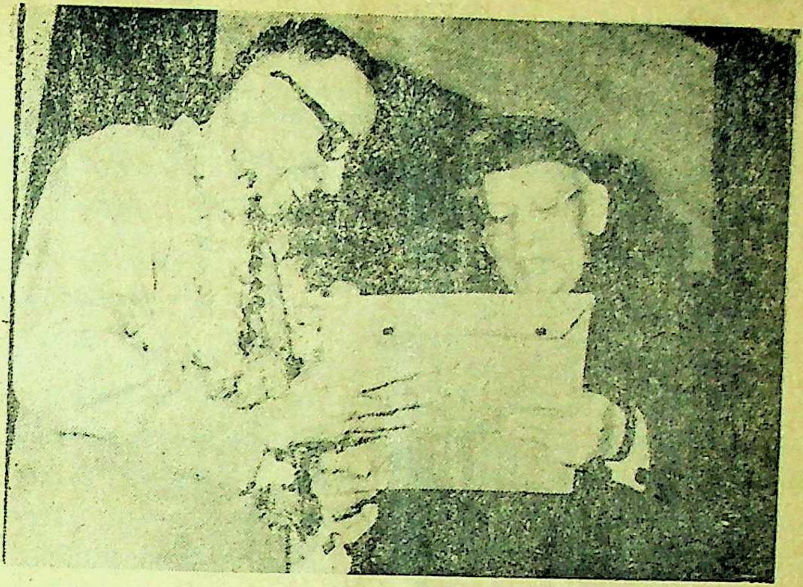

केरल हिन्दी प्रचार सभा के भूतपूर्व अध्यक्ष एवं विख्यात विद्वान डा० पी. के. नारायण पिल्लै उत्तर प्रदेश के माननीय राज्यपाल श्री० सी. पी. एन. सिंह से कालिदास पुरस्कार ग्रहण कर रहे हैं।

श्री० स्वयंभू भट्टाचार्य (क्षेत्रीय हिन्दी अधिकारी, पूर्व क्षेत्र), शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार सपरिवार ३-३-१९८२ को केरल हिन्दी प्रचार सभा भवन में पधारे। साथ दिखायी दे रहे हैं डा० पी. के. नारायण पिल्लै (भूतपूर्व अध्यक्ष, केरल हिन्दी प्रचार सभा) और प्रो० एम. जनार्दनन पिल्लै (कोषाध्यक्ष, केरल हिन्दी प्रचार सभा (दायें से द्वितीय और प्रथम)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"प्रेमचन्द की श्रेष्ठ कहानियाँ"

सम्पादक: डा० इन्द्रनाथ मदान
प्रकाशक: हिन्द पाकेट बुक्स प्राइवेट लिमिटेड, जी० टी० रोड, शाहदरा, दिल्ली-३२
पृष्ठ : १७६
मूल्य : चार रुपये

प्रेमचन्द-साहित्य के मर्मज्ञ विद्वान डा० इन्द्रनाथ मदान द्वारा 'प्रेमचन्द जन्म शताब्दी' के शुभ अवसर पर सम्पादित उनकी तेरह कहानियों का यह छोटा-सा संकलन न केवल पाकेट-बुक्स के पाठकों का ही मनोरंजन कर रहा है, अपितु हिन्दी के पाठकों को प्रेमचन्द के उत्कृष्ठ कहानी-साहित्य का भी परिचय कर रहा है।

उस संकलन में जो कहानियाँ संकलित की गई हैं, वे क्रम से इस प्रकार हैं—'कफ़न', 'दो बहनें', 'नशा' 'मिस पद्मा', 'ईदगाह', 'सतरंज के खिलाड़ी' 'आत्माराम', 'मनोवृत्ति', 'दो बैलों की कथा' 'पूस की रात', 'लेखक', 'मोटे राम जी शास्त्री', 'जुर्माना'। वैसे तो यह सभी कहानियाँ अत्यधिक उच्च कोटि की हैं और कहानीकार प्रेमचन्द की उत्कृष्ट कहानी कला का सही प्रतिविम्ब प्रस्तुत करती है। "किन्तु यदि कहानी-कला के उत्कर्ष की दृष्टि से देखें तो इस संकलन की 'कफन', 'नशा', 'शतरंज के खिलाड़ी' तथा 'पूस की रात' आदि कहानियाँ न केवल हिन्दी कहानी-साहित्य अपितु विश्व कहानी-साहित्य में अपना स्थान पाने का अधिकार रखती हैं। मुंशी प्रेमचन्द को उपन्यास-सम्राट की पदवी तो प्राप्त है ही, किन्तु उनकी यह कहानियाँ हमें विवश करती हैं कि उनको कहानी सम्राट की भी पदवी क्यों न दे दी जाय? कारण इसका यह है कि उनकी 'कफन' तथा 'पूस की रात' कहानियाँ विश्व की श्रेष्ठतम कहानियों में से है। यह कहानियाँ हमें कुछ सोचने को विवश करती हैं कि हम उन्हें उपन्यास-सम्राट कहें या कहानी-सम्राट अथवा दोनों ही। वैसे उन्हें दोनों का सम्राट कहना ही उपयुक्त होगा।

यह प्रेमचन्द की कहानियों का प्रतिनिधि कहानी संग्रह है। इसके माध्यम से प्रेमचन्द की कहानी-कला को समझा और आत्मसात् किया जा सकता है।

दुर्गेश चन्द्र शर्मा
संयोजक एवं अध्यक्ष, हिन्दी परिषद
रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इकले चलना सीख चुकी हूँ

सुगतकुमारी

[घोर विपिन में अकेली भटकनेवाली परित्यक्ता दमयन्ती की मनस्थिति इस कविता में झलकती है ।]

इकले बैठना सीख चुकी मैं !
घनीभूत घोरान्धकार में,
निबिड विटपि में,
अपने ही इकले तरुवर के नीचे,
बिना डरे किंचित भी पीछे से आते
उस काल नाग से,
आखेटक से,
बिना जोर से रोये कलपे
इकले बैठना सीख चुकी मैं ।

इकले चलना सीख चुकी मैं
इसी मार्ग से
बिन थामे तव दायाँ हाथ
अति दुर्गम इस पगडंडी से
बिना लक्ष्य के
नतमस्तक हो
इकले चलना सीख चुकी मैं ।

साथ साथ हँसने को
अनुगायन करने को
कोई साथ न रहने पर भी
किसी केलिये नहीं विशेष कर
किसी बधिरता के समक्ष
एक अलग आवाज बनी रह
अविकसित मम कण्ठनाल से
इकले गाना सीख चुकी मैं ।

इकले सोना सीख चुकी मैं
बिना स्वप्न के
बिना अश्रु के
अर्धरात्रि को चौंक पडने पर
तेरा कर उपधान किये बिन,
तपते माथे पर
प्रिय निद्रा-गुटिका का चुंबन
अंकित कर
इकले सोना सीख चुकी मैं ।

इकले मरना सीख चुकी मैं
बिना रुदन के चारों ओर,
सिर तव गोदी में रखे बिन,
बिन पिये ही बिन्दु मात्र जल
तेरे प्यारे हाथों से,
बिना मिलाये अपनी आँखें
तेरी आँखों में,
हाय, बिदा भी लिये बिना
इकले मरना सीख चुकी मैं ।

रूपान्तर : **के. जी. बालकृष्ण पिल्लै**

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महाविद्यालयों की युवशक्ति प्रौढ शिक्षा में लगायें

डा० एन. ए. करी
उपकुलपति, केरल विश्वविद्याल

केरल विश्वविद्यालय के उपकुलपति डा० करीम ने आग्रह किया कि देश के महाविद्यालयों की युवशक्ति का सदुपयोग प्रौढ शिक्षा के क्षेत्र में किया जाये ताकि शिक्षा के वैयक्तिक लक्ष्य के साथ साथ सामाजिक लक्ष्य की भी पूर्ति हो सके। आप ने इस बात पर गहरी चिन्ता व्यक्त की कि गणतंत्र भारत की जनता में दो तिहाई आज भी निरक्षर है।

मार्च १९८२ में केरल विश्व विद्यालय के प्रौढ शिक्षा एवं व्यापन केन्द्र द्वारा महाविद्यालयों के प्राध्यापकों केलिए प्रौढ शिक्षा पर आयोजित प्रशिक्षण शिविर के समापन सम्मेलन में अध्यक्षीय भाषण दे रहे थे डा० करीम।

स्वागत भाषण में केन्द्र के अध्यक्ष डा० के. शिवदासन पिल्लै ने बताया अब देश के ६० विश्वविद्यालय प्रौढ शिक्षा कार्य से संबद्ध हैं और अ विश्वविद्यालय भी इस क्षेत्र पदार्पण कर रहे हैं।

डा० सी. के. रेवम्मा (अतिरि निदेशक, कालेजीय शिक्षा विभा केरल) ने आह्वान किया कि क फल पर आश्रित किये बिना प्रौ शिक्षा के कार्य में भी अध्याप अपना महत्वपूर्ण योग दान दें।

राज्य प्रौढ शिक्षा अधिका श्रीमती कमलाकुमारी ने कहा वि विश्वविद्यालयों के प्रौढ शिक्षा कार्य कर्त्ता अन्य प्रौढ शिक्षा केन्द्रों क उचित सहयोग दें।

श्री० आर. रामचन्द्रन नाय (सचिव, सांस्कृतिक विभाग, केर सरकार) ने श्री० मावेलिक्क अच्युतन की पुस्तक 'शिक्षा क बदलती मुखमुद्रा' का विमोच किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अहसास

डा० मृत्युंजय उपाध्याय

आज तो हद हो गयी बीच सड़क पर ही दोनों उलझ पड़े । पहले तू तू मैं मैं हुई फिर सुधाकर ने चपत लगा दी । उसका क्रोध उबलता ही गया, उसने तड़ातड़ पीटना शुरू कर दिया । आखिर, मीता कबतक बर्दाश्त करती । उसके मन में भी आक्रोश और अपमान का लावा फूट रहा था । उसने कुछ नहीं पाया, तो दाँत से काट लिया सुधाकर को । चलती फिरती सड़क । लोगों का उमड़ता मेला । कुछ काल तक वे कौतुक और मनोरंजन की वस्तु बने रहे, फिर कुछ परिचितों और कुछ अजनबियों के हस्तक्षेप से मामले पर तत्काल पूर्ण विराम लगाना पड़ा । दोनों चुपचाप घर लौटे और अपने-अपने कमरे में पड़ गए । अकसर ऐसा होता आया था और नाव इस मंझधार में आकर फँस गई थी कि किनारे तक पहुँचने के बारे में सोचना कठिन लगता था ।

मीता अपने को कमरे में बंद कर कुछ काल तक पड़े रहना चाहती थी — कुछ सोचना चाहती थी । किसी घटना के बाद उसपर प्रतिक्रिया चलती ही है । यह अलग बात है कि लोगों को अपना दोष दिखाई नहीं पड़ता । पर छिद्रान्वेषण लोगों का स्वभाव होता है । मीता कमरा बंद करने ही जा रही थी कि उसकी बेटी सीमा आ गई और स्कूल के किसी टास्क को हल करने केलिए हठ कर बैठी । आदमी क्रोध में बावला हो जाए, तो उसे उत्तेजित करने केलिए साधारण बात भी काफी होती है । मीता ने कहा— अपना काम खुद करो मुझसे नहीं हो सकेगा । ऐसी बात सुनकर वह और भी जिद्द कर बैठी — 'कर दो न मम्मी । मुझे कल कितनी डाँट पड़ेगी तुम जानती हो ।" यह कह कर सीमा उसका आंचल पकड कर लटक गई । उसका लटकना था कि तड़ाक तड़ाक दो चपत उसके गालों को लाल बना गई । ऊँगलियों के निशान् साफ-साफ उभर आए । सीमा तो अवाक् रह गई । फिर रोती कलपती अपने कमरे में भागी ।

फरवरी का आखिरी सप्ताह चल रहा था । वातावरण में सर्दी का अहसास था । रात को एक रजाई का जाड़ा शेष रह गया था । मीता बाहर एक ऊनी कार्डिगन के साथ गई थी । बाजार में ही सुधाकर से भेंट हो गयी थी । वह एक महीने के बाद दो दिनों के अवकाश में मीता से मिलने आया था और यह घटना घट गई । मीता ने पंखा ऑन पर चला दिया । उसे बड़ी गर्मी मालूम पड़ रही थी । उसे जितनी हवा लगती, उसका मन और भी खराब होता जाता । आखिर उसने पंखा बंदकर दिया और धड़ाम से पलंग पर गिर गई ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सीमा के सुबकने की आवाज आ रही थी, पर उसने उस ओर एकदम ध्यान नहीं दिया। वह रोने लगी-रोती रही-रोते रोते उसकी आँखें सूख गई। वह अपने को हल्का महसूस कर रही थी। पता नहीं चलता था कि ये आँसू पश्चात्ताप के हैं या अपनी दयनीय स्थिति के प्रति गम के। बरसने के बाद जिस प्रकार आकाश साफ हो जाता है, उसी प्रकार मीता का मन शांत हो गया था। वह प्रकृतिस्थ होकर सोचने लगी–वह सोचने लगी–आखिर यह सब क्यों होता है? वह कौन सा बिंदु है, जहाँ हम लोग टकराने केलिए बाध्य हो जाते हैं, जिसे टाला नहीं जा सकता है। क्यों उसकी स्थिति ढलान पर लुढ़क रही उस बिना ब्रेक की गाड़ी की तरह हो जाती है, जिसे चाहकर रोकना मुश्किल हो जाता है। सुधाकर से उसे क्यों एलर्जी रहती है—क्यों सुधाकर की मिश्रीयुक्त वाणी भी उसमें गाल धोलती है—क्यों सुधाकर का प्यार भरा निमंतण उसमें कोई सुगबुगाहट पैदा नहीं कर पाता। वह इन सवालों से जूझने लगी और इन्हीं से संबद्ध अतीत की एक एक घटना चलचित्र की भाँति उसके मानस पट पर नाचने लगी।

सुधाकर के मन में भी तूफान चल रहा था। उसे आश्चर्य हो रहा था कि साधारण सी बात जो अभिधा में कही जाती है उसे लक्षणा और व्यंजना का अर्थ देकर मीता तूफान करने लगती है। मिलते ही उसने इतना ही तो कहा था—"आज कॉलेज से लौटने में बड़ी देर हो गई मीता। कोई फंकशन था क्या।" बस इसी पर वह बरस पड़ी थी—"तुम मुझपर बराबर संदेह करते हो। मैं समय पर भी लौटूँ तो तुम्हें शक होता है। अपना जीवन भूल गए। पता है अपने कितने पानी में हो नीच कमीने।" भरी सडक पर उसने विष बाण से बुझे वाक्यों को भी अपनी मुसकान से झेलने की कोशिश की थी। पर उसकी इस मुसकुराहट ने आग में घी का काम किया था। मीता को लगा था कि सुधाकर मुसकुराकर अपने संदेह को पक्का कर रहा है और उसका उपहास कर रहा है। इसीलिए उतने भारी गाली का प्रयोग किया था। सुधाकर ठहरा पुरुष, मीता का पति उसका भी अहं था, जो ढनक उठा। न उसने उसके पत्नी होने की परवाह की और न बीच सडक पर होने की ही और तडातड चपत बरसा दिए थे। वह भी इसपर सोचने केलिए बाध्य हो गया था उसका मन कह रहा था कि वह वहाँ से हट सकता था, मीता की जली कटी को अनसुनी कर सकता था। लेकिन ऐसा करना उसके वश के बाहर की बात थी। वह जितना ही दूर किनार होता, समर्पण की मुद्रा में होता, मीता का वार उतना ही तिलमिलाने वाला होता। संभव था प्रतिक्रिया स्वरूप यह और भी गहरा वार करता। इसलिए जो जिस घड़ी में होना था— वह उसी घड़ी की, एकमात्र उसी घडी की उपज था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसपर सोचना विचारना बेकार है। यह सोचना जरूर लाजिम है कि उस घड़ी को जन्म देनेवाले कौन-कौन घटक हुए और उसके विकास की प्रक्रिया में किसका योगदान है। सीमा की रुलाई से सुधाकर परेशान हो गया और उसे गोद में लेकर चुप कराने लगा। उसने उसके बाल सहलाए, पीठ पर हाथ फेरा- इस प्रेम वर्षा से सीमा तत्काल शांत हो गई। धीरे धीरे उसे नींद आ गई।

बीते बीस वर्षों की एक एक घटना मीता के मन में चक्कर काटने लगी। उसका पिता साधारण किसान का बेटा था। उसके पिता ने अपने अन्य बेटों के भविष्य की परवाह किए बिना बड़े बेटे को (मीता का पिता) काफी पढ़ाया, बड़े घर के बेटे की भाँति पाला। नतीजा यह निकला कि वह बंबई में कस्टम अधिकारी बन गया। उसका विवाह उसी समय हो गया था, जब वह इंटर कर रहा था। लड़की एक साधारण काश्तकार की थी—देखने में सुंदरी शिक्षा के मामले में पहली रीडर का ज्ञान। पिता बंबई में कमाने लगा माँ वहीं रहने लगी। पिता प्रगतिशील खयाल का था—माँ को भी सभी आयोजनों में ले जाता। धीरे-धीरे उसे भी आधुनिका बना दिया गया। आधुनिकता और फैशन परस्ती के प्रवाह में संयम और मर्यादा की सीमाएँ धीरे-धीरे टूटने लगा था। पिता रात गए लौटता तो माँ कोई विशेष पूछ-ताछ करना आवश्यक नहीं समझती। माँ को इसीसे संतोष होता कि उसका पति काम के बाद मनोरंजन करता है, जो उसके रुतबे और सेहत केलिए लाजिम ही है। उसके घर एक कददावर सुदर्शन नौकर रहता था। उसके पहनावे और रहन-सहन से ऐसा पता नहीं चलता कि वह वहाँ नौकर भी हो सकता है। चूँकि वह माँ के नैहर का था—इसीलिए माँ का उसके प्रति अधिक स्नेह वाजिब था। वह घर का कामधाम कम करता था बाहर घूमने फिरने में लगा रहता था। माँ ने कभी उसपर रोक न लगाई। पिता कभी घरेलू मामले में हस्तक्षेप नहीं करते थे। उसे अपनी पत्नी पर पूरा भरोसा था। बच्चे अच्छी शिक्षा पा रहे हैं—घर मजे में चल रहा है—उसकेलिए इतना ही काफी थी।

मीता सोलहवाँ साल पार कर रही थी। एक दिन वह कॉलेज से लौटी तो ठगी सी रह गई। माँ और नौकर को उसने विचित्र हालत में देखा। उसे माँ के सामने कुछ बोलने का साहस नहीं हुआ।

मीता सोलहवाँ साल पार कर रही थी। एक दिन वह कॉलेज से लौटी तो ठगी सी रह गई। माँ और नौकर को उसने विचित्र हालत में देखा। उसे माँ के सामने कुछ बोलने का साहस नहीं हुआ। वह कई दिनों तक अजीब उधेड़बुन में पड़ी रही। वह सोचती रही-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उससे उसका पिंड छूटना उसी प्रकार कठिन हो जाता है, जिस प्रकार नाखून का स्वाद चखने पर बाघ की आदम खोरी को सदा सदा के लिए भिरोना ।

माँ को कुछ कहना उसके बूते के बाहर की बात है । पिता को कहे तो कैसे कहे । यदि कहे तो उन्हें विश्वास क्यों कर होगा । अगर ठीक ठीक कह पाई और पिता को विश्वास भी हो गया तो अंजाम क्या होगा ? नौकर पर बीतेगी या माँ पर या पूरा परिवार इसे भोगेगा—यही सब सोचते सोचते एक दिन वह इस निश्चय पर पहुँची कि नौकर की शिकायत कुछ घुमा फिराकर पिता से अवश्य करेगी । संभव है इससे पिता को वस्तुस्थिति की जानकारी मिल जाए और वह कोई ठोस कदम उठाए ।

उसने जैसा बन पड़ा, जो देशकाल पात्र के अनुसार कहने योग्य था, पिता को कह सुनाया । पिता ने उसे आश्वस्त किया कि वह नौकर को निकाल बाहर करेगा । उसे अपनी कार्यवाही पर भीतर से संतोष हुआ था । पर यह सब भ्रम था । नौकर उसी प्रकार स्वच्छन्द विचरण कर रहा था । माँ के साथ उसके संबंधों में कहीं कोई अंतर नहीं आया था । उल्टे वह इतना ढीठ हो गया था कि माता पर डोरे डालने लगा । किशोरावस्था बड़ी नाजुक होती है । सेक्स के प्रति अजीब उत्सुकता का भाव रहता है । उसके बारे में जानने, उसका अनुभव करने के लिए खुद मन मचलता रहता है । उस पर कोई उसे उसी ओर घसीटे तो संयम और धैर्य की दीवार अधिक काल तक उसे नहीं रोक सकती । माँ-बाप के रवैये, नौकर की स्वेच्छाचारिता के कारण एक दिन इसे भी उस खंदक में गिरना पड़ा । पतन की राह बड़ी चिकनी होती है, ढलाऊ भी—एक बार फिसले, तो फिर फिसलते चले गये । मीता इसी कुचक्र की शिकार हो गई । कभी-कभी उसके मन में भी इस स्थिति से विद्रोह का स्वर फूटता था, घृणा होती थी, पर यह सब क्षणिक था । वह उस धारा में निढाल पड़ गई थी—धारा जहाँ ले जाए । इसी प्रवाह में मर्यादा और शील के तट कब को छूट गए थे ।

कालांतर में पिता का तबादला त्रिवेन्द्रम हो गया था और मीता अपने प्रांत के शहर के कालेज में पढ़ने के लिए भेज दी गयी थी । पढ़ाई उसने पूरे जोर शोर से चालू रखी । अपने क्लास में बराबर अव्वल स्थान लाती रही पर एक बार पाँव कुठौर में बहक गए थे तो उसे नेक रास्ते पर लाना टेढ़ी खीर था । उसके बाय फ्रेंडों की कमी नहीं थी—सुन्दरी और आकर्षक थी ही—रहन सहन ऊँचा ही था । आज यहाँ पिक्निक कल वहाँ पिक्निक । आज यहाँ मिलने जाना है, कल उसके साथ नाइटशो में सिनेमा जाना है । विविधता की चाट एक बार जब नारी को लग जाती है तब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उससे उसका पिंड छुड़ाना उसी प्रकार कठिन हो जाता है, जिस प्रकार नाखून का स्वाद चखने पर बाघ की आदम खोरी को सदा सदा के लिए मिटाना।

अब मीता एक पत्नी थी। उसकी बच्ची आठ वर्ष की हो गई थी। उसका पति ऊँची शिक्षा प्राप्त आई. ए. एस. पदाधिकारी था। जितना व्यक्तित्व जबंग और आकर्षक था, उसका स्वभाव उतना ही मधुर, मृदुभाषी और मिलन-सार था। उसका लालन-पालन दूसरे परिवेश में हुआ था। माता पिता दूर देहात में रहनेवाले कट्टर वैष्णव अनुशासन प्रिय और मर्यादावादी थे। सुधाकर को इन गुणों के बीज जन्म घूँटी के साथ पिलाए गए थे। उसने मीता के अलावा कभी किसी नारी मूर्ति की स्वप्न में भी कल्पना नहीं की थी। उसने जिस निष्ठा और ऐकांतिकता से पत्नी को प्यार किया था, उससे भी वैसा ही प्रतिदान चाहता था। वह उसके अतीत के काले पृष्ठों से अवगत नहीं था, अतीत में झाँकना उसका स्वभाव नहीं था। वह भूल से अतीत की ओर पीठकर देना चाहता था—यह उसकी आदत थी। यद्यपि माता-पिता की गरीबी छोड़कर अतीत में कहीं कुछ नहीं था, जिसपर वह लजा सके। उसे एक बात अखरती थी कि पत्नी उसके प्यार की उष्णता के बजाए ठण्डी क्यों हो जाती है? आग दोनों ओर क्यों नहीं लग पाती है? पारस्परिक समझौते और सहिष्णुता की बात तो दूर, मीता बराबर सुधाकर की बात का तिल का ताड़ बनाकर तूफान मचाया करती थी। सुधाकर इसके कारणों की तह में नीचे, खूब गहरे उतरता था, पर उसे अपना कोई दोष नज़र नहीं आता था। इतनी गलती उसकी जरूर थी, जिसके लिए वह पश्चात्ताप भी किया करता था कि मीता की ज्यादती, उसके प्रति किए गए अन्याय को एक सीमा के बाद वह सह नहीं पाता था और अपना आक्रोश निकाल ही देता था। वह सब कुछ बर्दास्त कर सकता था, पर स्वाभिमान पर ठो कर नहीं और मीता बराबर उसे ठोकर देकर विजय का झंडा फहराना चाहती थी। वह चाहती थी कि इसी प्रकार वह अपने व्यक्तित्व की ऐसी दहशत उसपर फैला दे कि वह इस पर किसी प्रकार का अंकुश रखने का सोच भी नहीं सके। नतीजा न उसकी आजादी और स्वच्छंदता पर कोई आँच न आने पाए। हिन्दू धर्म का संस्कार और परंपरा को ढोने की सहनशीलता ही वे कारण थीं, जिनके चलते उनके पारस्परिक संबंध निखरने की हदतक आकर भी बिखर नहीं पाते थे। दरार वहाँ पड़ गई थी, जिसे दोनों साफ साफ देख सकते थे। पर साथ-साथ रहने की अपनी अपनी विवशताएँ थीं। कहीं दिल के किसी कोने में आशा की एक लौ रही होगी कि समय के प्रवाह में कोई दैवीय परिवर्तन आ जाए। निराशा के मध्य आशा के प्रति यह भरोसा कभी-कभी कितना बलदायक होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मीता अपने आप[illegible] रही थी । वह सोच रही थी—देवोपम सुधाकर ! आशा और विश्वास का संबल सुधाकर । कभी उसने मुझपर उँगली नहीं उठाई । कभी मेरे प्रति उसके मन के आकाश में शंकाओं के मेघ नहीं मँडराए । इतनी बड़ी जवाब देहीवाला पद सँभालता वह एकाकी रह लेता है । कभी-कभार फुर्सत पाकर मुझसे मिलने आता है, कितनी उत्कंठता रहती है उसमें और मैं फ्रिज कर जाती हूँ । उसके प्यार का ठीक ठीक उत्तर कहाँ दे पाती हूँ । वह फिर भी न खिजलाता है और न मुझपर बरसाता ही है । फिर यह मनमुटाव क्यों, उससे यह एलर्जी क्यों ?"

मीता नारी थी—उसके भीतर कई नारियाँ थीं । वे नारियाँ अलग-अलग स्तरों पर जीती थीं—अलग अलग पुरुषों को जिलाती थीं । मीता की यह लाचारी थी या जबरन ओढ़ी गई आदत । पर दुनिया जानती थी मीता एक नारी है । सुधाकर जानता था कि मीता एक नारी है जो उसकी पत्नी है, उसकी पत्नी माँ है। उसके संपूर्ण नारीत्व पर उसका अधिकार है । एक फग शासक है वह उसके पूरे नारीत्व का, पूरे वजूद का । वह चाहता था कि मीता अपनी पूरी मौजूदगी में अपनी पूर्णता में उससे मिले वहाँ अन्य की गति नहीं, किसी दूसरे का भाव नहीं हो, पर ऐसा होता कहाँ था । मीता का ठंडापन इसका सबूत था कि वह सुधाकर के प्यार को झुठला रही है । वह नारी खंड खंड में विभक्त हो गई है । जिसका कोई [illegible] सुधाकर का नहीं है न उसके अपने ही खंडों में कोई पारस्परिकता है । इन सारी स्थितियों के बावजूद ऐसा कुछ था, जो सुधाकर को बाँधे हुए था । वह अपने दांपत्य जीवन को इन विषमताओं के विरुद्ध सहेजना चाहता था, टूटने से बचाना चाहता था । लोकलाज की परवाह भी वह करता था ।

मीता सोचती थी कि वह कौतूहल में, खेल खेल में, महज जिज्ञासा भर के कारण बढ़ते-बढ़ते कितना दूर आ गई है । वह ऐसे दलदल में आकर धँस गई है कि न निकलते बनता है और न धँसते ही । उसका उत्तरोत्तर गहरे और गहरे धँसते जाना भले ही कभी-कभी गुदगुदानेवाला, स्मृतियों की फूलझडी से गद्गद् कर देनेवाला हो पर जिंदगी शनैः शनैः रेगिस्तान में तब्दील होती जा रही है । अभी भी समय बचा है—आत्म स्वीकृति और प्रायश्चित द्वारा परिस्थिति पर काबू किया जा सकता है । वह सारी बातें सुधाकर से साफ-साफ बता दे, उसकी गोद में आत्म समर्पण कर दे, क्षमा की भीख माँग ले—तो क्या होगा ? मुमकिन है वह उसे बाँहों में भरकर अक्षय प्रेम की वर्षा करे और भावविभोर होकर कहे—"मीता, मेरी प्राणेश्वरी ! तुम ने सब कुछ कहकर अपने व्यक्तित्व को उजागर ही किया है । तुम गंगा के समान पवित्र हो । कौन ठिकाना वह कह बैठे—"छिः छिः तुम इतनी घिनौनी हो । पाप पंक में फँसकर मेरे जीवन के साथ भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खिलवाड़कर रहे हो। तुम्हारी मनहूस सूरत से भी घृणा होती है। सदा के लिए हट जाओ मेरे सामने से।"

मीता अजीब ऊहापोह में जी रही थी। अपने रवैये के प्रति उसमें सजगता आने लगी थी। वह यह भी सोचने के लिए विवश होने लगी थी—"आखिर पति-पत्नी का यह रिश्ता कब तक कायम रह सकता है भला। दोनों के रिश्ते को टूटने में देर ही कितनी लगती है। शीशे के समान चटककर टुकड़े टुकड़े हो जाना मामूली बात है। मैं कुछ करूँगी ज़रूर, चाहे अंजाम जो भी हो। रोज रोज दिलोजजबात की कुर्बानी करने और पति से नजर चुराने, प्रकारांतर से उसे भुलावे में रखने से बेहत्तर तो यह होगा कि मैं सब कुछ साफ-साफ कह दूँ और निश्चिंत हो जाऊँ। मुझमें इतनी शक्ति, सामर्थ्य तो हो कि सच को हजार मना करने पर भी अपने एक भाग आत्मीय सुधाकर को कह पाऊँ।" वह इसी प्रकार के चिंतन में डूबती गई। विषम परिस्थिति कष्टदायिनी अवश्य होती है, यातनाओं के दौर से गुजरवाती है, पर चेतना का द्वार भी उन्मुक्त कर देती है। चौराहे पर जाकर एक बार हमारी चेतना अवश्य जागरूक हो जाती है दाएँ या बाएँ या सीधे, कोई खतरा तो नहीं है। तत्काल निर्णय करना जरूरी हो जाता है। यही स्थिति मीता की थी।

सुधाकर की बेटी उसकी गोद में ही सो गई थी। उसका भोला भाला मुखड़ा साफ आँखें, निद्रा की शांति—वह एकटक निहारता रह गया। उसके चेहरे में उसे अपना चेहरा दिखाई दिया। लगा उसके चेहरे में इसका चेहरा साफ-साफ दिखाई पड़ रहा है, पर उस चेहरे के साथ कुछ कुछ मीता की आकृति भी मिल गई है। कुछ क्षण लगातार देखने से उसे अहसास हुआ कि कभी मीता का चेहरा झाँकता है, कभी उसका—कभी दोनों गड्डमड्ड हो जाते हैं। दोनों के प्यार का केंद्र सीमा ही थी। यही सब देखते सोचते सुधाकर को लगा—"मीता पगली है। क्या? मैं उसका क्या बिगाड़ता हूँ। कब मैं ने उसकी भावनाओं को ठेस पहुँचाई है। वह नौकरी करने से कितना कतराती थी। घर में ही पड़ी रहना चाहती थी। मैं ने ही उसके डॉक्टरेट डिग्री के सदुपयोग के लिए कॉलेज की नौकरी का रास्ता समझाया था। मैं ने सदा उसकी भावनाओं की कद्र की है। आखिर उसे हो क्या गया है। एक बार जरूर मैं उसे समझने समझाने का मौका दूंगा।" डेढ़ सौ मील की लंबी यात्रा—वह भी बस से सैकड़ों जगह रुकती, टगती—शोर शराबे के साथ लोग की रेल पेल। उसके शरीर का पोर पोर टूट रहा था। वह घर आकर बिस्तर पर पड़ ही जाने वाला था कि वह घटना घट गई। अब उसने इस ओर ध्यान दिया तो क्षण भर भी नहीं रुक सका। सीमा को बगल के बिस्तर पर लिटा कर स्वयं भी लेट गया। सोचते सोचते उसे कब नींद ने धर दबाया—पता ही नहीं चला।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सीता का अहं आत्म स्वीकृति से पलायन करना चाहता था। उसका मन कहता था—"वह क्यों जान बूझकर आफत मोल ले। पुरुष का क्या भरोसा। आवेश में कुछ कर डाले। वह कहीं की नहीं रह जाए।" फिर इस विचार को उसने झटके के साथ तोड डाला। क्योंकि इसमें सुधाकर द्वारा दी गई रक्षा की बू आती था, जिसको उसके अहं का फुफकारता सर्प स्वीकारना नहीं चाहता था। एक बारगी ही वह सोलह वर्ष की बच्ची बन गयी और वह बीभत्स दृश्य हजार हजार देह धारण कर खड़ा हो गया। उसे अपनी एकलौती बेटी सीमा का बर्बस याद आने लगी। वह जिस सड़ी गली साजिश को शिकार माँ की अदूरदर्शिता के कारण बनी कहीं उसी की काली छाया सीमा की जिन्दगी में अंधियाला नहीं ला दे। वह माँ को कोसने लगी—उसका भीतर आव की तरह जलने लगा। फिर उसने अपने को समझाया—माँ ने जो किया, उसका फल तो मैं आज तक भोग रही हूँ, आगे भी ऐसा ही रहा तो सुधाकर के अलावा सीमा की भी जिंदगी वीरान हो जाएगी। मेरे काले कारनामों की मनहूस छाया मेरी औलाद को भी कौड़ी का तीन बनाकर रहेगी। नहीं हर्गिज नहीं। बेटी को वह बचाएगी—चाहे जो कुर्बानी करनी पड़ी। अभी क्या कम कुर्बानी सहनी पड़ रही है—मन कितना हार-हार जाता है। पर ऊपर से सुधाकर को हराने में कितना मजा लूटता है। इतना ही न होगा कि पति उसे त्याग देगा—[illegible] इतिहास दुहरायगा या गम के आँसू पीकर मुझसे घृणा करता अलग हो जायगा। मुझे परवाह नहीं है। दुहरी मार अब मुझसे सही नहीं जाती। मैं सब कुछ साफ-साफ कह दूँगी सुधाकर को। आज ही, अभी, हाँ अभी तुरंत।"

वह लपककर उसके कमरे में घुस गई। बाप-बेटी मजे में सो रहे थे। सुधाकर का निर्दोष मुखड़ा नींद में और भी मोहक लग रहा था। सीमा के चेहरे से रह रह कर उसका मुखड़ा झाँक रहा

वह अजीब भावदशा में पहुँच गई। सचमुच वह उसे इतना प्यारा और मोहक कभी नहीं लगा था। उसने हौले हौले सुधाकर के बाल सहलाए।

था। वह अजीब भावदशा में पहुँच गई। सचमुच वह उसे इतना प्यारा और मोहक कभी नहीं लगा था। उसने हौले हौले सुधाकर के बाल सहलाए। उसके जागने का इंतजार किया। सीता सुधाकर के बगल में लेट गई। उसके शरीर में अजीब सनसनी फैल रही थी। उसने देखा कि वह जम्हाई लेकर उठने वाला है कि और भी उससे चिपट गई। उसे अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हुआ, पर सचाई वही थी, जिसे वह आँखों से देख रहा था।

❀

जुंदावन, राजेन्द्र पथ
धनबाद—८२६००१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी प्रचारकों का नवीकरण पाठ्यक्रम फरवरी 1982 में केरल हिन्दी प्रचार सभा में आयोजित हुआ ।

उद्घाटन समारोह में पाठ्यक्रम के निदेशक श्री० आर. सुकुमारन नायर भाषण दे रहे हैं । बैठे हैं बायें से— श्रीमती टी. एस. पोन्नम्मा (हिन्दी शिक्षा अधिकारी, केरल राज्य) डा० एन. पी. पिल्लै (अध्यक्ष, शिक्षा सलाहकार समिति, केरल) डा० वी. के. सुकुमारन, नायर (भूतपूर्व कुलपति, केरल विश्वविद्यालय) डा० टी. के. नारायण पिल्लै (केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा) और डा० अरुण चतुर्वेदी (केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा) ।

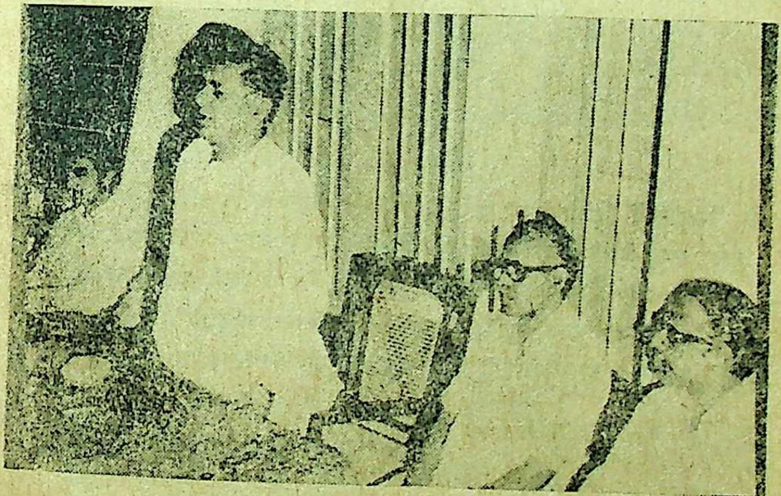

एम. एम. एच. कालेज, गाजियाबाद के प्राचार्य, संयोजक, हिन्दी समिति, मेरठ विश्वविद्यालय एवं विख्यात आलोचक डा० जयचन्द्र राय समालोचना की नयी दिशाओं पर चर्चा करते हुए । बैठे हैं (बायें से) श्री० एम. के. वेलायुधन नायर (मंत्री, केरल हिन्दी प्रचार सभा) और डा० वेल्लायणी अर्जुनन (निदेशक, विश्वकोश प्रकाशन, तिरुवनन्तपुरम)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

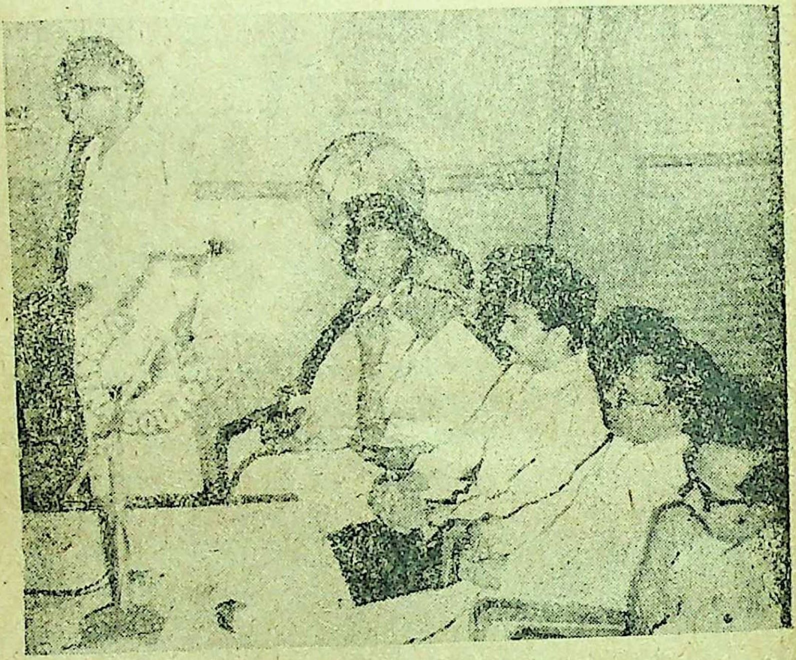

सामम्पन समारोह में स्वागत भाषण दे रहे हैं श्री० एम. के. वेलायुधन नायर (मंत्री, केरल हिन्द प्रचार सभा) बैठे हैं:—वायें से श्री० के. पी. अलिकुंजु (उपाध्यक्ष, केरल हिन्दी प्रचार सभा) श्री० एस. वी. कुक्किल्लाया (अध्यक्ष, केरल हिन्दी प्रचार सभा) डा० अरुण चतुर्वेदी (केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा) डा० वेल्लायणी अर्जुनन एवं डा० डी. बंचमिन ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

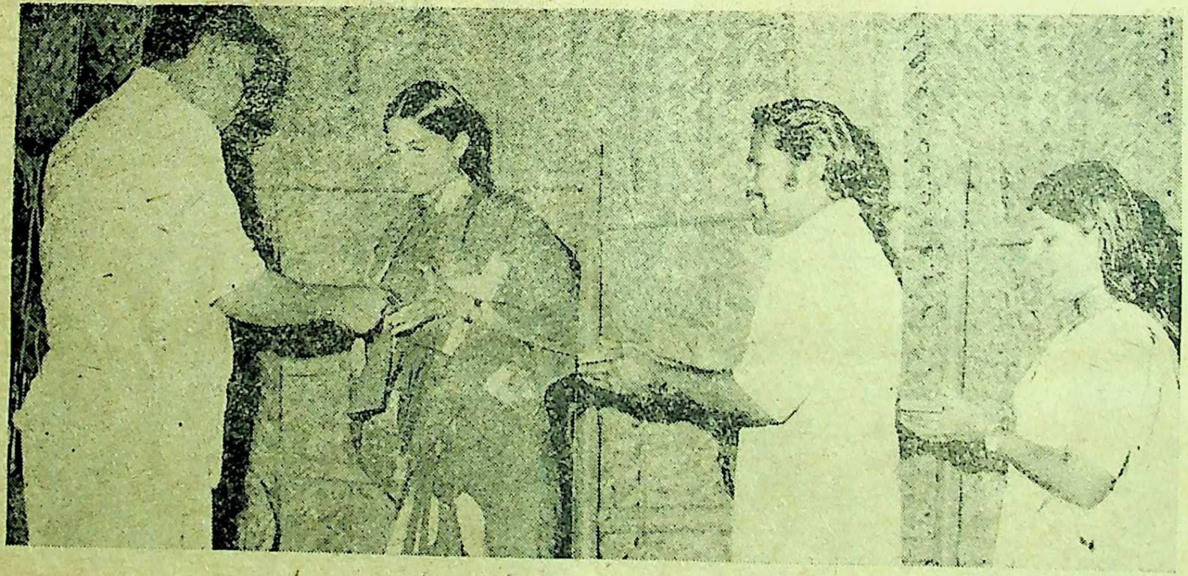

प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र प्रदान कर रहे हैं तिरुवनन्तपुरम नगर निगम के अध्यक्ष श्री० फ्रेडी पेरेरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

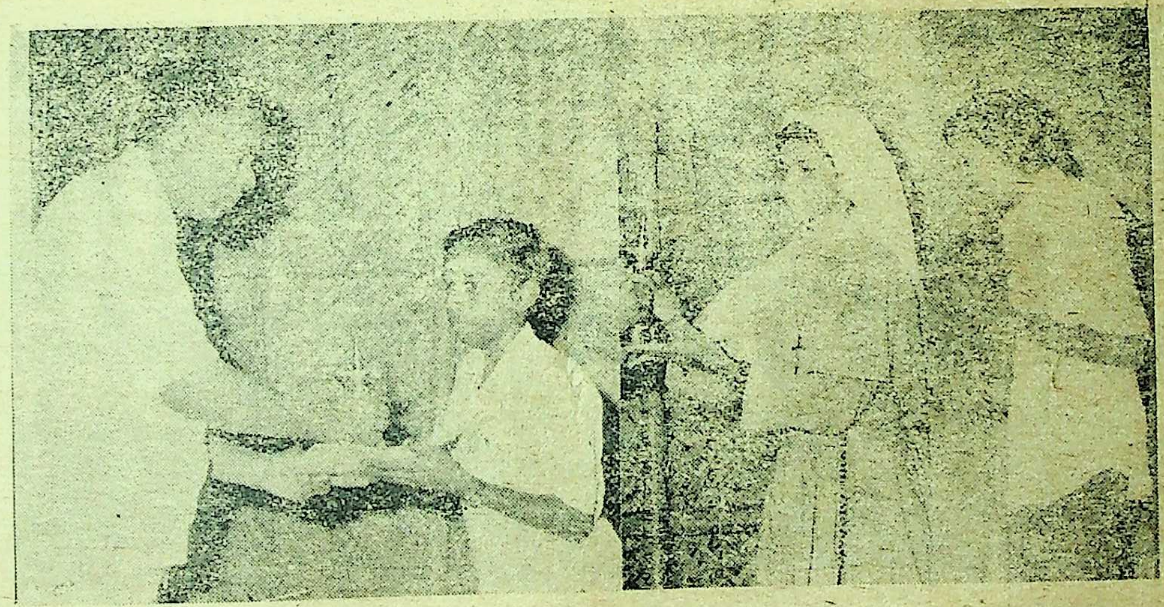

केन्द्र सरकार की सहायता से केरल हिन्दी प्रचार सभा द्वारा फरवरी १९८२ में आयोजित विविध हिन्दी साहित्य प्रतियोगिताओं के पुरस्कार भी श्री० फ्रेडी पेरेरा ने प्रदान किये ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

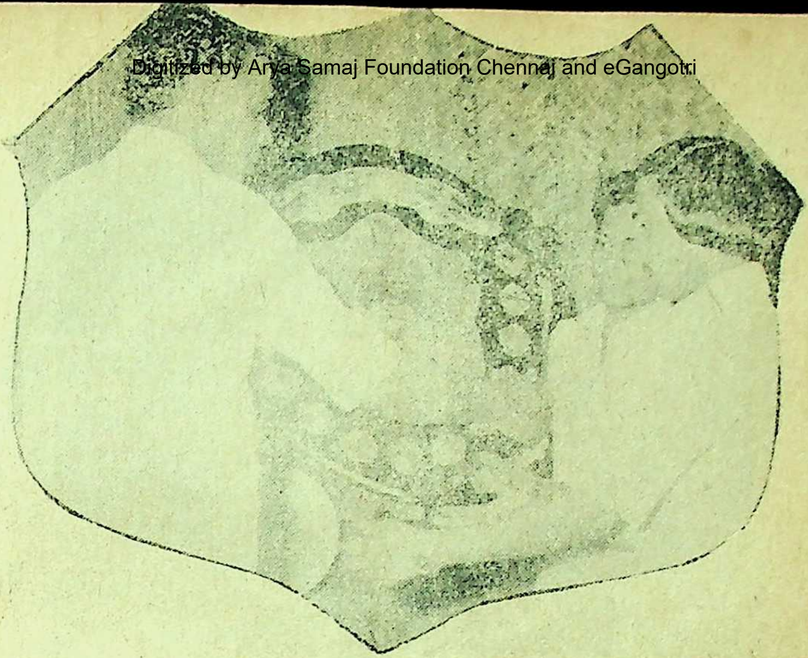

प्रस्तुतीकरण का प्रथम पुरस्कार साहित्याचार्य महाविद्यालय, केरल हिन्दी प्रचार सभा, तिरुवनन्तपुरम ने प्राप्त किया।

नाटक प्रस्तुति का द्वितीय पुरस्कार स्नातकोत्तर केन्द्र के छात्र श्री० ए. आर. शशिधरन नायर श्री० फ्रेडी पेरेरा से स्वीकार कर रहे हैं।

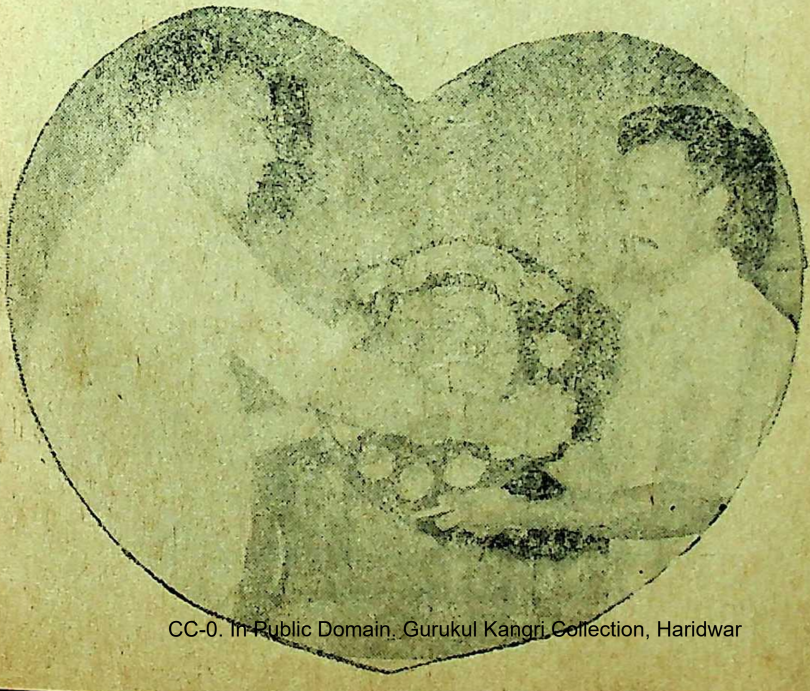

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

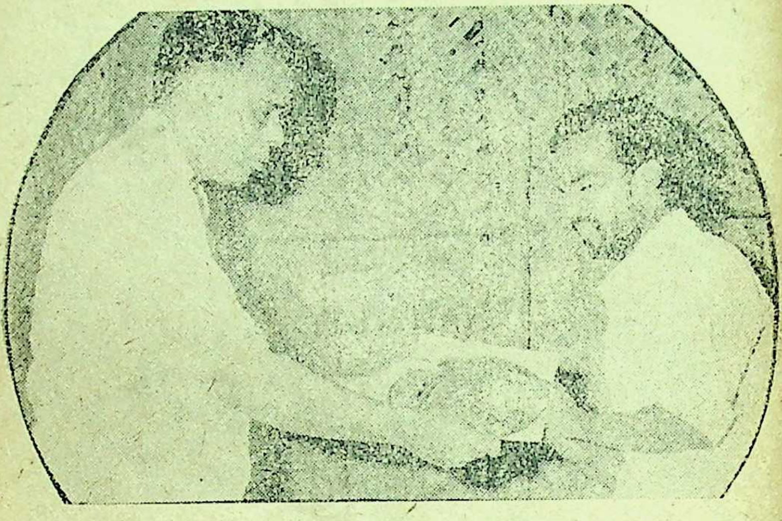

नाटक रचना का प्रथम पुरस्कार श्री० के. प्रेमचन्द्रन, वेंगानूर ने प्राप्त किया ।

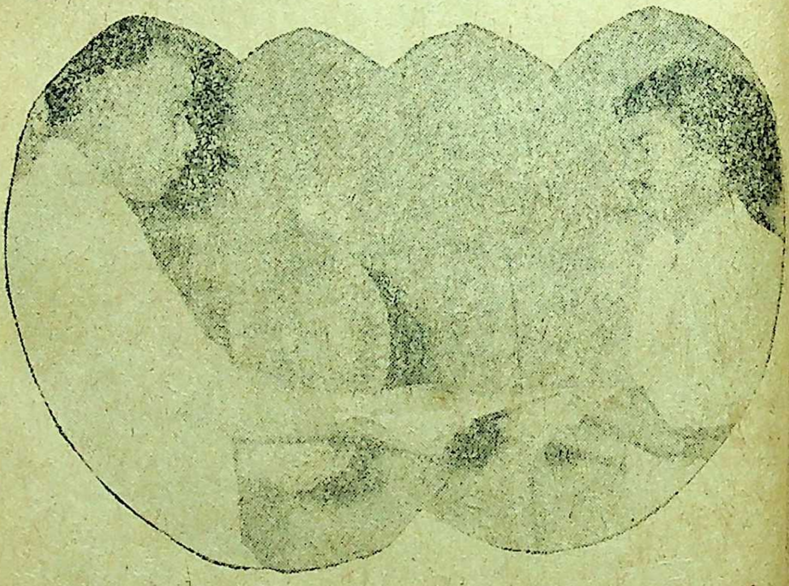

सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का पुरस्कार श्री० एम. वेणुगोपाल (साहित्याचार्य महाविद्यालय, तिरुवनन्तपुरम) ने पाया ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी नाटक प्रतियोगिता — १९८२

केन्द्र सरकार की सहायता से केरल हिन्दी प्रचार सभा ने प्रान्तीय स्तर पर फरवरी १९८२ में एक हिन्दी नाटक प्रतियोगिता चलायी। स्नातकोत्तर हिन्दी केन्द्र, तिरुवनन्तपुरम द्वारा प्रस्तुत नाटक 'वरदान

'प्रभात की पहली किरण' कस्तूरबा स्मारक हिन्दी विद्यालय, वेंगानूर द्वारा प्रस्तुत ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

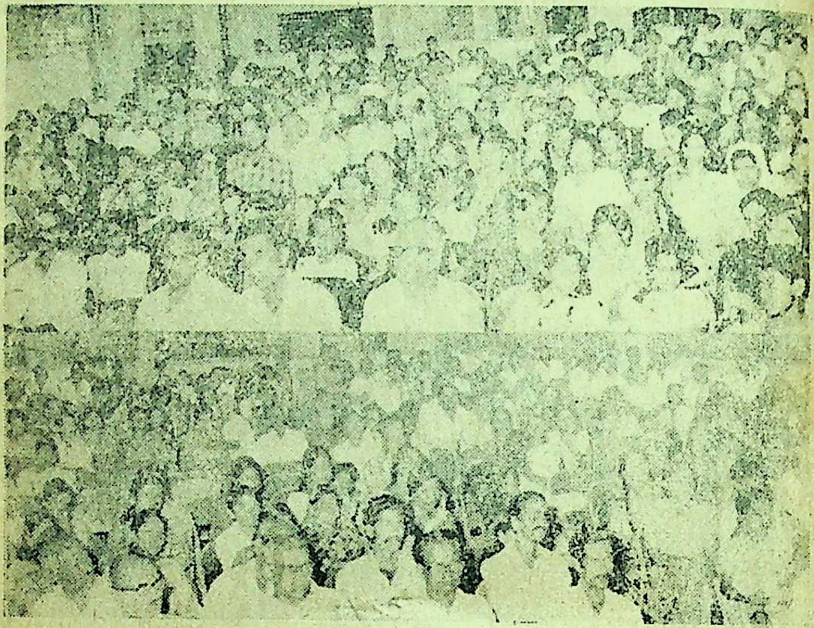

समापन समारोह के प्रतिभागी

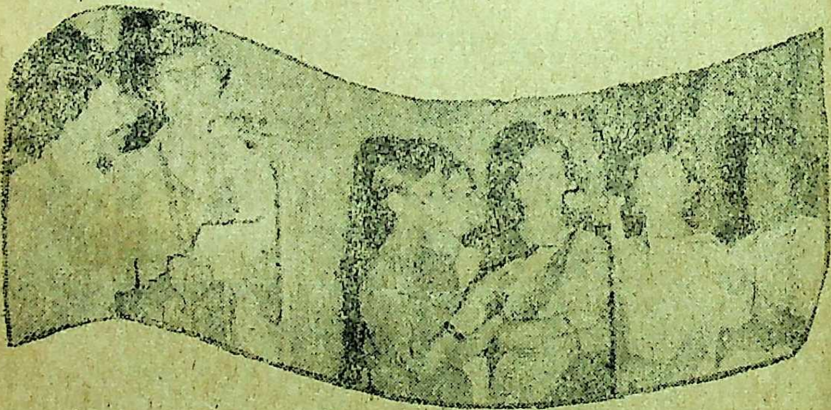

समापन समारोह के बहुरंगी कार्यक्रम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डा० एन. जी. देवकी का अभिनन्दन

हिन्दी साहित्य में अलीगढ विश्वविद्यालय से पी. एच. डी. की उपाधि पाने के उपलक्ष्य में केरल हिन्दी प्रचार सभा के स्नातकोत्तर विभाग की अध्यापिका कुमारी एन. जी. देवकी का हार्दिक अभिनन्दन किया गया। सभा भवन में १८-३-८२ को आयोजित अभिनन्दन सम्मेलन में डा० पी. के. नारायण पिल्लै (अध्यक्ष, ओपन विश्वविद्यालय, तिरुवनन्तपुरम) ने अध्यक्षता की। श्री० एस. वी. कुक्किल्लाया (अध्यक्ष, केरल हिन्दी प्रचार सभा), डा० वेल्लायणी अर्जुनन (निदेशक, विश्व-विज्ञान कोश प्रकाशन, तिरुवनन्तपुरम), प्रो० पी. आर. भास्करन नायर (क्षेत्रीय अधिकारी (दक्षिण), केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, शिक्षा मंत्रालय), प्रो० सी. जी. राजगोपाल, श्री० आर. सुकुमारन नायर श्री० एम. के. वेलायुधन नायर (मंत्री, केरल हिन्दी प्रचार सभा) श्री० वी. के. एन. नंपूतिरी और श्री० के. जी. बालकृष्ण पिल्लै ने डा० देवकी का हार्दिक अभिनन्दन किया। डा० देवकी ने आभार प्रकट किया।

डा० देवकी ने स्कूली शिक्षा के समय ही सभा की परीक्षायें भी उत्तीर्ण की थीं।

मलयालम ग्रंथ अंग्रेज़ी में

श्री के. टी. मुहम्मद का नाटक 'वेलिच्चम विळक्कन्वेषिक्कुन्नु', श्रीमती अंतर्जनम का उपन्यास 'अग्निसाक्षी' और श्री एस. के. पोट्टक्काट का उपन्यास 'विषकन्यका' इन तीन ग्रंथों के अंग्रेज़ी अनुवाद केरल साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित हुए हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठकों के पत्र

आदरणीय श्रीयुत
वेलायुधन नायर सा०.

'केरल ज्योति' का मार्च अंक पाकर प्रसन्नता हुई। अग्र लेख में अनुवाद की आवश्यकता पर बल देते हुए साहित्य-अकादमियों का आह्वान किया गया है कि राष्ट्रीय महत्व के इस सारस्वत कार्य-संपादन में वे आगे आएँ। इस सामयिक आह्वान के लिए हार्दिक बधाई! यदि भारत-सरकार और रज्य-सरकार से आवश्यक सहायता मिल सके तो अनुवाद का कार्य आप अपनी सभा द्वारा भी करा सकते हैं। अनुवाद-भारती या अनुवाद-पीठ की स्थापना करके आप प्रति-वर्ष एक उत्तम मलयालम कृति का हिन्दी में और एक उपयुक्त हिन्दी पुस्तक का मलयालम में अनुवाद तैयार करवा सकते हैं। डा० के. आर. शशिधरन पिल्लै ने मलयालम का प्रसिद्ध कवयित्री सुगत कुमारी के काव्य संसार का बड़ा प्रभावी चित्र अपने लेख में खींचा है। 'राजघट्टत्तिल' कविता की ये पंक्तियाँ :—

"देख, यह रमणीय सत्य है
कि आपके चरणों में गिरकर रोने
केलिए भी
हम अनर्ह हैं।
गुरो आपने जो गीत हमें सिखाये थे
वे सब हम कब के भूले हैं।"

अनायास ही अंचल की इन पंक्तियों को स्मृति में उभार लायीं :—

"पूजा का पाषाण बनाकर
हमने छोड़ा,
मंदिर में अगणित पत्थर थे,
एक अधिक उनमें जोड़ा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मंदिर में ठहराया तुमको,
हम पापों में भूल गये,
गीत तुम्हारे गाते-गाते
हम तुमको भूल गये।"

पत्रिका में अनूदित काव्य रचनाएँ भी बहुत अच्छी लगीं। 'हम क्यू में खड़े हैं' में राष्ट्रीय जीवन का यथार्थ उभरकर आया है तो 'आज मैं कल तुम' में व्यक्ति-जीवन का सत्य रूपायित हुआ है। सुन्दर प्रकाशन के लिए हार्दिक अभिनंदन स्वीकारें।

आपका,
डा० इन्दरराज "बैद" अधीर
आकाशवाणी, मद्रास

प्रिय श्री पिल्लै,

"केरल ज्योति" का मार्च, १९८२ का अंक देखने को मिला। पत्रिका सुन्दर एवं उपयोगी प्रतीत हुई। इस प्रयास के बारे में आपको धन्यवाद किए बिना नहीं रह सकता।

एक बात और है। आप अपने लेखकों तथा अनुवादकों से अनुरोध कीजिए कि प्रकाशन के लिए भेजी जाने वाली सामग्री की भाषा सरल हो तथा जहाँ तक हो सके छोटे-छोटे वाक्यों को प्रयोग में लाया जाए। पत्रिका में यदि पाठकों के लिए कामकाज की छोटी-मोटी उपयोगी बातें दे दी जाएँ तथा थोड़ा-सा हास्य का पुट भी दे दिया जाए तो पत्रिका और भी रोचक बन जाएगी। राजभाषा से संबन्धित कुछ सुझाव अगले पत्र में दूँगा।

शुभ कामनाओं के साथ,
आपका,
सत्यप्रकाश आर्य
हिन्दी अधिकारी
प्रौढ शिक्षा निदेशालय
भारत सरकार, नयी दिल्ली

'बाकी किराया' श्री० पी. सी. कुट्टिक्कृष्णन (उरूब) का नाटक। प्रस्तुतिः साहित्याचार्य महाविद्यालय, तिरुवनन्तपुरम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केरल हिन्दी प्रचार सभा का सर्वश्रेष्ठ साहित्यिक प्रकाशन !

महाकवि उल्लूर

व्यक्तित्व एवं कृतित्व

मलयालम के विख्यात महाकवि उल्लूर एस० परमेश्वर अय्यर की शताब्दी १९७७ में मनायी गयी। उस सिलसिले में प्रकाशित संग्रहणीय ग्रंथ। इस ग्रंथ के द्वारा मलयालम के एक महाकवि को हिन्दी भाषा द्वारा हिन्दी भाषियों के सम्मुख प्रस्तुत करने का सर्व प्रथम प्रयास।

शुद्ध छपाई, आर्ट पेपर कार्ड पर अत्याकर्षण बहुरंग आवरण (महाकवि का चित्र) टिकाऊ सफेद कागज़, फिर भी मूल्य १५ रुपया मात्र।

संपर्क करें :

मंत्री
केरल हिन्दी प्रचार सभा
तिरुवनन्तपुरम–१४

फोन : ६१३७८

हिन्दी प्रचारकों का नवीकरण पाठ्यक्रम जो केंद्र सरकार की सहायता से केरल हिन्दी प्रचार सभा में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी प्रचारकों का नवीकरण पाठ्यक्रम जो केन्द्र सरकार की सहायता से केरल हिन्दी प्रचार सभा में फरवरी 1982 में आयोजित हुआ।

बैठे हैं—प्रो. सी. जी. राजगोपाल, श्री. वी. के. गोपालन नायर, श्री. के. पी. पद्मनाभन नायर, श्री. आर. सुकुमारन नायर, श्री० टी. के. नारायण पिल्लै (प्राध्यापक, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा), श्री० एम. के. वेलायुधन नायर (मंत्री, केरल हिन्दी प्रचार सभा), प्रो० पी. जे. जोसफ (उपाध्यक्ष, केरल हिन्दी प्रचार सभा) डा० पी. के. नारायण पिल्लै (भूतपूर्व अध्यक्ष, केरल हिन्दी प्रचार सभा), श्री० एस. वी. कुक्किल्लाया (अध्यक्ष, केरल हिन्दी प्रचार सभा), डा० इन्दरराज वैद (आकाशवाणी, मद्रास), डा० अरुण चतुर्वेदी (केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा), डा० एस. राजप्पन नायर, प्रो० डी. तंकप्पन नायर, श्री० के. पी. अगस्टिन, श्री० एस. सी. चन्द्रन, श्री० के. जी. बालकृष्ण पिल्लै, श्री० एन. कुमार पिल्लै एवं श्री० के. केशवन नायर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Reg. No. KL/TV(S)/25
April 1982

Keral Jyoti

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Vol. XVII-
Price : Re

A monthly Publication of Kerala Hindi Prachar Sabha

अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ का आठवाँ अखिल भारतीय हिन्दी कार्यकर्त्ता शिविर मार्च १९८[illegible] में बंगलूर में आयोजित हुआ । प्रथम पंक्ति में संघ के अध्यक्ष डा० गंगाशरण सिंह (बायें से छठे) कोषाध्यक्ष श्री० ग. प. नेरी (बायें से पाँचवें) और केरल हिन्दी प्रचार सभा के प्रतिनिधि श्री० के. टी. गर्वासीस (बायें से दूसरे) तथा चौथी पंक्ति

केरल हिन्दी प्रचार सभा, तिरुवनन्तपुरम–६९५ ०१४ के लिए श्री० एम. के. वेलायुधन नायर द्वारा प्रकाशित
मुद्रक: राष्ट्रवाणी मुद्रणालय, केरल हिन्दी प्रचार सभा, तिरुवनन्तपुरम–१४. सम्पादक: के. जी. बालकृष्ण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केरल ज्योति

'मोहिनियाट्टम' की एक भाव-भीनी मुद्रा में कुमारी लक्ष्मी नटराजन

केरल हिन्दी प्रचार सभा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केरल ज्योति

* प्रधान संपादक

प्रो० पी. जे. जोसफ़

* संपादक

श्री० के. जी. बालकृष्ण पिल्लै

* सह संपादक

श्री० आर. सुकुमारन नायर

* संपादक मण्डल

श्री० वी. के. गोपालन नायर

प्रो० एम. जनार्द्दनन पिल्लै

श्री० के. वी. कृष्णनकुट्टी

श्री० एम. के. वेलायुधन नायर

❀

* विज्ञापन दर

		मासिक		वार्षिक	
आवरण पृष्ठ ४	रु.	५००	००	५०००	००
आवरण पृष्ठ २ एवं ३	रु.	४००	००	४०००	००
साधारण पृष्ठ पूरा	रु.	३००	००	३०००	००
साधारण पृष्ठ ½	रु.	१७५	००	१७५०	००
साधारण पृष्ठ ¼	रु.	१००	००	१०००	००

❀

* पत्र व्यवहार का पता :

मंत्री,
केरल हिन्दी प्रचार सभा
तिरुवनन्तपुरम-६९५ ०१४
केरल

तार :-"जय हिन्दी"

फोन: ६१३७८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केरलज्योति

पुष्प : १७

दल : २

मई १९८२

सांस्कृतिक जागरण की मासिक पत्रिका

संपादकीय

यह बस पांगोड जायेगी ?

तिरुवनन्तपुरम शहर से थोडी दूर हट कर पांगोड का सैनिक अड्डा है। यहाँ के सैनिकों में अधिकांश उत्तर भारतीय हैं। वे मलयालम पढना लिखना नहीं जानते। इतवार को वे नगर की गलियों में घूमने आते हैं। शाम को जब लौटना होता है तो पूर्वी किले के बस स्टेशन में आते हैं और हर बस के आने पर वहाँ खडे यात्रियों से पूछते फिरते हैं — 'यह बस पांगोड जायेगी ?' बस पर जो स्थान-नाम लिखा रहता है वह मलयालम लिपि में है। सिपाहियों का हिन्दी प्रश्न सुन कर कोई अनसुना कर रह जाता है, कोई अन्य मनस्क होकर सिर हिला देता है। जब कोई सिर हिलाता है तो बेचारा सिपाही सामने की बस में इस धारणा में चढ जाता है कि यह बस अवश्य पांगोड जायेगी। नहीं तो कोई सिर क्यों हिलाता ! पर थोडी दूर जाकर जब कण्डक्टर को पैसा देते हुए पांगोड की टिकट मांगता है तब कंडक्टर गरम हो कर कहता है—ए मिस्टर, यह पाप्पनंकोड़ जानेवाली है। बोर्ड क्यों नही पढ लेते ?" बेचारे सिपाही को वहीं बीच रास्ते में उतार दिया जाता है। अपमान भी सहना पडता है। समय भी बरबाद हो जाता है। न जाने फिर किन किन को तंग कर के और किन किन से तंग आकर पांगोड पहुँच पायेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस अंक में

वैर 3
डॉ० वी. गोविन्द शेनाय

हिन्दी अध्यापन कैसे सुधारें 4
डॉ० एन. जी. देवकी
कुमारी एल. शोभा

रूढी ज़िन्दगी 10
शकुन्तला सिरोठिया

धारवाड का नव हिन्दी लेखक शिविर 11
डॉ० एन. जी. देवकी
वी. शान्तकुमारी अम्मा

कल के लिए 14
जनक राज परीक

मुर्गा और प्रभात 15
एन. वी. कृष्ण वारियर

माधविक्कुट्टी 16
मूल: वैक्कम चन्द्रशेखरन नायर
अनुवाद: एन. कुमार पिल्लै

कर्णभूषणम 23
मूल : महाकवि उल्लूर
अनुवाद : कवियूर शिवराम अय्यर

देख कबीरा रोया 26
भीतर भर हरिनाम !
कुकु

पुस्तक समीक्षा
कवित्रयवाणी 29
डा० इन्दरराज बैद

यह केवल तिरुवनन्तपुरम की ही बात नहीं। हर प्रान्त में प्रमुख बस स्टेशनों में ऐसे परेशान यात्री मिलेंगे जो बस का नामपट्ट इस कारण पढ नहीं पाते कि उसकी लिपि से वे अनभिज्ञ हैं। दक्षिण के एक प्रान्त की लिपि दूसरे प्रान्तवाले नहीं पढ पाते। उत्तर में जाने पर रोमन लिपि और नागरी को छोड कर कोई लिपि (उडिया, बंगला, फारसी आदि) दक्षिण वाले नहीं पढ पाते। अपने ही देश में ऐसी दुर्गति हास्यास्पद है, अपमान जनक है और लज्जाजनक भी।

इस समस्या का हल नहीं हो सकता क्या ?

हमारा विचार है कि यदि हर प्रान्त की बसों के-कम से कम मुख्य नगरों, पर्यटन केन्द्रों और तीर्थस्थानों को जाने वाली बसों के—नामपट्ट तीन लिपियों में लिखे जायें तो इस शाप से मोक्ष मिल सकता है। प्रान्तीय भाषा की लिपि में, नागरी लिपि में और रोमन लिपि में।

आशा है मई १९८२ में तिरुवनन्तपुरम में आयोजित होनेवाले नागरी लिपि सम्मेलन का ध्यान ऐसी व्यावहारिक कठिनाइयों पर जायेगा और ऐसी समस्याओं के कुछ सर्वमान्य समाधान उभर आयेंगे।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यंग्य शब्द चित्र

बैर

डा० वी. गोविन्द शेनाय

अध्यापकों के मुँह से एकदम इतने ज़ोरों से थूक निकल गई कि मैनेजर का ध्यान उनकी ओर गया ।

मैदान में बैठे दोनों अध्यापक मूँगफलियाँ खाते हुए मैनेजर की अर्थनीति की समीक्षा कर रहे थे । धूसर संध्या थी और स्कूल का वातावरण शांत दीखता था । बच्चे घर जा चुके थे । मैनेजर स्कूल को दवाखाना बनाना चाहते थे और परिस्थिति को देखते हुए यह उचित भी लगता था । उधर वेतन भोगी अध्यापकों ने शिक्षा के प्रसार को लेकर इतना बडा बवंडर उठाया कि मैनेजर को दबना पडा । परन्तु वे हार माननेवाले जीव नहीं थे । उन्होंने अदालत की शरण ली जो उनके लिए इतनी महंगी पड गई कि पत्नी के जेवर इत्यादि से लेकर घर के बरतन-भांडे तक बेच डालने पडे । परन्तु मुकद्दमा टस से मस नहीं हुआ । मैनेजर मिट्टी के तेल का डब्बा बगल में दबाये और राशन की थैली संभाले मैदान से होकर जा रहे थे । अध्यापकों के मुँह से एकदम इतने जोरों से थूक निकल गई कि मैनेजर का ध्यान उनकी ओर गया । फिर क्या था ! उन्होंने थैली और डब्बा ज़मीन पर रख दिये और वे कमर कस कर भिडने के लिए प्रस्तुत हो ही रहे थे कि चरमराती सी ध्वनि के साथ धम्म सा शब्द सुनाई दिया । देखा—छप्पर फिसल कर हवा में मिल गया है और दीवार गिर गई है । बैर का आधार ही अब फिसल गया था । इस पर भी मुँह से निकल ही गया—काश ! ये अध्यापक स्कूल में ही होते !

❀

प्राचार्य
आर्ट्स एन्ड साइन्स कालेज
कालिकट, केरल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी अध्यापन कैसे सुधारें ?

डा० एन. जी. देवकी

कुमारी एल. शोभा

फरवरी १९८२ में केरल हिन्दी प्रचार सभा में हिन्दी प्रचारकों के लिए जो नवीकरण पाठ्यक्रम चला इसमें कुल २२ विषयों पर चर्चायें हुई । हिन्दी शिक्षण संबंधी विषयों के अतिरिक्त कुछ साहित्यिक विषयों पर भी विचार विमर्श हुआ । इसकी एक संक्षिप्त रूपरेखा नीचे दी जा रही है । हिन्दी अध्यापन सुधारने में इन विचारों से लाभ उठाया जा सकता है ।

(१) मातृभाषा और अन्य भाषा शिक्षण

प्रस्तुत विषय पर केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा के प्राध्यापक श्री० टी. के. नारायण पिल्लै की चर्चा से पाठ्यक्रम का आरंभ हुआ । मातृभाषा और अन्य भाषा का अन्तर समझाते हुए उन्होंने बताया कि हिन्दी जैसी अन्य भाषा का शिक्षण भाषापरक होना चाहिए । मातृभाषा वही है जिसे बच्चा बचपन में अनायास पढता है, अधिकार कर लेता है और ज़िन्दगी भर वह अपना अधिकार बनाये रखता है । मातृभाषा सीखने के बाद जो कोई दूसरी भाषा सीखी जाती है, वही अन्य भाषा है । अन्य भाषाएँ एक से अधिक भी सीखी जा सकती हैं । लेकिन मातृभाषा एक हो हो सकती है । अभी हमारे यहाँ शिक्षक साहित्य-केन्द्रित है; भाषा-केन्द्रित नहीं । इसलिए अन्य भाषा का अध्ययन भी साहित्य-केन्द्रित ही होता है । वैज्ञानिक तरीका यह है कि अन्य भाषा का शिक्षण भाषा-केन्द्रित हो ।

(२) हिन्दी उच्चारण शिक्षण—मलयालम भाषियों के सन्दर्भ में

इस विषय की चर्चा करते हुए केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा के प्राध्यापक डा० अरुण चतुर्वेदी ने कहा कि मलयालम भाषियों को हिन्दी भाषा के शुद्ध उच्चारण में जो कठिनाइयाँ आतो हैं, उसका कारण मातृभाषा का प्रभाव है । भाषा का उद्देश्य अभिव्यक्ति है । यह दो प्रकार की होती है—मौखिक और लिखित । मौखिक अभिव्यक्ति के दो मुख्य भेद हैं—(१) ध्वनियाँ और शब्द (२) वाक्य ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिखित रूप में वर्तनी, व्याकरण आदि बातें आ जाती हैं। प्रत्येक भाषा की अलग-अलग ध्वनि-व्यवस्थायें होती हैं। दो ध्वनि-व्यवस्थाओं की तुलना पर तीन बातों पर ध्यान देना होगा।

(१) भाषा में ऐसी ध्वनियाँ होती हैं, जो हमारी भाषा में नहीं है। हिन्दी के संदर्भ में कहा जाय तो मलयालम की 'ഴ' '(ष़)' ध्वनि हिन्दी में नहीं है। 'ड़ ढ़' की ध्वनि मलयालम में भी नहीं है।

(२) ऐसी ध्वनियाँ हैं जो दोनों भाषाओं में विद्यमान हैं। जैसे क, प, ट आदि। यहाँ दो भाषाओं की तुलना में कोई कठिनाई नहीं होती।

(३) दो भाषाओं की ध्वनियों के उच्चारण में अन्तर है। इसी को दृष्टि में रखते हुए मलयालम भाषियों के हिन्दी उच्चारण में अव्यवस्थायें पायी जाती हैं। शब्द की तीन स्थितियाँ होती हैं — आदि, मध्य, अन्त। इन तीनों स्थितियों को अलग अलग देकर उच्चारण ठीक करना होगा।

(३) मातृभाषा और अन्य भाषा-शिक्षण

श्री० टी. के. नारायण पिल्लै जी ने उक्त विषय की चर्चा करते हुए यह स्थापित किया कि भाषा अनुकरण से सीखी जाती है। उन्होंने इस तथ्य की ओर ध्यान दिलाया कि अन्य भाषाओं की अपेक्षा मातृभाषा सीखने के लिए बच्चे को ज्यादा समय मिलता है। भाषा अनुकरण से सीखी जाती है। अनुकरण की कई स्थितियाँ हैं। छात्रों की उम्र के अनुसार अनुकरण की स्थितियों में परिवर्तन हो सकता है। इसकी शारीरिक परिस्थितियाँ भी है तथा मानसिक स्थितियाँ भी। मातृभाषा के संबन्ध में बच्चे की पढ़ाई लेखन से शुरू की जा सकती है। अन्य भाषा की पढ़ाई के लिए उम्र की कोई पाबन्दी नहीं। किसी भी उम्र में अन्य भाषा सीखी जा सकती है। मातृभाषा सीखने के लिए बच्चों को बहुत समय मिल जाता है। हिन्दी सीखने के लिए विद्यार्थियों को स्कूलों में कम समय मिलता है। बच्चे को चार वर्ष की उम्र तक करीब दस हज़ार घंटे मातृभाषा सीखने केलिए मिल जाते हैं, लेकिन हिन्दी सीखने केलिए करीब दो सौ घंटे मात्र मिलते हैं। इसलिए समस्या यह है कि कम समय में शुद्ध हिन्दी में छात्रों को निपुण कैसे बनायें? सिखाने और सीखने की विधियों पर ध्यान देना पडता है। हमारे हिन्दी अध्ययन में मातृभाषा का व्याघात रहता है। हमारे हिन्दी उच्चारणों पर मातृभाषा के उच्चारणों का प्रभाव पडता है। शब्दों के प्रयोग में भी यह प्रभाव देखा जा सकता है—जैसे:— 'श्रद्धांजली' शब्द का प्रयोग हिन्दी में मरने के बाद आदर प्रकट करने के लिए होता है। साधारण आदर की अधिकता दिखाने केलिए 'आदरांजली' शब्द का प्रयोग करता है। इस सूक्ष्म भेद का ज्ञान नहीं है तो गडबडी की संभावना है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(४) राजभाषा, सपर्क भाषा और ज्ञान-विज्ञान के रूप में हिन्दी

आकाशवाणी, मद्रास केन्द्र के कार्यक्रम प्रबन्धक डा० इन्दर राज वैद 'अधीर' ने बताया कि हिन्दी भाषा के तीन रूप प्रचलित हैं— शुद्ध साहित्यिक हिन्दी, उर्दु मिश्रित हिन्दी और हिन्दुस्थानी । देवनागरी लिपि में लिखी जानेवाली हिन्दी हमारी राजभाषा है । बंगाल में केशवचन्द्र सेन ने, गुजरात में दयानन्द सरस्वती ने और दक्षिण में राजगोपालाचारी ने राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी का प्रचार किया । केरल के राजा स्वातितिरुनाल ने अनेक कीर्तन रचे, जो हिन्दी केलिए अमूल्य योगदान है । उन्होंने बताया कि स्वतंत्रता प्राप्ति के अवसर पर हिन्दी का प्रचार हमारी राष्ट्रीय आवश्यकता थी । आज राष्ट्रीय एकता केलिए हिन्दी का प्रचार-प्रसार होना चाहिए । दक्षिण भारत के लोगों ने हिन्दी प्रचार को एक मिशन के रूप में या यज्ञ के रूप में स्वीकार किया । यह परंपरा हमें जारी रखनी है ।

(५) मौखिक अभ्यास

डा० अरुण चतुर्वेदी के अनुसार अन्य भाषा के नाते हिन्दी भाषा के शुद्ध उच्चारण केलिए मौखिक अभ्यास अनिवार्य है । मौखिक अभ्यास केलिए जो शिक्षण विधियाँ स्वीकार की जा सकती है, उनपर उन्होंने विस्तार से विचार किया । उनमें स्थानापत्ति, योगात्मक, संयोजन, रचनान्तरण, प्रश्नोत्तर आदि प्रमुख हैं ।

(६) कौशलों का शिक्षण

भाषा के मुख्य चार कौशल श्रवण, भाषण, वाचन और लेखन हैं । इनमें पहले दो कौशल मुख्य हैं और शेष दो का गौण स्थान है । इन कौशलों के मुख्य—गौण स्थान को दृष्टि में रखकर अध्यापन करना चाहिए । अन्य भाषियों केलिए भाषा प्रधान है, विषय की जानकारी गौण है । इसलिए भाषा शिक्षण भाषा केन्द्रित होनी चाहिए न कि विषय केन्द्रित । श्री. टी.के. नारायण पिल्लै जी ने इस बात की विशद चर्चा की ।

(७) शिक्षण विधियाँ

भाषा-शिक्षण की कोई भी विधि पूर्ण नहीं है । तो भी शिक्षण की सुविधा केलिए चार बिधियाँ स्वीकार की गयी हैं (१) व्याकरण अनुवाद विधि, (२) प्रत्यक्ष विधि, (३) संरचना विधि, (४) समन्वयात्मक विधि । केरल के विद्यालयों में समन्वयात्मक विधि से भाषा शिक्षण चलता है जो व्याकरण अनुवाद विधि, प्रत्यक्ष विधि, संरचना विधि आदि का सम्मिश्रण है । श्री. टी. के. नारायण पिल्लै जी ने इन विधियों का विशद परिचय दिया और आग्रह किया कि निम्न कक्षाओं में संरचना विधि का अधिक उपयोग किया जाये ।

(८) हिन्दी गद्य साहित्य—नवीन प्रवृत्तियाँ

डा० इन्दर राज वैद अधीर ने हिन्दी साहित्य की अधुनातन प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालते हुए बताया कि कहानी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सबसे मुख्य और प्रचलित साहित्यिक विधा है। आधुनिक हिन्दी गद्य साहित्य के अन्य नवीन विधायें हैं — रेडियो रूपक भेंट वार्तायें, आँखों देखा वर्णन, रिपोर्ताज, रेखाचित्र, संस्मरण, डायरी आदि। इन विविध विधाओं से विद्यार्थियों को परिचित कराया जाये।

(९) कक्षा-संचालन

श्री० के. केशवन नायर ने हिन्दी विद्यालयों के संगाठन और संचालन के विविध पक्षों पर प्रकाश डाला।

(१०) आचार्य शुक्ल जी और आलोचना

एम. ए. एल. कालेज, गाज़ियाबाद के प्राचार्य एवं विख्यात आलोचक डा० जयचन्द्र राय ने अपने शोध प्रबन्ध "आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, सिद्धान्त और साहित्य" के आधार पर हिन्दी के प्रमुख साहित्यकारों और उनकी प्रमुख कृतियों की विस्तृत चर्चा की।

डा० राय ने बताया कि आचार्य शुक्ल जी लोक मंगल की भावना को श्रेष्ठ काव्य का लक्षण मानते थे, इस कारण उन्होंने रामचरितमानस जैसे विस्तृत प्रबन्ध-काव्य के प्रणेता तुलसी को अपेक्षाकृत महत्व प्रदान किया। हिन्दी अध्यापकों को आलोचना की नई दिशाओं से अवगत रहना चाहिये।

(११) लिखित रचना अभ्यास

डा० चतुर्वेदी ने लिखित रचना अभ्यास केलिए नियंत्रित और मुक्त अभ्यास की आवश्यकता पर ज़ोर दिया। हिन्दीतर भाषा भाषी छात्रों में हिन्दी की सर्गात्मक रचना करने की क्षमता और प्रेरणा उत्पन्न करनी है।

(१२) दक्षिण भारत में हिन्दी प्रचार का इतिहास

डा० इन्दर राज वैद ने दक्षिण भारत में हिन्दी प्रचार के विस्तृत इतिहास पर विचार करते हुए कहा कि दक्षिण में हिन्दी प्रचार केलिए गाँधीजी ने भरसक कोशिश की। १९१८ के काँग्रेस अधिवेशन में तीन प्रश्न प्रस्तुत किये:— (१) राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी उर्दू या हिन्दुस्थानी को मान्यता क्यों नहीं दी जा सकती? (२) कांग्रेस की कार्रवाई केलिए हिन्दी, उर्दू या हिन्दुस्थानी क्यों नहीं लें। (३) क्या सारे देश के अन्दर प्रारंभिक शिक्षा के बाद अनिवार्य रूप में हिन्दी, उर्दू या हिन्दुस्थानी नहीं जोड सकते? भारत की सामान्य भाषा हिन्दुस्थानी होगी यह सामान्य प्रस्ताव गाँधीजी ने अधिवेशन में रखा। दक्षिण में हिन्दी प्रचार केलिए देवदूत विद्यार्थी, अवध नन्दन शर्मा, रामानन्द, प्रताप नारायण त्रिपाठी जैसे महान व्यक्तियों ने बहुत प्रयत्न किया। केरल में हिन्दी प्रचार केलिए जिन्होंने महत्वपूर्ण कार्य किया उनमें श्री. दामोदरन उण्णी, श्री. शंकारानन्द, श्री. के. वासुदेवन पिल्लै, डा० के. भास्करन नायर, डा० पी. के. केशवन नायर आदि उल्लेखनीय हैं। इन कर्मठ हिन्दी प्रचारकों के त्यागपूर्ण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवन से नयी पीढी के हिन्दी प्रचारक प्रेरणा ग्रहण करें।

(१३) मूल्यांकन

प्रस्तुत विषय की चर्चा करते हुए श्री० आर. सुकुमारन नायर ने बताया कि शिक्षण का उद्देश्य छात्रों के ज्ञानात्मक, कलात्मक (कौशलात्मक) और भावात्मक विकास हैं। हमने जो शैक्षिक कार्य किया, उस पर हम कहाँ तक सफल हुए हैं, यह समझने के लिए मूल्यांकन अत्यन्त सहायक हैं। इसलिये कदम कदम पर सही मूल्यांकन करते चलें।

(१४) हिन्दी पद्य साहित्य—नवीन प्रवृत्तियाँ

डा० अधीर ने हिन्दी पद्य साहित्य की नवीन प्रवृत्तियों की विस्तृत चर्चा करते हुए कहा कि समस्त काव्य कृतियों को चार भागों में विभाजित किया जा सकता है—व्यक्तिपरक, समाजपरक, राष्ट्रपरक और विश्वमानवतापरक। इन आधारों पर उन्होंने आदि काल से लेकर आधुनिक काल तक के पद्य साहित्य पर विचार किया। हिन्दी अध्यापक साहित्य की नयी गतिविधियों से अवगत रहें।

(१५) प्रयोजनमूलक हिन्दी

डा० अरुण चतुर्वेदी ने समझाया कि भाषा एक सामाजिक प्रक्रिया है। जाति, धर्म, व्यवसाय, आँचलविशेष और बैंक के स्तर पर भाषा के अलग अलग स्वरूप प्रयोग में आते हैं। भाषा-शिक्षण में मुख्यतया दो प्रकार की हिन्दी—सामान्य हिन्दी और विशिष्ट या प्रयोजन-मूलक हिन्दी—प्रचलित है। व्यावहारिक जीवन में प्रयोजनमूलक हिन्दी का प्रयोग होता है। जैसे–बैंकों के स्तर पर जमा करना, खातेदार, भुगताने आदि शब्दों का प्रयोग होता है। छात्रों को प्रयोजनमूलक हिन्दी से भी परिचित करना है।

(१६) हिन्दी शिक्षण में सहायक पाठ्येतर क्रियायें

श्री० के. जी. बालकृष्ण पिल्लै ने शिक्षण को अधिक रोचक बनाने केलिए कई पाठ्येतर क्रियाओं की ओर संकेत किया। जैसे—अभिनय, कवितावों का सामूहिक पाठ आदि। कवितावों को गेयात्मक रूप में प्रस्तुत करना, दोहा, चौपाई, आदि छंदों की कविताओं को गद्यात्मक ढग से प्रस्तुत करने से कविता अरोचक हो जाती है। ऐसी कवितायें सही ढंग से पढना सिखायें तो कविता अपने आप रोचक हो जायेगी। शुद्ध हिन्दी के उच्चारण के लिए टेप रिकोर्डर का प्रयोग कर सकें तो अध्यापन अधिक रोचक होगा और प्रभावोत्पादक भी।

(१७) आधुनिक कविता

कविता के संदर्भ में डा० पद्मावती ने आधुनिक शब्द की व्याख्या करते हुए आधुनिक काल के बृहत्त्रयी प्रसाद, पन्त, निराला के कृतियों पर प्रकाश डाला। कामायनी के दार्शनिक पक्ष की आपने विशद विवेचना की।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(१८) हिन्दी शिक्षण के संदर्भ में मनोविज्ञान

डा० एस. राजप्पन नायर ने बताया कि स्कूल के बच्चों को हिन्दी की शिक्षा देते समय उनकी परिस्थितियों तथा उनकी शारीरिक और मानसिक अवस्थाओं को ध्यान में रखना चाहिए। हिन्दी विद्यालयों में एक ही कक्षा में कई आयु वर्गों के विद्यार्थियों को एक साथ बिठा कर पढाने में जो मनोवैज्ञानिक समस्यायें उभर सकती हैं उनका भी आपने समाधान प्रस्तुत किया।

आपने आग्रह किया कि हिन्दी अध्यापन में मनोविज्ञान की उपलब्धियों से अधिकाधिक लाभ उठाया जाय ताकि हिन्दी आध्यापन और प्रचार सुगम हो जाये।

(१९) कविता शिक्षण

कविता शिक्षण के संबन्ध में डा० अरुण चतुर्वेदी ने इस मुख्य बात की ओर संकेत किया कि कविता के भावों को समझने की प्रेरणा देना कविता का मुख्य उद्देश्य है। कविता का मुख्य विषय रस है। कविता-वाचन ऐसे ढंग से होना चाहिए जिससे उसमें निहित भाव का बोध सुननेवालों में हो जाय। कविता के माध्यम से व्यक्ति में निहित भाव, बुद्धि, एवं कल्पना-तत्व को विकसित करना है।

(२०) व्याकरण—शिक्षण

व्याकरण-शिक्षण की दो प्रचलित विधियाँ हैं—आगमन या अनुगमनात्मक विधि और निगमन या निगमनात्मक विधि। अनुगमनात्मक विधि में उदाहरण, व्याकरणिक नियमों का अनुगमन करते हैं। निगमन विधि इसके बिल्कुल विपरीत है। निगमन विधि ही स्वीकार्य है और इस विधि के अनुसार पढाने से छात्र उदाहरण से नियम स्वयं सीख लेता है। श्री० टी. के. नारायण पिल्लै ने इन विधियों का विस्तृत परिचय दिया और कहा कि इन विधियों से व्याकरण शिक्षण सरल हो सकता है।

(२१) हिन्दी वर्तनी

श्री० पी. जी. कामत ने बताया कि मलयालम भाषी लोग जब हिन्दी बोलते हैं, तब अपनी मातृभाषा के प्रभाव से उच्चारण और व्याकरण विषयक गल्तियाँ हो जाती हैं। मलयालम भाषा में कर्ता के लिंग, वचन के अनुसार क्रिया में परिवर्तन नहीं होता। लेकिन हिन्दी में कर्त्ता के लिंग वचन के अनुसार क्रिया बदलती है। हिन्दी के शुद्ध उच्चारण पर मलयालम भाषियों को विशेष ध्यान देना चाहिए। उदाहरण केलिए मलयालम के 'वाल्मीकि' शब्द का सही रूप हिन्दी में 'वाल्मीकि' हैं। मात्राओं के स्पष्ट उच्चारण में भी मलयालम भाषियों को विशेष ध्यान देना चाहिए। वर्तनी की गल्तियों का सुधार दो प्रकार से संभव है—सह संबन्ध और अभ्यास।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूठी जिन्दगी

शकुन्तला सिरोठिया

लुटेरों से आतंकित
मैंने स्वयं को
बंदी बना लिया !
कक्ष के द्वार और वातायन
बंद कर लिए !

जिन्दगी ने दस्तक दी
मैंने चीख कर —
कान बंद कर लिए ।
नयन मूंद लिए ।

विठय जिन्दगी पुकार कर
लौट गयी ।

अनुभवहीन
विवेक शून्य मैं
एक चलती फिरती लाश हूँ अब !
व्याकुलता से
जिन्दगी को पुकार रही हूँ
किन्तु वह
मेरी आवाज की हद से
दूर जा चुकी है ।
वह लौट कर नहीं आती
अवहेलित,
रूठी जिदंगी को
मेरी याद नहीं आती ।। ★

१०९ बाई का बाग,
इलाहाबाद

---

(२२) हिन्दी-भाषा शिक्षण में दृश्य-श्रव्य उपकरणों का महत्व

श्री० आर. सुकुमारन नायर ने कहा कि शैक्षिक विषयों की ओर विद्यार्थियों की अभिरुचि बढ़ाने केलिए अनेक दृश्य-श्रव्य उपकरणों का प्रयोग किया जा सकता है । रंगीन चित्र, नक्शा, टेपरिकोर्डर, रेडियो, दूर दर्शिनी, फिल्म आदि इनमें प्रमुख हैं ।

नवीकरण पाठ्यक्रम में सुझाई गयी उपर्युक्त बातों पर हमारे हिन्दी प्रचारक और अध्यापक विशेष ध्यान दें तो निश्चय ही केरल के हिन्दी अध्यापन के स्तर में वांछित उन्नति आ सकती है । ❀

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धारवाड का नव हिन्दी लेखक शिविर

डा० एन. जी. देवकी
वी. शान्तकुमारी अम्मा

केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, नई दिल्ली के तत्वावधान में हिन्दीतर नव हिन्दी लेखक शिविर दिनांक २५–३–१९८२ से ३१–३–१९८२ तक हिन्दी विभाग, कर्नाटक विश्वविद्यालय, धारवाड़ के सहयोग से धारवाड में आयोजित किया। प्रस्तुत शिविर में भारत के हिन्दीतर प्रान्तों के १५ नव लेखकों ने भाग लिया। केरल से श्रीमती वी. शान्तकुमारी अम्मा (अधीक्षक, केरल हिन्दी प्रचार सभा), डा० देवकी (स्नातकोत्तर केन्द्र, केरल हिन्दी प्रचार सभा) कु० जे. अंबिकादेवी (शोध छात्रा), और कु० जे. रेणुका (शोध छात्रा) ने शिविर में भाग लिया।

२५ मार्च शाम को ४ बजे श्रीमती मोरा की सरस्वतीवंदना से शिविर का शुभारंभ हुआ। कर्नाटक विश्वविद्यालय

उद्घाटन समारोह में भाषण देते हुए डा० चन्द्रलाल दुबे (अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, कर्नाटक विश्वविद्यालय, धारवाड) बीच में बैठे हैं श्री० चेन्नवीर कणवी (कन्नड के लब्धप्रतिष्ठ कवि तथा समीक्षक) श्री० के. आर. करन (शिविर संयोजक–केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय नई दिल्ली)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष डा० चन्दूलाल दुबेजी ने स्वागत भाषण दिया। शिविर की अध्यक्षता कन्नड के लब्धप्रतिष्ठ कवि तथा समीक्षक श्री० चेन्नवीर कणवी ने की। कर्नाटक विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के प्रो० रामचन्द्रजी ने श्री० चेन्नवीर कणवी के कन्नड भाषण का अनुवाद हिन्दी में किया। कर्नाटक विश्वविद्यालय के कुलपति डा० एम. नंजुडप्पा ने आशीर्वाद भाषण दिया। शिविर संयोजक श्री० के. आर. करणजी ने अपने भाषण में शिविर के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए बताया कि राष्ट्रीय हित की दृष्टि से मातृभाषा के अतिरिक्त हिन्दी का प्रचार अत्यंत आवश्यक है। कर्नाटक विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के प्राध्यापक श्री० टी. आर. भट्टजी ने आभार व्यक्त किया।

केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय के श्री० के. आर. करण, श्री० सुमेरचन्द्र शर्मा एवं श्री० उमाकान्त खुवालकर का पूर्णकालिक सहयोग प्रतिभागियों को प्राप्त हुआ। प्रस्तुत शिविर के मार्गनिर्देशक थे कवि प्रो० चन्द्रकान्त देवताले (मध्यप्रदेश) नाटक साहित्य के विशेषज्ञ डा० दुर्गादीक्षित (पूना विश्वविद्यालय एवं बालसाहित्य के विशेषज्ञ) डा० मस्तराम कपूर ('दिल्ली' पत्रिका के संपादक)

शिविर के तीनों मार्गदर्शक विद्वान् आधुनिक साहित्य में अभिरुचि रखनेवाले हैं, आधुनिक विचार धारा के समर्थक हैं। प्रो० देवताले, डा० कपूर एवं डा० दीक्षित—तीनों विद्वानों ने साहित्य की विभिन्न विधाएँ विशेषकर कविता एवं कहानी पर अपने अपने स्वतंत्र विचार व्यक्त किए। शिविर की अधिकांश अवधि प्रतिभागियों की रचनायें पढने, उनपर चर्चा करने और मार्गदर्शकों द्वारा सुधार सुझाव देने में लगायी गया। बालसाहित्य के विशेषज्ञ डा० मस्तराम कपूर ने साहित्य सृजन प्रक्रिया पर विस्तार से प्रकाश डाला। बालसाहित्यकारों केलिए यह शर्त है कि उनको बच्चों की मानसिक स्थिति पर पहुंचना चाहिए जो अत्यन्त कठिन कार्य है। उन्होने यह भी बताया कि बच्चों को मौलिक अभिव्यक्ति केलिए अवसर देना चाहिए जिससे उनका मानसिक विकास संभव है। प्रो० चन्द्रकान्त देवताले ने इस बात पर ज़ोर दिया कि भाषा को सामाजिक संपत्ति मानना चाहिए। डा० दुर्गादीक्षित ने सर्जनात्मक रचना एवं सर्जनात्मक समीक्षा पर विस्तार से प्रकाश डाला।

प्रो० रामचन्द्रजी ने कन्नड भाषा के व्याकरणिक एवं व्यावहारिक स्वरूप की आर प्रतिभागियों का ध्यान आकृष्ट किया। उन्होंने बताया कि कन्नड वर्णमाला के कुछ स्वरवर्ण ही सर्वनाम हैं, जैसे—(आ) 'वह' सर्वनाम। कन्नड में तीन लिंग, दो वचन और आठ कारक हैं। लिंग, वचन, कारक के अनुसार संज्ञा में परिवर्तन होता है जैसा कि हिन्दी में होता है। कन्नड के बहुत शब्द मलयालम शब्दों से साम्य रखते हैं, जैसे: इल्ल—नहीं, कुडि—पीना, अन्ना—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चावल, ओड़ु–दौड़ना आदि । और कई शब्द समान रूप से कन्नड और मलयालम में प्रचलित हैं, जैसे: मर–पेड, नदि–नदी, बाल्य–बचपन, उप्पु–नमक, रात्रि–रात, मध्याह्न–दोपहर आदि । यही नहीं कन्नड लिपि कुछ हेर-फेर से अन्य दाक्षिणात्य भाषाओं की लिपि से साम्य रखती हैं, विशेषकर तेलगुलिपि से ।

इस शिविर में कुछ सांस्कृतिक कार्य-क्रम भी आयोजित हुए । धारवाड़ के स्थानीय 'रोटरी क्लब' की ओर से एवं कर्नाटक विद्यावर्धक भंडार की ओर से प्रतिभागियों का स्वागत सत्कार किया गया । शिविर में एक फिल्म दर्शाया गया जिस में धारवाड़ का परिवेश, सह्याद्रि का प्राकृतिक सौन्दर्य, श्रावणबेलगोला में बाहुबलि का महामस्तकाभिषेक, ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त कन्नड़ कवि, चिन्तक एवं लेखक स्व० दत्तात्रेय रामचन्द्र बेन्द्रे का जीवन चरित, तथा कवि, नाटककार, उपन्यासकार, आलोचक तथा प्रशासक डा० कु. वे. पु. (K. V. पुट्टप्पा) की जीवनझांकी (जो मैसूर विश्वविद्यालय में कन्नड के प्रोफसर एवं कुलपति थे) एवं रंगमंच के विकास में अपूर्व योगदान करनेवाले प्रसिद्ध नाटक-कार गुब्बि वीरण्णा का कन्नड-तेलगु दोनों में अभिनय भी दर्शाया ।

३१ मार्च, दोपहर को २ बजे, डा० देवकी की देवस्तुति के बाद कर्नाटक विश्वविद्यालय के मराठी विभाग के अध्यक्ष एवं कला संकायाध्यक्ष डा० आवलीकर की अध्यक्षता में प्रस्तुत शिविर का समापन समारोह प्रारंभ हुआ । डा० आवलीकर कवि, आलोचक, निबंधकार, तुलनात्मक साहित्य के मर्मज्ञ कन्नड–मराठी के अधिकारी विद्वान् और कुशल वक्ता हैं । शिविर संयोजक श्री० के. आर. करण, मार्गदर्शक विद्वान् डा० मस्तराम कपूर एवं डा० दुर्गादीक्षित ने इस सात दिवसीय शिविर की उपलब्धियों पर प्रकाश डाला । केरल का प्रतिनिधित्व करके डा० देवकी ने इस शिविर की उपलब्धियों पर प्रकाश डालते हुए शिविर के संयोजकों एवं मार्गदर्शक विद्वानों के प्रति धन्यबाद प्रकट किया । प्रमाण-पत्र वितरण के बाद श्री० टी. आर. भट्टजी के आभार प्रदर्शन के साथ सप्तदिवसीय हिन्दी नव लेखक शिविर समाप्त हुआ ।

इस शिविर की एक उपलब्धि यह है कि अपने आस पास जो साहित्यिक रचनाएँ हो रही हैं उनपर विचार करने का अवसर प्रतिभागियों को मिला । उन्हें कन्नड भाषा का व्यावहारिक स्वरूप समझने का भी अवसर मिला । इस शिविर की सबसे बडी उपलब्धि यह है कि भारत के विभिन्न प्रान्तों के हिन्दी नव लेखकों को परस्पर मिलने एवं एक दूसरे की संस्कृति, जीवन-पद्धति तथा विचारों से परिचित होने का अवसर मिला । इस दृष्टि से यह शिविर भारत की भावात्मक एवं सांस्कृतिक एकता को सुदृढ करने में अत्यंत सहायक रहा ।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कल के लिए

कल तुम्हारी याद में
आँसू बहाने के लिए
है कहां पानी
कहो तुम ही समय के नैन में
क्या दिया है आज को
तुमने
जरा सोचो सही
दिन बिताएँ हैं
बड़े आराम में
और चैन में ।
इसलिए भाई, सुनो
तुम आज को निज के हृदय की
रोशनी और स्नेह-संबल, प्यार दो
और अपने वास्ते
आते हुए कल को
नया आलोकमय
उजला धुला आकार दो । ❀

जनक राज पारीक

प्रधानाध्यापक
ज्ञानज्योति उच्चमाध्यमिक विद्यालय
श्रीकरनपुर-३३५०७३ (राजस्थान)

नागरी लिपि सम्मेलन

नागरी लिपि परिषद् का केरल प्रान्तीय सम्मेलन २-५-८२ को केरल हिन्दी प्रचार सभा के सहयोग से सभा भवन में आयोजित होगी ।

एक दिवसीय विचार गोष्ठी का विषय होगा "सम्पर्क लिपि के रूप में नागरी लिपि की भूमिका-दक्षिण भारत की भाषाओं के संदर्भ में ।" इस में दक्षिण और उत्तर के कई विद्वान् भाग लेंगे ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मलयालम कविता

मुर्गा और प्रभात

एन. वी. कृष्ण वारियर

पक्षहीन मुर्गे को
अंधेर में पिटवायें
तो वह कूकेगा न ?
पर मैं यह जानता हूँ,
मुर्गे के कूकते ही
स्वर्ग सुता पुण्य उषा
भूपर नहि उतरेगी ।
पौ फटना है क्या ?
तो सागर में उत्ताल
तरंगों की सृष्टि कर
मुर्गा कूकेगा तो
पौ फट जायेगा क्या ?
तो सहस्त्र मुर्गों से
बाँग लगवा दूँगा मैं
ऋषियों के तप बल से
व्याघ्री ने मृगशिशु को
दूध पिलाया था न ?
अब सर्कस में क्या है ?
कोडा मार मार कर के
व्याघ्र से मृगशिशु को
दूध पिलवा देते हैं !
उडने में असमर्थ
चंडानिल बहना है ।
पौ फटना है क्या ?
तो खर भास्कर नाखून से
चीरता होगा तम की
पाषाण सी छाती को
पौ फटना है क्या ?
तो
तृण तृण को
जड जड से पीना है
मृतसंजीवनि-हिमकण जी भर के ।
पौ फटना है क्या ?
तो
दुनिया की
जड जर्जर नस नस में
यौवन का ऊष्मल उन्माद उठे ।
तब
नवयुग संक्रम का यह उज्वल
उद्गम ही
निकलेगा मुर्गे के गल से
जय काहल बन ।
यह नव संक्रम बिन
मुर्गा कूके तो
वह किस का स्तुतिगान होगी ?
दिन का या रजनी का ?

★

रूपांतर: के. जी. बालकृष्ण पिल्लै

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माधविक्कुट्टी

(गतांक से आगे)

मूल : वैक्कम चन्द्रशेखरन नायर
अनुवाद : एन. कुमार पिल्लै

(पाँच)

बीमारी बढ रही थी। कुछ दिन थोडा आश्वास मिलता। कभी कभी बीमारी बढ जाती। डाक्टरों को बदल दिया। वैद्यों के इलाज से फायदा मिलने की आशा नहीं थी। इसलिये उन्हें बुलाना बंद किया। डाक्टरों ने एक एक रोग का नाम बताया। समझ में न आनेवाले नाम। कई दवाओं का नाम लिखा पर्चा मिला। बहुमूल्य दवायें। सब दवायें किसी न किसी तरह खरीदी। पर इस से रोग कम नहीं हुआ।

माँ बाप कहीं से कुछ रुपये जमाकर आये। दो हफ्ते तक रहे। उसी समय चिकित्सा हुई। उन दोनों आत्माओं ने चाहा कि किसी न किसी तरह कुट्टप्पन को बचा लें। लौटते समय उनका मन दुःख से भरा हुआ था।

वे अक्सर यहाँ आते। यहाँ ठहरना भी बड़ा बोझ है। भास्करन नायर दो बार भी उधर आये। कुछ देर तक बातें करके वे गये।

वे दूसरी बार आकर जाने लगे तो कुट्टप्पन ने पत्नी को पास बुलाया। फिर कहा:

"तुम से छिपायी गयी एक बात कहने जा रहा है।" उसने शंका से उन्हें देखा। क्या उस आदमी के बारे में कुछ कहने जा रहे हैं।

"एक राष्ट्रीय दल से मेरा लगाव है। उसके नेता है भास्करन नायर।" वे बोले।

"मुझे भी ऐसा लगा है कि तुम्हें ऐसे एक दल से लगाव है"। वह धीरे से बोली।

"है"। मैं बडा कार्यकर्ता नहीं था। तो भी लगाव के कारण कुछ कर चुका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हूँ। भास्करन नायर और भी बडा बनेगा।" वे चिन्ता में डूब गये।

वह चुप रही।

"मैं ने आज एक बात उनसे अकेले में पूछा।" कुट्टप्पन नायर बोले।

उसका चेहरा मुरझ गया।

"क्या ?"

"पूछा कि शादी करने की इच्छा नहीं ?—"

एक निष्कलंक मुस्कान कुट्टप्पन के अधरों पर रहा।

माधवि अपलक देखती रही।

वे बोलने लगे।

"उन्होंने कहा कि राजनैतिक दल के कार्यकर्ता के लिए शादी करना ठीक नहीं। एक समय ऐसा चाहता था। फिर उससे मन को हटा लिया। शादी करने से निजी स्वार्थता बढ़ेगी। तब अनीति में तत्परता बढ़ेगी। ऐसा कुछ नहीं चाहिये। जहाँ तक हो सके जनता की सेवा करनी चाहिए। उनके ऐसे कहते समय मेरी आँखें भर आयीं।"

हाँफते हाँफते कुट्टप्पन इतना कह सका।

माधवि कुट्टी चिन्ता में डूबी रही। उन्होंने फिर से पूछा:

"एक बार मेरी कही बात याद है तुझे ? वे वास्तव में धन लोभी नहीं—"

वह सुन रही थी कुछ दिनों से मन एक अचेतन चीज सा बन गया था। पति की सेवा शुश्रूषा के समय में ही उसे चेतनता आती है। वह चेतनता नहीं, आँसू का बहाव था। उसके कपोल कुछ कालों से भीगे ही रहे।

एक दुबला अस्थिपंजर पलंग पर पडा है। हाँफते हाँफते वह साँस ले रहा है। अस्पष्ट रूप से बोल रहा है। बीच में आँसू बहा रहा है। वह उसका पति है। वह उसकी एकमात्र सहारा है। अपने हृदय का अर्पण करके उससे प्रेम करने वाला, उसकी याद में रो रोकर पडा रहनेवाला आदमी वह मनसे प्रार्थना करती है कि वह जलदी स्वस्थ होकर दस दिन चलता फिरे। सदा, सदा......

वह आदमी इस अवस्था में भी भास्करन नायर के बारे में भला ही कहता है। वह पार्टी प्रेम से भी होगा। उसे वह मालूम हुआ। उस आदमी के अन्दर एक अलग ढंग का प्रेम है। विश्वास के कुछ तत्वों से।

यह बात माधवि कुट्टी को नहीं समझायी थी। एक बार भी उसने राजनैतिक बातों के बारे में उससे बातें नहीं की है। यह सब अन्दर सुरक्षित रखा हुआ कुछ विश्वास मात्र थे।

दूसरे दिन दीदी राधाकृष्ण और बच्चों के साथ आयी। दीदी कुट्टप्पन के पास ही बैठी। प्रेम से बात की। राधाकृष्ण ने पन्द्रह रुपये दिये। कुट्टप्पन को विषाद से देखते रहे।

दो पहर के बाद दीदी और बच्चों के साथ माधवि कुट्टी ने कमरे के बाहर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बैठकर बातें की । एक गरम हवा उनके चेहरों की ओर बह रही थी ।

"इस प्रकार यहाँ रखे रहना काफी है ?" दीदी ने खेद से पूछा ।

"फिर क्या करें दीदी ?" माधवि कुट्टी ने वेदना दबा ली ।

"अस्पताल में ले जायें तो ?"

"डाक्टर ने कहा कि उसकी ज़रूरत नहीं ।"

तो तिरुवनन्तपुरम ले जायें तो ?

"माता पिता के आने पर उन्होंने भी यह कहा । भाई का एक खत भी आया है । जो कुछ हो अगले हफ्ते में ले जाने का निश्चय किया है ।"

मार्धवि कुट्टी ने जवाब दिया । कुट्टप्पन से माधवि कुट्टी ने इसके बारे में बातें की । उसने भी सम्मति दी । भास्करन नायर की सहायता भी मिलेगी । उन्होंने यह कहा भी है ।

दीदी की दूसरी लडकी गोद में बैठकर पूछती है :

"माँ, चाचा मर जायेंगे क्या ?"

माधवि कुट्टी के अन्दर एक चौंक ।

वह बच्ची बार बार ऐसा पूछती रही । "ऐसा मत कहो बेटी" । दीदी ने कहा ।

तो भी हृदय में एक वेदना । एक डर । जीवन के बारे में एक अस्पष्ट याद । हाथ पैर जैसे शिथिल हो गये हों ।

"माधवि कुट्टी" दूसरी ओर से कुट्टप्पन का पुकार ।

एक चौंक । वह जल्दी उठकर उधर गयी । पीछे दीदी बच्चीको लेकर पहुँची ।

कुट्टप्पन अखबार खोलकर हँसते हुए लेटे हैं । मन शीतल हुआ ।

"क्यों " माधवि कुट्टी पास पहुँची । दीदी दरवाज़े पर बच्ची के साथ खडी रही ।

'तू ने देखा ?—कुट्टप्पन ने हाँफते हुए पूछा । भास्करन नायर को भी मंत्री मंडल में लेने की संभावना है । तू ने पढा न ?"

मार्धवि कुट्टी कुछ न बोली । फिर कहा "डाक्टर ने अखबार पढने से मना किया था ? उन्होंने कहा था कि आँखों को कोई बीमारी न आने पाये ।"

उन्होंने एक आज्ञाकारी लडके की तरह अखबार नीचे रखा ।

वह उनके पास बैठी । बहिन दूसरी ओर गयी ।

केवल अपनी पार्टी की स्थिति जानने के लिये ही मैं अब अखबार पढता हूँ । उससे मेरी बीमारी को शान्ति मिलेगी, माधवि कुट्टी । कुट्टप्पन ने आधा क्षमा-याचना के रूप में और आधा आह्लाद से कहा ।

वह कुछ भी न बोल सकी । उसे अब उस आदमी की मनःशान्ति की ही बडी चिन्ता थी ।

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पिछवाडे की ओर जाने पर दीदी ने बुलाया—

"माधवि कुट्टी" !

"क्यों ?"

बहिन ने उसे घूर कर देखा ।

"देवर ने ऐसा क्यों कहा ?" उसकी आँखों ने माधवि कुट्टी को माप-तोल लिया ।

"क्या कहा ? माधवि कुट्टी को कुछ भी समझ में न आया ।

"भास्करन नायर के बारे में कहा न?' दीदी का चेहरा काला पड गया ।

"उन्हें उस आदमी के प्रति बडा आदर है" माधवि कुट्टी ने कहा ।

दीदी कुछ न बोली ।

"दीदी ने ऐसा क्यों पूछा ? माधवि-कुट्टी दीदी की ओर देखती रही ।

"कुछ नहीं"

स्वर से स्पष्ट था कि इसमें कुछ न कुछ है ।

"तो भी—ऐसा क्यों पूछा ?" माधवि-कुट्टी ने फिर से पूछा

"देवर की बातचीत सुनकर" दीदी ने लापरवाही से कहा ।

"क्या दीदी को कुछ बुरा लगा ?"

दीदी की आँखें बडी नहीं । तो भी ऐसा लगा कि वे आँखें बडी हैं । वे आँखें उसे कोस रही हैं । उनके शब्द बाहर निकले ।

"मुझे ऐसा लगा कि वे आदमी तुझपर सन्देह करते हैं । नहीं तो ऐसा नहीं कहते । भास्करन नायर तुझ से प्रेम करते थे । यह बात कुट्टप्पन को भी मालूम है । उसके मन की वेदना से ही ऐसा कहा । कुट्टप्पन ने कहा था कि भास्करन नायर दो-एक बार यहाँ आये थे । वे क्यों आये ?"

माधविकुट्टी का चेहरा अनजाने झुक गया । किसी भी कारण के बिना दीदी सन्देह कर रही है । वह पिछवाडे में जा बैठी और थोडी देर रोयी ।

पर उस दिन शाम को एक घटना हुई जो उसकी सभी वेदनायें दूर करने में समर्थ थी ।

राधाकृष्ण, दीदी और बच्चे जाने लगते हैं । वे कुट्टप्पन से विदा ले रहे थे ।

कुट्टप्पन ने कहा : "जो भी हो तिरुवनन्तपुरम जाने का विचार है । सब कहते हैं कि वहाँ जाने से यह बीमारी हट जाएगी । विशेष कर भास्करन नायर का यही विचार है । पिछले दिन यहाँ आने पर हठ करके उन्होंने कहा । वे अच्छे आदमी हैं । हमारे घरवालों को उनके संबन्ध में कुछ गलत धारणायें होगीं पर वह ठीक नहीं । वे योग्य व्यक्ति हैं ।"

माधवि कुट्टी ने देखा कि दीदी का चेहरा विवर्ण हो रहा है । वे गये ।

शाम को थोडा सा पानी बरसा । माधवि कुट्टी ने देखा पूर्वी आंगन में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिट्टी गीली पड़ी है। वहाँ पैरों का निशान। कौन इधर आकर गया? वह कुछ समय देखती रही।

अन्दर खाँसी।

उसने पति को दवा दी।

बाहर आयी। फिर पैरों के निशान की ओर ध्यान से देखा। अज्ञात निशान।

वह आंगन उतर आयी। जाँच की। नहीं पहचान पायी।

संध्या को दीप जलाया।

अन्दर से पुकारा।

माधविकुट्टी!

वेदना भरी पुकार।

वह भाग आयी। थोडी देर पहले प्रसन्न पडे थे। कुट्टप्पन नायर थके मांदे बेहोश पडे हैं। उसने छाती पर हाथ रख कर चिल्लाया—"क्या? क्या हुआ?"

उनकी आँखें बंद थीं। अचानक पैरों के निशान की याद आयी। क्या वे मृत्यु के पैरों के निशान थे? हृदय धडकने लगा। जैसे एक समुद्र में गिर गयी हो।

उसने उन्हें हिलाकर पुकारा। थोडी काफी पिला दी। दूकान से लडका आया। वह रोया। पडोस से दो-तीन औरतें आयीं। एक पुरुष भी।

पुरुष डाक्टर को बुलाने गया। कुट्टप्पन आँखें बंद करके पडा था। माधविकुट्टी रोती हुई पास बैठी। डाक्टर आये। इंजक्शन दिया गया। यों कह कर कि, आधा घंटे के बाद आश्वासन मिलेगा। पर, रात में खूब सोयेगा, मत जगाना। दवा सवेरे देना ही काफी है।

आधा घंटा बीतने पर आँखें खुलीं। देखा उसको। उसके हाथों को पकडा। माधविकुट्टी का हृदय हिला। जैसे हवा का झोंका लगा हो।

दूसरों के जाने पर उसने धीरे पूछा:

"बात क्या थी?"

"एक विवशता।"

"दर्द है?"

"नहीं" उन्होंने कहा।

उन्होंने उसके हाथों को अपनी छाती पर रखा।

किसी असाधारण चिन्ता से प्रेरित होकर वह पूर्वी आंगन में उतरी। पैरों के निशान की जाँच की। उसे आश्चर्य लगा। पहले शाम को पैरों का निशान अन्दर आने का था। अब निकल जाने का निशान भी है। क्या वह आदमी घर में ही था? क्या वह मृत्यु थी? शायद उसने पहले इसपर ध्यान न दिया होगा।

पैरों के निकल जाने का निशान देख कर आश्वासन हुआ।

रात के साडे दस बजे होंगे। कुट्टप्पन सो गया। माधवि कुट्टी नहीं सोयी। कई दिनों से सोयी नहीं, इसलिये सोने लगे तो ठीक नहीं होगा, समझा। बुलायें तो सुनेगी नहीं। संध्या की ढाभा दूर हुई। आंगन में रोशनी है। चाँदनी। वह दरवाजे के बाहर बैठी। कुछ दूरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर बरामदे पर लडका सोया पडा है। उसके यहाँ आने पर वह लडका कभी चैन से नहीं बैठा है। कई बातें सोचकर आँखें भर आयीं। अगले सप्ताह में 'तिरुवनन्तपुरम' में जाना है। पैरों की आहट। उसने चेहरा उठाया। एक रूप। उसने आँखें खोलकर देखा। बरामदे में वह आदमी खडा है। भास्करन नायर...

"सोयी नहीं ?" उनका सवाल।

चौंक उठकर उसने जवाब दिया :

"नहीं"

वह पति को बुलाने लगी। पर अचानक डाक्टर की बातें याद आयी। सोएगा। जगाओ मत।

लडके को बुलाया। वह करवट बदल कर लेटा। जगा नहीं। उठा नहीं।

"नहीं, मैं जानेवाला हूँ। कुट्टप्पन को एक बार देखकर जाना ठीक समझा......"

एक ओर हट कर माधवि कुट्टी ने कहा "शाम को बीमारी बढी। डाक्टर ने इंजक्शन दिया। सोयेंगे। डाक्टर ने कहा था कि मत बुलाना।"

"बुलाना मत। एक बात कहकर जा रहा हूँ।"

भास्करन नायर ने कहा।

उसने दीप लेकर बाहर रखा। वे दक्षिणी छोर में कुरसी पर बैठे।

माधवि कुट्टी कमरे के बाहर खडी रही।

"पास आओ, एक बात कहूँ" उन्होंने बुलाया। वह दो तीन कदम आगे बढी।

उन्होंने एक पुडिया बढा कर कहा—

"कुट्टप्पन ने मुझ से कुछ रुपये माँगे थे। तिरुवनन्तपुरम जाने को। रुपया लाया हूँ। यह उन्हें देना। उधर आने पर बाकी सारी बातें मैं देख लूँगा।

उन्होंने पुडिया बढा दी। दो पल उसने सोचा पति के माँगे रुपये हैं। टालना ठीक नहीं। वह आगे बढी। रुपये स्वीकार किये।

वह अपने हाथ वापस नहीं हटा सकी। वह उनके हाथों में फँस गयी।

"छोडो" यों आवाज करने की इच्छा हुई। कर न सकी। मुडकर देखा। वह लडका गहरी नींद में पडा है।

वे उठे। जबरदस्ती से उसे छाती से लगाया। बरामदे से घसीटकर दक्षिणी भाग में ले गये।

हट जाने की कोशिश की। उनके हाथों का बल बढ गया है। उस दिन निराहार रहने से वह बिलकुल थक गयी थी।

वह ज़ोर से रोयी। सिसक सिसक कर रोयी। गीली मिट्टी। वह उसके सारे शरीर पर लग रही है।

पाताल ऊपर है। मनुष्य के ऊपर। वह ऐसी एक चीज़ है, जिसके मुख, दाँत, जीभ, अधर, संवारे बाल सब कुछ है। उसका वजन अनुभव किया उसने। उसे ऐसा लगा कि भूमि उसे ऊपर धकेल

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रही है। अनिच्छा से सिर जैसे भारी पड गया हो। दम धुट रहा है। पैरों को जैसे फाडा जा रहा है।

मुख और छाती पर भीगे पर वालों का रगडना। जीवन केलिये वह लड रही है। पर वह भूमि पर दवी जा रही है।

वह थक गयी। उसे ऐसा लगा कि वह बडा आदमी उसे काटकर खा रहे हैं। दूसरी ओर से कोई वुला रहा है? वह तडप उठी।

शरीर पुलकित हुआ। नहीं, शरीर से रोमकूप मिट्टी में गिर रहे हैं। उसके हाथ पैरों पर गीली मिट्टी लगी थी। उनके उठने पर उसे मरने की इच्छा हुई। उसकी धोती उन्होंने उसकी ओर बढायी तो मुख झुकाकर उकडूँ बैठकर वह सिसकने लगी।

कई पल। वे बरामंदे की ओर गये। वह धोती पहनकर पिछवाडे की ओर गयी। दीवार से लगकर रोयी। "माधवि कुट्टी" अन्दर से धीमे स्वर में बुलाया।

वह चौंकी। पति की पुकार। वह अपना मुख पोंछकर उत्तरी भाग से कमरे में आयी दीप लेकर।

कुट्टप्पन आँखें मूँदकर पडे हैं।

"क्यों जी" वह उनके पास खडी रही।

"पानी"... कुट्टप्पन ने आँखें खोलीं। उसने थोडी काफी दी।

उसी समय भास्करन नायर ने दरवाज़े के पास आकर धीरे से पुकारा:

"कुट्टप्पन!"......

उन्होंने देखा।

भास्करन नायर पलंग के पास आये। एक लाश के समान माधवि कुट्टी पति के सिरहाने खडी रही। "मैं अभी अभी आया। कुछ रुपये यहाँ दिये हैं। जल्दी ही तिरुवनन्तपुरम आना। बाकी सब कुछ मैं देख लूँगा।" भास्करन नायर ने कहा।

माधवि कुट्टी की नसें खिच कर टूट रही थीं।

उन्होंने कुट्टप्पन के पास जाकर बिदा ली। कुट्टप्पन ने कमज़ोर हाथ जोडकर विदा दी। वे गये।

भरी वेदना मन में दबाकर उसने पूछा:

"क्या तुमने उनसे रुपये माँगे थे?

"नहीं"...... कुट्टप्पन ने कहा। "ऐसा कहा था?" उसके कुछ बोलने के पहले कुट्टप्पन ने कहा:

"उन्हें मुझ से ही नहीं, पार्टी से भी बडा प्रेम है। आयी समझ में माधवि कुट्टी? इसलिये वे इतनी मदद करते हैं।"

उसके अधर फटकने लगे। आँखें बंद हुईं। मूर्छित सी वह नीचे बैठ गयी।

(क्रमशः)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर्णभूषणम

मूल : महाकवि उल्लूर
अनुवाद : कवियूर शिवराम अय्यर

[मलयालम के कवित्रय में उल्लूर का अपना स्थान है । वे महाकवि थे, बडे विद्वान थे और उच्च कोटि के गवेषक थे ।

वे भारतीय संस्कृति के गायक थे । वे भारतीय संस्कृति के अंधे भक्त नहीं थे । "निश्चल होने के कारण जो संस्कृति काई से आच्छादित थी उसे काई का उन्मूलन कर फिर से चलनात्मक बनाने का कार्य उल्लूर ने किया ।"

कर्णभूषणम ने दानवीर कर्ण के व्यक्तित्व को एक नया मान दिया है । महाभारत का कर्ण गाथा को कवि की मौलिक सूझ ने अधिक प्रेरणाप्रद बनाया है । कर्ण-कथा का ऐसा चित्तण हिन्दी में शायद अब तक नहीं हुआ है ।

कर्णभूषणम का अनुवाद बडे मनोयोग से प्रस्तुत किया है अनुभवी एवं प्रतिभाशाली विद्वान श्री० कवियूर शिवराम अय्यर ने ।

I

है वह रात, विलंब बिना
वासरश्री से मिलनेवाली
सूरजतनया यमुना जैसे
सुरसरिता से मिलती है ।

देव धामनिधि हर्षित हो के
पुन: सर्व सचराचर में
बार बार निज वसु संचय को
वितरण करनेवाला है ।

पूंछ सहित रक्तिम टोपी
पहने सिर उन्नत करते
नागर चरणायुध जहाँ तहाँ -
है आवाज दिये फिरते ।

वेतन पाने को राजस्तुति
दुहरायी निज रसना को
सूत मुख्य अब धन्य बनाते
गाकर प्यारे राणा को ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

II

द्वादश वत्सर कृपण रहा जो
बादल, उस में पहले-सा
जिस तापस को लखते ही फिर
दान-धर्म झट जाग उठा,

औ' जिसने ही हव्यवाह को -
(खाता जो कि न खिलवाता)-
पायस-अमृत-पयोधि बनाया
वह वैश्वंडक भव्य तपा,

जिस दिन पधरे उसी सुदिन से
जिसको मांगल्य देवता
सप्रेम सदा पाला करता
वह देश यही अंगमही ।

छली मेघ की नव मैत्री की
जांच-परख जनु करने को
अंबर में निज शीर्ष उठाए
कनक सौध हैं खड़ा एक ।

पहुँच गये हम सिंहद्वार पर;
हाँ, यह कर्णामृत गाना
उसी दिशा से बहते बहते
भले सुनाई देता है ।

III

घुस जावें; यह कौन स्वर्णमय
कोमल शय्या पर सोया है ?
जग मोदप्रद दान बहाता
पार्थिव कुंजर-वर नेता है ।

इसकी तन-शोभा के आगे
भासुर तल्प पडा है फीका;
आश्चर्य नहीं, भास्कर से ही
फूटा है यह कुँवर अनोखा ।

मौर्वी-वट्टा कर पर शोभित
होता है ज्यों अलि पंकज में,
पिए हुए जन-दैन्य-हलाहल
मानो जमकर बैठा भुज में ।

मंडल बढते हुए भूप के
कर्ण-विभूषण जगमग कुंडल
विशाख तारे-से मुख-शशि का
परिचारण करते अगल बगल ।

कर्ण सुई से विद्ध नहीं हैं,
कुंडल शिल्पी के न बनाये
कृतक विकृत भी नहीं, मगर हैं
पहनाये सहजात गर्भ से ।

उसी भांति है उर पै पहना
एक सुनहला कवच मनोहर
वीर-श्री के अंतःपुर का
मानो समुचित परदा सुंदर ।

मुग्ध वधूजन, कुंडल दीपक
ढकने को जब हाथ बढावें
दीप्त कवच लख लज्जा से निज
दृग ढकने को हस्त उठावें ।

IV

तल्प-विराजित पुरुष रूप उस
साकार पराक्रम को तुमने
अब पहचाना होगा, हाँ वह
भास्वर सुत भारत जननी का ।

श्रीयुत जिसके दिव्य नाम को
निज नाम-प्रतिध्वनि-से सुनकर
जग-कर्ण हुआ पुलकित, वह है
सार्वभौम यह त्याग-मही का ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भास्कर, द्वापर दुर्गति-तम को,
पारग कार्मुक-वेद-अब्धि का,
प्रिय शिष्य महेश्वर-चेले का,
कुसुमायुध अगमही-रति का,

प्रथम पुत्र कानीन पृथा का,
कर्ण कालपृष्ठ-धनुर्धारा,
अभिनव जीमूतवाहन किसे
अभिराम नृत्य न करवाता ?

उस पुरुष के सुभ-गंडों पर
छायी कर्पूर-सी मंद हँसी
'मत छोड़ हमें' कहते कुंडल-
युग का मानो सांत्वन देती।

मैत्री पाने, वैर चुकाने
की होड़ दुरों में जब होती
बंधु-रहित की वीर हँसी क्या
स्वावलंब की जोति जलाती ?

V

यह कौन अरे ! भीतर जाता
जग का जंगम चैतन्य यथा ?
स्वर्ण शैल का टुकडा है क्या ?
या कि सुदर्शन जो हरि धरता ?

नहीं, नहीं, यह भूसुरवर है
पिता प्रसुप्त धनुर्धारी का ;
तेजस्वी क्या और कोई है
पावन भास्कर देव सरीका !

रूपसि मानवती कुंती का
कौमार-चोर नलिनी-वल्लभ
सुत-मुख-दर्शन-कौतुक से ही
विचर रहा है भू पर दुर्लभ।

कुंतिभोज की बिटिया ने झट
आर्ष मंत्र पढ रसाल फल-से
इसके पहले धरणी तल में
खींच गिराया नभ मंडल से।

वह घटना औ पीछे की सब
याद उसे क्या आयी उमड़े ?
इसीलिए क्या प्रभु के तन पर
खड़े हुए हैं प्रकट रोंगडे ?

औरों के हित जीनेवाला
त्याग धनी है बेटा ; तिस पर
क्षात्र तेज जो झलक रहा, वह
भौमिक यद्यपि प्रखर भयंकर।

अपना अभिमत ऐसे सुत से
कैसे कहना, इस शंका वश
अंग अंग जो कंप चढा, वह
प्रगट रहा हो तरल प्रभामिस।

दूर पंक में पडे मुकुर को
अपने कर से जो सहलाता
पुण्य सुतांग लगाने जब वह
जाव चेष्टा क्या न दिखाता ?

उसी भांति करमाला उत्सुक
सुत-वात्सल्य-विमूढ बिचारे
राज सदन में सोते अपने
प्यारे सुत के निकट पधारे।

(क्रमशः)

❀

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देख कबीरा रोया

कुकु

भीतर भर हरिनाम !

शाम तक कार्यालय में लाल फीतों की गाँठों में सिकुड कर रहने से उत्पन्न मानसिक थकान लेकर बाहर निकला। मन को ठंडा करने की आशा से सीधे पासवाले वाचनालय में प्रविष्ट हुआ। पत्र-पत्रिकाएँ उलट-पलटकर देखा तो मन में फुर्ती उत्पन्न हुई और उसी उमंग में बाहर निकला।

"अरे?...यह कौन?...कहाँ से पधारे हैं श्रीमानजी ?"

देखा, तो सामने खडा है पुराना लंगोटिया यार! प्रारंभिक पाठशाला से लेकर कॉलेज तक एक साथ पढते रहे। रहते भी अडोस-पडोस में। दो घरों में रहते थे तो भी उन दिनों में चौबीसों घंटे साथ साथ बिताते थे। हाईस्कूल और कॉलेज में वह 'पार्टी कामरेड' रहा, विद्यार्थियों का जोशीला नेता और विद्यार्थियों का प्यारा। कई बार पुलिस से उलझा था, थाने में बन्द पडा था, जेल में रहा था। स्नातक बन न पाया था, पार्टी कार्यकलापों में आमग्न रहने के कारण। एक दिन सुना कि वह अचानक घर छोडकर चला गया। मुझे इसकी सूचना घर से दूर कॉलेज में मिली। छुट्टियों के दिन घर आया तो उसका एक पत्र मिला, मध्य प्रदेश के किसी शहर से। लिखा था—एक कंपनी में नौकरी मिल गयी। आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए आवश्यक धन प्राप्त होता है।......

वही लंगोटिया यार मेरे सम्मुख है। घरवालों तथा पुराने मित्रों से मिलने की इच्छा से दो महीनों की छुट्टी पर घर पहुँचा है। उसको देखते ही—स्कूल कॉलेज की सुनहली स्मृतियाँ उभर उभर कर आने लगीं। कितना आनन्द, कितना उत्साह।

चलो यार, घर हो के चलेंगे।

क्यों नहीं, चलो। आज खूब खिलाओ पिलाओ। कुछ दिन बाद लौट जाना है। तब तक तुम्हें भी अपने घर ले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाना है .....

कोई खास बात ?......

अरे, भाभी और बच्चों को देखना नहीं चाहते ?

भाभी और बच्चे .. अरे बदमाश... मुझे इसकी सूचना कभी दी थी तूने ?...

देखो यार, माँफ करो . मध्यप्रदेश को ससुराल बना दिया...वैसे तो जो होना था होता ही रहा .. छोड दो उनके बारे में फिर चर्चा करेंगे...अभी चलो, तुम्हारे घर चलें ..

अच्छा...अभी साढे छ: बजे हैं । सीधे चला चलें, पैदल । बातें करते चलेंगे। सालों के बाद मिले हैं ।

क्यों नहीं ?...खुशी से चलें कब तक घर पहुँच सकेंगे ?

तीस मिनट में पहुँच जाएँगे ।

ठीक...चलें...

X X X X

सात बजे हम घर पहुँचे । बिजली के दीपों के बीच में चिराग में तेल के पलीते टिमटिमा रहे थे । बच्चे राम नाम जप रहे थे। मित्र उस दृश्य को देखता रहा । झट जूता उतार कर रख दिया, दीपक के निकट जाकर निश्चल स्थित हो गया । आँखें मूँद लीं, हाथ जोड लिया । फिर चंदन लेकर तिलक किया ।

मैं स्तब्ध रहा ! यह मैं क्या देख रहा हूँ ? 'कामरेड' संध्यादीप का देखकर इन्द्रियों को भूल जाता है । डायलेक्टिकल मेटीरियलिज़्म का प्रवक्ता राम नाम में शक्ति पा रहा है । 'क्लास-स्ट्रगिल' का प्रयोक्ता भगवान के चित्र के सामने हाथ जोडकर दुआँ माँग रहा है ।

इतने में घरवाली आयी । परिचय कराया । जलपान हुआ । भोजन की तैयारी के लिए वह अन्दर चली गयी । मैंने पूछा :

अरे, चार सौ बीस । तुमने यह कौन सा वेश बनाया है ?

क्या हुआ ? वेश ? किसका वेश ?

तुम तो बडे नामी कामरेड रहे !... और अभी मैं ने तुम्हें राम नाम जपते देखा ।

अरे, किसी ने कहा था—बाहर भेस बनाइये, भीतर भरा भंगार !... उसमें मैं ने जरा परिवर्तन कर डाला—"बाहर वेश बनाइये, भीतर भर हरिनाम ।"

बडा कवि बन रहा है...अरे, यह मुझे पचता नहीं ।

भाई, यह पाचन की बात है । इस पीठी के लोग, हम और हमारे बच्चे जो कुछ खाते, देखते और सुनते हैं वे सब पचने का नहीं हैं । ऐसा भोजन लेना चाहिए जो पचता हो । जो वस्तु हमारे लिए पचती नहीं है उसको जबरदस्त खाकर अपच की बला क्यों मोल लें? हम भारत में जन्मे हैं, भारत में पले हैं, भारत की संस्कृति नस नस में भरी पडी है । तो...उसी के अनुरूप सोचना और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काम करना ही उचित है । उसके विरुद्ध होने की मनोवृत्ति युव-चपलता है । चपल मनोवृत्ति शाश्वत नहीं । पूरा विश्वास है कि हमारे कामरेड हर रात हरिस्मरण करके ही निद्रालीन होते हैं । बाकी सब वेश, ढोंग ।

तो यार तुम्हें यह सीख कहाँ से मिली ?

जब मैं पिता बना, तब । मैं ने सोचा बच्चों को पहले हम रोटी-दाल या चावल-साम्बार न देकर स्तन्य क्यों पिलाते हैं ? घरवाली बच्चे को जब स्तन्य पिलाती थी तब मैं सोचता था— मनुष्य की प्रत्येक आयु में पाचन शक्ति अलग रहती है । यह पाचन शक्ति आमाशय की भी है और बुद्धि केन्द्र की भी है । दोनों के लिए अपनी अपनी पाचन शक्ति के अनुरूप भोजन प्रदान करने पर ही शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य बना रहता है । यज्ञकुंड से उडनेवाली अग्निशिखा में घी डालने पर वह ज्वाला प्रखर होती है और सुगंध फैलाती है । लेकिन घी की मात्रा अमित हो जाए तो अग्नि बुझ जाती है और ज्वाला के बदले धुआँ निकलने लगती है ।...

वाह...वाह।।... भाई .. मैं तुम्हारा शिष्य बनना चाहता हूँ । ..

चुप रहो यार !... मैं यह सब आनेवाली पीढ़ी के लिए, हमारे बच्चों के हित कह रहा हूँ । कोई भाषण नहीं है ।

हम लोग अपने बच्चों को ऐसी ची नहीं देते जो उनकी पाचन शक्ति अनुरूप हो । अपच होगा... अव होगा । लेकिन अपच के दुःख सहनेवा हम नहीं, हमारे बच्चे होंगे ... आगा पीढी होगी !...उस पीढी के हितार्थ हरिस्मरण करता हूँ ।

भरत नाट्यम
कुमारी सिन्धु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तक समीक्षा:

कवित्रयवाणी*

डा० इंद्रराज वैद

साहित्य को समाज का दर्पण कहा गया है। समाज के विविध कार्यकलाप और उसका जीवन-दर्शन साहित्य में मुखरित होते हैं। यदि किसी जन-समुदाय की आशा-आकांक्षाओं को, उसके आचार-विचार को और उसके वर्तमान-भविष्य को जानना हो तो एकमात्र साहित्य का ही सहारा लेना पडेगा। आधुनिक मलयालम कविता केरलीय जीवन के सुंदर चित्र तो प्रस्तुत करती ही है, केरल के चिंतन को भी प्रभावी ढंग से अभिव्यक्त करती है। 'कवित्रय-वाणी' ऐसी ही सुन्दर अभिव्यक्ति का प्रकाशन है। आधुनिक मलयालम साहित्याकाश के तीन जाज्वल्यमान् नक्षत्र हैं—कुमारन् आशान्, उळ्ळूर एस. परमेश्वर अय्यर और वळ्ळत्तोल नारायण मेनन। इन तीन मलयालम साहित्यकारों ने केरल के चिंतन को, उसके जीवन-दर्शन को अत्यंत सरस, पर साथ ही गंभीर मार्मिक वाणी प्रदान की है।

'कवित्रयवाणी' में इन तीन महाकवियों के चुने हुए कुल ३०३ काव्योद्धरण संकलित हैं। केरलीय प्रकृति की रमणीयता से लेकर विश्व-मानवता की अवधारणा तक का समस्त क्षितिज इन उद्धरणों के माध्यम से समेट लिया गया है। कुछ उद्धरण जहाँ अपने रचनाकार का वैयक्तिक वैशिष्ट्य लिये हुए हैं तो कुछ सामान्य विषयों की समरंगीन झाँकियाँ प्रस्तुत करते हैं। राष्ट्रीयता, प्रगतिशीलता और विश्व-मानवता की उदात्त भावना के दर्शन तो हमें इन तीनों समकालीन कवियों की वाणी में मिलते हैं। ये तीनों कवि, जिनकी जन्म शताब्दियाँ क्रमशः १९७३, १९७७ और १९७८ में मनायी गई, अपने समय के परम मेधावी विद्वान्, संस्कृत के पंडित, राष्ट्रीयता के उद्घोषक और विश्व-बंधुत्व के व्याख्याता थे। तत्कालीन समाज में भारत में व्याप्त जातिवाद के विरोध में उन्होंने आवाज उठायी और मानवैक्य का अलख जगाया।

यथा :

(अ) "ईर्ष्या को, इस महारोग 'जाति' को
कोई पूजो मत।"

—आशान् (चंडाल भिक्षुकी ४–१३७) पृ० ७१

(आ) "मनुज-मनुज में छुआछूत है
इनके पार भी होगा कोई
दुराचार?"

—उल्लूर, (सौभ्रातृ गान १५२–१५३), पृ० ७४

* दस् स्पेक दि पोयटिक ट्रायो (कवित्रयवाणी), सं० डा० पी. के. नारायण पिल्लै, प्र० महाकवि उल्लूर मेमोरियल लाइब्रेरी एंड रिसर्च इंस्टीट्यूट, त्रिवेंद्रम; प्र० सं०, सन् १९७९ ई० मूल्य १५.००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(इ) "एक मनुष्य दूसरे मनुष्य को
अछूत माने ।
इन दंभियों के मिथ्या ग्रंथों को
फाड़ डालो ।"
—वल्लत्तोल, (पिता का श्राद्ध–
४), पृ० ९०

जातिवाद के विरुद्ध कुछ ऐसा ही स्वर हमें दिनकर जी की रचना 'रश्मिरथी' में भी मिलता है :—

"ऊपर सिर पर कनक छत्र,
भीतर काले के काले ।
शरमाते हैं नहीं जगत् में
जाति पूछनेवाले ।।"

केरल की यह 'कवित्रयवाणी' हमें प्रेम का संदेश देती है । प्रेम को जगती का सार, जन-समुदाय का धर्म मानते हुए कवि कहते हैं :—

(अ) "स्नेह सार है अखिल जगत् का
स्नेह सार ही एक सत्य है ।"
—आशान्, (नलिनि १३६),
पृ० ७७

(आ) "धर्म एक ही प्रेम, जो कि
जगत् का प्राण......"
—उल्लुर, (प्रेम संगीतम्–१),
पृ० ७६

यों तो तीनों ही कवियों की कविताओं में राष्ट्रीयता की झलक दृष्टिगत होती है, पर वल्लत्तोल की कविता में राष्ट्रीय भावना का परम तेजस्वी स्वरूप हमें देखने को मिलता है, ठीक वैसा ही जैसा उर्दू के इकबाल, हिन्दी के भारतेंदु और तमिल के भारती की रचनाओं में मिलता है । वल्लत्तोल की ये पंक्तियाँ भारत जननी को आराध्या के रूप में प्रतिष्ठित करती हैं —

"हमारे लिए मातृवाणी ही वेद हो,
मातृशुश्रूषा ही यज्ञ हो ।
भाइयो, माता के हित
अपना प्रिय जीवन अर्पित करो ।
माता को छोड़
अन्य कौन ईश्वर है ?"
(मातृवदनम्) पृ० ८

प्रस्तुत संकलन में अनेक सूक्ति-मणियाँ भी बिखरी पड़ी हैं । कुछ तो इतने सशक्त कथन हैं कि हृदय को झकझोर डालते हैं । जैसे—

(अ) "नियमों को बदलो, नहीं बदलोगे
तो बदलेंगे नियम तुम्हें ।"
आशान, (दुरवस्था ८३

(आ) "चाह नहीं कल्पांत काल तक
पत्थर बनकर रह जाऊँ
चाह यही कि एक कुसुम बन एक
दिवस बस खिल जाऊँ ।
उल्लूर, (पनिनीर पूवु ३)
पृ० ७

(ई) "पिंजड़ा कंचन की ही क्यों न हो
बंधन आखिर बंधन ही है ।"
वल्लत्तोल, (शुकालाप १५)
पृ० ८

"कवित्रयवाणी' की विशेषता इस बात से भी बढ़ जाती है कि इसमें मलयालम के मूल उद्धरण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हित हिन्दी और अंग्रेज़ी में उनके रूपांतरण दे दिये गये हैं ।

इस प्रकार यह संकलन उत्तर भाषा-भाषियों के लिए भी पठनीय बन गया है । हाँ, मलयालम के उद्धरणों का देवनागरी लिप्यंतरण भी दे दिया जाता तो अधिक उत्तम था । मलयालम के भाषा-पाठ के आनंद से वंचित ही रह जाएँगे हिन्दी के पाठक । सर्वश्री के जी बालकृष्ण पिल्लै, कुन्नुकुषि कृष्णन कुट्टी और प्रो० सी. जी. राजगोपाल ने आशान, उळ्ळूर और वळ्ळत्तोल के काव्यांशों का क्रमशः हिन्दी में रूपाँतरण प्रस्तुत किया है तो अंग्रेज़ी में यही कार्य संपन्न किया है सर्वश्री डा० के. श्रीनिवासन, प्रो० के. शंकरन् नंबूतिरि और डा० के. अयप्प परिणकर ने । हिन्दी और अंग्रेज़ी दोनों भाषाओं के अनुवादकों ने बड़े कौशल के साथ भावों को चित्रित किया है, अतः वे साधुवाद के पात्र हैं । आकर्षक मुखपृष्ठ और सुंदर त्रिभाषिक छपाई सराहनीय है और सबसे श्लाध्य है संपादक डा० पी. के. नारायण पिल्लै की सूझबूझ । राष्ट्रीय एकात्मता की दृष्टि से संकलन का जो महत्व है, उसका श्रेय उन्हीं को है ।

❀

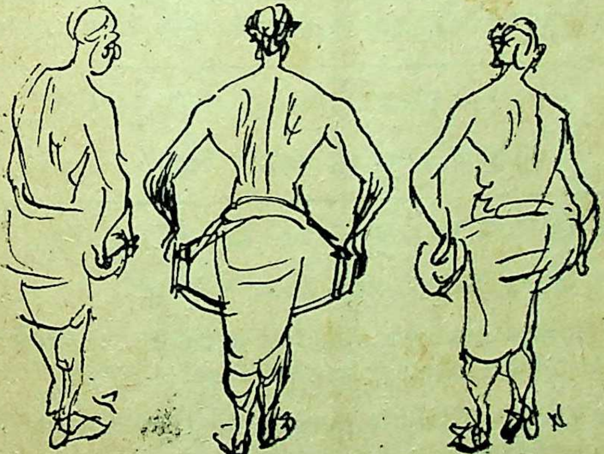

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूषण परीक्षा की मान्यता

केरल हिन्दी प्रचार सभा की हिन्दी भूषण परीक्षा की मान्यता के में केरल सरकार ने जो नया आदेश निकाला है वह हिन्दी प्रचारकों हिन्दी भूषण उपाधिधारियों की जानकारी के लिए नीचे दिया जाता है।

GOVERNMENT OF KERALA

ABSTRACT

General Education—Qualification for Appointment as Teachers Hindi in Government Upper Primary Schools—Amendmen G. O. (P) 76/80/G. Edn. Dated 6-6-1980—Orders issued

---

GENERAL EDUCATION (J) DEPARTMENT

G. O (MS) No. 45/82/G. Edn. dated, Trivandrum, 7th April 1

Read: 1. G. O. (MS) No. 7/74/G. Edn. dated 11-1-1974.

2. G. O. (P) 76/80/G. Edn. dated 6-6-1980.

3. Representation No. C3/80-81 dated 22-12-1980 and sub quent dates from Kerala Hindi Prachar Sabha, Trivandrum

4. Lr. No H3-44515/81 dated 29-9-1981 from the Directo Public Instruction, Trivandrum,

5. Lr. No. A11 (5) 34490/81 GW dated 18-1-1982 from Secretary, Kerala Public Service Commission, Trivandrum

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ORDER

As per the G. O. read as Ist paper above, Hindi Bhooshan Exa- ination of the Kerala Hindi Prachar Sabha has been declared as an lequate qualifcation for appointment of Hindi Teachers in Aided pper Primary Schools. But this qualification was not included among e qualifications prescribed for Hindi teachers In the Kerala Education ules. The above qualification was not included in the G. O. read as d paper also when orders were issued unifying the qualfication escribed for appointment of teachers in aided and Government chools. Now, the Secretary, Kerala Hindi Prachar Sabha in the presentation read as 3rd paper above has requested Government to sue orders prescribing Hindi Bhooshan Examination of the Kearala indi Prachar sabha also as sufficient quallfication for appointment f Hindi teachers in Upper Primary Schools and to make necessary mendments to the orders in the G. O. read as 2nd paper above.

2. Government have examined the matter in detail in consultation vith the Public Service Commission and are pleased to order that the Hindi Bhooshan Examination of the Kerala Hindi Prachar Sabha will e treated as a sufficient qualification for appointment of teachers in Hindi in Government Upper Primary Schools.

3. The G O. read as 2nd paper above stands modified to this xtent. Necessary amendment in the Kerala Education Rules in this egard will be issued separately in respect of Aided Upper Primar chools.

By order of the Governor,

A. K. SARASU,

Under Secretary.

(True copy)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केरल हिन्दी प्रचार सभा का सर्वश्रेष्ठ साहित्यिक प्रकाशन!

महाकवि उल्लूर

व्यक्तित्व एवं कृतित्व

मलयालम के विख्यात महाकवि उल्लूर एस० परमेश्वर अय्यर की शताब्दी १९७७ में मनायी गयी। उस सिलसिले में प्रकाशित संगृहणीय ग्रंथ। इस ग्रंथ के द्वारा मलयालम के एक महाकवि को हिन्दी भाषा द्वारा हिन्दी भाषियों के सम्मुख प्रस्तुत करने का सर्व प्रथम प्रयास।

शुद्ध छपाई, आर्ट पेपर कार्ड पर अत्याकर्षण वहुरंग आवरण (महाकवि का चित्र) टकाऊ सफेद कागज़, फिर भी मूल्य १५ रुपया मात्र।

संपर्क करें:

मंत्री
केरल हिन्दी प्रचार सभा
तिरुवनन्तपुरम–१४

फोन : ६१३७८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौथी पंक्ति में बैठे हैं :— बायें से (पाँचवें) डा० चन्दूलाल दुबे (अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, कर्नाटक विश्वविद्यालय, धारवाड), (सातवें) डा० एम. नंजुडप्पा (कुलपति, कर्नाटक विश्वविद्यालय), (आठवें) श्री० चेन्नवीर कणवी (कन्नड़ के प्रतिष्ठित कवि एवं समीक्षक), (नवें) श्री० के. आर. करण (शिविर सयोजक, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय), (दसवें) डा० दुर्गादीक्षित (मार्गदर्शक) (बारहवें) डा० मस्तराम कपूर (मार्गदर्शक), दूसरी पंक्ति में— (चौथी) जे. अम्बिकादेवी, (छठी) जे. रेणुका, (११ वीं) डा० एन. जी. देवकी, (१२ वीं) वी. शान्तकुमारी अम्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Reg. No. KL/TV(S)/25
May 1982

Keral Jyoti

Vol. XVII-N
Price : Re.

A monthly Publication of Kerala Hindi Prachar Sabha

नृत्तकला निपुणता के लिए केरल विश्वविद्यालय की छात्रवृत्ति से सम्मानित कुमारी राजी गोपालकृष्णन कुच्चुपुडी की एक मोहक मुद्रा में।

केरल हिन्दी प्रचार सभा, तिरुवनन्तपुरम–६९५ ०१४ केलिए श्री० एम. के. वेलायुधन नायर द्वारा प्रका
मुद्रक: राष्ट्रवाणी मुद्रणालय, ... : के. जी. बालकृष्ण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केरल ज्योति

FREE

16-7-82 (7)

कालिकट विमान पत्तन का शिलान्यास कर रहे हैं केन्द्रीय पर्यटन एवं नगर विभानन मंत्री श्री० आनन्त प्रसाद शर्मा। प्रसन्न मुद्रा में बैठे हैं केरल के मुख्यमंत्री श्री० के. करुणाकरन।

केरल हिन्दी प्रचार सभा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केरल ज्योति

* **प्रधान संपादक**

प्रो० पी. जे. जोसफ़

* **संपादक**

श्री० के. जी. बालकृष्ण पिल्लै

* **सह संपादक**

श्री० आर. सुकुमारन नायर

* **संपादक मण्डल**

श्री० वी. के. गोपालन नायर

प्रो० एम. जनार्द्दनन पिल्लै

श्री० के. वी. कृष्णनकुट्टी

श्री० एम. के. वेलायुधन नायर

❀

* विज्ञापन दर

		मासिक		वार्षिक	
आवरण पृष्ठ ४	रु.	५००	००	५०००	००
आवरण पृष्ठ २ एवं ३	रु.	४००	००	४०००	००
साधारण पृष्ठ पूरा	रु.	३००	००	३०००	००
साधारण पृष्ठ ½	रु.	१७५	००	१७५०	००
साधारण पृष्ठ ¼	रु.	१००	००	१०००	००

❀

* **पत्र व्यवहार का पता :**

मंत्री,

केरल हिन्दी प्रचार सभा

तिरुवनन्तपुरम–६९५ ०१४

केरल

तार :–"जय हिन्दी"

फोन : ६१३७८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुष्प: १७

दल : ४

जुलाई १९८२

केरलज्योति

सांस्कृतिक जागरण की मासिक पत्रिका

संपादकीय

केन्द्रीय हिन्दी संस्थान

भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय द्वारा आगरा में स्थापित केन्द्रीय हिन्दी संस्थान गत बीस बरसों से हिन्दी अध्यापन क्षेत्र की जो सेवा करता रहा है वह अत्यंत महत्वपूर्ण है। देश के हिन्दीतर प्रान्तों के हिन्दी अध्यापन को ही नहीं विदेशों के हिन्दी अध्यापन को भी वैज्ञानिक आधार देने में संस्थान ने बहुमूल्य योग दिया है। हिन्दी अध्यापन से संबंधित जो शैक्षिक तथा भाषा शास्त्रीय अनुसंधान संस्थान ने किया है उसका सद्परिणाम वास्तविक अध्यापन क्षेत्र तक पहुँचाने में भी संस्थान प्रयत्नशील रहा है। प्रान्तीय सरकारों और स्वैच्छिक हिन्दी संस्थाओं के हिन्दी अध्यापकों और हिन्दी प्रचारकों के प्रशिक्षण और नवीकरण में भी संस्थान यथा संभव हाथ बंटाता रहा है। संस्थान की शोध पत्रिका गवेषणा भी अपने क्षेत्र में काफी प्रतिष्ठित हो चुकी है।

संस्थान में एक एक वर्ष के दो प्रशिक्षण सत्र चलते हैं—हिन्दी शिक्षण पारंगत और हिन्दी शिक्षण निष्णात। पहला बी. एड. के समकक्ष है और दूसरा एम. एड. के समकक्ष। हिन्दीतर प्रदेशों के छात्र इन सत्रों में प्रवेश पाकर एक वर्ष जब आगरा के हिन्दी वातावरण में रहते हैं तो वे हिन्दी शिक्षण का सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक ज्ञान तो पा ही जाते हैं। साथ ही हिन्दी के सांस्कृतिक वातावरण का प्रत्यक्ष परिचय पा लेते हैं। हिन्दी का सही उच्चारण भी सीख जाते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेकिन कुछ प्रान्तों की सरकारों एवं विश्वबिद्यालयों के पूर्ण सहयोग का अभाव संस्थान की सुविधाओं का लाभ उठाने से देश के कई हिस्सों को वंचित कर देता है। संस्थान के शिक्षण निष्णात के प्रथम सत्र के कुल विद्यार्थियों का ७० प्रतिशत जिस केरल से गया था उस केरल से उक्त सत्र में गत कई वर्षों से एक भी विद्यार्थी नहीं जाता। कारण यह है कि न केरल सरकार ने उक्त उपाधि को उचित मान्यता प्रदान की है न केरल के विश्व-विद्यालयों ने 'निष्णात' उपाधिधारियों को हिन्दी शिक्षण में शोध करने की सुविधा दी है। यहाँ ध्यान देने योग्य बात यह है कि केन्द्रीय अंग्रेजी संस्थान की समान स्तरीय परीक्षा उत्तीर्ण होने पर इसी केरल में एम. ए. अंग्रेज़ी में तृतीय श्रेणी में उत्तीर्ण आवेदकों को कालेज में नियुक्ति पाने केलिए द्वितीय श्रेणी में एम. ए. उत्तीर्ण आवेदकों की समकक्षता दी जाती है। यदि केन्द्रीय हिन्दी संस्थान को केन्द्रीय अंग्रेज़ी संस्थान का समान पद दिया जाये और प्रान्तीय सरकारों तथा विश्वविद्यालयों से संस्थान की उपाधियों को उन्नित मान्यता दिलायी जाये तो पुनः केरल जैसे हिन्दीतर प्रान्तों से संस्थान की उच्च परीक्षाओं के लिए अधिक छात्र जायेंगे और संस्थान की सुविधायें सारे देश के लिए अधिक प्रयोजनवती सिद्ध होंगी। आशा है इस ओर संस्थान का, सरकारों का और विश्वविद्यालयों का ध्यान अवश्य जायेगा।

इस अंक में

राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडन की हिन्दी सेवा — 3
डॉ० मृत्युञ्जय उपाध्याय
पंजाब कोकिला अमृता प्रीतम — 8
तंकप्पन तुम्पमण
लाचार हूँ — 13
मूल: पी. कृष्णकुमार
अनुवाद: पी. जी. कामत
पृथ्वी का स्वर्ग केरल — 14
दत्तात्रेय तापकीर
हिमालय — 16
मूल: एन. वी. कृष्णवारियर
रूपांतर: के. जी. बालकृष्ण पिल्लै
लाश — 17
किरानलाल शर्मा
माधविक्कुट्टी — 19
मूल: वैक्कम चन्द्रशेखरन नायर
अनुवाद: एन. कुमार पिल्लै
देख कबीरा रोया — कला की हत्या — 26
कुकु
गहरे और व्यापक रिश्तों की सच्ची और असली कहानियाँ — 29
विष्णु खरे
झरोखा — 32
पाठकों के पत्र — 36
गुरु के तीन साधन — 38
महर्षि अरविन्द
पुस्तक समीक्षा
देश केलिए—काव्य संग्रह — 39
डॉ० एन. जी. देवकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शताब्दी के अवसर पर

राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडन की हिन्दी सेवा

डा० मृत्युञ्जय उपाध्याय

राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडन भारतीय मनीषा के ऐसे वरद पुत्र थे, जिन्होंने न केवल स्वाधीनता आंदोलन में सक्रिय योगदान किया, राजनीति के पुरोधा रहे, वरन् हिन्दी की अनवरत सेवा करते रहे। बचपन से ही उनमें हिन्दी के प्रति सच्ची लगन थी। १९०५ ई० में दिल्ली दरबार को लक्ष्य कर उन्होंने 'बंदर सभा महाकाव्य' की रचना की। 'आल्हा' की लय पर रचित यह लंबी कविता जुलाई, १९०५ के 'प्रदीप' में प्रकाशित हुई। इस महाकाव्य की रचना तीन चुरकियों में की थी। इस महाकाव्य में गढ बंदर नामक देश का वर्णन है, जिसमें बंदर ही बंदर रहते थे। उनके राजा का नाम मल्लू था। उस देश में एक बार बंदरों की सभा जुड़ी। उनकी लूटे खसोट और हथलपकी वृत्ति का बड़ा जीवंत वर्णन व्यंग्य शैली में किया गया है। इसका व्यंग्य बड़ा पैना, धारदार और मारक है, पर ड्राइडन की तरह सुधारवादी है। तीसरी चुरकी से दो उदाहरण यहाँ ध्यातव्य हैं:—

"यह पुम सब तो जानत हइ हौं।
आपन एकै यही उसूल।
जौन भाँति से रुपया आवै।
वो ही धर्म न्याय को मूल।

X X X X

जितने बेदुम के हैं बानर।
उनका हरी हरी दिखलाय।
चूनी मूसी उन्हें फेंक दें।
बढ़िया माल लेय गठियाय॥

अर्थलोलुपता, अर्थ को ही कर्म और न्याय का मूल समझना तथा सबको सब्जबाग दिखाकर अच्छे माल पर हाथ फेरना यहाँ व्यंग्य के विषय हैं। सबके मूल में है अराजकता और स्वार्थपरता से सभी राजनीतिक व्यवस्था का कर्दम।

इन्होंने १९०८ से १९०९ तक 'अभ्युदय' का संपादन बड़ी कुशलता के साथ किया। 'अभ्युदय' के अग्रलेखों, संपादकीय लेखों के द्वारा इन्होंने हिन्दी की अनवरत सेवा तो की ही—हिन्दी पत्रकारिता को गति और बल दिया। पत्रकार के साथ साथ उनका कवि रूप न केवल कवि सम्मेलनों और काव्य गोष्ठियों में देखा जा सकता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था, वरन् बंदर सभा महाकाव्य के अलावा इन्होंने 'कुटिर का पुष्प' और 'स्वतंत्रता' काव्य का सृजन भी किया।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन का प्रथम अधिवेशन महामना पंडित मदन मोहन मालवीय की अध्यक्षता में १० अक्तूबर, १९१० से काशी में प्रारंभ हुआ। टंडन जी को प्रधान मंत्री बनाया गया। इन्होंने अपनी साधना द्वारा सम्मेलन में प्राण फूँक दिए और धीरे धीरे सम्मेलन का सारा कार्य भार अपने ही ऊपर ले लिया। १९११ ई० में इन्होंने दूसरा सम्मेलन आयोजित किया, जिसके सभापति हुए पं० गोविन्द नारायण मिश्र। हिन्दी साहित्य सम्मेलन की नियमावली इसी सम्मेलन में स्वीकृत हुई। १९१४ में हुए अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन में उन्होंने सम्मेलन की परीक्षाओं को स्वीकृत कराया।

लाला लाजपतराय के निधन के बाद लोक सेवक मंडल के अध्यक्ष टंडन जी ही हुए। मंडल का प्रधान कार्यालय लाहौर था। अतः अधिकांश समय उन्हें वहीं रहना पड़ता था। इससे पंजाब के हिन्दी आंदोलन को बड़ी प्रेरणा मिली और उनके पथ प्रदर्शन में प्रांतीय हिन्दी सम्मेलन आर्य समाज, सनातन धर्म सभा, देव समाज आदि द्वारा स्थापित शिक्षण-संस्थाओं में हिन्दी के प्रचार-प्रसार को काफी बल मिला। हिन्दी के लगभग सभी केन्द्रों से उसका निकट का संपर्क रहा। लाहौर, अमृतसर, जालंधर और अबोहर हिन्दी के केंद्र थे। इन्हें टंडन जी से यथासमय परामर्श और सहायता मिलती रही।

टंडन जी सदा हिन्दी के पक्ष में रहे और महात्मा गाँधी की 'हिन्दुस्तानी' के विरोधी। इसीलिए सन् १९४५ ई० में हिन्दी हिन्दुस्तानी के प्रश्न पर मतभेद होने के कारण गाँधीजी ने हिन्दी साहित्य सम्मेल से त्यागपत्र दे दिया। उन्होंने टंडन जी को लिखा—"जब मैं सम्मेलन की भाषा और नागरी लिपि को पूरा राष्ट्रीय स्थान नहीं देता हूँ, तब मुझे सम्मेलन से हट जाना चाहिए, ऐसी दलील मुझे योग्य लगती है।" टंडन जी ने इस पत्र का तत्काल उत्तर दिया और लिखा-"गाँधी जी और सम्मेलन के दृष्टिकोण में कोई मौलिक मतभेद नहीं, किंतु यदि गाँधीजी इस बात से सहमत न हों, तो उनके निर्णय को सम्मेलन को दुःख के साथ स्वीकार करना पडेगा।" बात सचमुच सिद्धांत की ही थी। टंडन जी देवनागरी अक्षर के पक्ष में थे और हिन्दी के लिए दो लिपियाँ निर्धारित करना हिन्दी भाषा के प्रचार प्रसार में घातक समझते थे। उनका तर्क युक्ति संगत था। सन् १९४९ ई० में देश के संविधान परिषद् ने हिन्दी और देवनागरी लिपि को ही मान्यता दी।

इन्होंने देवनागरी आँकड़ों के लिए भी काफी प्रयास किया। परंतु वह स्वीकृत नहीं हो सका। विवश होकर उन्होंने अंतरराष्ट्रीय आँकड़े से संबंधित प्रस्ताव के विरुद्ध अपना मत दिया। बाद में इसे पार्टी की अनुशासन हीनता मान उन्होंने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी यदि इस देश की कीर्ति की मूर्ति है तो इसलिए कि पुरुषोत्तमदास जसे महान व्यक्ति उसके संचालक हैं।

संविधान सभा में अपना त्याग पत्र दे दिया। परंतु नेहरूजी ने इसे स्वीकृत नहीं किया। टंडन जी की हिन्दी सेवा में अप्रतिम निष्ठा का पता इसी से लगता है कि जब भी हिन्दी और राजनीति के प्रश्न एक साथ उपस्थित हुए, उन्होंने जोरदार शब्दों में पहले हिन्दी का समर्थन किया। उन्होंने स्वयं घोषणा की—"लोग कहते हैं कि मैं साहित्य और राजनीति से समन्वित दोहरा व्यक्तित्व रखता हूँ। पर सच्ची बात यह है कि मैं पहले साहित्य में आया और प्रेस से आया। हिन्दी साहित्य के प्रति उसी प्रेम ने उसके हितों की रक्षा और उसके विकास पक्ष को स्पष्ट करने के लिए मुझे राजनीति में सम्मिलित होने को बाध्य किया।"

हिन्दी के प्रश्न पर महात्मा गाँधी से मतभेद होते हुए भी गाँधीजी ने मुक्तकंठ से कहा है—"हिन्दी यदि इस देश की कीर्ति की मूर्ति है तो इसलिए कि पुरुषोत्तमदास जैसे महान व्यक्ति उसके संचालक हैं।" पं० माखनलाल चतुर्वेदी ने कहा है—"हिन्दी की सेवा और उसकी रक्षा के लिए किए गए प्रण, प्रयास पुरुषार्थ और प्राणाहुति का सम्मिलित नाम है पुरुषोत्तमदास टंडन।" उन्होंने जन-जन को हिन्दी के महत्व से अवगत कराया। जन-जन के कानों में मंत्र फूँका—"हिन्दी को अपनाओ, पनपाओ। हिन्दी राष्ट्रीयता के उत्थान में सहायक बने। हिन्दी की श्रीवृद्धि के लिए प्रत्येक भाषा-भाषी को कुछ काम करना चाहिए।" वे हिन्दी को प्रेम की मधुर बयार से फैलाना चाहते थे। अधिकार और दबाव का प्रयोग उन्हें कतई स्वीकार नहीं था। उनका कहना था—"हिन्दी दूर सुदूर फैले, प्रेम की मधुर बयार से, अधिकार की अंधी आँधी से नहीं। "हिन्दी की सेवा के लिए दृढता और विनम्रता के साथ उन्होंने वाणी के संयम पर बल दिया—दृढ़ता से किंतु विनम्रता-पूर्वक हिन्दी की सेवा करो और जो कुछ कहो नाप तौलकर कहो।" उनके लिए हिन्दी का सवाल देश की आज़ादी के साथ अभिन्नता से जुड़ा था—"हिन्दी का सवाल मेरे भारत की आज़ादी का सवाल है।"

कहते हैं दान का प्रारंभ घर से होता है। टंटन जी ने साहित्य सम्मेलन, प्रयाग की स्थापना ही नहीं की, आजीवन उसके लिए खरते रहे। दुर्लभ पुस्तकों का प्रकाशन, शोध के क्षितिज का विस्तार, हिन्दी का प्रचार प्रसार सम्मेलन का लक्ष्य रहा। ग्यारहवें अधिवेशन तक टंडन जी इसके सभापति रहे। हिन्दी विद्यापीठ, प्रयाग की स्थापना भी हिन्दी सेवा की दिशा में उनका स्तुत्य प्रयास है।

सन् १९२२ ई० में तेरहवें हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सभापति पद से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाषण देते हुए टंडन जी ने जो उद्गार प्रकट किए और जिस प्रकार अपने विचारों को सजाकर रखा—उसमें हिन्दी के प्रति जो पवित्र भावना व्यक्त है, उसके अनुसार टंडन जी के साहित्यिक और हिन्दी प्रेमी होने का प्रबल प्रमाण मिलता है। इस भाषण में उन्होंने कहा—

"यह समय भारत वर्ष के लिए महान परिवर्तन और बड़े महत्व का है। यही एक ऐसा अवसर है, जब वह अपने विचारों और कृत्यों से संसार का सारा मानसिक प्रवाह बदल दे।......कृत्रिमता फोड़िए, भावुकता संग्रह कीजिए। सूर्य की नैसर्गिक ज्योति का सौंदर्य पहाड़ों और जंगलों में स्वतः दिखाई पड़ता है। ......आभूषणों की आवश्यकता, कवियों के चलन के अनुसार भी, परकीया नायिका को अधिक होती है। स्वकीया सती का शृंगार आभूषणों पर न निर्भर ही है और न उससे बढ़ता ही है।... वाणी की सार्थकता इसी में है कि वह आकाश में सीढी बांधकर मनुष्य को उस स्थान पर चढ़ा दे, जहाँ से वाणी का उद्गार हुआ है।... आप अपनी वाणी का ऊँचा आदर्श रखें। वह पवित्र कुल की पुत्री है, उसका शृंगार नैसर्गिक मालती और मल्लिका से ही कर उसका पूजन करें।......निस्सार नीचे गिराने वाले रसों और उन्हीं के समान संचारी भावों, विभावों और अनुभावों को छोडकर दिव्य नए रसों का प्रादुर्भाव कीजिए। उनके उपयुक्त संचारी भावों से उन्हें संचरित कीजिए और तब उनके परिणाम-स्वरूप महत् अनुभावों का दर्शन कर कृतार्थ होइए।" इस प्रकार उन्होंने सुन्दर और साहित्यिक विचारों द्वारा हिन्दी सेवी संस्थाओं में प्राण का संचार किया। इसमें दो मत नहीं कि टंडन जी तत्कालीन लगभग ऐसे समस्त हिन्दी आंदोलन के प्रवर्तक भर ही नहीं रहे, वरन् हिन्दी प्रेमियों की ऐसी टीम बनाई जो आजीवन हिन्दी के लिए जी-जान से जूझती रही, लड़ती रही।

रंगमंच के एक कुशल सूत्रधार की भांति इन्होंने साहित्यिक मंच के स्थायित्व को बनाए रखने के लिए सदा प्रयत्न किया, अनवरत लीन रहे। कहना नहीं होगा कि टंडन जी हिन्दी के ऐसे सजग संरक्षक और प्रहरी थे, जिसने मंच की ही चिंता नहीं की, वरन् समय-समय पर उसके भंडार को भी समृद्ध बनाया। प्रकाशित रचनाओं के अलावा उनकी कृतियाँ (भाषणों, लेखों, पत्रों, सम्मेलन के प्रतिवेदनों, उद्घाटन भाषणों) यत्र-तत्र बिखरी पड़ी हैं। उनकी संयत परंतु ओजपूर्ण शैली ने हिन्दी साहित्य की गति को बल दिया। साहित्यश्री के विकास को नए आयाम दिए। इसमें दो मत भी नहीं कि टंडन जी लगभग ५० वर्षों तक हिन्दी साहित्य सम्मेलन तथा अन्य हिन्दी संस्थाओं के अटल प्रहरी और साहित्यकारों के अमोध प्रेरणादायक मार्गदर्शक और प्रकाश स्तंभ रहे। उनकी हिन्दी सेवाओं को ध्यान में रखते हुए इन्हें सन् १९६१ में 'भारत रत्न' की उपाधि से विभूषित किया गया। २३ अक्तूबर,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टंडन जी जैसे हिन्दी प्रेमी के आदर्शों और सिद्धांतों पर चलकर ही हिन्दी और हिन्दुस्तानी का कल्याण संभव है और राष्ट्रीय एकता को बल मिल सकता है।

१९६० को उनकी अभूतपूर्व सेवाओं के कारण दिल्ली प्रादेशिक हिन्दी साहित्य सम्मेलन की ओर से उनका भव्य अभिनंदन किया गया। इस अवसर पर लगभग ७०० पृष्ठों का अभिनंदन ग्रंथ उन्हें समर्पित किया गया। १५ अप्रैल १९४८ को गोरखपुर की एक विशाल सभा में देवराहा बाबा ने इन्हें 'राजर्षि' की उपाधि से विभूषित किया।

टंडन जी के प्रति यह सच्ची श्रद्धांजलि होगी कि उनकी कृतियों, भाषणों आदि को पुस्तक रूप में प्रकाशित किया जाए तथा परिस्थितियों की विपरीतता के घटाटोप में भी हिन्दी का मार्ग प्रशस्त किया जाए। टंडन जी जैसे हिन्दी प्रेमी के आदर्शों और सिद्धांतों पर चलकर ही हिन्दी और हिन्दुस्तानी का कल्याण संभव है और राष्ट्रीय एकता को बल मिल सकता है।

वृन्दावन, राजेन्द्रपथ
धनबाद–८२६००१ बिहार

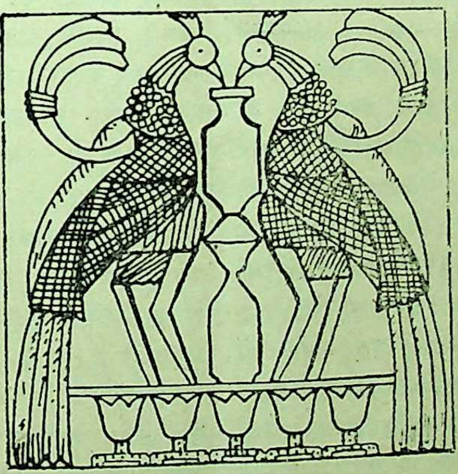

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंजाब कोकिला अमृता प्रीतम

तंकप्पन तुम्पमण

पंजाब कोकिला अमृताप्रीतम १९८१ के ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित हो गयी है। एक संवेदनशील कवयित्री और एक सशक्त कथा लेखिका अमृता की ख्याति इस पुरस्कार प्राप्ति से और भी बढ़ गयी है।

पंजाब कोकिला अमृता प्रीतम १९८१ के ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित हो गयी है। एक संवेदनशील कवयित्री और एक सशक्त कथा लेखिका अमृता की ख्याति इस पुरस्कार प्राप्ति से और भी बढ़ गयी है। नारी हृदय के अच्छूते पहलुओं को चित्रित करके उन्होंने साहित्य क्षेत्र में अपना कदम रखा। उस समय की रचनाओं में प्रेम की पीर अधिक गुंफित है। अब भी युवक युवतियों की कोमल प्रेम भावनाओं का चित्रण करने में अमृता अपना सानी नहीं रखती। इसलिए देश-विदेश में अधिक पढ़े जानेवाले भारतीय साहित्यकारों में अमृता का स्थान पहली श्रेणी में ही है। मन को झकझोर करने वाली रचनाओं के साथ साथ गहन विषयों को लेकर भी वे साहित्य सृजन करती हैं। अतः ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता दूसरी वनिता और पहली पंजाबी साहित्यकार का स्थान उन्हें मिला।

पंजाबी भाषा और साहित्य की संपन्नता

अमृता ने ही एक बार लिखा—'कई पंजाबी लेखकों के पास लिखने के लिए कोई गंभीर विषय नहीं होता। पंजाबी दो करोड़ से अधिक हिंदू मुस्लिम और सिखों की भाषा है। इसके बोलनेवाले भारत और पाकिस्तान दोनों में है। फिर भी आधुनिक साहित्य के परिदेश में देखें तो पंजाबी साहित्य अधिक संपन्न नहीं। पंजाब में जन्मे कितने कितने अच्छे लेखक हैं जैसे मुल्कराज आनन्द, कृशन चन्दर, राजेन्दर सिंह बेदी, यशपाल, उपेन्द्रनाथ अश्क आदि। ये सब पंजाबी में न लिखकर दूसरी भाषाओं में (अंग्रेज़ी, उर्दू और हिन्दी में) लिखकर बहुत मशहूर हो गये। पर अमृता अपनी मातृभाषा को संपन्न बनाने में अधिक व्यस्त हैं। पंजाबी भाषा को वे तहे दिल से प्यार करती हैं। हिन्दी और अंग्रेज़ी में बहुत क्षमता रखने पर भी इन भाषाओं में न लिख कर केवल पंजाबी में ही लिखती है। आधुनिक काल में अमृता प्रीतम की देन से पंजाबी भाषा और साहित्य को अधिक गौरव-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूर्ण स्थान मिला है—ऐसा कहने में कोई आपत्ति नहीं। १९२० के बाद अब तक दो कवियों का ही पंजाबी भाषा में बोल बाला रहा है। इनमें एक तो हैं मोहन सिंह और दूसरी हैं अमृता प्रीतम।

अमृता का जीवन

अमृता जी का जन्म ३१ अगस्त १९१९ ई० को गुंजरांवाले में हुआ था। लाहौर से चालीस मील आगे स्थित यह शहर अब पाकिस्तान में आ चुका है। अमृता की माता जी का नाम राजकौर और पिता जी का नाम करतार सिंह 'हितकारी' था। अमृता जब ग्यारह वर्ष हो की थीं उनकी माता जी का स्वर्गवास हो गया। इसलिए उनका पालन पोषण पिताजी ने किया। उनकी शिक्षा एफ. ए. तक चली। पिता संस्कृत और हिन्दी के पंडित थे और हिन्दी में कवितायें भी करते थे। उन्हीं से अमृता को भी काव्य रचना करने की प्रेरणा मिली। पिताजी 'रणजीत नगारा' नामक एक धार्मिक और साहित्यिक पत्रिका भी निकाल रहे थे। अमृताजी की रचनायें पहले पहल इसी पत्रिका में छपती रहीं। पिताजी का आग्रह यह था कि अपनी पुत्री 'मेरो तो गिरिधर गोपाल दूसरा न कोई' गानेवाली मीरा जैसी कवयित्री बन जाय।

बीस साल की उम्र में लाहौर के श्री० प्रीतम सिंह से विवाह संपन्न होकर अमृता, अमृता प्रीतम बन गई। पति व्यापारी थे। साहित्य सृजन में डूबी अमृता आकाशवाणी लाहौर के लिए गीत और रेडियो-रूपक लिखने लगीं। सन् १९४७ में जब भारत का बंटवारा हुआ तो उनको लाहौर छोड़ना पड़ा और १९४८ से वे दिल्ली में ही रह रही हैं। दिल्ली के रेडियो स्टेशन में उन्होंने कई वर्ष तक नौकरी की। फिर नौकरी छोड़कर फिल्मों में लिखने के लिए वे बंबई चली गईं, लेकिन वहाँ का फिल्मी वातावरण उनके अनुकूल सिद्ध नहीं हुआ।

एक दिन खुशवंत सिंह ने बातों बातों में कहा, 'तेरी जीवनी का क्या है, बस एक-आध हादसा' लिखने लगे तो रसीदी टिकट की पीठ पर लिखी जाए। रसीदी टिकट नामक उनकी आत्मकथा के आमुख में वह लिखती हैं—ठीक ही कहा था—जो कुछ घटा, मन की तहों में घटा। व्यक्तिगत जीवन में भी अमृता प्रेम की तलाश में भटक रही थी। साहिर से इमरोज तक की उनकी लंबी प्रेम यात्रा कई खूबियाँ रखती हैं। उनका कहना है—अधिकांश विवाहों में वैवाहिक बलात्कार होता ही है…. मेरी राय में विवाह देहों से अधिक दो मनों का मिलन है। मैं तो जानती हूँ कि प्रेम विद्रोह है। इसके बशखिलाफ विवाह आपके अपने मूल्यों के प्रति विद्रोह है……काम एक महान अनुभव है। पर यह जरूरी नहीं कि आप जिस जिस व्यक्ति के साथ ऐसा अनुभव करें उनके साथ विवाह भी करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमृता नें साहित्य के विविध क्षेत्रों में अपनी क्षमता दिखाई है। लेकिन वह मूल रूप में एक कवयित्री है। वर्षों पहले खुशवंत सिंह ने लिखा—"दोनों पंजाबों मे—यानी पाकिस्तान और भारत में—अमृता प्रीतम साहित्यिकों में बहुत लोकप्रिय हैं। वह कोई प्रगतिशील कवयित्री नहीं हैं, न उन्हें कोई संदेश देना है। वे किसी और कारण से कविता नहीं लिखतीं, केवल इसलिए लिखती हैं कि लिखे बिना उनसे रहा नहीं जाता। वह विद्वान नहीं है, लेकिन उनकी कविता की सादगी और ताजगी उस विद्वत्ता के अभाव को भर देती है। उनकी सभी रचनाओं में लोक-गाथा और वीर-काव्य की मधुर धुन समाई रहती है।"

जब समाज ने 'स्त्री को कवि होना बडा अपराध' समझा था तब अमृता ने जीवन के दुख दर्दों को अपनी कविता में भर दिया था।

जब समाज ने 'स्त्री को कवि होना बड़ा अपराध' समझा था तब अमृता ने जीवन के दुख दर्दों को अपनी कविता में भर दिया था। कभी कभी मुग्ध प्रणय के वर्णन में वह कमाल करती है जैसे एक कविता में प्रेमी अपनी प्रेमिका से कहता है:

'जागो प्रिय !
तुम्हारी पलकें स्वप्नों से भारी हैं
बीते हुए दिनों के स्वप्नों से
जब हवायें सुगन्धि से गूँथी हुई थीं
(क्या उस कारण से तुम आह भर
रही हो ?)
अमावास्या की अंधेरी रात में
अनगिनत तारे तुम्हारे बालों को
चमका दें।

पंजाब के बंटवारे का उनके हृदय पर गहरा प्रभाव पडा। उनकी सुप्रसिद्ध कविता 'अज आखां वारसशाह नूं' (वारिस शाह के प्रति) इसी प्रभाव का परिणाम है) इस कविता ने अमृता की कीर्ति को भारत की सीमा पार कर पाकिस्तान तक फैलाया। वारिस शाह विभाजन के पूर्व के उन अच्छे दिनों का प्रतीक है जब हिंदू, मुसलमान और सिख भाई-भाई की तरह रहते थे। अमृता की कविता इस प्रदेश के विभाजन पर एक मर्सिया है वह वारिस शाह से पूछती है कि अब तू कब्र में से क्यों नहीं जागता और तेरी मातृभूमि में जो विनाश हो रहा है उसे क्यों नहीं देखता।

"ओ दुख को शान्त करनेवाले उठ,
और अपना पंजाब देख,
उसके खेतों में लाशें फैली हैं,
चिनाब में खून बह रहा है।
हमारी पांचों नदियाँ उसी हाथ ने
जहरीली बना दीं,
जो कि इस जहरीले पानी को
जमीन की सिंचाई के लिए
काम में लाता है"

अमृता ने लिखा है कि वह अपनी आन्तरिक अनुभूतियों को लिपि बद्ध करती है और उसे अपने आन्तरिक भावुकता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधिक प्रधान है । उनकी कविताओं का पहला संग्रह 'अमृत लहरां' जो सन् १९३६ में छपा था और बाद के संग्रह 'त्रेल धाते फूल', 'ओ गीतां वालया' 'बदलां दे पल्ले विच', संझ दी लालो आदि इस कथन का प्रमाण भो है लेकिन सुनेहड़े (इस काव्य संग्रह पर उन्हें १९५६ का साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला) जैसे काव्य संग्रह पर आते आते उनकी कविता का कंनवास विस्तृत हो गया है । ज्ञान पीठ पुरस्कार प्राप्त 'कागज ते कैनवास' जैसी कृतियाँ जीवन को गौरव पूर्ण देखने की कोशिश का सफल परिणाम है । इस तरह से हम देखते हैं कि अमृता की कविताओं में भावुकता के साथ साथ एक

वे समाज में फैली हुई खराबी और बेचैनी को अपनी कविताओं द्वारा उपस्थित करती रही है ।

नयी गहराई और वास्तविकता दिखाई देने लगती है । धीरे धीरे अपने आसपास की घटनाओं ने अमृता के ध्यान को अपनी ओर आकर्षित किया है । वे समाज में फैली हुई खराबी और बेचैनी को अपनी कविताओं द्वारा उपस्थित करती रही है । उनकी कविताओं में अक्सर नारियों पर होनेवाले अत्याचारों के प्रति उनके हृदय का आक्रोश एव तीखे व्यंग्य मिलते हैं । अपनी कविता 'कन्यादान' में वे लिखती हैं—

लाल मेंहदी से रंगा हुआ
सुर्ख चादर से लिपटा हुआ

वे अपने उपन्यासों में अधिकतर नारी की विवशता और इन पर समाज के द्वारा किये गये अत्याचारों का चित्र खींचती हैं ।

पीले सोने से लदा हुआ
मांस का टुकडा ।

इन पंक्तियों में अमृता ने एक दुल्हन का कैसा दुख भरा चित्र खींचा है ।

कहानीकार अमृता

कवयित्री होने के बावजूत अमृता प्रीतम अच्छी कहानियाँ लिख सकती है । कहानी संग्रहों में छब्बी वरे बाग, कुंजयां व आखरी खत प्रसिद्ध हैं । उपन्यासों में पिंजर, डा० देव, आलना पाँच बरस, लंबी सड़क आदि मशहूर हैं । डा० देव में एक पात्र व्यक्त करते हैं प्यार, प्यार की खुशी में हैं, छीन लेने में या कब्जा जमा लेने में इन्साफ की जीत नहीं होती । पक्षी पिंजडे में रह कर गा नहीं सकता । गाना ही जीवन है, उड़ना ही जीवन है । पिंजर एक ऐसी युवती की दर्दभरी कहानी है जो सुहाग सेज की ओर पैर बढ़ाते बढ़ाते दुर्भाग्य के कुए में जा गिरी और जो सारी जिन्दगी नरक और स्वर्ग की कशमकश में छटपटाती रही । 'पाँच बरस लंबी सड़क' में प्रेम के रहस्यमय लाक का पर्दाफाश है । सक्षेप में कहें तो वे अपने उपन्यासों में अधिकतर नारी की विवशता और इन पर समाज के द्वारा किए गये अत्याचारों का चित्र खींचती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं। समाज ने नारी को जिस तरह जकड़ कर रखा है इस मामले में हर कोई अमृता से सहमत होगा। उपन्यासों में भी अमृता का लिखने का ढंग शायराना है।

श्री रामधारी सिंह दिनकर ने एक बार अमृता से कहा "तुम मर गयीं तो इस देश की हरियाली मर जाएगी।" उनके शब्दों का अनुकरण करके हम भी कह सकते है, हाँ अमृता हमारे देश की हरियाली है, वह अमर रहें !

★

शोध छात्र
विश्वविद्यालय ग्रंथालय,
तिरुवनन्तपुरम

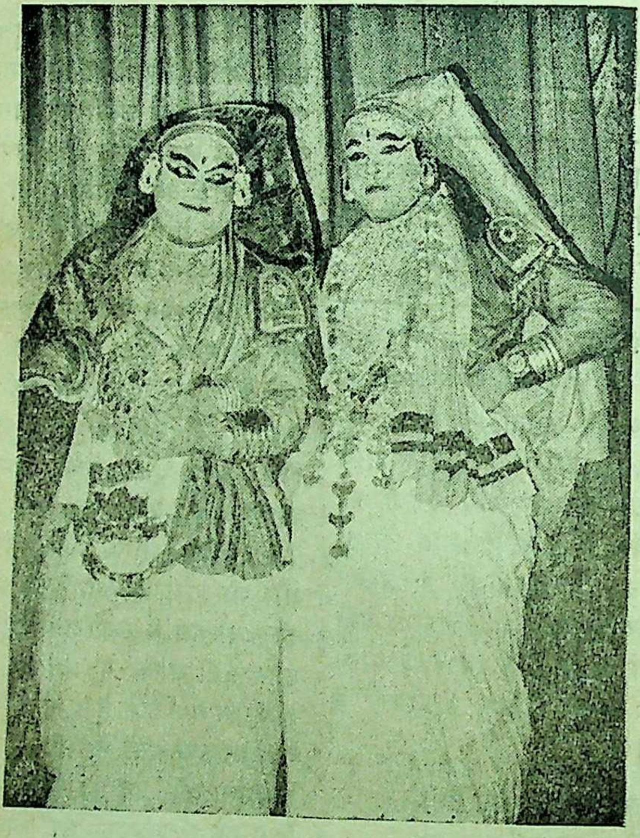

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मलयालम कविता

लाचार हूँ ।

मूल : **श्री. पी. कृष्णकुमार एम. ए.**

प्राचार्य, श्री. व्यास कालेज
वडकाञ्चेरी पी. ओ., तृशूर जिला

[श्री० पी. कृष्णकुमार मलयालम के प्रतिष्ठित कवि हैं । उनकी कविताओं में काव्यात्मक हृदयहारी वस्तु की प्रमुखता है। उनकी अभिव्यक्ति की शैली सरल सहज और पारंपरिक है । उस में न दुरूहता है न कृत्रिम गंभीरता। वह सीधे हृदय में पैठ जाती है और लंबे अर्स तक वहाँ गूँजती रहती है । उनकी एक प्रतिनिधि कविता 'पेय्याते वय्या' का यह हिन्दी रूपान्तर पढिये ।]

बरसे बिना कैसे चलूँ ?
मेघ ही तो बन गया हूँ ।
   आज, मुझ में जो भरा हो सार
   बहता जाय ।
   अन्तर शून्य होता जाय ।
जलते हृदय-कांतार में,
अचल ऊपर-शीर्ष में
जहाँ न लगती धार कुदाल की,
उस खेत में
जहाँ न पहुँची खोज की दृष्टि,
इस डूंगर पर, उस गर्त में
मोती के गहने बने ।
बने तो बनें, भले ही बनें ।

जिसने रस दिया मुझ मेघ को
उस शक्ति सागर तत्व की वर्षा करूँ ।
जिस रोशनी ने ऐसे बनाया मुझ मेघ को
उसके पीछे खडा जो सूर गौरव
उसकी विजय हो ।

अनुवादक :
श्री. पी. जी. कामत एम. ए.
दयानन्दम, चेंपुकाव
तृशूर-१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृथ्वी का स्वर्ग केरल

दत्तात्रेय तापकीर

मेरी नींद टूट गयी और मैं जाग उठा। रेलगाडी तेज़ी से चल रही थी। मैंने बर्थ पर से नीचे झाँक कर देखा तो हमारे डिब्बे में बहुत भीड दिखाई दी। रात तो शायद बहुत पहले ही चली गयी थी और सूर्यदेव ने अपनी अनगिनत किरणों को मुक्त कर दिया था। थोडी किरणें गाडी की खिडकी से अन्दर आने की बडी चतुराई से कोशिश कर रही थीं। मैं ने बिस्तर पर ही आलस झटका कर खिडकी से थोडा सा झाँका तो हरा घास दिखाई दी, और थोडा नीचे झुका तो कुछ नारियल के पेड दिखाई पडे। मैं तभी धडाम से नीचे कूदा और हमारे डिब्बे के दरवाजे पर खडा रहा। जिस भूमि को देखने के लिए मैं इतना उत्सुक था वह केरल भूमि मैं देख रहा था। वह पृथ्वी का नन्दनोद्यान मेरी आँखों के सामने बिखरा था।

मैं देखता रहा और बस देखता ही रहा। इसके पहले मेरी यात्राएँ तो बहुत हो चुकी थीं। लेकिन प्रकृति की ऐसी मनमोहक उदारता इसके पहले मैं कभी देख नहीं पाया था। धन्य है यह केरल भूमि जहाँ कुदरत की लीला हर घडी हर क्षण मुस्कुराती है। मेरा हृदय आनन्द विभोर होकर नाचने लगा। मेरी आँखें मुझे ही धन्यवाद देने लगीं। दिल कह रहा था कि अन्य ज्ञानेंद्रियों की शक्ति आँखों को ही मिल जाए और मैं सृष्टि के इस विलोभनीय सौंदर्य वैभव को अपनी आँखों के कॉशियर द्वारा दिलरूपी बैंक में सदा के लिए जमा कर दूँ और जिन्दगी भर उसकी याद रूपी ब्याज द्वारा अपना गुज़ारा कर दूँ।

वस्तुतः उसी वक्त गाडी में ही कुछ लिखने के बारे में सोचा था लेकिन मैंने देखा कि शब्दों ने मेरे साथ असहकार आंदोलन किया था और प्रतिभा भी रूठ कर दूर चली गयी थी। एक भी उपमा मेरा साथ नहीं देती थी। शायद मेरी प्रतिभा का कहना था 'पागल, इस अनुपमेय को उपमा में बाँधने के लिए क्यों तरस रहा है?'

तब सिर्फ देखते रहना ही मेरे अधिकार में था। मैं अपनी पलकें तक झपकाता नहीं था ताकि कोई दृश्य गवाँ न बैठूं। फिर भी दो आँखें कम मालूम पडीं। यदि इन्द्रदेव के समान सहस्त्राक्ष होता तो कितना अच्छा होता। ऊपर नीचे दाएँ बाएँ और नज़दीक दूर सब जगह दुनियावाले ने अपना कमाल दिखाया था। लगता है विधाता ने विश्वकर्मा को केरल की तरफ ज्यादा ध्यान देने को कहा है। गाडी के दोनों तरफ से मुझे अलट पलट कर देखना पडता था क्योंकि दाएँ और बाएँ दृश्य परस्पर में स्पर्धा कर रहे थे और मुझसे बिनती कर रहे थे 'पहले मेरी तरफ देखो'। दोनों बाजू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का आग्रह मानने के लिए मैं दोनों तरफ देख रहा था ।

प्राकृतिक सौन्दर्य के सारे घटक यहाँ इकट्ठे आए थे । नारियल वृक्षों की बहुत बडी युनियन थी । रास्ते और कायल दोस्ती का हाथ बढा रहे थे । नाचने गानेवाली हवा को यही रंगमंच पसंद था । हरियाली ने यहीं लेटने का फैसला किया था । रहने के लिए यही जगह पसंद है इसलिए अन्य वृक्षों ने नारियल वृक्षों के साथ मित्रता की थी । ऊपर एक छोटा सा बादल था । हवा उसे सब जगह घुमा रही थी । मानो कार्यप्रवीण गृहिणी हवा ने बादलरूपी कपडा हाथ में लेकर आकाश के छत को साफ करना शुरू किया है । नारियल वृक्षों के मोह के कारण कायलों का पानी बहने के लिए राजी नहीं था । कायल के पानी का यह प्रेम देखकर हर एक नारियल ने अपने हृदय में थोडा थोडा पानी रख लिया था और उसमें अपना प्रेम मिलाकर उस पानी को मधुर बना दिया था ।

लगता था यह रेल यात्रा ऐसी ही चलती रहे और केरल धरती और विस्तीर्ण होती चले । मेरी समझ में नहीं आता—परशुराम ने अपना परशु इतने नजदीक क्यों फेंक दिया । वह परशु यदि और आगे गिर जाता तो केरल भूमि और फैल जाती ।

गाडी के दोनों तरफ की खिडकियों से मैं बाहर झाँक रहा था । अलट पलट कर अपनी गर्दन घुमा रहा था । सफेद तथा पीली तो कभी लाल तथा गेरूआ मिट्टी समतल धरती पर फैली हुई और ऊपर से हरी भरी सुहावनी चादर ओढी हुई, नारियल के ऊँचे पेड, लहराता पानी और नील आकाश— लगता था जैसे प्रकृति ने इन सब चीजों की प्रदर्शनी लगा रखी है । जमीन का थोडा सा टुकडा भी कहीं खाली नहीं दिखाई दिया । हर जगह वनस्पति साम्राज्य खिल उठा था । जब कहीं पानी दिखाई पडे तो फिर उस दृश्य का क्या कहना ? देखनेवाला बस यूहीं देखता रहे और समझनेवालों को तो सिर्फ इशारा काफी है ।

नारियल के पेडों ने तो मुझे पूरी तरह से जीत लिया था । कल्पवृक्षों का ऐसा विराट सम्मेलन मन को मुग्ध कर देता है । अपनी ऊँचाई सिद्ध करने के लिए मानो हर एक वृक्ष अपना माथा ऊपर कर रहा था । कुछ वृक्ष ऊपर बादलों की तरफ देख रहे थे, तो कुछ पानी में अपनी छायाएँ निरख रहे थे, कुछ वृक्ष पडोस के वृक्ष के साथ बातचीत करते थे तो कुछ आँखें मूँदकर अपनी जगह सीधे खड़े थे । जब सुगंधित हवा की मादक लहरें झूमती हुई आती तब सारे वृक्ष एक साथ डोलते और पत्तियाँ हिलाते । चहचहाने वाले पंछी मानो वृक्ष गिन रहे थे । यहाँ नारियल के इतने पेड हैं कि यदि किसी गंधर्व ने आकाश मार्ग से केरल में उतरना चाहा तो वह अपने आप किसी नारियल वृक्ष पर ही आकर गिर जाएगा । केरल याने नारियल और नारियल माने केरल! क्षितिज तक दूर फैले नारियल । उन नारियलों की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नखशिख तक सौन्दर्य से जडी हुई केरल भूमि—अलंकारों में सजी हुई यह भार्गवभूमि— पृथ्वी पर उतरी हुई यह स्वर्गभूमि!

भीड में थोडी सी जगह पाकर चुपचाप बैठे हुए गाँव। एक गाँव जाकर दूसरा कब आता इसका पता ही नहीं चलता। मानो हमारी पूरी सफर एक उद्यान में से हो रही है। नखशिख तक सौन्दर्य से जडी हुई केरल भूमि—अलंकारों में सजी हुई यह भार्गवभूमि—पृथ्वी पर उतरी हुई यह स्वर्गभूमि!

१३०४–भवानीपेठ,
पुणे, ४११००२, महाराष्ट्र

मलयालम कविता

हिमालय

एन. वी. कृष्णवारियर

इसी हिमालय में है मेरी आत्मा का निज गेह
यही हिमाच्छादित भू मेरा अन्तिम शय्यातल।
यही चाहती प्रज्ञा मेरी वानप्रस्थ ग्रहण कर
जन्म-मरण विधि-पौरुष व्यष्टि-समाष्टि द्वन्द्वों पर
मनन निदिध्यासन करता निज जीवन यहीं बिताऊँ
नित्य तृप्त हो, अनासक्त हो, सब से हो निरपेक्ष!

रूपान्तर: के. जी. बालकृष्ण पिल्लै

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी

लाश

किशन लाल शर्मा

वह एक नम्बर का आलसी और कामचोर था। अपनी इस आदत के कारण वह कहीं भी नहीं जम पाया था। जहाँ भी काम पर लगता, जल्दी ही काम से हटा दिया जाता था। एक स्थिति ऐसी आई उसे शहर पर में काम मिलना बंद हो गया था। पेट व परिवार के भरण पोषण के लिये उसे रिक्शा चलाना पडा था। दिन भर रिक्शा चलाकर जो कुछ कमाता उसमें जैसे जैसे परिवार की गाडी खिचती।

एक दिन वह शहर के मुख्य चौराहे से गुजर रहा था। एक जगह भीड देख वह ठिठक कर रुक गया था रिक्शा सडक के किनारे खडा कर भीड का कारण जानने को उसमें घुस पडा था। सडक के किनारे जमीन पर एक लाश पडी थी। लाश के ऊपर एक कागज पर टेढे मेढ़े अक्षरों में लाश के क्रियाकर्म के लिये चंदा देने की अपील लिखी थी। लाश के पास बिछे कपडे पर ढेर सारी रेजगारी और एक दो रुपये के कुछ नोट पडे थे। उसने नज़रें उठाकर लाश के पास खडे चारों आदमियों की तरफ देखा था।

चारों को वह पहचानता था। चारों दिन भर तरह तरह के स्वांग भरकर भीख माँगते और शाम को भीख में मिले पैसे की लाल हरी पीकर भरपेट भोजनकर जहाँ जगह मिलती अपने फटे पुराने बिछावन बिछाकर लेट जाते और ठहाके लगाकर भाषण झाड़ते, "क्या फायदा है पढने लिखने का । पढे लिखे दिन भर नौकरी की तलाश में जूते चटकाते फिरते हैं। उनसे तो हम वेपढे ठीक है जो भरपेट भाजन कर लम्बी ताज सोते है।"

भीड से निकल विवश होकर वह चल पडा था। सोचता विचारता। चलते चलते उसके दिमाग में एक विचार कौंधा और वह खुशी से उछल पडा। अब उसने काम करना छोड नया धंधा शुरू कर दिया। वह सडक के किनारे चलते राहगीर की स्थिति का जायजा लेता, और उसके पास पहुंच गिड-गिडाता "बाबूजी घर में मेरे बच्चे की लाश पडी है। मेरे पास उसके कफन के लिये भी पैसे नहीं। मुझ पर दया कीजिये जिससे लाश को ठिकाने लगा सकूँ"।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसकी बेबसी देख राहगीर ठिठक-कर खडा हो जाता। उसकी दयनीय स्थिति देख हाथ खुद बखुद हाथ जेब की तरफ चले जाते जो कुछ हाथ में आता उसकी तरफ बढाते हुये सहानुभूति के शब्द फूट पडते, "लो भाई बडा दुख है। हिम्मत से काम लो। ईश्वर की मर्जी के आगे किसी का क्या बस।" जैसे दिलासा भरे शब्द कहता आगे बढ़ जाता।

मुश्किल से दो घंटे भी नहीं हुये थे कि उसे अपनी जेब भारी नजर आने लगी थी। उसने जेब से रुपये निकाल कर गिने पूरे पचास थे। इतने रुपये तो वह दिन भर रिक्शा खींच कर भी नहीं क्या पाता था। उसे यह धंधा अच्छा लगा था। उसने रिक्शा जमा कराया और खूशी खुश घर की तरफ चला पडा था।

घर के करीब पहुँचते ही उसके कदम ठिठक गये थे। अंदर से दहाड मार कर रोने की आवाज़े आ रही थी। उसने आवाज को पहचाना, उसकी पत्नी की थी। जो चिल्ला चिल्ला कर रही थी। "मेरे लाल, मेरे राजकुमार .. वह खडा नहीं रह सकाते जी से अंदर प्रवेश कर गया था।

वहाँ का दृश्य देखते ही चौंक पड़ा था। उसकी आँखे भरी रह गई। सामने उसके एकमात्र पुत्र की लाश पडी थी जिसके पास मुस्के मौटतनो के स्त्री-पुरुष बैठे थे। उसको देखते ही दो चार थोग उठ खडे हुये उनमें से एक ने उसके कंधे पर हाथ रखा और बोला "स्कूल से आते समय सड़क पार करते हुये ट्रक के नीचे आ गया।" लोग उसे समझाने लगे थे।

लोगों के समझाने, सान्त्वना देने के बाद लाश को ले जाने की तैयारी होने लगी थी। क्रिया करम के लिये उसके पास रुपये थे, लेकिन कोई नही जानता था कि वस्तुत यह रुपये इसी काम के लिए माँगे गए थे।

८/३१९ भोगीपुरा, आगरा (उ० प्र०)

केरल की शिला युगीन संस्कृति

केरल में वयनाड जिला की गुफाओं में तथा इडुक्की जिला के मरयूर नामक स्थान की कुछ गुफाओं में ऐसे कुछ चित्र मिले हैं जो मिसोलिथिक-नियोलिथिक संस्कृतियों के माने जा सकते हैं।

केरल में नवीन शिलायुग के अवशेष, पहले पहल पालक्काट जिले के कन्याकोड नामक स्थान से मिला। १८६१ में फिलिप लेक ने यह आविष्कार किया था

हाल ही में आलुवा, अट्टुप्पाटि, और कण्णूर से नियोलिथिक एक्स निकले हैं।

शिला युगीन संस्कृति के अध्ययन क्षेत्र में केरल में अभी पर्यवेक्षण और खुदाई करनी है।

डा० पी. राजेन्द्रन, विज्ञान कैरली १३-५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह परिवार निशब्द होकर आगे बढा। कुट्टप्पन सामने की आराम कुरसी पर पडे रहता। माधविकुट्टी रसोई में काम करती। कभी कभी वह आंगन में टहलता। पुष्पित पौधों के पास खड़ा रहता। वह लडका मूक पति पत्नी को देखता खडा रहता।

न कुट्टप्पन कुछ बोलता, न माधविकुट्टी कुछ बोलता। मकडी के जाल उस घर के सभी कोनों में बिछे थे। प्रतीत होता था कि वहाँ के हर एक वस्तु बीते काल की ओर मुख किए हुए है। कभी

वह रोती ही रही।

कुट्टप्पन ने फिर कहा "रोओ मत। यह बात हम दोनों के सिवाय इस दुनियाँ में और कोई न जान पाये।"

माधविकुट्टी को लगा कि उसका हृदय फूट जाएगा। उस स्नेह संपन्न मनुष्य के पैरों पडने की इच्छा हुई।

पर उसे फिर जीने की आशा ज़रा भी नहीं रही। "कुट्टप्पन ने यह भी कहा कि मरना हो तो एक साथ मरेंगे।"

उसने माधविकुट्टी को गले लगाया। बार बार ज़ोर से गले लगाया। उसने

मलयालम उपन्यास

माधविक्कुट्टी

(अन्तिम किश्त)

(सात)

मूल : वैक्कम चन्द्रशेखरन नायर

अनुवाद : एन. कुमार पिल्लै

कभी ऐसा लगता कि हवा भी बहुत संभल कर वहाँ बह रही है। वहाँ मानो सब का प्रवाह रुका हुआ था। वह १३ सेंट ज़मीन सन्नाटे में फँसी हुई थी।

जिस दिन उसने कुट्टप्पन से अपने गर्भ के संबंध में समझाया उस दिन रात कुछ बीतने पर कुट्टप्पन ने माधविकुट्टी को बुलाया। उसे पास बिठा दिया। फिर माधविकुट्टी से पूछा :

"तुझे मन में बडी वेदना है क्या ?"

कुट्टप्पन के हाथों को मिले नयें बल का अनुभव किया। पर उस हाथ में भी स्नेह धडकता था। वह एक पत्ते के समान उनसे लगी रही। उसने कुट्टप्पन के हृदय का धडकन सुना। नीरवता के उस महा सागर में उसने ज़रा समय काट लिया। तब कुट्टप्पन ने धीरे से कहा "बेबकूफी मत कर बैठना।"

कुछ दिनों तक वह धैर्य बना रहा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर मन में एक श्मशान फैल रहा था। पेट में एक नया जीवन भी .....

सात महीने भी बीत गये। कुट्टप्पन उसे भोजन देने और उसकी सेवा शुश्रूषा करने में बहुत ध्यान रखता था।

उस दिन अखबार में एक समाचार देखा। उसने देखा। माधविकुट्टी पास न थी। समाचार यह था "भ्रष्टाचार आरोपण के बारे में खोजने के लिये सरकार से नियुक्त विधान सभा सदस्यों और अन्य प्रधान लोगों की समिति के अध्यक्ष के पद पर भास्करन नायर को नियुक्त किया है।"

कुट्टप्पन नायर ने धीरे से अखबार नीचे रखा।

उस दिन, उसने माधविकुट्टी को बुलाकर यह पढ नहीं सुनाया। पूर्ण गर्भिणी माधविकुट्टी जब सामने खडी रहती तब वह ध्यान से उसे देखा करता। अनजाने ही उसने कई त्याग सहन किये हैं। स्वास्थ्य हीन मुझसे शादी करने को तैयार हुई वह। पिता के लिये, माता के लिये, परिवार के लिये। मैं बीमार हुआ। उन दिनों में सभी दुःखों को छोडकर उसने मेरी सेवा की।

कुट्टप्पन को इसकी भी याद है।

एक दिन माधविकुट्टी को प्रसव वेदना हुई।

कुट्टप्पन कमरे के बाहर प्रतीक्षा कर रहे थे। उसका रोना उन्होंने सुना। उसे मालूम हुआ कि वह केवल प्रसव वेदना से ही नहीं रोती। उस बच्चे को कुट्टप्पन देख लेगा। यह वेदना भी है।

"ङा ङा" अन्दर एक रोना। उसने बच्चा जना।

एक घण्टा बीता। कुट्टप्पन उस कमरे में घुसा। बच्चे को उठा लिया। वह चेहरा तकिया से लगाकर रो रही थी।

बच्चे को नर्स के हाथों में दिया।

माँ आयी। पिता आये। राधाकृष्ण, बहिन और बच्चे भी आये।

दो हफ्ते बीत गये।

माधविकुट्टी बच्चे को लिये पूर्वी ओसारा मे बैठी थी। कुट्टप्पन कुरसी पर पडा था।

उसने पूछा :

"माधविकुट्टी तू हमेशा क्यों रोती है ?"

वह कुछ नहीं बोली। खामोश दिन।

खामोश हफ्ते !

तीन महीने।

अकेले बैठकर वह सोचती क्यों यों रोती है ? तब कुट्टप्पन पास आता। ऐसा लगा कि वह उसका पीछा कर रहा है। उसे ही नहीं, मन का, हृदय का, वेदना का, आँसू का। वह आहट सुनाये बिना ही चलती।

कुट्टप्पन भी दबे पाँव चलता। पास आकर वह पूछता :—

"तू क्यों गूंगी सी रहती है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह कुछ जवाब न देती। एक दिन जब माधविकुट्टी बच्चे को थन पिला रही थी तब वह पास आया। बच्चे को देखता रहा। उसने सिर झुकाया। दांतों से अधर दबाया। उसने रोना बंद किया।

तब उन्होंने कहा :

"मुझसे यह देखा नहीं जाता……" कुछ देर बाद उसने फिर मुख उठाकर देखा। काँपते हुये अधरों से उन्होंने कहा।

"यह रोना देख नहीं सकता।"

उसकी आँखें, एक स्त्री जितनी वेदना सह सकती है उतनी वेदना से माँफी मांग रही थी। वह माधविकुट्टी के निकट बैठा। बच्चे को हाथों में लिया। फिर उसे चूम लिया। गले लगाया। "जो भी हो" उन्होंने माधविकुट्टी से धीमी आवाज़ में कहा ताकि दुनियाँ न सुन पाय। पर यों लगा कि वे शब्द आँसू में भीगे हैं।

"जो भी हो—यह बच्चा तेरी कोख में ही जन्मा है न? मुझे इतना काफी है। तेरा खून है न? तेरा खून—वही सबसे बडा है। माँ का खून ही बडा है। पिता का कुछ नहीं। माधविकुट्टी, हर पुरुषों केलिए अपनी स्त्री ही बडी है।

वह एक अन्तिम श्रम कर रहा था, उसे सांत्वना देने के लिये।

शब्दों से उसकी वेदना धो डालने केलिए।

वह यह बात समझ गयी।

माधविकुट्टी केलिये वह पुरुष का अभिमान छोडने केलिए भी तैयार होकर आया है।

वह सह न सकी। फूट फूटकर रोती हुई उनके कंधों पर सिर अपना थाम दिया।

दिन डरते कांपते बीते।

खुद ऐसा लगने लगा कि माधविकुट्टी एक गूँगी है। स्मरण……स्मरण…… स्मरण .. पहले एक बार उसकी बहिन ने पूछा, क्या लडकी गूँगी है? अब पति वही पूछता है। पहले वह गूँगी सी थी। पर एक बार एक मोह में पडकर वह बोलने लगी। फिर वह शब्द रोना बन गया। वह शब्द आँसू बनकर बहा। वह आँसू अभी तक न खतम हुआ है। गूँगी के आँसू। ..

छुट्टी के दिनों घर आयी इन्दिरा माधविकुट्टी को देखने आयी। कई बातें कही। हँसी बच्चे को लिया। इन्दिरा दो कुर्त्ते, और दो पैकेट पीयर्स साबुन बच्चे के लिये लायी थी। एक सुन्दर गुडिया भी। सब बच्चे के हाथों पकडा दिया। उसने उसे छाती से लगाया। इन्दिरा ने माधविकुट्टी से फुसफुसाया— "यह कुट्टप्पन का प्रतिरूप है। तेरी आँखें ही बच्चे को मिली है। बाकी सब उनका ही रूप है। सुना?"

माधविकुट्टी को ऐसा लगा कि उसकी आत्मा टूटती जा रही है।

उसने आँसू प्राण से मिला कर निगल लिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन्दिरा गयी ।

उस दिन माधविकुट्टी ने निश्चय कर लिया । खूब सोचकर ।

रात में थोडा सा पानी बरसा । इस से भूमि गर्मी का अनुभव कर रही थी । भाप । आकाश और भूमि में भाप । बादल रूठा सा दिख रहा था बरसे बिना । आँगन के पेड पौधों के पत्ते निश्चल थे । बच्चे केलिए झूने की लकडी खरीदने केलिये कुट्टप्पन बाहर गया था । लौट नहीं आया है ।

माधविकुट्टी ने घर का दरवाज़ा बंद कर दिया । आँगन में उतरी । फाटक की ओर चली ।

चलते समय माधविकुट्टी वहाँ कुछ देर ठहर गयी जहाँ उस दिन चाँदिनी रात के समय कुट्टप्पन आराम कुरसी पर बैठे थे । उस दिन कुट्टप्पन ने जो इच्छा प्रकट की उसकी याद उसे आयी । एक बच्चे की चाह ..

उसने कहा कि यह कभी नहीं हो सकेगा···

अब वहाँ चाँदिनी नहीं है ।

कुट्टप्पन भी नहीं ।

केवल माधविकुट्टी ही ।

बगल में बैठे बच्चे को छाती से लगा कर वह कुछ समय तक रोयी ।

जहाँ कुट्टप्पन बैठे थे वहाँ ठहर कर उसने हृदय वेदना से माँफी माँगी ।

"मेरे प्रियतम, क्षमा कीजिये..."

वह बात किसी ने नहीं सुना । वहाँ के पेड पौधों ने भी नहीं सुनी । वह चली ।

चली ।

प्रत्येक कदम रखते समय ऐसा लगा कि पैर पाताल से ही खींच लेती है ।

तंग रास्ता ।

फिर विशाल सडक ।

वह जानती थी कि कुछ कदम भी बढाने पर उस विशाल गेट के पास पहुँच जाएगी ।

उस दिन सवेरे अखबार में पढी बात उसे याद आयी । वे उस बडे मकान में है । बडे गेट के अन्दर के बडे मकान में । टी. बी. में भ्रष्टाचार आरोपण के सबूत लेने के लिये भास्करन नायर आया हुआ है । टी. बी. में ही सबूत लेने का काम हो रहा है । दिन भर काम करके अब आराम करते होंगे ।

पौधे के फूल खुशबू फैलाते हैं । टी. बी. के आंगन के पेड निश्चल हैं ।

सब कहीं सन्नाटा ।

उसने टी. बी. की रोशनी देखी ।

एक आदमी का रूप भी । देखती, देखती, देखती रही । माधविकुट्टी फाटक के पास खडी रही । उसे मालूम हुआ वे वही आदमी है......

शब्द भाप बनकर उड गये । उस टी. बी. के आंगन में वह कुछ समय तक ठहरी । कोई भी नहीं देखता । सफेद दीवारों वाला वह ऊँचा मकान । एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मकबरा सा है। वहाँ केवल एक आदमी ही बैठा है। उसका रूप उसने बार बार देख लिया। जीवन में पहली बार मिले आदमी का रूप। संवारे हुये बाल। चश्मा बनियन्, और बालों से भरी छाती।

चाहा कि वहाँ गिर कर मर जायें... बच्चा कंधे पर सिर रखकर सो रहा है। माधविकुट्टी चला जैसे शताब्दियों से चली चल रही हो। पर आगे बढता नहीं।

एक गहरा डर।

अकेली घर से अब निकल आकर बडी गलती का। जीवन के समान प्यार करने वाले पति के जाने बिना। पर उसी दिन सबेरे से यही चिन्ता थी। फिर वह एक निर्णय बना। कई बार जाँच कर लिया कि वह विचार एक प्रतिकार बुद्धि से उत्पन्न हुआ है न? नहीं, वह केवल नीति है। केवल एक ही नीति जो जीवन में पायी नहीं जाती।

ओसारे में बैठे भास्करन नायर अन्दर की ओर देख कर बुलाता है।

अरे, मत्ताई!...

एक आवाज। मत्ताई आता है। टी. बी. का एक नौकर।

"तू सो जा।" वे कहते हैं।

मत्ताइ जाता है।

सन्नाटा। भास्करन नायर कोई फाइल देख रहे हैं।

भाप। भूमि के अन्दर से। उभरी हुई भापका अनुभव उसे हुआ।

माधविकुट्टी धीरे धीरे पोर्टिको के पास पहुँची। वे जान नहीं पाये। झुक कर फाइल देख रहे भास्करन नायर का चेहरा उठा। बरामदे की सीढी पर रात की अज्ञात देवता के समान ठहरी माधविकुट्टी को देखा।

भास्करन नायर ने देखा। निर्निमेष होकर बैठा रहा। फाइल बंदकर दिया। धीरे से उठा। उठ कर खडा रहा। बार बार देखा। सपने की तरह।

सपना था। उस टी. बी. के ओसारे में, साढी पर आंगन में, पेडों पर सब कहीं स्पष्ट निश्चल कोई सपना आहें से गलकर खडा था।

कुछ पल।

"माधविकुट्टी"—उसके अधर हिले। वह पुकार जैसे उसकी श्वास धारा से अलग नहीं हो रही हो। बच्चा को छाती से लगाकर, मुख झुका कर वह खडी रहा। भास्करन नायर ने चारों ओर देखा। क्या कोई देख रहा है?

कुछ दम भी।

"अकेली—?" उसके अन्दर से एक शब्द बाहर आया।

उसने धीरे से मुख ऊपर उठाया। विशाल आँखें मानों अधिक विकसित थीं। नष्ट भ्रष्ट उसका बल जैसे वापस मिला हो।

उसके शरीर में एक नया बल चढ रहा था। पैर दृढ हो रहे हैं। हाथ मजबूत हो रहे हैं। वहाँ तक पहुँचने की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बात उसने याद की। अभी दुर्बल नहीं बनना चाहिये। शक्ति से, दृढता से टिकना चाहिये।

"अकेली नहीं—" उसने कहा।

उन्होंने देखा। और किसी को न देखने से उत्पन्न विवशता से वे खडे रहे।

"क्या कुट्टप्पन भी साथ है।" वे कुछ संभल रहे थे।

"नहीं" उसने जवाब दिया।

"फिर" उत्कण्ठा दिखायी। वह बरामदे पर चढकर खडी रही।

"यह बच्चा भी है।" उसकी बडी बडी आँखें, उन पर टिकी रहीं। वे आँखें, वे अधर और वह छाती वर्षों की बडी वेदना थामती सी लगी। वह रोयी नहीं। पर आँसू से गरम कोई चीज पलकों के बीच से आ निकली। आँखों से रूक्षतर कोई वस्तु छाती से जैसे उभर आयी।

वे स्तब्ध रह गये।

"तेरे प्रसव की खबर मैं ने जान ली। आ नहीं सका।" रुक रुक कर उन्होंने समझाया।

"जन्म दिया। तुम्हारे बच्चे को। इसलिये ही मैं आयी हूँ।—" प्रतिपल उसका स्वर दृढतर हो रहा था।

वे देखते ही रह गये।

वह दो कदम भी आगे बढी।

बिजली की बत्ती के नीचे दो मूर्तियों के समान वे दिखाई पडे। सर्दी से जमीं, और गरमी से उबलती दो मूर्तियाँ।

"इस बच्चे को आपको देने के लिये मैं आयी हूँ।" उसने कहा।

वे चौंक गये। उसने बच्चे को छाती से अलगकर दिया। हाथ में लिया। भास्करन नायर की ओर उसने उसे बढाया।

बच्चा एक बार पटलकर रोया।

टी. बी. के निशब्द वातावरण में वह रोना पैठ गया।

उसने बच्चे को उनकी ओर बढ़ाया।

कुछ पल। वे अवाक् रह गये।

बच्चे का रोना।

"ले लो," उसकी आँखों में जैसे आग लगी थी। भास्करन नायर ने हाथ बढाया। बच्चे को लिया।

वह बच्चा वियोग की वेदना से ही मानों, रो पडा। दो पल······वह मुख छिपाकर फूट फूटकर रोने लगी। सह सके बिना। उसकी स्त्री मानों युगों के दु:ख का वहन कर खडी थी। बच्चे का रोना। उसकी आहें। भास्करन नायर ने बच्चे को गले से लगाने की कोशिश की। आश्वास कराने की, रोना बंद कराने की कोशिश की। रोना बंद नहीं हुआ।

वह नन्हा हृदय अज्ञात किसी दिव्य संपत्ति के नष्ट होने से ही मानो, रो पडा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह एक पगली के समान ड्योढी से निकली। सीढियाँ पैरों से कुचल कर आंगन से बाहर दौडी।

"माधविकुट्टी" !! बच्चे के रोने के बीच में उनका शब्द उस आंगन में गूंज उठा।

उसने आवाज न दी। टी. बी. का फाटक पार कर वह सडक पर पहुँची।

माधविकुट्टी हाँफती, हाँफ़ती कमरे में घुसी। पसीना। पसीना। वह यह नहीं जान पायी। माधवि कुट्टी पलंग पर जा गिरी। मेज़ पर जो दीप जला रखा था वह अब ज्यों का त्यों जल रहा है।

कुट्टप्पन अभी तक नहीं लौट आया। कभी कभी चाय की दूकान में बात करता रहता। अक्सर देरी से आता। कुछ समय एक आहट। अर्द्धबोधावस्था में उसने वह आहट सुनी। उनकी आहट है।

रोना बंद करने को वह तकिया से लिपट गयी। कुट्टप्पन कमरे में घुसा।

"माधवि कुट्टी !" उसने पुकारा।

वह फूट फूट कर रोयी। माधवि कुट्टी ऐसे रोती समय वह निशब्द हो जाता। तब भी वे पलंग पर बैठे। हाथ में 'झूला' बाँधने की लकडी और कपडा।

कुछ देर में उसने याद किया। बच्चा। बच्चे को कमरे के चारों ओर उसने खोजा। सोचा कि उसे लडका बाहर ले गया होगा। उसने रसोई घर में जाकर देखा। लड़का सो रहा है।

कुट्टप्पन लौट आया।

"माधविकुट्टी" !! उसके कंधे पर हाथ रखकर पुकारा।

उसने मुख मोड दिया।

"बच्चा कहाँ है ?" उसने पूछा।

उसने फूट फूट कर रोनेवाली माधवि कुट्टी को उठाया।

वह दीवार से लगकर रोयी। पगली की तरह।

"बच्चा कहाँ है?" उसके शब्द में एक पिता की उत्कण्ठा भरी थी।

वह चुप रही।

"मेरे बच्चे को तू ने क्या किया ?" वे हाँफते रहे। हाथ पैर कांप उठे।

खिडकी से आयी हवा से दीप की बत्ती हिल उठी।

अचानक उसकी सिसकें रुकी।

उन्होंने ज़मीन पर गिरने से उसे थाम कर पलंग पर लिटाया।

"बच्चे को उसके पिता के हाथों में सौंप दिया"। वह पगली सी रट रही थी।

कुट्टप्पन नायर आँखें फाडे बैठा रहा। सब कुछ खोया सा।

तब झूले की लकडी और धोती माधवि कुट्टी के निकट पडी थी।

[समाप्त]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कला की हत्या

आधी शताब्दी के पहले की बात है। तिरुवितांकूर रियासत के राजा श्री बालराम वर्मा ने यह घोषित किया कि अपने राज्य के सभी हिन्दु (अवर्ण और सवर्ण) बिना किसी नियंत्रण के मन्दिरों में प्रवेश कर सकते हैं और भगवान के प्रत्यक्ष दर्शन कर सकते हैं। वर्णाश्रम व्यवस्था के वैतालिक दंग रह गये। क्यों कि वर्षों से चली आ रही रीति स्वतंत्रता के लिए अनेक प्रकार के प्रयत्न किये। जुलूस निकाले गये, अर्जियाँ दी गयीं, सत्याग्रह का आयोजन हुआ। लेकिन तब तक वह संभव नहीं हो पाया जब तक सर सी.पी. रामस्वामी अय्यर जैसे दीर्घदर्शी, धिषणाशाली एवं नयज्ञ व्यक्ति तिरुवितांकूर रियासत में दीवान बन के नहीं आये थे। श्री० रामस्वामी अय्यर की मंत्रणा इस विख्यात

देख कबीरा रोया

में सवर्ण लोग ही मन्दिर में प्रवेश कर सकते थे। अच्छूत, अस्पृश्य आदि अवर्ण लोग मन्दिर में प्रविष्ट हो नहीं सकते थे। इतना ही नहीं वे मन्दिर के निकटवर्ती मार्गों से चल-फिर भी नहीं सकते थे। शिक्षा के प्रचार से, सभ्यता के विकास से जनता में जो परिवर्तन हुआ था उससे प्रेरित होकर अवर्ण लोगों ने उपासना की स्वतंत्रता तथा यात्रा की घोषणा के पीछे छिपी हुई है। हरिजनों के आराध्य राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने इस घोषणा की मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की थी। गांधीजी इस सिलसिले में तिरुवनन्तपुरम आये थे और अनेक हरिजन सहजों के साथ श्री पद्मनाभ स्वामी के मन्दिर में प्रविष्ट हुए थे। इसी ऐतिहासिक घोषणा को लेकर राजा श्री बालराम वर्मा भारत भर में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विख्यात बने। उनकी प्रजावत्सलता तथा विशालहृदयता का यह सूचक है।

महाराजा की घोषणा में यों कहा गया है:

"हमारी हिन्दु प्रजा में से कोई एक भी अपने जन्म, जाति या पाँति के कारण हिन्दु धर्म की शान्ति एवं सान्त्वना से वंचित न रह जाए... इस उद्देश्य से हम यह घोषणा करते हैं कि...जन्म से या धर्म निष्ठा से हिन्दु कहलानेवाला कोई भी व्यक्ति हमारे और हमारी सत्ता के अधीन रहनेवाले मन्दिरों में प्रवेश कर उपासना कर सकते हैं।"

१९३६ नवंबर की बारहवीं तारीख को तिरुवितांकूर रियासत के महाराजा श्री बालरामवर्मा द्वारा घोषित "मन्दिर प्रवेश घोषणा-पत्र" में ऐसा कहा गया था। केरल के महाकवि उल्लूर ने एक विख्यात कविता द्वारा कहा था—"इससे बढ कर इस राज्य में कौन-सा आश्चर्य हुआ है।"

अछूत, अवर्ण आदि हरिजन सहज हर्षित हो कर मन्दिरों में प्रविष्ट हुए और भगवान की मूर्ति के सामने नम्रशीर्ष बनकर भक्ति रसधारा में निमग्न रह गये। उनको अपने सिरजनहार तथ पालन कर्ता की प्रति मूर्ति को आँखों के समक्ष मन भर देखने का पहला अवसर प्राप्त हो गया है।

महाराजा की कृपा से हरिजन इतने आनन्दित हुए कि उसके प्रत्युपकार में उन्होंने भी कुछ न कुछ करना चाहा। अन्त में यह निर्णय हुआ कि महाराजा बालरामवर्मा की पंचलौह प्रतिमा बनायी जाए और उसकी प्रतिष्ठापना श्री पद्मनाभ स्वामी के मन्दिर के निकट ही की जाए। उस समय के विख्यात प्रतिमा शिल्पी श्री० डी. पी. रायचौधरी ने अपनी सारी कलामर्मज्ञता को निवेशित कर एक अतिसुन्दर प्रतिमा बनायी। मन्दिर की दक्षिणी गली में जो मैदान था उसमें एक अत्याकर्षक उद्यान बनाया गया और उस उद्यान के मध्य भाग में प्रतिमा प्रतिष्ठापित की गयी। लाखों हरिजनों अवर्णों की हृदयाभिलाषाओं की साकार मूर्ति थी वह और विश्वविख्यात मूर्तिकार रायचौधरी की कलाकुशलता का प्रतिबिंब भी। उसकी आँखों की पुतलियों की जगह उस महान कलाकार ने अमूल्य रत्नों को रखा था जो हमेशा दिव्य ज्योति बिखेरते थे।

x x x

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीपद्मनाभस्वामी मन्दिर की दक्षिणी गली पर स्थित मैदान के रेत के कण श्री० स्वातितिरुनाल महाराजा और नवरात्रि संगीत से संबन्धित कहानियाँ सुनाने के लिए लालायित हैं । वर्षों तक उसी मैदान में बैठकर सैंकडों हज़ारों लोग नवरात्रि मंडप के नौ दिनों का सरस संगीत उच्चभाषी यंत्र द्वारा सुनते थे । सायं छः बजे से साढे आठ तक संगीत की अजस्र धारा बहती थी । स्वाति तिरुनाल महाराजा के हृदय की अथाह गहराइयों से निसृत संगीत सरिता संगीत प्रेमियों को पुलकित करती थी ।

आज अनन्तपुरी (तिरुवनंन्तपुरम) इतना सभ्य एवं परिष्कृत बन गया है कि वहाँ न मैदान रह गया है, न उद्यान। मैदान की विस्तृत जगह तो है, लेकिन वह जगह यातायात निगम की बसों के लिए पर्याप्त नहीं है। उस अपर्याप्तता की पूर्ति के लिए उद्यान की सुन्दर दीवारें तोड़ गयीं और उद्यान सिकुडते सिकुड़ते महाराजा की प्रतिमा के अधि निकट पहुँच गया है । नवरात्रिका की संगीत धारा की जगह आ बसों का कठोर स्वर गूँज रहा है इन सब प्रतिबन्धों के बीच ति वितांकूर क महान महाराजा श्री बालराम वर्मा की मनोहारी प्रतिमा शरणार्थी के रूप में खडी रहती है (वे महान प्रजावत्सल राजा आ भी उसी गली से भगवा श्रीपद्मनाभ की उपासना के लि पधारते हैं—यह भी विधि की वि बना है!) सबसे हृदय विदारक सत यह है कि उस प्रतिमा की आँखों पुतलियों की जगह जो अमूल्य र जडे थे, वे दोनों किसी "महान व्यक्ति द्वारा चुरा लिये गये हैं मनुष्य की हत्या सुलभ है स्वाभावि है, लेकिन कला की हत्या ...?

श्रीकृष्ण के वंशज केरल में

आधुनिक कण्णूर जिले के कई भागों में पहले कोलत्तुनाड की रियासत था । अपने को श्रीकृष्ण के वंशज माननेवाले हैं कोलत्तुनाड के यादव अथवा कोलयान ।

इस यादव जाति को कोलयान, मणियाणि और एरुवान भी कहते हैं । 'गोपालक' शब्द से ही 'कोलयान' शब्द की निष्पत्ति हुई होगी ।

श्री शंकु अय्यर ने सिद्ध किया है कि (केरल के) वेणाड और ओडनाड के राजा यादव वंश के थे । वेणाड के राजाओं को 'यदुकुल मंगल प्रदीप' और 'यदुकुल नारायण' भी कहा गया है ।

वी. वी. कुंजिकृष्णन
विज्ञाल कैरली १३-५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गहरे और व्यापक रिश्तों की सच्ची और असली कहानियाँ

विष्णु खरे

शानी हिंदी के उन महत्वपूर्ण कहानीकारों में से हैं जो १९५५ के आसपास हिंदी कहानी में उभरे और अपने कृतित्व से इस विधा को इतना नवाज़ा कि वह हिंदी साहित्य के केन्द्र में आ गई । उस समय के बाद हिंदी कहानी का विकास शानी जैसे कथाकारों के विकास का ही दूसरा नाम है ।

हिन्दी कथा-साहित्य की अधिकांश समीक्षा अवसरवादिता, स्वार्थ, मतांधता एवं दुविधाप्रेम की रजामंद शिकार रही । फलस्वरूप कुछ नामों, आन्दोलनों तथा वादों को लेकर पिछले तीन दशकों से हिन्दी कहानी के तथाकथित विधाताओं और नियामकों में जूतमपैजार होती रही और उससे उठनेवाला धूल में ऐसा लगा जैसे इस अखाडे के सिवा दृश्य में कुछ है ही नहीं । लेकिन कहानी के दर्शक अथवा समीक्षक होकर अमर हो जाने की लालसा से बहुत अलग ऐसें भी कुछ कहानीकार थे जिन्होंने गंडा-तावीज नहीं बाँधे, जनेऊ नहीं पहने और कलमे नहीं पढ़े । उन्होंने इसकी परवाह नहीं की कि कब किस प्रकार की कहानी का 'दौर' चल रहा है—कब 'कुंठा' और 'संत्रास' झेलना है और कब 'आम आदमी' के पक्ष में हथियार उठा लेना है—कब, आंचलिक'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बन जाना है, कब 'कस्बाई' और कब 'महानगरीय'। हिन्दी के ऐसे विरले खुद्दार कहानीकारों में शानी का नाम बहुत ऊपर है।

शानी की कहानियाँ पढ़कर एक बात बिल्कुल साफ़ हो जाती है—वह यह कि इस आदमी ने अपना जीवन अपनी शर्तों पर जिया है और जीवन को अपनी निगाह से देखा है और इसलिए जीवन से प्राप्त उसका अनुभव एकदम 'फर्स्ट-हैंड' है—उसे हासिल करने के लिए उसे ग्रंथियों और ग्रंथों के पास नहीं जाना पड़ा है। जीवन के साथ उसका रिश्ता जितना गहरा है उतना व्यापक भी है—इसलिए शानी की कहानियां सच्ची और असली हैं। वे एक वर्ग-विशेष, समुदाय-विशेष अथवा परिवेश-विशेष की कहानियां नहीं है वे जीवन की तरह विविध हैं। यह सही है कि 'जली हुई रस्सी', 'जनाजा', 'शर्त का क्या हुआ' और 'युद्ध' सरीखी कहानियों में मुस्लिम परिवेश और पात्र प्रमुख हैं, किंतु इन कहानियों की आंच प्रत्येक संवेदनशील पाठक के दिलो-दिमाग तक पहुँचती है।

शानी और शानी की कहानियाँ कभी भी जमीन से जुड़े हुए होने का
दावा करने की कोशिश में हलक
नहीं होते। आज के अधिकांश हि
लेखकों की तरह शानी भी भार
निम्न-मध्यवर्ग में आते हैं। यह
अलग है कि कई कारणों से शा
ने अपने जीवन में काफी उत
चढ़ाव देखे हैं और एकाधिक
अग्नि-परीक्षा से गुज़रे हैं—
उन्होंने वे सारे अभाव, सदमे
अपमान झेले हैं जो स्वतंत्रता
पश्चात् इस देश के अधिकांश त
कथित नागरिकों की जवानी
अनिवार्य हिस्सा बन गए हैं। शा
की कहानियों के पात्र और घट
अपनी कहानियां खुद कह रहे
आज के भारतीय इन्सान की अन्य
दमन, अत्याचार से लड़ाई में शा
की कहानियाँ पिछले पच्चीस
से चुपचाप शामिल होती गई
'एक नाव के यात्री', 'एक कमरे
घर' और नंगे जैसी कहानियां
तिलमिला देनेवाले सामाजिक यथ
को सजीव कर देती है वहाँ 'पत्
का तालाब' और 'इमारत गि
वाले' में व्यक्तिगत और सामा
नैतिक के तनावपूर्ण ह्रास का
और सधा हुआ आकलन है।

हिंदी कहानी ही नहीं, साहि
की अन्य विधाओं का भी यह दु

केरल ज्यों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज के भारतीय इन्सान की अन्याय, दमन, अत्याचार से लड़ाई में शानी की कहानियाँ पिछले पच्चीस वर्षों से चुपचाप शामिल होती गई हैं ।

रहा है कि उन पर समय-समय पर एक विचित्र एकांगिता हावी होती रही है । समाज के जीवन तथा व्यक्ति के जीवन के वैविध्य को एक साथ और अलग-अलग देख पाना, उसे समझने से इनकार करना एक ऐसा आत्महंता अभाव है जिससे हम और हमारा साहित्य दोनों बौने अथवा विकलांग रह जाएंगे । शानी की कहानियां इसलिए भी हमारे लिए महत्वपूर्ण हैं कि उनमें न तो सिर्फ रूमानियत है, न जिस्मानियत और न सैद्धांतिक फिरकापरस्ती । शानी के स्त्री-पुरुष मुकमिल स्त्री-पुरुष अपनी हैं—अपने देश के, और अपने समय के, अपनी जहनियत के तथा देह के और वे सब अपने-अपने वर्गों के हैं, अपनी-अपनी परिस्थितियों के—उनके गुणों और दोषों से बने हुए— इन्सान बनते या न बनते हुए । शानी मुस्लिम हैं, लेकिन न तो मुस्लिम ठप्पे की कहानियों के ठेकेदार हैं और न उसके लिए कोई रियायत मांगते हैं, इसीलिए शानी मध्यप्रदेश के छत्तीसगढ़ के हैं लेकिन आंचलिकता न तो ओढ़ते हैं और न भुनाते हैं—क्योंकि उनके यहां जमीन कहीं की हो सिर्फ जमीन है और आदमी कोई भी, कहीं का हो पहले आदमी है···

❀

(पुस्तक परिचय से साभार)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

झरोखा

भारतीय साहित्य का अनुवाद अंग्रेजी द्वारा

भारतीय साहित्य का अनुवाद हंगेरियन भाषा में होता रहा है। अनुवाद मुख्यतया अंग्रेजी के द्वारा ही होता है। पर भारत की कई रचनायें अभी अंग्रेजी में नहीं आयी है।

[साहित्य चक्रवालम ५/१

दस करोड प्रतियाँ

रीडेर्स डैजस्ट नामक मासिक पत्रिका चौदह भाषाओं में निकलती है। इसकी दस करोड़ प्रतियाँ बिकती है !

गोथे का १५० वां मृत्युवर्ष

जर्मन महाकवि गोथे का १५० वां मृत्युबर्ष कोचिन विश्वविद्यालय में मनाया गया। इनका नाटक 'फौस्ट' विश्वविख्यात नाटकों में एक है।

डा० सुकुमार अषीकोड पुरस्कृत

मलयालम के कहाकवि वैलोप्पल्लि श्रीधर मेनोन के नाम पर सहृदय नाम की संस्था द्वारा संस्थापित वैलोप्पल्लि पुरस्कार मलयालम के प्रसिद्ध लेखक डा० सुकुमार अषीकोड को देने का निर्णय किया गया है।

लन्दन से मलयालम पत्रिका

लन्दन से 'उषस्' नामक एक मलयालम मासिक पत्रिका का प्रकाशन आरंभ हुआ है। इसका प्रकाशन लन्दन के युव केरल सोश्यल क्लब की ओर से हो रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय भाषाओं का इतिहास अंग्रेजी में

केरल साहित्य अकादमी २१ भारतीय साहित्यों और भारतीयों द्वारा रचित अंग्रेजी साहित्य का तुलनात्मक इतिहास शीघ्र ही अंग्रेजी में 'कंपेरटीव इन्डियन लिटरेचर' नाम से शीघ्र ही प्रकाशित करेगा। साथ साथ मलयालम में भी इसका प्रकाशन होगा।

आर्चिबाल्ड मकलीष

अमेरिका के प्रमुख कवि आर्चिबाल्ड मकलीष का देहान्त गत अप्रैल में हुआ।

'कोण क्विस्तदोर' नामक कविता पर और 'जे बी' नामक नाटक पर उन्हें पुलिस्टर पुरस्कार मिला था।

मलयाली का अंग्रेजी उपन्यास

मलयालम भाषी लेखक श्री० बी. रवीन्द्रन का अंग्रेजी उपन्यास 'दि मेरजर' न्यूयोर्क से प्रकाशित हुआ है।

मलयालम उपन्यासों का संग्रह हिन्दी में

कलकत्ता के भारतीय भाषा परिषद ने भारतीय उपन्यास कथा सार के प्रथम भाग में मलयालम, गुजराती, कन्नड, तेलुगु और सिन्धी के मुख्य उपन्यासों का सारांश प्रकाशित किया है। इन्दुलेखा, मार्ताण्ड वर्मा, चेम्मीन, ओडुप्पाप्पाक्कोरानेन्टार्नु, अरनाषिक नेरम, वेरुकळ, खसाक्किन्टे इतिहासम, कालम अग्निसाक्षी इन मलयालम उपन्यासों का संग्रह प्रस्तुत किया है डा० एन. ई. विश्वनाथ अय्यर ने।

मलयालम ग्रथ रूसी में

श्री० के. पी. एस. मेनोन के ग्रंथ 'इंडियन नयतंत्रज्ञन' का रूसी अनुवाद मोस्को के प्रोग्रसीव पब्लिशेर्स ने प्रकाशित किया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मलयालम साहित्य अंग्रेजी में पढिये

केरल साहित्य अकादमी की रजत जूबिली के अवसर में मलया साहित्य का परिचय देनेवाली तीन पुस्तकें अंग्रेजी में निकलने वाली 'दि ब्यूटिफुल एन्ड हैन्डसम' नाम से विख्यात उपन्यासकार उरू 'सुन्दरिकलुम सुन्दरन्मारुम' नामक उपन्यास का अनुवाद निकलेगा। मलया की चुनी हुई एकांकियों का संग्रह 'सेलेक्टड वन एक्ट प्लेस' नाम से निकले चुनी हुई मलयालम कविताओं का अनुवाद निकलेगा 'सेलेक्टड मलया पोयम्स' नाम से।

इन पुस्तकों का वितरण 'ओरियन्ट लोंग मैन लिमिटड, द्वारा होगा

सुब्रह्मण्य भारती की रचनायें

पांडिचेरी सरकार ने सुब्रह्मण्य भारती की रचनायें इतर भारतीय भाषा में प्रकाशित करने का निर्णय किया है।

३६७ मातृभाषायें

एन. सी. ई. आर. टी. के एक सर्वेक्षण से पता चला है कि भारत में ३६७ मातृभाषायें हैं। इन में स्कूलों में पढायी जानेवाली भाषाओं की सं ५८ है।

गायत्री पुरस्कृत

मध्यप्रदेश कलापरिषद् का इस वर्ष का अखिल भारतीय अवार्ड केरल चित्रकार श्री गायत्री को मिला।

तेलुग भागवत

आन्ध्र प्रदेश के भक्त कवि पोतना द्वारा विरचित श्रीमद् आन्ध्रा भागव की पंचशती मनायी जा रही है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तकषि की सप्तति

मलयालम के प्रसिद्ध उपन्यासकार श्री तकषि शिव शंकर पिल्लै सत्तर वर्ष की आयु पार कर चुके हैं।

गिन्नस बुक मलयालम में

भारतीय भाषाओं में पहली बार मलयालम में गिन्नस बुक प्रकाशित किया जायेगा। कोट्टयम के महाराणी बुक्स ने इसकी अनुमति पायी है।

दिन में १०,००० शब्द

लंदन के प्रसिद्ध लेखक एडगर वालस दिन में करीब १०,००० शब्द तक लिख डालते थे। उन्होंने १७५ उपन्यास, २२ नाटक और अनेकों कहानियाँ लिखीं।

विश्वकविता केन्द्र

कायिक्कुरा (केरल) में एक विश्व कविता केन्द्र स्थापित किया जा रहा है। विविध भाषाओं के जो कवि महाकवि कुमारन आशान विश्व पुरस्कार से पुरस्कृत होंगे उन्हीं की एक समिति केन्द्र का संचालन करेगी।

उर्दू के विकास केलिए

उर्दू में विज्ञान कोश, शब्द कोश, संदर्भ ग्रंथ, बाल साहित्य आदि प्रकाशित करने के लिए भारत सरकार ने कई योजनायें बनायी हैं। इस के लिए चालू वर्ष में २५ लाख रुपये की अनुमति है।

आशान पुरस्कार से सम्मानित भारतीय कवि

मलयालम के विख्यात कवि कुमारन आशान के नाम से संस्थापित आशान पुरस्कार से भारत के दस कवि इस वर्ष सम्मानित हुए। वे हैं कटम्मनिट्टा (मलयालम), उमाशंकर जोशी (गुजराती), करण्दिकर (मराठी), कुंवर नारायण (हिन्दी), दीनानाथ कौल नादी (कश्मीरी), डा० सी. नारायण रेड्डी (तेलुग), तेनस्वामी (तमिल), डा० नेकी (पंजाबी), और श्याम घोष (बंगला)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठकों के पत्र

डा० इन्दरराज बैद 'अधीर'
आकाशवाणी, मद्रास

आदरणीय श्रीयुत वेलायुधन नायर साहब,

सप्रेम नमस्कार!

'केरल ज्योति' का मई अंक प्राप्त हुआ। हमेशा की तरह सूझ बूझ भरा। विचारोत्तेजक संपादकीय — "यह बस पांगोड जायेगी?" हार्दिक बधाई। किसी न किसी प्रसंग को आधार बनाकर बहुत ही सीधे सरल शब्दों में अग्रलेख प्रस्तुत करती हैं केरल ज्योति। श्री० एन. वी. कृष्णवारियर की "नवयुग संक्रम" का संकेत करने वाली अनूदित कविता भी बहुत अच्छी लगी। फरवरी के नवीकरण पाठ्यक्रम की विस्तृत रिपोर्ट भी पढ़ी। काफी मेहनत और लगन से तैयार किया यह विवरण पत्रिका के सभी पाठकों के लिए उपादेय होगा। डा० देवकी और सुश्री शोभा धन्यवाद की पात्र हैं। मोहिनियाट्टम्, कुच्चिपुडि और भरत-नाट्यम प्रस्तुत करती हुई सर्वसुश्री लक्ष्मी नटराजन, राजी गोयालकृष्णन और सिंधु के चित्रों ने उस मनोरम संध्या की सुस्मृति को एक बार फिर उभार दिया, जो आपने फरवरी में पुरस्कार समारोह के अवसर पर आयोजित की थी। साहित्य और कला का सुंदर संगम था आपकी सभा में। कोई कैसे भुला सकता है?

मधुर स्मृतियों के साथ,

आपका

इन्दर राज बैद

अखिल विनय
पो. बी ७७४६, बंबई ४०००१२

प्रिय बन्धुवर, नमस्कार।

मई मास के अंक में आपका सम्पादकीय "यह बस पांगोड जायेगी?" पढ़कर बहुत हर्ष हुआ। कृपया हार्दिक बधाई स्वीकार करें। आपका यह सुझाव स्तुत्य है कि "हर प्रान्त की बसों में— कम से कम मुख्य नगरों, पर्यटन केन्द्रों और तीर्थ स्थानों को जानेवाली बसों में नामपट्ट तीन लिपियों में लिखे जायें... प्रान्तीय भाषा की लिपि में, नागरी लिपि में और रोमन लिपि में।"

इस दिशा में पर्याप्त आन्दोलन किये जाने की जरूरत है। "केरल ज्योति" के मई अंक में ही 'हिन्दी अध्यापन कैसे सुधारें' लेख पढ़ कर बड़ा सुख मिला। इसी प्रकार 'धारवाड़ का नव हिन्दी लेखक शिविर' की वार्ता भी रोचक-प्रेरक है। आप लघु कलेवर में भी बहुमूल्य सामग्री देकर, गागर में सागर भरते हैं।

विनीत,
अखिल विनय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द. श. जोशी
रेल्वे क्वार्टर्स, आर. बी. ४७/१२
शिवाजीनगर, पुणे ४११००५

आपका मेरा संक्षिप्त परिचय तो है ही नहिं । किन्तु केरल हिन्दी सभा की दो सदस्याओं डॉ० देवकी तथा श्रीमती शान्ताकुमारी जी, धारवाड अहिन्दी भाषी हिन्दी लेखकों के शिविर में शिविरार्थी के रूप में शामिल थीं । उनके द्वारा केरल ज्योति की मार्च महीने की कॉपी प्राप्त हुआ । आपके द्वारा छपनेवाली यह मासिक पत्रिका दर असल अच्छी है । हार्दिक बधाई ।

आप के सम्पादकीय 'दायित्व निभाना होगा' में व्यक्त किये विचारों के साथ मैं [illegible] सहमत हूं । अन्यान्य भारतीय भाषाओं थी रचना अन्य प्रादेशिक भाषा में अनुवादित होनी चाहिये केरल का जन जीवन और सांस्कृतिक परंपरा मराठी गुजराती आदि अन्य प्रांतीय भाषाओं में मुखरित होनी चाहिये तभी राष्ट्रीय एकात्मता की भावनाओं और राष्ट्रभाषा हिन्दी को बढावा मिलेगा । इसके लिये यह जरूरी है कि सेवाभावी हिन्दी संस्थाओं आपस में मेल जोल बढावें ।

वैक्कम चंद्रशेखरन नायर का "माधविक्कुट्टी" अच्छा है ।

विनीत,
द. श. जोशी

निकोलास गिल्लन–आशान विश्वपुरस्कार से सम्मानित कवि

मलयालम के महाकवि कुमारन आशान के नाम पर संस्थापित आशान विश्व पुरस्कार से क्यूबा के देशीय कवि निकोलास गिल्लन इस वर्ष सम्मानित हुए। उपनिवेशवाद और स्वेच्छाधिपत्य के विरुद्ध क्यूबन जनता के साथ लडते हुए वे कई वर्ष जेल में रहे हैं । स्पैनिष भाषा में लिखने वाले गिल्लन अब अस्सी वर्ष के हैं ।

गिल्लन की प्रारंभकालीन कृतियों में प्रतिषेध का स्वर मिलता है । मस्तिष्क और हृदय (१९२२) बेटे केलिए प्रेरणायें, (१९३०) वेस्टइन्टीस लिमिटड (१९३४) सैनिकों केलिए कुछ गीत और यात्रियों केलिए कुछ शब्द (१९३७) जैसी प्रारंभिक रचनाओं में एक नीग्रो युवक की विप्लव वांछा समायी हुई है । 'दादा', 'दो दादाओं केलिए एक लोक गीत' जैसी कवितायें क्यूबन जनता को ग्राम शत्रु के विरुद्ध लडनेकी प्रेरणा देती रहीं । उनकी कवितायें रणक्षेत्र के क्यूबन सैनिकों की जोश भडका देनेवाली थी ।

१९५८ में प्रकाशित 'जनता की ओर उडनेवाला कबूतर, स्तुतिगीत जैसी रचनायें लौटिन अमेरिका की लक्षणयुक्त राष्ट्रीय कवितायें हैं ।

वे १९५३ में क्यूबा से बाहर निकले और क्यूबा के स्वतंत्र होने तक बाहर रह कर स्वदेश के क्रांतिकारियों को उत्साह और प्रेरणा देते रहे । १९५९ में जब क्यूबा स्वतंत्र हुआ तो गिल्लन क्यूबा के देशीय कवि के रूप में प्रतिद्ध हुए ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

गुरु के तीन साधन

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महर्षि अरविन्द

शिक्षण, दृष्टान्त, प्रभाव—ये गुरु के तीन साधन होते हैं। परन्तु ज्ञानी अपने-आपको अथवा अपनी सम्मतियों को (शिष्य के) ग्रहणशील मन की निष्प्रतिरोध स्वीकृति पर लादने की कोशिश नहीं करेगा। वह केवल कोई फलजनक संस्कार ही उसके भीतर डाल देगा जो बीज की तरह, निश्चितरूपेण, अन्दर-ही-अन्दर दिव्य पोषण पाकर उपजेगा और वृद्धि को प्राप्त होगा। वह शिक्षा देने की अपेक्षा कहीं अधिक उद्बुद्ध करने का ही यत्न करेगा। वह नैसर्गिक प्रक्रिया और स्वतंत्र विस्तार के द्वारा शक्तियों और अनुभूतियों के विकास को ही लक्ष्य बनायेगा। वह किसी विधि को एक सहायक साधन एवं उपयोगी उपाय के रूप में ही बतलायेगा, किसी अनुल्लंघनीय नियम या नियत नित्याभ्यास के रूप में नहीं। वह इस बात से सावधान रहेगा कि कहीं वह साधन को किसी प्रकार का बन्धन न बना डाले और प्रक्रिया को आन्तरिक रूप न दे दे। उसका सम्पूर्ण कर्तव्य बस यही है कि वह दिव्य प्रकाश को उद्बुद्ध कर दे और उस दिव्य शक्ति की क्रिया प्रारम्भ करा दे जिसका वह स्वयं एक साधन एवं उपकरण और आधार या प्रणालिका मात्र है।

दृष्टान्त शिक्षण की अपेक्षा अधिक शक्तिशाली होता है। परन्तु बाह्य कर्मों तथा व्यक्तिगत चरित्र का दृष्टान्त सर्वोत्तम दृष्टान्त नहीं है। इनका अपना स्थान और अपनी उपयोगिता अवश्य है; किन्तु जो चीज दूसरों में अभीप्सा को अत्यधिक उद्दीप्त करेगी वह गुरु के अन्दर विद्यमान दिव्य उपलब्धि का केन्द्रीय तथ्य है जो उसके अपने जीवन तथा उसकी आन्तरिक अवस्था और उसके सारे कर्मों को नियन्त्रित करता है। यह उसके अन्दर एक सार्वभौम और सारभूत तत्त्व है। शेष सब कुछ व्यक्ति और परिस्थिति से सम्बन्ध रखता है। इस क्रियाशील उपलब्धि को गुरु में प्रत्यक्ष देखकर साधक को इसे अपने अन्दर अपनी निजी प्रकृति के अनुसार मूर्तिमान करना होगा। उसे बाहर से अनुकरण करने का यत्न करने की जरूरत नहीं है, क्योंकि वह अनुकरण यथोचित और स्वाभाविक फल पैदा करने के स्थान पर सहज ही पंगु बनानेवाला हो सकता है।

प्रभाव दृष्टान्त की अपेक्षा अधिक महत्वशाली होता है। प्रभाव का अर्थ गुरु का अपने शिष्य पर बाह्य शासन एवं अधिकार नहीं है, बल्कि उसके संस्पर्श एवं उसकी उपस्थिति की शक्ति है, उसकी आत्मा की दूसरे की आत्मा के साथ समीपता की शक्ति है जो दूसरे की आत्मा के अन्दर, चाहे मौन रूप में ही, गुरु के अस्तित्व और गुरु को अतःसञ्चारित कर देती है यह है गुरु का सर्वोत्कृष्ट लक्षण। वास्तव में परमोच्च कोटि का गुरु शिक्षक बहुत कम होता है; वह तो एक उपस्थिति होता है जो अपने आसपास के सभी ग्रहणशील लोगों में दिव्य चेतना और उसकी सारभूत ज्योति, शक्ति, पवित्रता और आनन्द उँडेलता रहता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश केलिए—काव्य संग्रह

डा० एन. जी. देवकी

डा० इन्दरराज वैद 'अधीर'

जनहित प्रकाशन, मथुरा

पृ० : ४०

मूल्य : चार रुपये

'देश केलिए' काव्य संग्रह राष्ट्रीयता के महान पुरोधा, तमिल के महाकवि सुब्रह्मण्य भारती की जन्म शताब्दी के अभिनन्दनार्थ संगृहीत किया गया है। इसमें कुल ४१ कविताएँ हैं। भारत की वर्तमान समस्याओं की ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए कवि सुधार का मार्ग निर्देश करते हैं।

प्रस्तुत संग्रह की प्रथम कविता 'वर दो माता वर दो' में कवि मानव के हित केलिए सत्य, अहिंसा, शांति आदि महान् तत्त्वों के पालन कीं आवश्यकता पर बल देते हैं—

सत्य, अहिंसा, शान्ति, पन्थ पर
हम सबको है चलना।
मानवता हित जीना हमको,
मानदता हित मरना।

ऐसी पंक्तियों में कवि पर गान्धीवाद का प्रभाव लक्षित होता है। 'जागो भारतवासी' शीर्षक कविता के द्वारा कवि ने भारतवासियों को जगाने का प्रयत्न किया है, जोश और आवेश भरने का यत्न किया है—

कह दो नहीं रुकेगा सुदर्शन चक्र हमारा,
x x x x
ईंटों का उत्तर पत्थर से देना होगा।

छायावादी कवि निराला के 'परिमल' की कविता 'जागो फिर एक बारा डा० अधीरजा की कविता से साम्य रखत' है। श्रीमतो सुभद्राकुमारी चौहान ने भी अपनी एक देशप्रेम सम्बन्धी कविता में लग भग येही भाव व्यक्त किए हैं। 'वीरों की होली' और 'वीर सूरमा भारत का'— ये दोनों कविताएँ भारत के नव युवकों को स्वतंत्रता केलिए उत्तेजित करनेवाली हैं।

दलितों एवं शोषितों के प्रति कवि की सहानुभूति 'सावधान हो जाओ शोषको,' 'भूख की चिनगारी' आदि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कविताओं में मुखरित हुई हैं। भारत को स्वतंत्रता मिली राजनीतिक दृष्टि से, लेकिन आर्थिक कष्ट सहनेवाले करोडों लोग आज भी भारत में हैं। डा० अधीरजी ने वर्तमान भारत की गरीबी का कितना सजीव चित्रण किया है—

रोता मानव आता है,
अपने साथ पत्नी का मंगल-
सूत्र वेचने लाता है।

संस्कार संपन्न हमारे देश की संघर्षात्मक स्थिति यही है। स्वतंत्र भारत के घोर अत्याचारों एवं अनीतियों का जीवन्त चित्र 'यह कैसी आजादी है ?' कविता में अंकित किया गया है। आर्थिक विषमता का चित्रण कितने मार्मिक ढंग से कवि ने किया है—

बेकारी को फुटपाथों की खाक
छानते देखा है,
निर्धनता की जूठी पत्तल नोंच
चाटते देखा है।

ये पंक्तियाँ निराला की प्रगतिवादी विचारों को व्यक्त करनेवाली निम्न लिखित पंक्तियों से क्या कम है—

चाट रहे झूठी पत्तल वे भी सड़क पर
खडे हुए
और झपट लेने को उनसे कुत्ते भी हैं
अडे हुए।

दहेज प्रथा की बुराइयों को व्यक्त करने के लिए कवि ने जिस प्रतीकात्मक शैली को अपनाया है वह कविता की आधुनिक प्रवृत्ति का एक दृष्टान्त है—

इधर तराजू के पलडों में दुल्हों को
तुलते दे[खा]
उधर अभागिन कन्याओं को
मन ही मन घुलते देखा

राष्ट्रीयता के गायक कवि ने 'माँ ... भाषा पर अधिकार नहीं', 'प्रेम का गुं[जन] है हिन्दी', 'तुम्हारी राजभाषा है' हि[न्दी] को अपनाओ रे, आदि कविताओं [के] माध्यम से राष्ट्रभाषा की महती सं[भावना] एवं शक्ति पर बल दिया है। कवि [के] ही शब्दों में—

"भाषा नहीं, भावना हिन्दी" अ[र्थात्] हिन्दी भारत की एक भाषामात्र न[हीं] समस्त भारतवासियों के मन की भावना [है]।

इस संग्रह का 'वन्दे मातरम्' शी[र्षक] गीत तमिल के महाकवि सुब्रह्मण्यभार[ती] के तमिल गीत का भावानुवाद है। 'भारत माँ का लाल जवाहर' में कवि [ने] नेहरुजी के गुणों का स्मरण कर उन[के] प्रति आदर-सम्मान प्रकट किया है। 'अवतारी बापू' कविता में राष्ट्रपिता [को] को एक अवतार पुरुष मानकर उन[पर] विश्वास प्रकट किया है। 'अनेकता [में] एकता' भारत की संस्कृति की विशेष[ता] है जो 'ऐक्य गान' में गुंजित है। 'तिरुक्कुरल' ग्रंथ के रचयिता त[मिल] भाषा के लोक संपूज्य संतकवि तिरुवल्लु[वर] के प्रति आदर भाव व्यक्त करते [हुए] कवि ने उनकी अध्यात्म साधना [की] प्रशंसा की है। कवि ने तुलसीदास [को] सन्त और उनकी कृति को 'मध्ययुग [का] अनुपमेय कालजयी इतिहास' माना है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी के बीस सूत्री कार्यक्रमों के आधार पर रचित 'बीस सूत्री संदेश' शीर्षक कविता एक नवीन प्रयोग है । भारत के इतिहास की महत्वपूर्ण राष्ट्रीय एवं वैज्ञानिक प्रगति का अंकन 'दस बरसों की बात' नामक कविता में है ।

'यह केरल है', 'तमिल भूमि की जय जय', तमिलनाडु को नमन करें' आदि कविताओं में दक्षिणभारत के प्रति कवि की रागात्मिकता व्यक्त हुई है । केरल तो कवि की दृष्टि में भारत का एक प्रान्त मात्र नहीं बल्कि हमारे राष्ट्रध्वज के हरे रंग का प्रतीक है, यथा—

यह भारत का प्रान्त केवल नहीं है
यह हमारी गर्व-पताका के
हरे रंग का प्रतीक सकल है ।

इन साठोत्तरी कविताओं में कवि की मौलिक सूझ हम देख सकते हैं । प्रस्तुत संकलन की कुछ कविताओं के शीर्षक एवं वर्ण्य विषय छायावादी भावधारा की याद दिलाते हैं वहाँ भी प्रस्तुतीकरण की शैली कवि की नितान्त अपनी है । हमारे यहाँ वीरगाथाकाल से ही राष्ट्रीय स्वर प्रधान कविताओं की एक परम्परा विद्यमान है जिसमें मैथिलीशरण गुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी, निराला, सुभद्रा कुमारी चौहान ,दिनकर आदि प्रमुख हैं । डा० अधीरजी की प्रस्तुत कृति के प्रकाशन के साथ उसमें एक और कड़ी जुड़ गई । देश की समसामयिक समस्याओं को ध्यान में रखते हुए लिखी हुई इन कविताओं में साहित्य की अधुनातन प्रवृत्तियों पर भी ध्यान दिया गया है । इसकी अधिकांश रचनाएँ छन्दोबद्ध हैं, एक आध स्वच्छन्द रचनाएँ भी हैं । प्रायः सभी कविताओं में मानवता, एकता, सत्य, अहिंसा, दया आदि तत्वों को प्रधानता दी गई है । प्रस्तुत काव्य संग्रह का नाम 'देश केलिए' वर्ण्य विषय की दृष्टि से सार्थक है । कवि की राष्ट्र भक्ति का प्रबल प्रमाण हेतु इस काव्य संग्रह का महत्व जरूर है । देश के प्रति रागात्मिकता को प्रगाढ़ बनाने में यह कृति सफल है ।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केरल हिन्दी प्रचार सभा का सर्वश्रेष्ठ साहित्यिक प्रकाशन !

महाकवि उल्लूर

व्यक्तित्व एवं कृतित्व

मलयालम के विख्यात महाकवि उल्लूर एस० परमेश्वर अय्यर की शताब्दी १९७७ में मनायी गयी। उस सिलसिले में प्रकाशित संग्रहणीय ग्रंथ। इस ग्रंथ के द्वारा मलयालम के एक महाकवि को हिन्दी भाषा द्वारा हिन्दी भाषियों के सम्मुख प्रस्तुत करने का सर्व प्रथम प्रयास।

शुद्ध छपाई, आर्ट पेपर कार्ड पर अत्याकर्षण बहुरंग आवरण (महाकवि का चित्र) टकाऊ सफेद कागज़, फिर भी मूल्य १५ रुपया मात्र।

संपर्क करें,

मंत्री
केरल हिन्दी प्रचार सभा
तिरुवनन्तपुरम-१४

फोन : ६१३७८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टागोर शताब्दी हॉल, तिरुवनन्तपुरम में १३ जून १९८२ को आयोजित सम्मेलन में केरल के मुख्य मंत्री श्री० के. करुणाकरन ने केरल संगीत नाटक अकादमी के १९८१ के पुरस्कार वितरित किये। प्रस्तुत चित्र में विख्यात अभिनेत्री श्रीमती लीला पणिक्कर मुख्य मंत्री से पुरस्कार ग्रहण कर रही हैं। श्रीमती लीला केरल हिन्दी प्रचार सभा के केन्द्रीय हिन्दी महाविद्यालय, तिरुवनन्तपुरम की पूर्व विद्यार्थिनी हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Reg. No. KL/TV(S)/25
July 1982

Keral Jyoti

Vol. XVII-
Price : Re.

A monthly Publication of Kerala Hindi Prachar Sabha

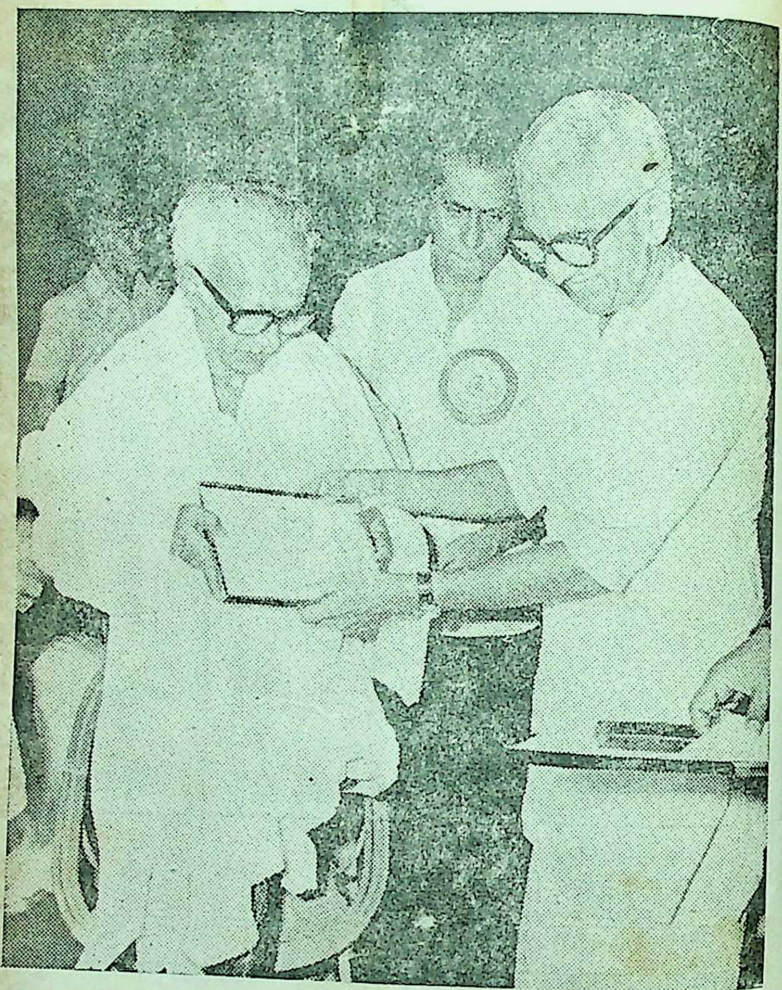

केरल संगीत नाटक अकादमी का १९८१ का नाटक का फेलोशिप विख्यात नाटककार, अभिनेता एवं सामाजिक कार्यकर्ता श्री० तोप्पिल भासी को मिला। फेलोशिप प्रदान कर रहे हैं केरल के मुख्यमंत्री श्री० के. करुणाकरन।

केरल हिन्दी प्रचार सभा, तिरुवनन्तपुरम–६९५ ०१४ केलिए श्री० एम. के. वेलायुधन नायर द्वारा प्रकाशि
मुद्रक: राष्ट्रवाणी मुद्रणालय, केरल हिन्दी प्रचार सभा, तिरुवनन्तपुरम–१४. सम्पादक: के. जी. बालकृष्ण पि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केरल ज्योति

25-8-82
FREE
(8)

हमारे राष्ट्रपति ज्ञानी ज़ैल सिंह

केरल हिन्दी प्रचार सभा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केरल ज्योति

* **प्रधान संपादक**
प्रो० पी. जे. जोसफ़

* **संपादक**
श्री० के. जी. बालकृष्ण पिल्लै

* **सह संपादक**
श्री० आर. सुकुमारन नायर

* **संपादक मण्डल**
श्री० वी. के. गोपालन नायर
प्रो० एम. जनार्द्दनन पिल्लै
श्री० के. वी. कृष्णनकुट्टी
श्री० एम. के. वेलायुधन नायर

❀

* विज्ञापन दर

		मासिक		वार्षिक	
आवरण पृष्ठ ४	रु.	५००	००	५०००	००
आवरण पृष्ठ २ एवं ३	रु.	४००	००	४०००	००
साधारण पृष्ठ पूरा	रु.	३००	००	३०००	००
साधारण पृष्ठ ½	रु.	१७५	००	१७५०	००
साधारण पृष्ठ ¼	रु.	१००	००	१०००	००

❀

* **पत्र व्यवहार का पता :**
मंत्री,
केरल हिन्दी प्रचार सभा
तिरुवनन्तपुरम–६९५ ०१४
केरल

तार :–"जय हिन्दी"
फोन : ६१३७८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

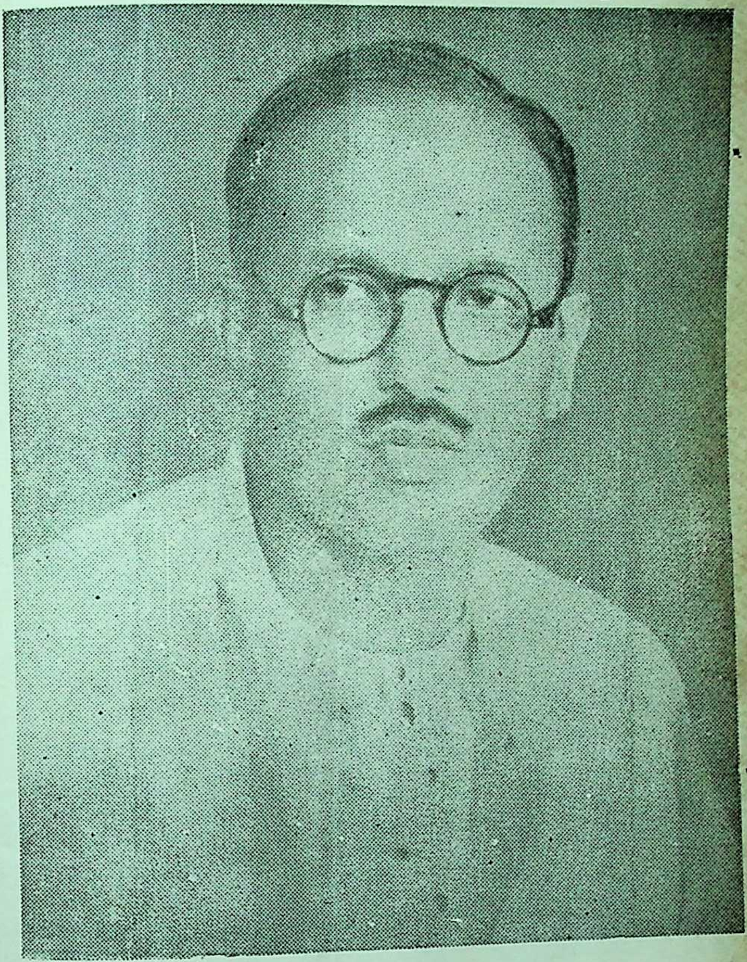

केरल हिन्दी प्रचार सभा के संस्थापक एवं प्रथम मंत्री

स्व० के. वासुदेवन पिल्लै

जिन का बीसवां मृत्युदिवस २५-७-८२ को मनाया गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुष्प: १७

केरल ज्योति

दल : ५

अगस्त १९८२

सांस्कृतिक जागरण की मासिक पत्रिका.

संपादकीय

त्रिभाषा सूत्र में शिथिलता क्यों?

बडे विचार मंथन के बाद बहुभाषी भारत की भाषा समस्या को सुलझाने के लिए एक उपाय निकाला गया था—त्रिभाषा सूत्र। सिद्धान्त के रूप में यह बहुत सुन्दर लगा और सब के लिए स्वीकार्य लगा।

पर जहाँ व्यवहार की बात आयी इस में कई तरह की विकृतियाँ आ गयीं। मातृभाषा के अध्ययन को सब जगह उचित प्रमुखता मिली। पर दूसरी और तीसरी भाषा के संबन्ध में देश के विविध प्रान्तों ने विविध नीतियाँ अपनायीं। हिन्दी भाषी प्रान्तों में कहीं कहीं अंग्रेज़ी बिलकुल उपेक्षित हो गयी और तीसरी भाषा के नाम पर नाम मात्र की संस्कृत सिखायी जाती रही। हिन्दीतर आधुनिक भारतीय भाषा का विशेषकर दक्षिण की किसी भाषा का अध्ययन बिरले ही किसी प्रान्त ने अपनाया।

हिन्दीतर प्रान्तों ने भी ऐसी ही शिथिलता हिन्दी के अध्यापन में कर दी। कहीं हिन्दी का पर्चा १०० अंक का रहा, कहीं ५० अंक का कर दिया और कहीं हिन्दी को पाठ्यक्रम से ही अलग कर दिया गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस अंक में

रस एवं ध्वनि का नवीन मूल्यांकन 3
प्रो० सेवक वात्स्यायन
डा० कुमारी आशा कपूर
रास्ते का मोड 9
पी. कृष्णकुमार
देख कबीरा रोया—उद्घाटन 11
कृकु
दो कवितायें 14
डॉ० बपुगौंडा पाटील
देश केलिए'—मेरी दृष्टि में 16
साहित्वारिधि श्री० वृन्दान दाल
मैं हिन्दी के लिए जीता हूँ ! 19
विद्याकर यादव
गठरी 20
डॉ० वी० गोविन्द शेनाय
पाँच जापानी कवितायें— 21
१. श्याम पट्ट
२. ज्ञानोदय
३. लाल फल/रोगी
४. पत्थर
५. गरीबी की वाणी
कर्णभूषणम् 26
मूल: महाकवि उल्लूर
अनुवाद : कवियूर शिवराम अय्यर
तितली रानी 29
डॉ० विश्वनाथ शुक्ल
शायद नहीं 31
डॉ० एन. जी. देवकी
स्व० के. वासुदेवन पिल्लैजी के आदर्श ग्रहण करें 32
झरोखा 35
पाठकों के पत्र 38

यह स्थिति न जाने देश को कहाँ पहुँचा देगी। भावात्मक एकता ऐसी स्थिति में कैसे सुदृढ हो सकती है?

हमारे सामने रूस का उदाहरण है। रूस भी एक बहुभाषी देश है। पर वहाँ के स्कूलों में प्रान्तीय भाषा के साथ संपर्क भाषा रूसी को भी समान प्रमुखता दी गयी है। इस नीति में कोई प्रान्त आनाकानी नहीं कर सकता।

देश के हित में यह आवश्यक है कि त्रिभाषा सूत्र के कार्यान्वयन में जो शिथिलता आयी है उसे ठीक किया जाये और भाषाध्ययन नीति में ऐसा सुधार लाया जाये जिस से हर प्रान्त के विद्यार्थियों पर समान भाषा भार पडे और उन्हें तीनों भाषाओं में आवश्यक योग्यता पाने का पर्याप्त प्रशिक्षण मिले। न हिन्दी प्रान्तों में हिन्दीतर भाषाओं की उपेक्षा हो और न हिन्दीतर प्रान्तों में हिन्दी की उपेक्षा हो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रस एवं ध्वनि का नवीन मूल्यांकन

प्रो० सेवक वात्स्यायन
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
क्रा० चर्च कालेज, कानपुर

डा० कुमारी आशा कपूर
रूड़की विश्वविद्यालय, रूड़की

आज नवीन युगबोध के बीच यह शंका उठाई जाती है अथवा जा सकती है कि काव्य के शाश्वत् मूल्य, या उपादान रस एवं ध्वनि की क्या अनिवार्यता या आवश्यकता है ? आज आदर्श के स्थान पर यथार्थ, और जीवन की संकुल परिस्थितियाँ काव्यादर्श बन गई हैं। अतएव, इन परम्परागत सिद्धान्तों की नवीन परिप्रेक्ष्य में व्याख्या करना अत्यन्त आवश्यक है । अन्यथा 'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्', 'रस सकल प्रयोजन मौलिभूतम्' 'काव्य का लावण्य' आदि, काव्य की शास्त्रीय मान्यताएँ निरर्थक हो जाएँगी ।

"उपलब्ध प्रमाणों के आधार पर यह अनुभूति हुई है कि साधना चिन्तन और व्यवहार में आनन्द ही जीवन का सर्वोपरि मूल्य सदा नहीं तो किन्हीं विशेष युगों में अवश्य समझा गया है । भारत भूमि पर तो आनन्द के रूप में जीवन का सत्य, अनुभव प्रयोग एवं परीक्षण द्वारा यही पाया गया हैं—रसो वैस: तमसो मा ज्योतिर्गमय । इसलिए यहाँ के जीवन के लिए यही चरममूल्य सत्य है और स्वभावत: साहित्य में भी यही प्रतिष्ठित हुआ है ।" (जयशंकर प्रसाद: वस्तु और कला पृष्ठ ७८-७९ डा० रामेश्वरलाल खण्डेलवाल)

आधुनिक जीवन आनन्दरहित होने के कारण अब रस की सत्ता नहीं रह गई है इसकी अपेक्षा जीवन का रस एवं आनन्द जो पृथ्वी से लुप्त हो गया है उसे पुन: उत्पन्न करना होगा—इस दृष्टि से काव्य के इस चिरन्तन मूल्य की पुनर्व्याख्या की गई, जो आज की परिस्थितियों के सर्वथा अनुरूप एवं उपयुक्त है ।

समय एवं परिस्थिनियों के परिवर्तन के अनुसार साहित्यिक प्रतिमान भी परि-

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

र्वातत होते रहते हैं किन्तु, शाश्वत् प्रतिमान का सर्वथा तिरस्कार अथवा परित्याग साहित्य या काव्य की सार्वकालिकता, सार्वदेशिकता एवं सार्वजनिकता में बाधक हो सकता है । इस लिए युगीन परिस्थितियों के अनुसार उनका आग्रहण अभिनंदनीय एवं स्तुत्य है ।

मनोवैज्ञानिक आधारभूमि पर रस सिद्धान्त की आधुनिक व्याख्या की गई है—"पाठकों में अन्तर्निहित रसबोध को कवि उद्बुद्ध करता है · उसके भीतर से हम अपना ही परिचय पाते हैं । कवि कल्पना का इन्द्रजाल वस्तुजगत को पाठक की मनोरम मूर्ति में प्रकट कर, पाठक के भीतर पाठक की ही निगूढ़ सत्ता का साक्षात्कार करता है । पाठकों के प्र णों की अबाध स्फूर्ति को उसके चित्त के चमत्कार के रूप में प्रस्तुत कर कवि पाठक के भीतर जो उदार "मैं" है उसे मुक्त कर देता है । यह आत्मोपलब्धि ही काव्य का प्रयोजन है । रस आत्मोपलब्धि है और रसानुभूति के समय "मैं" का साधारणीकरण हो जाता है । (भारतीय काव्यसिद्धान्त, पृ० १०१, श्री मोहितलाल मजुमदार, सं० आचार्य काका कालेलकर डा० नगेन्द्र) ।

इसके अनुसार काव्य का प्रयोजन आत्मोपलब्धि तथा रसानुभूति द्वारा भावनाओं का निर्वैयक्तिकरण न होकर "मैं" का साधारणीकरण होता है । पाठक की अन्तर्निहित रस क्षमता का बोध काव्य द्वारा होता है । दूसरे शब्दों में, काव्य वर्णित जीवन चित्र से अत्यन्त सरल सहज एवं तीक्ष्ण सत्यबोध प्रकाशित होता है और इसीलिए आनन्द प्राप्त होता है । सत्य की मूर्ति सुन्दर होती है—सौन्दर्य तथा आनन्द एक ही कारण से उत्पन्न होते हैं । सौन्दर्य वही है जो रसानन्द को प्रस्तुत करता है । अतः कवि द्वारा काव्य में प्रकाशित सत्य या सौन्दर्यबोध अथवा आनन्द रसानुभूति ही है ।

किन्तु इस पुस्तक के लेखक का दृष्टिकोण काव्य प्रयोजन के संबन्ध में सर्वथा भिन्न है । प्राचीन मान्यता के अनुसार, रस सृष्टि काव्य का मुख्य प्रयोजन है, नवीन मान्यता के अनुसार कवि काव्य की सृष्टि करता है रस सृष्टि नहीं अर्थात् कवि का मुख्योद्देश्य काव्य रचना करना है ।

मजुमदार के अनुसार— रस एक निर्विशेष पदार्थ है किन्तु काव्य प्रेरणा इतनी अधिक विशिष्ट और सुनिर्दिष्ट है कि वह प्रत्येक काव्य में एक स्वकीय विलक्षण रूप में सुपरिस्फुट हो उठती है । काव्य सृष्टि में कवि की एकमात्र भावना यही रहती है कि एक अति अपूर्व व्यक्तिगत उपलब्धि को किस प्रकार यथार्थ रूप मे साकार रूप प्रदान किया जावे इसी में उसका आनन्द समाया रहता है । इस साधना में सफलीभूत होना ही सृष्टि है ।··· कवि इस सृष्टि द्वारा आनन्दित होता है । और दार्शनिक विशेष को निर्विशेष बनाकर आनन्द प्राप्त करता है (वही पुस्तक, पृ० ११२–११३)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वस्तुतः रसास्वाद व आनन्दोपलब्धि तो सहृदय को होती है न कि कवि को। कवि सहज भावेन कल्पना का आश्रय लेकर काव्य सृजन में लीन रहता है। उस काव्य सृष्टि से उत्पन्न रसानुभूति के आनन्द का अनुभव पाठक को होता है विशेष अनुभूति को सामान्य रूप में प्रकट करने की क्षमता में ही रचना का तथा कवि की सफलता निहित है।

अभिनवगुप्त की मान्यता के अनुसार रसानुभूति का स्वरूप आनन्द घन संवेदन है। यह भेद रहित आनन्द स्थायी भाव से रंजित होकर भिन्न-भिन्न रसरूपों में अनुभूत होता है। इन भेदों में अन्तर्निहित रसतत्व भेदरहित एक अद्वितीय आनन्दानुभूति जिसका स्वरूप है—ऐसा रसतत्व एक ही हैं। यदि यह तथ्य स्वीकार कर लिया जाए तो आज के काव्य पर रस विशेष का लेबिल नहीं लगाना पड़ेगा। (भारतीय काव्य—सिद्धांत पृ० २३२-३३ रामप्रसाद बक्षी)

भाव व्यंजना ही रस-सिद्धांत की यथार्थता है। भावप्रधान आधुनिक काव्य के आधार पर यही आवश्यक है कि उसमें रसास्वाद हो, अनुभव किए गए काव्यानन्द में मूलरूप में व्यंग्य स्थित भाव हो— चाहे उसे काव्यशास्त्रों में स्वाकृत संज्ञाओं में से कोई नाम न दिया जा सके। रस के इस रूप को स्वोकार कर लेने पर आधुनिक काव्य भी रस प्रधान कहा जा सकता है। भाव रूप व्यंग्यार्थ का प्रधान होना इसके लिए आवश्यक माना गया है। जिस काव्य में भावरूप व्यंग्य की चमत्कारपूर्ण स्थिति न हो उसे अन्य काव्य श्रेणियों में रखा जा सकता है परन्तु अकाव्य कहकर बहिष्कृत नहीं किया जा सकता है।

आधुनिक युग में रस सिद्धांत की प्राचीन व्याख्या को उसी रूप में स्वीकार करना कठिन है। युगीन परिप्रेक्ष्य के आधार पर उसमें संशोधन एवं परिष्कार की आवश्यकता है। इस व्यापक सिद्धान्त का पूर्ण तिरस्कार करना भी असंभव है। अतएव आज के भावबोध के आधार पर उसमें आवश्यक संशोधन किया गया।

रसवादी आचार्य लक्ष्मी नारायण सुधांशु ने वर्तमान परिस्थितियों के अनुसार रस—विवेचन किया है—"वे काव्यास्वाद के मूल में सौन्दर्यतत्व की सत्ता स्वीकार करते हैं। यह सौन्दर्य तत्व…काव्य सृजन की आवश्यक भूमि काव्यानुभूति को जन्म देता है जिसे सौन्दर्य भावना का अभिधान देते हैं।" (काव्य में अभिव्यंजनावाद पृ० ८२)

किन्तु सौन्दर्यानुभूति से उत्पन्न काव्यानुभूति, रसानुभूति से भिन्न है। काव्यानुभूति कवि अथवा कलाकार में तथा रसानुभूति की स्थिति पाठक में होती है। इसके अतिरिक्त सौन्दर्य-भावना से प्रेरित काव्यानुभूति प्रमाता को रसानुभूति में मग्न नहीं करती, बल्कि रसानुभूति प्रमाता की रागात्मक वृत्तियों का प्रतिफल है जो काव्य द्वारा आस्वाद्य बन जाती हैं। यह विषयीगत आनन्द है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कवि अपना भाव पाठक को नहीं देता बल्कि वह संकेत से पाठक या श्रोता के ही हृदय के भाव को संचरित कर देता है ।

काव्यास्वादन में कवि का योगदान मात्र इतना ही है कि वह प्रमाता के भावों को उत्तेजित कर देता है, कवि किसी के हृदय में नए भाव नहीं भरता बल्कि वह केवल अनुभूत भावों को ही जाग्रत तथा उत्तेजित करता है । कवि अपना भाव पाठक को नहीं देता बल्कि वह संकेत से पाठक या श्रोता के ही हृदय के भाव को संचरित कर देता है ।

(जीवन के तत्व और काव्य के सिद्धान्त पृ० ४९–५०, डा० लक्ष्मी नारायण सुधांशु)

इस आधार पर काव्यानुभूति का कवि, तथा रसानुभूति का पाठक अथवा श्रोता अधिकारी है—दोनों भिन्न दशाएँ हैं, अतः तादात्म्य, तदाकारता एवं तल्लीनता की दशा का, अथवा कवि एवं पाठक की भावना का सामान्य अवबोधन आदि स्थिति संभव नहीं है । रस दशा से तात्पर्य है कि कवि एव पाठक के बीच अवरोध हटाकर पाठक को सामान्य भावभूमि पर अवस्थित करना । किन्तु आज का कवि युगदृष्टा बनकर समाज का चित्रण करता है । उसका अध्ययन करके उससे अनुभव प्राप्त करना तथा जीवन के साथ ग्रहण करना पाठक का कार्य है ।

इस दृष्टिकोण के आधार पर रस सिद्धान्त का पुनर्स्थापन एवं पुनर्व्याख्या की गई है । रस सिद्धान्त के समान ध्वनि सिद्धान्त को भी आधुनिक युग बोध के सन्दर्भ में देखना अभीष्ट होगा ।

"नवीन काव्य जिस नैसर्गिक अदम्यता को लेकर आया है, उसमें यह संभव नहीं है कि वह परम्परा प्राप्त ध्वन्यात्मकता का ही अनुसरण करता चले । व्यंजना की प्रणाली में यदि कुछ विशेषता है तो यही कि उसमें काव्य को मूर्त आधार अधिक प्राप्त होता है ।··· व्यंजना के अतिशय्य से काव्य चातुरी बढ़ती है, जो प्रत्येक अवसर पर अभीष्ट नहीं कही जा सकती है ।··· ये अभिव्यक्ति की प्रणालियां मात्र हैं जो काव्यवस्तु को देखते हुए बहुत छोटी चीज़ है ।" (आधुनिक काव्य: रचना और विचार, पृ० १३८-१३९, आचार्य नंददुलारे वाजपेयी

विज्ञान एवं चिन्तन के युग में ध्वनि शैली का आश्रय ग्रहण करना कठिन समझा गया है । अतः इस युग में लक्षणा सहित ध्वनि को महत्व दिया गया । छायावादी युग में लाक्षणिक मूर्तिमत्ता मानवीकरण तथा प्रकृति पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चेतना का आरोप आदि को इसी के अन्तर्गत सम्मिलित किया गया है।

........, तथ्य कथन से हटकर लक्षणा और ध्वनि के द्वारा कोई जीवन्त व सूक्ष्म सत्य उद्घाटित किया जा सकता है। ......काव्य में ध्वनि या व्यंग्य ही चमत्कार होता है। लक्षणा और ध्वनि की पद्धति ही साहित्य की अपनी निजी पद्धति है"। (जयशंकर प्रसाद: वस्तु और कला, पृ० ३९७, डा० रामेश्वर लाल खण्डेलवाल)

लक्षणा और ध्वनि का यह नवीन मूल्यांकन है। रस प्राप्ति में लक्षणा से प्राप्त लक्ष्यार्थ, लक्ष्यार्थ में प्रयोजन रूप निहित व्यंग्यार्थ, व्यंजना शक्ति द्वारा प्राप्त होता है, इस प्रकार लक्षणा भी ध्वनि के सामान महत्वपूर्ण है। प्रयोजनवती लक्षणा अत्यन्त गूढ़ व्यंग्य की जननी है जो पाठक को कल्पना से उत्तेजित कर रस विभोर कर देता है, ध्वनि के सौन्दर्य की यही पराकाष्ठा है। ध्वनि के इस आधुनिक मूल्य को आवश्यकता को स्पष्ट करते हुए समीक्षक का कथन है,—"सामयिक परिस्थितियों में ध्वनि सिद्धान्त का मूल्य, ध्वनि की स्वाभाविक सीमाओं के साथ, आज नवीन ढंग से समझने का प्रयत्न किया जा रहा है, जो साहित्य के विकास की दृष्टि से एक स्वस्थ लक्षण है।" (ध्वनि सिद्धांत का सामयिक मूल्य—आलोचना २६ "लेख" डा० हरद्वारीलाल शर्मा)

"ध्वनि सिद्धान्त ने काव्य की सौन्दर्यानुभूति को शब्दों के स्थूल अर्थ से ऊपर उठाया। ......शब्दों का आघात सहृदय के मानस में विविध-भाव-तन्तुओं को झंकृत करता है। ...... सहृदय की कल्पना शक्ति जाग्रत होती है और इसके आलोक में अर्थ का इन्द्रधनुष उसे दृष्टिगोचर होता है। ध्वनि सिद्धान्त मनोवैज्ञानिक कसौटी पर खरा उतरता है, इसलिए इस युग में भी इसका महत्व है।" (काव्य में सौन्दर्य और उदात्त तत्व, पृ० ५४ शिवबालकराम)

रस निष्पत्ति को वर्तमान सन्दर्भ में तथा रसोपलब्धि जन्य आनंद को ब्रह्मानन्द सहोदर से भिन्न मनोवैज्ञानिक आधार पर ग्रहण किया गया है।

उत्तर छायावादी काव्य अर्थात् प्रगतिवादी एवं प्रयोगवादी काव्यों में इसी कारण इन दोनों सिद्धान्तों की नवीन व्याख्या के सन्दर्भ में व्याप्ति दृष्टिगत होती है। प्रगतिवादी काव्य मार्क्सवादी चेतना पर आधारित होने के कारण "सामूहिक भाव" को प्रतिबिम्बित करने वाले काव्य को श्रेष्ठ मानता है। विशाल जन-साधारण वर्ग के सामूहिक भाव का काव्य में निरूपण अथवा लोक हृदय की पहचान रखनेवाले कवि की रचना की संवेदनीयता, पाठक के भावोत्तेजन करने की क्षमता पर साधारणीकरण को स्वीकार किया गया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रस निष्पत्ति की वर्तमान सन्दर्भ में तथा रसोपलब्धि जन्य आनंद को ब्रह्मानन्द सहोदर से भिन्न मनोवैज्ञानिक आधार पर ग्रहण किया गया है। इस प्रकार सिद्धान्तगत निरूपण के स्थान पर व्यवहार रूप में प्राप्त होता है। भाव का व्यंग्य रूप में व्यंजित होना ही वर्ग संघर्ष पूर्ण काव्य में रस और ध्वनि के आग्रह को व्यक्त करता है।

बौद्धिकता प्रधान प्रयोगवादी कवियों पर रसात्मकता से पलायन करने का आरोप है। वस्तुत: यह कविता यथार्थ को उपस्थित करतो है, मानव हृदय की विविध स्थितियों को प्रकट करती है, जोवन के वास्तविक चित्र को विषय रूप में प्रस्तुत करती है। किन्तु, इस अनुभूत दशा को कवि अपने काव्य द्वारा पाठक की विचार भूमि तक संप्रेषित करके संकेत द्वारा भावोत्तेजन कर देता है और पाठक अपने जोवन का चित्र प्राप्त करके खो जाता है। इस प्रकार भावों को संप्रेषित करने में तो प्रयोगवादी कवि सफल है परन्तु, रस निमग्न करने की अपेक्षा प्रभाव उत्पन्न करने की प्रवृत्ति-अधिक है। प्रभाव उत्पन्न करने के लिए जिन नवीन प्रतीकों एवं संकेतों का आश्रय इस युग के कवि ने लिया है, उनके द्वारा पाठक आनन्दित होने की अपेक्षा मानसिक व्यायाम अधिक करता है इसके पक्ष में यह तर्क दिया जाता है कि बुद्धिवादी वैज्ञानिक युग में जीवन सत्य की समुचित अभिव्यक्ति बौद्धिकता से ही सम्भव है। इसो कारण "बुद्धि-रस" की कल्पना की गई। "प्रयोगवादी कविता में भावना है, किन्तु हर भावना के सामने एक प्रश्न-चिह्न लगा हुआ है, इसी प्रश्नचिह्न को ......बौद्धिकता कह सकते है।" (हिन्दी साहित्य: युग और प्रवृत्तियां पृ० ५१९, धर्मवीर भारती, डा० शिवकुमार शर्मा)

अतएव उभय सिद्धान्तों का आधुनिक काव्य में पुनस्थापन अवश्य हुआ है, किन्तु नवीन व्याख्या के सन्दर्भगत होकर ही कहा जा सकता है। जहाँ रस अपनी रसात्मकता, आनन्दानुभूति एवं तल्लीनता को छोड़ देता है तथा ध्वनि अपनी लावण्यता एवं विच्छत्ति का परित्याग कर रमणोयता से बहुत दूर चली जातो है। इस प्रकार रस चमत्कृति का पर्याय तथा ध्वनि अपरिष्कृत व्यंग्य का पर्याय बनकर निरूपित हुई है।

❀

अगणितम

नल्लेप्पल्लि सुब्रह्मण्य शास्त्री (१८२९–१८८८) द्वारा विरचित सुप्रसिद्ध ज्योतिष ग्रंथ है 'अगणितम'। ग्रहों की हजार वर्ष तक की स्थिति गति समझने में यह ग्रंथ सहायक है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रास्ते का मोड

पी. कृष्णकुमार
प्राचार्य
श्रीव्यासा कालेज,
वडक्कांचेरी, केरल

गुलामी के अँधेरे पिंजरे से निकल कर
मेरा स्वर्ण-देश डग भरता गया उस दिन ।
कदम बढ़ाता जाता है आज भी ।
बढ़ जावे तो ठहरेगा क्या ?
क्या गुमराह हो जाएगा ?
क्या दायें बायें देखेगा ?
चलते चलते पहुँचा कहाँ ?
'आज' की पगडंडी जहाँ बँट जाती है
दो राहों में
हाँ, वहीं, सीधे आगे
इशारे से बुलाते खड़ा है 'कल' ।

एक है विज्ञान की राह
जो मुड़ती है पश्चिम की ओर
जहाँ रक्त सांध्य-मेघ बिछाते रक्तिम
छाँह;
दूसरी है पूरब की राह
जहाँ सत्य कौमुदी आप्लावित करती
संस्कृति की सात्विक-आश्रम की छाँह ।

और सुनाई देती है आवाज पश्चिम से—
आओ, चलो, भर्ती होवें रक्त सेना में
खुशी खुशी गाते चलें ।

इधर आओ, देखो प्रगति विज्ञान की
यहीं बनते बम, यहीं है अध्यात्मविद्यालय ।
उधर चलो तो क्या पावोगे ?
गडरिये छोकरे की घास-फूस की काली
अंधेरी झोंपड़ी ।

सुनते ही यह पुकार
बेहाल हो गया मेरा देश अजान
नहीं सूझती सही राह, फिसलने लगे
कदम,
देखो, दशा मेरे देश की ।
हाँ, सुना है
एक था 'सरदार' इस नाव का;
भीषण तरंगों पर सिर मारती इस
नाव के सिरे पर
जो खड़ा था ।

इस भूमि के पाँव
कानन के काले प्रस्तर में कमनी को देख
सके थे ।
इसके कर-कमलों ने
कोमल मुरली-गान तरंगों से
कामप्रद कला-विलास दिखाये थे ।
क्या वही आज
इस नैशान्धकार को सूचक सांध्य
लालिमा को
सत्य विभात की कनकवर्ण भंगिमा
समझेगी ?

हे विवक ! तेरे हाथ का पलीता
भावी भारत के भोले-भाले पदों के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पथ को रोशन करे।
सिर तो डावाँडोल, हिलता है
झंझा के झोंकों से
और शरीर न जाने पड़ जाये किस
ओर।
पीछे से बुला रहा है इतिहास,
कहता है—
"मेरे ऋषिदेश, चल पूरब की ओर।
गंगा के बहते तेरी प्यास बुझाने को
क्या संगर का बहाया रक्त-सागर
चाहिए ?
इस राह के किनारे हैं बोधिवृक्ष अनेक
जिनके तले बोधोदयानन्द की हवा
तेरे पथश्रम को दूर करे।
इस पथ पर एक एक वल्मीक से
सुनाई पड़े
आदि सर्वात्मारामकल्याणगानालाप।
क्या यह सब कुछ भूलकर तू
चल रहा है दूर पश्चिम की ओर
तोपों से उगलते आग के गोले
निगलने को?
तेवर चढ़ाये क्यों खड़ा है असहाय ?
श्मशान का यन्त्र-संगीत सुनने को?
चाहे विश्वसमर-विजयी हो मानव
पर है केवल छह फुट ज़मीन का
स्वामी
जिसको माप लेती है उसकी छाया
पर मरते तक आप जानता नहीं
मानव।

अनुवादक

पी. जी. कामत, एम० ए०

दयानन्दम,
चेरुमुक्कु,
तृशूर-१०

अगस्त्य मुनि

कहते है कि अगस्त्य मुनि उत्तर भारत से केरल आये और केरल के गिरिजनों की सृष्टि की। यह भी कहा जाता है कि अगस्त्यमुनि ने सारे दक्षिण भारत को अपने अधीन कर लिया था। लोगों का विश्वास है कि उन्होंने केरल में जैत्रयात्रा करते समय जगह जगह आश्रम बनाया था और तप किया था। माना जाता है कि नेय्याट्टिनकरा नामक स्थान में स्थित अगस्त्यमुटि नामक चोटी पर अगस्त्य मुनि आज भी तप कर रहे हैं। तोवाला के अशंभुमला में, कन्याकुमारी के निकट मरुत्वामला में और नागर कोविल में अगस्त्यमुनि की मूर्तियों की पूजा होती है।

इतिहासकारों का अनुमान है कि अगस्त्यमुनि ने दक्षिण भारत के जंगलों को आबाद करने में महत्वपूर्ण योग दिया होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देख कबीरा रोया कक्कु

उद्घाटन

कॉलेजयूनियन की बैठक ने प्रिनसिपल के हित के विरुद्ध यह निर्णय लिया कि कॉलेज के कला मच का उद्घाटन सिने—अभिनेता "क" द्वारा कराया जाए । "क" तो जाने-माने सिने-अभिनेता हैं । चार-पाँच वर्षों के अन्दर ही उसने सिने-जगत् में इतना मान्य स्थान प्राप्त कर लिया जो दशाब्दि, रजतजयन्ति या सुवर्ण जयन्ति के योग्य अभिनेताओं को भी नहीं मिला था । उसका चित्र जब रिलीज़ होता था, तब सिनेमा घरों में विद्यार्थी-विद्यार्थिनियां की लंबो लंबी कतारें स्वयं बन जाती थीं । नवयुवकों के मन को सभी प्रकार से सन्तुष्ट करने-वाले सभी मसाले 'क' के चित्रों में उपलब्ध हैं । निर्माता तो कहाना तैयार कर अभिनेताओं को ढूंढने के बदले 'क' के हितानुकूल कहानी तथा 'डयलोग' तैयार करने के लिए रात दिन एक करने के लिए तैयार रहते थे । इतने त्यागों के बावजूद भी, 'क' के कॉलशीट के लिए त्याग सहना भला समझते थे । निर्माताओं के पास इसके अनुरूप दिग्दर्शक भी रहते थे जो युवजनों की प्रशंसा पाने केलिए जो भी करने से हिचकते न थे । ये निर्माता और दिग्दर्शक जानते हैं कि 'क' के चित्र देखनेवाले युवक है, विशेष कर स्कूल कॉलेजों के छात्र-छात्राएँ । साधारण प्रेक्षक न देखे तो भी नुकसान नहीं होगा । क्योंकि साधारण प्रेक्षक एक बार देखकर संतृप्त या संतप्त होता है । लेकिन युवक छात्र-छात्राएँ पाँच-दस बार एक ही फिल्म देखने से संतृप्त नहीं होते । तो, जो पैसा निर्माण के लिए खर्च किया जाता है उसके दुगुने तिगुने या उससे भी कहीं अधिक मात्रा में हस्तगत होता है । इतना 'पोपुलर' अभिनेता है कि कॉलेजों को कला समितियों में और यहाँ तक कि साहित्य समितियों में भी क' के चित्रों की सर्वांगीण चर्चाएँ आयोजित की जाती थीं । साहित्य समितियों में हस्ताक्षरों के बीच यह उद्घोषित की जाती थी कि कुछ स्वप्नद्रष्टा या सिर-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिरों द्वारा लिखी गयी पुरातन एवं परंपरागत रचनाओं को पढने के लिए, उन पर मनन करने केलिए हम जो समय नष्ट करते हैं वह जीवन का बडा नष्ट है । इसलिए जीवन को सार्थक एवं सफल बनाने के लिए हम उस पुरानी रीति को तोडकर हमारे प्रिय 'क' के चित्रों पर चर्चा करेंगे । इन चर्चाओं में विद्यार्थियों के साथ कुछ अध्यापक भी भाग लेते थे । आकार में, आचार में, भाषा में और वेश में इन अध्यापकों और विद्यार्थियों में व्यतिरिक्तता नहीं थी ।

x x x x

पाँच बज गये ।

कॉलेज के सिंह द्वार पर यूनियन के नेता, विजेताओं के भाव में खडे हैं । दी, हम कार्यक्रम शुरू करेंगे । देर हो रही है । एक दल ने इसका विरोध किया । विरोध का प्रतिरोध हुआ । हल्की सी मुठ भेड हुई । कुछ छात्र बिगडकर लौट गये । उनके पीछे पीछे कुछ छात्राएँ भी ।

साढे छ बजे 'क' की गाडी आती दिखायी पडी । तालियाँ बजीं । पुष्पहार, गुच्छे आदि लेकर यूनियन के नेता गाडी के पास पहुँचे । झट से गाडी से किसी ने कहा — क' रास्ते में नहीं उतरेंगे । वे सीधे मंच पर आएँगे । यूनियन नेताओं ने कहा—हम यहीं 'क' का स्वागत कर जुलूस निकालेंगे ।

फिर उस आदमी ने कहा—देखते नहीं. उनकी तबीयत ठीक नहीं । वे सीधे मंच पर आएँगे ।

आकार में, आचार में, भाषा में और वेश में इन अध्यापकों और विद्यार्थियों में व्यतिरिक्तता नहीं थी ।

विद्यार्थी और विद्यार्थिनियाँ तो इतने अस्वस्थ दीखते थे कि उनमें से प्रत्येक अपने को सब से आगे पाना चाहते थे । उनके हाथों में 'ऑटोग्राफ' भी थे, 'क' का हस्ताक्षर अंकित करने केलिए नये ऑटोग्राफ लेकर आये हैं सभी ।

साढे पाँच को उद्घाटन समारोह प्रारंभ होने वाला है । साढे पाँच भी बज गया । लेकिन 'क' नहीं आये । छः बज गये । तब भी 'क' नहीं आये । कुछ विद्यार्थियों ने कहा कि उन्हें आने

सबने देखा, 'क' अबोध दशा में गाडी के अन्दर लेटे हुए हैं । गाडी सीधे ऑडिटोरियम की ओर चली । दो व्यक्तियों का सहारा लेते हुए 'क' मंच पर पहुँचे । तालियाँ बजीं । 'क' को कुरसी पर बिठाया गया । कैमरा की फ्लैशें कौंधने लगीं ।

कार्यक्रम शुरू हुआ । प्रार्थना केलिए 'क' की विख्यात फिल्म का एक गीत एक छात्रा द्वारा गाया गया । तालियाँ बजीं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुझे कॉलेज से टी. सी. देकर भेज दिया था । और आज—उसी कॉलेज में मैं एक उद्घाटक के तौर पर आ गया हूँ ।

स्वागत भाषण में भाषणदाता ने 'क' के फिल्मी जीवन का और उनकी पॉपुलारिटी का विशद वर्णन किया । तालियाँ बजीं ।

अब उद्घाटन का अवसर आया । तालियों से सारा आन्तरिक्ष मुखरित हुआ । तब भी 'क' कुरसी से न हिले । उनके बदले और एक व्यक्ति माइक्रोफोण के निकट आये । उन्होंने कहा—श्री 'क' की तबियत आज ठीक नहीं है । फिर भी विद्यार्थियों के कला कार्यक्रमों में वे इतने तत्पर हैं कि वे स्वयं यहाँ पधारे हैं ।—फिर तालियाँ बजीं ।

'सोडा'— 'क' से आज्ञा मिली । माइक्रोफोण छोडकर वह सज्जन पीछे गये और कुछ विद्यार्थियों से सोडा लाने को कहा । देखते देखते दर्जनों सोडा बोतलें लायी गयीं । इतने में 'क' ने कहा—तुम जाकर भाषण सुना दो । ये छोकरे मेरे साथ रहेंगे । 'क' का प्रतिपुरुष बनकर वह सज्जन उनका लिखित भाषण पढ सुनाने लगे । 'क' सोडा बोतल खाली करते रहे ।

लिखित भाषण में अन्तिम पंक्ति यह सुनायी गयी—"समय न पाकर भी मैं ने इस सम्मेलन में आने का वचन दिया था । उसी के अनुसार आया हूँ । इसका भी एक कारण है । मैं वर्षों के पहले इसी कॉलेज का विद्यार्थी रहा, केवल एक ही साल केलिए । लेकिन उसी एक ही साल में कॉलेज के अधिकारियों ने मुझे कॉलेज से टी. सी. देकर भेज दिया था । और आज···उसी कॉलेज में मैं एक उद्घाटक के तौर पर आ गया हूँ ।...

तालियाँ बजीं...फिर फिर तालियाँ बजीं...

अल अमीन

अल अमीन नामक अखबार का प्रकाशन सन १९२४ के नबिदिन में आरंभ हुआ । साइमन कमीशन जब भारत में आया तब इस अखबार ने कमीशन का घोर विरोध किया । इसके सशक्त संपादकीयों ने अंग्रेज अधिकारियों को बेचैन किया । सरकार की धमकियों की परवाह किये बिना यह अखबार स्वतंत्रता संग्राम के सेनानियों में जोश फूंकता रहा । १९३४ में इस के प्रकाशन पर रोक लगा दी गयी और संपादक को जेल भेजा गया ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो कवितायें

डॉ० बापुगाँडा पाटील

(१) जीवन की राह में

एक:

घूमने के रास्ते में
खुले मैदान में मैं चन्द
लोगों का क्याबरे जीवन देखता हूँ
झोपडी के बीच
खुली हवा में आग लगाकर
रोटियाँ बनती हैं
भूखे जीव निगलते निगलते तृप्त हो जाते हैं
झोपडी और अट्टालिकाओं के बीच
मैं मापन कार्य करता हूँ
पर अंतर अगाध होकर रह जाता है
हजार तमन्नाओं की आँखें
बस की धूल से मूँद जाती हैं

दो:

दूसरी तरफ
कबरिस्तान में चल बसे व्यक्ति की आत्मा को
शान्ति मिलने की कामना करके कब्र के ऊपर
मिट्टी डालकर असंख्य जन घर लौटते हैं
'उसके अपने दर्द अनंत हजार
उसने अच्छा जीवन बिताथा
जिसको जीते भरपेट खाना नहीं मिला
जीवन चार दिन की चांदनी है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मरने के बाद क्या ले जाता हैं' ?
महल में रहनेवाले लोगों की तरह तरह
की रूढीबातें झोपडियों से पार निकलती हैं

तीन :

और तीसरी तरफ
निम्नसूचित जन जातियों के आयोग
की रचना की जाती है
गरीबों का उद्धार होना चाहिए !
जहाँ कहीं जोर जोर से भाषण सुनने को मिलते हैं
लिखी हुई कविता को संभावना मिलती है ।
पर बातचीत के न बरसनेवाले बादल
आकाश भर रहने से क्या लाभ ?
भूमि-आकाश
झोपडी-अट्टालिका के अंतर
अगाध रहेंगे तो जिहाँ जिंदगी
अनंत दर्द की नर-नाडी की गति सी लगती है ।

(२) उलझ गया हूँ

थोडी देर के लिए
अपनी गुजरी बीती यादो में
अपने को खो देना,
इर्द गिर्द आंतरिक
भावनाओं से मुँह छिपाना है ।
फिर एकदम
यथार्थ की छाया से
खोखला बनना अपनी
मजबूरी की बात है
इसलिए मैं उलझ गया हूँ । ❀

एस. के. कालेज ऑफ आर्ट्स एन्ड कमर्स
तालिकोटि–५८६२१४
जि. बिजापुर, कर्नाटक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

“देश के लिए”—मेरी दृष्टि में

साहित्य-वारिधि श्री० वृन्दावनदास, मधु

“देश के लिए” श्री० इंदरराज बैद “अधीर” रचित कविताओं का संग्रह है। देश की महिमा और गौरव का गान ही इस काव्य-संग्रह की विशेषता है। कविताओं के माध्यम से पाठक के मन-मस्तिष्क में देशभक्ति के भावों का संचार होता है और पाठक अपने देश के गौरव और उसकी महानता से अभिभूत हो जाता है। इसका परिचय डा० एन. जी. देवकी ने गत अंक में दिया था। अब प्रस्तुत है श्री० वृन्दावन दास द्वारा उसी का विवेचन।

डॉ० बैद का काव्य शुद्ध सीधी भाषा में रचित है, लेखक ने जो कुछ लिखा है, निष्ठा और देशभक्ति की भावना से प्रेरित होकर लिखा है। हमें पुस्तक के एक भी छंद में कृत्रिमता कहीं भी दृष्टिगोचर नहीं हुई। लेखक ने जो कुछ लिखा है शुभ भावनाओं और देश प्रेम से प्रेरित होकर-लिखा है। जब लेखक ने हृदय ही खोलकर रख दिया है तो उसकी लिखावट में कृत्रिमता या बनावट तो कोसों तक नहीं मिलेगी। लेखक शुभ पथ का पथिक है, भावों की शुद्धता और देश-प्रेम उसके प्रधान गुण हैं।

भारतवासियों को जगाते हुए कवि कहता है—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आज देश को तन-मन-धन
बलिदान चाहिए
गर्वीले वीर जवानों का तन
अभियान चाहिए
त्याग पुत्र का, वनिता का अभिमान
चाहिए
देशभक्त के प्राण, रक्त का दान चाहिए
अब वीरत्व दिखाओं वीर धरा के वासी
जाग गया भारत है जागो
भारतवासी" ।।

कवि की कल्पना का भारत-वीर कैसा अनोखा है, कैसा वीर है और देवोपम है, इसका अनुमान कवि की इन पंक्तियों से लगाइये—

"धर्रायि आकाश इसे यदि माता का
आदेश मिले,
यह भारत का रक्षक इससे डरकर
भू की नींव हिले ।
तप्त रक्त का टीका करके कफन
बाँधकर चलता है,
अमर भारती का बेटा सिर लिये
हथेली चलता है ।।"

कवि के प्रत्येक शब्द में, प्रत्येक पंक्ति में शौर्य का आह्वान है, देश-सेवा में प्राणों की आहुति देने की उत्सुकता है। देश-सेवा के प्रति कवि का संदेश अत्यंत साहित्यिक एवं प्रेरक है।

अधीरजी के एकता के इस मान से कौन प्रभावित न होगा ! उनका गीत मन को पकड लेता है और उसमें एक प्रकाश भर देता है। उच्छृंखल वृत्तियों को त्यागकर मन सौहार्द और संगठन की

हम कवि की शैली को अंग्रेज़ी के कवि बेकन के समकक्ष ठहराने का लोभ संवरण नहीं कर पा रहे हैं।

भावनाओं की ओर अग्रसर होता है। आज इस प्रकार के सरल सरस साहित्य की कैसी महती आवश्यकता है, यह किसी से छिपा नहीं है।

"अनेकता में एकता, हिंद की विशेषता
एक राह के हैं, मीत, मीत एक प्यार के
एक बाग के हैं, फूल फूल एक हार के,
देखती है यह जमीन, आसमान देखता-
अनेकता में एकता, हिंद की विशेषता !
एक देश के हैं अंग, रंग भिन्न-भिन्न हैं
एक जननि भारती के कोटि सुत
अभिन्न हैं
कोटि जीव बालकों में ब्रह्म एक
खेलता—
अनेकता में एकता, हिंद की
विशेषता !"

कवि ने अनेकता में एकता का दर्शन कैसे सुन्दर ढंग से किया है। हम कवि की शैली को अंग्रेज़ी के कवि बेकन के समकक्ष ठहराने का लोभ संवरण नहीं कर पा रहे हैं।

"यह केरल है" शीर्षक के अंतर्गत कवि ने केरल की जिस महिमा का बखान किया है वह हृदयग्राही है। उत्तर को दक्षिण से जोडनेवाली एक परम राष्ट्रीय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भावना की कड़ी है। कवि लेखक सौमनस्य की इस सर्वांगपूर्ण भावना के लिए धन्यवाद का पात्र है। संगठन का स्वागत और विघटन का तिरस्कार इस युग की सबसे बडी आवश्यकता है।

"यह वह पावन तपोभूमि है शंकर की
कि जिसकी सुरभि
परस चुकी उत्तुंग श्रृंग हिमगिरि का
अतल सिंधु का अंतस्थल भी!
यह मानस
उत्क्रीडित जिसमें
आशानुल्लूर वल्लत्तोल कुरुप की
काव्य उर्मियाँ हैं!
यह मंजुल विरल पटल है
रवि की कलाराधना का
यह दिव्य लोक सौन्दर्य सर्जना का
सत्य-साधना का।

महाकवि सुब्रह्मण्य भारती की कविता के भावानुवाद स्वरूप में दो छंद दृष्टव्य हैं :—

वंदे मातरम् का नारा हम लगाएँगे
जननी जन्म भूमि को माथा नवाएँगे
वंदे मातरम्! वंदे मातरम्!
भेद नहीं होता जाति-धर्म से कभी
छोटा-वडा है न कोई कर्म से कभी
एक हैं, कुलों का भेद हम भुलाएँगे
वंदे मातरम् का नारा हम लगाएँगे।

महाकवि सुब्रह्मण्य भारती कहते हैं—

इसके (भारत के) उत्तर में हिमालय है, दक्षिण में कुमारी अंतरीप हैं और पूरब पश्चिम में लहराते महासमुद्र हैं। वीरों को जन्म देनेवाला सर्व-संपन्न वेदों का श्रेष्ठ देश है यह भारत! इसे देवता मानकर इसकी पूजा करो।

डॉ० इंदरराज बैद "अधीर" का यह ग्रंथ (काव्य) अनेक विशेषताओं से संपृक्त है। इसके अतिरिक्त डॉ० अधीर की अन्य काव्य कृतियाँ हैं जो प्रकाशित हो चुकी हैं। हमें यह कहने में कोई संकोच नहीं है कि श्री० बैद का रचित अन्य कोई साहित्य यदि अप्रकाशित हो तो उसे प्रकाशित कराने के सभी संभव प्रयास किये जाने चाहिए। रचित साहित्य का प्रकाशन लेखक का सबसे बडा संतोष होता है। इससे साहित्य का उत्कर्ष और लेखक को मनस्तुष्टि होती है।

डॉ० इंदरराज बैद "अधीर", मित्रवर डॉ० अंबा प्रसाद सुमन अभिनन्दन-ग्रंथ के संपादक रहे और उनका वह कृतित्व पांडित्यपूर्ण एवं सराहनीय है।

प्रस्तुत काव्य-ग्रंथ में लेखक ने तिरुक्कुरल के अनेक संदर्भ दिये हैं। तिरुक्कुरल तमिल का अति प्राचीन ग्रंथ है। आलवार तमिलनाडु के मध्यकालीन वैष्णव भक्त कवि में जिनकी संख्या १२ थी। आंडाल सुप्रसिद्ध कवयित्री मीरा की भाँति लोक में गोदा देवी के नाम से प्रसिद्ध है। व्रजक्षेत्र के वृंदावनधाम में श्री गोदा विहार नाम से एक महान् संस्था की स्थापना हो चुकी है और वहाँ का गोदा विहार मंदिर अत्यंत भव्य और दर्शनीय है जहाँ सहस्रों दर्शनार्थी प्रतिदिन एवं अनेक उत्सवों पर जाते और दर्शनों का लाभ प्राप्त करते हैं। ★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कविता

मैं हिन्दी के लिए जीता हूँ!

विद्याकर यादव

मेरी अपनी
'धरती'
मेरा अपना
'आकाश'
'हिन्दुस्तान' है
लोग मुझ—
पत्थर के सनम्
काठ के उल्लू
और
माटी के देवता
जो चाहें
कुछ भी कहें
मैं यूँ हीं नहीं चिढ़ता
हैवानों की तरह
क्योंकि मैं—
सच्चा इंसान हूँ।
अपनी धरती का
भगवान हूँ।
अपने आकाश का
महान हूँ
मैं आर्य सन्तान हूँ।
मेरी रगों में
अपनी धरती का
खून है
मेरे जिगर में
अपने आकाश का
अहं है,
मैं अपनी ही
धरती का
नमक खाता हूँ
अपने ही आकाश तक
अपनी ऊँचाई पाता हूँ
मैं यह—
गीत नहीं गाता हूँ
अपनी बात है
आप से बताता हूँ;
मेरे मिज़ाज में
अपनी ही धरती का
बहार है
अपने ही आकाश का
खुमार है
और
मेरी जबाँ में—
'हिन्दी' के लिए
बहुत-बहुत प्यार है
मैं अपनी ही धरती का
पानी पीता हूँ
यक़ीन करें—
अपने ही आकाश तले
मैं हिन्दी के लिए जीता हूँ।

प्रदेशीय अध्यक्ष/संस्थापक
हिन्दी साहित्यकार सम्मेलन,
उ० प्र० (रजि०) कार्यालय-लालगंज,
रायबरेली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लघु कथा

गठरी

डा० वी. गोविन्द शेनाय

भीड का ध्यान अपने पाकटों की ओर जाता है जिससे पाकट-मारों को पाकटों की स्थिति का सही ज्ञान हो जाता है और काम सुगम हो जाता है।

सब्जी मंडी सिटी सैलून और रॉयल रेस्त्राँ की कृपा से सेंट्रल रोड की बगल में कूडे का वैविध्यपूर्ण अम्बार बना है। गाय-भैंसों, कुत्तों और भिखमंगों के कारण वातावरण सचमुच ही व्यस्त रहता है। सडक से सटकर ही पटरा है, जिस में काठ की बकसों में अस्थाई और दोलायमान दूकानें सजती हैं। यातायात की असुविधाओं की वृद्धि में इन का सक्रिय सहयोग है। पास ही बस स्टैंड है जहाँ संगठित मज़दूर यात्रियों से भिडते हैं। पाकटमारों से सावधान रहने की सूचना यहाँ मोटे अक्षरों में लिखी दिखाई देती है। भीड का ध्यान अपने पाकटों की ओर जाता है जिस से पाकटमारों को पाकटों की स्थिति का सही ज्ञान हो जाता है और काम सुगम हो जाता है। स्थानीय हस्तरेखा शास्त्री और ज्योतिषी इसमें विशेष रूप से हाथ बँटाते हैं। एक ओर सिनेमा घर है और दूसरी ओर अस्पताल है और उन में दूरी केवल इतनी ही है कि एक का संगीत दूसरे के क्रन्दन में मिलकर एकाकार हो जाता है। रात को पटरे पर आवारे सो जाते हैं और कूडे पर कुत्ते गुत्थम-गुत्था करते हैं। पटरे पर एक ओर आवारों से तनिक हट कर एक वृद्ध दंपति की गृहस्थी जमती है। पति अंधा और बहरा है और पत्नी मात्र बहरी है। अशांति से दोनों निश्चिंत हैं। पटरे पर नोन तेल, लकडी से लेकर खाने पीने, बिछाने ओढने तक के समग्र सामान सजाये जाते हैं। प्रातःकाल आवारों के उठने के पूर्व ही सब गठरी में समेट लिये जाते हैं और गठरी कूडे पर रख दी जाती है। दोनों प्रात.काल ही भीख मांगने निकलते हैं और रात को लौटते हैं। सब यंत्रवत होता है। आदत सब करवाती हैं। एक दिन रात को जब वे काम से निवृत्त हो पटरे पर लौटते हैं तो वृद्धा देखती है कि कूडे की जगह सूनी हो गई है। दिल से हूक सी निकल जाती है। गठरी की बात वह किससे करे? कूडे पर ही वह उसे सुरक्षित मानती थी, क्यों कि वह उसी का अंग लगती थी। आवारे कहते हैं, कारपोरेशन की कारस्तानी है, कूडा समुद्र को भेंट हो चुका है। पति-पत्नी समुद्र-तट पर पहुंचते है। देखते हैं कि गठरी रेत में सनी निष्प्राण सी पडी है मानों समुद्र के लिए भी वह त्याज्य हो।

प्रिनसिपल, सरकारी आर्ट्‌स एण्ड साइन्स कालेज, कालिकट, केरल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१. श्यामपट्ट

जून तकामी

केरल साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित त्रैमासिक 'साहित्य लोकम' के जनवरी-मार्च १९८२ अंक में जापानी साहित्य संबंधी कई विशेष लेख और कुछ जापानी रचनाओं के अनुवाद दिये गये हैं। इन कविताओं का हिन्दी रूपान्तर उन मलयालम अनुवादों से किया गया है।

अस्पताल के मेरे कमरे में
सफेद कर्टनों पर
सांध्य सूर्य जल रहा है —
जैसे स्कूल की कक्षा हो।
जब मैं पांचवीं में पढता था
मेरे प्रिय अंग्रेजी अध्यापक
शयामपट्ट पर चॉक से लिखे शब्द और वाक्य पोंछ कर
पुस्तकें कांख में दबाये
कंधे पर सांध्य सूर्य लिये
कक्षा छोड चले।
वैसे ही 'यो' कह कर
सब कुछ एक साथ पोंछ डाल कर
मैं जीवन छोड जाऊँगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२. ज्ञानोदय

कोयची किहारा

हिरोषिमा : १९४५ हज़ारों हत स्त्रियों में एक स्त्री के मुख का चर्म अविछिन्न पडा रह गया ज़मीन पर।

मेरा यह मनुष्य मुख नहीं
रूई में ढूँसा गया मांस,
पर रुलाई रोके नही रुकती ।
मेरे दांतों पर युरेनियम लग गया,
मेरे नासारन्ध्रों में प्लूटानियम लग गया,
अन्ध नेत्रों में हीलियम चमका;
विश्व आज विष-वर्षा में धुला एक चट्टान सा लगता है ।
एक मानव प्राणी में बस इतना ही बचा है,
रूई के टुकडे में बची यह वस्तु,
जो सारे भूखंड में बिखर गयी ।
मुझमें बच गयी यह वस्तु,
चीख कर पुकार रही है
अपने चेहरे केलिए ।
देख, ध्यान देकर देख !
एक, युरेनियम-कफन भूमि को तमोमग्न कर देता है
एक हीलियम वर्षा खिडकी और छत की
नीरवता की हँसी उडाता है
रे मनुष्य पुत्र !
तू हर युग में अपने वर्ग की हत्या करेगा ?
सदा केलिए अपने वर्ग की निशेष हत्या करेगा ?
आज जीवन तो रेगिस्तान में रेंगती एक टिड्डी मात्र हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

३. लाल फल/रोगी

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जूरण तकामी

निद्राहीन तरुवृन्द ।
प्रभात में
वेदना आरंभ होते ही
फिर से लाल दाडिम बिखर पडता है ।

★

४. पत्थर

जूरण तकामी

मुझे ठोकर मत लगाना
मुझे स.ने दे यहीं
मुझे तो बस स.ना ही है ।

★

५. गरीबी की वाणी

यामनू ओकूरा

ठंडी रातों में
ठडी वर्षा के समय
हवा जब सीटी बजाती है
ठंडी रातों में
ठंडे ओले जब पडते हैं
ओले जब विलोडित होते हैं
ठंड से बचने का मेरा एक ही एक प्रतिरोध है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

काला नमक चूसना
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
[illegible]
तो भी मै अपनी दाडी पर उँगलियाँ फेरता हूँ
अनशन से दुर्बल मैं
झींकता खाँसता
स्वगत भाषण करता हूँ ।
"मैं एक अच्छा आदमी"—
खोखले शब्द,
पर उन में अभिमान ।
तो भी मैं ठंड से ठिठुर जाता हूँ ।
थोडे से चिथडे और टाट के टुकडे ओढ लेता हूँ
तो भी ठंड रेंग रेंग कर चढ आती है
किंतु, मुझ से भी अधिक गरीब और हैं ।
ठिठुरते भूखे माँ बाप
अश्रुमग्न स्त्रियाँ और बच्चे
ठंडी रातों में वे कैसे जीते होंगे ?
वे कहते हैं कि स्वर्ग और भूमि विशाल हैं
पर मेरेलिये ये तंग हैं ।
वे कहते हैं कि सूर्य-चन्द्र चमकते हैं
मैं उन्हें चमकते नहीं पाता
यह दुःख क्या सभी जनों केलिए समान है ?
या, यह केवल मेरेलिये है ?
न जाने कैसे मैं मनुष्य जन्म पा गया
और फिर,
दूसरों के समान हल चलाता हूँ,
कुतृणों को काट डालता हूँ,
पर मेरे कपडे पतले हैं
नये होने पर भी वे फट कर हवा में हिलते हैं
तरंगों से आलोडित समुद्री पौधों के समान ।
टूटी फूटी झोंपडी में फूस बिछा है
मेरे सिरहाने माँ बाप
मेरे पैरों तले बीबी बच्चे
सब के सब दुख भार से सिकुडे बैठे हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

चूल्हे से धुआँ नहीं उडता
भाजन [illegible] है।
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
बिन दाना पकाये क्या ?
चिडियों से दुर्बल बन चहकते हम
और फिर, कष्ट को कष्टत' बनाने केलिए
तने हुए दुर्बल तंतु को काट डालने
आ रहा है गाँव का मुखिया
सिर पर चाबुक मारता, आवाज़ लगाता,
लगान वसूल करने ।
स्थिति गति ऐसी ?
और यों ही इसे जाने दें ?.
हाँ, हम इस भूमि पर हैं ।
अन्त्य ।
और भूमि केवल निराशा और लज्जा ।
मैं एक पंछी नहीं हूँ
और इसी कारण मुझ इससे मुक्ति नहीं ।

मलयालम से रूपान्तर : के. जी. बालकृष्ण पिल्लै

अगस्टस सीज़र

ई. पू० ३० में रोम के साम्राट अगस्टस ने मिस्र पर कब्जा किया और फिर दक्षिण भारत के साथ व्यापारिक संबंध विकसित किया। कहते हैं कि हवा के सहारे समुद्री नौकायें चालीस दिन में रोम से कोडुंगल्लूर पहूँचती थीं।

केरल के कई स्थानों से अगस्टस सीज़र से लेकर नीरो तक के रोमन सम्राटों (ई. पू. २७ से ई. ६८ तक) की मुद्रायें मिली हैं। केरल के राजाओं ने रोम के सम्राटों के पास कई दूतों को भेजा। डा० ओपर्ट का कथन है कि मलबार के राजाओं ने अगस्टस, क्लोडिस, अन्टोणियस पयस और जूलियात्स इन रोमन सम्राटों को बहुमूल्य वस्तुयें भेंट की थीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर्णभूषणम्

मूल : महाकवि उल्लूर

अनुवादक : कवियूर शिवराम अय्यर

[मई १९८२ अंक में प्रकाशित से आगे]

VI

मणिमय वह शयनालय चमका
कुसुमित कृतमाल-वनी जसे;
पीत-वारि-अभिषिक्त भूप के
सुन्दर लोचन-सरसिज विकसे।

भूसुर अतिशय कांत त्रयीतनु
अतिथि सवेरे एक समागत,
पूर्व पुण्य का परिणत सुंदर
सत्फल जैसे सहसा करगत।

रूप अग्नि का, मगर सुशीतल,
गुण कपूर का, मगर सुनहरा,
अतिथि-देव नृप देख उसे यों
उठ खड़ा हुआ, हो उतावला।

'आसन कहाँ ? अर्घ्य-पाद्य कहाँ ?
मधुपर्क कहाँ ?" कहते सुगिरा,
चन्द्र बने उस चंडरश्मि के
चरणों में नृप साष्टांग गिरा।

अवनीपालक-चूडामणि ने
कुंडल-मंडित मुख पंकज से
सहस्रपाद विशिष्टातिथि के
पद-पल्लव में कुसुम चढाया।

जगती-दुःख मिटाने वाले
देवदेव ने प्रणमित सुत को
हर्षबाष्प से अभिषिक्त किया
धन्यलोक-अधिराज बनाया।

VII

भूपति पहले बोला, "ब्रह्मन्
प्रणाम तुम को बारंबार।

पावन ऋषि ऋश्यश्रृंग जैसे
शोभन तुम ने यहाँ पधार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

अंगमही तर होने के हित
बरसाई है करुणा-धार।
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रबोधदायक, सूत-जाति में
जनमा है यह भाग्यहीन,
राधा अंब, पिता है अधिरथ,
कर्ण कहाता है यह दीन।

भूपति, मानधनी दुर्योधन
दीन-दया की स्वर्गिक खान,
अमृतकिरण-वंशार्णव-कौस्तुभ
है मम नियत बहिश्चर प्राण।

सारथि न बन, रथी होने को
शिशुवय मैंने लिया कमान
राजतिलक से मुझे दिया है
उसने अंगमहीपति-मान

उसने मुझको दानधर्म का
पहला पाठ सिखाया एक,
उसी मनस्वी देशिक का मैं
जनम-जनम का सेवक नेक।

अभीष्ट आपका बतलावें तो
कर्ण सुनेगा आशिष मान।
दायें कर, कालपृष्ठ, अथवा
तन से देगा झट वह दान।

धर्म मार्ग है अत्यंत सूक्ष्म"
कहते हैं सब ज्ञानी संत
मैंने उसको क्या जाना है?
केवल चलता कुत्सित पंथ।

मगर हाथ है एक दवा, जो
निज व्याधि तुरंत करे शांत;
कोई कुछ वस्तु कभी माँगे
चाहे प्राण कि ज़्यादा कांत,

झट दूँगा; यह दान गांगजल
पाप-पंक मम करता धौत;
यह गुण मुझमें भरा हुआ है
बादल में ज्यों चपला-द्योत।"

VIII

यों कह सविनय खड़े तनय का
रूप देखते भानु रह गया;
पैदा होगी सहस्रनेत्र से
जगच्चक्षु के मन में ईर्ष्या।

सविता ने निज महान सुत को
सप्रेम गले से लगा लिया
फिर माथे पर करतल दोनों
रख उसको आशीर्वाद दिया।

'भव्य कुँवर का धन्य पिता मैं'
इस धुन से गौरव पाया-सा
परमानंद निमग्न देव हो
कुछ देर रहा खुद खोया-सा।

फिर बैठ गये भद्रासन पर
अंगभूप को निकट बिठाकर
शंका से कुछ रुकी-रुकी-सी
बातें बोले शनैः प्रभाकर।

IX

वत्स क्या कहा यह तूने अब?
अपने को हा! कौन बताया?
राधेय न है, आधिरथि नहीं
सूत जाति में जन्म न पाया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

पयोधि-संतति पारिजात को
गोष्पद सम पीछा कर पाता !
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
यशस्विनी पांडव-जनयित्री
कुंती ही तेरी है माता।

धर्मी, धन्वी, कृपालु, दानी
यों त्रैलोक्यश्रुत जो कि हुआ
उस सपूत तुझ से वीरप्रसू
होती वह शार्ङ्गी की बूआ।

तू धर्म, पार्थ-पुरुषार्थों में
तू सत्य, चार पार्थ-युगों में।

तात कौन है ? देखता नहीं ?
तात ! वही दुखित पापी मैं।

'चडकिरण औ' सर्वनाशकर
दंडपाणि का अत्युग्र पिता'
कहते-कहते जिस निष्ठुर की
निन्दा हर जगप्राणी करता,

रूप दिव्य औ' मन आसुर है
जिसके, वह मैं जनक तुम्हारा;
घनश्याम तुम, वसुदेव अहं
नन्दगोप है अधिरथ प्यारा।

(क्रमश:)

अंचुतेंगु

अंचुतेंगु से उत्तर केरल की ओर जलमार्ग से यातायात करने की काफी सुविधा थी। अत: अंचुतेंगु में कंपनी ने अपना अड्डा जमाना चाहा।

राणी उमयम्मा ने सन् १६८४ में इंग्लीश ईस्ट इन्डिया कंपनी को अंचुतेंगु में एक फैक्टरी और किला बनाने की अनुमति दी। १६८८ में एक पडाव की जमीन भी कंपनी ने आटिंगल राणी से प्राप्त की।

१६९५ में अंचुतेंगु में एक किला बनाने की अनुमति आटिंगल राणी ने कंपनी को दी।

१६९६ में अंग्रेजों ने अंचुतेंगु की डच फैक्टरी को आग लगा दी।

अंग्रेजों की बढती हुई शक्ति को दबाने केलिए मुख्य नागरिकों ने कुछ योजनायें बनायीं। १५–४–१७२१ को आटिंगल राणी को भेंट चढाने केलिए गीफ़ोर्ड नामक व्यापारी के नेतृत्व में जा रहे १४० अंग्रेज़ों को रोषाकुल जनता ने अंचुतेंगु में मार डाला। यह संघर्ष कुछ महीने तक बना रहा और इसे दबाने केलिए तलशेरी से अंग्रेज़ी सैनिकों की एक टोली बुलानी पडी। अंग्रेज़ी शासन के विरुद्ध केरल का यह पहला संग्राम था। इसे आटिंगल संग्राम कहते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तितली-रानी

डा० विश्वनाथ शुक्ल

[आजकल भारतीय सभ्यता को भूलकर बच्चों के जन्म-दिन पर केक काटी जाती है, मोमबत्ती बुझाई जाती है, चाकलेट, टाफी, पापिन, विस्कुट आदि के उपहार दिये जाते हैं। किन्तु किसी विशेष क्षण में किसी शिशु की अनाविल मोहिनी छवि और सहज क्रीडाओं को देखकर हम अपनी संस्कृति को कैसे छोड सकते हैं? सुकुमार बाल-जगत् से दूर-दूर, बालमनोविज्ञान, बालरुचि और बालकों की बढ़ती आयु के अनुसार निरन्तर बदलते उनके ज्ञानस्तर से अपरिचित एक विश्वविद्यालयीय अध्यापक से बाल-साहित्य के सर्जन की आशा कैसे की जा सकती है! किन्तु आप सुनिये —]

तितली रानी,
कहो कहानी।

इतनी सुन्दर रंग-विरंगी,
साड़ी तुमको मिली कहाँ से?
किसी फूल से, किसी डाल से,
क्या लेती हो यहाँ-वहाँ से?

दिन भर करती हो मनमानी।
तितली रानी, कहो कहानी।

कहती होगी तुम जरूर कुछ,
पर मैं कभी नहीं सुन पाया।
तुम चुपके से उड़ जाती हो,
जब भी तुम्हें पकड़ने आया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

यह आदत जानी पहचानी ।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तितली रानी, कहो कहानी ।

तुम मुझको अच्छी लगती हो,
इसीलिए चाहा था लेना ।
अब न छुऊँगा तुमको, समझीं ?
कृपया मुझे क्षमा कर देना ।

आँखों में भर आया पानी ।
तितली रानी, कहो कहानी ।

रीडर, हिन्दी विभाग,
अलीगढ़ विश्वविद्यालय, अलीगढ़

अगले अंक में

केन्द्र संचार मंत्री श्री० सी. एम. स्टीफन और केरल के मुख्यमंत्री श्री० के. करुणाकरन के हिन्दी संबन्धी विचार पढिये

जो

उन्होंने

30-7-1982 को केरल हिन्दी प्रचार सभा भवन में 'स्व० बी. सरस्वती तंकच्ची स्मारक स्वर्ण पदक और रोलिंग ट्रॉफी' वितरित करते हुए व्यक्त किये ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शायद नहीं

डा० एन. जी. देवकी

क्या तुमने सुना है
    वह संगीत ?
ज़ो सूखी पत्तियों पर सोए
    सन्नाटे से निकलता है
    और किसी के
नंगे जिस्म को छूना आकाश में
    उठ जाता है

क्या तुमने देखा है
    वह रूप
जो टूटने से इंकार करने की
    जिद्द में विकृत, भयानक
    हो उठता है ?

शायद नहीं
तुम उस संगीत को नहीं सुन सकते
    न तुम
उस रूप को देखोगे
    क्योंकि,
तुम जिसे फल समझते हो
वे चमगादडों के घोंसले हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्व० के. वासुदेवन पिल्लैजी
आदर्श ग्रहण

केरल हिन्दी प्रचार सभा के संस्थापक एवं प्रथम मंत्री स्व० के. वासुदेवन पिल्लै जी के बोसवें स्मृति दिवस के अवसर पर २५–७–८२ को सभा भवन में आयोजित सम्मेलन ने नयी पीढी के हिन्दी कार्यकर्ताओं से आग्रह किया कि वे पिल्लैजी के त्यागोज्वल जीवन के देशप्रेम, आत्माभिमान, स्वतंत्रता प्रियता, कष्ट सहिष्णुता, तिस्वार्थता, स्थैर्य, अध्ययन शीलता आदि उच्च आदशों को आत्मसात करें और हिन्दी के प्रचार और प्रसार में अधिक लगन के साथ जुट जायें।

सम्मेलन का आरंभ कुमारी वी. एस. श्रीलेखा के प्रार्थनागीत के साथ आरंभ हुआ। केरल हिन्दी प्रचार सभा के अध्यक्ष श्री० एस. वी. कुक्किल्लाया ने अपने गुरुवर स्व० वासुदेवन पिल्लै जी के जीवन के कुछ प्रेरणाप्रद प्रसंगों का अनुस्मरण किया और कहा कि केरल हिन्दी प्रचार सभा स्व० पिल्लैजी के महान संकल्पों की पूर्ति केलिए दृढ प्रतिज्ञ होकर कदम बढा रही है।

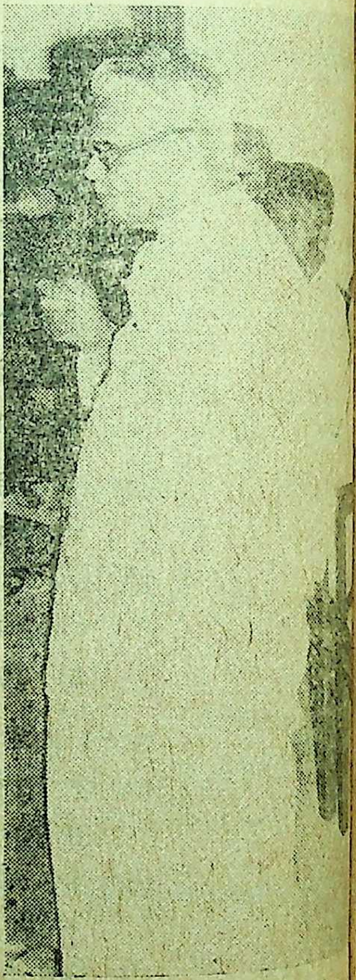

श्री० के. आर. इलंकत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए केरल के प्रमुख समाजसेवक श्री० के. आर. इलंकत्तु ने बताया कि विविधताओं से पूर्ण बहुभाषी भारतीय जनता का भावात्मक एकता को सुदृढ करने केलिए राष्ट्रपिता ने सामान्य वेष, खादी और संपर्क भाषा हिन्दी का प्रचार आरंभ किया था। आपने उन अनेकों दिवंगत हिन्दी सेवियों का अनुस्मरण किया जिन्होंने हिन्दी प्रचार को अपना जीवन व्रत स्वीकार किया था, और तन मन धन से हिन्दी प्रचार में योगदान दिया था। आपने आह्वान किया कि नयी पीढी के हिन्दी कार्यकर्ता स्व० पिल्लैजी के जीवन से प्रेरणा प्राप्त कर के हिन्दी के पंथ को प्रशस्त करें।

अध्यक्षीय भाषण में केरल के विख्यात गांधीवादी विचारक एवं लेखक श्री० कैनिक्करा कुमार पिल्लै ने उन दिनों का स्मरण किया जब हिन्दी को देशप्रेम का और आत्मगौरव का प्रतीक मानते थे। उन दिनों अंग्रेज सरकार के गुप्फिया हिन्दी प्रचारकों का पीछा करते थे। सरकार के विरोध की परवाह किये बिना हिन्दी के कार्यकर्ताओं ने हिन्दी प्रचार किया जिसके फल स्वरूप आज हिन्दी भारत की संपर्क भाषा बन गयी है। आप ने आग्रह किया कि हर भारतीय नागरिक हिन्दी में अधिकाधिक योग्यता प्राप्त करे।

श्री० के. पी. अलिक्कुञ्ञु

केरल हिन्दी प्रचार सभा के उपाध्यक्ष श्री० के. पी. अलिक्कुंजु ने बताया कि स्व० पिल्लै जी एक कर्मठ नेता थे। उनकी इसी कर्मठता ने उन्हें लोक सभा की चुनाव लडने केलिए प्रेरित किया था। उनकी प्रबल धारणा थी कि लोक सभा में ऐसे ही सदस्यों का धाक जम सकती है जो धाराप्रवाह हिन्दी में अपने भाव प्रकट कर सकते हों।

सरकारी ट्रेइनिंग कालेज, तिरुवनन्तपुरम की प्राध्यापिका श्रीमती एस. श्रीदेवी ने स्व० पिल्लै जी की सेवाओं का मूल्यांकन करते हुए बताया कि वे केरल के भगीरथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थे, जिन्होंने हिन्दी की गंगा को केरल में प्रवाहित किया ।

हिन्दी की गंगा केरल में प्रवाहित करनेवाले भगीरथ थे श्री० पिल्लैजी— श्रीमति श्रीदेवी का अनुस्मरण भाषण ।

गांधी स्मारक निधि, तिरुवनन्तपुरम के मंत्री श्री० पी. गोपीनाथन नायर ने गान्धीजी की हिन्दी संबंधी धारणाओं पर प्रकाश डाला और कहा कि अधिक मनोयोग से प्रयत्न करें तो अधिक शीघ्रता के साथ हिन्दी का प्रचार हो सकता है ।

कृतज्ञता प्रकट करते हुए केरल हिन्दी प्रचार सभा के मंत्री श्री० एम. के. वेलायुधन नायर ने हिन्दी प्रचार आन्दोलन का अवलोकन किया और कहा कि स्व० पिल्लैजी का नाम हिन्दी प्रचार के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित रहेगा ।

★

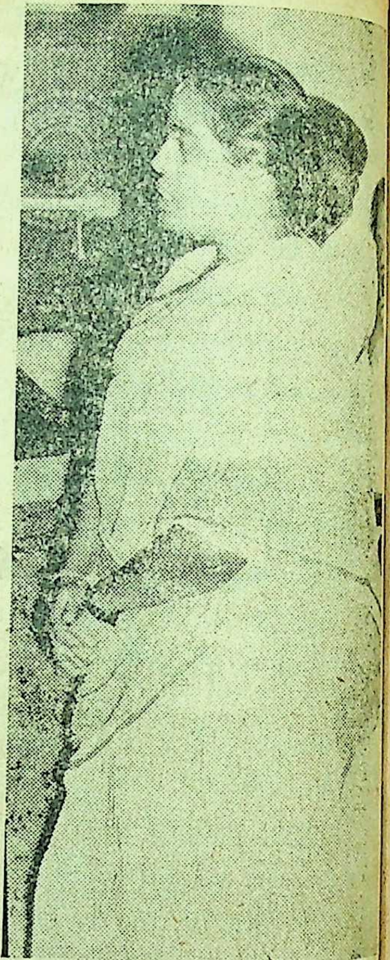

श्रीमती श्रीदेवी

घर घर हिन्दी का प्रचार हो ।

के. वासुदेवन पिल्लै

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

झरोखा

तमिल साहित्य मलयालम में

तमिल के प्रसिद्ध काव्य 'अकनानूरु' की १२० कविताओं का मलयालम गद्यानुवाद केरल साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित हुआ है ।

चिलप्पतिकारम पर आधारित कथाकलि

इलंको अडिकल द्वारा विरचित विख्यात तमिल काव्य चिलप्पतिकारम के आधार पर कोंडुंगल्लूर के श्री. मरुमकन राजा ने कथाकलि साहित्य रचा है । इस कथाकलि का प्रस्तुतीकरण गत दिसंवर में तृशूर में हुआ ।

रूसी मलयालम शब्दकोश

रूस की दो प्रकाशन संस्थाओं के सम्मिलित प्रयास के फलस्वरूप अगले वर्ष के प्रारंभ में एक रूसी मलयालम शब्दकोश प्रकाशित होगा । कई रूसी विद्वान और मलयालम विद्वान इस की तैयारी में लगे हैं ।

सांस्कृतिक विभाग

केरल सरकार ने एक सांस्कृतिक विभाग खोला है । श्री० आर. रामचन्द्रन नायर आई. ए. एस. जो स्वयं कवि एवं सांस्कृतिक उन्नायक हैं इस विभाग के सचिव नियुक्त हुए हैं ।

मलयालम नाटक को द्वितीय स्थान

आकाशवाणी द्वारा आयोजित अखिल भारतीय नाटक प्रतियोगिता में विख्यात मलयालम नाटककार प्रो० जी. शंकर पिल्लै का नाटक 'अक्करा' द्वितीय निकला ।

चार हज़ार पृष्ठों का उपन्यास

विलासिनी का लिखा मलयालम उपन्यास 'अवकाशिकल' चार हज़ार पृष्ठों का है । १९७८–८० में प्रकाशित मलयालम साहित्य में से यह उपन्यास केन्द्र साहित्य अकादमी ने पुरस्कृत किया है ।

१९८१ का ओटक्कुषल पुरस्कार भी इसी उपन्यास को मिला ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठकों के पत्र

पोस्ट बॉक्स-७७८६
बम्बई-९२
९-७-१९८२

बन्धुवर पिल्लैजी,

नमस्कार। 'केरल ज्योति' का जुलाई अंक मिला। अपने संपादकीय में आपने "केन्द्रीय हिन्दी संस्थान" के प्रति जो विचार प्रकट किये, वे स्तुत्य हैं। केरल सरकार द्वारा उसकी पदवियों 'हिन्दी शिक्षण पारंगत' और 'हिन्दी शिक्षण निष्णात' को B. Ed. और M. Ed. के समकक्ष अवश्य ही मान्यता दी जानी चाहिए। मैं आपका जोरदार समर्थन करता हूँ। उसकी पदवियों को केन्द्रीय अंग्रेजी संस्थान की पदवियों की भांति ही मान्यता प्राप्त होनी चाहिए।

आप स्वस्थ व सानन्द होंगे।

आपका,
अखिल विनय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

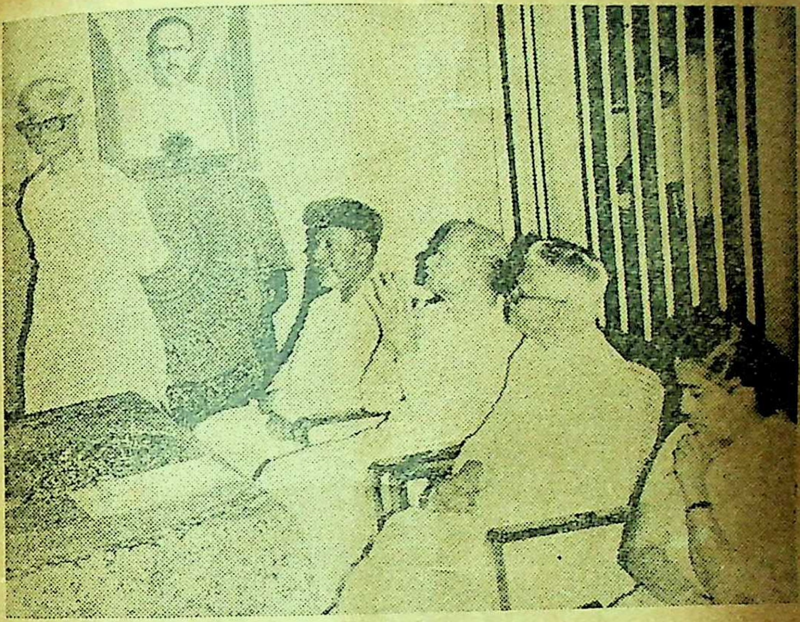

स्व० के० वासुदेवन पिल्लै के बीसवीं बरसी के अवसर पर आयोजित सम्मेलन में भाषण देते हुए केरल गाँधी स्मारक निधि के महासचिव श्री० पी० गोपीनाथन नायर।
बैठे हैं सभा के उपाध्यक्ष श्री० के० पी० अलिवकुञ्ञु, श्री० कैनिक्करा एम० कुमार पिल्लै, श्री० के० आर० इलंकत और श्रीमती एस० श्रीदेवी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Reg. No. KL/TV(S)/25
August 1982

Keral Jyoti

Vol. XVII
Price : R

A monthly Publication of Kerala Hindi Prachar Sabha

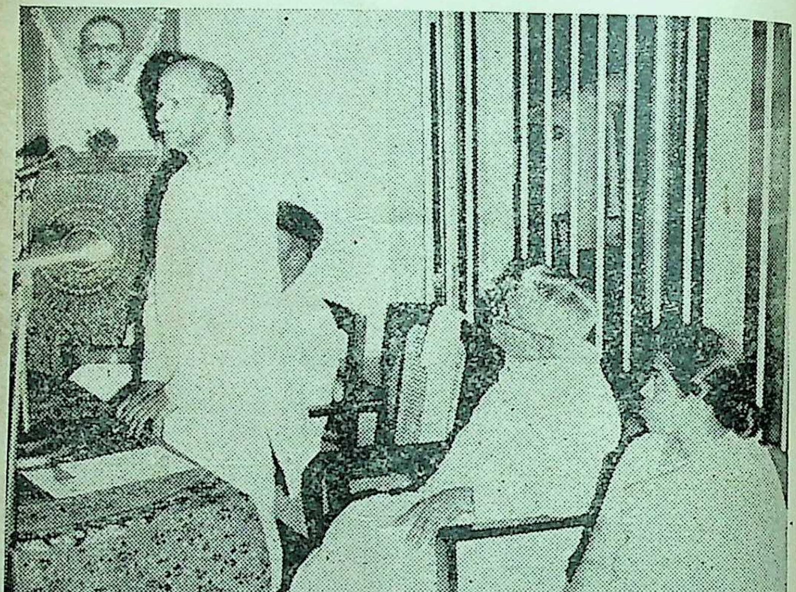

स्व० के० वासुदेवन पिल्लै की बीसवीं बरसी के अवसर पर आयोजित सम्मेलन में अध्यक्षीय भाषण देते हुए श्री० कैनिक्करा एम० कुमार पिल्लै (विवरण अन्यत्र)

केरल हिन्दी प्रचार सभा, तिरुवनन्तपुरम–६९५ ०१४ केलिए श्री० एम. के. वेलायुधन नायर द्वारा प्रकाशि
मुद्रक: राष्ट्रवाणी मुद्रणालय, केरल हिन्दी प्रचार सभा, तिरुवनन्तपुरम–१४. सम्पादक: के. जी. बालकृष्ण पि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केरल ज्योति

केन्द्र संचार मंत्री श्री० सी. एम. स्टीफन कुमारी लेनीमोल जी. चिरयिल को स्व० बी. सरस्वती तंकच्ची स्मारक स्वर्ण पदक प्रदान कर रहे हैं।

केरल हिन्दी प्रचार सभा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केरल ज्योति

* **प्रधान संपादक**

प्रो० पी. जे. जोसफ़

* **संपादक**

श्री० के. जी. बालकृष्ण पिल्लै

* **सह संपादक**

श्री० आर. सुकुमारन नायर

* **संपादक मण्डल**

श्री० वी. के. गोपालन नायर

प्रो० एम. जनार्द्दनन पिल्लै

श्री० के. वी. कृष्णनकुट्टी

श्री० एम. के. वेलायुधन नायर

❀

* विज्ञापन दर

		मासिक		वार्षिक	
आवरण पृष्ठ ४	रु.	५००	००	५०००	००
आवरण पृष्ठ २ एवं ३	रु.	४००	००	४०००	००
साधारण पृष्ठ पूरा	रु.	३००	००	३०००	००
साधारण पृष्ठ ½	रु.	१७५	००	१७५०	००
साधारण पृष्ठ ¼	रु.	१००	००	१०००	००

❀

* **पत्र व्यवहार का पता :**

मंत्री,

केरल हिन्दी प्रचार सभा

तिरुवनन्तपुरम–६९५ ०१४

केरल

तार :–"जय हिन्दी"

फोन : ६१३७८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुष्पः १७

दल : ६

सितंबर १९८२

केरल ज्योति

सांस्कृतिक जागरण की मासिक पत्रिका

संपादकीय

हिन्दी के पाठ्यक्रम में सुधार लायें ।

ढिंढोरा पीटा जाता है कि केरल हिन्दी अध्ययन में काफी आगे जा चुका है। असलियत पर जव नज़र जाता है तो स्थिति अत्यंत अतृप्तिकर लगती है।

केरल की मेट्रिक परीक्षा में हिन्दी के प्रान्तीय औसत अंक में जो गिरावट गत चार वर्षों में क्रमिक रूप से होती जा रही है उस पर हमें गौर से विचार करना है। १९७९ में हिन्दी का प्रान्तीय औसत अंक सत्रह था। इ९८०, १९८१ और १९८२ में यह क्रमशः पन्द्रह, तेरह और ग्यारह होता गया। यदि यह स्थिति जारी रहे तो पाँच वर्ष बाद हिन्दी का औसत अंक क्या रहेगा इस का हम अनुमान कर सकते हैं।

हिन्दी अध्ययन की इस दुर्गति के कारण ढूँढ निकालने होंगे और उनका निवारण करना होगा। नहीं तो हिन्दी के वर्धमान प्रयोजनों से केरल की युवा पीढो वंचित रह जायेगी। संविधान जिस अवसर समत्व का वादा करता है उसको ध्यान में रखकर हर प्रान्त में हिन्दी सीखने के समान सवसर प्रदान करना राज्य का कर्तव्य है।

तीस वर्ष पहले जब हिन्दी केरल के स्कूली पाठ्यक्रम में प्रवेश पायी तब अन्य भाषाओं के समान हिन्दी का पर्चा भी १०० अंक का रहता

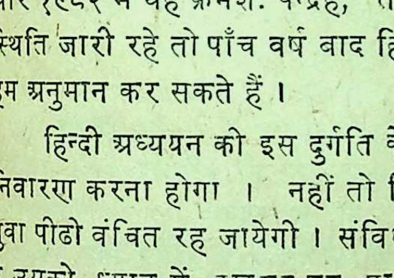

था। १९७६ में कोठारी कमीशन की रिपोर्ट के नाम पर पाठ्यक्रम में जो अदल बदल हुए उस में गणित विज्ञान आदि विषयों को अधिक प्रमुखता देने के लिए अंक विभाजन में भी परिवर्तन किया गया। हिन्दी का अंक सौ से घटाकर पचास कर दिया गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

इसी सुधार ? के साथ ग्रूप सिस्टम भी आ गया जिसके अनुसार पाठ्य-क्रम की तीनों भाषायें—मातृभाषा, अंग्रेजी और हिन्दी—एक ग्रूप में आ गयीं। भाषा ग्रूप के कुल अंक के आधार पर विद्यार्थी परीक्षा उत्तीर्ण कर सकता है। इसका यह मतलब हुआ विद्यार्थी इन तीनों में किसी एक भाषा की बिलकुल उपेक्षा करके भी अन्य दोनों भाषाओं में प्राप्त अंक के आधार पर परीक्षा उत्तीर्ण कर सकता है। चूंकि हिन्दी का कालांश और अंक अपेक्षाकृत कम है इसलिये अधिकांश विद्यार्थियों ने हिन्दी की उपेक्षा की जिसका दुरन्त हिन्दी के प्रान्तीय औसत् अंक की गिरावट में दृष्टव्य है। हिन्दी के प्रति उपेक्षा दिखाने का एक कारण यह भी हो सकता है कि कालेजीय स्तर पर हिन्दी सीखना अनिवार्य नहीं जब कि अंग्रेज़ी का अध्ययन वहाँ अनिवार्य है।

यह शुभोदर्क है कि इस दुस्थिति पर केरल सरकार के शिक्षा सलाह-कार समिति के अध्यक्ष और केरल के मुख्य मंत्री विशेष ध्यान दे रहे हैं। केरल हिन्दी प्रचार सभा के आंगन में आयोजित स्व० बी. सरस्वती तंकच्ची स्मारक स्वर्ण पदक वितरण समारोह में मुख्य मंत्री ने घोषणा की है कि वे हिन्दी की इस दुस्थिति के कारणों की जांच अवश्य करेंगे और शीघ्र ही आवश्यक सुधार लायेंगे।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस अंक में

महर्षि दयानंद सरस्वती की हिन्दी-सेवा 3
डॉ० मृत्युञ्जय उपाध्याय

दीपावली 8
पी. कृष्णकुमार

स्व० बी. सरस्वती तंकच्ची स्मारक स्वर्ण पदक वितरण समारोह 9

हिन्दी नयी पीढी का संबल है 15
सी. एम स्टीफन

पाठ्यक्रम में हिन्दी का स्थान पर विचार किया जायगा 17
के. करुणाकरन

सभी भारतीय भाषाओं से प्रेम करें 19
डा० शूरनाट्टु कुंजन पिल्लै

हिन्दी को पुन: उचित स्थान दिया जा सकता है 20
डा० एन. पी. पिल्लै

हिन्दी प्रचार में केन्द्रीय हिन्दी संस्थान की भूमिका 27
पी. के. थुगन

क्या साहित्य में प्रतिबद्धता वांछनीय है ? 29
तंकप्पन तुम्पमण

देख कबीरा रोया—नीड का निर्माण 33
क्कु

मुक्तक 36
बालकृष्ण मिश्र

'शुचि स्मिता'—पुस्तक समीक्षा 37
जवाहर चौधरी

बंधुवा नौकर 39
मोतीलाल सुराना

झरोखा 40

पाठकों के पत्र 44

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महर्षि दयानंद सरस्वती की हिन्दी-सेवा

पृथ्वी कहलाती है वीरप्रसू। उसकी कोख से समय-समय पर ऐसे लाल पैदा होते हैं जो केवल पृथ्वी का भार ही हलका नहीं करते, मानवता के विकास के लिए आजीवन प्राणपण से जूझते रहते हैं. लोक को प्रकाशमान निमंत्रण देकर संबलित करते हैं। ऐसे पुरुष के लिए युग प्रतीक्षारत रहता है। महर्षि दयानंद सरस्वती भारती मनीषा के ऐसे ही वरद पुत्र हैं। विरासत में प्राप्त संस्कृत शास्त्र की परंपरा के कायल सरस्वतीजी ने शास्त्रों की गहनता में प्रवेश किया। वैदिक साहित्य का विस्तृत अध्ययन किया और इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि प्रचलित हिन्दू धर्म (जिसके अंतर्गत बाह्योपचार, कर्मकाण्ड, मूर्तिपूजा आदि सम्मिलित हैं), तथा सच्चे वैदिक धर्म के बीच गहरी खाई है। उसको पाटने का उन्होंने दृढ संकल्प लिया। इस प्रकार हिन्दू समाज में प्रचलित रीति रिवाज और कर्मकाण्ड में सुधार करना उनके जीवन का प्रथम उद्देश्य बना। मूलत: ये समाज सुधार की भावना से इस ओर प्रवृत्त हुए। इस हेतु इन्होंने देश के तत्कालीन सभी सुधारवादी संस्थाओं से संपर्क स्थापित किया, जिसमें बंगाल का ब्रह्म समाज प्रथम था। उससे प्रेरित होकर उनके हृदय में एक अलग वैदिक समाज के रूप में आर्य समाज की स्थापना का विचार जाग्रत हुआ, जिसकी परिणति ७ अप्रैल, १८७५ ई० में हुई।

जिन सामाजिक, धार्मिक आंदोलनों, प्रवृत्तियों और घटकों का योगदान हिन्दी

डॉ० मृत्युञ्जय उपाध्याय

के विकास में रहा, उसमें आर्य समाज और महर्षि जी का स्थान सर्वप्रथम है। हिन्दी साहित्य का कोई इतिहास ऐसा नहीं मिलेगा, जिसमें आर्य समाज के हिन्दी विकास के योगदान का उल्लेख नहीं हो। हिन्दी गद्य के निर्माण में आर्य समाज की महती भूमिका रही है। महर्षिजी व्यावहारिक और भविष्यद्रष्टा थे। ये कल्पना के गगन में विचरण कर अपने अभीष्ट की सिद्धि का स्वप्न नहीं देखते थे, वरन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यावहारिकता की धरती पर ही उसे क्रिया की वाणी देना चाहते थे। वे आर्यसमाज का प्रचार प्रसार देश की सार्वजनिक गतिविधि से मिलकर करना चाहते थे। इस क्रम में उन्होंने देश के विभिन्न स्थानों का दौरा किया और अभिव्यक्ति के एक सशक्त माध्यम की खोज की, जिससे उत्तर, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम सभी जगह काम चलाया जा सके। अभिव्यक्ति की ऐसी भाषा हिन्दी सिद्ध हुई। 'राह बता तो आगे चल' की उक्ति को चरितार्थ करते हुए गुजराती भाषा-भाषी सरस्वती जी ने सर्वप्रथम हिन्दी सीखी और यह घोषणा की कि प्रत्येक आर्य समाजी के लिए हिन्दी पढ़ना अनिवार्य है। हिन्दी ही आर्य-भाषा अर्थात् समस्त देश की भाषा है। उन्होंने यह भी निर्णय लिया कि आर्य समाज का समस्त साहित्य हिन्दी में प्रकाशित हो और हिन्दी ही इसके प्रचार का प्रमुख माध्यम बने। सच पूछिए, तो हिन्दी के बल पर ही वे विभिन्न प्राँतों की यात्रा कर सके और बडी सभाओं को सफलता पूर्वक संबोधित कर सके। स्वामी दयानंद और उनके अनुयायिओं में पूरा उत्साह था। वे सभी कृत संकल्प हो हिन्दी के प्रचार-प्रसार में जुट गए।

हिन्दी में ग्रंथों की रचना के अलावा उन्होंने कई मासिक और साप्ताहिक पत्रिकाओं का प्रकाशन प्रारंभ किया। कई प्रचलित और लोकप्रिय पत्रिकाओं में लेख हिन्दी में ही लिखे गए। इससे समाज को उनके विचार जानने में सुविधा हुई, आर्यसमाज के सिद्धान्तों को गति मिली और हिन्दी की लोकप्रियता बढी। सच तो यह है कि हिन्दी को अपनाये जाने से प्राँतीयता, स्थानीयभेद, जाति-भेद आदि की सीमाओं और संकीर्णताओं को लाँघते हुए आर्य समाज उत्तरोत्तर पूरे भारत में फैलता गया। उसके साथ उन जगहों में हिन्दी प्रेम भी पहुचता गया। पंजाब इसका चर्चित उदाहरण है। पंजाब के आर्य समाज के प्रभाव में आते ही अन्य जातियों के विरोध और सरकारी उपेक्षा के बावजूद भी वहाँ हिन्दी का पौधा लहराने लगा। उसने आज विशाल-वृक्ष का रूप ले लिया है। सरस्वतीजी की हिन्दी के प्रति अगाध श्रद्धा का एक उदाहरण पंजाब में ही देखने को मिला। पंजाब में एक भक्त ने उनके ग्रंथों को उर्दू में अनुवाद करने की अनुमति माँगी, तो उनका उत्तर आया—"भाई, मेरी आँखें तो उस दिन की ओर तरस रही हैं, जब काश्मीर से कन्याकुमारी तक सब लोग हिन्दी भाषा बोलने लगें। जिन्हें मेरे भावों को जानने की इच्छा होगी, वह आर्यभाषा सीखना अपना कर्तव्य समझेंगे, अनुवाद तो विदेशियों के लिए हुआ करता है।"

आर्य समाज की स्थापना के साथ ही महर्षि दयानंद ने हिन्दी में लिखना आरंभ किया। आपने संस्कृत के ग्रंथों का भी हिन्दी में अनुवाद कराया। इनमें 'वेदभाष्य' 'और संस्कार विधि' प्रमुख हैं। 'संस्कार विधि' के अध्ययन से पता चलता है कि लेखक अहिन्दी भाषी है,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संस्कृत का विद्वान मालूम पड़ता है और हिन्दी से उसका विशेष परिचय भी नहीं है, परंतु इसकी परवाह किए बिना वे हिन्दी का अपनाए रहे जिससे हिन्दी का उत्तरोत्तर प्रचार-प्रसार हो ।

हिन्दी के प्रचार में सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका

सत्यार्थप्रकाश स्वामीजी का सबसे प्रसिद्ध ग्रंथ है । इसकी रचना भी उन्होंने मूल रूप से हिन्दी में ही की । सच पूछा जाए, तो गुजराती, संस्कृत और व्रज-भाषा (मथुरा में दीर्घ निवास के कारण यह भाषा भी सीख ली ।) तीनों भाषाओं का सम्मिश्रण इस ग्रंथ में मिलता है परन्तु इससे उनकी समन्वयात्मक दृष्टि का ही पता नहीं चलता है, हिन्दी को साधन बनाकर इस ओर प्रवृत्त होने का अभिप्राय भी स्पष्ट होता है । वैदिक धर्म का प्रचार हो या जनमानस की चेतना का जागरण या आर्य समाज का व्यापक प्रचार प्रसार या समाज की सड़ी गली जर्जरित व्यवस्था पर कुठाराघात— सब के लिए 'सत्यार्थप्रकाश' और हिन्दी का अप्रतिम योगदान है । कहना नहीं होगा कि शैली व भाषा की दृष्टि से इस ग्रंथ को खड़ीबोली हिन्दी के प्रारंभिक काल की श्रेष्ठ रचना कहा जा सकता है । भाव और विचार के क्षेत्र में वे सारी दुनिया को ही वेद दर्शन में एक सूत्र कर एक बृहत् आर्य परिवार की संरचना का संकल्प लिये थे, जिसके लिए हिन्दी में इस ग्रंथ का प्रणयन हुआ । महात्मा गाँधी (गुजराती होते हुए) भी बाद में इनके पथ पर हिन्दी के प्रचारार्थ अग्रसर हुए ।

हिन्दी आंदोलन के लिए इस ग्रंथ का प्रणयन एक ईश्वरीय देन था । दयानंद के वेदों के अधिकृत ज्ञान, प्रबल सुधारवाद, ओजस्वी और सर्वतोमुखी प्रतिभाशाली व्यक्तित्व, लेखन और प्रचार से हिन्दी को गति, व्यापकता और लोकप्रियता मिली ।

महर्षिजी तथा आर्य समाज की हिन्दी-विकास संबंधिनी गतिविधियाँ

इन्होंने राजाओं को राजकुमारों के लिए हिन्दी के पठन-पाठन की व्यवस्था हेतु परामर्श दिया । हंटर भाषा आयोग के समक्ष हिन्दी के समर्थनहेतु प्रतिवेदन प्रस्तुत करने का समर्थन किया । इनके अलावा इनके सहयोगियों (पं० रामनारायण मिश्र, लाला लाजपतराय, महात्मा मुंशीराम, जज मदनमोहन सेठ, पं० विष्णुलाल शर्मा आदि) तथा अन्य आर्य समाजियों ने हिन्दी के लिए काफी संघर्ष किया । डी. ए. वी. विद्यालयों, महाविद्यालयों तथा गुरुकुल की देश-विदेश में स्थापना करके राष्ट्रीय शिक्षा व हिन्दी के क्षेत्र में आर्यसमाज का महत्त्वपूर्ण योगदान कालप्रवाह कभी भुला नहीं सकता । राष्ट्रीयता, देश की समग्रता और अखंडता के लिए हिन्दी शिक्षा के प्रचार-प्रसार का मार्ग प्रशस्त कर जनता का अपार कल्याण किया गया ।

महर्षिजी धार्मिक आचार्य और मनीषी ही नहीं, एक सार्वजनिक नेता भी थे ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनके पत्र की भाषा पहले संस्कृत बाद में हिन्दी रहने लगी, उत्तर चाहे जिस भाषा में आये ।

इसलिए देश के हज़ारों व्यक्तियों से उनके संपर्क थे, उनसे पत्र व्यवहार था । उनके पत्र की भाषा पहले संस्कृत बाद में हिन्दी रहने लगी, उत्तर चाहे जिस भाषा में आए । मदान ब्लान्सकी तक को उन्होंने हिन्दी में लिखा और उत्तर भी तदनुसार देने के लिए प्रेरित किया । "जिस पत्र का हम से उत्तर चाहें उसको नागरी कराकर हमारे पास भेजा करें ।" अल्कोट को भी उन्होंने हिन्दी सीखने की प्रेरणा दी । १३ जुलाई, १८७९ को उनके नाम लिखे पत्र से इसका पता चलता है—"मुझे सुनकर खुशी हुई कि आपने नागरी पढ़ना प्रारंभ कर दिया है ।" वैदिक संग्रहालय, अजमेर में सुरक्षित महर्षिजी के हस्तलिखित पत्रों से उनके अनन्य हिन्दी प्रेम और उसके प्रति उनकी आस्था का पता चलता है ।

भारत गाँवों का देश है । उसकी आभा उसकें साढ़े पाँच लाख गाँवों में बसती है । उसके जागरण, उन्नयन के बिना देश का उन्नयन संभव नहीं—महर्षिजी इसे अच्छी तरह जानते थे । इसीलिए उनकी सुविधा के लिए इन्हें हिन्दी और देवनागरी के प्रयोग पर काफी ध्यान रहता था । इसका पता श्यामजी कृष्णवर्मा को लिखे उनके पत्र (७ अक्तूबर १८७८) से चलता है—"अब की बार वेदभाष्य के लिफाफे के ऊपर देवनागरी नहीं लिखी गई । जो कहीं ग्राम में अंग्रेज़ी पढ़ा न होगा तो अंक वहाँ के पहुँचते होंगे और गाँवों में देवनागरी बहुत होते हैं ।......इसलिए अभी इस पत्र के देखते ही देवनागरी जाननेवाला मुंशी रख लेवें, नहीं तो किसी रजिस्टर के अनुसार ग्राहकों का पता हिन्दी देवनागरीवाले से लिखाकर वापस किया करें ।" (पत्र और विज्ञापन) इससे प्रकट होता है कि उनके लिए भाषा से अधिक भाव और कार्य का मूल्य था । वे हिन्दी को देशव्यापी बनाने के लिए अहर्निश लगे रहते थे ।

हिन्दी के उन्नयन के लिए वे कभी प्रादेशिक भाषा के पक्ष में नहीं रहे यहाँ तक कि अपनी रचनाओं को प्रादेशिक भाषा में अनूदित भी कराना नहीं चाहते थे । वे चाहते थे कि जो लोग उनकी पुस्तकें पढ़ना चाहें, उन्हें हिन्दी सीख लेनी चाहिए, जो बडी सरल भाषा है । हिन्दी के लिए इतनी उदारता, विशालता और सेवाभावना महर्षिजी के लिए साधारण बात थी । महारानी विक्टोरिया के पास भेजने के लिए उन्होंने एक स्मरण पत्र तैयार कराया था जिसका मुख्य मुद्दा एक ही लिपि देवनागरी हो, उसे राष्ट्रीय लिपि घोषित किया जाए और सभी प्रादेशिक भाषाओं को इसी में व्यवहार करने कहा जाये । उन्होंने प्रस्ताव दिया कि सभी भारतीय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्होंने यह प्रस्ताव किया कि सभी भारतीय विद्यार्थियों को अपनी मातृभाषा के अलावा कम से कम एक और भारतीय भाषा सिखाई जानी चाहिए, जिसका उद्देश्य हिन्दी का प्रचार और उसके वर्चस्व की रक्षा था।

विद्यार्थियों को अपनी मातृभाषा के अलावा कम से कम एक और भारतीय भाषा सिखाई जानी चाहिए, जिसका उद्देश्य हिन्दी का प्रचार और उसके वर्चस्व की रक्षा था। इस प्रकार इन्होंने भारत सरकार के वर्तमान त्रि-भाषा सूत्र का वास्तविक पथ-प्रदर्शन किया।

संस्कृत संस्कार के कारण इन्होंने कहीं कहीं सामान्यतः हिन्दी में अप्रचलित शब्दों का प्रयोग ('संयोगच', 'गतिपरिणामी-पन', 'पुरश्चरण', 'अत्युद्युक्त', 'परिच्छिन्न' आदि) किया। जनता में घुल मिल जाने के कारण कुछ ठेठ ग्रामीण मुहावरों ('खिक्की ज़माई', 'गपड़ चौथ', 'भेट भटक्का' आदि) के भी प्रयोग हुए, परंतु दार्शनिक और आध्यात्मिक सत्य को व्यक्त करने के कारण इनकी भाषा में एक प्रकार की पारिभाषिकता भी आई। इस सबके बावजूद इनके अथक प्रयत्न से हिन्दी गद्य की अभिव्यक्ति क्षमता बढ़ी—गंभीर विषयों पर तर्क-विवाद की शक्ति विकसित हुई, व्यंग्य शैली का विकास हुआ और सर्वोपरि यह कि हिन्दीतर प्रांतों में हिन्दी का व्यापक प्रचार प्रसार हुआ। गद्य (हिन्दी) को इनकी देन अविस्मरणीय है।

आधार ग्रंथों की सूची

१. स्वामी दयानंद—बी. के. सिंह, नेशनल बुक ट्रस्ट ऑफ इंडिया, २. हिन्दी साहित्य कोष, भाग–२ ज्ञानमंडल, वाराणसी ३. सत्यार्थ प्रकाश ४. संस्कार विधि ५. हिन्दी विश्व कोश ६. भारतीय राष्ट्रीय जागरण में आर्य समाज का योगदान शीर्षक लेख—लेखक श्री० रघुवीर सिंह तोमर परोपकारी, मई, ८२ ७. 'दयानंद सरस्वती पुनर्जागरण के अग्रदूत'—शीर्षक लेख—लेखक श्री भुवनेश गुप्त, परोपकारी, फरवरी, ८१ ८. The Contribution of Swami Dayanand To the Study of The Vedas— Dr Bharanital Bartiya, परोपकारी, फरवरी ८१।

वृन्दावन, राजेन्द्रपथ,
धनबाद–८२६००१
बिहार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीपावली

पी. कृष्णकुमार, एम. ए
प्राचार्य, श्री व्यासा कालेज
वडक्कांचेरी, तृ

आसमान की सीमा पर
एक तारा काँपती ।
गाँव की गली गली
शुभ दीप पंक्ति लग जाती ।
मिट्टी की झोंपडी एक
खडी है अकेली
जिसके गले प्रकाश का मंगलसूत्र नहीं ।
एक नारी की छाया
जिसके केशजाल है शिथिल पडे
भूपर कुछ आँक रही है
चंचल धूमिल चिह्नों से ।
आँगन के हरसिंगार कलियों के
गीले नयन
पोंछ पोंछ कर विस्मृतशोक पवन
पढ़ जाता है
इन बेसुध चिह्नों को ।
''जाग रे ! जाग ।
मेरे अन्तरतम में
शत शत बत्तियों की दीपावली
जलाते रस-रूप जाग;
आँखें खोल, रे खोल
कितने हैं ऐसे निमिष,
जिनके सुवर्ण-पंख खुल जाते ?
अभी बारह महीने पहले
अपने भोले कमल-करों में
मिट्टी के दीपक लेकर
इस रेतीले आँगन में चलते थे
तेरे पदचिह्न पोंछ न पाये हैं
पर, अंधकार घुस छाया है
मेरे पाले पोसे ''नैना'' में।
उस दिन बप्पा के मृत्तिका-मंच पर
इक बत्ती तूने प्रथम जलाई थी।
मेरे टपके हगजलबिन्दु ने
उसको दबा दिया—
क्या वह ऐसा गुनाह है,
जिसको तू माफ न कर सकता ?
नहीं, मै ने सोचा नहीं—
बप्पा की छाती पर ही
तू भी सोया हुआ है ।
कैसे सहे तेरी माँ ?
जब चारों ओर
छोटे मंगल दीपों के नयन खिल रहे हैं
माता का दीन दीन रोदन
उस मृत्तिका-वेदिका में
आँचल के दूध की याद को
ज्योंही रोंपता है,
चिता में जटाजूट बाँधे खड़ी दूर्वांकुरी
अदना-सा एक जुगनू
झिलमिल उड़ जाता है ।

अनुवाद : पी. जी. का
दयानन्दम, चेलू
तृश्शूर-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्व० बी. सरस्वती तंकच्ची स्मारक स्वर्णपदक वितरण समारोह

केरल की मेट्रिक परीक्षा में हिन्दी में सर्वाधिक अंक पाकर उत्तीर्ण होनेवाले छात्रों को केरल हिन्दी प्रचार सभा प्रतिवर्ष स्व० बी. सरस्वती तंकच्चा स्मारक स्वर्ण पदक देकर प्रोत्साहित करती है। इन पुरस्कृत विद्यार्थियों के विद्यालयों को स्व० बी. सरस्वती तंकच्ची स्मारक रोलिंग ट्रॉफी भी दी जाती है। श्रीमती तंकच्ची सभा की कार्यकारिणी समिति एवं केरल ज्योति के संपादक मंडल की सदस्या थी, सभा के स्नातकोत्तर केन्द्र की अध्यापिका थी, लेखिका थी और समाज सेविका थी।

केन्द्र मंत्री श्री० सी. एम. स्टीफन का हार्दिक स्वागत कर रहे हैं केरल हिन्दी प्रचार सभा के अध्यक्ष श्री० एस. वी. कुक्किल्लाया और उपाध्यक्ष श्री० के. पी. अलिकुंजु।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

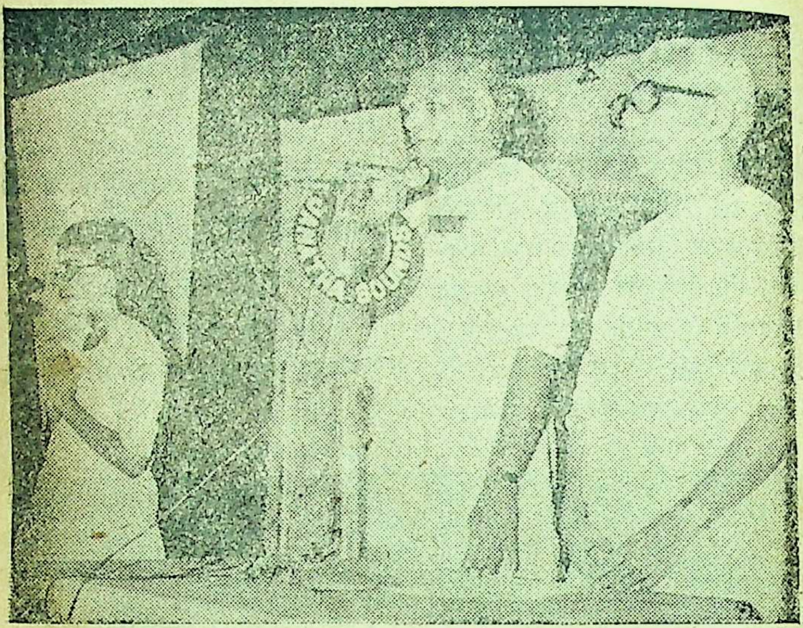

अग्रेपश्यामि तेजो निबिडतर कलायावली शोभनीयम...

कुमारी वी. एस श्रीलेखा द्वारा प्रार्थना ।

१९८० मार्च और १९८१ मार्च की एस. एस. एल. सी. परीक्षाओं में हिन्दी में सर्वाधिक अंक पाये विद्यार्थियों के स्वर्ण-पदक और उनके विद्यालयों की रोलिंग ट्रॉफी ३०-७-८२ को सभा के आंगन में आयोजित सार्वजनिक सम्मेलन में केन्द्र संचार मंत्री श्री० सी. एम. स्टीफन ने वितरित किये । सम्मेलन की अध्यक्षता केरल के मुख्य मंत्री श्री० के. करुणाकरन ने की । विख्यात विद्वान डा० शूरनाट्टु कुंजन पिल्लै और राज्य शिक्षा सलाहकार समिति (केरल) के अध्यक्ष डा० एन. पी. पिल्लै ने आशीर्वाद भाषण दिये । (श्री० सी. एम. स्टीफन, श्री० के. करुणाकरन, श्री० शूरनाट्टु कुंजन पिल्लै और डा० एन. पी. पिल्लै के भाषण इसी अंक में अन्यत्र पढ सकते हैं ।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वागत भाषण में सभा के मंत्री श्री० एम. के. वेलायुधन नायर ने यह समस्या उठायी कि मेट्रिक में हिन्दी का अंक १०० से घटा कर पचास कर दिये जाने के कारण केरल के स्कूलों में हिन्दी अध्ययन का स्तर बहुत गिर गया है ।

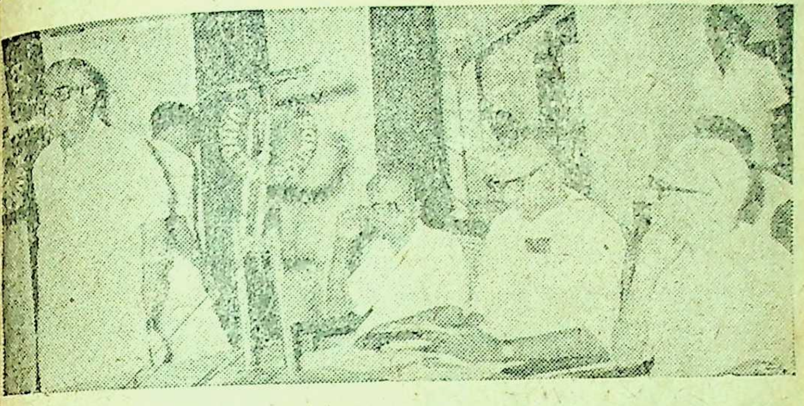

केरल के हिन्दी अध्यापन में आवश्यक सुधार लाने की अपील कर रहे हैं
केरल हिन्दी प्रचार सभा के मंत्री श्री० एम. के. वेलायुधन नायर ।
मंच पर आसीन हैं केरल हिन्दी प्रचार सभा के अध्यक्ष
श्री० एस. वी. कुक्किळ्ळाया, केन्द्र मंत्री श्री० सी. एम. स्टीफन
और केरल के मुख्य मंत्री श्री० के. करुणाकरन।

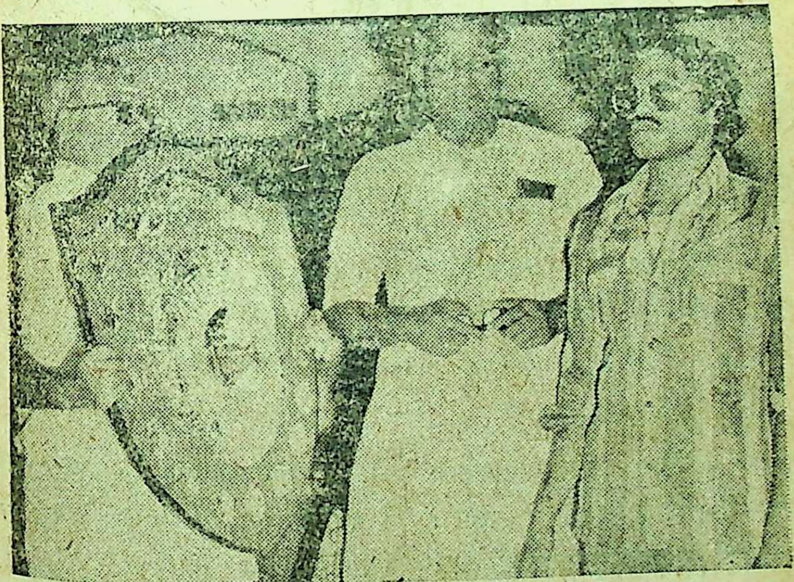

स्व० बी. सरस्वती तंकच्ची स्मारक स्वर्ण पदक प्राप्त श्री० के. के. गोपी को
श्री० पी. तंकप्पन तंपी की ओर से एक शील्ड केन्द्र मंत्री
श्री० सी. एम. स्टीफन के करकमलों से दिया गया ।
श्री० सी. एम. स्टीफन बीच में ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

इस पर केन्द्र मंत्री, डा०एन. पी. पिल्लै और मुख्य मंत्री ने सबके [illegible] गंभीरतापूर्वक विचार किया और मुख्य मंत्री ने यह आश्वासन दिया कि इस समस्या के कारणों की जाँच की जायेगी और शीघ्र ही इस का समाधान [illegible] जायगा ।

सभा के अध्यक्ष श्री० एस [illegible] कुक्किल्लाया ने कृतज्ञता प्रकट की ।

कृतज्ञता भाषण दे रहे हैं श्री० एस. वी. कुक्किल्लाया,
अध्यक्ष, केरल हिन्दी प्रचार सभा ।

१९८० मार्च का स्वर्ण पदक एक अन्ध विद्यार्थी श्री० के. के. गोपी ने पाया। १९८१ मार्च का पदक कुमारी लेनी मोल जी. चिरयिल को मिला । (दोनों हिन्दी में शत प्रतिशत अंक पाकर मेट्रिक में उत्तीर्ण हुए ।)

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

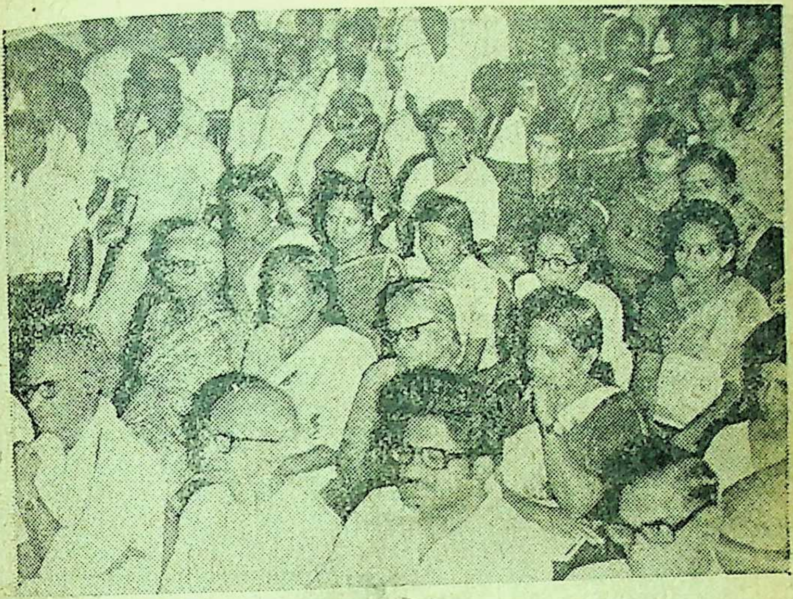

सुधी श्रोता। अग्रिम पंक्ति में संस्कृत के महाकवि प्रो० पी. सी. देवस्या और मलयालम के महाकवि श्री० एम. पी. अप्पन आदि

१९८० मार्च की स्व० बी. सरस्वती तंकच्ची स्मारक रोलिंग ट्रॉफी सरकारी मोडल बोय्स हाइ स्कूल, कुन्नमकुलम को और १९८१ मार्च की ट्रॉफी सेन्ट फिलोमिनास गर्ल्स हाई स्कूल, अर्पूकरा को मिली।

स्वर्णपदक विजेताओं को तिरुवनन्तपुरम के प्रमुख बर्तन व्यापारी श्री० पी. तंकप्पन तंपी की ओर से भी शील्ड दिये गये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

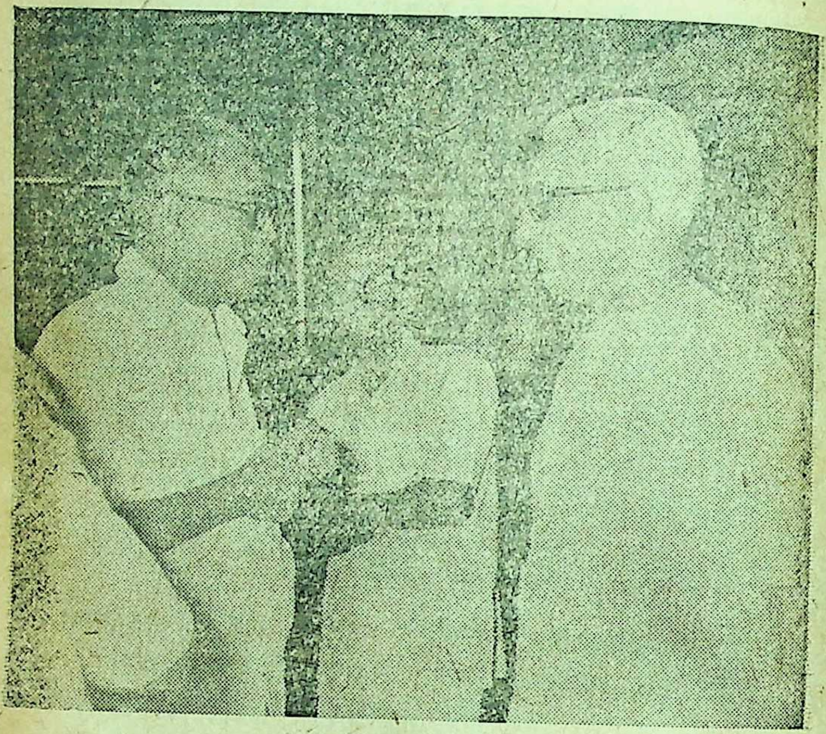

केरल हिन्दी प्रचार सभा की नयी योजनाओं पर सभा के अध्यक्ष श्री० एस. वी. कुक्किल्लाया और मंत्री श्री० एम. के. वेलायुधन नायर केरल के मुख्य मंत्री श्री० के. करुणाकरन से वार्तालाप कर रहे हैं।

सम्मेलन के बाद की सांस्कृतिक संध्या में श्रीमती सौम्य रथ ने हिन्दुस्तानी संगीत प्रस्तुत किया और उसके बाद कुन्नुकुषि टी. एम. डान्स अकादमी ने नृत्य प्रस्तुत किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी नयी पीढी का संबल है ।

सी. एम. स्टीफन

केन्द्र संचार मंत्री

स्व० वी. सरस्वती तंकची स्मारक स्वर्ण पदक वितरण समारोह में अभिनन्दन भाषण दे रहे हैं श्री० सी. एन. स्टीफन ।

भाइयो और बहनो,

आज हम एक अत्यन्त सन्तापजनक कर्म के लिए यहाँ सम्मिलित हुए हैं । हिन्दी प्रचार सभा के इस आँगन में खडे होकर हिन्दी की प्रधानता के बारे में बताने की आवश्यकता नहीं है । मैं अब तो एक हिन्दी प्रान्त वाला हूँ । कई कारणों से गत दस-बारह वर्षों से मैं उत्तर भारत में रहता हूँ ।

ऐसी एक धारणा है कि हिन्दी उत्तर भारत की भाषा है । यह धारणा भ्रामक है । भारत के किसी भी भाग में भ्रमण करना हो तो हिन्दी जानना अत्यन्त आवश्यक है । उत्तर भारत में तो पश्चिम से पूरब तक हिन्दी बोली जाती है । हाँ हिन्दी की शैली में कुछ प्रान्तीय भेद अवश्य मिलेंगे । कहीं उर्दू के शब्द अधिक मिलेंगे तो कहीं संस्कृत के शब्दों की बहुलता मिलेगी । उच्चारण में भी ऐसी भिन्नता पायी जायेगी । पर हिमालय की तलहटी से लेकर बंगाल तक हिन्दी से काम चल सकता है । मध्यप्रदेश में, और उडीसा में हिन्दी से काम चल सकता है । आन्ध्रप्रदेश में भी हिन्दी बोली और समझी जाती है । कर्नाटक में भी यही स्थिति है ।

उत्तर भारत में जब मैं अंग्रेजी में भाषण देने लगता हूँ तो लोग हिन्दी में बोलने की माँग करेंगे । तब मैं हिन्दी में भाषण देने लगता हूँ । गुलबर्गा में भी हिन्दी में भाषण देता हूँ । कहने का मतलब यह है कि तमिलनाड़ और केरल को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छोडकर बाकी सम्पूर्ण भारत में हिन्दी बोली जाती है ।

केरल के बच्चे यहीं रहकर जीविकोपार्जन नहीं कर पायेंगे । उन्हें बाहर भी जाना होगा ।

एक ज़माना था जब केरल के लोग अंग्रेजो में अधिक समर्थ थे । केरल के लोगों के लिए हिन्दी सीखना भी बहुत आसान है । क्यों कि कई संस्कृत शब्द मलयालम और हिन्दी में समान अर्थ में प्रयुक्त होते हैं ।

हिन्दी को अतिजीवन (Survival) की भाषा मानना चाहिए । तिल में तेल के समान हिन्दी बडी शीघ्रता के साथ फैल रही है । इसलिए बच्चों को मातृ-भाषा, राष्ट्रभाषा और विश्वभाषा इन तीनों भाषाओं में आवश्यक दक्षता प्रदान करनी है । तभी वे जीवन में सफलता पा सकेंगे ।

हिन्दी के प्रचार में केरल हिन्दी प्रचार सभा ने जो योगदान दिया है वह बहुमूल्य है । सभा के संस्थापक एवं प्रथम मंत्री स्व० के. वासुदेवन पिल्लै जी की लिखी हुई हिन्दी स्वयं शिक्षक मैं ने कई बार पढी है । इस पुस्तक के अध्ययन से मैंने थोडी बहुत हिन्दी सीखी है और मैं ने प्रतिज्ञा की है कि संसद की मेरी वर्तमान अवधि में ही मैं संसद में हिन्दी में बोलूंगा । हिन्दी में सामान्य प्रारंभिक परिचय पाने केलिए वह पुस्तक बहुत सहायक है केरल में हिन्दी का प्रचार करने केलिए ऐसी अनेकों सफल योजनाएँ कार्यान्वित करती रही केरल हिन्दी प्रचार सभा का मैं अभिनन्दन करता हूँ और आशा करता हूँ कि सभी लोग सभा के इन कार्यों को प्रोत्साहित करेंगे । मैं उन विद्यार्थियों का भी अभिनन्दन करता हूँ जिन्होंने आज पुरस्कार प्राप्त किये । वे गुरुजन भी अभिनन्दन के पात्र हैं जिन्होंने इन विद्यार्थियों को यह पुरस्कार पाने योग्य बनाया ।

हिन्दी को प्रमुखता देने से न हम हिन्दी के प्रति कोई उदारता प्रकट करते हैं न ही उत्तर भारत के प्रति उदारता दिखाते हैं बल्कि भारत की मुख्य जीवन धारा में प्रविष्ट होने केलिए नई पीढी को हम हिन्दी का संबल प्रदान कर रहे हैं ।

★

केरल में सागर लहराता था !

कहते हैं कि पश्चिमी (सह्य) पर्वतमाला के पश्चिम में आज जहाँ सागर लहराता है वहाँ लेमूरिया या गोण्टवाना नाम का स्थल था । कभी यह दो किलोमीटर तक नीचे दब गया और यहाँ सागर चढ आया । सह्यपर्वत से पश्चिम की ओर बहनेवाली नदियों से जो मिट्टी पहाडों से आयी उसी से वर्तमान केरल की भूमि धीरे धीरे उभर आयी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठ्यक्रम में हिंदी के स्थान पर विचार किया जायेगा ।

के. करुणाकरन

मुख्य मंत्री, केरल

स्व० वी. सरस्वती तंकच्ची स्मारक स्वर्ण पदक वितरण समारोह में केरल के मुख्य मंत्री श्री० के करुणाकरन का अध्यक्षीय भाषण । बैठे हैं—डा० एन. पी. पिल्लै (अध्यक्ष, राज्य शिक्षासलाहकार समिति, केरल) केन्द्र मंत्री श्री० सी. एम. स्टीफन और डा० शूरनाट्टु कुंजन पिल्लै ।

जैसे स्वागत भाषण में सभा के मंत्री श्री० एम. के. वेलायुधन नायर ने बताया केरल हिन्दी प्रचार सभा के कई कार्यक्रमों में भाग लेने का अवसर मुझे मिला है । केरल की जनता हिन्दी के स्थान के संबंध में और हिन्दी पढने की आवश्यकता के संबंध में पर्याप्त ज्ञान पा चुकी है । लेकिन हमारे लोगों की यह विशेषता है कि जिस बात को वे ठीक मानते हैं उस पर अमल नहीं करते । हिन्दी केवल एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देशीय भाषा ही नहीं बल्कि एक ऐसी भाषा है जो भारत के विविध भाषा भाषी प्रान्तों को एक सूत्र में जोडकर भारत की एकता को सुदृढ बनाये रख सकती है। राष्ट्रपिता गाँधीजी ने स्वतंत्रता संग्राम के समय जिन सृजनात्मक कार्यों की योजना बनायी उनमें हिन्दी का प्रमुख स्थान था। हिन्दी के उस स्थान को बनाये रखने और हिन्दी के प्रयोजनों से लाभान्वित होने का प्रयत्न व्यापक तौर पर होना चाहिए। ऐसा लगता है कि कुछ प्रान्त हिन्दी के इस विशेष स्थान से अपने स्वार्थ के लिए लाभ उठाना चाहते हैं।

सही ढंग से हिन्दी का अध्ययन करने में अन्य हिन्दीतर प्रान्तों की अपेक्षा केरल आगे रहा है। अखिल भारतीय स्तर पर चलाई जानेवाली कई हिन्दी प्रतियोगिताओं में केरल के छात्र प्रथम निकले हैं। लेकिन केरल में हिन्दी अध्ययन एव हिन्दी साहित्य सृजन केलिए उचित प्रोत्साहन नहीं मिल रहा है। वास्तव में जिस प्रकार धर्म के मामले में अल्प संख्यकों को संरक्षण दिया जाता है उसी प्रकार राजभाषा हिन्दी के मामले में भी दक्षिण भारत को अल्प संख्यक मानकर दक्षिण में हिन्दी अध्ययन को उचित प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए।

दक्षिण के कुछ प्रान्तों में हिन्दी विरोधी नीति अपनायी जा रही है। यह बिलकुल गलत है। संपर्क भाषा के रूप में हिन्दी को उचित स्थान देने के लिए सभी जनविभागों को मिलकर [illegible] करना है।

केरल के स्कूली पाठ्यक्रम में हि[illegible] का अंक एक सौ मे क्यों पच्चास [illegible] किया गया इस बात की मैं अवश्य [illegible] करूँगा और इस परिवर्तन के कारण [illegible] संबन्ध में सबन्धित अधिकारियों [illegible] विशेषज्ञों से विचार विमर्श करके [illegible] समस्या का उचित समाधान ढूंढने [illegible] प्रयत्न करूँगा।

यद्यपि हमने अंग्रेजी को सह-राज[illegible] का पद दिया है तो भी केरल [illegible] विद्यार्थियों के हित में यह आवश्य[illegible] कि उनको हिन्दी में सक्षम बनाने के लि[illegible] अभिभावक और अध्यापक विशेष ध्या[illegible] दें। हिन्दी को आज अध्ययन में अप्र[illegible] स्थान दिया जाता है उसके बदले हि[illegible] को प्रमुख स्थान दिया जाना चाहि[illegible] केरल हिन्दी प्रचार सभा जैसी संस्था[illegible] से मिलकर अन्य-शैक्षिक संस्थाओं [illegible] सरकार को इस दिशा में प्र[illegible] करना है।

हिन्दी में मेट्रिक में सर्वाधिक अंक [illegible] विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करने के लि[illegible] केरल हिन्दी प्रचार सभा ने यह [illegible] आयोजन किया उसके लिए मैं सभा [illegible] अभिनन्दन करता हूँ। जिन विद्यार्थियों [illegible] आज पुरस्कार प्राप्त किये उनका भी [illegible] अभिनन्दन करता हूँ। उन सभी हि[illegible] प्रचारकों को मैं साधुवाद देता हूँ [illegible] हिन्दी के प्रचार यज्ञ में लगे हुए हैं [illegible] राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार के लिए [illegible] मिलकर काम करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

सभी भारतीय भाषाओं से प्रेम करें ।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डा० शूरनाट्टु कुंजन पिल्लै

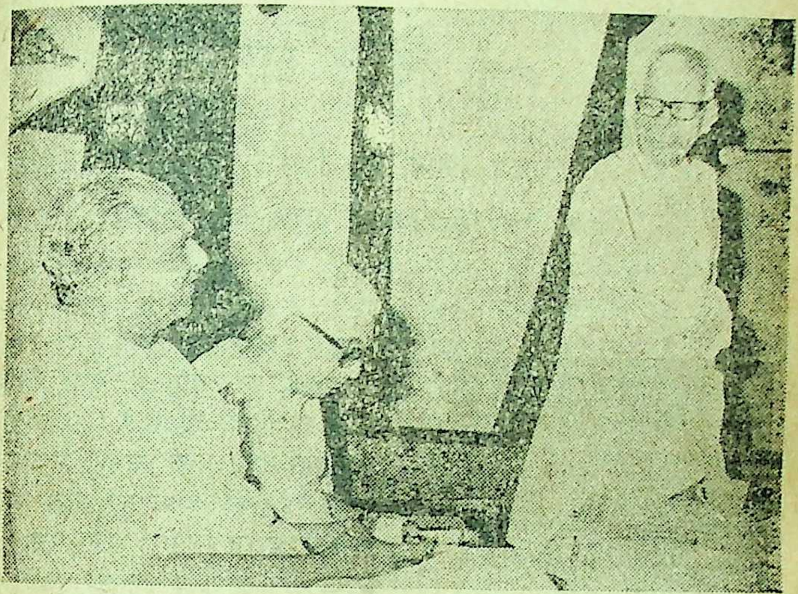

स्व० वी. सरस्वती तंकच्चो स्मारक स्वर्ण पदक वितरण समारोह में भाषण दे रहे हैं श्री० शूरनाट्टु कुंजन पिल्लै । बैठे है केन्द्र मंत्री श्री० सी. एम. स्टीफन और केरल के मुख्य मंत्री श्री० के. करुणाकरन ।

इस संस्था में आना ही मेरे लिये खुशी का कार्य है । ऐसे समारोह में भाग लेने पर मेरी खुशी हजारों गुना बढ जाती है । आज इस बात पर मुझे बडा सन्तोष हुआ कि एक अंधे विद्यार्थी ने पुरस्कार प्राप्त किया । उस विद्यार्थी का और पुरस्कार प्राप्त विद्यार्थिनी का मैं अभिनन्दन करता हूँ । इस समारोह का आयोजन करनेवाली केरल हिन्दी प्रचार सभा भी अभिनन्दन की पात्र है । श्री० तंकप्पन तंपी ने अपनी ओर से पुरस्कृत विद्यार्थियों को शील्ड़ प्रदान किया । इसके लिए मैं उनका अभिनन्दन करता हूँ ।

हिन्दी की आवश्यकता और महिमा के संबंध में केन्द्रमंत्री श्री० सी. एम. स्टीफन और केरल के मुख्य मंत्री श्री० के. करुणाकरन यहाँ बता चुके हैं । एक बात की ओर मैं आप का विशेष ध्यान आकृष्ट करना चाहता हूँ । मलयालम भाषी जनता और किसी भाषा से घृणा नहीं करती । चाहे हिन्दी हो, चाहे अरबी हो सभी भाषाएँ सीखने के लिए मलयालम भाषा भाषी तैयार हैं ।

(शेष पृष्ठ 21 पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी को पुनः उचित स्थान दिया जा सकता है।

डा० एन. पी. पिल्लै

अध्यक्ष, राज्य शिक्षा सलाहकार समिति, केरल

हिन्दी में अधिक अंक पाने के उपलक्ष्य में जिन विद्यार्थियों ने स्वर्ण पदक प्राप्त किये उनका मैं हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ। केरल की भाषा मलयालम संस्कृत शब्दों से भरी हुई है। जो संस्कृत जानते हैं वे हिन्दी आसानी से सीख सकते हैं। मलयालम भाषी छात्रों ने उत्तर भारत के कई विश्वविद्यालयों से उत्तम शोध प्रबंध प्रस्तुत करके डाक्टरेट की उपाधि पायी हैं। आज स्थिति यह है कि पच्चीस वर्ष तक की आयु के सभी शिक्षित मलयाली हिन्दी जानते हैं। गाँधीजी ने स्वतंत्रता संग्राम के समय जनता को हिन्दी पढने और चर्खा पर सूत कातने के लिए प्रेरित किया। एक प्रकार से हिन्दी और खादी से हमारी राष्ट्रीयता जुडी हुई है।

स्वागत भाषण में सभा के मंत्री श्री० एम. के. वेलायुधन नायर ने बताया कि केरल के स्कूली पाठ्यक्रम में हिन्दी का अंक एक सौ से घटाकर पच्चास करने का जो निर्णय लिया गया इससे स्कूलों में हिन्दी अध्ययन का स्तर बहुत गिर गया है। पाठ्यक्रम में जो परिवर्तन किया जाता है वह शाश्वत नहीं है। इस प्रगतिशील युग में नये नये विषय जन्म ले रहे हैं, ऐसे विषयों को पाठ्यक्रम में स्थान देने की जब बात आयी तब हिन्दी का कालांश और अंक कम किया गया। इस स्थिति में समय की माँग के अनुसार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आवश्यक परिवर्तन करना कठिन नहीं है। हम यह नहीं चाहते कि केरल में हिन्दी की प्रधानता कम की जाए। हमारे मुख्य मंत्री ने आज वादा किया है कि हिन्दी क अंक के सबंध में जो परिवर्तन पाठ्यक्रम में हुआ है उसकी वे जाँच करेंगे और आवश्यक सुधार लायेंगे। हिन्दी प्रचार के क्षेत्र में केरल हिन्दी प्रचार सभा अमूल्य सेवा कर रही है। इसके कार्यों में मैं यथाशक्ति योग देता रहा हूँ और आगे भी देता रहूँगा।

❀

(पृष्ठ 19 से आगे)

मलयालम अन्य सभी भाषाओं से प्रेम करती है और उनका स्वागत करती है। पर भारत के कई अन्य प्रान्तों में बात ऐसी नहीं। अपनी मातृभाषा से वे प्रेम करते हैं और अन्य भाषाओं का तिरस्कार करते हैं। मातृभाषा में भाव प्रकट करने की अधिक क्षमता पाना स्वाभाविक है। लेकिन अन्य भाषाओं में भाव प्रकट करना इतना आसान नहीं है। बचपन में विद्यार्थी आसानी से अन्य भाषाएँ सीख सकते हैं। माँ-बाप का यह कर्तव्य है कि वे अन्य भाषाएँ सीखने का अवसर बच्चों को प्रदान करें और उनमें उसकी रुचि उत्पन्न करें।

*

श्री० अनन्तगोपाल शेवडे पुरस्कार

हिन्दीतर भाषा-भाषियों की मौलिक हिन्दी रचना को प्रोत्साहित करने केलिए विख्यात पत्रकार, गाँधीवादी विचारक, स्वतंत्रता संग्राम के सेनानी एवं हिन्दी लेखक स्व० अनन्त गोपाल शेवडे के नाम पर ११००० रुपये का एक पुरस्कार देने का निर्णय नागपुर के नव समाज लि० ने किया है। १९८०, १९८१ और १९८२ में प्रकाशित पुस्तकों पर १९८३ में पुरस्कार दिया जायेगा।

विचारणीय पुस्तकों की चार चार प्रतियाँ सहित ३०-६-८३ तक निम्नलिखित पते पर आवेदन पहुँचा दें। श्री० अनन्त गोपाल शेवडे पुरस्कार नयोज, C/O नागपुर टाइम्स, रामदासपेठ, नागपुर-४४००१० संपर्क सूत्र: श्री० एम. वी. पांडेलकर, उप संपादक (वार्ता), नागपुर टाइम्स, रामदासपेठ, नागपुर-४४००१०।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्व० वी. सरस्वती तंकच्ची स्मारक स्वर्ण पदक वितरण समारोह की नृत्य संध्या (टी. एन. डान्स अकादमी द्वारा प्रस्तुत) (बायें से, प्रेमा विश्वनाथ, अनुराधा नायर, मिनी, अनुपमा श्रीनिवासन, तारा कल्याण ।

श्रीमती सौम्य रथ का संगीत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुराधा नायर (बायें) अनुपमा श्रीनिवासन (दायें)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुच्चुप्पुडी की मोहक मुद्रा में सीमा विश्वनाथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तारा कल्याण (बायें) और मिनी (दायें)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समारोह की नृत्य संध्या (टी० एम० डान्स अकादमी, कुन्नुकुषि, तिरुवनन्तपुरम द्वारा प्रस्तुत)

हिन्दुस्तानी संगीत की सुन्दर प्रस्तुति के उपलक्ष्य में केरल हिन्दी प्रचार सभा का उपहार भेंटकर रहे हैं श्री० के. श्रीनिवासन (सचिव, उच्च शिक्षा विभाग, केरल सरकार)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी प्रचार में केन्द्रीय हिन्दी संस्थान की भूमिका

पी. के. थुंगन

उपमंत्री, शिक्षा तथा संस्कृति मंत्रालय,
भारत सरकार

केन्द्रीय हिन्दी शिक्षण मण्डल के सदस्यो और उपस्थित अधिकारियो, मण्डल की इस बैठक में मैं आप सब लोगों का हृदय से स्वागत करता हूँ।

मण्डल के द्वारा चलाया जाने वाला संस्थान अब अपने २१ वर्षों से भी अधिक पूरा कर चुका है और न केवल भारत में ही बल्कि भारत से बाहर के देशों में भी इसके द्वारा किए जाने वाले कार्य की सराहना की जाने लगी है। प्रारंभ से ही संस्थान अपना काम अहिन्दी भाषा प्रदेशों में ही ज्यादा करता आया है। यह हिन्दी का विकास उन प्रदेशों के लोगों की आवश्यकता, इच्छा और सहायता के आधार पर ही होनी चाहिए।

हिन्दी के प्रचार-प्रसार का यह काम किसी सीमा तक लोगों में हिन्दी के लिए उत्साह पैदा करने और उनके द्वारा हिन्दी को स्वीकार किए जाने का है और इसके लिए शिक्षण-प्रशिक्षण की सुविधाएँ, आवश्यक शैक्षिक सामग्री का निर्माण और हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं और साहित्यों के तुलनात्मक अध्ययन का है। मण्डल के द्वारा चलाया जानेवाला

बात समझ में भी आती है। अगर अपने देश की राजभाषा के रूप में हिन्दी का विकास होना है और उसके उपयोग से देश के अलग-अलग भागों के लोगों को एक साथ जोडना है तो यह काम तभी किया जा सकता है जब अहिन्दी भाषी लोगों में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा मिले और हिन्दी के अध्ययन और अध्यापन के लिए पूरी पूरी सुविधाएँ इन क्षेत्रों में पैदा की जाएँ। केन्द्रीय सरकार यह मानती है कि अहिन्दी भाषी क्षेत्रों में यह केन्द्रीय हिन्दी संस्थान इसी प्रकार का शिक्षण-प्रशिक्षण और अनुसंधान का काम करता है। प्रारंभ से ही संस्थान अध्यापक प्रशिक्षण का कार्य एक बडे पैमाने पर करता रहा है। आज भी न केवल बी. एड. के स्तर का 'पारंगत'' पाठ्यक्रम और एम. एड. संस्थान में चलाया जाता है बल्कि उत्तरपूर्व के विभिन्न राज्यों के अनुरोध पर उनके अध्यापकों के प्रशिक्षण के लिए कई कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। इसके अलावा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऋग्वेद में केरल का जिक्र

ऋग्वेद में लिखा है कि तीन जन-विभागों ने अग्नि का निषेध किया था—वापस, बंगामाधव और चेरपाद। माना जाता है चेरपाद तो केरलीय ही थे।

संस्थान के हैदराबाद और गुवाहाटी केन्द्रों में और आगरा में भी कई स्तरों के अध्यापकों के लिए नवीकरण पाठचक्रम चलाए जाते हैं जिनमें स्कूली अध्यापकों से लेकर विश्वविद्यालयी अध्यापकों तक सभी तरह के अध्यापक जाते हैं। मध्य-प्रदेश सरकार के अनुरोध पर संस्थान ने मध्यप्रदेश की ५ जनजाति भाषाओं के बच्चों के लिए उनकी मातृभाषा और हिन्दी में जो द्विभाषी अध्यापन सामग्री बनाई वह एक प्रशंसनीय कार्य है।

हिन्दी के काम की कई दिशाएँ हैं और कई स्तर। कोई एक संस्थान न तो सब काम कर सकता है और न ऐसी आशा करना उचित होगा। हमारी सरकार ने अलग-अलग प्रकार के काम के लिए अलग-अलग प्रकार की संस्थाएँ बनाई हैं। संस्थान से हम प्रशिक्षण और अनुसंधान का काम करने की अपेक्षा करते हैं। संस्थान के अलावा केन्द्र सरकार स्वैच्छिक संस्थाओं को भी इस दिशा में कार्य करने के लिए काफी सीमा तक अनुदान देती है। आप लोगों में से कई ऐसी संस्थाओं के कुछ प्रतिनिधि इस बैठक में उपस्थित भी हैं जिन्होंने हिन्दी के विकास में ऐतिहासिक महत्व का काम किया है।

संस्थान के द्वारा ऐसा प्रशिक्षण और अनुसंधान का काम किया जाना चाहिए जो वास्तविक प्रयोग और संपरीक्षण के आधार पर विकसित किया जाए और जो आदर्श के रूप में अन्य संस्थाओं के लिए काम दे सके।

हिन्दी अध्यापकों के प्रशिक्षण के स्तर को ऊँचा उठाने और समान स्तर पर बनाए रखने के लिए यह अच्छा होगा कि केवल उत्तर-पूर्व के राज्यों को ऐसी संस्थाएँ भी संस्थान के साथ शैक्षिक संबंध स्थापित कर लें। इससे देश में हिन्दी के अध्ययन अध्यापन का स्तर ऊँचा होगा ऐसा मैं मानता हूँ।

एक बार फिर आप सबका स्वागत करते हुए मैं यह विश्वास प्रकट करता हूँ कि आप सब लोगों की सहायता और सलाह से संस्थान का कार्य बराबर बढ़ेगा और संस्थान अपने देश में ही नहीं वरन् विदेशों में भी अपने ढंग के एक अनूठे संस्थान के रूप में विकसित होगा।

केन्द्रीय हिन्दी शिक्षण मंडल की बैठक में ३-७-८२ को दिया गया अभिभाषण।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या साहित्य में प्रतिबद्धता वांछनीय है ?

तंकप्पन तुम्पमण, एम. ए.

प्रतिबद्धता शब्द का उपयोग भारतीय भाषाओं में अक्सर अंग्रेजी के कमिटमेन्ट के अर्थ में होता है। इस प्रकार की प्रतिबद्धता स्वयंकृत है, अन्यकृत नहीं या दूसरों की प्रेरणा से अपनायी गयी भी नहीं। ऐसा महसूस होता है कि साहित्य में प्रतिबद्धता से भी अच्छा प्रयोग प्रतिज्ञाबद्धता शब्द है। क्या साहित्य में प्रतिबद्धता अनिवार्य है ? थोडा विचार करें।

कला कला के लिए या जीवन के लिए ? बहुत पुराना यह सवाल प्रतिबद्धता नाम धारण करके आज आलोचकों और साहित्य-प्रेमियों को परेशान करता है। भारतीय काव्याचार्यों ने कभी भी काव्य की प्रतिबद्धता को नगण्य नहीं माना। उनके अनुसार काव्य के गुण-पक्ष हैं और कोई न कोई प्रतिबद्धता भी। आधुनिक परिप्रेक्ष्य में देखें तो एक मंच के साहित्यिकों के अनुसार आदर्श को साहित्य में कोई स्थान नहीं है। उनके अनुसार यदि साहित्यकार आदर्श को मान लें तो उनकी कला-संबंधी मान्यतायें विकल हो जायेंगी। दूसरे पक्ष के अनुसार आदर्श की परंपरा सिद्धि रचना के चयन को बाधा नहीं डालती है, क्योंकि साहित्य हमेशा जीवन से संलग्न होकर रहता है, विलग्न होकर नहीं।

जनवादी लेखन

आधुनिक बोध युगीन चेतना का बोध है। पिछले युगों की सापेक्षता में हर नये युग का सर्जक कवि या कलाकार आधुनिक बोधवाला होता है। साहित्य का मूल संबंध मानव की संवेदना से है। संवेदना के बिना साहित्य नहीं बनता। सुख-दुख, राग-विराग, सौंदर्य-असौंदर्य की संवेदना प्राचीन और चिर-नवीन है। इन संवेदनाओं को जाग्रत रखनेवाले उपादान बदलते रहते हैं और सामाजिक संबंधों की जटिलता के अनुसार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संवेदनाओं में जटिलता आयी रहती है। आज की संवेदनायें उलझी हुई हैं। इन संवेदनाओं को उनकी समस्त गहनता, सच्चाई और तीव्रता में पकड़कर उन्हें चित्रित करना सर्जक का मूल धर्म है। संवेदना को उसके आधुनिक परिप्रेक्ष्य में समझना और अंकित करना भी आधुनिक बोध ही कहा जाना चाहिए।

इस आधुनिक बोध के परिप्रेक्ष्य में जनवादी लेखन से तात्पर्य यह नहीं कि ऐसा साहित्य किसी पार्टी की नीतियों को लागू करने के लिए ही रचा जाये। न ही पार्टी और साहित्य एक दूसरे के पर्याय हैं और न साहित्य राजनीति का अनुवाद है। लेकिन साहित्य समाज का दर्पण है। फ्रांस के सामाजिक जीवन के बारे में वहाँ के समाज-शास्त्री और इतिहासकार जितना बता सकता है, उससे अधिक बालसाक् की रचनाओं से हम को मिलता है। इसी प्रकार बीसवीं शताब्दी के आरंभ में, रूस में, सार के शासनकाल में जो कुरीतियाँ चल रही थीं ये और वहाँ के विप्लव की ओर उन्मुख मजदूरों की आशा-आकांक्षाओं का सही प्रतिफलन माक्सिम गोर्कि की 'माँ' में देख सकते हैं। टालस्टाई कृत 'वार एन्ड पीस' षोलाखोव कृत 'क्वयट फ्लोस दि डोन', रोमो रोलाड़ कृत 'षानी क्रिस्टोफ़', टागोर कृत 'गोरा', प्रेमचन्द कृत 'रंगभूमि', चंतुमेनन कृत 'इन्दुलेखा', तकषी कृत 'दो सेर धान' और कालिदास, शेक्सपियर, बरनाड़शा के नाटक आदि सब ऐसी श्रेष्ठ कृतियाँ उन कृतिकारों के समय के समाज का दर्पण है।

ग्राम जनता और साहित्य

व्यक्ति ही समाज है, समाज ही व्यक्ति हैं। यदि व्यक्ति समाज का मूल है तो समाज व्यक्ति की शक्ति है अतः दोनों के संघर्ष और द्वंद्व की प्रक्रिया व्यर्थ नहीं, सामान्य जन की जड़ को हिलाकर उसकी शक्ति का विनाश करने वाली भी हैं। साहित्यकार एक दृष्टा के रूप में इस सत्य को पहचानता है। व्यक्ति और समाज के समस्त संघर्षों एवं द्वंद्वों के मध्य में स्थित होकर वह उनके वेग को शक्ति प्रदान करता है और उनके विनाशकारी प्रभावों को रोकता है। साहित्यकार की समस्त साधना का परम श्रेय सामान्य जन ही है जिसके हितार्थ वह व्यक्ति और समाज के संघर्षों एवं द्वंद्वों में मध्यस्थता करता हैं। साहित्य का उद्देश्य सांस्कृतिक परिष्कार है, मानसिक परिष्कार है। जनता के साहित्य का अर्थ है जनता के लिए रचित साहित्य अथवा ऐसा साहित्य जो जनता के जीवन मूल्यों को, जनता के जीवनादर्शों को प्रतिष्ठित करोकर उसे अपने मुक्ति पथ पर अग्रसर करनेवाला है। तब साहित्य जीवनोपयोगी बन पड़ता है क्योंकि साहित्य का अध्ययन एक प्रकार से जीवन सत्ता का अध्ययन है। अंग्रेजी में साहित्य को यही मान्यता दी गयी है कि काव्य जीवन से रचा जाता है, जीवन का है और जीवन केलिए है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मार्क्सवाद और प्रतिबद्ध साहित्य

मार्क्सवाद संसार की महान शक्तिशाली विचारधाराओं में से एक है। भौतिकवादी जीवन दर्शन होने पर भी कला, साहित्य और संस्कृति तक उसके प्रभाव से मुक्त नहीं है। मार्क्सवादी जीवन दर्शन वह जीवन सूत्र है जो समाज के ऐतिहासिक, राजनीतिक और आर्थिक पक्षों से लेकर सांस्कृतिक और साहित्यिक पक्षों तक में एक सूत्रता स्थापित कर देता है। साहित्यिक रचनाओं को मार्क्सवादी दृष्टि से या मार्क्सवादी सौन्दर्यशास्त्र के अनुसार देखने परखने का प्रयास भारतीय भाषाओं में आजकल बहुत अधिक मात्रा में हो रहा है। मार्क्सवादी विचारधारा के अनुसार काव्य वस्तु का मूल स्रोत समाज है। काड़वेल की प्रसिद्ध उक्ति यहाँ स्मरणीय है। "कला समाज से उसी भाँति उत्पन्न होती है जैसे सीपी से मोती।"

मार्क्सवाद का सारांश यह है कि मनुष्य ही सर्वोपरी है और समस्त विश्व के विकास का मूल कारण द्वंद्वात्मकता है। मार्क्स और एँगल्स के अनुसार "द्वंद्व बाह्य जगत और मानव के वैचारिक जगत की गतियों के नियमों का विज्ञान है" उनके अनुसार कला और साहित्य के ही नहीं राजनैतिक, दार्शनिक और धार्मिक बिचारों और धारणाओं के विकास का आधार भी मानव का आर्थिक जीवन ही है और काव्य का सृष्टा कोई स्वप्न दृष्टा नहीं बल्कि दैनंदिन जीवन के संघर्षों में संलग्न आर्थिक परिस्थितियों से पूर्णत: प्रभावित और उनसे जूझता हुआ यथार्थवादी मानव है। साहित्य की सृजन भूमि जीवन है और जीवन के विकास और उन्नयन के लिए साहित्य का अनुदान भी कम नहीं।

मार्क्स का समस्त चिंतन बस एक ही लक्ष्य से प्रतिबद्ध था—मानव द्वारा मानव के शोषण से मानव की मुक्ति। मार्क्स और एंगल्स के अनुसार श्रम और वर्ग संघर्ष, काव्य की मूल प्रेरणायें हैं। काव्य की उत्पत्ति के संबंध में अपनी मान्यता प्रस्तुत करते हुए मार्क्स ने सिद्ध किया है कि काव्य मानव के सामूहिक श्रम की उपज है। श्रम के अतिरिक्त मार्क्स और एंगल्स ने, सर्जन की प्रक्रिया में मानव की सौंदर्य भावना को काफी महत्व दिया। सौंदर्य की अनुभूति समाज के सामूहिक विकास पर अवलंबित है।

राजनैतिक और आर्थिक आंदोलनों के बीच उत्पन्न 'प्रगतिवाद' ने संपूर्ण भारतीय साहित्य को कुछ समय के लिए प्रभावित किया। प्रगति का अर्थ आगे बढना अवश्य है। लेकिन एक विशेष कार्य से एक विशेष दिशा में। डा० मुल्कराज आनंद, सज्जाद जहीर, भवानी भट्टाचार्य आदि लेखकों ने लंदन में भारतीय प्रगतिशील संघ को स्थापना की। इसका प्रथम अधिवेशन लखनऊ में प्रेमचंद की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। यह सब पुरानी बात है। फिर भी प्रगतिशील लेखक संघ की आवश्यकता आज भी है क्यों कि जब एक ओर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्यिकों की संख्या बढ़ती जा रही है तब दूसरी ओर संवेदनीयता और प्रेषणीयता का गुण घटता जा रहा है। मार्क्सवादी दर्शन अपनानेवाला कवि अप्रतिबद्ध रह नहीं सकता। पर जीवन के प्रति प्रतिबद्ध साहित्य के सभी रचयिता मार्क्सवादी नहीं। जीवन के प्रति प्रतिबद्ध होना ही बड़ा कार्य है। तब अच्छा साहित्य साहित्यकार की कलम से निकलेगा।

शोध छात्र, विश्वविद्यालय ग्रंथालय
केरल विश्वविद्यालय
तिरुवनन्तपुरम

पेरार और पेरियार

केरल की सबसे बडी नदी है पेरार। इसे भारतप्पुषा, पोन्नानिप्पुषा, नीला नदी और नीळा नदी भी कहते हैं। इसकी लंबाई २६० किलोमीटर है।

पेरियार केरल की एक पवित्र नदी है। इसी के किनारे कालटि नामक स्थान में जगद्गुरु शंकराचार्य का जन्म हुआ था। पेरियार को चूर्णि भी कहा जाता था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखकबीरारोया ककु

नीड का निर्माण

छुट्टी का दिन था । कमरे में बैठकर कुछ पढ रहा था । झट, खिटकी से एक छोटी सी चिडिया अन्दर आयी । वह अपनी चोंच में एक तिनका दबाए हुए थी । दीवार से लगकर जो अलमारा थी उसके एक कोने में वह जा बैठी, तिनका वहीं डालकर उड बाहर गयी । दुबारा भी वह आयी, तब भी उसकी नन्हीं सी चोंच में तिनका था । मैं उस ओर अधिक ध्यान न दिया । कई बार वह आयी और गयी ।

दो तीन दिन बाद मुझे पता चला कि वह छोटी-सी चिडिया तिनका तिनका चुन चुनकर अपनी एक नगरी बसा रही थी । एक अच्छा खासा नीड उस अलमारी के ऊपर बन गया था ।

X X X X

दैनिक खोलकर पढा तो उसमें दिल्ली में बनने वाली फ्लाई-ओवर के किसी भाग के टूट जाने तथा कुछ लोगों के घायल हो जाने की वार्ता तथा उसके चित्र दिखाई पडे । कुछ दिन पहले और एक वार्ता दिखाई पडी थी । एशियाई खेल के सिलसिले में दिल्ली में बनने वाली फ्लाई-ओवरों के लिए अर्जित भूमि में रहने वाले लोगों के पुनरधिवास की समस्या को लेकर बहुत कुछ लिखा गया था ।

X X X X

१९८२ नवंबर से प्रारंभ होने वाले नवम एशियाई खेल के लिए करोडों रुपयों का खर्च हो रहा है । इस समस्या को लेकर आँसू बहानेवालों को भी देखने को मिला । भारत की दरिद्रता को बढा चढाकर दिखाने में उन्हें आनन्द होता है । तभी तो वे अपने पक्ष को सबल दिखा सकते हैं । अपने देश की गरीबी पर रोते हैं और कहते हैं कि एशियाई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खेल के लिए जितने करोड़ खर्च किये जा रहे हैं वह अनावश्यक है ।

X X X X

जो माँ बाप अपने बच्चों की भूख मिटाने के लिए सारा धन खर्च करते हैं, वे उनके भविष्य का निर्माण कैसे कर सकेंगे ? योजना बद्ध कर्म पद्धति से भूख भी मिटायी जा सकती है, भविष्य का निर्माण भी हो सकता है ।

X X X X

दिल्ली में विगत बीस महीनों में एक महान यज्ञ—राष्ट्र निर्माण यज्ञ चल रहा है । सिरी फ़ोर्ट के आसपास की सैंकडों एकड भूमि को, जहाँ झाडियाँ और झुरमुटें थीं, गड्ढे-खंदक रहे, नया रूप दिया गया है । उसी वीरान-सुनसान जगह में आज एक नयी नगरी बन गयी है—सैंकडो नये नये मकान, नयी नयी सडकें, नये नये उद्यान, नये नये पेड पौधे । इसी को एशियाड नगरी कहते हैं । नब्बे दिनों की समय सीमा रखकर इन घरों का निर्माण हुआ था जो सचमुच प्रशंसनीय है ।

दस-बारह महीनों के अन्दर अन्दर दिल्ली के विविध विभागों में छः सात फ्लाई ओवर सडकें बन गयीं । लोधी रोड के निकट ७५ हज़ार लोगों को समाने की असाधारण क्षमता रखनेवाली जो स्टेडियम (जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम) बनायी गयी है वह सारे भारत के लिए एक महान देन है । इन्द्रप्रस्थ की ऐतिहासिक भूमि में जो इनडोर स्टेडियम बन गया है वह एशिया का सर्वप्रथम है – विश्वभर के तीन-चार में से एक है । जैसे जायसी ने पद्मावत के प्रार्थना खंड में कहा है कि स्तंभ एवं अवलंब के बिना सृष्टिकर्ता ने आकाश रूपी छत्त को रख दिया है, ठीक वैसे ही इस इन्डोर स्टेडियम की छत भी बनी है । उसके निकट 'यमुना वेलोड्राम' नामक स्टेडियम बना है । तालकटोरा में तैराकी के लिए तालाब बना है । इस प्रकार दिल्ली के कोने कोने में निर्माण कार्य चल रहे हैं देश का निर्माण। इस निर्माण यज्ञ में लगे हुए लोग साधारण कुली से लेकर तकनीकी परामर्श देनेवाले उन्मुक्त तल के वैज्ञानिक तक भारत की जनता के धन्यवाद के पात्र हैं । क्यों कि रात-दिन उन्हें एक ही एक चिन्ता है, एक ही एक धुन है, एक ही एक लक्ष्य है —निश्चित अवधि में निर्माण पूरा करना । निश्चित अवधि का कर्म तो यज्ञ भी हो सकता है । इसलिए यह भी यज्ञ है, महान यज्ञ है—राष्ट्रनिर्माण का यज्ञ।

श्रीमती इन्दिरा गाँधी जब पुनः सत्ता पर आयी १९८० में, तब अनिश्चित पडी नवम एशियाड की कल्पना को पुनः स्वरूप देने का निर्णय लिया और तब से यह निर्माण का यज्ञ चल रहा है ।

X X X X

१९५१ में राष्ट्र शिल्पि जवाहरलाल नेहरू ने जिस महान लक्ष्य की पूर्ति के लिए एशियाई खेलों का प्रारंभ भारत में किया था उस लक्ष्य के निकट तक पहुंचने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के लिए इक्कीस वर्षों के बाद आज हमारा राष्ट्र प्रयत्नशील है ।

इतने सीमित काल में इतनी महान उपलब्धियाँ-यह शायद ही किसी अन्य राज्य में संभव हो सकती है । ये उपलब्धियाँ भारत की तरुण पीढी के लिए उपयोगी होंगी । उनके उज्वल भविष्य की नींव बनकर ये एशियाई खेल-केन्द्र उन्हें कितनी ही नयी नयी उपलब्धियों की ओर ले जा सकेंगे । यह भारत की तरुण पीढी के उज्वल भविष्य का निर्माण है ।

X X X X

कमरे के कोने से "च्वीं च्वीं" आवाज़ निकली । उत्सुकतावश देखा —दो तीन नन्हीं सी चोंचें खुली हुई हैं । माँ उन चोंचों में अपनी चोंच लगाकर उन्हें खिला रही है । नयी पीढी की, परवरिश!

सोचा—यदि नीड का निर्माण न होता .....तो···?

❀

केरल की झीलें

केरल के पश्चिमी समुद्रतट से लगी हुई कई छोटी बडी झीलें हैं । इन की कुल विस्तृति ६६६ वर्ग किलोमीटर है । सब से बडी झील वेम्पनाट्टु कायल है जिस की विस्तृति ३०० वर्ग किलोमीटर है । दूसरा स्थान अष्टमुटि कायल का है जिसकी विस्तृति ५५ वर्ग किलोमीटर है ।

हुँए,
मारी से
हँसते जीवन
ला" कहा है ।
पुस्तक की महत्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुक्तक

बालकृष्ण मिश्र

उम्र दरिया के किनारों की तरह कटती रही
या कि पखवारे के चन्दा की तरह घटती रही,
कभी दहला कभी बादशाह कभी गुलाम बना
जिन्दगी ताश के पत्तों की तरह बटती रही ।

आज कुछ इस तरह से याद तुम्हारी आई
गुलाब छू गई जैसे सुबह की पुरवाई,
रुपहले बादलों से फूट चली एक किरण
दूर शीशे मे जैसे झलके तेरी परछाई ।

मुस्कराने केलिये एक सुमन काफी है
अशीष पाने को बस एक नमन काफी है,
एक ही तार से वीणा का स्वर संवरता है
दिल दुखाने के लिये एक चुभन काफी है ।

नयन का सूखा हुआ नीर लिये लेता हूँ
मन की उठती हुई सब पीर लिये लेता हूँ,
मै अकिंचन हूँ भला बदले में क्या दूँ तुमको
गीत में प्राण की तस्वीर दिये देता हूँ ।

❀

सदर अस्पताल के सामने
रायबरेली

सम
जो
स्टेडियम
के लिए एक
की ऐतिहासिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'शुचि स्मिता'

संपादक : जवाहर चौधरी

प्रकाशक : शब्दकार

१२०३, गली उकीतान,
तुर्कमान गेट,
दिल्ली—११०००६

पृष्ठ : २४६

मूल्य : २५ रुपये

श्री० विष्णु प्रभाकर को एक पत्र में, श्री० के. जी. के. पिल्लै ने लिखा था—"सालों पहले श्री० एम. के. वेलायुधन नायर जी के निवास-स्थान पर जब हम दोनों बातें कर रहे थे तब आपकी धर्म-पत्नी—आपकी अर्धांगिनी स्वर्गीय तंकची के साथ 'नमस्ते' शब्द के साथ हाथ जोड़े सामने प्रत्यक्ष हुई थी। मुस्कान की आभा में आलोकित वह भव्य मुख? अभी मैं कल्पना में देखता हूँ। कुलीनता और शालीनता का वह प्रतीक आपके जीवन-पथ को सदा सर्वदा आलोकित किया करे, यही प्रार्थना है।"

श्रीमती सुशीला देवी प्रभाकर ४ जनवरी १९८० को इस असार संसार को त्याग गयीं, और उनकी मृत्यु पर ऐसे ही अनेक पत्र, उनके पतिदेव—हिन्दी के ख्यातनाम लेखक, विचारक, कहानीकार और नाटककार—विष्णु प्रभाकर को मिले थे, जो इस पुस्तक में संकलित हैं। किंतु इसकी विशेषता है, स्वयं विष्णुजी द्वारा अपनी पत्नी के जीवन पर ४४ पृष्ठों में प्रकाश डाला जाना और 'मृत्यु से साक्षात्कार', 'लेखक की पत्नी', 'अर्धांगिनी मेरी' शीर्षकों के अंतर्गत लिखा जाना। स्वयं सुशीलाजी के विचार उन्हीं के शब्दों में दिये गये हैं।

"शुचि स्मिता" में इनके अतिरिक्त ४२ लेखक-लेखिकाओं के निजी संस्मरण हैं। एस. रमादेवी ने अक्तूबर १९७१ के मद्रास में चलाये गए नवलेखकों के एक शिविर में हुई उनकी भेंट और बाद की आत्मीयता का जिक्र किया है। पोरबन्दर (गुजरात) की डॉ० (श्रीमती) राज आनन्द ने फरवरी १९७९ के अपने संस्मरण लिखे हैं, तो १९३८ से ही विष्णुजी के परिचित—श्री० कांतिचन्द सौनरेक्सा ने इतने वर्षों की याद दुहरायी है। आशारानी व्होरा ने १९५७ में हुई पहली मुलाकात का जिक्र करते हुए, दिल्ली में उनको कैंसर की बीमारी से पीडित होने पर भी हँसते-हँसते जीवन बिताने का नाम 'सुशीला' कहा है। एक दर्जन चित्र देने से पुस्तक की महत्ता बढ़ गयी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री० रं. शौरीराजन ने अपने संस्मरण में लिखा है: "हर दीपावली के शुभ अवसर पर तुम बरबस याद आती हो। तुम्हारी शुचि स्मिता छवि हमेशा-हमेशा के लिए स्मृति-पटल पर गहराई से अंकित है। फिर भी इस शोभव्य पर्व पर तुम हावी हुई हो......।" इसी प्रकार, स्वामी सुन्दरानन्दजी, जैनेन्द्र कुमार, यशपाल जैन, रावी, क्षेमचन्द सुमन, सरला अग्रवाल, डॉ० माजदा असद, बालकवि वैरागी, देवराज दिनेश, सुरेशराम भाई, गोपाल प्रसाद व्यास के संस्मरण मार्मिक हैं।

इन पंक्तियों के लेखक को भी उनका मधुर सान्निध्य मिला था। अब वे नहीं रहीं। नाशवान शरीर है, किंतु आत्मा अमर। सुशीलाजी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व भुलाये भी भुलाया नहीं जा सकेगा। मुरलीधर दिनोदिया ने (पृष्ठ १६८) विष्णु प्रभाकर को उनके संस्मरण लिखने का सुझाव दिया था, जो "नवनीत" (जुलाई १९८२) में छपे और उनकी दूसरी वर्षी पर यह भेंट मिली।—"......और अब यह पुस्तक निकल रही है। अखिल हिन्दी जगत् में अपनी किस्म का यह प्रथम आयोजन है।"

अखिल विनय
पो० बॉ०–७७४६
बम्बई, ९२

❀

केरल की विस्तृति

दक्षिण से उत्तर तक केरल की लंबाई ५०० किलोमीटर है। चौड़ाई औसतन ५० किलोमीटर है। केरल की विस्तृति ४१७६४ वर्ग किलोमीटर है।

चीन और केरल का पुराना संबंध

ईसा की प्रथम शताब्दी में चीन के सम्राट का दूत कालीमिर्च की माँग करने के लिए केरल आया था। सन् १२२५ के करीब कालिकट के सामूतिरी ने चीन के व्यापारियों को बुलवाने के लिए दो दूतों को चीन भेजा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बोधकथा

बंधुवा नौकर

मोतीलाल सुराना

सेठजी ने रामू को आवाज लगाई तो रामू उनके हाथ जोड़कर खड़ा हो गया।

रामू: क्या तू जानता है कि आज मेरा जन्म दिवस है, सेठजी ने रामू से पूछा, तो रामू ने कहा—जी, सेठ साहब, मुझे सवेरे पांच बजे उठाया तथा झाडु निकालने, गरम पानी करने के लिये सेठानीजी ने कहा तो मैं समझ गया कि कोई त्योहार है, पर सेठानी जी ने मेरी शंका का समाधान करते हुए बतलाया कि आज आपका जन्मदिन है।

रामू के पिताजी ने सेठजी से कर्ज लिया था, पर वह कर्ज वापस न कर सका। जीवन के अंतिम दिनों में रामू को सेठजी को सौंपते हुए रामू के पिताजी ने रोते हुए कहा था— इसे कर्ज के बदले आपको सौंपता हूँ। जीवन भर यह आपकी सेवा करेगा। तब से रामू सेठजी के यहाँ रात-दिन ईमानदारी से सेवा कर रहा है। सेठजी रामू की सेवा से अत्यधिक खुश थे।

सेठजी ने रामू से कहा—आज तुझे जो भोजन में अच्छा लगता है, वहीं चीज चौके में बनवाऊँगा। बोल तुझे क्या अच्छा लगता है? इस पर रामू बोला—हुजुर! आपके यहां से जो रोज-रोज मुझे खाने को रोटी-दाल मिलती है, वह मुझे पकवान जैसी लगती है। मैं अपनी क्या पसंद बतलाऊँ। अच्छा, आज के इस खुशी के मौके पर मैं तेरे लिये अच्छी से अच्छी ड्रेस सिलवाना चाहता हूँ, सेठजी ने पूछा - बोल तुझे लम्बा कोट पसंद है या जोधपुरी कोट! रामू क्या कहता? बोला - आप जो आपका कुरता-धोती मुझे पहनने को देते है वह मेरे लिये दरबार में जाने की पोषाक के बराबर है, मुझे कुछ नहीं चाहिये। आप के दरबार में मुझे बहुत संतोष है, बहुत सुख है।

इस प्रकार का जवाब सुनकर सेठ ने रामू को गले लगाने के लिये दोनों हाथ फैलाये तो रामू दो कदम पीछे हट गया। बोला—मालिक आप यह क्या कर रहे हैं। यह सुनकर सेठजी को और कुछ न सूझा। वे रामू के पैरों में पडकर रोने लगे, बोले—मेरे गुरू! तू ने आज मुझे सच्चा सबक सिखाया। संतोष से बढ़कर दूसरा कोई सुख नहीं। सेठ संतोष सागर में गोते लगाने लगा।

१७/३ इन्दोर

❀

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

झरोखा

कथाकलि अमेरिका में

केरल कलामण्डलम के कथाकलि नर्तकों का एक संघ अमेरिका केलिए रवाना हुआ है। ये कलाकार अमेरिका में कथाकलि प्रस्तुत करेंगे और कथाकलि संबंधित कार्यशिविर आयोजित करेंगे।

इरयिम्मन तंपी का २०० वां जन्मदिवस

केरल के प्रसिद्ध संगीतकार इरयिम्मन तंपी का २०० वां जन्म-दिवस मनाने केलिए केरल सरकार ने केरल संगीत नाटक अकादमी को दस हजार रुपया अनुदान दिया है।

कैरली हिन्दी कार्य शिबिर

मलयालम के प्रसिद्ध महाकवि कुमारन आशान की रचनाओं का हिन्दी अनुवाद तैयार करने के लिए आशान मेमोरियल असोसियेशन के तत्वावधान में एक कैरली-हिन्दी कार्य शिविर आयोजित होनेवाला है।

एमर्सण की मृत्यु शताब्दी

राल्फ़ वालडो एमर्सण की मृत्यु शताब्दी इस वर्ष मनायी जा रही है। १८०३ में बोस्टण में इनका जन्म हुआ। इनके विख्यात ग्रंथ हैं नेचर, दि अमेरिकन स्कॉलर, डिविनिटी स्कूल अड्रस, दि डायल आदि।

विन्सन्स लिसनी की जन्म शताब्दी

चेक भाषा के विख्यात लेखक एवं चेक इन्डोलजी के प्रथम प्रवर्तक विन्सन्स लिसनी की जन्म शताब्दी इस वर्ष मनायी जा रही है।

इन्होंने रवीन्द्रनाथ ठाकुर की पांच रचनायें चेक भाषा में अनुदित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

कीं । इसके अलावा इन्होंने मलयालम, हिन्दी, उर्दू आदि कुछ अन्य भारतीय भाषाओं की भी कतिपय रचनाओं का अनुवाद चेक भाषा में प्रस्तुत किया ।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निवख

रूस की एक भाषा है निवख जिसके बोलनेवालों की संख्या ४५०० हैं। इसके अलावा रूस में ७७ भाषायें हैं ।

नगाय कफु

जापानी साहित्य के एक विख्यात कथाकार थे नगाय कफु (१८७९—१९५९) उदिकुराबे में इन्होंने गयिषाओं के जीवन पर प्रकाश डाला है ।

कबीरवाणी उर्दू में

हैदराबाद के अब्दुलकलाम आज़ाद ओरियन्टल रिसर्च इनस्टिट्यूट की ओर से कबीरवाणी का उर्दू अनुवाद निकालने का प्रयत्न आरंभ हुआ है ।

केरल की साक्षरता

१९८१ की गणना के अनुसार केरल की साक्षरता ६९.१७ प्रतिशत है ।

केरल कार्टूण अकादमी

केरल कार्टूण अकादमी ने केरल के विविध भागों में कार्टूण प्रदर्शनियाँ आयोजित करने का निर्णय किया है ।

वेदान्त विश्वविद्यालय

करुनागप्पल्ली में माता अमृतानन्दमयी मिशन एक वेदान्त विश्वविद्यालय खोलनेवाला है । यहाँ भगवदगीता, उपनिषद और ब्रह्मसूत्र के अध्ययन का प्रबंध होगा ।

भारतीय साहित्य पर संगोष्ठी

केरल साहित्य अकादमी की रजतजूबिली की समाप्ति के अवसर पर नवंबर १९८ में भारतीय साहित्य पर एक संगोष्ठी आयोजित होगी जिसमें हिन्दी, बंगला, उडिया, गुजराती आदि भाषाओं के लेखक भाग लेंगे ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आशान और प्रसाद

मलयालम के महाकवि कुमारनाशान और हिन्दी के महाकवि जयशंकर प्रसाद की रचनाओं का तुलनात्मक अध्ययन कर के नाट्टिका एस. एन. कालेज के हिन्दी प्रोफसर श्री० नन्दियोट रामचन्द्रन ने जो शोध प्रबंध प्रस्तुत किया उस पर मेरठ विश्वविद्यालय ने उन्हें पी. एच-डी. की उपाधि प्रदान की है।

केरलीय कलायें एशियाड में

एशियाड में केरल की कलायें भी प्रदर्शित होंगी।

साहित्य वार्षिकी

चैनीस अकादमी ऑफ सोशियल सयन्स प्रतिवर्ष समकालीन साहित्य की वार्षिकी निकालता है।

बोवइन ब्यूगिल्स

श्री० वी. के. एन. के मलयालम उपन्यास 'आरोहणम' का अंग्रेज़ी अनुवाद 'बावइन ब्यूगिल्स' के नाम से निकला है। अनुवाद भी श्री० वी. के. एन. ने ही किया है।

एरणाकुलम में कई भाषायें

संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्मिलित आठ भाषायें एरणाकुलम में सबसे अधिक (केरल के अन्य जिलों की अपेक्षा) बोली जाती हैं। बोलनेवालों की संख्या है—असमिया-५, बंगला-७२२, गुजराती-१६४६, हिन्दी-४०५३, काश्मीरी-१२, उड़िया-२२४, पंजाबी-१४७९, सिन्धी-१०५, एरणाकुलम केरल का सबसे बड़ा उद्योग केन्द्र, बंदरगाह और वाणिज्य केन्द्र है, इसीलिए विविध भाषा-भाषी इतनी संख्या में यहाँ जम गये होंगे।

विजयेन्द्रदास पुण्णि
(विज्ञान कैरली-१-२/८२)

रूसी मलयालम अनुवाद

मलयालम में उपलब्ध विदेशी साहित्य में रूसी ग्रंथों का स्थान अद्वितीय है। पुष्किन, गोगोल, तुर्गनेफ, तालस्ताय, दस्तयेवस्की, चेकोफ, गोर्की; शोलकोफ ये सब मलयालियों के सुपरिचित हैं। इन सबकी रचनाओं का मलयालम अनुवाद अंग्रेज़ी अनुवादों द्वारा किया गया है। बहुत कम ग्रंथ ही रूसी से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

सीधे मलयालम में अनूदित हो पाये हैं। एक रूसी-मलयालम कोश के निर्माण से ही रूसी-मसयालम अनुवाद का पोषण हो सकता है।

मरियाम्मा विनसन्ट

(विज्ञान कैरली—१/१२)

ब्राह्मी द्राविड से उत्पन्न ?

कई विद्वान यह मानते हैं कि ब्राह्मी लिपि द्राविडों की देन है। एंडवर्ड थोमस और टी. एन. सुब्रह्मण्यम इन विद्वानों में प्रमुख हैं। ऐसा भी मत है कि आर्यों के आगमन के पूर्व भारत द्राविडों के अधीन थी, द्राविड आर्यों से अधिक सभ्य थे और ब्राह्मी लिपि द्राविडों की देना है। जब यह प्रामाणित नहीं होता कि प्राकृत, अर्धमागधी जैसे भाषा भेद द्राविड भाषाओं के प्रभाव से ही संस्कृत से उत्पन्न हुए तब तक ब्राह्मी को द्राविड से उत्पन्न नहीं मान सकते।

डा० नट्टुवट्टम गोपालकृष्णन

(विज्ञान कैरली १३/६)

❀

मलयालियों के अंग्रेजी उपन्यास

सन् १९४२ में या उसके समीप कण्णूर के भूतपूर्व मुनिसिपल चेयरमैन का लिखा कनफेशन्स ऑफ ए हरिजन गर्ल प्रकाशित हुआ। लन्दन में रहने वाले श्री० एस. मेनोन का लिखा अंग्रेजी उपन्यास 'दि वुड ऑफ स्प्रिंग' काफी विख्यात है। इसका प्रकाशन लन्दन में हुआ। उन्हीं का 'दि सेइल ऑफ आन अइलैंड' भी एक प्रसिद्ध अंग्रेजी उपन्यास है। श्रीमती माधवि कुट्टी द्वारा दो तीन वर्षपूर्व लिखित 'आलफावेट ऑफ लस्ट' भी उल्लेखनीय है।

टी. एन. जयचन्द्रन

(मातृभूमि दैनिक १–८–१९८२)

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रौढ़ शिक्षा निदेशालय
नई दिल्ली-११००५७ वसंत विहार

प्रिय श्री पिल्लै,

इस निदेशालय में किसी अधिकारी के पास "केरल ज्योति' का जुलाई, ८२ का अंक देखा। मुझे इस पत्रिका से बहुत कुछ देखना व नोट करना होता है।

इस अंक में अमृताप्रीतम पर लिखा गया लेख बहुत सुन्दर है। संपादकीय लेख "केन्द्रीय हिन्दी संस्थान" भी ज्ञानवर्धक है। आप हिन्दी की सेवा जिस लगन के साथ कर रहे हैं, निस्संदेह प्रशंसनीय है।

सत्य प्रकाश आर्य,
हिन्दी अधिकारी

डा० व्रजपाल
गली फसेरात, मंडी रामदास,
मथुरा-२८१००१

आदरणीय श्रीमन वेलायुधन नायर साहब, नमस्कार!

'केरलज योति' का अगस्त अंक प्राप्त हुआ। इस बार का अंक मौलिक और अनूदित कविताओं से शोभायमान है। कविताएँ, एक-से-एक बढ़कर! प्रो० कृष्णकुमार की कविता और जापानी कविताओं के अनुवाद हृदय को झकझोरते हैं। 'रास्ते का मोड़' और 'गरीबी की वाणी' कविताओं में वास्तविकता का मार्मिक चित्रण हुआ है :—

(अ) च हे विश्व-विजयी हो मानव
पर है केवल छह फुट ज़मीन
का स्वामी
जिसको माप लेती है उसकी
छाया
पर मरते तक, आप जानता
नहीं मानव।
(पृ० १०)

(आ) हाँ, हम इस भूमि पर हैं असत्य।
और भूमि केवल निराशा और
मैं एक पंछी नहीं हूँ लज्जा
और इस कारण मुझे इससे
मुक्ति नहीं।
(पृ० २५)

सुंदर और प्रभावशाली कविताओं के चयन और रूपांतरण के लिए हार्दिक साधुवाद देना चाहता हूँ। आपने अग्रलेख की अंतिम पंक्ति में जो संदेश दिया है, वह अभिनंदनीय है। जिन्हें देश की एकता प्रिय है उन सबके हृदय की बात उन्होंने कही है कि "न हिन्दी प्रान्तों में...... उपेक्षा हो।" (पृ० २)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

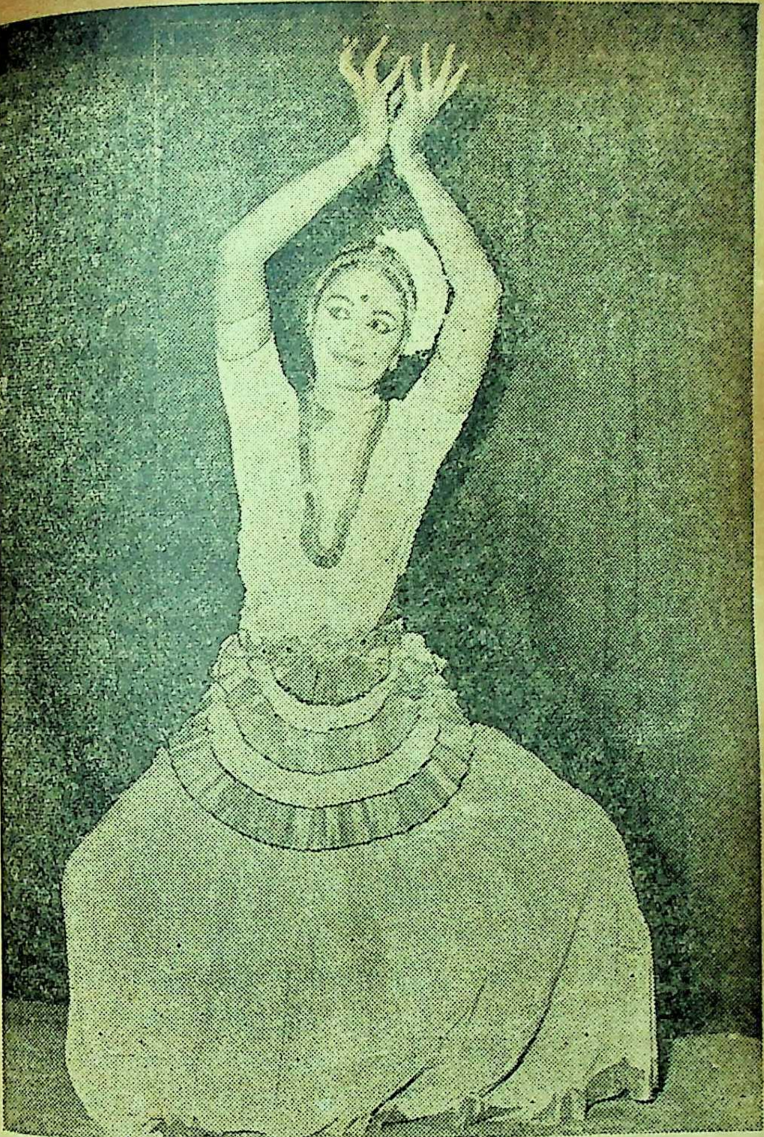

स्व० बी. सरस्वती तंकच्ची स्मारक स्वर्ण पदक वितरण समारोह में मोहिनियाट्टम प्रस्तुत कर रही है श्रीमती कलामण्डलम सत्यभामा (कुन्नुकुषि टी० एम० डान्स अकादमी, तिरुवनन्तपुरम)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Reg. No. KL/TV(S)/25
September 1982

Keral Jyoti

Vol. XVII-
Price : Re

A monthly Publication of Kerala Hindi Prachar Sabha

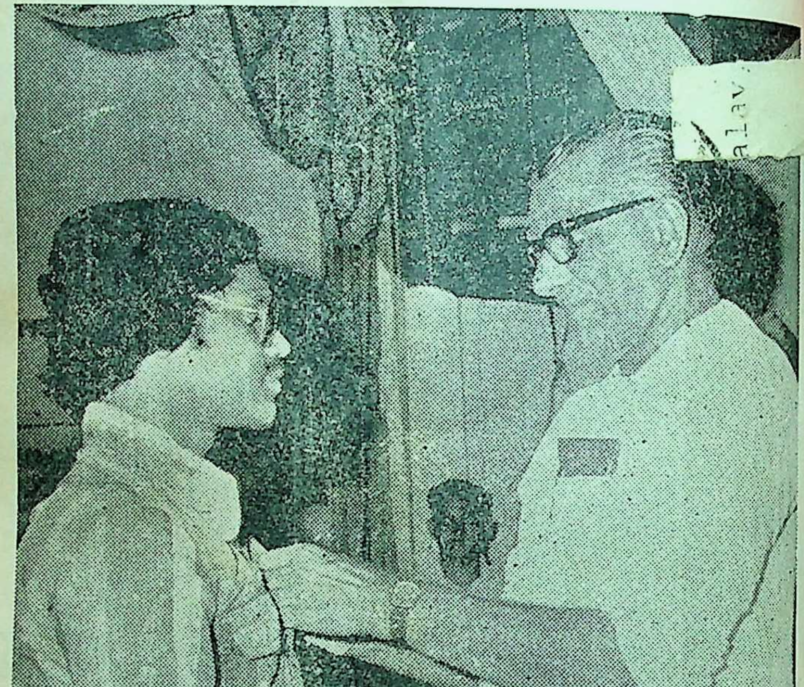

श्री० के के. गोपी को स्व० वी. सरस्वती तंकच्ची स्मारक स्वर्ण पदक प्रदान कर रहे हैं केन्द्र मंत्री श्री० सी. एम. स्टीफन ।

केरल हिन्दी प्रचार सभा, तिरुवनन्तपुरम–६९५ ०१४ केलिए श्री० एम. के. वेलायुधन नायर द्वारा प्रकाशित
मुद्रक: राष्ट्रवाणी मुद्रणालय, केरल हिन्दी प्रचार सभा, तिरुवनन्तपुरम–१४. सम्पादक: के. जी. बालकृष्ण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केरल ज्योति

(10)

नयी दिल्ली में आयोजित राजभाषा सम्मेलन के अवसर पर केन्द्र शिक्षा उपमंत्री श्री० पी. के. थुंगन के साथ केरल हिन्दी प्रचार सभा के प्रतिनिधि, अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ के सचिव श्री० रामलाल पारीख, तृतीय विश्व हिन्दी सम्मेलन के महासचिव श्री० शंकरराव लोंढे, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय के निदेशक डा० रणवीर रांगरे आदि भी दिखाई दे रहे हैं।

केरल हिन्दी प्रचार सभा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केरल ज्योति

* **प्रधान संपादक**
प्रो० पी. जे. जोसफ़

* **संपादक**
श्री० के. जी. बालकृष्ण पिल्लै

* **सह संपादक**
श्री० आर. सुकुमारन नायर

* **संपादक मण्डल**
श्री० वी. के. गोपालन नायर
प्रो० एम. जनार्द्दनन पिल्लै
श्री० के. वी. कृष्णनकुट्टी
श्री० एम. के. वेलायुधन नायर

❀

* **विज्ञापन दर**

		मासिक		वार्षिक	
आवरण पृष्ठ ४	रु.	५००	००	५०००	००
आवरण पृष्ठ २ एवं ३	रु.	४००	००	४०००	००
साधारण पृष्ठ पूरा	रु.	३००	००	३०००	००
साधारण पृष्ठ ½	रु.	१७५	००	१७५०	००
साधारण पृष्ठ ¼	रु.	१००	००	१०००	००

❀

* **पत्र व्यवहार का पता :**
मंत्री,
केरल हिन्दी प्रचार सभा
तिरुवनन्तपुरम–६९५ ०१४
केरल

तार :–"जय हिन्दी"
फोन : ६१३७८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुष्प: १७
दल : ७
अक्तूबर १९८२

केरल ज्योति

सांस्कृतिक जागरण की मासिक पत्रिका

संपादकीय

दो तारे भी बुझ गये

भारतीय साहित्य नभोमण्डल के दो उज्वल तारे भी बुझ गये। फादर कामिल बुल्के और एस. के. पोट्टक्काट ।

योरोपीय मिशनरी कामिल बुल्के ने भारत में रह कर भारतीयता का गहन अध्ययन मनन किया । 'मानव हृदय को द्रवित करनेवाली राम कथा की शक्ति' से वे अत्यन्त प्रभावित हुए और रामकाव्य पर विशेष अध्ययन किया । भारत की विविध भाषाओं में उपलब्ध नाना पुराण निगमागमों में तथा दक्षिण पूर्व ऐशिया के अन्यान्य वाङ्मयों में व्याप्त रघुनाथगाथा का आपने विस्तृत और तुलनात्मक अध्ययन किया जिसका निकष उनके शोध प्रबन्ध 'रामकथा' में मिलता है। यह ग्रंथ अपनी कोटि का अग्रगण्य शोधग्रंथ माना जाता है । सौभाग्य से इसका अनुवाद मलयालम में भी प्रकाशित हो चुका है जिससे फादर कामिल बुल्के का नाम केरल में भी बहुर्चाचित होने लगा है ।

संस्कृत और हिन्दी में फादर कामिल बुल्के ने बडी दक्षता पायी थी । अन्य कई भाषाओं की रामकथा विषयक रचनाओं का परिचय पाने केलिए आपने कई विद्वानों से परामर्श किया । 'विद्या संग्रहणेषु त्यक्त लज्ज सुखी भवेत' वाली उक्ति को आप ने चरितार्थ किया । मलयालम के रामकाव्य पर आपने केरल हिन्दी प्रचार सभा के भूतपूर्व अध्यक्ष डा० पी. के. नारायण पिल्लै से परामर्श किया था ।

रामायण को नैतिकता की दृष्टि से आप ने संसार के प्राचीन महाकाव्यों में सर्वश्रेष्ठ माना । तुलसी के प्रति आपकी वडी श्रद्धा थी । आपने लिखा है— "जितने भी मनुष्य आस्तिक हैं, वे भगवान को परमात्मा, ईश्वर, अल्लाह, राम आदि चाहे जिस नाम से जानते हों, उन सभी के लिए तुलसी के भक्तिमार्ग के आधारभूत तत्व हितकारी एवं प्रेरणादायक है ।"

फादर कामिल बुल्के ने विद्वत्ता में जिस गहनता और व्यापकता का परिचय दिया है, और धर्म निरपेक्षता का जो उच्च आदर्श प्रस्तुत किया है वह भविष्य के लिए मार्गदर्शक रहेगा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस अंक में

आज लहरों में निमंत्रण — 3
डॉ० एन. ई. विश्वनाथ अय्यर

परिधि के बाहर — 16
डॉ० सुरेशचन्द्र गुप्त

तपोनिष्ठ हिन्दी-सेवी स्व० रामशास्त्री — 17
वी. के. एस. नम्पूतिरी

माँ की पुकार — 20
विनीता अशोक

क्या आज तुलसी प्रासंगिक हैं ? — 21
डॉ० मृत्युञ्जय उपाध्याय

दामन बिछौनी हो गई — 25
राजेन्द्र 'राजा'

छठा अखिल भारत नागरी लिपि सम्मेलन — 26
[संगोष्ठी समाचार]

तीन कवितायें — 33
१. सम्बध गुरकों का
२. पद्मिनी
३. हंस उतर आया है — 34
शकुन्तला सिरोठिया

देख कबीरा रोया—
शंबूक की शव-परीक्षा — 35
क्कु

झरोखा — 37

पाठकों के पत्र — 41

ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त एस. के. पोट्टक्काट भारतीय साहित्यकारों में विशिष्ट स्थान पा चुके थे । आपने देश के और आफ्रिका, रूस, योरोप आदि अनेकों विदेशों के जीवन का निकट से अध्ययन किया और उसके आधार पर जीवन का माधुर्य अपनी कथाओं, उपन्यासों, कविताओं और यात्रावृत्तों में प्रस्तुत किया । मलयालम में आपके सात उपन्यास हैं, चौबीस कहानी संग्रह हैं और पन्द्रह यात्रावृत्त हैं । कविता, नाटक, डयरी आदि विधाओं को भी आपने संपुष्ट किया है ।

राजनीति में भी आपने भाग लिया। १९६२–६७ तक आप संसद सदस्य रहे।

साहित्य को आप सेवा का माध्यम मानते थे । साधना मानते थे । उन्हें इस बात का बडा खेद था कि प्रकाशक जो शोषक हैं, केवल सेक्स और क्राइम से भरपूर रही रचनाओं का ही प्रकाशन करना पसन्द करते हैं जिनसे उन्हें ज्यादा पैसा मिले । इससे उत्तम साहित्य का ह्रास हो जाता है ।

श्री० पोट्टक्काट की रचनायें अंग्रेजी, रूसी, चेक आदि विदेशी भाषाओं में भी अनूदित हो चुकी हैं । हिन्दी में उनके ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त उपन्यास का अनुवाद हुआ हैं—'कथा एक प्रान्तर की' के नाम से । हाल ही में उनकी कुछ कहानियों का एक संग्रह भी हिन्दी में निकला है । पर अभी हिन्दी में उनकी कई उत्तम रचनाओं का अनुवाद लाना बाकी है । उनके यात्रा वृत्तों और अन्य रचनाओं के अनुवाद हिन्दी के साहित्य का गुणात्मक और परिमाणात्मक परिवर्द्धन कर सकेगा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज लहरों में निमंत्रण

डॉ० एन. ई. विश्वनाथ अय्यर

केरल का अतिसुन्दर समुद्रतट कोवलम विश्व भर के यात्रियों को आकृष्ट करता रहा है। आइये, विद्वान लेखक के साथ त्रिवेन्द्रम से कोवलम तक चलें; रास्ते के गाँवों के अतीत की गाथा भी सुनते जायें। साथ साथ भारतीयता पर थोडा दार्शनिक विचार मंथन भी करें।

हहराती शीतलहरी को नव वसंत भुला देता है। पर वसन्त की चहलपहल ग्रीष्म की चपेट से चें बोलती है। वर्षा तो ग्रीष्म को पानी में डुबो देती है। मौसमों को यह बदली धरती के लिए ही नहीं धरती के लालों के लिए भी सहज हो चुकी है। जिसने केरल के पुराने राजशासन के दिन देखे और स्वतंत्र केरल के परिवर्तनशील दिन देखता रहता है वह इस नियम को प्रणाम किये बिना रह नहीं सकता। वर्तमानयुग में सचिवालय और विधायक निवास के दृश्य देखते प्रासंगिक रूप में त्रिवेन्द्रम के पूर्वी किले की अतीत गरिमा स्मरण आती है। पूर्वी किला शब्द यद्यपि प्रयुक्त है तो भी उसका मतलब किले के पूर्वी फाटक से है। पुरानी ट्रावंकूर रियासत के शासकों का राजमहल और कचहरी आदि विशाल किले के भीतर ही थे। किले के प्राचीर अब भी है, राजमहल भी हैं। सब से मुख्य पूर्वी फाटक (खुला) भी है। इस फाटक के ऊपर दोनों ओर दो बुर्ज जैसे हैं। पुराना वैभव स्मरण करानेवाले इस फाटक पर शाम सबेरे नगाडा बजता था। संतरी हर घण्टे पर घंटा बजाकर किले के निवासियों को समय की सूचना देता था। मगर आज नये युग के लालों के लिए पूर्वी किला सिर्फ नगर सेवा-बसों का प्रमुख अड्डा है। यहीं से नगर सेवा प्रारंभ होती है।

युग परिवर्तन का और एक दृश्य इसी पूर्वी किले पर मिलता है। जहाँ पहले सभी लोग तीर्थाटक के रूप में किले के भीतर आते थे वहाँ आज बहुत सारे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोग नये तीर्थों की ओर जाते हैं। ऊँचे गोपुर की सुनहली शोभा से वे कम आकृष्ट होते हैं। वे आज लहरों का निमंत्रण स्वीकार करना अधिक पसन्द करते हैं। पूर्वी किले के स्टेंड से कोवलम समुद्र तट की बस बराबर मिलती है। पर्यटन विभाग की बस के अलावा टैक्सियाँ भी खूब चलती हैं।

दक्खिनी नगर-भाग मणक्काड

लखनऊ में 'गंजों' की बहुतायत है अहमदाबाद में "पुराओं" की। पूना में 'पेठ' ही पेठ हैं तो दिल्ली में "आबाद" बसे हैं। यों त्रिवेंद्रम में 'काट्टु' कई हैं। काट्टु का अर्थ है वन। अब वन तो क्या, मुश्किल से ही नारियल के पेड जहाँ तहाँ बचे हैं। फिर भी पुराने नाम बने हुए है। आवास-निगमों की कृपा से नगर में 'नगरों' की उत्पत्ति हो रही है। पूर्वी किले से हम दक्खिनी तरफ जाते हैं तो 'मणक्काड' का कसबा आता है। मणल का अर्थ रेत है। पता नहीं, नाम कैसे पडा, जो पडा सो पडा। राजशासन के जमाने में धुडसाल और घोडों की फौज के सिपाही इसी कसबे में रहते थे। और भी कई दक्खिनी भाषी यहाँ थे जिन्हें पट्टाणी (पठान का तद्भव) पुकारते थे। जब तक नगर का नई दिशा में विकास नहीं हुआ तब तक मणक्काड की सब्जी-मंडी पूरे शहर की सब्जी मंडी का काम देती थी। यद्यपि मुसलमान भी यहाँ रहते थे तो भी यह मुख्यत: हिन्दुवों का ही मुहल्ला रहा है। नगर के दक्षिणी खंड के एक मामूली मुहल्ले के रूप में ही इसकी हस्ती रही। लेकिन हाल ही में यह एक विख्यात देवी मंदिर के कारण प्रमुख तीर्थ सा होता चला है।

लोकप्रिय देवी मंदिर

नगरों के इस द्विमुखी विकास की विलक्षणता दर्शनीय है। एक तरफ

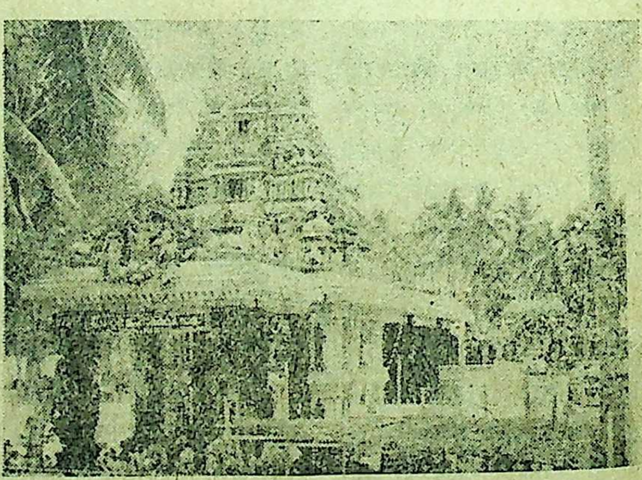

आट्टुकाल का देवी मंदिर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आकाश को चूमनेवाली अट्टालिकाएँ बन रही हैं। स्टार होटल, मदिरालय और हो सके तो कैसिनो भी बनाने की कोशिश जारी है। किंतु उन्हीं के पीछे धन लगानेवाले लोग मंदिर-मसजिद-गिरिजाघर के विकास एवं निर्माण में भी योग देते हैं। इन धार्मिक तीर्थों की संख्या भी बढ रही है। उनकी यह प्रकृति भारत के बाहर भी छा रही है।

का उत्सव होता है उसमें हज़ारों स्त्रियाँ भाग लेती हैं। पोंकाला द्राविडी व्रत है। इसका अर्थ है भगवान का नैवेद्य पकाना। इस व्रत की प्रक्रिया कुछ निराली है। व्रतधारिणी स्त्रियाँ इस मंदिर के पास किसी सुविधाजनक स्थान पर व्रत से पूर्व दिन रात को ही आ जाती हैं। वे स्त्रियाँ बर्तन और जलाने की लकडी वगैरह ले चलती हैं। उन्हें सवेरे स्नान

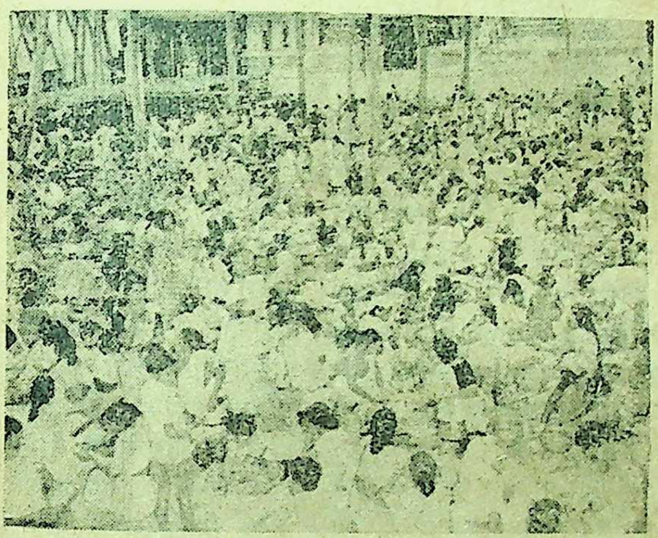

'पोंगाला' का एक दृश्य

मणक्काड के ही इलाके में मुख्य सडक के कुछ दूर 'आट्टुकाल की देवी का मंदिर बना है। ('ट्ट का उच्चारण Matter में tt के समान हैं।) इधर कुछ सालों से इस वरदायिनी देवी की कृपालुता की गाथाएँ विशेष प्रसिद्ध होती आई हैं। अन्य देवी मंदिरों के समान मंगल-शुक्र को यहाँ भी भीड लगती है। अप्रैल में यहाँ जो वार्षिक नेवता 'पोंकाला'

करके वहीं चूल्हा लगाना पडता है। स्त्रियों की भीड़ इतनी लगती है कि चारों दिशावों में काफी दूर दूर तक चूल्हे लगते है, घरों के अहातों में और सडक पर भी। चूल्हे में लकडी जमाकर बर्तन भी रखकर व्रतिनियाँ पुजारी की अनुमति की प्रतीक्षा करती हैं। मुख्य पुजारी मंदिर के भाग की तैयारी के लिए चूल्हा लगाने के बाद जलती लकडी लाकर सब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से समीप की व्रतिनी का चूल्हा जला देता है। यह इशारा है। अब जलते चूल्हे से आग बारी बारी से लेते लेते अन्य व्रतिनियाँ भी जलाती हैं। भोग में गुड मिश्रित चावल के अलावा एक खास पत्ते पर गुड या चावल का और एक पकवान भी उबाला जाता है जो मानसिक रोगी हैं वे व्रत के भोग के रूप में नारियल-गुड आदि से मस्तिष्क के आकार का नमूना बनाकर भोग चढाते हैं। जब नैवेद्य पक जाता है तब उसको उतारने के लिए भी पुजारी की अनुमति चाहिए। पुजारी और उनके सहायक तीर्थजल छिडकते हैं। वे घूम घूमकर प्रत्येक व्रतिनी के पास पहुँचते हैं और तीर्थ जल से अन्न को पवित्र कर देते हैं। इसके साथ व्रत-समाप्ति होती है। स्त्रियाँ नैवेद्य लेकर घर लौटती हैं और बन्धु जनों के साथ बाँट लेती हैं। सवेरे से शाम तक प्राय: निरन्न रहकर ही यह व्रत पाला जाता है। इसमें किसी किसी को बेहोशी भी होती है। पर कुल मिलाकर इस व्रत का विधिवत् पालन होता है। इस उत्सव का महत्व इतना बढा है कि सरकार ने इसे स्थानीय छुट्टी का दिवस माना है। व्रतार्थियों के लिए खास परिवहन की व्यवस्था की जाती है। भीड को संभालने को पुलीस का अच्छा प्रबन्ध रहता है। इस नेवते की लोकप्रियता बढती जा रही है और अन्य मंदिरों में भी इसका अनुकरण होने लगा है।

मणक्काड पहले कम आबाद भले ही रहा हो, पर आज नये फैशन के कंकरीट भवनों की शान दिखाता है। केरल में पिछले दस वर्षों से गल्फ देशों से आनेवाले पैसे का प्रताप अवर्णनीय है। वही इन विशाल अट्टालिकावों का मुख्य स्रोत है। मणक्काड में और कोई दर्शनीय स्थान तो नहीं है। फिर भी 'कल्लिप्पानकुलम' नामक एक तालाब का उल्लेख हो सकता है जो ऐतिहासिक कम पर जनश्रुतियों पर आधारित अधिक है। कहा जाता है कि ट्रावनकोर की उमयम्मा राणी के प्यारे बच्चों को धूर्त सेवकों ने इस तालाब में खेलाने के बहाने डुबोकर मार डाला था। इतिहासकार इस घटना को कपोल कल्पना कहते हैं।

परशुराम मंदिर

हम नगर निगम सीमा से बाहर निकलकर गाँवों से जा रहे हैं। पर आप नहीं पहचान पायँगे कि ये गाँव हैं। उत्तर भारत की गाँव की संकल्पना केरल में बिलकुल नहीं है। हम केरल को गाँवों का बाग पुकार सकते हैं या बागों के गाँव। हम जिस प्रमुख गाँव में पहुंचे हैं वह 'तिरुवल्लम' कहलाता है। तिरु=श्री और वल्लम शायद वल्लभ शब्द से संबन्ध रखता है। परशुराम द्वारा समुद्र से निकाली भूमि होने के कारण केरल को परशुराम क्षेत्र कहते हैं। तिरुवल्लम अपने निराले परशुराम मंदिर के लिए विशेष प्रसिद्ध है। वैसे यहाँ के मंदिर में त्रिमूर्ति प्रतिष्ठित हैं, पर विशेष रूप से परशुराम की शिलामूर्ति विराजती है। इस मंदिर का संबन्ध ट्रिवेंद्रम के विख्यात श्रीपद्मनाभ मंदिर से भी है। वहाँ के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

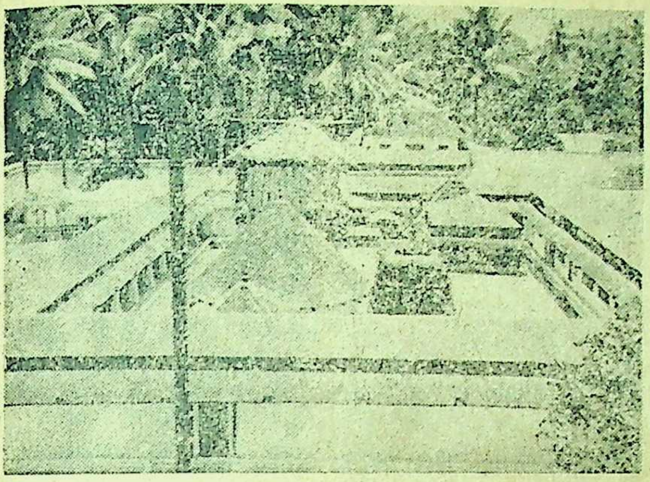

श्री परशुराम का मंदिर, तिरुवल्लम

माही उत्सव के समय तिरुवल्लम में भी उत्सव चलता है। उत्सव समाप्ति के स्नानार्थ श्रीपद्मनाभ के साथ तिरुवल्लम के देवता को भी समुद्रतट ले जाते हैं। ट्रावंकोर शासकों के दिनों का यह पुरान क्रम अब भी जारी है। त्रिवेंद्रम नगर के निवासी हिन्दू तिरुवल्लम का स्मरण पितृजनों के अमावस का बलि पिंड देने योग्य पवित्र तीर्थस्थान के रूप में विशेष रूप से करते हैं। यहाँ करमना नदी व किल्लि नदी का संगम होता है। इस नदी संगम पर आषाढ के अमावस पर पितृतर्पण करनेवालों की भीड लगती है। यह पढकर आज उत्तर भारत के तीर्थों की सी कल्पना मत कीजिएगा। क्यों कि केरल धार्मिक श्रद्धा रखते हुए भी उसमें बह नहीं जाता। दूसरे, नई पीढी धार्मिकता से बढकर बौद्धिकता, नागरिकता आदि को अधिक पसंद करती जाती है।

केरल का प्रमुख फिल्म निर्माण केन्द्र

युवा पीढी तो बिहारी को आदर्श पुरुष मानती है। उन्हें तंत्रीनाद, कवित्त-रस और सरस राग रति रंग में सब अंग डूबने का लोभ रहता है। अब तो सरस राग के बदले 'फिल्म राग' कर लें तो उचित लगे। इसे कुछ गलत नहीं कह पाते क्यों कि हर आदमी वय की उस देहली को पार किये बिना नहीं बढता। पार करने के बाद उसे मन ही मन वहीं लौटने और रहने की इच्छा भी होती है। ययाति की कथा यहीं बतलाता है। अब युवा पीढी का सबसे प्यारा मनोरंजन फिल्म है। यह अंतरभारतीय ही नहीं अन्तारार्ट्रीय तथ्य सिद्ध हो चुका है। उल्लेखनीय है कि केरल फिल्म निर्माण में अन्य प्रदेशों से प्रगति कर चुका है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मलयालम में प्रतिवर्ष सौ से सवा सौ तक फिल्में बनती हैं; जिनमें रंगीन फिल्मों की संख्या बढ रही है।

मलयालम में प्रतिवर्ष सौ से सवा सौ तक फिल्में बनती हैं; जिनमें रंगीन फिल्मों की संख्या बढ रही है। जहाँ फिल्म निर्माण की हर प्रविधि के लिए मद्रास के चलचित्र निर्माण केंद्रों पर निर्भर रहना पडता था वहाँ अब केरल में ही आलप्पी और त्रिवेन्द्रम पर निजी क्षेत्र में तीन चार स्टुडियो बन चुके हैं। त्रिवेन्द्रम पर सुब्रह्मण्यमजी का 'मेरीलैंड' और आलप्पी पर कुंचाक्को का 'उदया' सबसे प्रथम केरलीय फिल्म निर्माण केन्द्र हैं। चित्रलेखा, उमा, तरंगिणी आदि नये नये स्टुडियो बन चुके हैं। सबसे नया सार्वजनिक क्षेत्र का चित्रांजलि स्टुडियो तिरुवल्लम में है। उसके स्थापक इसमें कई नई सुविधाएँ होने का दावा करते हैं। विशेषज्ञ ही इस दावे पर सही सम्मति दे सकते हैं। केरल में फिल्म निर्माण का विशेष अध्ययन करनेवाले युवकों की संख्या भी बढती रहती है। ऊँचे दर्जे की फिल्में बनाकर देशी विदेशी पुरस्कार पाये हुए सर्वश्री स्व० रामु कार्याट, श्री० अरविंदन, अडूर गोपालकृष्णन आदि केरलीय हैं।

वज्र से कठोर, फूलों से कोमल प्रकृति

तिरुवल्लम में से हम आगे बढते हैं तो भवनों की संख्या कम होती जाती है। प्रकृति का पूरा विलास नजर आने लगता है। करुणामयी प्रकृति और पुरुषार्थी मानव की सहकारिता के चमत्कार यहीं देखिएगा। दाईं ओर प्रकृति की गोदी में नारियल, सुपारी, कटहल और आम के पेडों का पूरा राज है लंबे लंबे नारियल और सुपारी के पेड पवन के झोंके खाकर मस्ती से झूलते हैं। तरुगण के सरसराते पत्तों से सरगम सुनाई देता है। फल देने में ये परस्पर होड लगाते हैं। मगर यहीं अन्यत्र खासकर सडक की बाईं तरफ कठोर शिलाएँ-ऊँची चट्टानें दिखाई देती हैं। जैसे एक ही माता के कुछ बच्चे बडे कोमल, सुशील निकलते हैं तो दूसरे धूर्त! नहीं तो प्रकृति यहाँ अपनी दोनों सूरतें दिखाती कहती है- मैं वज्र से कठोर हूँ, फूलों से कोमल भी। वह अपने पुत्र मानव को शायद प्राण देती है कि तुम मेरी शिला लेकर रहने का घर बनावो और अन्त, फल लेकर भोजन की व्यवस्था कर लो। तुम हथौडा घनी लेकर मुझे काटते चलो। डैनामिट लगाकर मुझे फोड लो, मेरी कोई आपत्ति नहीं है। इस विशाल भूभाग की कृष्ण शिलाएँ नगर की अट्टालिकाओं की नींव बनी हैं; पर दंभी नागरिक कहाँ मानते हैं कि हमारी जड हर दृष्टि से गाँव में है।

इतिहास का स्मारक नया बंदरगाह

अब हम कोवलम की तरफ बढ रहे हैं। यद्यपि रास्ते में दो चार और गाँव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आते हैं तो भी वे नवीन हैं। पूरा क्षेत्र कोवलम के सामान्य नाम से पुकारा जाता है। असल में यह सडक मुख्यत: विषिंजम नामक बन्दरगाह को जाती है। त्रिवेंद्रम नगर से १६ कि. मीटर दूर दक्षिण में स्थित विषिंजम का इतिहास बहुत पुराना है। इस बंदरगाह से जलयान विदेशों को माल ले जाते थे। इसलिए इस पर अपना कब्जा रखने की होड पांड्य, चोल आदि राजावों में हुई थी। आठवीं सदी में यह दक्षिण में पांड्य और उत्तर में वेणाड के बीच में स्थित आर्य राजावों के राज्य का मुख्य सेना-केन्द्र और नगर था। चोल, पांड्य राज्य इसकेलिए युद्ध करते थे। इसका नाम ग्यारहवीं सदी में यहाँ राजेन्द्रचोल पट्टनम रखा गया था। बाद में पांड्य राजाओं ने अपना झंडा फहराया। चौदह्वीं सदी में वेणाड (त्रावंकोर का पूर्व रूप) के वीर केरलवर्मा ने इस पर अपना अधिकार कर लिया। उसके बाद यह त्रावंकोर का अंग रहा।

युगों के फेर में विषिंजम की पूरी शान बुझ गयी। इसके तट पर डच व पुर्तगली कंपनी ने कारखाना बनाया, पर दोनों बाद में नष्ट हुए। अंग्रेज कंपनी ने भी यहाँ कारखाना बनाते बनाते वह इरादा छोड दिया। स्वतंत्रता प्राप्ति के कई वर्ष बाद विषिंजम के भाग्य फिर से चमकने लगे हैं। मत्स्य बन्धन के लिए उपयोगी छोटे बन्दरगाह के रूप में इसका विकास किया जा रहा है। आधुनिक इंजिनीयर बडे भारी पत्थर डालते डालते समुद्री दीवार और अन्य साधन जुटा रहे हैं। मगर सरकारी लाल फीता समुद्रराज को भी नहीं छोडता।

विषिंजम अपनी पंचायत का प्रमुख स्थान है। यह मछुआरों का केन्द्र भी है। यहाँ मुसलमान मछुआरे हैं, उनका मसजिद है। कैथालिक धर्म मानने वाले मछुआरों की झोंपडियाँ भी हैं। उनका अलग गिरिजाघर भी विराजता है। हिन्दू भी इस पचायत में बहुत हैं। समुद्र राज की कृपा पर जीवन बितानेवाले इन वरुण-पुत्रों की दशा वर्षाकाल में दीनता की होती है पर कई सरकारी कल्याण-कार्यक्रम इनकी दशा सुधारने में सहायक हुए हैं।

कोवलम—युग की देन

विषिंजम का बन्दरगाह किसी जमाने में पूरे देश को मुग्ध करता था तो आज इसी पचायत में स्थित कोवलम सारे संसार में विख्यात हो चुका है। यह भी मूलत मछुआरों की ही बस्ती है। इतिहास का चमत्कार देखिए -- जो किसी युग में वैभवशाली रहता है वह कालान्तर में गरीब हो जाता है। उसी का पडोसी अनुकूल परिस्थिति में अमीर हो जाता है। कोवलम को पचास-साठ वर्ष पहले ही यह महत्व प्राप्त हुआ। वैसे, यहाँ के समुद्र पर आकाश-दीप, (लाइट हौस) बन गया था। विषिंजम के बन्दरगाह के सहायक के रूप में यह बना था। कोवलम को समुद्र स्नान की सुविधा के कारण नया महत्व प्राप्त हुआ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषिनम की प्रधान सडक से कोवलम की मोड शुरू होती है । यहाँ से पैदल चलें तभी नजारे की खुशी मिले । प्रसिद्ध पर्यटक-केन्द्र होने के नाते यहाँ चौडी तारपुती सडक बनी है । सडक की ऊँचा सतह से समुद्र तट का दलान चलती है । चकराती सडक की दाईं तरफ छोटे बड नारियल के बगीचे और मकान हैं । बाईं ओर नारियल के लंबे बाग हैं । लगता है कि धरता की छाती पर मरकत माला पडी है । कोवलम की अजीब भौगोलिक स्थिति केरल के अन्य किसी भूभाग को नहीं मिली है । चट्टानों की कतारें समुद्र का ओर बढा हुई है । समुद्र के बौखलाये पानी को शिलाओं की शातल गोद में बडी शांति मिलती है । समुन्दर की कोई भी भीषण लहर इन चट्टानों का कुछ भी बिगाड नहीं पाती । गोदी में सागर जल रखे हुए, कोवलम सबको न्योता देता है– आओ, भाइओ बहनो, समुद्र स्नान का आनन्द लो । पुराने दिनों में कोई-कोई अंग्रेज व देशी धनी ही कभी कभार समुद्र स्नान का यह मजा लेने आते थे । समुद्र तट की ऊँचा चट्टान पर साठ-सत्तर वर्ष पहले रीजेंट महारानी ने एक महल बनवाया तो राजकीय सम्मान के कारण लोगों की दृष्टि इस स्थान पर पडने लगी ।

हम इस ढलते पथ से धीरे-धीरे चलते हैं तो टूरिस्ट बसें हमें पार करती हैं । एकाध हिप्पी युवक पैदल चलते नजर आते हैं । भारत के सारे समुद्रतटीय प्रदेशों में विदेशी पर्यटक खास कर हिप्पी युवक-युवती जमा होते हैं । योरोपीय यात्री भारत में दो प्रकार के स्थान पर्यटन के लिए विशेष पसन्द करते हैं– समुद्र तट या ठंड भरे पर्वतीय स्थान । समुद्र की पुकार में योरोपवासी अपने देश की पुकार सुनते हैं । काशमीर, ऊटी जैसे पहाडी स्थान पश्चिमी सर्दी का आभास देने के कारण योरोपवासियों को घरेलू वातावरण देते हैं । अन्य स्थानों का गर्मी ऊमस और पसीने के कारण कष्ट देती है ।

वैसे कोवलम के भारतीय पर्यटकों में सारे प्रदेशों के लोग शामिल हैं । फिर भी तमिलनाड के पर्यटकों की संख्या केरल दर्शकों की संख्या में सबसे बडी होता है । केरल से तमिलनाड निवासियों का संबन्ध वैसे भी पुराना व घनिष्ठ है। फिर भी केरलीय मंदिरों के दर्शनार्थी भक्तों और पर्यटकों के रूप में उनकी संख्या और प्रदेश के भक्तों, पर्यटकों की संख्या से कहीं बढकर है । परिश्रमशीलता पर्यटन और तीर्थाटन में तमिलनाड निवासी लासानी हैं । यहाँ तक कि केरल के अनेक मंदिरों की संपत्ति मुख्यतः तमिलनाड के भक्तों की ही श्रद्धा की देन है ।

शान्ति की गोदी में

कोवलम के लंबे चौडे समुद्रतट पर पहुँचते हैं तो दूसरे समुद्र-तटों से इसका अन्तर सबसे पहले दर्शक चित्त को आकृष्ट करता है । समुद्र तट पर नारियल के बाग हैं । अक्सर समुन्दर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दर्शकों को देखने पर दैत्याकार लहरों की भुजाएँ उठाये भीषण अट्टहास करता उनकी ओर झपटता है। हम जान लेकर भागने में ही खैरियत समझते हैं। मगर कोवलम का सागर विशाल झील सा शांतिमय है मानो, सागर परिवार का एक सदस्य विराग व शांति-प्रेम से इस कोने में अपना अलग जीवन बिताता हो। इसकी छोटी सी तरंगें तट-भूमि को चूमती हैं। उसे चट्टानो टीलों की गोद में अमृतवाही केर वृक्षों की शीतल छाया में अनुपम आनन्द अनुभव होता है।

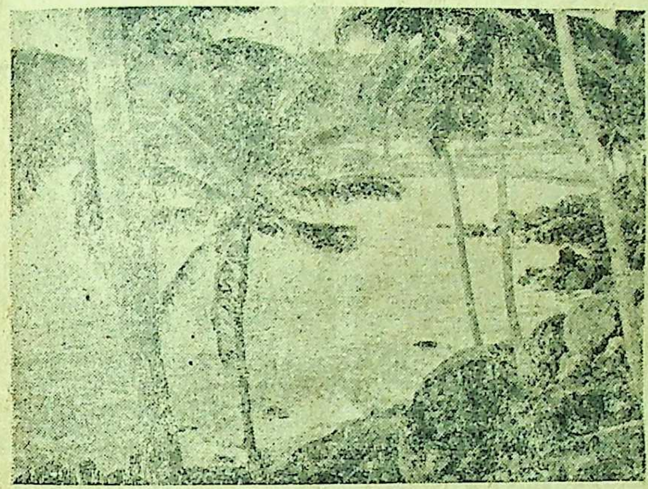

कोवलम का स्वच्छ सुन्दर समुद्र तट

हम समुद्र तट पर खडे खडे मन ही मन समुद्र दर्शन का आनन्द अनुभव करते हैं। पर माई के लाल छोटे छोटे लकडी के लट्ठों पर (काटामारन) मछुओं की देखरेख में जल-यात्रा का आनन्द पा सकते है। हँसती तरंगों के निमन्त्रण से मुग्ध युवक इन लट्ठों पर छोटा सा चक्कर लगाते हैं। कुछ तो दूर दूर तक हो आते हैं। इधर हम तो तरंगों को पैरों से लिपटते देखकर भी भीतर-भीतर डरते-डरते फीकी हँसी हँसते हैं। कबीर मेरे लिए प्यारे कवि हैं। उन्होंने भी मेरे दिल की बातें कहीं हैं न?—

> जिन खोजा तिन पाइया गहरे पानी पैठि।
> हौं बपुरा डूबन डरा रहा किनारे बैठि॥

अपनी कायरता पर बात करते शर्म आती है। क्यों कि कोवलम आकर समुद्र स्नान न करना कोई गर्व की बात नहीं है। इस स्नान से शरीर को स्फूर्ति और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मन को आनन्द मिलता है। हमारे भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्री. लालबहादूर शास्त्री और राज्यपाल वी. वी. गिरि के कोवलम में समुद्र-स्नान का चित्र स्मरण आता है। एक टेढी राजनैतिक समस्या का हल करने के लिए आये शास्त्रिजी को समुद्र राज ने अपने करों से शाबाशी दी थी और शीतल धारा से शांति भी।

मेहनत व आराम

कोवलम के समुद्र स्नान का पूरा मजा उठानेवाले विदेशी पर्यटक हैं। वे दूर दूर देशों से सैकडों डालर खर्च करके यहाँ

उन्हें कमाना भी आता है खर्च करना भी।

आते हैं। समुद्र स्नान का आनन्द लेने, विश्राम पाने। हम लोगों को यह पागलपन तो लग सकता है। मगर साल भर व्यापार, उद्योग या अन्य पेशों में पूरा तनाव अनुभव करने के बाद कुछ दिनों तक पूरे मन-बहलाव के लिए वे बडी से बडी राशि खर्च करने में जरा भी नहीं हिचकते। उन्हें कमाना भी आता है खर्च करना भी।

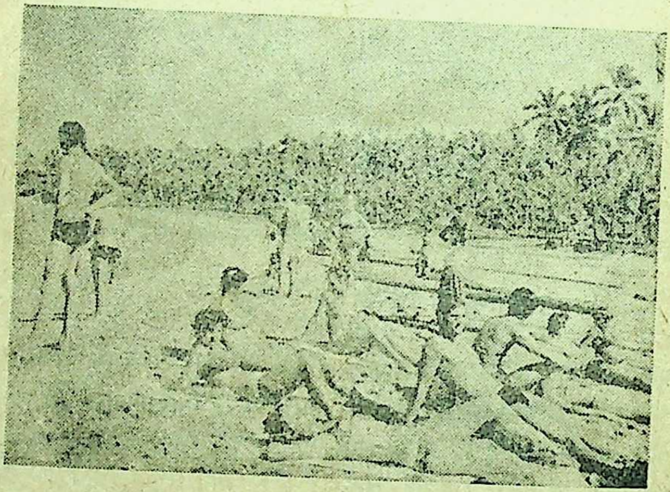

कोवलम के समुद्र तट पर पर्यटक युवक युवतियाँ

विदेशी स्त्री-पुरुषों को खासकर मोटी महिलावों को नहाने की पोशाक में तैरते नहाते देख स्थानीय लज्जावती युवतियाँ एक दूसरे को देख आँखें झपकाती हैं, छि: छि: करती है। मगर भीतर से उन्हें भी ऐसी पोशाक में स्नान करने की प्रेरणा गुदगुदाती होगी। वैसे विदेशियों के जीवन-क्रम और वेशभूषा से सभी परिचित हैं और केवल कुतूहल से उनकी तरफ नजर डालते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धन के सामने अनेक वर्जनाएँ और नियम छोड दिये जाते हैं।

डालर देवो भव

पर्यटक और पर्यटन भारत के महत्वपूर्ण अंग हो चुके हैं । हमारे देश की उपनिषदों का उपदेश है कि अतिथि देवो भव । तथा पर्यटक-विभाग नवीन उपनिषद् संदेश सुनाता है—"डालर देवो भव" । जो अतिथि डालर जैसी विदेशी मुद्राएँ दे सकते हैं ऐसे अतिथियों की सेवा में लग जाओ । उनकी सेवा से हमारा विदेशी मुद्रा का कोष भर जाने की आशा है। धन के सामने अनेक वर्जनाएँ और नियम छोड दिये जाते हैं ।

भारत के महानगरों और विश्राम केंद्रों में पर्यटन विकास निगम ने कई स्तरों का आवास-प्रबन्ध किया है । कोवलम समुद्र तट पर महल के अहाते में अशोक होटल कांप्लक्स के नाम से व्यापक तौर पर निवास का प्रबन्ध है । साधारण कमरे, पर्णकुटी की शक्ल के कक्षा, वातानुकूलित भवन पश्चिमी शैली का आवास, अमरीकी शैली का आवास हर अंतर्राष्ट्रीय स्तर के आवास का प्रबन्ध रहता है । ये सब काफी महँगे होते हैं, जिसके कारण भारतीय माध्यम वर्ग के लोग इन तक पहुँच नहीं पाते । पर्यटन विभाग का तर्क है कि ये विदेशी पर्यटक धर्मशाला में रोटी खुद सेंकने लोटा तवा लेकर चलते नहीं । वे खूब पैसा खर्च करने तैयार हैं । उन्हें शानदार स्वागत चाहिए । केरलीय पर्यटन विभाग अपने अतिथियों की विशेष सेवा कई प्रकार से करता है । मीठा ढाब पिलाना तो बुनियादी बात है । केरलीय चिकित्सा-विधि के अंग के रूप में मालिश की सेवा भी अब दी जाती हैं । अंगों का पुट्ठों का जो दर्द है वह इस मालिश से दूर हो जाता है । साथ ही रोगी नीरोग तथा हृष्टपुष्ट होता है । यह केरलीय पंचकर्म चिकित्सा का अंग है । पर्यटकों के लिए तो शारीरिक तनाव दूर करने, पुट्ठों-अंगों की लचक बढाने और मानसिक तनाव दूर करने के लिए यह मालिश अत्यन्त उपयोगी है । उत्तर भारत की मालिश भी मशहूर है हीं ।

तीस घण्टों में योगी

विदेशियों को भारत अपनी योग-साधना से आकृष्य कर सका है । यों कहना अधिक सही है कि भारत की योग साधना की ओर विदेशी आकृष्ट हैं और यहाँ आकर योग सीखते हैं । योग का अध्ययन भी कठिन है और काफी समय संयम माँगता है । अतः पर्यटकों को योग का प्रशिक्षण कुतूहल-वर्धक ही अधिक हो सकता है । फिर भी सारे भारतीय पर्यटकीय केन्द्रों में योग का आकर्षण विज्ञापित है ।

केरल आनेवाले पर्यटकों के लिए यहाँ की प्रसिद्ध कला 'कथाकलि' भी प्रस्तुत की जाती है । रसाभिनय, सारे अंगों का चलन. कम से कम बाजों से अत्यन्त प्रभावशाली नाद समन्वय-विशेष वेश-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसी कथा और कलाएँ शराब में धुत बैठे पर्यटक स्त्री-पुरुषों के सामने केवल पैसे के लिए प्रस्तुत करना सच्चे कलावंतों को बडा कष्टदायक ही लग सकता है ।

भूषा से अमानुष का भ्रम लानेवाले पात्रों की रचना, विशेष मंच विधान का भाव आदि इस केरलीय कला की विशेषताएँ हैं । इनसे विदेशी कला-प्रेमी आनन्दित अगर हो जाएँ तो इसमें कोई ताज्जुब की बात नहीं । इस पहलू का अत्यधिक महत्व देखकर अब पर्यटकों के लिए डेमोण्स्ट्रेशन (प्रदर्शन) के रूप में दैनिक कथकलि का कार्कक्रम जगह जगह चला रहे हैं ।

कथकलि की कला का यह व्यापारिक प्रयोग एक तरफ़ उसका अवमूल्यन ही करा रहा है । कथाकलि की कथायें बहुधा पौराणिक हुआ करती हैं और उसका मंचविधान आदि कुछ धार्मिकता रखता है । पवित्रता की सुरक्षा के लिए ही इसे मंदिरों के आंगनों में सीमित रखते थे । ऐसी कथा और कलाएँ शराब में धुत बैठे पर्यटक स्त्री-पुरुषों के सामने केवल पैसे के लिए प्रस्तुत करना सच्चे कलावतों को बडा कष्टदायक ही लग सकता है ।

परोक्ष रूप से दासता की वृद्धि

धनी विदेशी पर्यटकों के केन्द्र के पास हिन्दुस्थानी भाषियों के जाने पर केन्द्र के कर्मचारियों को हँसी आती है और उन्हें घृणा की दृष्टि से देखा जाता है । वसे सरकार ने मध्य वर्गों के लोगों के लिए भी एक होटल का प्रबन्ध किया है । इस व्यवस्था से सरकार को पैसे मिलते होंगे। पर्यटक यहाँ आकर सुख सुविधा का मजा लूटते होंगे । किन्तु जो मानसिक गुलामी इससे बढ रही है, जो हीनता-ग्रन्थी बढ रही है उसकी ओर लोगों का ध्यान कम जाता है । अंग्रेजी हटाओ' नारा लगाना दूसरा तीसरा दर्जा एक कर देना आदि मामूली उपायों से भारतीय गरिमा की स्थापना नहीं होती । भारत एक स्वतंत्र राष्ट्र हैं । उसे अपनी जनता का स्वाभिमान भी बढाना है । विदेशियों को हम से बडा साबित करने का प्रयत्न जब सरकारी अनुमति से होता है तब देशवासियों को भी विदेशियों की नकल करने और उनकी छोटी मोटी चीजें खरीद कर या माँग कर अपनी नकली शान दिखाने की इच्छा होती है । सच्चे भारत का आकर्षण उसके शान्दार होटलों में नहीं हो सकता । लेकिन वर्तमान रवैया इस आवाज को कहाँ तक सुनेगा ?

विदेशों को हम से बडा साबित करने का प्रयत्न जब सरकारी अनुममि से होता है तब देशवासियों को भी विदेशियों की नकल करने और उनकी छोटी मोटी चीजें खरीद कर या माँग कर अपनी नकली शान दिखाने की इच्छा होती है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कश्मीर के हौस बोट

सरकारी पर्यटन विभाग की व्यवस्था सीमित है, महँगी है भी। अतः निजी क्षेत्र के कुशल व्यक्ति यहाँ बडे आकर्षक नामों से छोटे छोटे होटल-लाँज चलाते हैं। ये नाम पढते पढते काश्मीर के श्रीनगर के हौस बोटों की याद आती है। नाम बडे और दर्शन थोडे। यात्रियों से पैसे कमाने व लूटने में सभी कुशल होंगे ही। हिप्पी लोग खर्च कम करने के ख्याल से इन्हीं निजी होटलों का आसरा लेते हैं। उन्हें समुद्री स्नान से ही तो मतलब है। कभी कभी अखबार में धूर्तबाज़ी की कथायें भी आती हैं। कोवलम और उसके निजी लाज स्थानीय सुखलोभी को भी आकृष्ट करते हैं। स्थानीय रोमियो भी कभी कभी अपनी जूलियट को लेकर यहाँ पहुँचते हैं। यहाँ तक कि "कोवलम जाना" मुहावरा तक बन चुका है।

मलयालम के राम-कवि का जन्म स्थान

कोवलम का भूभाग धन्य है जिसने एक यशस्वी केरलीय रामकवि को जन्म दिया। अनुमानतः १४०० ई में यहाँ 'आवाट्टुतुरा' नामक मुहल्ले में अय्यिप्पिल्ला आशान का जन्म हुआ। उन्होंने द्राविडी छंदों में 'रामकथाप्पाट्टु' रचा था। पाट्टु माने गीत है। गायन के योग्य छंदों में राम कथा की रचना इस सरस्वती साधक का योगदान है। इनकी रामकथा त्रिवेंद्रम के श्रीपद्मनाभ मंदिर के उत्सव के दिनों में एक कला कृति के रूप में 'चन्द्रवलयम' नामक बाजे की संगति में गायी जाती थी। त्रावंकोर के शासकों के द्वारा इस ग्रंथ की मान्यता ही इससे सूचित होती है। केरल के रामकाव्य के इतिहास में आशान के 'रामकथापाट्टु' का अपना महत्वपूर्ण स्थान है। मगर पर्यटकों को इसका परिचय देने का कोई प्रबन्ध नहीं है। स्थानीय लोग इसको महत्व भी कम देते हैं।

केरल का सा प्राकृतिक दृश्य थोडा बहुत गोवा में शायद मिले, पर कोवलम् की तुलना कोवलम से ही हो सकती है। "कोवल" नामक शब्द तमिल और मलयालम दोनों भाषावों में है। संभव है, प्राचीन तमिल शब्द ही मलयालम में चल गया हो। तमिल नाड में भी समुद्र-तट के किसी किसी स्थान का नाम कोवलम पडा है। परन्तु केरल का कोवलम भी अब विश्व-विख्यात है। उसका शांतिपूर्ण समुद्रतट यात्रियों को निमंत्रण देता रहता है। अतएव बारंबार वहाँ जाने की इच्छा सबको होती है। ●

मालिक बिन दीनार केरल में

ई० ६५४ में मालिक बिन दीनार केरल आये और यहाँ इस्लाम धर्म का प्रचार किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिधि के बाहर

अविद्या का अंधकार
बोझिल कर देता है
जीवन की धुरी को
निष्फल हो जाते हैं
सब शोभन तत्व
मृदुलता खो जाती है
अनजानी घाटियों में
मणियां दिखती हैं
सिर्फ़ दूरवर्ती
शैल-शिखरों पर ।
कृत्रिमता से नहीं होगा
लोक का त्राण
जड़ें बहुत गहरी हैं
अकरणीय कर्मों की
इसके लिए चाहिएं
अभिनव चरित्र-गुण
जैसे कि
सत्य के प्रति आस्था
और
चित्त-संस्कार
शील-श्रद्धा से ।
नीर-क्षीर विवेक
प्राप्त हो सकेगा तभी
और आत्मा होगी
तभी प्रबुद्ध
क्योंकि
स्वयं पर प्रतीति ही
जीवन का सार है
सुरभि फैलती है
सिर्फ पुष्पों ही से नहीं
महकती है
सामान्य-सी दाभ भी । ❀

डा० सुरेशचन्द्र गुप्त
१०/६ ईस्ट पंजाबी बाग
नई दिल्ली ११००६२

सेन्ट थोमस केरल में

ई० ५२ से ५९ तक सेन्ट थोमस ने केरल में भ्रमण करके कई ब्राह्मण परिवारों को ईसाई धर्म में दीक्षित किया ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

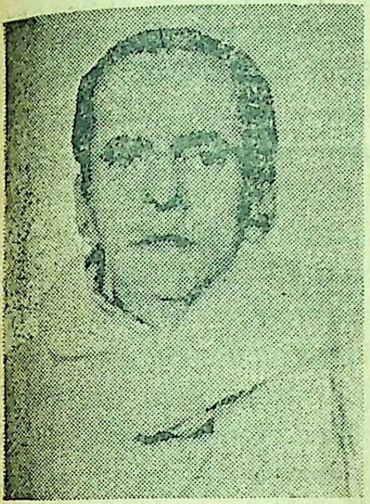

तपोनिष्ठ हिन्दी सेवी स्व० रामशास्त्री

वी. के. एस. नम्पूतिरी

जिन्दगी में कभी कभी ऐसी घटनाएँ अचानक ही घटती हैं जिनकी यादें हमेशा ताज़ी बनी रहती हैं और जो मत तक हमारे भावों को झकझोर कर जगाती रहती हैं। समादरणीय गुरुजी श्री० रामशास्त्री से मेरी पहली मुलाकात भी दर-असल ऐसी ही एक विशिष्ट घटना थी। इस प्रथम परिचय ने आत्मीयता की उच्च स्थिति तक पहुँचकर हमारे जीवन में स्थायित्व पा लिया था।

वर्षों पूर्व की बात है। बनारस के एक विख्यात दार्शनिक, 'विश्वात्मा', केरल-भर में भारतीय दर्शन का विस्तृत परिचय देते हुए घूम रहे थे। उनके हिन्दी भाषणों के अनुवादक के रूप में कई दिनों तक मैं भी उनके साथ रहा था। श्री० शास्त्रीजी उनसे मिले थे। वेदान्त के विभिन्न विषयों पर शास्त्रीजी उनसे मतभेद रखते थे। अपने पक्ष के समर्थन में आवश्यक प्रमाण भी वे उद्धृत करते थे। शास्त्रीजी के तर्कों को विश्वात्मा मान लेते थे। श्री० शास्त्रीजी की इस विशेष प्रतिभा से सभी मुग्ध थे। उनके इस पांडित्य पर मैं अत्यन्त प्रभावित हुआ। उन्हीं दिनों मैं उनका शिष्य बन गया।

श्री० शास्त्रीजी मेरे परमश्रद्धाभाजन थे। विगत कई सालों से मैं उनका कृपा-पात्र रहा हूँ। उनके असीम स्नेह और विनोद की सैकडों जीती स्मृतियाँ हैं।

मेरा बचपन गुरुकुल में बीता। वहाँ वर्षों तक मैंने संस्कृत का अध्ययन किया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संस्कृत के अलावा वे हिन्दी, उर्दू, मलयालम, तमिल, गुजराती, बंगाली अंग्रेजी आदि भाषाएँ भी जानते थे ।

था । जीविकोपार्जन के झमेलों में पड़ने से भारतीय संस्कृति की गंगोत्री में नहाते रहने का मेरा यह क्रम करीब रुक ही गया था । फिर वर्षों बाद जब श्री० शास्त्रीजी के शिष्यत्व का सौभाग्य पाया तभी गुरुकुल प्रणाली के उस अध्ययन क्रम को जारी रखने का मौका मुझे मिला था ।

श्री० शास्त्रीजी का जन्म तारीख १ जुलाई सन् १९०८ में केरल की राजधानी तिरुवनन्तपुरम में हुआ था । राजकीय संस्कृत-महाविद्यालय में अध्ययन करके उन्होंने 'महोपाध्याय' परीक्षा उत्तीर्ण कर ली थी । संस्कृत में उन्होंने गहरी विद्वत्ता पायी थी । आजकल विरले ही ऐसे पंडितों को हम देख सकते हैं । वेद, पुराण, दर्शन, व्याकरण, काव्य, अलंकार, ज्योतिष, गणित, लेखाकर्म आदि विषयों के वे मर्मज्ञ थे । संस्कृत के अलावा वे हिन्दी, उर्दू, मलयालम, तमिल, गुजराती, बंगाली, अंग्रेज़ी आदि भाषाएँ भी जानते थे । चित्रकला, मूर्तिकला, संगीत कला और छायाचित्रण की कला के भी वे पारखी थे ।

श्री० शास्त्रीजी का खानदान 'तिरुवितांकूर' राज्य के राजपरिवार से वर्षों से संबन्धित रहा था । राजा मार्ताण्डवर्मा के शासन काल (आज से ढाई सौ वर्ष पहले) से ही श्री० शास्त्रीजी के घराने का एक व्यक्ति राजगुरु (धर्मोपदेष्टा) होता था । राजगुरु को दीक्षितर कहते थे । इसी परंपरा में श्री० शास्त्रीजी भी कई वर्षों तक (तिरुवितांकूर राज्य के आखरी राजा श्री० चित्तिरा तिरुनाल बालराम वर्मा के शासन-काल में) दीक्षितर रहे थे । कुछ वर्षों के बाद अपने इस पुश्तैनी-पेशे को उन्होंने छोड़ दिया था । राज-गुरु होने के नाते यदि चाहते तो कोई सरकारी पद प्राप्त करना उनको मुश्किल की बात न होती, पर न जाने क्यों, इस ओर उनका ध्यान नहीं गया । 'दीक्षितर' परंपरा में उनके कुटुंब के होने की स्मृति में ही उस गली का नाम 'दीक्षितर गली' रख दिया गया है जहाँ शास्त्रीजी का घर स्थित है ।

केरल हिन्दी प्रचार सभा के संस्थापक स्व० श्री० के. वासुदेवन पिल्लै ने ही श्री० शास्त्रीजी के हिन्दी अध्ययन का श्रीगणेश किया । उन्होंने 'राष्ट्रभाषा विशारद' परीक्षा उत्तीर्ण कर ली थी । इक्कीस वर्ष की उम्र में ही हिन्दी प्रचार का कार्य शुरू करके राष्ट्र-भारती की उपासना में उन्होंने अपने को समर्पित किया था । आखिर इसी इष्टदेवी में ही उनका विलयन भी हो गया । उनके अनेक शिष्य देश-भर में कर्मरत रहकर अपने महान गुरु की महत्ता को उजागर कर रहे हैं ।

श्री० शास्त्रीजी अच्छे ग्रन्थकार भी रहे । पाणिनी के व्याकरण, सिद्धान्त-कौमुदी, के आधार पर उन्होंने मलयालम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में संस्कृत का पूरा व्याकरण लिख रखा है, धनाभाव से अभी तक प्रकाशित नहीं किया गया है। इसके अलावा उन्होंने हिन्दी-संस्कृत और संस्कृत-हिन्दी कोषों का निर्माण भी शुरू किया था। इन कोषों के कार्य कुछ दूर तक आगे बढे भी, लेकिन वे सब अधूरे ही रह गये हैं। इस संबन्धी कई कार्यों में भाग लेने का सौभाग्य मुझे भी मिला है। मेरे अध्ययन अध्यापन के बीच जो जो सन्देह उठते थे उन सबका निवारण वे समय समय पर करते रहते थे। भारतीय काव्यशास्त्र पर वे विशेष रुचि रखते थे, अतः इस संबन्धी मेरे शोध-कार्य में उनको अमूल्य सहायता रही है।

हिन्दी के प्रचार-प्रसार में एवं साहित्य-देवता की उपासना में वे इतने तल्लीन रहे कि अपने पारिवारिक जीवन की ओर ध्यान देने का मौका ही उनको नहीं मिला, अपने परिवार को वे भूल ही बैठे थे। गरीबी में ही उनको जीवन बिताना पडा था। भाषा और साहित्य के माध्यम से धनोपार्जन करने की वर्तमानकालीन प्रवृत्ति के वे शिकार नहीं हुए थे। आर्थिक कठिनाइयाँ काल का रूप धारण करके मुँह बाये उनको निगलने की ताक में खडी थीं। आखिर वही हुआ, मृत्यु-देव ने ही इन कठिनाइयों से उनका उद्धार किया।

हिन्दी के कई शीर्षस्थ साहित्यकारों से उनका निकटतम संपर्क रहा है, श्री० उपेन्द्रनाथ अश्कजी तो उनके घरू मित्र ही रहे।

श्री० शास्त्रीजी की पत्नी जीवित हैं। उनके एक पुत्र और तीन पुत्रियाँ हैं।

अपने कर्मरत जीवन के विशिष्ट आदर्शों को शिष्यों के सम्मुख छोडकर तारीख ११ जुलाई सन् १९८२ को वे परमधाम सिधारे। उनके एक विनम्र शिष्य के नाते मैं अपने भाव-सुमनों की माला उनकी सहस्रों जीती स्मृतियों पर चढ़ाकर श्रद्धांजलियाँ समर्पित कर रहा हूँ और जगन्नियन्ता से प्रार्थना कर रहा हूँ कि उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करें। ❀

केरल के वर्ष

कहते हैं केरल में कई प्रकार के वर्ष प्रचलित रहे। कलिवर्ष ही इन से सब से पुरातन है। इसका आरंभ मेटमास में आरंभ होता है। तिरुनेल्ली, तृक्कंटियूर, तिरुनक्करा, तृक्कुलशेखरपुरम् और इळंकुन्नप्पुषा इन प्रमुख मन्दिरों ने अपना अपना वर्ष चलाया था। कोल्लम उस समय का प्रमुख व्यापार केन्द्र रहा। अतः कोल्लम का वर्ष कोल्लवर्ष अधिक प्रचलित हुआ, जो आज भी चलता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माँ की पुकार

विनीता अशोक

चारुलता-सी कोमल बेटी
पाँच बरस की चंचल लडकी
तू मेरी आँखों से बहु दूर-
खोयी-सी रहती मीलों दूर।

मेरी प्यारी प्यारी लल्ली-
तुझे देख बिन जीना मुश्किल,
फिर भी क्या कर सकती माता ?
जकड रही हूँ विधि बन्धन में।

आयेंगे वे अच्छे दिन फिर-
दौड पड़ूँगी तेरे खातिर-
गोदी में लूँ चुम्बन कर लूँ
मेरी प्यारी प्यारी लल्ली।

★

जी. एछ. स्कूल,
वाटानप्पल्ली
तृशूर, केरल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या आज तुलसी प्रासंगिक हैं?

डॉ० मृत्युंजय उपाध्याय

हर युग में वैसे प्रश्न उठते हैं और तुलसी से समाधान मिल जाता है। तुलसी की प्रासंगिकता का यही रहस्य है।

भारत ऋषि, मुनि, और कवियों का देश रहा है। उन्होंने न केवल धर्म साधना की अलख जगाई है, वरन् मानव जीवन के विभिन्न क्रिया व्यापारों, पारस्परिक संबंधों की रागात्मकता को उजागर कर 'वसुधैव कुटुंबकम्' के भाव को चरितार्थ किया है। संन् १५८९ (हाथ रस के सत तुलसी साहब सं० १८२०–१९०० ने अपने घर रामायण में यह लिखते हुए कि वे पूर्ववती जन्म में तुलसीदास थे, सं० १५८९, भाद्रपद शुक्ला ११ मंगलवार को जन्म लेना लिखा है और यह पूरी तिथि ज्योतिष की गणना से ठीक आती है।) में तुलसीदास का आविर्भाव हुआ। अपने सर्वप्रसिद्ध ग्रंथ रामचरितमानस की रचना सं० १६३१ में उन्होंने अयोध्या में आरंभ की थी (बा. ३४-३५)। सैकड़ों वर्ष बीत गए–मानव–जाति के इतिहास में कितने परिवर्तन आए—विज्ञान का कितना विकास हुआ, फिर भी तुलसी का स्मरण उसी उत्साह और श्रद्धा से किया जा रहा है। कारण स्पष्ट है कि उनकी रचनाओं में कुछ ऐसी शाश्वत समस्याओं के समाधान अंकित हैं, जिनपर काल प्रवाह का प्रभाव नहीं पड़ता। हर युग में वैसे प्रश्न उठते हैं और तुलसी से समाधान मिल जाता है। तुलसी की प्रासंगिकता का यहो रहस्य है।

उनका सर्वप्रमुख ग्रंथ रामचरित मानस अपने कवित्व और धार्मिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चेतना के कारण लगभग चार सदियों से लोगों को रस और प्राण देता रहा है। इसकी अद्यतन प्रासंगिकता का कारण यह है कि इसने लोक भाषा के द्वारा जीवन के उन आदर्शों और मूल्यों को जन-साधारण तक पहुँचाया है जो प्राचीन होते हुए भी उपयोगी रहे हैं और कठिन-से-कठिन परिस्थितियों में भी सांत्वना, आशा, निर्देश और संबल देते हैं। कई पीढ़ियों से यह काव्य मनोरंजन का ही साधन नहीं रहा है, वरन् विश्व, समाज और परिवार संबंधी चिंतन और व्यक्तिगत-सामाजिक आचरण को प्रभावित करनेवाला सबसे बड़ा धर्मग्रंथ भी। इसलिए हिन्दी-भाषी संस्कृति को उसकी अतल गहराई में सही ढंग से समझने के लिए इस काव्य का अध्ययन आज भी आवश्यक है। जो प्रगतिकामी हैं, नई दिशा देने के आकांक्षी हैं, सामाजिक क्रांति के पक्षपाती हैं, उन केलिए भी इसका अध्ययन आवश्यक है। इसके द्वारा वे उन मूल्यों पर बल दे सकते हैं जो आज भी उपयोगी हैं और उन मूल्यों की चेतना उत्पन्न कर सकते हैं, जो आज भी महत्त्वपूर्ण है।

यदि गहराई में देखा जाए, तो मानस में ऐसी बहुत सी बातें मिल सकती हैं, जो हमें आज भी प्रेरित करती हैं। निर्वासन के रूप में राम का दुःख भोग अपनी दृष्टि से जीवन के श्रेष्ठ मूल्यों के संरक्षण केलिए स्वेच्छा से स्वीकृत दुःख भोग है। साधन-संपन्न और विपन्न, बलशाली और दुर्बल, धर्म और अधर्म का संघर्ष चिरंतन है। रामायण काल में था, आज भी है और जब तक सृष्टि का अस्तित्व है, यह संघर्ष चलता रहेगा। परंतु इतिहास में ऐसे महापुरुष भी हो गए हैं, जो धर्म और नीति के लिए जूझते रहे। अंतिम विजय उनकी ही हुई—वे ही मानवता का आदर्श बन गए। राम की कथा हर ऐसे व्यक्ति की कथा है, जो अपनी सुख-सुविधाओं का त्याग कर आदर्श और मूल्यों के लिए संघर्षरत रहता है। अन्य युगों की तरह आज भी ऐसे व्यक्ति की सार्थकता बनी हुई है और यह मानने में कोई कठिनाई नहीं होनी चाहिए कि जब तक अपने विवेक और औचित्य बोध के सामने प्रलोभनों और सुख सुविधाओं का त्याग करनेवाले लोग समाज में जीवित रहेंगे, तब तक उनकी सार्थकता कभी कम नहीं होगी।

रावण के विरुद्ध राम का युद्ध रथी रावण के विरुद्ध विरथ राम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की लड़ाई है। दूसरे शब्दों में, यह साधन संपन्न अन्याय के विरुद्ध साधन विपन्न न्याय की लड़ाई है। साधन संपन्न के भय से समझौता करने के बदले अपने न्यायोचित अधिकारों केलिए संघर्ष करने और तात्कालिक प्रलोभनों के सामने झुकने के बदले अपने आदर्शों के लिए यंत्रणा झेलने का जो स्वर रामचरितमानस में मिलता है, वह हमारे युग में नया अर्थ अर्जित करता जा रहा है।

इन सबमें सर्वोपरि है मानस का आशावाद, जो हमें प्रेरणा और संबल देकर निराशा के निविड़ अंधकार में भी प्रगति की ओर उन्मुख करता है। कहा जा सकता है कि सामान्यत: जीवन में अन्याय के विरुद्ध न्याय की विजय नहीं होती। अक्सर देखा गया है कि अन्याय ही विजयी होता है। अत: रावण के विरुद्ध राम की विजय को जीवन के अनिवार्य निष्कर्ष के रूप में स्वीकार करना ठीक नहीं है। परन्तु कोई प्रारंभ से ही मानकर चले कि अपने प्रयत्नों में उसकी सफलता संदिग्ध है, तो उससे उसके कर्म संबंधी उत्साह, आदर्श के प्रति आस्था और जीवन के रस के विपरीत रूप में प्रभावित हो जाना आश्चर्य की बात नहीं। वस्तुत: जीवन जीने और अपने आदर्शों के लिए संघर्ष करने की शक्ति आशावाद से अर्जित की जा सकती है, जिस केलिए तुलसी आज भी स्मरणीय हैं।

यह अलग बात है कि सभ्यता के विकास, वैज्ञानिक आविष्कारों के कारण सुख-सुविधाओं में अप्रत्याशित वृद्धि आदि के कारण तुलसी द्वारा अभिव्यक्त पारिवारिक आदर्श (मुख्यत संयुक्त पारिवारिक व्यवस्था पर आधारित) खोखला हो गया है। सुविधाएँ बढ़ी हैं, तो वैयक्तिकता (इनडिविज्यूलिटी) में भी वृद्धि हुई है। आदर्श परिवार की धारणा पति-पत्नी तथा उसके दो तीन बच्चों तक सीमित हो गई है। इसमें दो मत नहीं कि कृषि प्रधान भारतीय जन-जीवन में मानस की असाधारण लोकप्रियता का एक बड़ा कारण संयुक्त परिवार के पारस्परिक संबन्धों का अनुकरणीय आदर्श प्रस्तुत करना हैं। परंतु भारतीय जनता के अधिकांश केलिए यह पारिवारिक आदर्श अतीत बन गया है। उसी प्रकार तुलसी की वर्णव्यवस्था आज की सामाजिक व्यवस्था और नए बौद्धिक परिवेश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में न ग्राह्य रह गई है और न समीचीन। वर्णव्यवस्था और नारी निंदा के बारे में उनकी उक्तियाँ कदापि तर्क सम्मत और ग्राह्य नहीं हो सकती है।

जो कुछ भी हो, तुलसी महाकवि हैं और उनका मानस गहरे जीवन बोध से उत्पन्न उच्च कविता है, जिसकी प्रासंगिकता न तो उन लोगों के लिए घटेगी, जो आस्तिक हैं, न उन लोगों के लिए जो मात्र काव्य के पाठक हैं। इसमें कवित्व, भगवद् भक्ति और नैतिकता का ऐसा सामंजस्य हुआ है कि उनको अलग-अलग कर नहीं कर देखा जा सकता। सच तो यह है कि इसमें जीवन के इतने शाश्वत प्रश्नों का 'कांतासम्मित' निदान प्रस्तुत हुआ है कि चाहे अनचाहे लोग उस ओर झुकेंगे। जिस प्रकार उनके राम को 'रीझ भजो या खीझ' वाली उक्ति सच है, उसी प्रकार उनकी प्रासंगिकता को भी स्वीकारना होगा। शुद्ध काव्य कृति के रूप में भी उनकी कृतियों से सहृदय पाठक रसग्रहण करते ही रहेंगे। ※

वृन्दावन, राजेन्द्रपथ,
धनबाद-८२६००१

केरल का जिक्र प्राचीन ग्रंथों में

केरल का जिक्र कई प्राचीन ग्रंथों में मिलता है। रामायण, महाभारत और प्रपंचहृदय जैसे संस्कृत ग्रंथों में केरल का जिक्र किया गया है। कात्यायन की व्याख्याओं में तथा कालिदास कृत हरिवंश और रघुवंश में भी केरल का जिक्र है। तैत्तरीय आरण्यक में, एक बौद्ध जातक कथा में, अर्थशास्त्र में, हीब्रू बाइबिल में और मगस्थनीस कृत इन्दिका में केरल का जिक्र किया गया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दामन बिछौनी हो गई

राजेन्द्र 'राजा'

आदमी की जिंदगी कितनी घिनौनी हो गई।
जो बड़ी पहले बहुत थी आज बौनी हो गई।
आदमी छुपने लगा है अब नकाबों में यहाँ,
हर किसी 'इंसान' की सूरत ही रोनी हो गई।
अब जुवां पर हर किसी के वासना के गीत हैं,
पाक दामन भी यहां फटकर बिछौनी हो गई।
दर्द गैरों से अगर मिलता तो कोई बात थी,
वेदना घर की हो अपनी तो सलौनी हो गई।
अब समन्दर भी हमारे आंसुओं पर जी रहा
लाश अपनी आज हमको स्वयं ढोनी हो गई।
सोचता 'राजा' कहां तू आ गया इस भीड़ में,
जो कभी देखी नही वह आज होनी हो गई।

❀

चीती (सिकन्द्राबाद) उ० प्र० २०३ २०२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छठा अखिल भारत नागरी लिपि सम्मेलन

जिन भाषाओं के लिए अपनी कोई लिपि नहीं है उनके लिए नागरी अपनायो जा सकती है ।

नागरी लिपि परिषद् द्वारा बिठलभाई पटेल हाउस, कांस्टीस्टूशन क्लब, रफी मार्ग नई दिल्ली में छठा अखिल भारत नागरी लिपि सम्मेलन २१ तथा २२ अगस्त १९८२ को संपन्न हुआ । इसका उद्घाटन करते हुए केन्द्रीय शिक्षा उप मंत्री श्री० पी. के. तुंगन ने कहा कि अनेकता में एकता भारत की विशेषता रही है तथा भारत की विभिन्न भाषाओं को जोड़ने में संपर्क लिपि के रूप में नागरी महत्वपूर्ण कार्य कर सकती है । इसमें कई खूबियाँ हैं । इसका विस्तार और प्रचार होना चाहिए । श्री० तुंगन ने यह भी बताया कि पूर्वांचल में जिन भाषाओं के लिए अपनी कोई लिपि नहीं है उनके लिए नागरी अपनायी जा सकती है । नागरी के माध्यम से भारतीय भाषाओं को निकट आने का अवसर भी मिलेगा । इस अवसर पर श्री० तुंगन ने 'नागरी संगम पत्रिका की स्मारिका का विमोचन किया । परिषद् के अध्यक्ष डा० मलिक मोहम्मद ने स्वागत भाषण करते हुए कहा कि नागरी को संपर्क लिपि के रूप में स्वीकार करना राष्ट्रीय एकता की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण कार्य हैं और इसी उद्देश्य से प्रेरित होकर नागरी लिपि परिषद् सभी प्रकार से क्रियाशील है । उन्होंने कहा कि परिषद् ने विभिन्न भाषाएँ नागरी लिपि द्वारा सीखने के लिए कई पुस्तकें तैयार की हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और विनोबा भावे की प्रेरणा से कई भारतीय भाषाओं की पत्रिकाएँ नागरी लिपि में प्रकाशित की जा रही हैं। परिषद् के अध्यक्ष ने स्पष्ट किया कि देवनागरी को एक अतिरिक्त लिपि के रूप में प्रचार में लाने से किसी एक भाषा की अपनी निजी लिपि को हानि पहुँचाने का उद्देश्य कभी भी नहीं हैं। नागरी को अपनाने में कुछ भाषा क्षेत्रों में यह गलत फहमी हो सकती है कि नागरी हिन्दी की लिपि है और नागरी के माध्यम से हिन्दी ही लादी जायेगी। परन्तु इस आशंका का कोई आधार नहीं है। नागरी की वैज्ञानिकता और जोड़ लिपि के रूप में उसकी उपयोगिता को ध्यान में रखते हुए देश में सांस्कृतिक एकता लाने के साथ साथ एशियाई भाषाओं के बीच में एक सहलिपि के रूप में उसके प्रयोग के लिए आवश्यक वातावरण सृजित करना उचित होगा। जिस प्रकार यूरोप की विभिन्न भाषाएँ रोमन लिपि को एक सामान्य लिपि के रूप में स्वीकार करके उसका प्रयोग करती आ रही हैं उसी प्रकार भारत और एशिया की भाषाओं के लिए एक अतिरिक्त लिपि के रूप में नागरी काम में लायी जा सकती है।

परिषद् के उपाध्यक्ष श्री० सिद्धेश्वर प्रसाद ने कहा कि राष्ट्र के व्यापक हित की दृष्टि से नागरी लिपि का प्रचार किया जाना चाहिए। श्री० शंकर दयाल सिंह ने सुझाव दिया कि नागरी लिपि के व्यापक प्रचार तथा प्रसार के लिए वर्ष में दो बार शिविर अथवा संगोष्ठियाँ आयोजित की जानी चाहिए, एक उत्तर में और एक दक्षिण में तथा विभिन्न भारतीय भाषाओं का सम्मिलित रूप से एक कोश नागरी लिपि में तैयार किया जाना चाहिए। श्री० यशपाल जैन ने स्पष्ट किया कि नागरी लिपि देश को एकता के सूत्र में बाँधने वाली कड़ी है तथा आचार्य विनोबाजी का कहना है कि देश की विभिन्न भाषाओं के लिए "नागरी भी चले" उनका कहना यह नहीं है कि "नागरी लिपि ही चले।"

गोष्ठियों के सुझाव

सम्मेलन के अवसर पर तीन गोष्ठियों का आयोजन हुआ। प्रथम गोष्ठी 'संपर्क लिपि तथा सह लिपि के रूप में नागरी लिपि की संभावनाएँ' तथा दूसरी गोष्ठि 'नागरी लिपि के व्यापक प्रचार के उपाय'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के संबन्ध में हुई । [illegible] रावत ने नागरी लिपि में उच्चारण के संबन्ध में तेलुगु भाषा भाषियों की कठिनाइयां बताईं और सुझाव दिया कि प्रत्येक क्षेत्र में विशेषज्ञों की समितियाँ बनाई जानी चाहिए जो वहाँ की कठिनाइयों का अध्ययन करके मोनोग्राम प्रस्तुत करे । प्रो० कैलाश चन्द्र भाटिया ने अंग्रेज़ी शब्दों के लिप्यंतरण की समस्या की ओर ध्यान आकर्षित किया और सुझाव दिया कि विभिन्न व्यक्तियों के नामों तथा भौगोलिक स्थानों के नामों के कोश नागरी लिपि में तैयार कराए जाने चाहिए जिनसे उनका उच्चारण ठीक प्रकार हो सके । श्री. राजमणि तिवारी ने बताया कि रेलवे स्टेशनों, डाकघरों आदि के नामपट्टों पर नगरों आदि के नामों की विविधता को दूर करने के लिए भारतीय सर्वेक्षण विभाग के सहयोग से कार्य किया जा रहा है । बोडो भाषा की पाठ्य-पुस्तकें नागरी लिपि में छप सकें, सब्दकोश नागरी लिपि में प्रकाशित हो सकें और इसके लिए सरकार की ओर से आर्थिक सहायता दी गई हैं तथा चिह्नों और मुद्रण की समस्याओं को हल करने का प्रयास हो रहा है । नागरी लिपि में यांत्रिक सुविधाएँ व्यापक रूप से उपलब्ध कराने के लिए छठी योजना में राजभाषा विभाग में यांत्रिक कक्ष बनाने की बात सिद्धान्त रूप में मान ली गई है । कोरायुट के श्री० अक्षय कुमार महन्ती, अलीगढ़ विश्व-विद्यालय के डा० नज़ीर अहम्मद, पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ के डा० बी. पी. मैनी, फीज़ी से आए श्री० ब्रह्मदत्त स्नातक, आन्ध्र विश्व-विद्यालय के डा० इकबाल, हिन्दी अकादमी के सचिव डा० नारायण दत्त पालीवाल, कलकत्ता के श्री० विधुभूषण दास गुप्त ने तथा श्रीमती कमल रत्नम ने भी अपने विचार प्रकट किए ।

यांत्रिक सुविधाओं पर चर्चा

सम्मेलन के दूसरे दिन 'नागरी लिपि में यांत्रिक सुविधाएँ' विषय पर विचार गोष्ठी हुई । परिषद् के मंत्री श्री० हरिबाबू कंसल ने बतलाया कि नागरी टाइपराइटरों, पिन व्हाइट टाइपराइटर, बुलेटिन टाइपराइटर, बिजली चलित टाइपराइटर, टेलीप्रिंटर, कम्प्यूटर आदि के उत्पादन में क्या क्या समस्याएँ रही हैं, उनके समाधान के क्या क्या प्रयास हुए हैं और कितनी सफलताएँ मिली हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नागरी लिपि के कम्प्यूटर का प्रोटो टाइप नागरी लिपि में बन चुका है ।

उन्होंने बताया कि नागरी में फोटो सेटिंग की सुविधा हो जाने से मुद्रण क्षेत्र में महत्वपूर्ण प्रगति हुई है। नागरी लिपि के कम्प्यूटर का प्रोटो टाइप नागरी लिपि में बन चुका है । इलेक्ट्रानिकी विभाग के संयुक्त निदेशक श्री० सत्यनारायण जिन्दल ने बताया कि एशियाई खेलों के लिए जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम में एक करोड़ रुपए की लागत का कम्प्यूटर लगवाया गया है जिससे स्कोर बोर्ड पर एक बार नागरी लिपि में और दूसरी बार रोमन लिपि में सूचनाएँ दी जाएँगी । डा० महेश चंद्र गुप्त, श्री० मरयाडीन सर्राप तथा श्री० राजा राम जायसवाल ने भी यांत्रिक सुविधाओं के विकास के संबन्ध में हो रहे कार्य पर प्रकाश डाला ।

सम्मेलल का समापन विदेश मंत्री श्री० पी. वी. नरसिंह राव ने किया। उन्होंने नागरी लिपि की उपयोगिता को स्वीकार करते हुए यह सुझाव दिया कि लिपि के बारे में कट्टरता नहीं होनी चाहिए तथा इसके प्रचार के कार्य को इस ढंग से किया जाना चाहिए कि विवाद उत्पन्न न हो। श्री० नरसिंह राव ने यह आशा व्यक्त की कि भारतीय भाषाओं का श्रेष्ठ साहित्य अगर नागरी लिपि में उपलब्ध हो तो वह बहुत बड़ा कार्य होगा। इसमें संदेह नहीं कि जोड़ लिपि के रूप में अगर नागरी के प्रति एक सौहार्दपूर्ण वातावरण पैदा किया जाय तो उस से नागरी के प्रचार प्रसार में लाभ होगा ।

भारतीय भाषाओं का श्रेष्ठ साहित्य अगर नागरी लिपि में उपलब्ध हो तो वह बहुव बड़ा कार्य होगा ।

परिषद् के अध्यक्ष डा० मलिक मोहम्मद ने स्पष्ट किया कि परिषद् नागरी लिपि को देश की समान लिपि बनाने की बात नहीं करता बल्कि इसे विभिन्न भाषाओं की संपर्क लिपि, सह लिपि अथवा अतिरिक्त लिपि बनाने का प्रयास है। इस कार्य में आचार्य विनोबा मावे का आशीर्वाद है। इस अवसर पर श्री० लल्लन प्रसाद व्यास, डा० पी. गोपाल शर्मा, श्री० यशपाल जैन,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नागरी लिपि में विभिन्न भाषाओं की प्रारंभिक पाठ्य-पुस्तकें तैयार करवाकर उनकी सहायता से त्रिभाषा सूत्र को कार्यान्वित करने का प्रयत्न करना चाहिए।

श्री० मोती लाल जोतवाणी और श्री० जगदीश चंद्र जीत तथा भिक्षु कोण्डिन्य ने भी अपने विचार रखे। सम्मेलन में केरल, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु, उड़ीसा, बंगाल, बिहार, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, आदि के १५० प्रतिनिधियों ने भाग लिया। परिषद् के मंत्री श्री० सी. ए. मेनन ने प्रतिनिधियों तथा अतिथियों के प्रति आभार प्रकट किया।

पारित निवेदन

सम्मेलन में निम्नलिखित निवेदन पारित किया गया—

१. भारत की विभिन्न भाषाओं का बहुत सा समृद्ध साहित्य अभी तक अपने ही क्षेत्र में सीमित पड़ा रहा है। वह साहित्य अन्य क्षेत्रों में भी पढ़ा जाए और उसका लाभ अन्य भाषा भाषी लोग भी उठाएँ। उसके लिए हर राज्य को चाहिए कि वह अपने क्षेत्र की भाषा के अच्छे ग्रन्थों तथा रचनाओं को मूल भाषा में किन्तु नागरी लिपि में उसके हिन्दी अनुवाद सहित प्रकाशित करके उसे प्रचारित करे। इस प्रकारके साहित्य के प्रकाशन का कार्य भारत सरकार के सूचना तथा प्रसारण मंत्रालय द्वारा भी किया जाना चाहिए।

२. शिक्षा के क्षेत्र में त्रिभाषा सूत्र को कार्यान्वित करने में नागरी लिपि को महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है। यदि विभिन्न भारतीय भाषाओं की शिक्षा किसी अन्य क्षेत्र के निवासियों को प्रारंभ में नागरी लिपि के माध्यम से दी जाए, तो उस से कितने व्यापक रूप में तथा आसानी से एक क्षेत्र की भाषा दूसरे क्षेत्र में सीखी तथा सिखाई जा सकेगी। इस पर शिक्षाविदों तथा राज्य सरकारों को गंभीरतापूर्वक विचार करना चाहिए तथा नागरी लिपि में विभिन्न भाषाओं की प्रारंभिक पाठ्यपुस्तकें तैयार करवा-कर उनकी सहायता से त्रिभाषा सूत्र को कार्यान्वित करने का प्रयत्न करना चाहिए। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (एन. सी. आर. टी.) को इस विषय में सहायता करनी चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३. त्रिभाषी सूत्र की भावना के अनुसार यह उचित होगा कि केन्द्रीय सरकार की विभिन्न परीक्षाओं में बैठनेवाले सभी व्यक्तियों के लिए हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषा का एक पर्चा अनिवार्य कर दिया जाए तथा उसमें नागरी लिपि में उत्तर लिखने की छूट रहे। इससे देश के एक भाग में दूसरे भाग की भाषाएँ सीखने की प्रेरणा मिलेगी तथा सभी भाषा-भाषियों के लिए सुविधाएँ एक समान रहेंगी।

४. भारत के एक प्रदेश के लोग नौकरी अथवा व्यवसाय के कारण दूसरे प्रदेश में जाकर रहने लगते हैं और उनमें से कुछ लोगों का थोड़े-थोड़े समय बाद स्थानान्तरण होता रहता है। ऐसे व्यक्तियों को तत्कालीन निवास के क्षेत्र की भाषा नागरी लिपि के माध्यम से सीखने तथा प्रयोग में लाने के लिए प्रोत्साहन दिए जाने चाहिए।

५. देश के कई भागों में अभी भी नागरी लिपि में लिखे गए पत्र जल्दी वितरित नहीं होते। डाक-तार विभाग को इस समस्या की ओर तुरन्त ध्यान देना चाहिए। जिन क्षेत्रों में नागरी लिपि का प्रचलन अधिक नहीं है वहाँ के डाकियों को नागरी लिपि सिखाने की विशेष व्यवस्था की जानी चाहिए ताकि नागरी लिपि में लिखे गए पतों के लिप्यन्तरण और उनके वितरण में विलंब न हो।

६. भारत के अनेक प्रमुख तार-घरों का परस्पर संबन्ध रोमन टेलीप्रिन्टरों से जुडा हुआ है, परन्तु उनके बीच देवनागरी टेलीप्रिन्टर नहीं लगे हैं। परिणामस्वरूप वहाँ देरनागरी लिपि के तारों को संख्या नहीं बढ़ पाती है। जिन-जिन क्षेत्रों में वहाँ बोली जानेवालो भाषाओं की लिपि देवनागरी अथवा उससे मिलती-जुलती लिपि है, वहाँ जिन-जिन तारघरों में रोमन लिपि के टेलीप्रिन्टर सर्किट हैं, उनमें देवनागरी सर्किट भी लगाए जाने चाहिए।

७. नागरी लिपि सम्मेलन इस बात पर सन्तोष व्यक्त करता है कि विभिन्न प्रतिष्ठानों तथा वैज्ञानियों के

भारत के अनेक प्रमुख तार-घरों का परस्पर संबन्ध रोमन टेलिप्रिन्टरों से जुड़ा हुआ है, परन्तु उनके बीच देवनागरी टेलीप्रिन्टर नहीं लगे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बसों पर भी गन्तव्य स्थानों के नाम इसी प्रकार लिखे जाने चाहिए जिससे अन्य प्रदेशों से आनेवाले यात्रियों को असुविधा न हो ।

निरन्तर प्रयत्नों के फलस्वरूप देवनागरी लिपि के कम्पूटर का प्रोटोटाइप भारत में बना लिया गया है। भारत सरकार से अनुरोध है कि इस प्रकार के कम्प्यूटर का उत्पादन व्यावसायिक आधार पर कराने के लिए शीघ्र समुचित कदम उठाये जाएँ, उसके लिए क्रमबद्ध योजना बनाई जाए तथा उस योजना को प्रभावी रूप से कार्यान्वित करने के लिए सुदृढ़ तन्त्र स्थापित किया जाए।

८. विभिन्न भारतीय भाषाओं द्वारा नागरी लिपि अपनाने पर जगह-जगह नागरी लिपि की टाइपिंग जाननेवालों को भी आवश्यकता पड़ेगी, जिससे कि उन भाषाओं के पत्र, परिपत्र, लेख आदि नागरी लिपि में टाइप किए जा सकें। इस प्रकार की व्यवस्था इस समय देश के अनेक भागों में नहीं है अथवा बहुत कम है। भारत की विभिन्न संस्थाओं द्वारा अपने क्षेत्रों में नागरी लिपि को टाइपराइटिंग सिखाने के केन्द्र खोले जाने चाहिए और उनके लिए भारत सरकार तथा राज्य सरकारों द्वारा आवश्यक सहायता की जानी चाहिए।

९. देश के अनेक भागों में सड़कों पर नगरों तथा गाँवों के नाम केवल क्षेत्रीय भाषाओं में अथवा रोमन लिपि में लिखे हैं। जन साधारण की सुविधा के लिए सभी भागों पर नगरों तथा गाँवों के नाम क्षेत्रीय भाषाओं के साथ नागरी लिपि में लिखे जाने चाहिए। बसों पर भी गन्तव्य स्थानों के नाम इसी प्रकार लिखे जाने चाहिए जिससे अन्य प्रदेशों से आनेवाले यात्रियों को असुविधा न हो।

काक्कै पाटिनियार

केरल की एक संघकालीन कवयित्री थी काक्कै पाटिनियार नच्चेल्लैयार ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीन कवितायें

(१) सम्बंध गुरकों का

(२) पद्मिनी

शकुन्तला सिरोठिया

घास पर से गुजर रहा था कि
एक सर्प मेरे पैरों को
स्पर्श करता आगे बढ़ गया।
भय से सिहर कर मैंने कहा—
'कृतज्ञ हूँ नाग देवता
दंश न देकर तुमने
मुझे जीवन दान दिया।'
सरसरता हुआ नाग रुका
मुड़ कर बोला—'इस में
कृतज्ञता की क्या बात है ?
सर्प, सर्प को नहीं डसता मित्र।"

★

सती होने को विवश
एक अल्प वयस्का पद्मिनी
अग्नि-ज्वाला से भयभीत
चिता से बाहर
कूद आती है।
गौतम समान
उस पथभ्रष्टा-
कलंकिनी अहल्या को
पाषाण बना देता है।
तब कोई राम भी
उसे स्पर्श देने से
पैर बचा लेता है।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(३)

'हंस उतर आया है'

मोती का यार बोरा ले आ चुगाने को
देख तेरे आँगन में हंस उतर आया है।

'नीर और क्षीर का
विवेक तू करेगा क्या
पंकज, मृणाल शुष्क,
ताल सूख आया है,

सीप और घोंघे किलोल यहाँ करते हैं,
अज्ञानी मन यह, माया में भरमाया है।

लहरों का तूफान हो
उठता है साँसों में,
आँसुओं के मुक्ता ही
तैर रहे आँखों में

दर्द और टीसों की काली घनी छाया है,
हंसा रे बावरे तू गलत ठौर आया है।

★

१०९ बाई का बाग
इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखकबीरारोया कक

शंबूक की शव-परीक्षा

अखबारों में पढा कि कहीं एक चर्चा सम्मेलन चला था—विषय था वृषल शंबूक की हत्या। (वृषल का अर्थ है क्षत्रिय का, शूद्रा पत्नी में जन्मा पुत्र) कुछ दिन पश्चात् किसी अखबार में एक लेख प्रकाशित हुआ जिस में वृषल शंबूक की हत्या की विशद साहित्यिक चर्चा के साथ साथ उसकी हत्या करनेवाले श्रीराम को दोषी ठहराया गया था। शंबूक की हत्या हज़ारों हज़ारों वर्ष पहले की बात है और उस पर निन्दा प्रकटित की गयी है इक्कीसवीं सदी के अरुणोदय काल में!

x x x x

लगभग साठ-सत्तर वर्ष पहले केरल की स्त्रियों में कुछ ऐसी भी थीं जो अपने उरोजों को आवेष्टित कर चल नहीं सकती थीं। पुरुष अपने केशों का कर्त्तन नहीं कर सकते थे। अंग्रेज़ी का अध्ययन निषिद्ध था। सागर पार जानेवाले भ्रष्ट माने जाते थे।

पुराण इतिहासों में और भी उदाहरण मिलेंगे। एक ही मां-बाप के पुत्र देव और असुर, नाग और गरुड बने। कुन्तीपुत्र होकर भी कर्ण पांडवों केलिए अमान्य रहा, वह मारा गया। अर्जुन को भी मात करने योग्य धनुर्धर एकलव्य को अपनी अंगूठी स्वयं काटनी पडी। इसके विपरीत मत्स्य कन्या का पुत्र सुर-नर-दानवों का वन्दनीय बना, गडरिये का लडका गीता का उद्गाता बना! ये सब ऐसे कुछ तथ्य हैं जिनके द्वारा मानव मन में छायी हुई अज्ञता को, उसको जकडनेवाले मायाजाल को मनो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन अत्याचारों के विरुद्ध आवाज उठाने केलिए समय न पाकर, ये बुद्धिजीवि लोग अपने मूल्यवान समय को वृषल शंबूक की शवपरीक्षा के लिए व्यर्थ बिता रहे हैं।

वैज्ञानिक रूप से दूर करने का यत्न किया गया है। लेकिन आज...अर्थ का अनर्थ हो रहा है।

x x x x

एक एक काल में उस काल के संविधान कर्त्ताओं द्वारा प्रख्यापित विधियों का अनुसरण करना सामान्य नीति है। विधियों का उल्लंघन हर काल में होता रहा है, हो रहा है; जो सामान्य एवं सर्वमान्य रीति हो सकता है।

श्रीराम के काल में वृषल शंबूक द्वारा तपस्या करना विधि-विरुद्ध रहा। ब्रिटिश शासन काल में भारत में तिरंगा फहराना दंडनीय रहा तो आज तिरंगे झण्डे की निन्दा करना संविधान के अनुसार दंडनीय है। तीस-पैंतीस वर्षों के अन्तर का व्यतिक्रम!

तो, इस काल में श्रीराम एवं वृषल शंबूक को लेकर मतभेद की आँधी उठाना मनुष्यता को ऊँचा उठाने के लक्ष्य से नहीं हो सकता, लेकिन किसी अन्य लक्ष्य की प्राप्ति केलिए ही हो सकता है। स्वस्थ मानसों में विकार की आग उद्दीप्त करने केलिए भी हो सकता है।

वैज्ञानिक प्रगति के इस काल में, जब मनुष्य एक सेकेण्ड के करोडों करोड़ों विभागों में से एक काल-मात्रा में अपने व्यक्तित्व को सीमित रखने की क्षमता रखता है, गोरे-काले के नाम पर, धर्म के नाम पर, राष्ट्र के नाम पर, राज्य के नाम पर, भाषा के नाम पर, राजनीतिक विश्वासों के नाम पर, उच्च-नीचता के नाम पर मानव के बीच हत्याएँ सुलभ हैं। इन अत्याचारों के विरुद्ध आवाज उठाने के लिए समय न पाकर, ये बुद्धिजीवि लोग अपने मूल्यवान समय को वृषल शंबूक की शवपरीक्षा केलिए व्यर्थ बिता रहे हैं। अमूल्य समय का दुरुपयोग। "अवसर मानुस जनम का बहुरि न बारंबार" वाले कविवचन का भी स्मरण नहीं है। इस प्रकार काल से असंगत कार्य का अवांछनीय पुनरीक्षण द्वारा इतिहास-पुराण का शील हरण मात्र हो सकता है जिससे उत्पन्न अपमान सबको सहना पडता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

झरोखा

केरल में वर्षा

जून से सितंबर तक केरल में बरसात का मौसम है। यहाँ की औसत वर्षा २१० सेन्टी मीटर है।

महाबलिपुरम में केरल की शिल्पकला

पल्लव राजा नरसिंहवर्मा द्वितीय सातवीं शताब्दी में महाबलिपुरम की शिल्प निर्मिति के लिये केरल के कारीगरों को ले गये थे।

केरल का सबसे बडा किला

हैदरअली ने फ्रांसीसी इंजिनीयरों की सहायता से पालघाट में जो किल बनवाया वही केरल का सबसे बडा किला है।

केरल के नरवंश

केरल की अदिवासी जनता में प्रोटो आस्ट्रलोइट और निग्रिटी वंशों की परंपरा देखी जाती है। काटर, वेटर आदि गिरिजन तथा चेरुमर पुलयर आदि श्रमिक जातियों के लोग प्रोटो आस्ट्रलोइट वंश के माने जाते हैं। इन में निग्रिटी वंश का मिश्रण भी कहीं कहीं पाया जाता है।

पूर्वन्ति

लक्षद्वीप में पूर्व को पूर्वन्ति. दक्षिण को तेक्कन्ति, पश्चिम को अपरन्ति और उत्तर को उत्तरन्ति कहते है। माना जाता है कि ये शब्द संस्कृत के क्रमशः पूर्वांदिशि, दक्षिणांदिशि अपरां दिशि और उत्तरांदिशि के तद्भव है। इससे यह भी अनुमान लगाया जाता है कि एक जमाने में लक्षद्वीप में वैदिक आर्यों का अधिवास था।

केरलोत्पत्ति

केरल की उत्पत्ति पर प्रचलित कई कथायें केरलोत्पत्ति नामक मलयालम ग्रंथ में संकलित हैं। ग्रंथकार ने इसे रामानुजन ए.पुत्तच्छन-द्वारा रचित केरलनाटकम् नामक पुस्तक का संग्रह बताया है। इसका प्रथम प्रकाशन सन् १८४३ में गुण्टर्ट ने किया। १९६१ में इसका पंचम संस्करण निकला।

यह सत्रहवीं सदी की रचना मानी जाती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्राट अशोक और केरल

केरल की इतिहास रचना के मूल स्रोतों में प्रथम है सम्राट अशोक का ई० पू० २५७ का द्वितीय शिला लेख । लेकिन अशोक के बहुत पहले ही केरल का इतिहास आरंभ हुआ था और अशोक के ज़माने तक आते आते केरल शासन सुव्यस्थित हो चुका था ।

अंग्रेजी के मलयालम शब्द

अंग्रेजी ने मलयालम के कई शब्द स्वीकार किये हैं । मलयालम में सुपारी को अटक्का कहते हैं । यही अंग्रेजी में अरक्का बन गया । पान को मलयालम में वेट्टिला कहते हैं । अंग्रेजी में यह बीट्टल कहलाया । कोषिक्कोड अंग्रेजी में कालिकट बन गया । इसी से कालिको शब्द निकला । मलयालम का कोप्रा अंग्रेजी में भी कोप्रा कहलाता है । मलयालम का कयर अंग्रेजी में कोयर बन गया । मलयालम का चक्का अंग्रेजी में जाक कहलाता है । अंग्रेजी शब्द जागेरी मलयालम के चक्करा शब्द से निकला । अंग्रेजी का टीक मलयालम के तेक्कु का ही तद्भव है । मलयालम का पन्तल अंग्रेजी है पनडल हो गया ।

एस. प्रभा
[विज्ञान कैरली १२-८]

राजा रवि वर्मा और अवनीन्द्रनाथ ठाकुर

यद्यपि अवनीन्द्रनाथ ठाकुर ने राजा रविवर्मा की शैली के बिलकुल विपरीत अपनी एक शैली जान बूझकर अपनायी थी, तो भी वे रवि वर्मा के प्रति अनादर प्रकट नहीं कर सके ।

के. एन. दामोदरन
[विज्ञान कैरली १३-१-३]

मलयालम के तीन रूप

उत्तर केरल की मलयालम कन्नड भाषा का प्रभाव है । दक्षिण केरल की मलयालम तमिल से प्रभावित है । मध्य केरल की मलयालम इन दोनों प्रभावों से मुक्त मानी जाती है ।

प्राचीन केरल में अपराध

प्राचीन केरल में पाँच प्रकार के अपराध सबसे अधिक दण्डनीय माने जाते थे यथा—(१) ब्रह्महत्या (२) गोहत्या (३) मद्यपान (४) चोरी (५) गुरुनिन्दा

आर. मधुदेवन नायर, विज्ञान कैरली—१२-८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कन्याकुमारी

कन्याकुमारी देवी का एक प्रसिद्ध मंदिर यहाँ है। इसलिए इस स्थान का नाम कन्या कुमारी पडा होगा। कथा है कि भारत के सम्राट भरत ने भारत के आठ भाग किये, सात भाग सात पुत्रों को बाँट दिये और आठवाँ भाग अपनी कन्या पुत्री को दिया। जो भाग कन्या कुमारी को मिला वह कन्याकुमारी कहलाया।

साक्षरता में तमिलनाड के अन्य जिलों के आगे हैं कन्याकुमारी जिला।

वी. एस. मोहनदास

[विज्ञान कैरली १३-४[

केरल के पर्वत

केरल के पूरब में पश्चिमी पर्वतमाला के कई पर्वत हैं। वावुळकला (२५०० मीटर), आनमुटि (२८०० मीटर), एलमला, शबरिमला, पोन्मुटि, वगस्त्यमुटि (२००० मीटर) और महेगिरि इनमें प्रमुख हैं। इन पर्वतों ने बाहर के आक्रमणकारियों से केरल को बचाये रखा। शकों, हूणों, दिल्ली के सुलतानों और मुगसबादशाहों केलिए केरल अप्राप्य रहा।

स्व० के. वासुदेवन पिल्लै की पुण्य स्मृति में

केरल हिन्दी प्रचार सभा के संस्थापक एवं प्रथम मंत्री स्व० के. वासुदेवन पिल्लैजी की २० वीं बरसी केरल के विविध भागों में २५-७-१९८२ को मनायी गयी। तिरुवनन्तपुरम में आयोजित कार्यक्रमों का विवरण अगस्त अंक में आप पढ चुके हैं।

'काट्टाक्कडा के प्रियदर्शिनी हिन्दी विद्यालय में उस दिन सवेरे दस बजे प्रार्थना सम्मेलन आयोजित हुआ जिस में हिन्दी और मलयालम के भजन गाये गये। फिर 'विद्यालयों में हिन्दी अध्ययन' विषय पर विद्यार्थियों की चर्चा चली। श्री. मणिलाल ने प्रबंध प्रस्तुत किया। अपराह्न की संगोष्ठी में त्रिभाषा सूत्र पर विचार मंथन हुआ। श्री मटवूर सुरेन्द्रन ने प्रबंध प्रस्तुत किया।

शाम को सार्वजनिक सम्मेलन में स्थानीय नेताओं ने भाषण दिया।

पेरिंगम्मला हिन्दी पाठशाला में भी सार्वजनिक सम्मेलन में स्व० पल्लैजी की पुण्य स्मृति में श्रद्धांजलियां अर्पित की गयीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी की प्रमुख विश्व पत्रिका

विश्व हिन्दी दर्शन

इसका प्रकाशन मोरिशस में हुए द्वितीय विश्व हिन्दी सम्मेलन के निर्णय के फलस्वरूप जनवरी १९७९ से आरम्भ हुआ।

❀ यह केवल पत्रिका ही नहीं, हिन्दी का विश्वमंच है।

❀ इसका उद्देश्य भारतीय संस्कृति की श्रेष्ठ वैचारिक धरोहर को जन-जन तक पहुँचाना है।

❀ हिन्दी के माध्यम से विश्व भर में फैले लाखों भारत-वासियों तथा अन्य हिन्दी-प्रेमियों के सांस्कृतिक सूत्र सुदृढ़ करने का साधन है।

❀ इसके पाठक भारत में ही नहीं, लगभग १०० अन्य देशों में भी हैं।

❀ इसकी सामग्री विविधापूर्ण है। साज-सज्जा तथा छपाई भी आकर्षक है।

पत्रिका नियमित मंगाने के लिए स्वयं ग्राहक भरिए तथा अपने मित्रों को भी बनाइए। एक प्रति का मूल्य ४.०० उ.।
पंचवार्षिक शुल्क २२१.०० उ.

पता : व्यवस्थापक, "विश्व हिन्दी दर्शन",
सी-१३, प्रेम इन्दलेव, साकेत,
नयी दिल्ली–११० ०१७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठकों के पत्र

गोयल बुकसेलर
प्रताप नगर,
दिल्ली–११०००७

सुविख्यात पत्रकार एवं साहित्य प्रेमी श्री सुधांशु दत्त जी के माध्यम से आपके पत्र का परिचय प्राप्त हुआ। अत्यंत प्रसन्नता हुई कि आप केरल जैसे प्रदेश में हिन्दी के हितायती बनकर उसकी प्रतिष्ठा को बढ़ा रहे हैं। आपके इस प्रयास का मैं मन से समर्थन करता हूँ।

राजेन्द्र 'राजा'

लघु पत्रिकाओं में 'केरल ज्योति' का स्थान मेरे हृदय में अत्यन्त स्नेह और सम्मानयुक्त है। आपका सामयिक सम्पादकीय और सभी सामग्री बहुत सुन्दर है। मेरी बधाई स्वीकार करें। और भी अपनी सामग्री सेवा में भेजूंगा।

डॉ० विश्वनाथ शुक्ल
रीडर, हिन्दी विभाग,
अलीगढ़ मु० वि० विद्यालय,
अलीगढ़

प्रो० जोसफ़ जी,

'केरल ज्योति' का अगस्त १९८२ का अंक मिला। इसमें पृ० १९ पर बच्चों के लिए कविता में अपनी 'तितली रानी' कविता देखकर हार्दिक प्रसन्नता हुई। अपनी शोध शिष्या डा० एन. जी. देवकी की मार्मिक व्यंग्य रचना 'शायद नहीं' देखकर भी प्रसन्नता हुई।

१०९ बाई का बाग,
इलाहाबाद (२११००३)
१३–९–८२

'माधविक्कुट्टी' उपन्यास बहुत सुन्दर लगा। मूल भाषा में तो और भी मार्मिक और सरस होगा।

शकुन्तला सिरोठिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्व हिन्दी सम्मेलन विशेषांक

दिसंबर १६८२ में नयी दिल्ली में तृतीय विश्व हिन्दी सम्मेलन आयोजित हो रहा है। इस अवसर पर 'केरल ज्योति' का एक विश्व हिन्दी सम्मेलन विशेषांक निकलेगा।

लेखक बन्धुओं से अनुरोध है कि कृपया इस विशेषांक के लिए अपनी बहुमूल्य रचनायें भेज दें। वसुधैव कुटुंबकम' का आदर्श सामने रखकर लिखें तो, अवसरोचित रहेगा। विविध भाषाओं से हिन्दी में हुए अनुवाद पर विशेष लेख भी भेजियेगा।

संपादक,
केरल ज्योति'
तिरुवनन्तपुरम-६९५०१४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

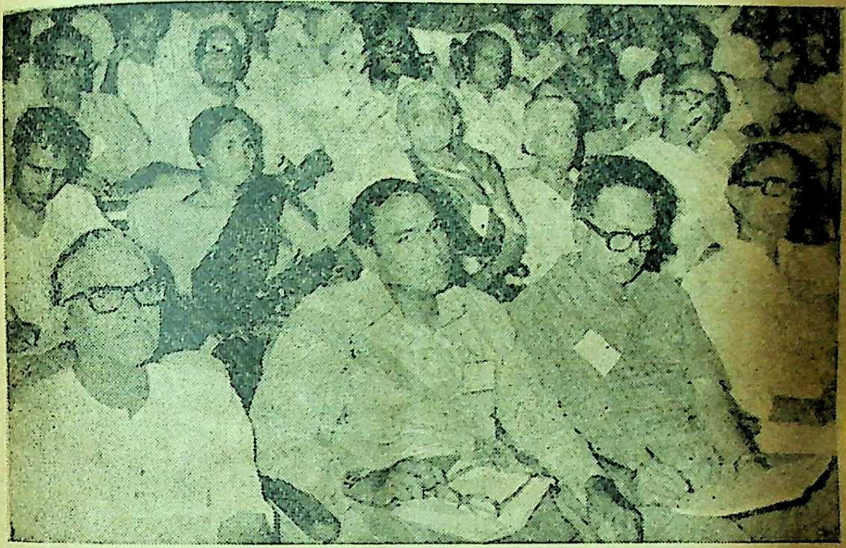

अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ की ओर से दिनांक 9, 10 सितंबर को नई दिल्ली में राष्ट्र भाषा हिन्दी प्रचार की हीरक जयन्ती समारोह संपन्न हुआ। सर्वश्री के. पी. के. पिषारटी, के. एम. सामुवेल, सी. ए. जेकब और पी. एस. विलसन ने समारोह में केरल हिन्दी प्रचार सभा का प्रतिनिधित्व किया। प्रथम पंक्ति में बायें श्री. पिषारटी। (समारोह के रिपोर्ट और भाषण अगले अंक में पढ़ें।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Reg. No. KL/(S)/29
October 1982

Keral Jyoti

Vol. XVII-No.7
Price : Re. 1.0

A monthly Publication of Kerala Hihdi Prachar Sabha

छठे अखिल भारतीय नागरी लिपि सम्मेलन का उद्‌घाटन करते हुए केंद्रीय शिक्षा उपमंत्री श्री० पी. के. थुंगन। बैठे हैं—श्री० हरिबाबू कंसल, डा० एम. मालिक मोहम्मद, प्रो० सिद्धेश्वर प्रसाद, श्री० रा. ना. त्रिवेदी

केरल हिन्दी प्रचार सभा, तिरुवनन्तपुरम–६९५ ०१४ केलिए श्री० एम. के. वेलायुधन नायर द्वारा प्रकाशित
मुद्रक: राष्ट्रवाणी मुद्रणालय, केरल हिन्दी प्रचार सभा, तिरुवनन्तपुरम–१४. सम्पादक: के. जी. बालकृष्ण पिल्लै

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केरल ज्योति

31-12-82

FREE

(11)

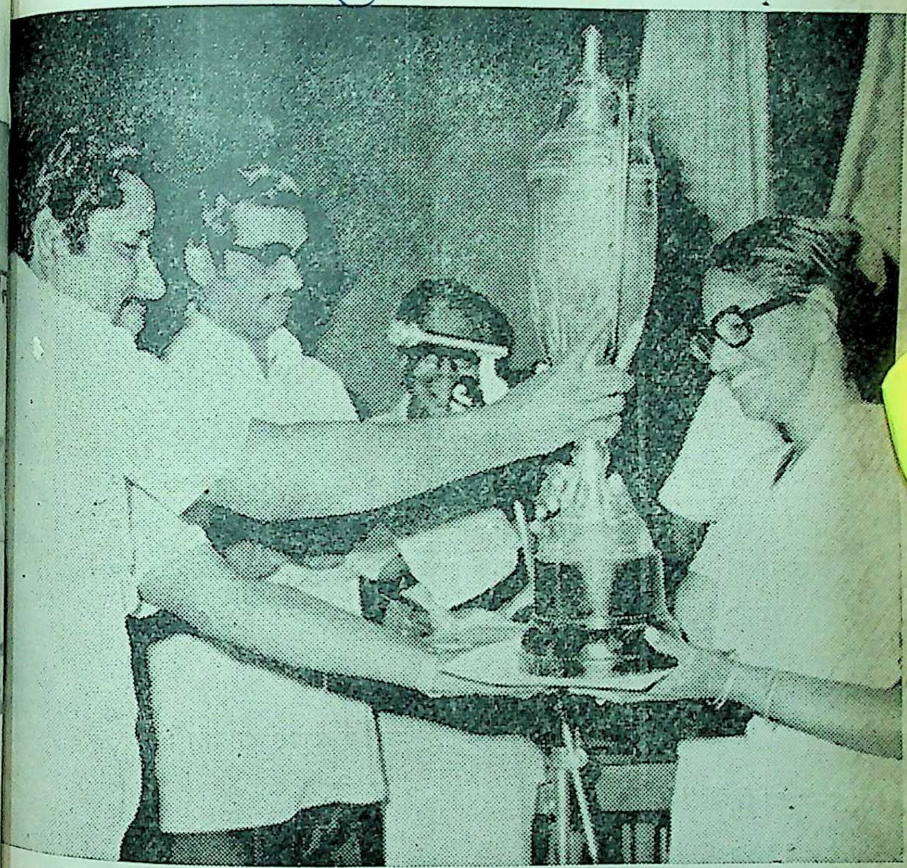

केरल हिन्दी प्रचार सभा द्वारा १९८२ में चलायी गयी सुगम हिन्दी परीक्षाओं में सर्वाधिक विद्यार्थियों को बिठाने के प्रथम स्थान की ट्रॉफी केरल के शिक्षा मंत्री श्री० टी. एम. जेकब कोट्टणहिल गर्ल्स हाई स्कूल, तिरुवनन्तपुरम की प्रतिनिधि को प्रदान कर रहे हैं ।

केरल हिन्दी प्रचार सभा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केरल ज्योति

* **प्रधान संपादक**

प्रो० पी. जे. जोसफ़

* **संपादक**

श्री० के. जी. बालकृष्ण पिल्लै

* **सह संपादक**

श्री० आर. सुकुमारन नायर

* **संपादक मण्डल**

श्री० वी. के. गोपालन नायर

प्रो० एम. जनार्द्दनन पिल्लै

श्री० के. वी. कृष्णनकुट्टी

श्री० एम. के. वेलायुधन नायर

❀

* विज्ञापन दर

		मासिक		वार्षिक	
आवरण पृष्ठ ४	रु.	५००	००	५०००	००
आवरण पृष्ठ २ एवं ३	रु.	४००	००	४०००	००
साधारण पृष्ठ पूरा	रु.	३००	००	३०००	००
साधारण पृष्ठ ½	रु.	१७५	००	१७५०	००
साधारण पृष्ठ ¼	रु.	१००	००	१०००	००

❀

* **पत्र व्यवहार का पता :**

मंत्री,

केरल हिन्दी प्रचार सभा

तिरुवनन्तपुरम–६९५ ०१४

केरल

तार :–"जय हिन्दी"

फोन: ६१३७८

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केरल ज्योति

पुष्प: १७

दल : ८

नवंबर १९८२

सांस्कृतिक जागरण की मासिक पत्रिका

संपादकीय

उठ जाग मुसाफिर भोर भई

केन्द्र शिक्षा तथा संस्कृति मंत्रालय की ओर से २५–१०–१९८२ से ३१–१०–१९८२ तक केरल हिन्दी प्रचार सभा में आयोजित अखिल भारतीय हिन्दीतर नव हिन्दी लेखक शिविर के प्रतिभागियों का अपने कार्यालय में स्वागत करते हुए केरल के मुख्यमंत्री श्री० के. करुणाकरन ने बताया कि हिन्दी पर पूरा अधिकार प्राप्त करने में यदि हिन्दी-तर प्रान्त के लोग सक्षम नहीं होंगे तो वे हर क्षेत्र में पिछड जायेंगे ।

भारत के सभी हिन्दीतर प्रान्तों को इस चेतावनी पर गौर से विचार करना है और जैसे तिरुवनन्तपुरम नगर निगम के अध्यक्ष श्री० के. प्रभाकरन नायर ने उक्त शिविर में बताया, हिन्दी के व्यापक अध्ययन और प्रचार केलिए एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस अंक में

हिन्दी का एक विशेष स्थान है — 3
श्रीमती इन्दिरा गाँधी

हिन्दी चलने लगी है — 6
प्रो० रामलाल पारीख

पुरस्कार वितरण समारोह — 12

कालेज स्तर पर हिन्दी अनिवार्य विषय हो — 15
श्री० एम. पी. गंगाधरन

केरल के पाठ्यक्रम में हिन्दी को उचित स्थान मिलेगा — 17
श्री० टी. एम. जेकब

इहाँ–उहाँ — 18
पी. जी. कामत

कर्णभूषणम् — 21
मूल: महाकवि उल्लूर
अनुवाद: कवियूर शिवराम अय्यर

हिन्दी प्रचार की व्यापकता — 25
जगदीश शर्मा

१. एक नई खाट का सपना — 33
२. अतिथि न आए ! — 34
सी. ए. जोसफ

प्रतिष्ठा — 35
डा० वी. गोविन्द शेणाय

महादेवी वर्मा के साथ अल्प समय — 36
डा० एन. जी. देवकी

लुढ़कती किरणें — 39
वी. के. एस. नम्पूतिरि

समयबंधित योजना बनानी होगी। और केरल हिन्दी प्रचार सभा में आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह में केरल के सिंचाई मंत्री श्री० एम. पी. गंगाधरन ने सुझाया, हिन्दी को हिन्दीतर प्रान्तों में द्वितीय भाषा का नहीं उससे उन्नत स्थान देना होगा और स्कूली स्तर पर ही नहीं कालेज स्तर पर भी हिन्दी को अनिवार्य विषय बना देना होगा।

भारत सरकार हिन्दी का उपयोग राजभाषा के रूप में धीरे धीरे बढ़ा रही है। हिन्दी भाषी प्रान्तों में भी राजभाषा के रूप में हिन्दी की प्रतिष्ठा दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। रेलवे, बैंक आदि संस्थाओं में भी हिन्दी का उपयोग बढ़ता जा रहा है। ऐसी स्थिति में केन्द्र सरकार में तथा हिन्दी प्रान्तों की सरकारों में ऐसे लोगों का प्रवेश नहीं हो पायेगा जो हिन्दी अच्छी तरह नहीं जानते हों। इस तथ्य के प्रति सजग न रह कर हिन्दी के प्रचार और अध्यापन में ढीलापन आने देना हिन्दीतर प्रान्तों की जनता के प्रति घोर अन्याय होगा।

जो सोवत है सो खोवत है
जो जागत है सो पावत है
जब चिड़ियन खेती चुग जावे
तब पछताये क्या होवत है ?

उठ जाग...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी का एक विशेष स्थान है

श्रीमती इन्दिरा गान्धी

[९, १० सितंबर १९८२ को नयी दिल्ली में आयोजित हिन्दी प्रचार हीरक जयन्ती के अवसर पर भेजा गया सन्देश ।]

राष्ट्रभाषा प्रचार की हीरक जयन्ती के अवसर पर मैं आपको बधाई देती हूँ। हिन्दी, दुनिया की सर्वाधिक प्रचलित भाषाओं में से है। करोड़ों लोग हमारे देश में और बाहर उसको बोलते हैं या समझते हैं। इस कारण वह राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय भाषा भी है।

अब से ६० वर्ष पूर्व महात्मा गांधी की प्रेरणा से राष्ट्र भाषा प्रचार का कार्य आरम्भ हुआ था। यह तो सब जानते ही हैं कि हमारी आजादी की लड़ाई में हिन्दी और अन्य मातृभाषाओं का योगदान कितना महत्वपूर्ण था। गाँव के पिछड़े लोग अपनी मातृभाषा के कारण राजनीति में आये।

अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ प्रमुख हिन्दी संस्थाओं में से एक है। इस में कुल १७ गैर सरकारी हिन्दी संस्थायें हैं जिनमें से अधिकांश अहिन्दी क्षेत्रों में भी अपना कार्य कर रही हैं। ये संस्थायें आजादी की लड़ाई के जमाने में स्थापित हुई थीं। इन संस्थाओं ने हिन्दी के प्रचार में काफी योगदान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरकार की पूरी कोशिश है कि हिन्दी विकसित हो और अंग्रेज़ी का स्थान ग्रहण करे। लेकिन यह काम अहिन्दी प्रदेशों की सहमति से ही सम्भव है।

दिया है। दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा का कार्य प्रशंसनीय रहा है।

भारत एक बहुभाषी देश है, जहाँ सम्पर्क भाषा के रूप में हिन्दी का प्रयोग हरेक क्षेत्र में तेजी से बढ़ रहा है और यह देश की सांस्कृतिक तथा राजनीतिक एकता कायम करने में मदद कर रही है। वाणिज्य-व्यापार तथा राजनीति में इस भाषा का पहले से अधिक प्रयोग किया जा रहा है।

हिन्दी का एक विशेष स्थान है ही। कोई भी देश अपनी मातृभाषा के द्वारा आगे बढ़ सकता है। नये विचार अपनी मातृभाषा से निकलते हैं। इसलिए हमें भारत की सभी भाषाओं को प्रोत्साहन देना है। किसी को भी ऐसा नहीं लगना चाहिए कि उसकी भाषा को दबाया या कम आदर दिया जा रहा है।

सरकार की पूरी कोशिश है कि हिन्दी विकसित हो और अंग्रेज़ी का स्थान ग्रहण करे। लेकिन यह काम अहिन्दी प्रदेशों की सहमति से ही सम्भव है।

कुछ लोगों की यह भ्रांति है कि सरकार के संरक्षण से ही भाषा का विकास होता है। सरकार द्वारा भाषायें बढ़ नहीं सकती। लोगों के बोलने से, लेखकों की लेखनी से और नयें शब्दों को अपनाने से भाषा की क्षमता बढ़ती है। सच तो यह है कि भाषा का विकास तब होता है जब वह जनता के हृदय में स्थान पाती है। यह काम और भी आसान हो जाये यदि वह भाषा अन्य भाषाओं के शब्दों को आत्मसात् करे।

वर्तमान युग विज्ञान का है इसलिए विज्ञान के क्षेत्र में देश की भाषाओं का प्रयोग अपना विशिष्ट महत्व रखता है। विज्ञान के क्षेत्र में बराबर नये आविष्कार हो रहे हैं। इसलिए ज़रूरी है कि भारतीय भाषाओं के माध्यम से इस क्षेत्र में कार्य हो। इसके लिए वैज्ञानिक विषयों पर अच्छी पुस्तकों के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विभिन्न भारतीय भाषाओं में प्रकाशित अच्छी पुस्तकों का अनुवाद सभी भारतीय भाषाओं में और विशेष रूप से हिन्दी में उपलब्ध किया जाना चाहिए।

निर्माण और अनुवाद पर ज़ोर देने की आवश्यकता है।

मैं भाषा की मिलावट के पक्ष में नहीं हूँ। मैंने देखा है कि जो लोग कम अंग्रेज़ी जानते हैं वही अक्सर हिन्दी में बिलकुल साधारण अंग्रेजी के शब्दों का उपयोग करते हैं। परन्तु कुछ बाहर के यानि दूसरी भाषाओं के शब्द लेना आवश्यक होता है। विज्ञान में बाहर से तकनीकी शब्द अपनाने में हमें झिझक नहीं होनी चाहिए। आपने शायद कैटर-पिलर (Caterpillar) शब्द सुना होगा। वह एक कीट है लेकिन वह नाम एक बड़े टैंक जैसी मशीन का भी है। हाल में जब हमारे भूतपूर्व वित्त मंत्री जापान गये तो वहाँ कारखाने में इस अंग्रेजी नाम का उपयोग किया। जापानी साथी ने पूछा अरे, आप जापानी भी जानते हैं। यह दिखाता है कि अपनी भाषा पर गर्व रखते हुए जापानियों ने कैसे शब्दों को उसमें मिला लिया है और अब उनको यह मालूम भी नहीं है कि यह बाहर के शब्द हैं। इसी प्रकार से हिन्दी या अन्य भारतीय भाषाओं ने बाहर की भाषाओं में जगह पायी है।

वर्तमान युग में वैज्ञानिक यंत्रों का बहुत महत्व है। यह आवश्यक है कि भारतीय भाषाओं में, और विशेष रूप से हिन्दी में भी इन यांत्रिक साधनों जैसे "लिंग्वा फोन" "टेलीप्रिन्टर" आदि को उपलब्ध किया जाये।

विभिन्न भारतीय भाषाओं में प्रकाशित अच्छी पुस्तकों का अनुवाद सभी भारतीय भाषाओं में और विशेष रूप से हिन्दी में उपलब्ध किया जाना चाहिए।

अहिन्दी प्रदेशों में हिन्दी के प्रति रुचि पैदा करने में स्वैच्छिक संस्थायें विशेष योगदान दे सकती हैं।

राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार के हीरक जयन्ती समारोह के लिए मैं अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ और उसकी सदस्य संस्थाओं के लिए शुभकामनायें देती हूँ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी चलने लगी है

प्रो० रामलाल पारीख

इस समारोह में संघ की सदस्य संस्थाओं, भारतीय भाषाओं के संगठनों, विश्व विद्यालयों के प्रतिनिधि एवं अन्य हिन्दी प्रेमी लोग उपस्थित हैं। आप सबके प्रति हम आभारी हैं कि आप सब राष्ट्रीय एकता संवर्धन के इस महत्वपूर्ण कार्य में भाग लेकर सहयोग दे रहे हैं।

भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय के प्रयत्न से तथा हिन्दी प्रचार करनेवाली स्वयंसेवी संस्थाओं के सहयोग से अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ की स्थापना सन् १९६४ में हुई। इसमें सम्मिलित सभी संस्थाएँ भारत सरकार से मान्य हैं। हिन्दी प्रचार के कार्य में परस्पर सहयोग और समन्वय करने के लिए यह संघ बनाया गया। इस समय १७ स्वैच्छिक हिन्दी संस्थाएँ संघ की सदस्य हैं। ये संस्थाएँ असम, आन्ध्र प्रदेश, उड़ीसा, तमिलनाडु, कर्नाटक, केरल, गुजरात, महाराष्ट्र, मणिपुर, बिहार तथा उत्तर प्रदेश में हिन्दी का प्रचार-प्रसार कर रही हैं। इसके अतिरिक्त इन संस्थाओं की शाखाएँ देश के अन्य भागों में हिन्दी प्रचार-प्रसार का कार्य कर रही हैं। महात्मा गाँधी की प्रेरणा और मार्गदर्शन से देश में ६० वर्षों से अधिक समय से हिन्दी का समन्वित राष्ट्रभाषा के रूप में प्रचार करने के लिए, हर प्रदेश की आवश्यकता और अनुकूलता अनुसार वहाँ ये संस्थाएँ स्थापित हुईं। इन संस्थाओं

९, १० सितंबर १९८२ को नयी दिल्ली में आयोजित हिन्दी प्रचार हीरक जयन्ती समारोह में दिया गया स्वागत भाषण।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने जनता में देश की बहुविध संस्कृति के अनुरूप राष्ट्रीय एकता को बनाये रखने के लिए राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रति रुचि बढ़ाने का महत्वपूर्ण कार्य किया है और आज भी कर रही हैं । परिणामस्वरूप पिछले ३० वर्षों में ३ करोड़ ८८ लाख लोग हिन्दी सीखने में सम्मिलित हुए और आज भी ५२,६०० प्रचारक सेवार्थ प्रचारक की हैसियत से देश भर में कार्य कर रहे हैं । इस प्रकार संस्था संघ हिन्दी और हिन्दीतर प्रदेश की संस्थाओं का तथा सरकारी और गैर-सरकारी स्तर पर होनेवाले हिन्दी प्रचार-प्रसार के कार्यों का सहयोगी मंच है । इसका मुख्य उद्देश्य हिन्दी प्रचार के जरिए देश के निर्माण के हर क्षेत्र में जन सहयोग बढाने का है ।

गाँधीजी का नेतृत्व

स्वतन्त्रता आन्दोलन के समय भारत के भिन्न-भिन्न भाषी लोगों में राष्ट्रीयता की भावना जागृत करने का कार्यक्रम बनाने का विचार महात्मा गाँधी ने शुरू किया । इस समय वे सारे देश में भ्रमण कर लोगों को राष्ट्रीयभावना को सुदृढ करने का अनुरोध कर रहे थे । देश के विभिन्न भाषा-भाषी लोग अपनी-अपनी भाषा में विचार विमर्श करें और अन्तर-प्रान्तीय व्यवहार के लिए सारे देश के लिए एक राष्ट्रभाषा बनाने की दिशा में विचार करना जरूरी था । १९१८ में कांग्रेस के इन्दौर अधिवेशन में राष्ट्रभाषा की आवश्यकता पर गाँधीजी ने बल दिया और कहा कि वह हिन्दी होनी चाहिए । इस भूमिका में १९१८ महात्मा गाँधीजी के पथ प्रदर्शन में दक्षिण में हिन्दी प्रचार का विधिवत रूप में प्रारम्भ हुआ । गाँधीजी ने अपने सुपुत्र स्व० देवदास गाँधी को प्रथम हिन्दी प्रचारक के रूप में मद्रास भेजा । १९१८ में ऐनीबसेंट की अध्यक्षता में सर सी. पी. रामस्वामी अय्यर ने प्रथम हिन्दी वर्ग का उद्घाटन किया । तब से दक्षिण भारत में हिन्दी प्रचार सभा की नींव पड़ी । १९२७ में गाँधीजी की अध्यक्षता में बेंगलूर में दक्षिण भारत के हिन्दी प्रेमियों की एक बैठक हुई । बैठक में हिन्दी प्रेमियों ने विचार किया कि दक्षिण भारत के लोगों के लिए एक अलग हिन्दी प्रचार संस्था की आवश्यकता है । गाँधी जी से प्रार्थना की गई कि वे इस माँग को मान लें और ऐसी संस्था के आजीवन अध्यक्ष बने रहें । महात्मा गाँधीजी ने यह बात सहर्ष स्वीकार की । इस तरह से दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा की स्थापना हुई । उसका मुख्यालय मद्रास में स्थापित हुआ । उसके द्वारा दक्षिण का सारा कार्य चलता रहा । १९१८ से मद्रास सभा हिन्दी प्रचार-प्रसार का महत्वपूर्ण कार्य कर रही है ।

स्वातंत्र्य-पूर्व-युग में हिन्दी हमारे स्वातंत्र्य आन्दोलन के रूप में शुरू हुई । राष्ट्रीयता का प्रतीक बनी और गाँधीजी के रचनात्मक कार्यक्रम का एक महत्वपूर्ण मुख्य मुद्दा बनाया । उन दिनों हिन्दी प्रचारक सेवा, त्याग, निष्ठा, एवं प्रेम से इस काम में लगे । उसे न धन का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोभ था न [illegible] कोई [illegible] था। किसी भी हिन्दी प्रचार संस्था को सरकारी आर्थिक सहायता प्राप्त नहीं थी। अतः हिन्दी प्रचार स्वावलम्बी था। जनता हिन्दी प्रचारक लोगों की माँ-बाप थी। महात्मा गाँधीजी दक्षिण भारत में हिन्दी प्रचार सभा के आजन्म अध्यक्ष रहे। उन्हीं की दूरदर्शिता के कारण दक्षिण में हिन्दी प्रचार चला। उन्होंने हिन्दी प्रचार को तंत्र-यंत्र, मंत्र सब दिये। उन्हीं की बदौलत हिन्दी प्रचार एक महान राष्ट्रीय आन्दोलन के रूप में शुरू हुआ। उनकी कल्पना थी कि हिन्दी बहुधर्म संस्कृति का प्रतिबिम्ब बने इसलिए वे उर्दू और हिन्दी की हिन्दुस्तानी के रूप में एकता की हिमायत भी करते रहे। दक्षिण में हिन्दुस्तानी दो लिपियों में (नागरी और उर्दू) चलाई पर पीछे उर्दू साहित्य गद्य व पद्य छाप कर स्वैच्छिक संस्थाओं की परीक्षाओं में पढ़ाया जाता था। अब भी यह क्रम थोड़ा बहुत दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास तथा गुजरात विद्यापीठ और राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के पाठ्यक्रम में चलता है, जिसके साथ बापूजी का प्रत्यक्ष सम्बन्ध और संपर्क था।

इन्दौर में १९३५ में हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्षीय भाषण में उन्होंने कहा था कि यदि नदी की धारा के बीच में पहाड़ पड़ जाय तो फिर भी नदी की धारा अपना रास्ता खोज लेती है। वैसे ही हिन्दी प्रचारक को भी हिन्दी प्रचार करना चाहिए। उसे किसी भाषा से द्वेष नहीं होना चाहिए। बल्कि उसका सभी भारतीय भाषाओं से समान प्रेम हो। हिन्दी का प्रचार कदापि क्षेत्रीय भाषाओं के विरुद्ध नहीं हो सकता। क्षेत्रों में क्षेत्रीय भाषा ही महारानी बनी रहेगी। उसी के द्वारा वहाँ की सारी शिक्षा प्रसाशन न्याय-निर्णय आदि हुआ करेंगे। हिन्दी क्षेत्रीय भाषा की सहचरी भाषा (या पूरक भाषा) बनी रहेगी, हाँ, अन्तर्प्रान्तीय व्यवहारों में हिन्दी बढ़ती जायेगी। जहाँ वह कभी किसी क्षेत्रीय भाषा के विरोध में नहीं आएगी। विदेशी भाषाओं से भी जो कुछ ग्रहण करना होगा हिन्दी ग्रहण करेगी।

> हिन्दी का प्रचार कदापि क्षेत्रीय भाषाओं के विरुद्ध नहीं हो सकता।

महिलाओं का योगदान

न केवल संगठित संस्थाओं की तरफ से हिन्दी का प्रचार-प्रसार चला बल्कि हिन्दी प्रचारिकाओं के अपने-अपने यहाँ हिन्दी वर्ग चलाने के कारण हिन्दी प्रचार-प्रसार महिलाओं में आगे बढ़ा। सारे दक्षिण में महिलाओं की जागृति का कारण था स्वदेशी संग्राम या स्वातन्त्र्य संग्राम। इस संग्राम में स्वातंत्र्य पूर्व युग में महिलाओं ने अपने-अपने घरों में हिन्दी वर्ग चलाने में सक्रिय भाग लिया। गाँधीजी ने १९३७ में मद्रास में हुए हिन्दी कान्वोकेशन (पदवीदान-समारोह) की अध्यक्षता करते-हुए भाषण में इशारा किया कि मात्र स्त्रियों में हिन्दी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रचार करने हेतु महिला संगठन की आवश्यकता है । इससे मद्रास की दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा में महिला हिन्दी प्रचारक विद्यालय की स्थापना की गई ।

हिन्दी चलने लगी है

हिन्दी साहित्य का स्वर ही नहीं बदला है । हिन्दी का प्रयोजनात्मक रूप बदल चला है । आज बैंकों के कागज़ात (चैक-बुक, डिपाज़िट, चलान आदि) क्षेत्रीय भाषा और हिन्दी दोनों में छप कर उपलब्ध किये जा रहे हैं । कई बैंकों में व्यावसाय घरों, उद्योगों, सरकारी कार्यालयों की कार्यवाही हिन्दी में चलने लगी है । रेडियो, सिनेमा, फौज, डाकतार, यात्रा स्थान (तीर्थं स्थान) व्यापार केन्द्र, स्टाक-एक्सचेंज हाउस में भी हिन्दी का प्रचार धीरे-धीरे बढ़ रहा है । इस तरह से हिन्दी की व्यापकता बढ़ रही है । वास्तव में हिन्दी धीरे-धीरे सार्वजनिक हो रही है ।

पत्राचार पद्धति से मैट्रिक स्तर तक केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय हिन्दी सिखाता है । मैट्रिकोत्तर स्तर पर पी० यू० सी/बी० ए०/बी० काम०/एम० ए० स्तर पर हिन्दी भाषा एवं साहित्य का अध्ययन करने वालों के लिए विभिन्न विश्व-विद्यालयों से पत्राचार तथा अन्य शिक्षण संस्थानों के द्वारा उन्मुक्त है । इससे हिन्दी के सार्वदेशिक स्तर पर व्यापक क्षेत्र में अध्ययन करने की सुविधाएँ प्राप्त हो गई है । विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने भी उच्च शिक्षा में हिन्दी पढाने की उच्चतम सुविधाओं के लिये प्रबन्ध किया है । देश में करीब-करीब समस्त विश्व-विद्यालयों में हिन्दी का प्रवेश हुआ है । विदेशों के कई विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग चलाते हैं या अन्य विषयों के साथ हिन्दी पढ़ने का प्रावधान लिए हुए है । इस तरह से हिन्दी की चर्चा, उपयोग और व्यवहार का क्षेत्र सार्वजनीन तथा सार्वदेशिक होने लगा है ।

संविधान में हिन्दी राजभाषा घोषित कर दी गई है । इसलिए हिन्दी के स्वैच्छिक प्रचार की आवश्यकता और महत्व जरा भी कम नहीं होता है । गाँधीजी की प्रेरणा से इतने दिनों तक आधी शताब्दी से अधिक समय तक हिन्दी अखिल भारतीय वाणी बनी है । इसके पीछे हजारों कार्यकर्ताओं का त्याग निहित है । हिन्दी हम सबको संगठित रखने में कामयाब होगी । इसी विनम्र भावना पर आधारित दर्शन को लेकर हिन्दी प्रचार चलेगा, पनपेगा । तब हिन्दी जन प्रेम के द्वारा अपने लक्ष्य तक पहुँच कर रहेगी ।

यह सर्वविदित है कि हिन्दी प्रचार-प्रसार का कार्य अधिकतर अहिन्दी प्रदेशों के लोगों द्वारा ही चलाया जा रहा है । हिन्दी संस्थाएँ हिन्दी के साथ-साथ प्रादेशिक भाषाओं के प्रचार-प्रसार और शिक्षण आदि का कार्य भी करती हैं । आज देश के हर कोने में हिन्दी प्रचारक मिलेंगे । आज भी ऐसे सैकडों प्रचारक हैं जिन्होंने अपना पूरा जीवन इस कार्य में लगा दिया है ।

प्रदेशों में वहाँ की प्रादेशिक भाषाओं को प्रशासन, न्याय, कार्यपालिका आदि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब तो हिन्दी राष्ट्रीय स्तर से बढ़ कर अन्तर्राष्ट्रीय होती जा रही है।

में उचित स्थान मिले इसकेलिए सरकारी स्तर पर उचित कार्रवाई होनी चाहिए। हमारे देश की तमिल, मलयालम, तेलुगु, कन्नड़, उड़ीया, बंगला, असमी, गुजराती, मराठी, कश्मीरी भाषाएँ जितनी समृद्ध होंगी उतनी ही हिन्दी सम्पन्न होगी। प्रादेशिक भाषाओं के विकास के बिना हिन्दी का सम्पन्न होना सम्भव नहीं है।

भारत की भावात्मक एकता एवं सांस्कृतिक एकता को सुदृढ बनाने के लिए, ऐसे क्षेत्रों में, जहाँ की बोलियाँ और भाषाएँ अलग-अलग हैं, उनकी साहित्यिक, धार्मिक, सामाजिक रीति-रिवाज, आर्थिक कार्यक्रमों से सम्बन्धित साहित्य को हिन्दी में रूपांतरित किया जाय, इस बात को ध्यान में रखकर संघ की ओर से मेघालय, अरुणाचल और नागालैंड की परिचयात्मक पुस्तकें नागरी लिपि में प्रकाशित की गई हैं। दूसरे क्षेत्रों के बारे में भी ऐसी पुस्तकें बराबर प्रकाशित करने की संघ की योजना है। स्व० पंडित जवाहरलाल नेहरू जी ने हमें विविधता में 'एकता' की महान सूझ दी वही हमारे लिए इस काम में द्विवादांडी रूप रहा है।

अब तो हिन्दी राष्ट्रीय स्तर से बढ़ कर अन्तर्राष्ट्रीय होती जा रही है। विदेशों में लगभग १०० विश्वविद्यालयों में हिन्दी अध्ययन और अध्यापन का कार्य होता है। सन् १९७५ में प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन का आयोजन नागपुर में हुआ, उसमें अनेक विदेशी हिन्दी विद्वानों ने भाग लिया। विदेशी विद्वानों ने अपने-अपने देश में हो रहे हिन्दी प्रचार-प्रसार, अध्ययन-अध्यापन एवं अनुसंधान का विवरण प्रस्तुत किया था। उस सम्मेलन में हिन्दी को संयुक्त राष्ट्रसंघ की मान्य भाषाओं में जोड़ने का भी प्रस्ताव पास हुआ था। उस ओर भारत सरकार को प्रयत्न करके भारतीय जनता की आकांक्षाओं को पूर्ण करना चाहिए। दूसरा विश्व हिन्दी सम्मेलन सन् १९७८ में मारीशस में हुआ था, और अभी तीसरा विश्व हिन्दी सम्मेलन दिल्ली में होनेवाला है। अब वक्त आ गया है कि हिन्दी को संयुक्त राष्ट्र संघ की मान्य भाषाओं की सूची में एक वैकल्पिक भाषा के रूप में अब स्वीकृत करना चाहिए। युनों की मान्य अन्य भाषाओं के मुकाबले में हिन्दी बोलने और पढ़ने वालों की तादाद कम नहीं है और सारे विश्व में हिन्दी की पढ़ाई की व्यवस्था हो रही है।

विदेशों में स्थित हमारे भारतीय दूतावासों का कार्य भी जहाँ तक संभव हो हिन्दी में भी चलता रहे तो उनके माध्यम से भारत की सम्मिलित संस्कृति का प्रतिबिम्ब विश्व में दर्शित होगा।

जनमानस में हिन्दी को प्रतिष्ठित करने के लिए गैर-सरकारी स्तर पर हो रहे कार्य को अधिक से अधिक प्रोत्साहन देना चाहिए। आज हिन्दी को जनभाषा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के रूप में प्रतिष्ठित करने का अधिकांश कार्य स्वैच्छिक हिन्दी संस्थाओं ने किया है और आज भी कर रही है। सरकारी कर्मचारियों में केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद् ने जो कार्य किया है वह प्रशंसनीय है।

हिन्दी भाषा कोई भी मजबूरी से सीखे ऐसा हम नहीं चाहते हैं। इस बारे में हमारे नेता पंडित जवाहरलाल नेहरू ने जो मार्गदर्शन किया है इसका हम पूरा समर्थन करते हैं। हम सिर्फ इतना ही चाहते हैं कि जो स्वेच्छा से अपने आप हिन्दी सिखना-सिखाना चाहते हैं उनको स्वैच्छिक रूप से पूरा प्रोत्साहन मिले और इनके काम में जो बाधा आता है इसको दूर करने में सरकार हमारी सहायता करे। हम इस बारे में भी स्पष्ट हैं कि हिन्दी का विकास किसी भाषा विरोध में नहीं परन्तु अपने विधेयात्मक गुण से जनता के अपने स्वैच्छिक निर्णय से और सहयोग और प्रेम के वातावरण से ही बढ़े, ऐसा हम चाहते हैं। इसलिए हम सरकारी तंत्र के बजाय जनता की बहुविध स्वैच्छिक संस्थाओं के जरिए प्रमुखतः ही इसका आग्रह करते हैं। इस कार्य में हमें प्रधानमंत्री इन्दिरा बहन, गृहमन्त्री श्री० प्रकाशचन्द्र सेठी जी और उप शिक्षा मंत्री श्री० पी. के. युगन जी का समर्थन और प्रोत्साहन मिला है। तीनों मंत्रालयों के अधिकारियों ने हमें पूरी मदद की है। हम इन सबके बहुत आभारी हैं।

केरल के नायनार और आलवार

तिरसठ शैवनयनारों में दो केरलीय थे। ये थे विरनमिन्टा नायनार और चेरमान पेरुमाळ। बारह आलवारों में एक कुलशेखर आलवार केरल के थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुरस्कार वितरण समारोह

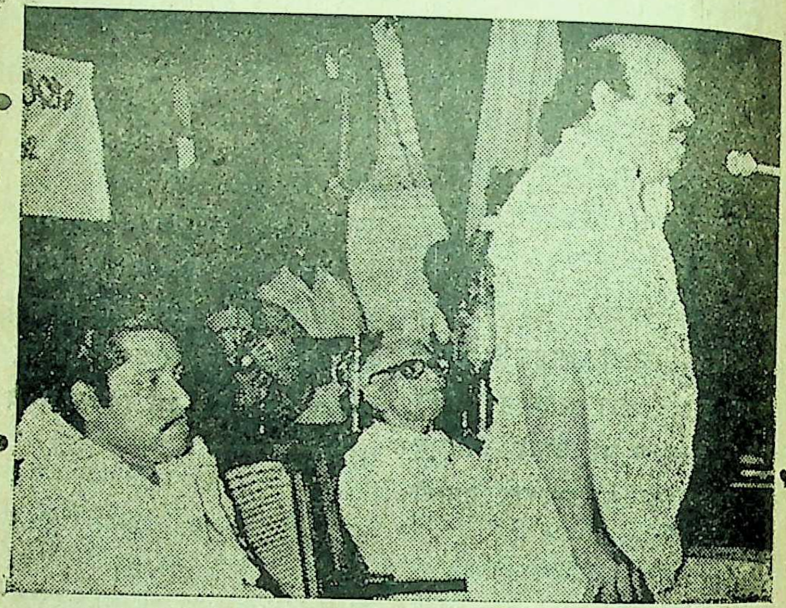

पुरस्कार वितरण समारोह का उद्घाटन करते हुए श्री० एम. पी. गंगाधरन (सिंचाई मंत्री) बोल रहे हैं।

केरल हिन्दी प्रचार सभा द्वारा सन १९८१ और १९८२ में चलायी गयी सुगम हिन्दी परीक्षाओं में प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान पाये विद्यार्थियों को पुरस्कृत करने केलिए सभा के आँगन में ७-१०-१९८२ को विख्यात साहित्यकार श्री० कैनिक्करा कुमार पिल्ले की अध्यक्षता में आयोजित सम्मेलन का उद्घाटन केरल के सिंचाई मंत्री श्री० एम. पी. गंगाधरन ने किया। (भाषण अन्यत्र) केरल के शिक्षा मंत्री श्री० टी. एम. जेकब ने पुरस्कार वितरण किया। (भाषण अन्यत्र) केरल ग्रंथशाला संघ के भूतपूर्व सचिव एवं केरल अनौपचारिक विद्याभ्यास विकसन समिति (कानफेड) के वर्तमान सचिव श्री० पी. एन. पणिक्कर और केरल राज्य विश्वकोश प्रकाशन के निदेशक एवं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

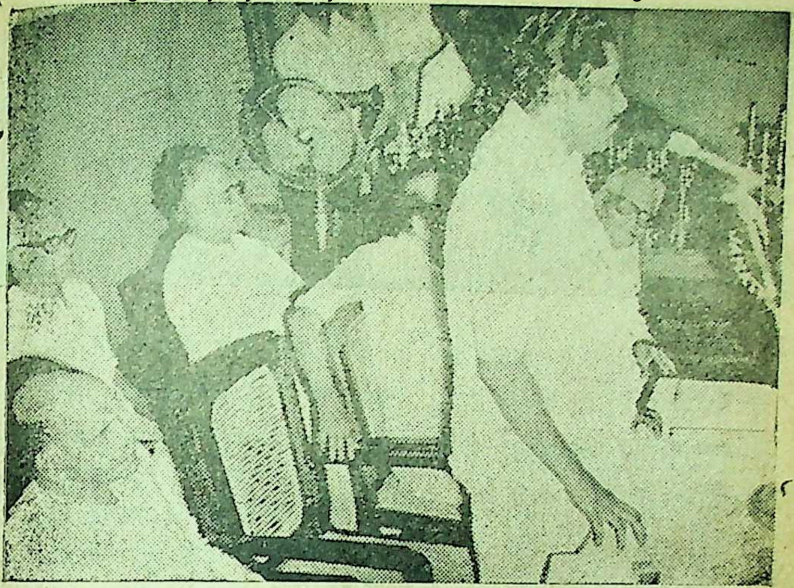

पुरस्कृत विद्यार्थियों एवं स्कूलों का अभिनन्दन करते हुए शिक्षा मंत्री श्री० टी. एम. जेकब ।

बहुभाषाविद डा० वेल्लायणि अर्जुनन ने आशीर्वाद भाषण दिये ।

स्वागत भाषण में सभा के मंत्री श्री० एम. के वेलायुधन नायर ने स्कूली पाठ्यक्रम में हिन्दी की जो दुस्थिति हो गयी है उस पर बडी चिन्ता व्यक्त की और अपील की कि इस में आवश्यक सुधार की जाये ।

अध्यक्षीय भाषण में श्री कैनिक्करा कुमार पिल्लै ने स्वतंत्रता संग्राम के जमाने के हिन्दी प्रचार आन्दोलन की याद दिलाते हुए बताया कि सन १९२७ में जब हिन्दी का अध्यापन राज्जद्रोह माना जाता था तब उन्होंने अपने स्कूल (उन दिनों वे करुवाट्टा एन. एस. एस. हाईस्कूल, आलप्पी जिला के प्रधान अध्यापक थे) हिन्दी की पढाई का प्रबंध करने का साहस दिखाया था । मेट्रिक परीक्षा में हिन्दी की जो स्थिति है उस पर आप ने असन्तोष प्रकट किया । (केरल में मेट्रिक परीक्षा में तीन भाषाओं के पर्चे रहते है— मलयालम, अंग्रेज़ी और हिन्दी के । मलयालम और अंग्रेज़ी केलिए सौ सौ अंक नियत है जब कि हिन्दी केलिए केवल पचास अंक नियत है । उत्तीर्णता केलिए प्रत्येक भाषा के लिए निम्नतम अंक नियत नहीं है । तीनों भाषाओं का एक ग्रूप बना दिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गया है । उस ग्रूप में पैंतीस प्रतिशत अंक पाना ही उत्तीर्णता केलिए पर्याप्त है ।) आप ने आग्रह किया कि राष्ट्र भाषा हिन्दी को उचित स्थान दिया जाये ।

प्रो० एम. जनार्दनन पिल्लै ने कृतज्ञता प्रकट की । सम्मेलन के बाद श्रीचित्राहोम ने (सति अनसूया) नामक बाले प्रस्तुत किया । ❀

मेगस्तनीस और केरल राजा

सम्राट चन्द्रगुप्त की राजधानी के यवनदूत मेगस्तनीस ने केरल के राजा को 'चार्म कहा है ।

कोटुगल्लूर

चेरराज्य की राजधानी कोटुंगल्लूर थी इसे 'मुरचि' 'मुशिरि' और 'वंचि' भी कहा जाता था ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कालेज स्तर पर हिन्दी अनिवार्य विषय हो

एम. पी. गंगाधरन
सिचाई मंत्री, केरल

इस सम्मेलन में भाग लेते हुए मुझे संतोष भी हो रहा है और बेचैनी भी। हिन्दी के प्रति दक्षिणी प्रान्तों में जो अरुचि उत्पन्न हुई उस का स्मरण ही बेचैनी का कारण है। पर जब देखता हूँ कि हिन्दी के संबंध में साचने और सुनने केलिए इतने अधिक लोग यहाँ सम्मिलित हुए यह देख कर सन्तोष भी हो रहा है।

हिन्दी: आर्षभारत का प्रतीक

इस बात में कोई मत भेद नहीं हो सकता कि हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है। मतभेद इस बात में है कि क्या हिन्दी को हम पूर्ण रूप से स्वीकार करें कि नहीं। यद्यपि आर्षभारत की प्रतीक हिन्दी को हम ने राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार किया है तो भी विविध प्रान्त इस भाषा के प्रति विभिन्न प्रकार के रुख प्रकट कर रहे हैं। यह वास्तव में खेद की बात है। केरल की स्थिति अधिक दु:खदायक नहीं। तमिलनाड की स्थिति अत्यन्त दु:खद है। कर्नाटक की स्थिति भी संतोष जनक नहीं।

केरल की स्थिति

केरल सरकार ने हिन्दी को तृत भाषा का स्थान दिका है। यह आश्वा जनक है हिन्दी को तृतीय भाषा से ऊँचा स्थान दिलाने केलिए कई कोनों काम आरंभ हो गया है। शिक्षा म श्री० टी. एम. जेकब इस बात में ब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रुचि ले रहे हैं। मुझे लगता है कि केरल हिन्दी प्रचार सभा का सुवर्णयुग निकट आ रहा है।

ऐसा एक समय आयेगा जब हर भारतीय का चाहे वह तमिलभाषी हो चाहे पंजाबीभाषी भारतीय संस्कृति और परम्परा में लीन हो जाना होगा। भारत को एक देश जब हम मानते हैं तो हिन्दी की प्रमुखता बढ जाता है।

रूस का उदाहरण

हाल ही में रूस के उपराष्ट्रपति का स्वागत करने मैं हवाई भड्डा गया था। वे अंग्रेज़ी जानते हैं। ता भी वे अंग्रेजी नहीं बोले। अपनी राष्ट्रभाषा में बोले। पर हम हैं जो हिन्दी जानते भी हों तो टूटी फूटी अंग्रेज़ी ही बोलेंगे।

प्रायः हर बात में हम गान्धीजी का नाम लेते हैं। उन्होंने कहा था कि जिन्हें अपनी भाषा पर गर्व नहीं उन्हें इस मिट्टी में जीने का अधिकार नहीं। मिट्टी और भाषा का बडा स्थान है।

केरल में मेट्रिक तक हिन्दी अनिवार्य विषय है पर ग्रूप सिस्टम के आने पर हिन्दी के प्रति विद्यार्थियों की रुचि कम हो गयी है। यह स्थिति ठीक नहीं। कालेज स्तर पर भी हिन्दी का अध्ययन अनिवार्य किया जाना चाहिए। सामाजिक, आर्थिक, देशीय और अन्तर्देशीय दृष्टि से इस मामले पर विचार करना है। आशा है बडी लगन और जोश के साथ हिन्दी के कार्यकर्ता आगे बढेंगे।

केरल हिन्दी प्रचार सभा त्याग पूर्ण मार्ग तय करती आयी है। आज जो विद्यार्थी पुरस्कार पा रहे हैं उनका मैं अभिनन्दन करता हूँ जो परीक्षाओं में उत्तीर्ण हुए हैं उन को मैं आशीर्वाद देता हूँ और इस सम्मेलन का उद्घाटन करता हूँ।

❀

...१०–१९८२ को केरल हिन्दी प्रचार सभा द्वारा आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह ...दिया गया उद्घाटन भाषण।

कौटिल्य के अर्थशास्त्र में केरल

कौटिल्य के अर्थशास्त्र में लिखा है कि चूर्णी नदी से चौर्णेय नाम की मुक्ता मिलती थी। केरल की नदी पेरियार का ही दूसरा नाम है चूर्णी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

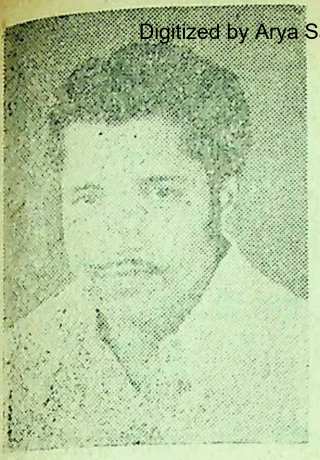

केरल के पाठ्यक्रम में हिन्दी को उचित स्थान मिलेगा

टी. एम. जेकब

शिक्षा मंत्री, केरल

केरल की जनता किसी भाषा के प्रति विमुखता नहीं दिखाते । हिन्दी के प्रति केरलीय जनता के हृदय में बडा प्रेम है । स्कूली स्तर पर त्रिभाषा सूत्र के जरिये हम विद्यार्थियों को तीन भाषायें सीखने को प्रोत्साहित करते रहे हैं ।

हाल ही में मेट्रिक परीक्षा में जा ग्रूप सिस्टम आया है उसने शिक्षा के क्षेत्र में कई बुराइयाँ उपस्थित की हैं । भाषाओं का एक ग्रूप और अन्य विषयों का एक ग्रूप । इस के अनुसार ऐसे विद्यार्थी भी मेट्रिक में उत्तीर्ण हो जाते हैं जो हिन्दी या अंग्रेजी में केवल शून्य ही पाते हैं । पता नहीं कि यह किस दिमाग की उपज है । कुल २१० अंक पानेवाले विद्यार्थी, यदि दोनों ग्रूपों में उत्तीर्ण हों, तो मेट्रिक उत्तीर्ण हो जाते हैं । बच्चे हिन्दी किताबें एक ओर छोड़ देते हैं ।

सरकार मेट्रिक की परीक्षा रीति बदलने के संबंध में सोच रही है । इस बात की जाँच की जा रही है कि हर विषय की उत्तीर्णता केलिए न्यूनतम अंक क्यों न नियत किये जायें ।

राष्ट्रभाषा हिन्दी का अध्ययन राष्ट्र की सुस्थिति केलिए अत्यन्त आवश्यक है । केरल सरकार हिन्दी को उचित स्थान देने के पक्ष में है ।

केरल हिन्दी प्रचार सभा द्वारा चलायी गयी परीक्षाओं में प्रथम द्वितीय और तृतीय स्थान पाकर पुरस्कृत हो रहे विद्यार्थियों का मैं अभिनन्दन करता हूँ । इस के संचालकों का भी मैं हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ ।

❀

३-१०-१९८२ को केरल हिन्दी प्रचार सभा में आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह में दिया गया भाषण ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इहाँ–उहाँ

पी. जी. कामत, एम. ए. एल. टी.

इहाँ-उहाँ अर्थात् यहाँ वहाँ। ये हिन्दी के साधारण शब्द हैं—इतने साधारण हैं कि अन्य भाषा-भाषी जब हिन्दी सीखने लगते हैं तब चार-पाँच दिनों में सीख लेते हैं। 'यहाँ' माने वक्ता के सामने, पास, साथ, वक्ता के सान्निध्य मे—यही साधारण अर्थ है। 'वहाँ' तो दूर है ही।

धार्मिक-दार्शनिक साहित्य में 'यहाँ' का अर्थ 'इहलोक' है, 'वहाँ' का 'परलोक'। जिन जनताओं को मरणानन्तर जीवन पर विश्वास है, उनकी भाषाओं में ऐसा शब्दार्थ-संबम्ध जरूर होगा। जैसे, अंग्रेज़ धार्मिक साहित्यकार बनयन का कहना है—

Here little and hereafter bliss·

यहाँ अत्यल्प और आगे आनन्द।

विशेषत: 'पर' अथवा परलोक के साहचर्य में इहाँ अथवा यहाँ का अर्थ स्पष्ट होता है। राजा राम उत्तर कांड में कहते हैं—

जौं परलोक इहाँ सुख चहहू।
सुनि मम वचन हृदय दृढ़ गहहू।

यदि परलोक और इहलोक दोनों में सुख चाहते हो, तो मेरा वचन सुनकर हृदय में ग्रहण करो। इस साधारण तथा धार्मिक दार्शनिक अर्थ के परे 'इहाँ' का एक विशेष अर्थ तुलसीदासजी के मानस-काव्य में बन जाता है।

सूकरखेत में 'कृपासिन्धु नररूप हरि' अथवा 'शंकर रूपी गुरु' के श्रीमुख से बालक तुलसी राम-कथा सुनता है। सुनते ही इस कथा से व्यामुग्ध हो जाता है। दिनरात इस रस में आमग्न रहता है। अवस्था के बढते बढते रामकथा के श्रवण, कथन, कीर्तन, चिंतन और अनुध्यान का आनन्द भी बढ़ता जाता है। होते होते संत तुलसी का जीवन सियाराम-मय हो जाता है। जीवन के हर निमिष में वे रामतत्व का अनुभव करने लगते हैं। उनके अन्तरतम में राम का प्रकाश फैल जाता है और उठते-बैठते राम के सान्निध्य का अनुभव होने लगता है। परिणामत: रामचरितमानस की रचना के समय वे अपने को राम के दरबार में पाते हैं। मानस काव्य में, हम देखते हैं,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जहाँ भगवान् रामचन्द्र चल देते हैं वहाँ तुलसीदासजी भी साथ हो लेते हैं। अतः जहाँ राम हैं वहीं तुलसी के लिए 'इहाँ' है। जो स्थान राम से दूर है वहीं 'वहाँ' है। संपूर्ण मानस में हमारा यही अनुभव होता है। 'इहाँ-उहाँ' के ऐसे प्रयोग से रामचरित मानस के वस्तु-विन्यास में एक विशिष्टता आ जाती है। राम के कार्य प्रत्यक्ष से लगते हैं और श्रोता को राम सान्निध्य का अनुभव होता है।

उदाहरण :—

शूर्पणखा की राम-कहानी सुनकर रावण उत्तजित होता है और सीतापहरण का निश्चय करके मारीच से मिलने जाता है। इतना बतलाने के बाद रामायण में यह चौपाई आती है—

इहाँ राम जसि जुगुति बनाई।
सुनहु उमा सो कथा सुहाई।

हे उमा, यहाँ राम ने जो युक्ति की, उसकी सरस कहानी सुनिये।

दूसरा उदाहरण :—

लंकाकांड में मन्दोदरी का उपदेश ठुकरा देकर रावण अपना गुणगान करने-वाले किन्नरों और नाचनेवाली अप्सराओं के बीच बैठकर मदोन्मत्त होता है। इस परिस्थिति में,

इहाँ सुबेल सैल रघुबीरा।
उतरे सेन सहित अतिभीरा।

यहाँ सुवेल पर्वत पर रघुवीर राम एक विपुल सेना को साथ लेकर उतर आये। एक तीसरा प्रसंग सुनिए :—

मन्दोदरी फिर एक बार प्रियतम को समझाती हैं और भगवान की शरण जाने का उपदेश देती है। लेकिन वह इस उपदेश को कहाँ माननेवाला है। भोर होते ही उठकर राज-सभा में बैठ जाता है। इस समय

'इहाँ राम अंगदहि बोलावा।
आइ चरन पंकज सिर नावा।'

यहाँ राम ने अंगद को बुलवाया। उसने आकर चरण-कमलों पर सिर नवाया।

इन उदाहरणों से स्पष्ट होता है कि जहाँ राम हैं वहीं 'इहाँ' है।

जब राम मिथिला में हैं तब अवधपुरी की राज-सभा भी तुलसी के लिए 'वहाँ' हो जाती है। शिवचाप-भंजन और सीता-स्वयंवर का सुखद समाचार लेकर मिथिलेश का दूत दशरथ के दरबार में जाता है, तब

खेलत रहे तहाँ सुधि पाई।
आये भरतु सहित हित भाई।

भारत जी जो खेलते थे, उनको यह समाचार मिला तो दोस्तों और भाई शत्रुघ्न को साथ लेकर राजसभा में आये।

जहाँ हनुमान के लंका से लौटने का वर्णन है, तुलसीदास जी गाते है—

लांघि सिंधु इहिपार हि आवा।

समुद्र लाँधकर हनुमान जी इस पार आ गये, जहाँ राम थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राम के सान्निध्य का यह अनुभव इतना गहन है कि तुलसीदास जी के मन के अबोध तल में रहकर उनके विचारों और शब्दों के गठन को प्रभावित करता है। चूँकि राम के सान्निध्य में 'इहाँ' है, राम से दूर 'उहाँ' है। सुनिए—

'उहाँ निसाचर रहहिं।'

वहाँ लंका में निशाचर रहते हैं। इसी प्रकार

उहाँ दसानन सचिव हँकारे।

वहाँ दशानन रावण ने अपने मंत्री को बुलवाया।

संक्षेप में :—

इहाँ राम।
इहाँ पवन सुत।
इहाँ सुबेल सैल रघुवीरा।
इहाँ विभीषण।
इहाँ देवरिषि।
इहाँ निषाद।
और उहाँ निसाचर।
उहाँ दसानन।

इहाँ-उहाँ का ऐसा प्रयोग युद्ध कांड के एक प्रसंग में पास-पास आता है। सुनिए।

उहाँ दसानन जाग करि।
करै लोग कुछ जाय।
इहाँ विभीषण सब सुधि पाई।
सपदि जाइ रघुपतिहिं सुनाई।

वहाँ रावण जागकर यज्ञ करने लगा, यहाँ विभीषण ने तुरन्त सब समाचार राम को सुना दिया।

कवि ने केवल एक बार रावण के लिए 'इहाँ' का प्रयोग किया है। प्रसंग यह है—राम रावण युद्ध के अंतिम दिन की पूर्वरात्रि है। अशोकवन में बैठी सीता के वाम-नयन और बाहु फड़कते हैं। यह शुभशकुन जानकर सीता जी धीरज बाँध लेती हैं। इस के बाद तुलसीदास जी कहते हैं—

इहाँ अर्धनिसी रावनु जागा।

यहाँ आधीरात के समय रावण जाग पड़ा। शायद सीता के सान्निध्य बोध के कारण ही ऐसा हुआ है। तुलसीदास जी की शैली के अनुसार इस परिस्थिति में 'उहाँ' समीचीन होता है।

राम का सान्निध्य -बोध जो महाकवि के हृदय में निरन्तर वर्तमान था संपूर्ण रामचरितमानस में परिव्याप्त हो गया है। मानस का अनुशीलन करनेवालों के मन में भी यह सान्निध्यबोध घर करने लगता है। धन्य हैं वे जो उठते-बैठते, सोते-जागते राम के सन्निधान का अनुभव करते हैं, जो

गतिर्भर्ता प्रभुः साक्षी
निवासः शरण सुहृत्

के रूप में सदा सर्वदा राम का अनुभव करके जीवन्मुक्त हो जाते हैं। रामचरितमानस इस गहन अनुभूति का प्रेरक है।

दयानन्दम, चेरुमुक्कु,
तृश्शूर–१० केरल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...भूषणम्

...ल्त १९८२ अंक में प्रकाशित से   मूल : महाकवि उल्लूर

अनुवाद : कवियूर शिवराम अय्यर

पूर्वकथा :—भगवान सूर्य अपने प्रिय पुत्र कर्ण से कुछ कहना चाहते हैं। वे धीरे-धीरे कर्ण के शयनागार के समीप पधारे। अर्घ्यपाद्यों से सूर्य का स्वागत करके कर्ण ने अपना परिचय कराते हुए बताया कि मेरी माँ राधा है और पिता अधिरथ हैं। यह सुनकर भगवान सूर्य ने कर्ण को छाती से लगा लिया और कहा—तू कुंती का पुत्र है। पापी मैं ही तेरा पिता हूँ। अब आगे पढ़िये............

X

...र्ष मंत्र का तत्व जांचती
...में पड़ी पूर्व पृथा।
...व मैं कांत बना; सूरज का
...नीन पुत्र तू जन्मा।

...वल प्रसव को व्रीडा-भय से
...न्या ने प्लव-पेटक में
...त, पहले अश्रु-नदी में, फिर
...श्वनदी में बहा दिया।

"...त्नाकर के योग्य नहीं क्या
...त्न-प्रकांड यही होता !
...त्नाकर ही में जा बैठे"
...सने मानो सोचा था।

चंपा तक, चंबल यमुना औ'
गंगा बारी बारी से
फेन-रत्न मय कंकण मंडित
लहर-करों से थामे से,

मेरे शिशु की काय-कांति से
स्वर्ण-लिप्त उस पेटक को
राधा-कर पहुंचाते देखा
परतंत्र दूर से मैं ने।

'पंजरस्थ उस पोत से महा-
जलस्तंभ यह कैसे हो !'
चकित हुए हों जन, को जाने
तव सृष्टि-रहस्य अनोखा !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माठर-पिंगल-दंड भांति मेरे,
तीन साथ हैं तेरे,
मित्र से अधिक तुझ से मिलकर
संतत सहयोग करेंगे।

एक झलमला कवच, दूसरे
जगमग कुंडल ये दोनों
अमृतसार ये अमर बनाते
धारण करनेवाले को।

"चिरायु हो तू" माँगा माँ ने
वही विधान किया मैने ॥

आगे पीछे अगल बगल ये
अपने सहजात छबीले
तव रक्षक हैं, रामचद्र के
भरत-सुमित्रासुत जैसे ॥

सिखे दुरक्षर यथेष्ट कोई
चतुरानन सिर पर तेरे,
बन्धु कृष्ण चाहे जो भी
धोखेबाज़ी कर बैठे ॥

पाशुपत ही नहीं, पिनाक भी
शिव दें, या भाल नयन ही,
जिष्णु कहे फल्गुन का साहस
तव सम्मुख फल्गु बनेगा।

जब तक कंचुक-कुंडल रहते
तब तक कर्ण विजेता है ॥

XI

कहते कहते रवि ने सुत का
मुख-पंकज, पौरुष-धाम लखा।
ह्रास नहीं, न ज़रा विकास भी
ज्यों का त्यों वह मुख-भाव दिखा

पुलक-कँपकँपी-अश्रुधार के
साथ बतायी गद्गद वाणी
नलिनी-दल-गत वर्षा-जल सी
हंत ! न टिक पायी, विफल

निर्विकार वह मूर्ति कर्ण है?
अथवा वर्ण विहीन कहीं ही!
सुनी बात में कौतुक न लगा,
चाह और कुछ सुनने की है।

"जो भी हो, आने का मतलब
बतला दूँ मुखबंध बन्द कर"
इस विचार से रवि ने वाणी
वीणा के तार बजाये फिर।

XII

सुरपति जो पार्थ-पिता है
दिनपति मैं भी पार्थ-पिता,
सदियों से हम दोनों में
प्ररूढ वैर बने रहता।

जिस दिन सुग्रीव-प्रार्थना से
राम ने शक्र-सुत को मारा
उस दिन से बदला लेना का
अवसर वज्री है ताक रहा।

"इन्द्र-सुतों को हरि के किंकर
होने का भी अधिकार नहीं
भास्कर-वंशज रावणरिपु ने
भास्कर-सुत को मित्र बनाया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

, जगत में पुन: सहोदर
न नर-अवतार धरेगा
सूत का बदला लूँगा"
समय इन्द्र को हाथ लगा ।

र कपटी कंसारी का
न बहिरंग प्राण होता;
हरिवैरी अंधज का तू
हाथ बने बैठा है ।

इन्द्र से मत पीडित हो
क्रिया यों तुझको रक्षित ॥

त्मज को शर्व ने दिया
पाशुपत, दीर्घ वय नहीं ।
कोई हो, मार्कण्ड नहीं;
ट सोमा विजय-थान की ।

ा भाई अंतक उसके
ट भेज दे जब निज किंकर
मित गांडीव हुंकार तभी,
व मुठीभर पार्थ-कलेवर ।

गा वह दृश्य एक दिन
कुंडल धारी तू प्रिय ।
देख मुनि-शाप याद कर
स वार पछताये वज्री ॥

XIII

, कर्ण-पराक्रम हरने को
त इंद्र स्वयं होता ।
प्रेम हा ! सज्जन से भी
क्या पाप न करवाता !

एक मात्र त्रुटि तुझ में होती,
यह निज दान-धर्म-निष्ठा;
विधु-मुख का दाग नहीं तो
दृग-तारे की हो कि धवलता ।

स्वयं भूल दान-पुण्य करना
न प्राज्ञता, आत्मघात है ।
वारिधि को भी वेला भाती
गुण भी सीमित होना है ॥

है उचित आत्मपूजा सब को;
सोच भिन्न है बेटे का ।
किंतु शक्र तव त्रुटि देख गया,
सूक्ष्म रंध्र परकोटे का ॥

आएगा वह वंचक वटु बन
तव कुंडल-कवच याचने,
वज्र चिह्न युत दायाँ करतल
दोना करके दिखलाने ।

मत्त हस्ति के मस्तक-मोती
खोये तो फिर पा सकता
मगर दंत हो निज जब छूटें
हास्य सिंह तत्क्षण होता ।
सिवा इन्हीं के जो चाहे दे
निज स्थिति को दोष न उस से,
सब कुछ तज दे, पर स्वयं बचा
सहज-त्याग के पातक से ।

नागराज जल-व्याल बनेगा ।
वासव सोच रहा है ।
कुंडलीश वरिष्ठ क्या उतना
होता मूर्ख निरा है ?॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

नीरदवाहन की भिक्षा क्या
यंत्र कोई है ऐसा
जो सर्वज्ञविभूषण को भी
नीरद कर दे सहसा ?

XIV

पद्मबंधु ने फिर से देखा
सुंदर मुख बेटे का
स्पष्ट लखा उस दर्पण में निज
मोहभंग आगे का ।।

पहले शोभन शशि मुख में जो
तनिक म्लानता छायी
लांछन सी वह बढ़ झट भीषण
राहु-रूप हो आयी ।

विधु को निगल गयी, रवि सम्मुख
छाया तुरत अँधेरा ।
शरदा में क्या वर्षा-रजनी !
साँझ बना कि सवेरा !

अब क्या करना ? रवि ने सोचा
मार्ग न कोई सुलझा
फिर से वाक्षरपति बोल उठा
तनय मोह में उलझा ।।

(सशेष)

केरल में आर्यों का प्रवेश

माना जाता है कि ई. पू. तीसरी शदाब्दी के पहले ही आर्यों ने केरल में प्रवेश किया ।

पान और तंपाकू

पान के साथ तंबाकू खाने की रीति डच व्यापारियों ने केरल में प्रचलित की ।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी प्रचार की व्यापकता

जगदीश शर्मा

भारतवर्ष में सदियों से एक भाषा सर्व स्वीकृत, सर्वमान्य तथा सर्व व्यापक रही है। पहले संस्कृत को महाराष्ट्र भाषा या राष्ट्रभाषा होने का गौरव प्राप्त था। दक्षिण भारत, उत्तर भारत, पूरब और पश्चिम के विद्वान पंडित लोग संस्कृत में शास्त्रार्थ किया करते थे। कहते हैं कि दक्षिण के संस्कृत पंडितों ने चम्पू काव्य लिखने की परिपाटी चलायी। धीरे-धीरे प्राकृतों ने भिन्न-भिन्न प्रदेशों में सिर उठाये। संस्कृत नाटकों में भी जनता से अधिक सम्पर्क रखनेवाले नौकर चाकर, स्त्रियों, मछवाहे आदि लोगों से प्राकृत कहलवायी गयी है। अशोक के शिलालेखों को देश के कई भागों में पाया जाना इस बात का द्योतक है कि वह भाषा सर्वत्र समझी जाती थी। अशोक की एक शिला-लिपि सूदूर मैसूर प्रदेश में चित्र दुर्ग के पास उपलब्ध है।

प्राकृतों के व्यवहार का परिणाम "अपभ्रंश" के साहित्य रूप को ग्रहण करने में हुआ। प्राकृत का अर्वाचीन रूप ही तो अपभ्रंश है। दक्षिण में जैन बुद्धियों के ग्रंथ प्रादेशिक भाषाओं में भी उपलब्ध है। देशी भाषाओं में उन्होंने लौकिक काव्य लिखे और अपभ्रंश में धार्मिक काव्य। संस्कृत को सनातन धर्मवैदिक और धर्म, पाली को बौद्ध धर्म और महाराष्ट्री अपभ्रंश को जैन धर्म का बल मिला। इससे ये भाषाएँ व्यापक हुई। यहाँ तक पाली भाषा हमारे देश से बाहर भी वहाँ-वहाँ गई जहाँ-जहाँ बौद्ध धर्मावलम्बी हैं— जापान, चीन, तिब्बत, बर्मा, श्रीलंका और बैंकाक में बौद्ध धर्म के प्राचीन ग्रन्थ पाली भाषा में पढ़े जाते हैं।

धार्मिक प्रवृत्ति या सांस्कृतिक प्रवृत्ति का अध्यात्म से निकट का सम्बन्ध सदा से रहा है। अध्यात्म कभी भक्ति के रूप मे कभी ज्ञान के रूप में कभी योग के रूप में और कभी कर्म के रूप में गृहित हुआ। बौद्ध धर्म का देश में ह्रास होने पर उसकी एक शाला के परिवर्तित तथा यहाँ के संतों के सत्संग से किंचित रूपान्तरित नाथ, सिद्ध तथा योग पंथ के सन्त महात्मा मध्य युग में सारे देश में भ्रमण कर उपदेश देते थे और उनकी वाणी ऐसी होती थी जो सब की समझ में आ सके। धार्मिक जन आन्दोलन के कारण हिन्दी का प्रचार व्यापक रूप में बढ़ा। साधू सन्त जब अपने क्षेत्र से बाहर जाते थे तब हिन्दी भाषा का ही प्रयोग करते थे। आठवीं शताब्दी में उत्तर भारत में इस आन्दोलन का श्रीगणेश हुआ और व्यापक रूप धारण करता चला गया। दक्षिण में वैष्णव भक्ति का प्रचार बढ़ा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और बाद में उत्तर भारत में [illegible] चला गया। रामानुजाचार्य के शिष्य रामानन्द दक्षिण भारतीय थे उन्होंने अनुभव किया कि भक्ति का प्रचार स्थानीय भाषा में ही होना चाहिए। उनकी प्रेरणा से धार्मिक प्रचार के लिए हिन्दी का प्रयोग आरम्भ हुआ। हिन्दी की सर्व व्यापकता के कारण उसमें कई भाषाओं के शब्द आ गए। इस वाणी को रामचन्द्र शुक्ल ने सुधुक्कड़ी भाषा कहा है।

विभिन्न प्रदेशों में हिन्दी का व्यवहार

महाराष्ट्र

महाराष्ट्र कें सन्त जैसे ज्ञानेश्वर जब प्रदेश से बाहर उन्हें जाते और लोगों को सम्बोधित करना पड़ता था तो वे हिन्दी वाणी में कहते थे। (ई. १२७५–१२९६) में अपनी वाणी में कहते हैं —

निर्गुण ब्रह्म भुवन से न्यारा, पोथी
पुस्तक भये अपारा,
कोरा कागज पढ़कर जोय, लेना एक
और देना दोय।

इसी प्रकार सन्त नामदेव की हिन्दी वाणी प्रसिद्ध है —

हरि-हरि करत पूतना तरी बाल
धातनो कपटहि मरी,
सिमरत द्रोपद सुत ऊधरी, गउतमी
सती शिला निसतरी।

जिस समाज का सम्बोधन करना होता है। उसके अनुरूप भाषा का प्रयोग करना सहज ही है। सन्त एकनाथ (सन् १५३०–१५९९) की कुछ पंक्तियाँ देखिए —

खिन-खिन घटत आवत मरन, अबहुं
भजी तुम राम चरन

x x x x

बाप बड़ा या बेटा बड़ा, बेटे आगे
बाप खड़ा,
बीबी बड़ी या बांदी बड़ा, बांदी आगे
बीबी खड़ी,
किसी कहुं नन्हा या बड़ा, आप ही
मिट्टी आप घड़ा,
राई के हजार हिस्से, उसी में मेरा
खुदा बसे।

उपर्युक्त महाराष्ट्री सन्त बारकरी संप्रदाय के आदिकाल से पोषक रहे हैं। इस भागवत संप्रदाय का नींव ज्ञानेश्वर ने डाली, नामदेव ने उसके मार्ग को प्रशस्त किया, एकनाथ मानों उसके आधार स्तम्भ थे और तुकाराम इसके शिरोमणि हुए।

तुकराम (सन् १५९८–१६४९) की वाणी की बानगी देखिए —

तुका संग तोन्हसु करोये जीने थे सुष
दुनाया,
दर्जन तेरा मुष काला पीता प्रेम
घटाय।

महाराष्ट्र में समर्थ संप्रदाय के प्रवर्तक श्री समर्थ रामदास (१६५४–१६८९) महाराष्ट्र केसरी शिवाजी के गुरू थे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनकी वाणी का नमूना देखिए —

अरत किजो अंजिन के सुता, बल-बल
जयो सीताराम के हुता,
वन हिंडत राजा राम कु भेंटे, चरण
कमल पर प्रेम सु लेटें ।
जब लछीमन रण मो खत, खायो
द्रोणागिरि परबत लेकर आयो ।
रामदास अति आदर कीयो । वो सेवा
वर दास कु दीयो ।।

शिवाजी के आख्यान में हिंदवी चिटन-वीस थे । उनके जमाने से लेकर क्या व्यापारी, क्या साधु-सन्त, क्या सिपाही और क्या महाजन सब हिन्दी जगत से हिन्दी में व्यवहार करते थे । हिन्दी प्रदेशों के हजारों व्यापारी महाराष्ट्र में बस गये थे और अब भी है । उनके महाराष्ट्र के गावों से व्यवहार में हिन्दी बरती जाती थी । उनका मराठा साम्राज्य इन्दौर, धार, देवास, ग्वालियर आदि हिन्दी क्षेत्रों में व्याप गया था । इस तरह मुद्दत से महाराष्ट्र और हिन्दी राज्यों का परस्पर घनिष्ट सम्बन्ध था ।

गुजरात

प्रसिद्ध भाषा वैज्ञानिक तोसितोरी के विद्वतापूर्ण ग्रन्थ ("पुरानी राजस्थानी" पर लिखित) से ज्ञान होता है कि हिन्दी पुरानी राजस्थानी और पुरानी गुजराती का स्रोत एक ही रहा । आज भी पश्चिमी राजस्थानी याने हिन्दी गुजराती से मिलती जुलती है । गुजरात में दक्खिनी हिन्दी भी प्रचलित थी । कृष्ण भक्ति आन्दोलन की गुजरात में लोकप्रियता के कारण वहाँ ब्रजभाषा के गीत जनप्रिय हुए । इन दिनों वाणिज्य व्यापार में हिन्दी प्रदेश के पड़ोसी होने के नाते गुजरात हिन्दी के द्वारा हिन्दी के अत्यन्त निकट हैं ही ।

प्रसिद्ध गुजराती भाषा के कवि नरसिंह मेहता के लोक प्रिय हिन्दी पदों के नमूने लीजिए —

१. जिन पायों हरिपंथ न चाज्यों सो पग कहिये ठावड़िया ।

२. म्हाने पार उतारों, जी, याने निज भक्ति की आन ।

३. हो गुजराती सिव के उपासी, पुंजी साँज सवेर ।

ज्ञानमार्गी सन्त परंपरा के श्रेष्ठ कवि अखा (१५७५–१६१८) के आत्मानुभव पर अपनी वाणी में अधिक जोर दिया है ।

आतम अनुभव बिन अरं, धरधाज न
होय निभाय ।
जद्यपि बुढ़ा बन्दरा, टाले न चपल
स्वभाव ।।

असौर भी कई सन्तों की वाणी हिन्दी में उपलब्ध है । वैष्णव कवि परंपरा में जूनागढ निवासी कवि त्रीकमदास (सन् १७३४) की सुन्दर ब्रजभाषा कविता लीजिए —

औरत उज्वल रंग रच्यों, हम काले सो
प्यार कियो सो कियो ।
बढ़ देव भजो किन और कोड़ा, हम
बारे बारे सीं नेह सो धर्यो ।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बंगीय भाषा के मूल स्रोत विद्वानों के अनुसार पूरबो अपभ्रंश (पुरानी हिन्दी) के "बौद्ध गान दोहा" या "चर्य पद" में पाये जाते हैं। चार्यपद में लुइपाद, कानुपा' मुसुक जैसे सहजिया पंथियों के पद संकलित हैं। उदाहरण—

मन तरु पाँच इंदि तसु साहा
आसा बहल पात फल नाहा।

इसकी भाषा को "संध्या भाषा कहते हैं क्यों कि 'साहस के अंधेरे के अनुरूप इसका सारा अर्थ रहस्यमय है। प्रस्तुत अर्थ के अतिरिक्त एक और अप्रस्तुत अर्थ गृहणीय (अभिप्रेत) है।

हिन्दी विद्यापति को बंगाल वाले अपना मानते हैं। तात्पर्य यह है कि उनकी भाषा में सहज ही समझी जाती है। नमूना प्रस्तुत है :—

तोहर बदन सम चाँप हो अथि नाहि
कैयी जतन बिह केला।
के बोरि काटि बनावोल नव कै,
तैकि तुलित नहीं मेला।।

आधुनिक भारत में नवचेतना का प्रसार करने वाले सब से पहले व्यक्ति थे राजाराम मोहनराय। उन्होंने समाज के पुनर्गठन एवं आधुनिक विचारों के प्रचारार्थ उन्होंने हिन्दी का पक्ष लिया। उन्होंने १८२६ में "बंगद्वत" नामक पत्र निकला। वह चारों भाषाओं में छपता था। हिन्दी, अंग्रेज़ी, बंगला और फारसी। यों तो हिन्दी का सर्वप्रथम साप्ताहिक समाचार-पत्र (उदंड-मार्तंड) श्री जुगलकिशोर शुक्ल के संपादकत्व में हिन्दी में कलकत्ते से निकला। वैसे तो "बनारस के राजा शिवप्रसाद की प्रेरणा से १८४५ से निकले हुए "बनारस अखबार" के सम्पादक भी बंगाली विद्वान ब्रजेन्द्रनाथ बन्द्योपाध्याय थे। इस तरह से हिन्दी पत्रकारिता के प्रारम्भ को श्रेय बहुत बंगाल को है। इसके बाद एक पर एक अनेकों पत्र हिन्दी प्रदेश में निकलने लगे। जैसे-जैसे और जहाँ-जहाँ हिन्दी मुद्रणालय खुलते गए वैसे-वैसे हिन्दी पत्रों की संख्या में वृद्धि होती गयी। इस कार्य में उनके सहायक थे श्री० द्वारिकानाथ, श्री० रवीन्द्रनाथ ठाकुर के पिताजी श्री० महर्षि देवेन्द्र नाथ, श्री० केशव चन्द्र सेन और ईश्वरचन्द्र विद्यासागर। कवीन्द्र रवीन्द्रनाथ की राय में (राममोहन राय को भारत वर्ष के आधुनिक युग के उद्घाटन का अद्वितीय सम्मान प्राप्त है।

फोर्ट विलियम कालेज (कलकत्ता) १८०३ में स्थापित हुआ। उसके सर्व-प्रथम उर्दू-हिन्दी अध्यापक थे ज्ञान गिलक्राइस्ट। उनकी प्रेरणा कालेज की ओर से गद्य की पुस्तकें-प्रेमसागर (लल्लुलाल कृत) और नासिके तोपाख्यान (सदल मिश्र) प्रकाशित हुई। उसके पश्चात् हिन्दी पत्रकारिता ने संपादकीय के बहाने हिन्दी निबन्ध लेखन को बढ़ावा दिया और हिन्दी गद्य की अत्यान्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विधाएँ शीघ्र ही निकलीं। बंग देश हिन्दी भाषा और साहित्य के प्रचार-प्रसार में अग्रणी रहा है। "विशाल भारत नामक सुसंस्कृत उच्च स्तरीय हिन्दी मासिक पत्र मार्डन रेव्यू कार्यालय से श्री० रामचन्द्र चटर्जी के पोषण में कई वर्षों तक निकलता रहा।

पंजाब—

ब्रह्म समाज की कई शाखाओं में घूमकर गुजराती पंडित श्री० दयानन्द सरस्वती (१८२४–१८८६) ने अपने समाज सुधार सम्बन्धी अदम्य व्यवस्थाओं को कार्यरूप देने के उद्देश्य से पंजाब में १८७५ में आर्य समाज नामक संस्था खड़ी की। वैदिक धर्म का प्रसार करना इस संस्था का उद्देश्य था, यद्यपि धर्म की बातों का ज्ञान संस्कृत के अध्ययन से प्राप्य है फिर भी स्वामीजी ने अपने प्रसिद्ध ग्रंथ "सत्यार्थ प्रकाश" को हिन्दी में लिखा उन्होंने शुद्ध चरित्र, पवित्र जीवन तथा वैदिक धर्म के परिपालन और देश भक्ति पर बल दिया। केवल पंजाब में नहीं, सारे भारत में आर्य धर्म के प्रचारक केन्द्र खोले गये। जन सम्पर्क व्यापक रूप से आवश्यक हो गया। गुजराती होते हुए और संस्कृत में वाक्यार्थ एवं शास्त्रार्थ करने के आदि होते होते हुए भी स्वामीजी ने हिन्दी (आर्य भाषा) को अपने धर्म के प्रचार प्रसार का माध्यम स्वीकृत किया। क्या भारत, आफ्रीका, क्या बर्मा हर कहीं आर्य समाज का समाज सुधार के जोश, देश भक्ति के जोर और धर्म प्रसार की मिशनरी स्पिरिट के साथ हिन्दी द्वारा प्रचार किया गया। सारे भारत में आर्य समाज के केन्द्रों में हिन्दी न जाननेवालों को हिन्दी सीखायी जाती थी।

आर्य समाज वालों का कट्टर सनातनी धर्मियों के साथ वाद-विवाद होने लगा। अपने पक्ष के तत्वों के प्रसार हेतु आर्य समाज की ओर से सर्व-प्रथम राजस्थान में कई हिन्दी पत्र निकले जिनमें से मुख्य हैं—"आर्य मार्तण्ड", मासिक पत्र अजमेर (१८९४ से प्रकाशित) इसके पश्चात् साप्ताहिक "आर्य समाचार" (मेरठ १८७८), वैदिक मैगजीन (मासिक-१८८१) लाहौर से, आर्य प्रकाश मासिक (बम्बई-१८८६), मासिक आर्य, पत्र बरेली (१८९५), मासिक आर्य, मित्र (आगरा व मुरादाबाद-१८९६) अर्थात् यू० पी०, पजाब, राजस्थान और बम्बई से निकलने लगे। इस तरह हिन्दी के व्यापक प्रसार में सहायता मिली। तात्पर्य यह है कि आर्य समाज ने सर्वप्रथम अत्यंत व्यापक रूप से सारे देश में हिन्दी प्रचार किया।

वैसे पंजाब के लिए हिन्दी कुछ नई चीज नहीं थीं। "ग्रंथ साहब" में हिन्दी सन्तों की वाणियाँ संग्रहीत हैं। नानक की रचना से दो पंक्तियाँ नीचे उद्धृत हैं।

कलिकाती, राजे कासाई,
धरम पंख करि उड़रिया
कूड़ अमावस सचु चन्द्रमा
दोसै नयीं कह चढ़िआ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

असम—

असम में शाक्त मत के प्रचार एवं तत्पश्चात् वैष्णव धर्म के प्रचार के कारण हिन्दी आई। असमिया-बंगला के साथ पंछाई भाषा (हिन्दी) का सम्मिश्रण कर के 'ब्रजबुली'' नामक साहित्यिक भाषा में असम एव बंग प्रदेश में वैष्णव कवियों ने अपनी रचनाएँ की। शंकर देव (१४४९–१५६८) में एक प्रकार से कबीर, सूर, तुलसी का समवेत व्यक्तित्व समाहित है। नमूना देखिए—

जय जय जादव जलनिधिज धन धाता,
थुतमात्राखिल त्राता।
स्मरणे करय सिद्धि दीन दयानिधि,
भक्त मुकुनिपद दाता ॥
जग-जन जीवन अलन जनार्दन
दनुजदम दुखकारो।
महादानन्देंद परमान्द नन्दनन्दन
वनचारी ॥
विविध बिहार विसारद सारद
इंदुनदि परकासी।
सॅस सयन सिव केसि बिनासन
पीतवसन अविनासी।
जगत बन्धु बिधु माधव मधुरिपु
मधुर मुरुति मुरतासी ॥
केसव चरण सरसिह किंकर शंकर
एहु अभिलासी।

आज असम में भारत के अन्य प्रदेशों से कई लोगों के आकर बसने के कारण हिन्दी का प्रचार-प्रसार बढ़ा है। इस प्रदेश में आदिवासी, वन्य लोग, पहाड़ी लोग, चाय बागानों में काम करनेवाले नेपाली, बिहारी कामगार सब हिन्दी हिन्दुस्तानी का व्यवहार करते हैं। इसके अलावा व्यारी लोग हिन्दी जानते ही है। असम में स्थापित तेल कारखाने में काम करने वाले भारत के कई प्रदेशों के लोग हैं।

उड़ीसा—

उड़ीसा, दक्षिण, उत्तर तथा पूर्व का मिलन केन्द्र रहा। जगन्नाथ सब का देवता है। वह सारे जगत का नाथ है। धर्म या संप्रदाय का देवता नहीं। इस प्रदेश की जनता में आर्य, द्राविड़ तथा आदिवासियों का मेल है।

उड़ीसा की भाषा आर्य भाषाओं में गिनी जाती है। १० वीं और १२ वीं शती के स्थानीय नाथों की वाणी में प्राचीन उड़ीसा की झलक मिलती है—

गरव न करिबा, सहेज रहिबा
मरणत गोरखबाबा।

विद्यापीठ की पदावली की शैली में लिखित राय रामानन्द पठनायक (१४७९—१५३५) की कतिपय पंक्तियाँ देखिये—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहिलहि राग नयन भाग मेल ।
अनुदिन बढ़िल अवधि न मेल ॥
न सो रमण न हाय रमणि,
दुहु मन मनोभ व पैसल जानि ।
हे सखि सी सब प्रेम कहानी ।

इसमें मैथिली, ब्रजभाषा, ओड़िया तथा बंगला का मिश्रित रूप है। रामदास (१७३०-१८००) की दो पंक्तियाँ लीजिए—

सिद्धन को छूटत ध्यान,
मानिनी सब तजत मान ।
ग्यानी को मूल्यों ज्ञान,
योगी मन भटक्यो ॥

जम्मू-कश्मीर—

जम्मू-कश्मीर के अन्तर्गत जम्मू-कश्मीर और लद्दाख के इलाके पड़ते हैं। जम्मू की भाषा डोगरी है, कश्मीर में कश्मीरी बोली जाती है और तिब्बत मूल की लद्दखी भाषा लद्दाख में चलती है। प्रथम दो आर्य भाषाएँ हैं। उनका स्त्रोत वही है जिससे हिन्दी निकली है।

भट्टन के कश्मीर कवि परमानन्द (१७९१-१८७९) कवि की दो पंक्तियाँ देखिये—

न तुम देख्यों कृष्ण शामा,
पीता हमारा प्यार लोवो ।
बाजीगर ने बाजी करके जिया
प्यार हमारा पारा लोको ॥

जम्मू-कश्मीर की भाषा मुगलों के जमाने में फारसी थी। बाद में हिन्दू नरेशों के जमाने में उर्दू (फारसी के स्थान में) चल पड़ी। संस्कृत का भी जम्मू में व्यवहार होता था। उर्दू हिन्दी की मिली जुली शैली में कितनी ही कविताएँ लिखी जाती थीं। इस शैली में लिखित "सुफियाना उलाम" की दो पंक्तियाँ लीजिये—

कबीरा राम कैसा है
जैसा है वैसा है।
सबसे हिलिया सबसे मिलिया,
रहिए अपने धाम ।
जो हाँ जी हाँ सबसे कहिए,
कीजै अपना काम ॥

कश्मीर में हिन्दी रचना के सर्व-प्रथम नमूने रूपाभवानी (१६२५-१७२१) की कविता में मिलते हैं। उनके बाकों (वाक्यों) की सुधकड़ी भाषा शैलि देखिये :—

अपने घर आया आप साँई,
जो कुछ मैं था सो अब नाहीं ।
यह बोध आया गुरु को बढ़ाई,
जिन गुरु ने दिया मन का तत्त
कताई ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जम्मू कश्मीर में जनप्रिय आराध्य देव हैं राम और कृष्ण। "कश्मीर नरेश महाराजा प्रतापसिंह को समर्पित" विष्णु प्रताप रामायण (१९०९-१९१४) में विष्णु कौल ने बीसियों प्रसंग उर्दू हिन्दी की मिली जुली भाषा में रचे हैं। उदाहरण प्रस्तुत हैं :—

दंडक बन खास कर वैकुंठ
का धाम,
परम आनन्दमय लखिमन
सियाराम।

दक्षिण भारत में हिन्दी का प्रचलन

भारत के कोने-कोने से तीर्थ यात्री, साधू, सन्त विभिन्न प्रदेशों की यात्रा करने आते जाते थे। तीर्थ स्थानों की यात्राएँ अक्सर पैदल की जाती थी। इन धार्मिक यात्राओं के लिए एक सामान्य भाषा की आवश्यकता थी। इसी कारण निर्गुण सन्त एवं वैष्णव धर्म के द्वारा मध्य-काल में हिन्दी की आवश्यकता पर बल दिया गया। हिन्दी ही उनके विचार विनिमय का माध्यम बनी। धीरे-धीरे हिन्दी का प्रचलन बढ़ा।

मुस्लिम शासन काल में दक्षिण प्रदेश के साथ सम्बन्ध होने के कारण हिन्दी को दक्षिण में प्रचार-प्रसार का अवसर मिला जिसे दक्खिनी हिन्दी की संज्ञा दी गई।

१२ वीं शताब्दी में खिलजी वंश का दक्षिण भारत के देवगिरि, वरंगल, मदुरा आदि पर अधिकार होने के कारण भासी फारसी भाषी और हिन्दी भाषी लोग दक्षिण गये।

इस प्रकार धार्मिक, संस्कृतिक, राजनैतिक, साहित्यिक और व्यापारिक परिस्थितियों के कारण हिन्दी की व्यापकता को बल मिला। अखिल भारतीय सम्पर्क के रूप में राष्ट्रीय और धार्मिक प्रयोजनों के लिए खड़ी बोली को अपनाया। राष्ट्रीय स्तर पर जन मानस इसी माध्यम से अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करता रहा है।

अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ
नई दिल्ली

> **हिप्पलोस**
>
> सन ४५ के करीब रोम-ग्रीक नाविक एडन द्वीप से निकल कर चेरराज्य की राजधानि मुसिरिस (कोंटुंल्लर) पहुंचा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सी. ए. जोसफ़
कोऑपरेटिव रोड
मयिलीपाडम, तृशूर

१. एक नई खाट का सपना

[श्री० सी. ए. जोसफ़ केरल के इने-गिने कवियों में से एक हैं जो दो भाषाओं को—मातृभाषा मलयालम तथा अंग्रेजी को–काव्यात्मक अभिव्यक्ति का माध्यम बना रहे हैं। उनकी A New Cot's Reverie शीर्षक कविता जो 'थाट' (Thought) में प्रकाशित हुई थी, यहाँ हिन्दी-रूपांतर में पढिए। यह कहना अत्युक्ति नहीं है कि श्री० जोसफ़ के भाव तथा शैली अनाघ्रात कुसुम है।]

आहा ! आज एक स्निग्ध मधुरिमा
बह रही है मेरी नस-नस में।
उससे भी मधुरतर
जिसने मुझे झकझोरा था उस दिन
जब कि
मेरे उस जंगली आवास में
एक लता चिपक गई थी मेरे दिल से
जो आपादचूड फूली न समाती थी;
और हवा की मृदुलांगुलियों ने
उसके फूल मेरे जर्जर तन को छुआये थे,
जैसे एक नवजात प्रेम के होंठ।
औ' एक दिन
'कूप कोंट्रेक्टर' की क्रूर कुल्हाडी ने
धरा पर गिरा दिया मुझे;
औ' एक बली गजराज ने
जिसकी सांस घुटती रही अदम्य क्रोध से
दयाहीन होकर खींचा लुढ़काया मुझे
इधर से उधर, उधर से इधर।
एक दिन किसी करुणामय रहस्य की छेनी ने
मेरे दिल के एक टुकड़े की
खूबसूरत खाट बनाई।
किंतु एक भी कोमल सुन्दर कर ने
मुझे छूने की कृपा नहीं की।
एक बार
एक बुज़दिल हड्डी का ढाँचा, अनब्याहा
मेरे ऊपर पड़ा रहा
जंगली भैंसे के सींग-सा।
लेकिन अब तो वे दिन बीत गये।
आज
बारिश की नहलाई एक नवांकुरी
हंस-तूल जैसी
या मधुनीड-सी या खरगोश-सी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

अथवा हिरन-सी
आराम ले रहा है मेरी छाती पर।
आहा! वह एक बाला!
जिसके छूने से
चन्दनवन के मन्दपवन की लहरों से गहरा
वाहित होता वसन्त का आनन्द
मेरे अंतरतम में।
मैं फिर एक बार जी-सा रहा हूँ।
उस तुहिन स्नात किरण वसन शैल पर।
उस ऊँचे वन सदन से
जहाँ मैं झंझावातों से बातें करता
कट कट गिरा मौत की तराई में,
मैं ने सपने में भी नहीं सोचा था-
एक रजत-मेघ का विश्राम घर फिर
होऊँगा।
कितने दुखदर्द भरे मरुस्थलों से होते
आनन्द के अंतिम डेरे हम पाते!

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२. अतिथि न आए!

[श्री० सी. ए. जोसफ की एक अंग्रेजी कविता 'सिंग फॉर नो होस्ट' जो पहले इलसट्रेटड वीकली ऑफ़ इंडिया में प्रकाशित हुई थी, यहाँ हिन्दी में प्रस्तुत है।]

ऐ कौए!
कमबख्त कौए!
बन्द कर तेरा कर्कशालाप!
आ न धमके अतिथि कोई आज!
ना दूध है घर में
गाय गायब
कौन जाने गाय चोरी जाए?
उधर थानेदार हैं अतिव्यस्त
गड़े मुर्दे खड़े करके।
सताए क्या गाय की चोरी उन्हें?
आज कोई अतिथि द्वारे पर न आए।
जल चुका मास का पेंशन।
आज तारीख कौन सी?—दस कि
बारह।
शेष हैं केवल लाटरी;
वह भी काफ़ी दूर है।
खिंच जाए मेरी लाटरी,
तो खुल जाएँ मेरे भाग्य री।

अनुवाद: पी. जी. कामत
दयानन्दम, चेरुमुक्कु
तृशूर-२०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लघुकथा

प्रतिष्ठा

डा० वी. गोविन्द शेणाय

गृहस्थी की सम्पूर्ण गरिमा रेफ्रीजरेटर में ही मानों सिमट गई थी ।

बैंकिंग कम्पनी के क्लर्क ने कम्पनी से ही रुपया उधार लेकर रेफ्रीजरेटर खरीदा और अपने यहाँ बैठक में ही सजाया । यदि सुविधा होती तो वह उसे बाहर बरामदे में ही सजाता । बाजार से सामग्री उधार लाई गई और रेफ्रीजरेटर को समृद्ध बनाया गया । सामग्री अडोस-पडोस में ही नहीं दूर दफ्तरों में भी मुफ्त में बांट दी गई । सभी ने उसकी प्रशंसा की; यहाँ तक कि 'वीमेन्सलीग' की वाइस-चेयरमैन का तत्संबंधी पत्र भी मिला जो परिवार के अल्बम में सुरक्षित रखा गया । जब वाषिंग मशीन आई थी तब भी ऐसा ही हुआ था । परिवार की प्रतिष्ठा का सवाल था । गृहस्थी की सम्पूर्ण गरिमा रेफ्रीजरेटर में ही मानों सिमट गई थी । पडोस में साइकिल मार्ट के मुंशी और उनकी पत्नी में इसी को लेकर गुत्थम-गुत्था हुआ । मुँशीजी पास पैसे न होने के कारण रेफ्रीजरेटर खरीदने के पक्ष में नहीं थे; परन्तु कहते यह थे कि वह बासी माल का गोदाम है । उसी को पत्नी गृहस्थी का एकमात्र शृंगार मानती थी ।

संध्या का वक्त था; सर्द हवा बह रही थी और पति पत्नी पसीने में तर बतर हो बैठक में रेफ्रीजरेटर के सामने चिंतित बैठे थे, यह ऋण कैसे उतरेगा? इतने में बच्चे दोनों स्कूल से लौटे । माँ, बाप को गुमसुम बैठे देख रसोई में गये; फिर रेफ्रीजरेटर को तलाशी ली—आइसक्यूब ही मिले-मात्र बर्फ । मुंशी जी ने खिडकी से झांक कर देखा और देखते ही रहे ।

प्रिंसिपल,
सरकारी आर्ट्स एन्ड साइन्स
कालेज, कालिकट

❀

एशिया मइनर और केरल

कुछ इतिहासकारों का कथन है कि भूमध्य सागर के एक दीप से जाकर एशिया मइनर में जो 'केरियर' और 'तेरमिलाय' वंशज बस गये थे वे हो केरलीय जनता के पूर्वज थे ऐसा एक मत है कि ये लोग केरल से जाकर वहां बसगये थे ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संस्मरण

महादेवी वर्मा के साथ अल्प समय

डा० एन. जी. देवकी

१७ मार्च सन् १९८० सवेरे की बात है। मैं ने फोन नं २१२२ लगाया, फोन उठाया स्वयं महादेवी वर्मा ने ही; हिन्दी साहित्य में छायावाद की एकमात्र जीवित कड़ी। मैं तो स्वभाव से ही संकोचशील हूँ; फिर 'देवीजी', (महादेवी वर्माजी को इलाहाबाद के लोग 'देवीजी कहते हैं।) जो कि हिन्दी की लब्धप्रतिष्ठ कवयित्री हैं उनसे कैसे बात करनी है, प्रत्यक्ष दर्शन के बिना पहले मैं फोन पर बात करूँ तो क्या वे बुरा तो नहीं मानेंगी ………ऐसे-ऐसे विचार मेरे मन में आये। देवीजी बोलने लगी फोन पर 'हलो'…… तो मैं ने उनका अभिवादन किया और अपनी इच्छा प्रकट की— 'मैं केरल से शोध सामग्री संकलनार्थ हिन्दी साहित्य सम्मेलन आयी हूँ लौटने से पहले आपका दर्शन करना चाहती हूँ।' उन्होने ९ बजे का समय दिया। मैं फूली न समायी। बी. ए. और एम. ए. क्लास में देवीजी की कविताएँ और रेखाचित्र पढते समय मेरे मन में लेखिका का प्रत्यक्ष दर्शन करने की उत्कट अभिलाषा थी जो आज पूरी होने जा रही है। मैं ने घड़ी देखी। ८ बज चुके थे। मैं जल्दी तैयार हो गई। हिन्दी साहित्य सम्मेलन से रिक्शा करके अशोकनगर में देवीजी की कोठी पहुँच गयी।

देवीजी की कोठी मुझे केरल के मण्णारशाला (हरिप्पाट के निकट स्थित सर्प मन्दिर) की याद दिला रही थी। कोठी कुछ पुरानी मालूम पड़ती थी और उसके सामने बडे बडे पेड़ हैं। गेइट खोल कर मैं कोठी के बरामदे तक पहुंची तो हिन्दुस्तानी अकादमी, प्रयाग से निकलने वाली त्रैमासिक पत्रिका "हिन्दुस्तानी" के संपादक श्री० रत्नाकर पांडेयजी ने मुझे बिठाया और अन्दर जाकर देवीजी को मेरी उपस्थिति की सूचना दी। पांडेयजी बाहर आकर बोले: "देवीजी लेटी हैं … दवा खाके आराम कर रही हैं, आधे घण्टे में आपसे मिलेंगी।"

इतने में करीब चौदह-पन्द्रह साल की एक लडकी कमरे से बाहर आयी और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरे पास बैठकर कुशल पूछने लगी। उस लड़की का नाम मैं भूल गयी। उस लड़की ने मुझको बताया कि देवीजी उसे अपनी बेटी मानती हैं। मैं ने उस लड़की से देवीजी के स्वास्थ्य और पढ़ाई-लिखाई के सम्बन्ध में पूछा तो वह बोली—"आजकल उनका स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता, अवस्था ७३ वर्ष की है। किताबें पढ़ती रहती हैं और मौलिक रचनाएँ बहुत कम लिखती हैं। ...."ऐसी-ऐसी बातें हो रही थी कि इतने में देवीजी बाहर आयीं। किताबों के चित्रों में सुपरिचित शक्ल। सफेद खद्दर की साड़ी जिसमें बारीक डिज़ाइन भी थी। दाहिने हाथ में चाँदी का एक कड़ा। और कोई आभूषण नहीं।

देवीजी ने मेरा अभिवादन स्वीकार किया, फिर मेरे पास ही एक कुर्सी पर बैठी, आपादमस्तक मुझे देख रहीं थीं... पता नहीं मेरे बारे में क्या इम्प्रेशन मिला होगा। मैं देवीजी से बहुत कुछ पूछना चाहती थी किन्तु उन्हें समीप पाकर मेरे मुँह से एक भी शब्द नहीं निकल रहा था। जब वे मुझसे शिष्टाचार के प्रश्न करने लगीं तभी मुझ में उनसे कुछ पूछने का साहस हुआ। मैं ने कई लोगों से यह सुना था कि अतिथियों से मिलते समय देवीजी बहुत देर तक हँसती रहती हैं और कोई भी उस हँसी का अन्त नहीं पा सकता लेकिन मेरे साथ ऐसा नहीं हुआ ......मेरा अनुमान है कि यह वयःक्रम का गुणविशेष होगा, अब उनकी प्रौढ़ावस्था है।

"कठपुतलियों की तरह विविध प्रकार के वेशाभूषणों से सजी हुई तुम्हारे अन्दर जान नहीं है क्या ? क्या तुम्हारा शरीर प्रदर्शनी की वस्तु मात्र है ?"

देवीजी ने मुझसे प्रधानतः स्त्रियों की सामाजिक रीति-रिवाजों एवं वेशाभूषणों के सम्बन्ध में अपना स्पष्ट विचार व्यक्त किया। एक घण्टा भर वे मुझसे वार्तालाप कर रही थीं। उनके अनुसार आजकल लड़कियाँ फैशन के पीछे पागल रहती हैं, अनावश्यक रूप से वेशाभूषणों के लिए धन का अपव्यय करती हैं। बोलते-बोलते उन्होंने स्त्रियों के प्रति अपना आक्रोश यों व्यक्त किया:—"कठपुतलियों की तरह विविध प्रकार के वेशाभूषणों से सजी हुई तुम्हारे अन्दर जान नहीं है क्या ? क्या तुम्हारा शरीर प्रदर्शनी की वस्तु मात्र है ?" यही नहीं आजकल शादी के नाम पर जो प्रयोजनरहित आडम्बर दिखाते हैं उसके प्रति भी उनके मन में विरोध है, शादी तो एक पवित्र कार्य है, वहाँ बाह्य सजावट की क्या जरूरत है ? और कहते हैं हमारा भारत गरीब देश है। एक ओर बाह्याडम्बर और फैशन के लिए धन का अपव्यय होता जा रहा है और दूसरी ओर प्लेटफार्म और सड़कों पर एक वक्त के खाने के लिए तरसते हुए भूखे गरीब लोग। स्वतंत्र भारत क्यों इतना पिछड़ गया ? धन के सदुपयोग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के लिए पंचवर्षीय योजनाएँ हैं, मुख्यतः प्रजातंत्रीय शासन प्रणाली है। फिर भी स्वतंत्र भारत की स्थिति इतनी शोचनीय है।

बातचीत के सिलसिले में देवीजी ने बताया कि उत्तर भारतीयों की अपेक्षा दक्षिण भारत के लोगों ने उन्हें अधिक सम्मान दिया है। किन्तु एक बात उन्हें खटकती है—वह है दक्षिण की विशेषतः तमिलनाडु की जाति व्यवस्था। छुआछूत की पुरानी मान्यताओं से उन्हें बेहद घृणा है। जाति के नाम पर मनुष्य-मनुष्य में भेद कल्पित करना अत्यन्त बुरी बात है।

इस प्रकार बातचीत हो रही थी, मुझे लगा कि देवीजी थकावट महसूस कर रही है देवीजी ने अपना 'ओटोग्राफ' मुझे दिया जो इस प्रकार है—

रात के इस सघन अँधेरे से
जूझता सूर्य नहीं जूझता रहा दीपक।
कौन सी रश्मि कब हुई कम्पित,
कौन आँधी यहाँ पहुँच पाई,
कौन ठहरा सका उसे पल भर,
कौन सी फूँक कब बुझा पाई,
ज्योतिधन सूर्य है गगन ही का
पर तुम्हारा सृजन यही दीपक!

१७–३–८०

"महादेवी"

अन्त में एक प्रश्न बाकी रहा—मैं ने देवीजी से पूछा—आप अपनी कविताओं के साथ चित्र क्यों खींचती हैं ? उनका उत्तर था; "जब कविता द्वारा भाव पूर्णतः व्यक्त नहीं किया जा सकता तो उसे स्पष्ट करने के लिए प्रतीक के रूप में चित्र रचना आवश्यक हो जाती है।"

देवीजी का अमोघ आशीर्वाद पाकर मैं लौट रही थी। बहुत देर तक वहीं खडी होकर देवीजी मेरी ओर देख रही थी........।

प्राचीन केरल में सत्याग्रह

राजा की अनीति के विरोध में सत्याग्रह करने की रीति प्राचीन केरल में प्रचलित थी। कुटुंबों की समितियाँ इस का आयोजन करती थी। यह एक प्रकार का अनशन सत्याग्रह था जो राजा को प्रायश्चित्त करने केलिए पेरित करता था। ऐसा एक सत्याग्रह सन १७२१ में तिरुवनन्तपुरम में श्री पद्मनाभ स्वामी मंदिर के पश्चिमी फाटक पर आयोजित हुआ था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लुढ़कती किरणें

वी० के० एस० नम्पूतिरि

स्वर्ण किरणें झाँकती हैं
बदलियों के मुखौटों से
चुभ जगाती नव सुमों को
चुभ रहो उन कपोलों पर
चपल उनके कल-दृगों पर
सजग उनकी रग-रगों पर
और उनमें गुदगुदी का
राग फूँकती, पुलक भरती
और चूसती मधुकणों को
फिर लुढ़कती जा रही हैं
अपर फूलों, दलों को भी
चुभ जगाने, जगाकर फिर
थप-थपाने, लुभाने को
और चूसने मधुकणों को
औ' तपाते छोडने को ।
तीर सी बन बिंध रही हैं
नवल, सुन्दर, सहज-सुषमा-
रस-रसाल से मृदु दलों को
जगाती हैं, चूमती हैं
रस-कणों को चूसती, फिर
मस्त होकर उन दलों पर
उपेक्षा की लहर की बुँद
छिडकती, फिर लुढ़कती हैं ।
नहीं रुकतीं कहीं भी वे,
नहीं थकतीं किसी भी दम !
स्वर्ण किरणें खिल रही हैं !

साहित्याचार्य महा विद्यालय
तिरुवनन्तपुरम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्व हिन्दी सम्मेलन विशेषांक

दिसंबर १९८२ में नयी दिल्ली में तृतीय विश्व हिन्दी सम्मेलन आयोजित हो रहा है। इस अवसर पर 'केरल ज्योति' का एक विश्व हिन्दी सम्मेलन विशेषांक निकलेगा।

लेखक बन्धुओं से अनुरोध है कि कृपया इस विशेषांक के लिए अपनी बहुमूल्य रचनायें भेज दें। 'वसुधैव कुटुंबकम' का आदर्श सामने रखकर लिखें तो, अवसरोचित रहेगा। विविध भाषाओं से हिन्दी में हुए अनुवाद पर विशेष लेख भी भेजियेगा।

संपादक,
'केरल ज्योति'
तिरुवनन्तपुरम-६९५ ०१४
केरल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुगम हिन्दी परीक्षाओं में सर्वाधिक परीक्षार्थियों को बिठाने के पुरस्कार केरल के शिक्षा मंत्री श्री० टी. एम. जेकब प्रदान कर रहे हैं। 1980 और 1981 के प्रथम स्थान की ट्रॉफी माउण्ट कार्मल हाई स्कूल, कोट्टयम (ऊपर) और 1981 और 1982 के द्वितीय स्थान की ट्रॉफी विमल हृदय गर्ल्स हाई स्कूल, कोल्लम (नीचे) को मिली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Reg. No. KL/(S)/29
November 1982

Keral Jyoti

Vol. XVII-No.
Price : Re. 1.00

A monthly Publication of Kerala Hindi Prachar Sabha

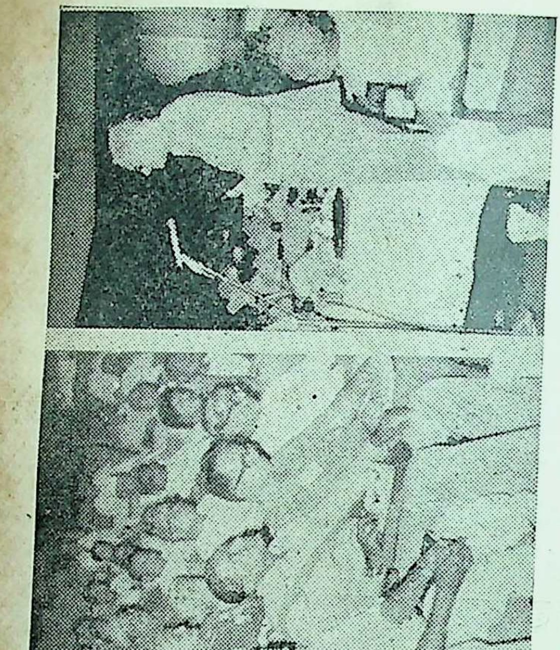

९, १०—सितंबर १९८२ में नयी दिल्ली में आयोजित हिन्दी प्रचार हीरक जयन्ती समारोह । उद्घाटन भाषण दे रहे हैं श्री० जयनारायण तिवारी, (सचिव, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार) प्रथम पंक्ति में बैठे हैं केरल हिन्दी प्रचार सभा के प्रतिनिधि (बायें से) श्री० के. एम. सामुवेल, श्री० पी. एस. विलसन और श्री० के. पी. के. पिषारटी ।

केरल हिन्दी प्रचार सभा, तिरुवनन्तपुरम–६९५ ०१४ केलिए श्री० एम. के. वेलायुधन नायर द्वारा प्रकाशित ।
मुद्रक: राष्ट्रवाणी मुद्रणालय, केरल हिन्दी प्रचार सभा, तिरुवनन्तपुरम–१४. सम्पादक: के. जी. बालकृष्ण पिल्लै ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केरल ज्योति

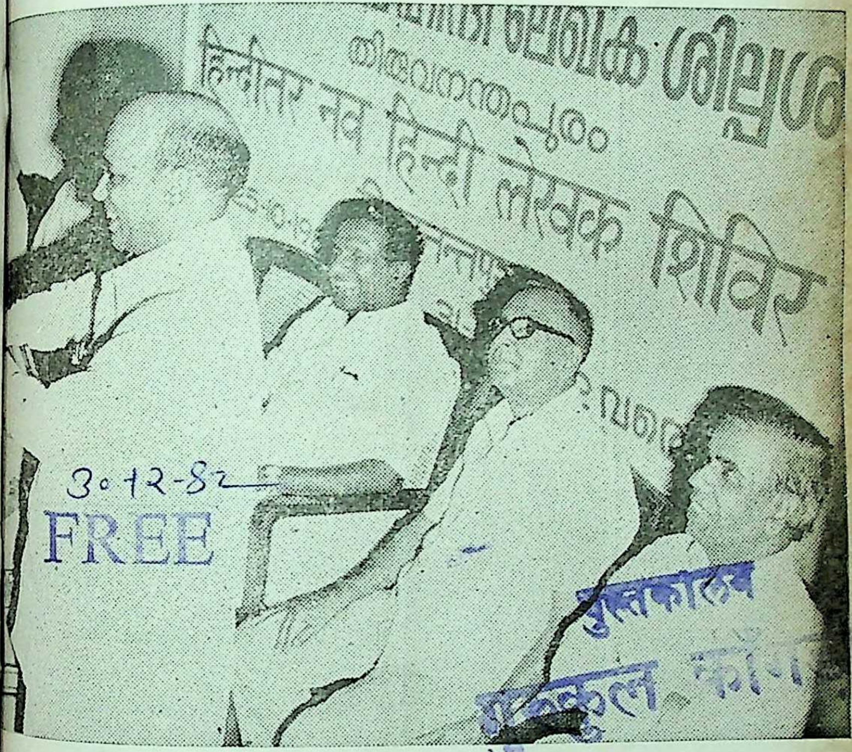

हिन्दीतर नव हिन्दी लेखक शिविर के उद्घाटन समारोह में अध्यक्षीय भाषण देते हुए केरल के स्थानीय प्रशासन मंत्री श्री० सी. एम. सुन्दरम ।

बैठे हैं:— डा० ए. रामचन्द्र देव, श्री० सी. वी. पद्मराजन (सामुदायिक विकास मंत्री, केरल), डा० पी. के. नारायण पिल्लै एवं डा० एन. ई. विश्वनाथ अय्यर ।

केरल हिन्दी प्रचार सभा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केरल ज्योति

* प्रधान संपादक
प्रो० पी. जे. जोसफ़
* संपादक
श्री० के. जी. बालकृष्ण पिल्लै
* सह संपादक
श्री० आर. सुकुमारन नायर

* संपादक मण्डल
श्री० वी. के. गोपालन नायर
प्रो० एम. जनार्द्दनन पिल्लै
श्री० के. वी. कृष्णनकुट्टी
श्री० एम. के. वेलायुधन नायर

❀

* विज्ञापन दर

		मासिक		वार्षिक	
आवरण पृष्ठ ४	रु.	५००	००	५०००	००
आवरण पृष्ठ २ एवं ३	रु.	४००	००	४०००	००
साधारण पृष्ठ पूरा	रु.	३००	००	३०००	००
साधारण पृष्ठ ½	रु.	१७५	००	१७५०	००
साधारण पृष्ठ ¼	रु.	१००	००	१०००	००

❀

तार:–"जय हिन्दी"
फोन: ६१३७८

* पत्र व्यवहार का पता।
मंत्री,
केरल हिन्दी प्रचार सभा
तिरुवनन्तपुरम–६९५ ०१४
केरल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुष्प: १७
दल : ६
दिसंबर १९८२

केरल ज्योति

सांस्कृतिक जागरण की मासिक पत्रिका

संपादकीय

इज्जत का सवाल

एक बार भारत के कोई उच्च अधिकारी मंगोलिया गये। वहाँ किसी सार्वजनिक सम्मेलन में उन्हें बोलना था। सम्मेलत आरंभ हुआ तो उक्त अधिकारी महोदय ने कोट की जेब से अपना भाषण लिखा कागज निकाला और बडी शान से भाषण देने लगे। प्रथम वाक्य पूरा किया तो निकट खडी सुन्दरी द्विभाषिणी ने सकुचाते हुए बताया—

"श्रीमानजी, आप अंग्रेज़ी में कहें तो मैं आपके भाषण का अनुवाद नहीं कर पाऊँगी। मैं तो अंग्रेजी नहीं जानती। सिर्फ मंगोलियन भाषा और हिन्दी जानती हूँ। यदि आप हिन्दी में बोलें तो आप के भाषण का अनुवाद मंगोलियन भाषा में कर सुना सकूँगी। वैसे आप भारत से आये हैं और माना जाता है कि भारत की भाषा हिन्दी है, अंग्रेजी नहीं।"

श्रोताओं में कानाफूसी होने लगी। लगा कि अब भाषण नहीं होगा।

सौभाग्यवश हमारे अधिकारी महोदय को हिन्दी भी आती थी। उन्होंने कागज जेब में रखते हुए सुन्दरी द्विभाषिणी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस अंक में

अखिल भारतीय नव लेखक शिविर — 3

राष्ट्रभाषा प्रचार हीरक जयन्ती समारोह — 12

कर्णभूषणम् — 25
मूल: महाकवि उल्लूर
अनुवाद: कवियूर शिवराम अय्यर

विश्व में हिन्दी का अध्ययन: आस्ट्रेलियन सन्दर्भ — 28
डा० विश्वनाथ शुक्ल

आओ, जशन मनावें — 31
प्रो० टी. के. भास्कर वर्मा

श्री० कटम्मनिट्टा का अभिनन्दन — 32

केरल — 34
सुभाष शर्मा

पाठकों के पत्र — 37

से कहा – अच्छा मदाम, मैं हिन्दी
बोलूँगा। मुझे हिन्दी भी आती

इस रोचक घटना का वर्णन करते
केन्द्र शिक्षा एवं संस्कृति विभाग के
मंत्री श्री० प्रेम खण्डु थुंगन ने बताया
देश के विविध प्रान्तों की संपर्क भाषा
रूप में ही नहीं, विश्व में भारत
राष्ट्रभाषा के रूप में भी हिन्दी का
स्थान है। विदेशों में भारत की
रखने के लिए यह आवश्यक है कि
प्रतिनिधि वहाँ हिन्दी का व्यवहार

१९८१–८२ में केरल हिन्दी
सभा द्वारा आयोजित विविध परीक्षा
में उन्नत स्थान पाये विद्यार्थियों
सभा के सर्वश्रेष्ठ हिन्दी प्रचारकों
पुरस्कृत करने के लिए तिरुवनन्तपुरम्
२३–१०–१९८२ को आयोजित सम्मे
में भाषण दे रहे थे श्री० थुंगन।
है तिरंगा झंडा जैसे हमारी इज्जत
निशानी है वैसे ही हिन्दी भी हमारी
इज्जत की निशानी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अखिल भारतीय नवलेखक शिविर

हिन्दीतर प्रान्तों के नव हिन्दी लेखकों का एक अखिल भारतीय शिविर २५-१०-१९८२ से ३१-१०-१९८२ तक केरल हिन्दी प्रचार सभा, तिरुवनन्तपुरम में आयोजित हुआ। केन्द्र शिक्षा तथा संस्कृति मंत्रालय की ओर से आयोजित इस शिविर में विविध हिन्दीतर प्रान्तों से २५ नव लेखकों ने भाग लिया।

विख्यात विद्वान डा० जे. एल. रेड्डी (दिल्ली विश्वविद्यालय), डा० कृष्णकुमार (गढ़वाल विश्वविद्यालय), श्री० बालशौरी रेड्डी और डा० के. पद्मावती ने शिविर की चर्चाओं का मार्गदर्शन किया।

उद्घाटन समारोह

उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता करते हुए केरल के स्थानीय प्रशासन मंत्री श्री० सी. एम. सुन्दरम ने बताया कि भारत के राष्ट्रीय हित को ध्यान में रख कर ही गाँधीजी ने भारत के हिन्दीतर प्रान्तों में हिन्दी का प्रचार आरंभ किया था। आप ने भाषा की उस अद्भुत शक्ति पर प्रकाश डाला जो प्रेम और एकता की भावना को बढ़ा सकती है। जनता को जाग्रत करने में साहित्य की जो शक्ति है उस पर भी आपने लेखकों का ध्यान आकृष्ट किया। यह विशेष उल्लेखनीय है कि आपने अपना भाषण हिन्दी में दिया। आपने इस बात पर गर्व अनुभव किया कि वर्षों पहले आपने पालघाट की गली गली में घूम कर 'हरिजन' के हिन्दी अंक बेचे थे।

समारोह का उद्घाटन करते हुए केरल के सामुदायिक विकास मंत्री श्री० सी वी. पद्मराजन ने बताया कि भारत की राष्ट्रीय एकता को सुदृढ करने केलिए एक संपर्क भाषा की जरूरत है। हिन्दी ही भारत की संपर्क भाषा बन सकती है। अतः हिन्दी सीखना हर भारतीय का कर्तव्य है।

आपने बताया कि केरलीय जनता सभी भाषाओं, धर्मों और संस्कृतियों के प्रति आदर का भाव प्रकट करता रहा है और हिन्दी के प्रचार में केरल हिन्दीतर प्रान्तों में आगे है।

केरल की जनता और सरकार की ओर से आपने शिविर के प्रतिभागियों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दीतर नव हिन्दी लेखक शिविर का उद्घाटन करते हुए
श्री० सी० वी० पद्मराजन (सामुदायिक विकास मंत्री, केरल) बोल रहे हैं।

का स्वागत किया और आग्रह किया कि विविध भाषाओं, साहित्यों और संस्कृतियों का निकट से समझने में यह शिविर सहायक हो। केरल में हिन्दी का प्रचार करने केलिए केरल हिन्दी प्रचार सभा द्वारा की जानेवाली अमूल्य सेवाओं की आपने प्रशंसा की।

केरल हिन्दी प्रचार सभा के मंत्री श्री० एम. के. वेलायुधन नायर ने स्वागत भाषण में हिन्दीतर प्रान्तों के हिन्दी लेखकों के विशेष दायित्वों पर प्रकाश डालते हुए बताया कि हिन्दीतर भाषाओं की शैली और पदावली से हिन्दी भाषा को विकसित करने तथा मौलिक एवं अनूदित हिन्दी साहित्य द्वारा हिन्दी को भारत की सामासिक संस्कृति की वाणी बनाने का कार्य हिन्दीतर प्रान्तों के हिन्दी लेखकों द्वारा ही संभव है।

केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय के सहायक शिक्षा अधिकारी श्री० के. आर. करण ने शिविर के लक्ष्यों पर प्रकाश डाला और आशा व्यक्त की कि ऐसे शिविरों के अनुभव हिन्दीतर प्रान्त के हिन्दी लेखकों में हिन्दी में उत्तम रचनाएँ पेश करने की क्षमता उत्पन्न करेंगे।

सम्मेलन में भाषण देते हुए डा० एन. ई. विश्वनाथ अय्यर (भूतपूर्व अध्यक्ष-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रो० के० आर० करण

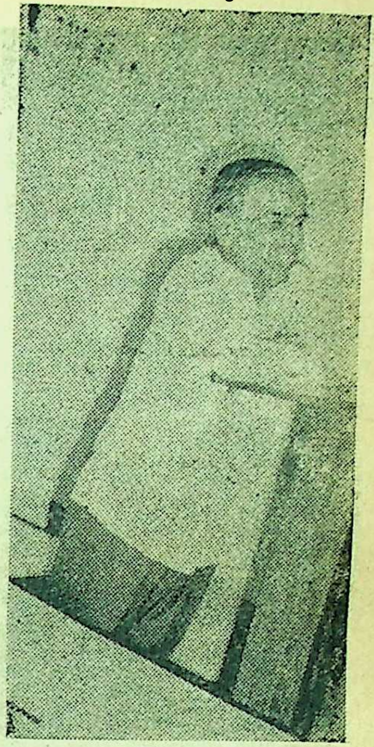

डा० एन० ई० विश्वनाथ अय्यर

हिन्दी विभाग, कोच्चिन विश्वविद्यालय) और डा० ए. रामचन्द्र देव (प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, कोचिन विश्वविद्यालय) ने उन समस्याओं पर विचार किया जो हिन्दीतर प्रान्तों के हिन्दी लेखकों की हिन्दी रचनाओं के प्रकाशन में बाधक होती हैं। न हिन्दी प्रान्तों के प्रमुख प्रकाशक और पत्र-पत्रिकायें उन्हें प्रोत्साहित करती है, न हिन्दीतर प्रान्तों में पर्याप्त मात्रा में हिन्दी प्रकाशक हैं।

केरल हिन्दी प्रचार सभा के कोषाध्यक्ष प्रो० एम. जनार्द्दनन पिल्लै ने कृतज्ञता प्रकाशित की।

केरल के स्वास्थ्य एवं पर्यटन विभाग के मंत्री श्री० के. जी. आर. कर्ता, केरल के शिक्षा मंत्री श्री० टी. एम. जेकब और केरल के सिंचाई मंत्री श्री० एम. पी. गंगाधरन ने शिविर के प्रतिभागियों से संवाद किया।

श्री० के. जी. आर. कर्ता ने भारत की भावात्मक एकता केलिए एक संपर्क भाषा की सख्त ज़रूरत पर ज़ोर दिया और बताया कि हिन्दी ही जो कि भारत के अधिकांश लोगों की भाषा है, भारत की संपर्क भाषा बनने की अधिकारिणी है। आप ने आह्वान किया हिन्दी का प्रचार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डा० ए० रामचन्द्र देव

और पोषण करने में हिन्दीतर प्रान्त के लेखक धीरता पूर्वक कदम बढ़ायें। केरल के हिन्दी लेखकों से आप ने अनुरोध किया कि केरल की प्राकृतिक रमणीयता और सांस्कृतिक विशेषताओं से वे हिन्दी को अलंकृत करें।

श्री० टी. एम. जेकब ने आश्वासन दिया कि केरल का जो नया शिक्षा फोर्मुला बनेगा उस में हिन्दी को समुचित स्थान मिलेगा। आपने कहा कि केरल हमेशा भाषाओं का स्वागत करता रहा है और हिन्दी केरलीय जनता द्वारा अपनायी जा चुकी है। आप ने कहा कि

हिन्दीतर नव हिन्दी लेखक शिविर के प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए श्री० के० जी० आर० कर्ता (मंत्री, स्वास्थ्य एवं पर्यटन विभाग, केरल) बोल रहे हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री० टी० एम० जेकब

राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार में योग देना हर भारतीय का कर्तव्य है। केन्द्र सरकार से आप ने अनुरोध किया कि केरल में हिन्दी का प्रचार करने केलिए स्तुत्यर्ह सेवा कर रहा केरल हिन्दी प्रचार सभा को सब सरकार की सहायतायें देकर प्रोत्साहित करे।

केरल के सिंचाई विभाग के मंत्री श्री० एम. पी गंगाधरन ने कहा कि भारतीयता ही वह शक्ति है जो भारतीयों का एक सूत्र में जोडती है और हमारा यह कर्तव्य है कि हिन्दी द्वारा भारतीयता को विकसित करें। हिन्दी की विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए आपने बताया कि हिन्दी एक महान परंपरा का प्रतिनिधित्व करती है। आपने

श्री० एम० पी० गंगाधरन नव लेखकों से बोल रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

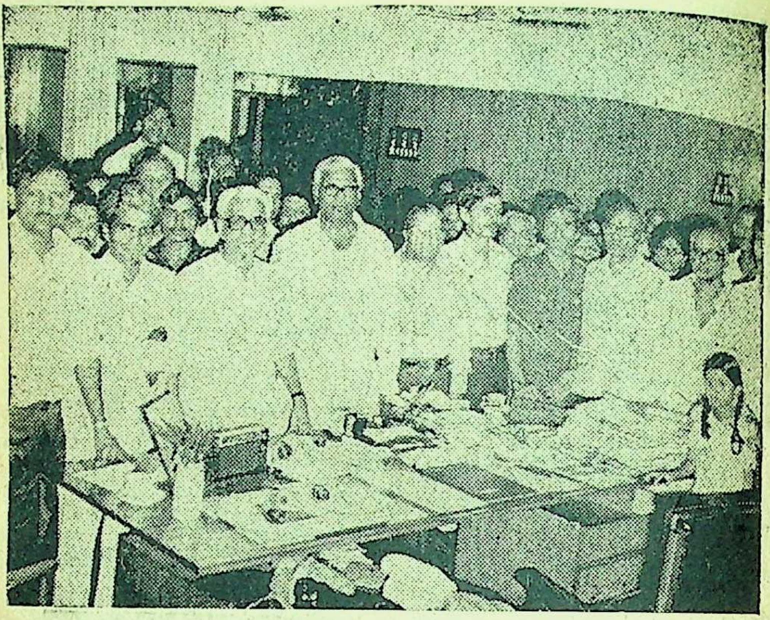

हिन्दीतर नव हिन्दी लेखक शिविर के प्रतिभागी एवं मार्गदर्शक साहित्यकार केरल के मुख्य मंत्री श्री० के० करुणाकरन के साथ

लेखकों से आह्वान किया कि "लोका समस्ता सुखिनो भवन्तु' वाले आदर्श को सामने रख कर सब प्रकार के अनाचारों, अत्याचारों और अनीतियों का उन्मूलन करने एवं मानवमात्र के उन्नयन केलिए धीरतापूर्वक अपनी तूलिका चलायें।

मुख्य मंत्री के कार्यालय में स्वागत

केरल के मुख्य मंत्री श्री० के.करुणाकरन ने शिविर के प्रतिभागियों का अपने कर्यालय में स्वागत किया। लेखकोंको संबाधित करते हुए आप ने कहा कि हन्दीतर प्रान्तोंके लेखक हिन्दी केविकास में अपना योगदान दें। आपने चेतावनी दी कि यदि हिन्दीतर प्रान्त की जनता हिन्दी में वांछित दक्षता प्राप्त करने केलिए उत्साह पूर्वक आगे नहीं आयेंगे तो सम्भव है कई क्षेत्रों में वे पिछड जायेंगे। आप ने इस बात पर संतोष प्रकट किया कि हिन्दी के प्रचार में केरल हिन्दीतर प्रान्तों में आगे है।

नगर निगम में स्वागत

तिरुवनन्तपुरम नगर निगम में शिविर के प्रतिभागियों का हार्दिक स्वागत किया गया। प्रतिभागियों का स्वागतकरते हुए नगर निगमाध्यक्ष ने आग्रह किया कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

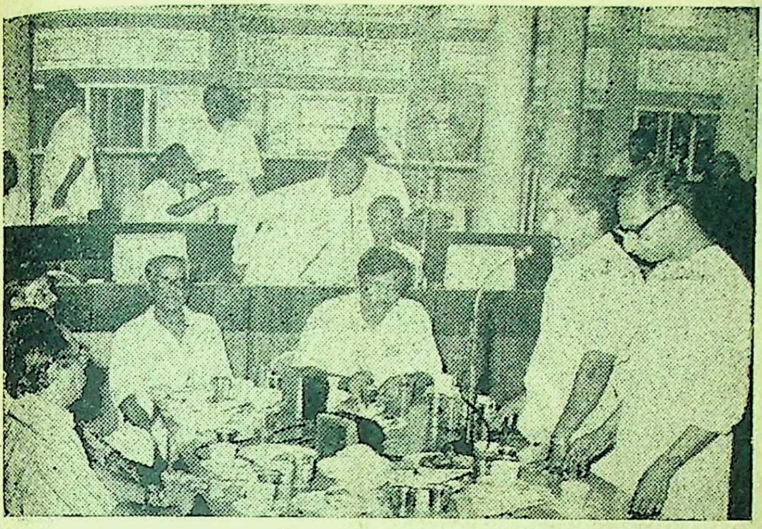

तिरुवनन्तपुरम नगर निगम की ओर से प्रतिभागियों का हार्दिक स्वागत हुआ। नगर निगम के अध्यक्ष श्री० के० प्रभाकरन नायर प्रतिभागियों से बोल रहे हैं। पास खडे हैं 'केरल ज्योति' मासिक पत्रिका के संपादक श्री० के० जी० बालकृष्ण पिल्लै।

हिन्दीतर प्रान्तों के लेखक अपने अपने प्रान्तीय रीति-रिवाज, रहन-सहन, आचार-विचार आदि के परिप्रेक्ष्य में हिन्दी में मौलिक साहित्य सृजन करें ताकि हिन्दी का साहित्य सही माने में भारतीय जीवन को प्रतिबिंबित कर पाये।

कानफेड में स्वागत

केरल अनौपचारिक विद्याभ्यास विकसन समिति (कानफेड) ने साक्षरता

साक्षरता भवन, तिरुवनन्तपुरम में नव हिन्दी लेखकों का स्वागत।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समापन समारोह में अध्यक्षीय भाषण देते हुए तिरुवनन्तपुरम नगर निगम के अध्यक्ष श्री० के० प्रभाकरन नायर । बैठे हैं: श्री० एस० लक्ष्मणन पिल्लै (उपाध्यक्ष, नगर निगम, तिरुवनन्तपुरम), श्री० वासशौरी रेड्डी, डा० जे० एल० रेड्डी, डा० कृष्णकुमार आदि ।

भवन में शिविर के प्रतिभागियों का स्वागत किया । अनौपचारिक शिक्षा के प्रमुख कार्यकर्ता डा० शूरनाट्टु कुंजन पिल्लै, श्री० पी. एन. पणिक्कर और डा० के. शिवदासन पिल्लै ने प्रतिभागियों से अनुरोध किया कि वे अपने अपने प्रान्त में अनौपचारिक शिक्षा को भी बढावा देने में सहायता करें । अनौपचारिक शिक्षा की उपयोगिता पर कानफेड द्वारा निर्मित फिल्म भी प्रदर्शित हुई ।

कोवलम, कन्याकुमारी, नेय्यार बांध

केरल सरकार के सहयोग से प्रतियोगियों को कोवलम, कन्याकुमारी और नेय्यार बांध को प्राकृतिक सुषमा का आनन्द लूटने का अवसर भी मिला। कन्याकुमारी का सूर्यास्त दर्शन, कोवलम में पर्यटकों की जलक्रीडा का अवलोकन और नेय्यार बांध में जलविहार और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वन्यजीवन दर्शन प्रतिभागियों को बहुत पसन्द आया ।

श्रीपद्मनाभस्वामी मंदिर की आराट्टु की शोभा यात्रा, तिरुवनन्तपुरम अजायब घर, वनस्पति उद्यान, श्री चित्रा आर्ट ग्यालरी आदि भी देखने का अवसर प्रतिभागियों को मिला ।

समापन समारोह की अध्यक्षता करते हुए तिरुवनन्तपुरम नगर निगमाध्यक्ष श्री० के प्रभाकरन नायर ने बताया कि

डा० एम० मालिक मोहम्मद

कालेजीय स्तर पर भी राष्ट्रभाषा हिन्दी का अध्ययन अनिवार्य किया जाना चाहिए ।

डा० एम. मालिक मोहम्दम (अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, कालिकट विश्वविद्यालय) डा० जे. एल. रेड्डी, डा० कृष्णकुमार श्री० बालशौरी रेड्डी और डा० के. पद्मावती ने शिविर की उपलब्धियों का अवलोकन किया ।

केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय के सहायक शिक्षा अधिकारी श्री० के. आर. करण ने शिविर के सम्यक संचालन पर संतोष और संतृप्ति प्रकट की । केरल हिन्दी प्रचार सभा के उपाध्यक्ष श्री० के. पी. अलिकुंजु ने इस शिविर के संयोजकों के प्रति, विशेष कर केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय और शिक्षा एवं संस्कृति मंत्रालय के प्रति हार्दिक कृतज्ञता प्रकट की और आग्रह किया कि शिक्षा मंत्रालय और केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय के सहयोग से ऐसी अनेकों महत्वपूर्ण योजनायें कार्यान्वित करने का अवसर केरल हिन्दी प्रचार सभा को मिलता रहे ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषा प्रचार हीरक जयन्ती समारोह

अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ, नई दिल्ली के तत्वावधान में राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार की हीरक जयन्ती का समारोह दिनांक ९, १० सितम्बर, १९८२ को नई दिल्ली के मावलंकर हॉल में सम्पन्न किया गया। हिन्दी का प्रचार-प्रसार, प्रशिक्षण और परीक्षण करने वाली हिन्दी सेवी संस्थाओं के प्रतिनिधियों द्वारा राष्ट्रभाषा प्रचार के ६० वर्षों के व्यतीत होने के उपलक्ष में यह समारोह आयोजित किया गया। देश में गत ६० वर्षों से अधिक समय से हिन्दी का राष्ट्रभाषा के नाते प्रचार करने के लिए देश और हर प्रदेश की आवश्यकता और अनुकूलता के अनुसार हिन्दी संस्थाएँ स्थापित हुई और उन्होंने जनता में राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रति आस्था और अनुकूलता बढाने में महत्वपूर्ण कार्य किया है और आज भी कर रही हैं। संस्था संघ के निर्णय के अनुसार संघ की सदस्य संस्थाओं ने अपने-अपने क्षेत्र में राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार की हीरक जयन्ती का समारोह सम्पन्न किया। संघ तथा संघ की सदस्य संस्थाओं ने अखिल भारतीय स्तर पर दिल्ली में समारोह आयोजित करने का निश्चय किया था जिसके अनुसार यह कार्यक्रम दिनांक ९, १० सितम्बर, १९८२ को आयोजित हुआ।

समारोह में सारे देश से १२० प्रतिनिधियों ने भाग लिया था। संस्थाओं के अतिरिक्त भाषा संगठनों तथा विभिन्न विश्व विद्यालयों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। अखिल भारतीय स्तर पर स्वैच्छिक हिन्दी संस्थाओं का यह पहला सम्मेलन था।

उद्घाटन समारोह

समारोह का उद्घाटन ९ सितम्बर, १९८२ को शाम ५ बजे मावलंकर भवन, रफी मार्ग, नई दिल्ली में हुआ। काश्मीर के मुख्यमंत्री, शेख अब्दुल्ला के आकस्मिक निधन के कारण, प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी उद्घाटन समारोह में उपस्थित नहीं हो सकी। समारोह का उद्घाटन गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग के सचिव एवं भारत सरकार के हिन्दी सलाहकार, श्री० जयनारायण तिवारी ने किया।

समारोह जानकी देवी महाविद्यालय की छात्राओं की सरस्वती वन्दना (वीणा वादिनी वर दे) से प्रारम्भ हुआ। समारोह की अध्यक्षता संघ के अध्यक्ष, श्री० गंगाशरण सिंह ने की। मंच पर वयोवृद्ध हिन्दी सेवी श्री० एम. एम. जोशी, महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, पूना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के अध्यक्ष, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के सचिव, श्री० शंकर राव लोंढे तथा गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद के श्री० गिरिराज किशोर उपस्थित थे। संघ के सचिव, श्री० रामलाल पारीख ने उपस्थित मुख्य अतिथि तथा भारत के विभिन्न प्रदेशों से आये प्रतिनिधियों का हार्दिक स्वागत किया।

स्मारिका का प्रकाशन

राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार की हीरक जयन्ती के अवसर पर संघ की ओर से एक स्मारिका 'राष्ट्रभाषा हिन्दी: प्रचार, प्रयोग, प्रगति' प्रकाशित की गई। स्मारिका की सामग्री चार भागों में विभाजित है। पहले भाग में संघ तथा संघ की सदस्य संस्थाओं का परिचय है। दूसरे भाग में भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों/विभागों में हिन्दी की स्थिति, तीसरे भाग में हिन्दी भाषी राज्यों में प्रशासनिक स्तर पर हिन्दी की स्थिति तथा चौथे भाग में हिन्दी भाषी प्रदेशों में वहाँ की प्रादेशिक भाषाओं की प्रशासनिक स्तर पर स्थिति का परिचय दिया गया है। स्मारिका का प्रमोचन श्री० जय नारायण तिवारी ने किया।

अभी दिल्ली दूर है

श्री० जय नारायण तिवारी ने अपने उद्घाटन भाषण में कहा: जैसे ही हमारे संविधान में हिन्दी स्वीकृत हो गई, लोगों ने समझ लिया कि हिन्दी के बारे में हमें कुछ नहीं करना चाहिए, वह अपने आप आ जायेगी। राजभाषा के पद पर सन् १९६५ तक हिन्दी अपने आप आरूढ़ हो जायेगी यह बात सबके मन में थी। सन् १९६४ में याने एक वर्ष पूर्व कुछ लोगों की आँखें खुलीं तो पाया कि अभी दिल्ली दूर है। पाया यह गया कि शिक्षा के क्षेत्र में हिन्दी को उचित स्थान दिलाने का कार्य अब भी बाकी है। देश में सम्पर्क भाषा के रूप में हिन्दी को व्यवहार में लाने के लिए पन्द्रह वर्षों की अवधि पर्याप्त मानी गई थी। पर अब आ कर यह अवधि अपर्याप्त सिद्ध हुई। क्यों कि मंजिल तक पहुँचने के लिए क्या-क्या करना होगा इस दिशा में गहराई से नहीं सोचा गया। सन् १९५० से १९६४ के १५ वर्षों में इस दिशा में कदम उठाने की जरूरत थी। इसलिए पन्द्रह वर्ष की अवधि रखी गई थी। जब प्रयास और प्रचार अपर्याप्त सिद्ध हुए तब सोचा यह गया कि सरकार जो कुछ करे या न करे जनता को एक जगह मिलकर इस सम्बन्ध में योजनाएँ बनानी चाहिए। इस दिशा में आगे बढ़ने के लिए अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ की स्थापना की गई। समस्त हिन्दी स्वैच्छिक संस्थाओं को एक सूत्र में पिरोकर संघ के अध्यक्ष, श्री० गंगाशरण सिंह जी ने अत्यंत स्तुत्य कार्य किया है। इस प्रशंसनीय कार्य का आज की हीरक जयन्ती समारोह परिणाम है। इसलिए संघ हम सब की ओर से बधाई का पात्र है। सरकार के क्षेत्र में हिन्दी सम्बन्धी कार्य में काफी प्रगति हुई है। हिन्दीतर प्रदेशों की सरकारों ने भी हिन्दी के लिए अपनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिक्षा प्रणाली में योग्य स्थान दिया है। शुरू-शुरू में हिन्दी के लिए अच्छा वातावरण था। उन दिनों महाराष्ट्र, गुजरात, केरल, कर्नाटक, आन्ध्र में भी शुरू में हिन्दी की पढाई अनिवार्य कर दी गई। वह वातावरण आज नहीं है। फिर हमारा कर्तव्य है कि हिन्दी के राजभाषा होने योग्य वातावरण सारे देश में खासकर हिन्दीतर प्रदेशों में बनायें।

हिन्दीतर प्रदेशों की अपनी-अपनी भाषाएँ अंग्रेज़ी की जगह प्रशासन, शिक्षा तथा अन्य क्षेत्रों में धीरे-धीरे आ रही हैं। वास्तव में ये भाषाएँ अंग्रेज़ी के मुकाबले में लड़-लड़ कर धीरे-धीरे अपना उच्च स्थान ग्रहण करने की दिशा में दृढ़ संकल्प हैं। इन भाषाओं का हिन्दी के साथ मुकाबला नहीं है बल्कि सामंजस्य पूर्ण सहयोग है। बात स्पष्ट करूँ तो कहूँगा कि किसी भी हिन्दीतर क्षेत्र में हिन्दी उस क्षेत्र की भाषा की विरोधिनी नहीं है। अंग्रेज़ी की जगह महाराष्ट्र में मराठी और कर्नाटक में कन्नड़। हिन्दी की वह जगह नहीं होगी।

संविधान में भाषा सम्बन्धी प्रावधान बहुत सोच विचार कर रखा गया है। उसमें आज तक कभी संशोधन नहीं हुआ। उसमें भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में सभी भारतीय भाषाओं का अपना क्या स्थान हो, यह भी स्पष्ट कर दिया है। किसी भी क्षेत्रीय भाषा से बढ़कर ऊँचा स्थान हिन्दी का है यह नहीं बताया गया है। हिन्दी को वही स्थान हिन्दी क्षेत्रों में मिलेगा जो अन्य क्षेत्रों में वहाँ की भाषाओं को है। इसके अतिरिक्त हिन्दी का कोई दावा है तो वह यही है कि मुद्दत से देश की सम्पर्क भाषा रही है।

उन्होंने कहा कि भाषा के बारे में कहते कुछ हैं और करते कुछ हैं। हम अपने बच्चों को अंग्रेजी स्कूलों में भेजते हैं, परन्तु बोलते हैं कि अपनी भाषा की प्रगति हो। किसी भी क्षेत्र में यहाँ तक कि हिन्दी प्रदेशों में प्रशासन का कार्य ५० प्रतिशत से अधिक कहीं भी हिन्दी या क्षेत्रीय भाषा से नहीं हो रहा है। हम उत्साह से बातें करते हैं जब कार्यान्वयन का समय आता है तब पीछे हटते हैं। आपको सुनकर आश्चर्य होगा कि हममें से कई लोग ऐसे हैं जो कहते हैं कि अंग्रेज़ी हमेशा इस देश में चलेगी और हमारा ऐसे लोगों से विरोध है।

आजकल कम्प्यूटर का जमाना है। मैं आपसे कहता हूँ यंत्र को नहीं देखें अपनी भाषा की सुविधा को देखें। कम्प्यूटर अंग्रेज़ी के अनुकूल हैं। इसलिए क्या अंग्रेज़ी को हर क्षेत्र में काम में लायें और आगे भी क्या अंग्रेज़ी को जारी रखें। यह असम्भव बात है। अपनी भाषाओं के अनुकूल यंत्र तैयार करना हमारा उद्देश्य होना चाहिए।

आशा है इस सम्मेलन में परस्पर विचार विमर्श के बाद कार्यान्वयन के योग्य परामर्श देंगे।

डा० गंगाशरण सिंह

तिवारी जी के भाषण के बाद विश्वविद्यालय अनुदान समिति की अध्यक्षा,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीमती माधुरी शाह और गृहमंत्री, माननीय श्री० प्रकाश चन्द्र सेठी के सन्देश श्री० रामलाल परीख ने पढ़कर सुनाये। इसके उपरान्त अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ के अध्यक्ष, श्री० गंगाशरण सिंह के अध्यक्षीय भाषण से पूर्व काश्मीर के मुख्य मंत्री, शेख अब्दुल्ला के दुखद निधन पर सब लोगों ने दो मिनट मौन खड़े होकर उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की। अपने अध्यक्षीय भाषण में श्री० गंगाशण सिंह ने कहा कि यह पहला अवसर है कि जब देश के भिन्न-भिन्न प्रदेशों में हिन्दी प्रचार करनेवाली स्वैच्छिक हिन्दी संस्थाओं के लोग एक मंच पर एकत्रित हुए हैं। हिन्दी संस्थाओं ने हिन्दी प्रचार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है और आज भी इस कार्य में निष्ठा और त्याग से लगी हुई हैं।

राष्ट्रभाषा प्रचार का कार्य सबसे पहले मद्रास में शुरू हुआ। आजादी के पहले हिन्दी प्रचार वास्तव में राष्ट्रीय कार्य माना जाता था। है तो वह अब भी राष्ट्रीय कार्य ही। आजादी के बाद इस कार्य में शिथिलता आई है। केन्द्रीय और क्षेत्रीय सरकारों ने स्वातंत्र्य प्राप्ति के तुरन्त बाद हिन्दी कार्य को काफी मात्रा में प्रोत्साहित किया है। पीछे चलकर उन्होंने भी प्रोत्साहन में ढील कर दी। संविधान के अनुसार हर पाँच वर्ष में राजभाषा कमीशन बैठाया जाना चाहिए। पर आज तक एक ही कमीशन बैठा, दुबारा बैठा ही नहीं। जनता ने हिन्दी को अपनाया और आज भी जनता हिन्दी के साथ है। परन्तु फिर भी

जनता ने हिन्दी को अपनाया और आज भी जनता हिन्दी के साथ है।

आज की स्थिति में परिवर्तन आया है। कुछ प्रदेशों में हिन्दी अध्यापन को अनिवार्य के स्थान पर वैकल्पिक बनाये जाने का प्रयत्न हो रहा है। आज देश की स्थिति कुछ और है। देश की वह स्थिति नहीं रही है जो पहले थी। सरकार ने हिन्दी को प्रोत्साहन दिया तो कुछ लोगों ने सोचा हिन्दी देश पर थोपी जा रही है। प्रोत्साहन कम किया तो कहा गया कि हिन्दी के प्रति सरकार की हिन्दी नीति शिथिल है।

हिन्दी प्रचारकों का पहले जो मान था वह आज नहीं है। प्रचारक बन्धु ५२,००० से अधिक हैं, परन्तु सब एक स्तर के नहीं हैं। आज भी कई लोग पूर्ववत अत्यन्त निष्ठा से अपने गांव या जिले में अपना काम करते चले जा रहे हैं। माना सब में वह निष्ठा नहीं है जो पहले थी, फिर भी काम चल रहा है।

वास्तव में हिन्दी प्रचार से राष्ट्रीयता का प्रचार हो रहा है। आज भी हिन्दी राष्ट्रीयता का प्रतीक है। आज हमें अन्य प्रान्तों के बारे में जानकारी हिन्दी के माध्यम से उपलब्ध हो रही है, यही तो सम्पर्क भाषा है। जनता के सहयोग से यह सम्पर्क भाषा बन रही है। सरकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वास्तव में हिन्दी प्रचार से राष्ट्रीयता का प्रचार हो रहा है।

जो भी कार्य करे उस पर बहुत अधिक धन व्यय करती है। वही कार्य कम व्यय पर स्वैच्छिक संस्थाओं के द्वारा झंझट के बिना खामोशी से चलता है। क्योंकि आज भी ऐसे लोग हैं जो इस पवित्र राष्ट्रीय कार्य के प्रचार-प्रसार में अपना तन-मन-धन लगाने को तैयार हैं। उनका जरूर लाभ उठाना चाहिए। आज तमिलनाडु की सरकार हिन्दी का जितना विरोध करती है, जनता उतना ही साथ देती है। आज उत्तर प्रदेश, बिहार आदि की राजभाषा हिन्दी है, इसलिए हिन्दी व्यापक नहीं हुई है। यात्रा, वाणिज्य, सिनेमा आदि के कारण हिन्दी अधिकाधिक व्यापक होती जा रही है। हिन्दी व्यापक भी है, लचीली भी है। तुलसी की भाषा राष्ट्रभाषा हिन्दी से दूर नहीं है। जैसे-जैसे भाषा का विकास होता जायेगा, वैसे वैसे उसका रूप भी बदलता जायेगा। भाषा बहता नीर है। भाषा बढ़ते-बढ़ते नदी की तरह समृद्ध, विस्तृत होती चली जायेगी। हिन्दी में समस्त भारतीय भाषाओं से मुहावरे आयेंगे। कहा भी है :—

तुलसी, वृंद दोऊ भये, पुरविन के सरदार,
इनकी कविता में मिलो, भाषा विभिन्न प्रकार।

वास्तव में हिन्दी के बारे में भी यही बात है। सारे देश में कई बातों की जानकारी हिन्दी के माध्यम से बढ़ रही है। रंगनाथ रामायण (तेलुगु), कम्ब रामायण (तमिल), कृतिवास रामायण (बंगला) हिन्दी अनुवाद के साथ आज उपलब्ध हैं। वह दिन दूर नहीं है जब समस्त भारतीय साहित्य हिन्दी में उपलब्ध होकर रहेगा। साहित्य भावनाओं का भण्डार है। भावना के बिना कोई काम नहीं होगा। भावना के साथ-साथ हम व्यवहार को नहीं भूलेंगे। आज हिन्दी के लिए जितने लेखकों की

वह दिन दूर नहीं है जब समस्त भारतीय साहित्य हिन्दी में उपलब्ध होकर रहेगा।

आवश्यकता है उतने ही वैचारिक लेखकों की भी है।

उन्होंने प्रतिनिधियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि हिन्दी का काम करते समय भाइया आप किसी दलबन्दी में न पड़ें। जहां तक हो सके आप सब लोगों को साथ लेकर चलें। यहाँ तक राजनीतिज्ञों की लीक पर भी चलेंगे परन्तु लक्ष्मण की तरह उनके पद चिन्हों से बचकर। क्षणिक सफलता के लिए राष्ट्रीय लाभ की बलि नहीं चढ़ाइये। स्मरण रखिए कि प्रकाश की एक किरण गहरे से गहरे अंधकार को भी समाप्त कर देती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी का राष्ट्रभाषा के नाते प्रचार और प्रसार किस प्रकार शुरू हुआ, कैसे उसमें गति आई इसकी जानकारी देनेवाला एक विवरण "हिन्दी प्रचार की एक झांकी" संस्था संघ की ओर से प्रस्तुत किया गया। इसके साथ ही सारे भारत में हिन्दी की व्यापकता को झलक देनेवाला एक विवरण "हिन्दी की सार्वदेशिकता" भी प्रकाशित कर बांटा गया।

इस समारोह के अवसर पर केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, राजभाषा विधायी आयोग, संघ की सदस्य संस्थाओं तथा मुद्रक परिवार की ओर से विशाल पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

श्री० रामलाल पारीख ने मान्य अतिथियों, प्रतिनिधियों तथा उपस्थित महानुभावों के प्रति आभार व्यक्त किया। उन्होंने जानका देवी महाविद्यालय की छात्राओं को वन्दना गान पर धन्यवाद दिया। उन्होंने कहा कि आपके अथक सहयोग से यह समारोह आज यहां हो रहा है। आप सब यहाँ आये और समारोह को सफल बनाया, इससे हमारे कार्य में और गति आयेगी, कार्यकर्ताओं को प्रोत्साहन मिलेगा।

छन्दमय भारत

इसके बाद सूचना तथा प्रसारण विभाग के गीत और नाटक प्रभाग के सौजन्य से "छन्दमय भारत" कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। यह कार्यक्रम "इन्डियन रिवाइवल ग्रूप" के निदेशक श्री योग सुन्दर ने प्रस्तुत किया। इस कार्यक्रम में नागालैंड, गुजरात, सौराष्ट्र, पंजाब, बंगाल, कर्नाटक, केरल आदि प्रदेशों के लोकनृत्य संगीत के साथ दिखाये गए। दर्शकों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम को राष्ट्रभाषा प्रचार के हीरक जयन्ती समारोह के अवसर पर समयोचित पाया। दर्शकों ने विभिन्नता में एकता के अन्तर्गत इस कार्यक्रम की सराहना की। कार्यक्रम की सफलता तथा कलाकारों के लिए संघ के सचिव, श्री० रामलाल परीख ने संघ की ओर से रु १०१ तथा मैसूर हिन्दी प्रचार परिषद् की ओर से रु. ५१ का पुरस्कार दिया। संघ के सचिव ने कलाकारों को धन्यवाद दिया और कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

दूसरा दिवस

दूसरे दिन का समारोह प्रातः १० बजे संघ के अध्यक्ष, श्री० गंगाशरण सिंह की अध्यक्षता में प्रारम्भ हुआ। इस समारोह में केन्द्रीय उप शिक्षा मंत्री, श्री० पी. के. थुंगन मुख्य अतिथि थे तथा श्री० सुधाकर पाण्डेय (संसद सदस्य) मुख्य वक्ता थे।

प्रारम्भ में संघ के सचिव, श्री० रामलाल परीख ने मान्य अतिथियों तथा उपस्थित प्रतिनिधियों एवं हिन्दी प्रेमियों का स्वागत किया। उन्होंने बताया कि स्वास्थ्य ठीक न रहने पर भी श्री० थुंगन जी यहाँ आने का जो कष्ट किया वह हिन्दी के प्रति उनके अगाध प्रेम और श्रद्धा का द्योतक है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यू. जी. सी. को चाहिए कि उन हिन्दी संस्थाओं को भी मान्यताएँ दे जो हिन्दी परीक्षा चलाती हैं।

श्री० सुधाकर पांडेय

श्री० सुधाकर पाण्डेय ने अपने भाषण में श्री० गंगाशरण सिंह जी के इस प्रयत्न की सराहना की जिससे दिल्ली में देश के कोने-कोने से हिन्दी के समर्थक कार्यकर्ताओं को बुलाया गया। उन्होंने अपने भाषण में कहा कि :— "शिक्षा तीन हिस्सों में बंटी है। कोठारी कमीशन ने जो शिक्षा की क्रांति सम्बन्धी ताजमहल की कल्पना की थी, वह कल्पना कल्पना ही रह गई। राज्यों ने शिक्षा को केन्द्रीय विषय नहीं होने दिया। अन्य प्रदेशों की बातें मैं नहीं जानता मगर उत्तर प्रदेश में शिक्षकों के वेतन बढ़े हैं, पर स्कूल में शिक्षण सामग्री उपलब्ध नहीं है। सरकार का आर्थिक बोझ बढ़ता गया परन्तु उसको सम्भालने वाला कोई नहीं रहा। यह हुई शिक्षा के क्षेत्र में सत्ता की बात। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की रिपोर्ट के अनुसार शिक्षा का माध्यम मातृभाषा होनी चाहिए: परन्तु अंग्रेजी लड़कों को समझ में नहीं आती इसलिए विश्वविद्यालयों में ज्ञान की प्राप्ति का वातावरण ही लुप्त हो गया है। शैक्षिकेतर कार्य अधिक चल रहे हैं। ज्ञान की आराधना कम है। भोग की साधना अधिक है। आज की शिक्षा व्यवस्था ने मानव का निर्माण कम किया है। जैसे मालवीय जी ने सोचा था, राष्ट्र समर्पित भावना शिक्षा का परिणाम होना चाहिये। ऐसे राष्ट्र समर्पित और समन्वित भावना आजकल विश्वविद्यालयों में कम है। अराजकता अधिक है। पैसे के पीछे सब पड़े हुए हैं। जो ज्ञान दान के दिवाने हैं उनको पाँच सौ रुपये से अधिक नहीं मिलता है। मुझे तो लगता है कि देश में वह स्थिति आ गई है कि मूल विश्वविद्यालयों की स्थापना होना चाहिए। यू. जी. सी. को चाहिए कि उन हिन्दी सस्थाओं को भी मान्यताएँ दे जो हिन्दी परीक्षा चलाती हैं। जहाँ ज्ञानार्जन की बात आती है वहाँ यू. जी. सी. का प्रवेश क्यों न हो। यह रही विश्वविद्यालयीन शिक्षा की बात। तीसरी बात पर मैं आता हूँ। उच्च शिक्षा के माध्यम के रूप में इस देश में अंग्रेजी को बपौती नहीं रहनी चाहिए। राजनैतिक परिस्थितियों के कारण कुछ भारतीय भाषाओं को यू. जी. सी. की परीक्षा में मान्यता दी गई। हिन्दी का जहाँ तक सवाल है बंगाल व तमिलनाडू ने उसे दबाया सुपीरियोरिटी काम्प्लेक्स (वरीयता ग्रंथी) के कारण बंगाल ने और हीनता ग्रंथी के कारण तमिलनाडू ने। राजनैतिक परिस्थिति भी वहाँ काम कर रही है। राष्ट्रभाषा प्रचार क्षेत्र में महाराष्ट्र, गुजरात और स्वतंत्रता पूर्व के दक्षिण भारत में भी सत्ता से संघर्ष किया। राष्ट्रभाषा प्रचार कार्य में काफी प्रगति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की, तभी तो हिन्दी राजभाषा स्वीकृत हुई। मगर भय लग रहा है कहीं हिन्दी उस स्थान से सरकने नहीं लगे।

मैं प्रश्न करता हूँ कि दक्षिण भारत में हिन्दी माध्यम से चलनेवाले एक केन्द्रीय विश्व विद्यालय की स्थापना की बात क्यों नहीं कार्यान्वित हुई। बाबू श्याम सुन्दर दास जी ने काशी हिन्दू विश्व विद्यालय में हिन्दी एम. ए. की पढ़ाई शुरू की। तब उस स्तर के योग्य आवश्यक पुस्तकें हिन्दी में उपलब्ध नहीं थीं। परन्तु शीघ्र ही यह अभाव दूर हो गया। हिन्दी पर सबका अधिकार था। हिन्दी आर्यावर्त और मध्य देश की भाषा

नहीं बनना चाहिए बल्कि उन विषयों की परीक्षा का भी प्रबन्ध करना चाहिए जिनका हमारे जन-जीवन के साथ निकट सम्बन्ध है। अंग्रेजी रूपी हाथी को स्वतंत्र नहीं छोड़ना चाहिए उस पर अंकुश लगाना चाहिए। मैं यह विचार आपके सामने रखता हूँ कि देश की स्वैच्छिक हिन्दी सेवी संस्थायें मुक्त विश्वविद्यालयों के रूप में क्यों न परिणत हों। लैबोरेटरी आदि वैज्ञानिक उपकरण जुटाने का साधन हमारी संस्थाओं के पास नहीं है। इसलिए देश में जगह-जगह पर राष्ट्रीय वैज्ञानिक प्रयोग-शालाओं और पुस्तकालयों की स्थापना

दक्षिण भारत में हिन्दी माध्यम से चलने वाले एक केन्द्रीय विश्व विद्यालय की स्थापना की बात क्यों नहीं कार्यान्वित हुई?

होने के नाते सब लोगों के स्वीकार योग्य भाषा बनी। यह भाषा उस प्रदेश की है जिसके पूर्व की भाषा संस्कृत थी, जिसको सारे देश में सर्वमान्यता प्राप्त हुई। दुःख की बात यह है कि हिन्दी के जो विद्वान दक्षिण गए उन्होंने वहाँ की भाषा नहीं सीखी। श्री० नागप्पा जैसे कन्नड भाषा-भाषी व्यक्ति ने काशी में आकर हिन्दी सीखी और उसका दक्षिण भारत में प्रचार किया।

अंग्रेजी ही इस समय हमारी आजीविका की भाषा है, इसलिए उसकी मान्यता है। उन्होंने सुझाव दिया कि संस्था संघ की संस्थाओं को केवल साहित्य की परीक्षा चलाने का माध्यम

हो जिनसे इन संस्थाओं के विद्यार्थी लाभान्वित हों। तब हमारी स्वैच्छिक हिन्दी संस्थाएँ अपने विद्यार्थियों को आदमी बना सकती हैं। मैं बधाई देता हूँ इन स्वैच्छिक संस्थाओं को जो वास्तव में ज्ञान की संचारिणी दीप शिखाएँ हैं।

इस अवसर पर संघ की ओर से प्रकाशित तीन पुस्तकों मेघालय, अरुणाचल तथा नागालैंड का श्री० पी. के. थुंगन से विमोचन करने का श्री० रामलाल पारीख ने अनुरोध किया। उन्होंने बताया कि पुस्तक में राज्य की भौगोलिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक तथा प्रदेश की विभिन्न जातियों के रीति-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंग्रेजी रूपी हाथी को स्वतंत्र नहीं छोड़ना चाहिए । उस पर अंकुश लगाना चाहिए ।

रिवाजों का वर्णन किया गया है । उन्होंने बताया कि संघ की योजना है कि अन्य ऐसे क्षेत्रों की जहाँ की अलग-अलग बोलियाँ हैं परन्तु भाषा नहीं है उनके रीति-रिवाजों, धार्मिक, सांस्कृतिक आर्थिक पक्षों को प्रकाश में लाया जाये ।

श्री० पी. के. थुंगन

श्री० पी. के. थुंगन ने अरुणाचल, मेघालय तथा नागालैण्ड प्रदेश की पुस्तकों का विमोचन किया । उन्होंने अपने भाषण में कहा कि :—

हिन्दी प्रचार-प्रसार के लिए जो कोशिश सरकार की ओर से की जा रही है उसमें उनका सहयोग मिलेगा । मैं कहना चाहूँगा कि संवैधानिक तौर पर हिन्दी को राजभाषा बनाया गया है । उसके लिए एक हिन्दी डायरेक्टोरेट है । स्वैच्छिक तौर पर हिन्दी को संख्या और गुणात्मक रूप से बढ़ावा दिया जा सके, इस केलिए निदेशालय बनाया है । जिन प्रदेशों में हिन्दी नहीं वहाँ केन्द्रीय हिन्दी संस्थानके माध्यम से हिन्दी शिक्षा दिलाते हैं ।

मेरा तो इससे बढ़कर भी बहुत ज्यादा होसला बढ़ाने वाली बात यह है कि हमारी प्रधान मंत्री हिन्दी सीखने को हमको प्रोत्साहन देती है । आपको यह जानकर खुशी होगी कि कुछ दिन पहले प्रधान मंत्री जी ने हम सब मंत्रियों को अपने कार्यालय में बुलाकर कहा कि आप चाहे बुरा माने या अच्छा आपको हिन्दी सीखनी चाहिए । हिन्दी बोलने की कोशिश करनी चाहिए । यह सत्य है कि हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है और राज भाषा भी है । इन बातों को सुनकर मैं बहुत प्रसन्न हुआ । क्योंकि वर्तमान महान देश की भाषा के बारे में मुझ पर जिम्मेदारी सौंपी है, उससे एक बहुत बड़ी ताकत आई है । सरकार की ओर से जिस हद तक हो सके संविधान के मुताबिक हिन्दी प्रचार-प्रसार की कोशिश जाती है । आपका रोल बहुत बड़ा है और महत्वपूर्ण है । सरकार जो अनुदान देती है वह कार्यक्रम के मुताबिक है । असली कार्य तो स्वैच्छिक हिन्दी संस्थाओं का है । आज के इस अवसर पर मैं आपसे अनुरोध करूँगा कि जिस प्रकार से आप अब तक हिन्दी का प्रचार-प्रसार करते आ रहे हैं उसी उत्साह से काम करते जायें । दूसरा एक पाइंट यह कहना चाहूँगा कि हिन्दी केवल राजभाषा या राष्ट्रभाषा ही नहीं बल्कि हमारे देश की एक सम्पर्क भाषा है, जो भावात्मक एकता का बहुत बड़ा काम कर सकती है ।

पूर्वांचल में हिन्दी के प्रचार-प्रसार में कोई कठिनाई नहीं है । पूर्वांचल की सरकारों ने त्रिभाषा सूत्र को अपना लिया है । यह माना कि हिन्दी को किसी पर लादना अवांछनीय है । परंतु उसके व्यवहार में और उसके प्रचार-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह माना कि हिन्दी को किसी पर लादना अवांछनीय है। परन्तु उसके व्यवहार में और उसके प्रचार-प्रसार की गति में रिस्ट्रिक्शन डालना भी वांछनीय नहीं है।

प्रसार की गति में रिस्ट्रिक्शन डालना भी वांछनीय नहीं है। देश की उन्नति और एकता के लिए हिन्दी की जरूरत है यह मानी हुई बात है। साथ ही समूचे विश्व में इस देश का स्तर बढ़ाने के लिए भी हिन्दी की आवश्यकता है।

इस मौके पर मैं आपको एक घटना सुनाना चाहता हूँ। हमारे एक नेता विदेश में गये। उनका सारा भाषण अंग्रेजी में था। थे वे उत्तर प्रदेश के। उनके पास एक अनुवादिका पहुँची। जिस सम्मेलन में वे प्रतिनिधि के तौर पर गये थे, उनके भाषण का उसे अनुवाद करना था। अनुवादिका ने कहा आप हिन्दी बोलिए मैं उसका अनुवाद करूँगी। हमारे प्रतिनिधि ने कहा मैं अंग्रेजी बोलूँगा आप उसका अनुवाद कीजिए। उसने कहा मैं अंग्रेजी नहीं हिन्दी जानती हूँ। हमारे प्रतिनिधि के मुँह का रंग उड़ गया। उसे अंग्रेजी लिखित भाषण मन ही मन पढ़कर तत्काल हिन्दी में अनुवाद करके बोलना पड़ा।

स्वाधीनतापूर्व जैसी हिन्दी की स्थिति आज नहीं है। बहुत सारी जगहों पर हिन्दी का प्रवेश हो गया है। आपने जिस विशाल क्षेत्र में कार्य किया है, उसका काफी असर हुआ है। आप इस सम्मेलन में राष्ट्रभाषा की समस्याओं पर गहराई से विचार करें और उन पर सरकार जरूर ध्यान देगी।

मंत्री जी के भाषण के पश्चात अध्यक्ष, श्री० गंगाशरण सिंह ने कहा कि श्री० थुंगन जी के उत्साहप्रद भाषण से मुझे बड़ी प्ररणा मिली है। उनके भाषण में वास्तविकता की अनुभूति भरी है, उपयोगिता की ओर लक्ष्य रखा गया है, स्पष्टता है और सारा भाषण प्रेरणादायक है। इस पर मैं बधाई देता हूँ। शिक्षा क्षेत्र में ऐसे बहुत कम लोग हैं जो देश को संस्कृति को बनाये रखने और एकता पर दृढ़ता से आगे बढ़ने में दृढ़संकल्प हैं। श्री० थुंगन जी इसके अपवाद हैं, हाँ उम्र में बड़ा होने से मैं उनको अशीर्वाद देता हूँ।

इसके बाद राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा और तृतीय विश्व हिन्दी सम्मेलन के उपाध्यक्ष, श्री० मधुकर राव चौधरी ने अपने विचार व्यक्त किये।

हिन्दी सदियों से लोगों को जोड़ने वाली कड़ी रही। नये राष्ट्र का निर्माण करने की दृष्टि से गांधीजी के रचनात्मक कार्यक्रम का अंग बनी। किस प्रकार आगे आनेवाले १०–१५ साल में क्या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काम करना है इसका प्रारूप बनाया जाये। राष्ट्रीय मंच को हम क्रियाशील करें। एक आबोहवा निर्माण करें। श्री० मधुकरराव ने तृतीय विश्व हिन्दी सम्मेलन की आयोजना प्रस्तुत की। सम्मेलन के कार्यक्रम, विचार गोष्ठियों के बारे में विस्तार से बताया। सम्मेलन के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला।

इनके अतिरिक्त श्री० गंगाशरण सिंह जी, प्रो० चमनलाल सप्रू, श्री० यशवंत मांझेकर आदि कई प्रतिनिधियों ने विचार प्रकट किये।

जगन्नाथ कौशल

शाम ५ बजे समारोह का समापन कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। समापन समारोह में केन्द्रीय विधि, न्याय और कम्पनी कार्य मंत्री श्री० जगन्नाथ कौशल, मुख्य अतिथि थे। समारोह की अध्यक्षता संघ के अध्यक्ष, श्री० गंगाशरण सिंह ने की। संघ के सचिव, श्री० रामलाल पारीख ने मान्य अतिथि एवं उपस्थित महानुभावों का स्वागत किया। उन्होंने समारोह की कार्यवाही की जानकारी दी। श्री० रामलाल पारीख ने श्री० जगन्नाथ कौशल जी से संघ द्वारा प्रकाशित "राष्ट्र-भाषा प्रचार का इतिहास" पुस्तक का प्रमोचन करने का अनुरोध किया। श्री० कौशल जी ने संघ के महत्वपूर्ण प्रकाशन 'राष्ट्रभाषा प्रचार का इतिहास' पुस्तक का प्रमोचन किया। उन्होंने अपने भाषण में कहा कि —भाषा को संस्कृति से या देश की आत्मा से अलग नहीं किया जा सकता। जब हम स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ रहे थे तब गाँधीजी ने यह विचार दिया कि कांग्रेस का जो जन-जागरण का काम है वह भारतीय भाषाओं के माध्यम से होना चाहिए और कांग्रेस के अधिवेशनों की कार्यवाही हिन्दी में होनी चाहिए। उस समय हिन्दी को राष्ट्रभाषा कहा गया। गाँधीजी यह चाहते थे कि पूरे देश में विचारों के आदान-प्रदान के लिए सभी लोगों को स्वीकार्य एक भाषा हो और वह राष्ट्र-भाषा उनके विचार में हिन्दी ही हो सकती थी। गाँधीजी ने अपने पुत्र देवदास गाँधी को पहले हिन्दी प्रचारक के रूप में मद्रास भेजा उन्हीं की प्रेरणा पर दक्षिण भारत में हिन्दी प्रचार का कार्य शुरू किया गया। यह सारा कार्य प्रारम्भ में हिन्दी साहित्य सम्मेलन के द्वारा खोले गए मद्रास कार्यालय द्वारा चला। महात्मा जी ने श्रीमान हरिहर शर्मा, का. म. शिवराम शर्मा जैसे कुछ लोगों को इलाहाबाद भेजा। उन्होंने वहाँ हिन्दी पढ़कर दक्षिण में हिन्दी प्रचार कार्य किया।

महात्मा जी ने हिन्दी के स्वरूप पर भी विचार किया। उनकी राय थी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी वह भाषा है जो क्या गाँव, क्या शहर सर्वत्र चलता और क्या हिन्दू और क्या मुसलमान सब समझते हैं और जो नागरी या उर्दू लिपि में लिखी जा सकती है। उन दिनों हिन्दी भाषा का इस व्याख्या पर गर्मा-गर्म बहस चला करता थी। स्वतंत्रता के बाद हिन्दी का विश्व विद्यालयों में सरकारी कार्यालयों में और कारखानों में प्रयोग बढ़ने लगा तब हिन्दी के स्वरूप का विवाद समाप्त हो गया।

यह निर्विवाद विषय है कि भाषा प्रयोग से बढती है। कोशकार भाषा नहीं बनाते। आज क्या भौतिक, क्या भू-विज्ञान क्या रसायन विज्ञान इन सब विषयों से सम्बन्धित बारीक से बारीक बातें हिन्दी में कही जा सकती हैं। दर्शन शास्त्र की शब्दावली तो हिन्दी में पहले से मौजूद है। आज राजनीतिशास्त्र जैसे मानविकी के सम्बन्ध में शब्द भण्डार भी पर्याप्त हैं।

विधि मंत्रालय से मेरा सम्बन्ध है। विधि शब्दावली तैयार हुई है जो अन्य भारतीय भाषाओं में भी स्वीकृत है। इसका तीसरा संस्करण निकलने वाला है। प्रसन्नता की बात है कि विधि मंत्रालय ने सन् १९८० तक के सभी अधिनियमों का हिन्दी में अनुवाद प्रकाशित कर दिया है। इस प्रकार

> किन्तु अभी हिन्दी को वह स्थान प्राप्त नहीं हुआ है जो संविधान के अनुसार हिन्दी को मिलना चाहिए।

हिन्दी का सभी क्षेत्रों में प्रयोग बढ़ रहा है। आप देखते होंगे कि बैंकों में भी चेक बुक हिन्दी में बनने लगे हैं।

किन्तु अभी हिन्दी को वह स्थान प्राप्त नहीं हुआ है जो संविधान के अनुसार हिन्दी को मिलना चाहिए। अभी बहुत से ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ अंग्रेज़ी का प्रधानता है। सविधान के अनुसार अंग्रेज़ी का स्थान सभी भारतीय भाषाओं को लेना चाहिए। हर एक राज्य को अपना काम अपनी राजभाषा में करना चाहिए। कुछ राज्यों ने इस मामले में काफी कदम उठा लिये हैं। किन्तु कुछ राज्य अभी पिछड़े हैं। अंग्रेज़ी में काम होने से साधारण व्यक्ति और सरकार के बीच भाषा की दीवार खड़ी हो जाती है। इससे प्रसाशन को जनता की नाड़ी पहचानने का मौका नहीं मिलता। जब साधारण आदमी सरकार से अलग हो जाता है तब प्रजातंत्र भी सच्चा प्रजातंत्र नहीं रह जाता। देश में वास्तविक प्रजातंत्र की स्थापना करने के लिए यह आवश्यक है कि जनता की प्रतिनिधि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरकारें जनता की भाषा में अपना काम करें। विधि पालिका, न्याय पालिका, कार्य पालिका—शासन के इन तीनों अंगों को अपना काम भारतीय भाषाओं के माध्यम से करना होगा। यदि आप व्यक्तिगत हैसियत से अधिक नहीं कर पाते तो अपने निजी पत्राचार और मांगलिक कार्यक्रमों के निमंत्रण पत्र आदि में हिन्दी का ही प्रयोग करें।

राष्ट्रभाषा के प्रचार-प्रसार में कुछ व्यक्ति और संस्थाएँ पिछले साठ वर्षों से जुड़े हैं। मनुष्य के जीवन को देखते हुए साठ वर्ष की अवधि काफी लम्बी होती है। पुस्तक के रूप में इस प्रचार-प्रसार के कार्य के इतिहास को प्रकाशित करके संस्था संघ ने सराहनीय कार्य किया है। इस ग्रंथ में संघ और उससे सम्बद्ध संस्थाओं का संक्षेप में परिचय दिया गय है। इसमें इस बात का उल्लेख भी किया गया है कि उन्होंने क्या काम किया है। स्व० जमनालाल बजाज, काका कालेलकर और राजगोपालाचार्य जैसे दिगंत नेताओं ने दक्षिण भारत में हिन्दी के पक्ष में किस प्रकार जनमत तैयार किया, यह भी इसमें बताया गया है। मुझे आशा है कि आगामी पीढ़ी के लिए यह पुस्तक एक प्रकाश स्तंभ का काम करेगी।

संघ के अध्यक्ष, श्री० गंगाशरण सिंह ने श्री० जगन्नाथ कौशल के प्रति आभार प्रकट किया। उन्होंने कहा कि श्री० कौशल जी जम्मू-काश्मीर से हमारे इस कार्य क्रम के लिए विशेष पधारे इससे उनकी हिन्दी के प्रति आस्था और निष्ठा ज्ञापित होती है। उनके आने से विधि मंत्रालय में हिन्दी के काम को गति मिली है और आशा है कि उनके नेतृत्व में विधि मंत्रालय हिन्दी के प्रचार-प्रसार में विशेष रुचि लेगा और हिन्दी को उचित स्थान दिलाने में मार्ग दर्शक का काम करेगा। इसके बाद समारोह के प्रतिनिधियों ने अपने अपने कार्य तथा संस्था के सम्बन्ध में संक्षिप्त परिचय दिया। तत्पश्चात् संघ के कार्यालय सचिव, श्री० जगदीश प्रसाद शर्मा ने राष्ट्र भाषा प्रचार की हीरक जयन्ती समारोह में पधारे मुख्य अतिथियों भाषण कर्ताओं जानकी देवी महाविद्यालय की छात्राओं तथा प्रतिनिधियों के प्रति आभार प्रकट किया और आशा प्रकट की कि भविष्य में भी आपका सहयोग बराबर राष्ट्रभाषा के कार्य को प्राप्त होता रहेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर्णभूषणम्

कवियूर शिवरामय्यर

XV

'दाता' को कीर्ति मचाने को
इतना तूने यत्न किया ;
पर संत बताते "जीवित नर-
की साध्वी है कीर्ति प्रिया" ।

लोक-दृष्टि में हम गिरगिट हैं,
एक वर्ण की न कहीं बात ;
झट कीर्ति अकीर्ति बने, उसकी
दोपहरी तो आधी रात ।

आज उपासित शैव लिंग, कल
पेषण सिल का लोढा है ;
धार चढाना, आग लगाना
पारी से जग-क्रीडा है ।

वास्तव में तो कीर्ति जनों के
मुँह की होती लार-कनी,
लगे कि पल भर धूम धाम से
नृत्य दिखाती वह रमनी ।

फिर या तो निगली जाती है
या बाहर थूकी जाती ;
ग्रस्त हुई हो, क्षिप्त हुई हो
उसकी मृत्यु तभी होती ।

XVI

ना, नर का नाम न बुद्बुद है,
शिला-लेख है एक भला ;
पढनेवाला पर चिरजीवी
न हुआ तो क्या लाभ मिला !

अपनी स्तुति गर की जाती है
अपने कानों सुननी है ।
अपना मुख दिखलाता दर्पण
अपने कर में रहना है ।

जो कि चल वसा, तत्क्षण ही निज
जड उखड नाम मिट जाता ;
जग का कोई सुंदर गाना
यमपुर निकट न चल पाता ।

छिदरे नव नव गगरे जग में
प्रतिदिन जगजोनि बनाता,
हंत ! दंड से अंतक उन को
भिन्न भिन्न कर इठलाता ।

लाश, गले में अर्पित सुरभित
सुम माला क्या सूँघ सके !
मरे हुए की भौम कीर्ति है
ही ही हास विहायस के ।

कीर्ति-लास्य है कबंध-तांडव,
कीर्ति-कांति कंकाल-हँसी ;
सुदीर्घ आयुर्बल-लक्ष्मी का
कटाक्ष किसको काम्य नहीं ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आयु भित्ति है जिस पर योग-
क्षेम-चित्र छवि पा सकते,
है वह चौपथ जिस में चारों
पुरुषार्थ-मार्ग मिल जाते ।

जड से उखड़े हुए पेड पर
बादल क्यों वाष्प गिराये ?
पर-तरु का वह खाद बनेगा
या इन्धन भस्म कोयले ।

दान-सिंधु में तू डूब मरे-
तो सकट भीषण कितना !
नीतिज्ञ, जमा बेच न जीना
निज सत्यानास न करना ।

XVII

लास्य जीभ पर करते करते
थकी थकी सी वाग्देवी को
विश्राम दिया विस्मय-स्तब्ध
जग मंगल दीप दिवामणि ने ।

उनका मन उस तरकष-सा है
जिस से संचित शर सब छूटे,
मौन तो हुए, किंतु तदा भी
वाचाल और हो भानु उठे ।

सरस्वती थक बैठ गयी तो
अपांग-लक्ष्मी लगी नाचने,
प्रत्याशा से सस्मित सुत को
सौ बार लखा सविता ने ।

उस कटाक्ष में सुत-मुख-पंकज
कुवलय-सुम-सा सिकुड रहा है ।

रवि ने नूतन वह चित्र लखा
त्रास व्यथा औ' त्रपा कृपा से ।

भग्न-समुद्यम हताश रवि का
मोह-गर्व सब ग्रस्त हो गया ।
कर्ण-वाक्य के स्वागत को निज
कर्ण आतिथ्य-व्यस्त हो गया ।

बादल छूट प्रसन्न हुआ नभ
खलबल मिट क्षीरधि शांत बना ।
कुंडल-कवच बहिरंग भूषण ।
गांभीर्य-धैर्य अंतरंग है ।

चारों ये आजन्म विभूषण
अपनाये वह भूपति सत्तम
भारत जनयित्री का स्तन्यप
रवि से बोला वाणी उत्तम ।

XVIII

जग-वंदित, पूज्यपाद, भानो !
तुम हो मेरे साक्षात् दैवत,
सुरवर गण में केवल तुम हो
सविता के शुभनाम प्रतिष्ठित ।

स्रष्टा को जो दुर्लभ थी, वह
कीर्ति मिली गोदान से तुम्हें,
सविता स्वरूप तव सेवा में
प्रतिदिन संध्या मैं करता हूँ ।

कुंती-वृत्त सुना हो कि नहीं
तुम हो मेरे सत्यतः पिता;
रवि-सूनु पार्थ तब तक जीया
जब पेटक अश्वनदी पहुँचा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राधा-पालित कर्ण दूसरा,
नूतन गांगेय उसे जानो,
माता भारत अवनि, तात है
ईश्वर जो जनक तुम्हारे भी ।

आभिजात्य की पादयष्टि पर
बिना चढाये जो दैव मुझे
बचा रहा था. प्रणाम उसको;
खुश हूँ धन्य मनुष्य जन्म से ।

सूतज हो या सूरज हो, मैं
भूदेवी की गोद में पला;
तत्व लखे तो इन दोनों में
'तर' का भी क्या अंतर होता ?

XIX

शस्त्र-अस्त्र दीक्षांत पर्व है
एक स्वजीवन पोथी में
पुराण पाठ न पैतृक मेरा ?
पारायण कर दूंगा मैं ।

हम सब विद्यास्नात हुए, तब
लेने को शस्त्र परीक्षा ।
रंग रचाया द्रोण ने स्वयं
विस्तृत, आयत औ' चोखा ।।

अर्जुन आया जैसे धन्वी
अन्य न कोई जवाब में;
प्रतियोगी बन मंच चढा मैं
कमर बांध शरचाप लिये ।।

कांप-कांप तब मेरे पीछे
स्थविर पिता हो लेते थे;
तत्क्षण कोमल उस गोकुल से
गोमायु-स्वर उठते थे ।।

"अरे ! कौन रे? सूत न है ? कार्य
तुझे क्या क्षत्र सभा में
रंगभूमि क्या स्वांग-रंग है ?
ज्या-स्वन बेसुर अलाप है ?

चाबुक-जीन उठानेवाले
कर से कार्मुख बाण लिये
क्या न अवे ! यह छोकरा करे ?
रोक-टोक के काल गये ।

अर्जुन भारत सार्वभौम का
वीर पुत्र है, मगर सूत तू
हो सकता स्तुतिपाठक उस का
हट जा, मुड व्यर्थ अहं से ।।

यह कौन अरे ? मुडकर देखा
कृपाचार्य ! शांत पाप हो !
मैं ने कार्मुख गान कला के
सा-रे; ग-म सीखे उन से ।

वही पूज्य जरठ न दण्ड्य बना ?
प्रलाप प्रतिशोध से बचा,
सोच सोच मैं दुःखित लज्जित
कर्तव्यमूढ हो ठहरा ।।

बेसुध गिरते स्वपिता को कर
में थामे, सिर लटकाये
विवश रहा तो कुरुपुंगव के
गदा-घोष, ना, वचन उठे ।।

❀

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्व में हिन्दी का अध्ययन : आस्ट्रेलियन सन्दर्भ

डॉ० विश्वनाथ शुक्ल
रीडर, हिन्दी विभाग,
अ. मु. विश्वविद्यालय, (भूतपूर्व विज़िटिंग
फैलो, कैनबरा विश्वविद्यालय, आस्ट्रेलिया)

यद्यपि आस्ट्रेलिया का पड़ोसी देश फ़ीजी हिन्दी बहुभाषी देश है, किन्तु वहाँ भी विश्वविद्यालय के उच्चस्तर तक हिन्दी के अध्यापन की व्यवस्था नहीं है ।

हिन्दी विश्व की प्रमुखतम भाषाओं में से एक है। भारत के स्वाधीन गणतंत्र की स्थापना के बाद विश्व के रंगमंच पर हिन्दी का सर्वविध महत्त्व स्थापित हुआ है। विश्व के अनेक देशों में हिन्दी का भाषिक, साहित्यिक और सांस्कृतिक अध्ययन हो रहा है। यूरोप और अमेरिका के कई देशों में (हिन्दी का भाषिक, साहित्यिक और सांस्कृतिक अध्ययन हो रहा है। यूरोप और अमेरिका के कई देशों में) हिन्दी के अध्ययन-अध्यापन की व्यवस्था है। प्रशान्त महासागर के देशों में आस्ट्रेलिया का महत्वपूर्ण स्थान है, जहाँ कैनबरा विश्वविद्यालय में स्नातक उपाधि (बी० ए० आनर्स) के स्तर तक ऐच्छिक विषय के रूप में हिन्दी पढाई जाती है। यद्यपि आस्ट्रेलिया का पडोसी देश फ़ीजी हिन्दी बहु-भाषी देश है, किन्तु वहाँ भी विश्व-विद्यालय के उच्च स्तर तक हिन्दी के अध्यापन की व्यवस्था नहीं है। फ़ीजी से अनेक छात्र और शोधार्थी हिन्दी के अध्ययन के लिए आस्ट्रेलिया के कैनबरा विश्वविद्यालय में आते हैं। हिन्दी भक्ति साहित्य के ऐसे ही एक जिज्ञासु शोधार्थी श्री० विजय मिश्र से १९७८ में कैनबरा विश्व-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्यालय में मेरी भेंट हुई थी । वहाँ एशियन स्टडीज़ संकाय के अन्तर्गत क्षिण एशिया एवं बौद्ध अध्ययन विभाग के अन्तर्गत हिन्दी का एक उपविभाग है, जिसमें डा० के. रिचर्ड र्ज और श्री० योगेन्द्र यादव अनेक र्षों से हिन्दी का विधिवत् अध्यापन र रहे हैं । हिन्दी विभाग में तीन र्ष का पाठ्यक्रम है । उसे बडे ज्ञानिक और व्यावहारिक ढंग से जित किया गया है । प्रथम वर्ष में नागरी अक्षर अंक और लिपि का म्यक् ज्ञान कराये जाने के बाद याकरण सम्मत भाषा के ज्ञानार्थ ज्ञानिक और यांत्रिक साधनों का हुल उपयोग किया जाता है । उच्चारण प्रयोगशालाएँ, टेप रिकार्डर, उत्तम पाठ्य सामग्री सभी हाँ उपलब्ध हैं । द्वितीय वर्ष में भाषा के साथ साथ थोडे से सरल साहित्य रूपों—यथा पत्र, संस्मरण, हानी और सरल कविता तथा मनोरंजक हिन्दी साप्ताहिकों से छात्रों में विशिष्ट रुचि हिन्दी में उत्पन्न की जाती है । तृतीय वर्ष में हिन्दी साहित्य के इतिहास का ध्यान रखते हुए विशेषकर भक्तिकाल और आधुनिक काल के साहित्य का त्त्विक और सांस्कृतिक अध्ययन कराया जाता है । कबीर, सूर, तुलसी, मीरा जैसे भक्त कवियों, प्रसाद, निराला, पंत, दिनकर जैसे आधुनिक कवियों और प्रेमचन्द, नागार्जुन, रेणु जैसे कथाकारों की रचनाएँ पाठ्यक्रम के अन्तर्गत रहती हैं । आस्ट्रेलिया के प्रबुद्ध छात्रों को हिन्दी और अंग्रेज़ी के माध्यम से हिन्दी पढ़ाने का सुयोग मुझे कैनबरा विश्वविद्यालय में मिला । इन छात्रों के साहित्यक मूल्यांकन में मौलिकता होती है । हिन्दी में छात्र–छात्रओं की संख्या औसतन २० रहती है यहाँ हिन्दी पढ़कर कुछ जिज्ञासु और उत्साही छात्र-छात्राएँ उच्चतर हिन्दी अध्ययन के लिए भारत आते हैं । भारत सरकार भी आस्ट्रेलियन छात्र–छात्राओं को प्रतिवर्ष हिन्दी अध्ययन केलिए अच्छी छात्रवृत्तियाँ देती है । मेरे ही दो तीन छात्र — श्री. एलेन, माइकेल और छात्रा श्रीमती हेलन भारत की सांस्कृतिक यात्रा और अपने हिन्दी के ज्ञान को परिपुष्ट करने के लिए आये और मेरे ही साथ ठहरे ।

अन्तर राष्ट्रीय क्षेत्र में हिन्दी का प्रचार-प्रसार हिन्दी की लोकप्रियता और शक्ति का प्रमाण है,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमें समस्त भारतीय भाषाओं की उन्नति में ही हिन्दी की उन्नति का मार्ग प्रशस्त होता मिलेगा

किन्तु हिन्दी की प्रेममयी सेवावृत्ति, राष्ट्रभाषा के प्रति आदरभाव के साथ हम सभी भारतीयों का कर्तव्य है कि पहले अपने ही देश और समाज में हिन्दी को उचित सम्मान प्रदान करें। दैनिक जीवन में उसका व्यापक प्रयोग करें। हमें समस्त भारतीय भाषाओं की उन्नति में ही हिन्दी की उन्नति का मार्ग प्रशस्त होता मिलेगा, क्योंकि हिन्दी और सभी भारतीय भाषाओं के साहित्य की आत्मा एक ही है। हमें अंग्रेज़ी से भी द्वेष नहीं होना चाहिए, क्योंकि वह भी एक सर्वविध समृद्ध विश्व-भाषा है। जहाँ उसकी आवश्यकता है, हमें उसका प्रयोग करना चाहिए, किन्तु जहाँ उसकी आवश्यकता नहीं, वहाँ भी उसका प्रयोग करना राष्ट्रीय सम्मान में वृद्धि नहीं करता। एक सच्ची घटना बताकर इन पंक्तियों को विराम दूँगा। पॉल नामक एक आस्ट्रेलियन छात्र कैनबरा विश्वविद्यालय से एक वर्ष हिन्दी पढ़कर अपनी हिन्दी सुधारने भारत भ्रमण पर आया। वह हिन्दी प्रदेशों में रहा। वह लोगों से यही हिन्दी में बोलता था और हिन्दी भाषी लोग उसे अंग्रेजी में उत्तर देते थे। कैनबरा लौटकर उसने निराशा भरे स्वर में कहा - 'मैं अब हिन्दी नहीं, चीनी पढ़ूँगा'। वहाँ लोग मुझ से उनकी भाषा में बात तो करेंगे। यह हमारी राष्ट्रीय अस्मिता को जगाने के लिए पर्याप्त शिक्षा होनी चाहिए।

श्रीवत्स, भारतीनगर, मैरिस रोड, अलीगढ़ (उ. प्र. २०२००१)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कविता

आओ, जशन मनावें

प्रो० टी. के. भास्कर वर्मा

[मलयाळम के लब्धप्रतिष्ठ कविवर श्री० ओ. एन. वी. कुरुप के 'वयलार पुरस्कार' द्वारा सम्मानित किए जाने पर बधाई के रूप में लिखी गई कविता ।]

ले सहस्रों कुसुम चहूँ ओर,
रसावें फूल गगन से अमर,
ए नया वसंत भू पर,
ले उजियाला जग भर ।
नंद-नृत्य हो कहीं पर
जों की मंगल-ध्वनि कहीं पर,
ओ जशन मनावें मिल कर,
० एन० वी० से कवि को पाकर ।।
याळम की कीर्तिपताका !
ल-जन की नेत्र-तारिका !
-विदेश में व्यापे हरदम,
वर, आपका धवल धवल यश ।
नें, कितने ऊँचे पर आप
र भी दृढ़ता से हैं धरती पर पाँव;
ल विनम्रता निस्सन्देह लगाती
की महिमा पर हैं चार चाँद ।।

पुरस्कारों का लगा है तांता
जाने किन किन कोनों से;
जनता धन्य स्वयम् ही होती
धन्य पुरुष को समझ पाने पर ।
'वयसार पुरस्कार' आप को दे कर
सम्मानित जो किया जनता ने
आनेवाले पुरस्कारों का,
मान लें, है बस श्रीगणेश ही ।
दलितों के उद्धारक! आपकी
श्रद्धांजलि करते हम नहीं अघाते ।

★

यूनिवर्सिटी ईवनिंग कॉलेज
तिरुवनन्तपुरम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

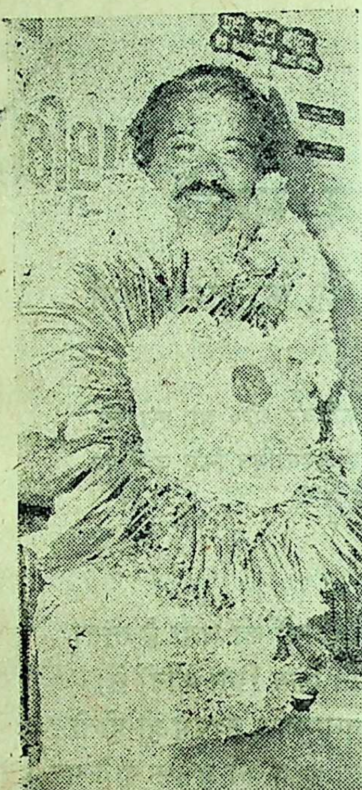

श्री० कटम्मनिट्
का अभिनन्द

मलयालम के लब्धप्रतिष्ठ आधुनिक कवि श्री कटम्मनिट्टा का हार्दिक अभिनन्दन केरल हिन्दी प्रचार सभा में आयोजित अखिल भारतीय हिन्दीतर नव हिन्दी लेखक शिविर में किया गया।

शिविर में आयोजित काव्य संध्या में श्री. कटम्मनिट्टा ने स्वतसिद्ध शैली में अपनी दो तीन विख्यात कवितायें सुनायीं। कविता सुनाते समय वे आत्मविभोर हो जाते हैं। और उन के स्वर में एक प्रकार का विलि उतार-चढाव आ जाता है जिस अर्थ के संप्रेषण में सुगमता आ जा है। उन की कविता का ताल लय सुनते ही बनता है। शिविर विविध भाषा भाषी लेखकों उनकी सुनायी कविताओं का बोध सहज रूप से हो गया डा० एन. ई. विश्वनाथ अय्यर ने कविताओं का भाव आस्वादना ढंग से जब और भी बोधगम्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिया तो श्रोता 'वाह-वाह' करते रहे।

हर प्रान्त का प्रतिनिधित्व करते हुए उन्हें माल्यार्पण किया तो श्री० कटम्मनिट्टा हर्षपुलकित हो गये और गद्गद कंठ से बोले—भारत के विविध भाषा भाषी हिन्दी लेखकों ने आज मेरा जो सम्मान किया उस से मैं अत्यंत आनंदित हूँ। इतना आनन्द मुझे साहित्य अकादमी का पुरस्कार पाते समय भी नहीं मिला था।

श्री० कटम्मनिट्टा ने कहा कि यद्यपि भारत के विभिन्न प्रान्तों की भाषायें अलग अलग हैं, वेषभूषा विभिन्न है आचार-विचार में अंतर है तो भी भारतीय साहित्य में एक विशेष प्रकार की एकता मिलती है।

श्री० कटम्मनिट्टा के सम्मान में विविध भाषा भाषी हिन्दी कवियों ने अपनी अपनी कविता सुनायी। डा० एन. ई. विश्वनाथ अय्यर, डा० जे. एल. रेड्डी, डा० कृष्णकुमार, श्री० के. आर. करण, श्री० सुभाष शर्मा, श्री० तपन कुमार, श्री० मनोज शर्मा और डी. बी. जगतपुरिया ने श्री० कटम्मनिट्टा का अभिनन्दन करते हुए भाषण दिया।

श्री० कटम्मनिट्टा की पहली कविता १९६५ में 'समीक्षा' में प्रकाशित हुई। १९६५ में प्रकाशित उनके कविता संकलन 'कविता' के पांच संस्करण निकल चुके। १९८१ में 'कटम्मनिट्टा की कवितायें' (दो खंड) प्रकाशित हुई। इस पर उन्हें केरल साहित्य अकादमी का पुरस्कार मिला। १९८१ का आशान पुरस्कार मिला। अबुदाबी मलयाली समाज का भी पुरस्कार मिला।

दिसंबर में मध्यप्रदेश सरकार द्वारा भोपाल में आयोजित होनेवाले कविसम्मेलन में श्री० कटम्मनिट्टा भी भाग ले रहे हैं।

❀

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केरल

सुभाष शर्मा
मंत्री, हिन्दी साहित्य मण्डल
पक्का डंगा, जम्मू (तवी)
जम्मू-कश्मीर

I

हरे पेड़ों के
सघन झुरमुटों से
झांकती खपरैली लाल छत्त
अनजाने लोगों में घिरी
पालकी के
भारी पर्दे की ओट से
*सालू ओढ़े
रह रह कर
निहार रही हो नव ब्याहता
पीछे छूटते-गलियाँ, सखियां
खेत गाँव
शिव मंदिर और कुआ

II

गहरी नीली चोटियों पर
धुँधलाया सुस्ताता आकाश।
नभपुरी से ठुकराये
अपस्राओं के
मदभत्त आहत बादल ।
उन्मुक्त प्यार पा
तृप्त हुए
तन्वंगी पहाड़ियों की खुली बाहों में।

III

पानी भरे दूर
खेतों में
खेत वस्त्रों में सजे
धरती-पुत्र
मानसरोवर के हंसों से
लगते झुके हुए।

(*सालू—विवाह की लाल ओढ़नी)
(डोगरी शब्द)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चुन कर नहीं,
ले जा रहे मोती तल से
पर वो रहे थे
मोती असंख्य वहाँ।

कमल पत्तों,
से ढकी झील डल
के गहरे नीले तल पर
हाउस बोट सा तिरता।

IV

प्रथम साक्षात्कार
मन पर छाया
तेरा रूप नयनाभिराम
अंतहीन हरित मणियाँ
चाँदीली रेत के पदंक
की अंकशायिनी, रूपगर्विता
अंग भार से धीमी जलती, इठलाती
सरिता के तट
अनजाने पहचाने कुंजों में घिरा
लाल चमकीली ढलुआ छत्त
वाला
रंगीला मेरा
छोटा सा आकर्षक घर हो

V

हरीतिया ओढ़े
आडे तिरछे खेत
हरी झील से
सुकुमार धान शावकों को पंख झुलाते
तने सीधे नारियल कुंज।
चीड़ देवदारों से
घिरे पर्वतांचल
जलखंड
सागर की बेटी
हिमालय की बेटी
में
कितना साम्य है।
सगी बहनें
केरल कश्मीर॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

LEARN HINDI BY POST

The next session for the following Hindi Correspondence Courses especially designed to cater to the needs of the Non-Hindi speaking departmental employees with particular emphasis on official Hindi, commences from JANUARY, 1st, 1983.

1. PRABODH: (One year elementary course for beginners)
2. PRAVEEN: (One year course approximately of middle school level in Hindi)
3. PRAGYA: (One year advance course Equivalent to Matriculation level in Hindi)

These courses are indentical to the course conducted by the Ministry of Home Affairs and are based on the same syllabi and Text-Books.

ELIGIBILITY: Admission to these courses will be open to:

A. CENTRAL GOVERNMENT EMPLOYEES:

(i) Posted at places were Hindi Teaching Centres are not set up by the Ministry of Home Affairs under Hindi Teaching scheme.

(ii) Operational staff. (iii) Class I & II Officers.

B. TEACHERS OF KENDRIYA VIDYLAYA SANGATAN

C. EMPLOYEES OF STATUTORY BODIES AND PUBLIC UNDERTAKINGS.

The application should be forwarded through the respective departments.

FEES: A Nominal fee of Rs.30 (ANNUAL) will be charged to be remitted by Crossed Indian Postal Orders Payable to the Central Hindi Directorate, at Ramakrishnapuram, New Delhi-110 066 Post Office or Bank Draft, drawn on any Bank in Delhi/New Delhi. Fees sent through Money Order or Cheqe will not accepted. Fees not refundable once a student is admitted to a Course.

The last date for receiving fees and application forms is 31st December, 1982.

For admisssion forms and prospectus, please apply with a self-addressed and stamped (50 paise) envelope (24 CM × 11 CM) to:—

THE DEPUTY DIRECTOR (C C)
CENTRAL HINDI DIRECTORATE
CORRESPONDENCE COURSES DEPARTMENT
Ministry of Education & Culture
GOVERNMENT OF INDIA,
WEST BLOCK NO. VII, RAMAKRISHNAPURAM,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठकों के पत्र

सत्यप्रकाश आर्य
हिन्दी अधिकारी
प्रौढ शिक्षा निदेशालय
शिक्षा तथा संस्कृति मंत्रालय
भारत सरकार

"केरल ज्योति" जिस तरह से राजभाषा हिन्दी की सेवा कर रही है, उसकी जितनी भी प्रशंसा की जाए, कम है। दक्षिण की ओर से आनेवाली गौरवमयी कृति का सर्वत्र स्वागत है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्म गुजरात में हुआ था, फिर भी उन्होंने जनता की भाषा हिन्दी को अपनाया और पूरे भारत के पूजनीय बन गए। सितम्बर ८२ के अंक में डा० मृत्युंजय उपाध्याय द्वारा लिखा गया महर्षि से संबधित लेख बड़ा प्रभावशाली रहा। वास्तव में इस लेख के द्वारा उस महान पुरुष के प्रति श्रद्धांजली के दो पुष्प ही भेंट किए गए हैं। ऋषि दयानन्द के उपकार समस्त मानव जाति पर तो हैं ही, पर महिला समाज उनके प्रति सदा कृतज्ञ रहेगा। हिन्दी साहित्य तो सदा ही उनका ऋणी रहेगा।

संचार मंत्री श्री. स्टीफन का भाषण भी बड़ा प्रभाव डालने वाला है। इस तरह के लेखों से भारत के दक्षिण तथा उत्तर के हिस्से आपस में और जुड़ सकते हैं। वास्तव में भाषा का विवाद केवल कुछ ही व्यक्तियों की उपज है। मैं इस बात का विश्वास दिला सकता हूँ कि हम उत्तर भारत के लोग अपने दक्षिण भारत के भाइयों से प्रेम करते हैं। हमारे घर भी कई दक्षिणवाले आते-जाते रहते हैं। उनका व्यवहार बिलकुल अपने भाई-बहनों की तरह होता है। हम सब एक ही मिट्टी से पैदा हुए हैं और हम सब की माँ एक ही है—भारत माता।

मुख्यमंत्री माननीय के. करुणाकरन का अध्यक्षीय भाषण भी कुछ कम नहीं है। आशा है कि इससे केरल के विद्यार्थियों को हिन्दी पढ़ने की प्रेरणा मिलेगी। आप उन तक हमारी कृतज्ञता पहुचा दें। इस लेख से हिन्दी भाषी जनता के दिलों में वह प्रवेश पा चुके हैं। भगवान उन्हें लम्बा जीवन दें जिससे वह हिन्दी की सेवा करके माँ भारती के ऋण को चुका सकें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंत में एक बात और सरकार ने निर्णय किया है कि अंकों के अंतराष्ट्रीय स्वरूप को ही प्रयोग में लाया जाए। इससे संबन्धित एक परिपत्र संलग्न कर रहा हूँ। आपसे अनुरोध है कि आप भी इसका पालन करने की कोशिश करें।

डॉ० मोहन अवस्थी
रीडर, हिन्दी विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय
इलाहाबाद-२११००२

'केरल ज्योति' का (अक्टूबर १९८२) अंक एक मित्र के यहाँ देखने को मिला। 'देख कबीरा रोया', सम्पादकीय बहुत विचार पूर्ण तथा तटस्थ दृष्टि का परिचायक है। अंक की सामग्री भी स्तरीय एवं ज्ञानवर्द्धक है।

डॉ० त्रिलोकीनाथ व्रजवाल
श्रीभवन, मण्डी रामदास,
मथुरा (उ. प्र.) २८१००१

'केरल ज्योति' मासिक का सितम्बर ८२ का अंक मिला, अत्यन्त आभारी हूँ।

पत्रिका से अनेक नये समाचारों की जानकारी हुई। आप लोगों के कार्य अभिनन्दनीय हैं। कृपाभाव बनाये रहें।

डॉ० कु० आशा
रुड़की विश्ववि

'केरल ज्योति' पत्रिका अत्यन्त
है, हिन्दी भाषा के प्रचार एवं प्रसार
यह पत्रिका जो भूमिका निभा रही है
निस्सन्देह स्तुत्य है।

डॉ० विश्वनाथ शु
रीडर, हिन्दी विभा
मु० विश्वविद्यालय, अली

'केरल ज्योति' का अक्टूबर १९
का सुन्दर अंक मिला। अग्रज
डा० विश्वनाथ अय्यर का लेख 'आ
लहरों में निमंत्रण' अत्यन्त मनोरं
शैली के साथ ज्ञानवर्धक भी है। बंधु
वी. के. एस. नम्पूतिरी ने तपोनि
हिन्दी सेवी स्व० रामशास्त्री का पु
स्मरण करके हम सभी को एक
प्रेरणा दी है। उक्त बन्धुद्वय को
उपयोगी लेखों के लिए मेरी बधा
अवश्य दें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आवश्यकता है

दस हज़ार या अधिक की आबादी वाले हर नगर में
शीघ्र ही खुलनेवाले

हमारे

घर-वितरण विभागीय संग्रहागार केलिए

मेट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण विक्रयफलक विक्रयकारों
एवं क्षेत्र विक्रयकारों की आवश्यकता है

वेतन 500 और सरकारी नियमानुसार अन्य सुविधायें
आवेदन पत्र अंग्रेजी या हिन्दी में ही भेजें

पंजाब सेविंग्स प्राइवेट लिमिटेड
रोहित हाउस, ग्राउण्ड फ्लोर
3-टालस्टाय मार्ग, नयी दिल्ली-110 001
दूर भाषा : 741150, 717827, 385616, 381116
तार: सर्वीस फाइन
टेलेक्स: 5032 एन. डी. ओ. एस. इन.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दीतर प्रान्तों के नव हिन्दी लेखक केरल के शिक्षा मंत्री श्री० टी. एम. जेकब के साथ

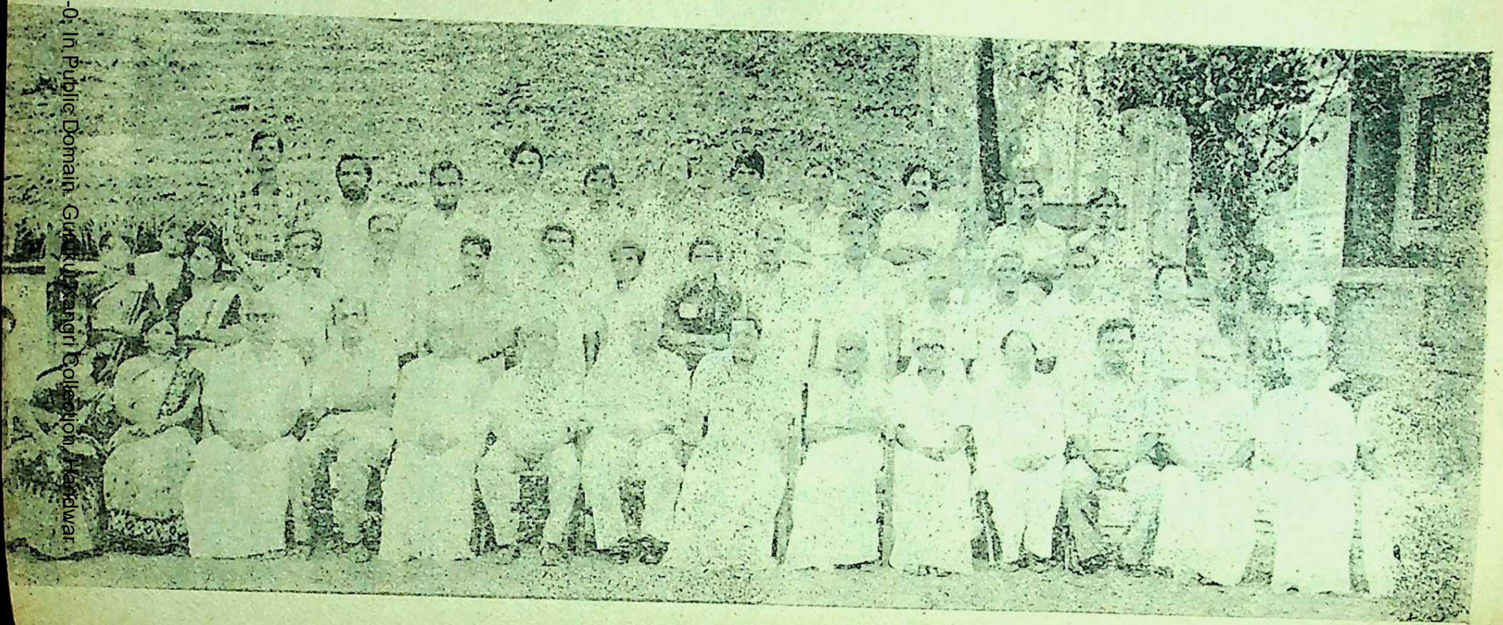

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अखिल भारतीय हिन्दीतर नव हिन्दी लेखक शिविर, तिरुवनन्तपुरम ।

२५ से ३१ अक्तूबर १९८२

(केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, शिक्षा एवं संस्कृति मंत्रालय, नई दिल्ली और केरल हिन्दी प्रचार सभा, तिरुवनन्तपुरस के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित)

बैठे हैं—(बाएँ से) श्रीमती सुशीला कुलकर्णी, कु० एल. शोभाकुमारी, श्री० आर. सुकुमारन नायर (सह संपादक, केरल ज्योति), प्रो० एम. जनार्दनन पिल्लै (कोषाध्यक्ष, केरल हि० प्र० सभा), प्रो० पी. जे. जोसफ (उपाध्यक्ष, केरल हि० प्र० सभा), डा० पी. के. नारायण पिल्लै (भूतपूर्व अध्यक्ष, केरल हि० प्र० सभा), श्री० के. आर. करण (सहायक शिक्षा अधिकारी, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय), श्री० टी. एम. जेकब (शिक्षा मंत्री, केरल), श्री० एस. वी. कुक्किल्लाया (अध्यक्ष, केरल हि० प्र० सभा), श्री० एम. के. वेलायुधन नायर (शिविर निदेशक एवं मंत्री, केरल हि० प्र० सभा), श्री० सतपाल (केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय), डा० जे. एल. रेड्डी (दिल्ली विश्वविद्यालय), प्रो० सी. जी. राजगोपाल, श्री० के. जी. बालकृष्ण पिल्लै (संपादक, केरल ज्योति), श्री० वी. के. एस. नपूतिरी

खड़े हैं—प्रथम पंक्ति (बाएँ से) कु० जे. अंबिकादेवी, कु० सुनन्दा, कु० जे. रेणुका, सर्वश्री प्रदीप अर्पलिंगीकर, प्रभाशंकर, सतीश कुमार, जनार्द्दन राव, डी. बी. जगत्पुरिया, तपनकुमार बराल, एस. मल्लारेड्डी, ए. सुब्रमणियन, सदाशिव कुलकर्णी, मी. बालसुन्दरम, जी. कृष्णमूर्ति, सुभाष शर्मा

खड़े हैं—द्वितीय पंक्ति (बाएँ से) सर्वश्री जयभगवान शर्मा, जी. जयकुमार, विद्यासागर, वंकटेश्वर रेड्डी, राजकमल जायसवाल, मनोज शर्मा, महादेव भीमराव भगत, रामचन्द्र बोडखे, तुँपमण तंकप्पन, के. शशिधर कुरुप, इ. नरसिमलु 'विद्या-रत्न'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Reg. No. KL/(S)/29
December 1982

Keral Jyoti

Vol. XVII-N
Price : Re. 1

A monthly Publication of Kerala Hindi Prachar Sabha

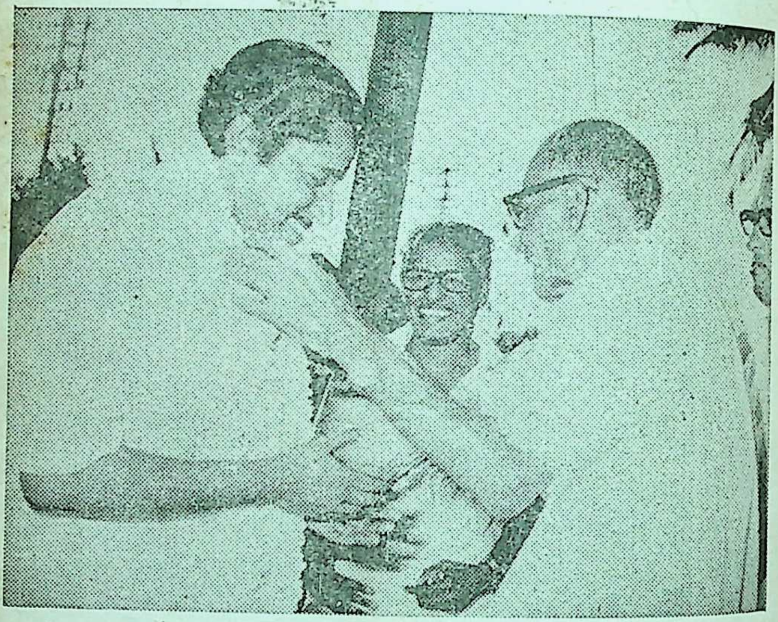

हिन्दीतर नव हिन्दी लेखक शिविर के प्रतिभागियों से मिलने के लिये केरल के शिक्षा मंत्री श्री० टी. एम. जेकब २९–१०–१९८२ को सभा-भवन में पधारे । शिक्षा मंत्री को हारार्पण कर रहे हैं केरल हिन्दी प्रचार सभा के अध्यक्ष श्री० एस० वी० कुंविकल्लाया ।

केरल हिन्दी प्रचार सभा, तिरुवनन्तपुरम–६९५ ०१४ केलिए श्री० एम. के. वेलायुधन नायर द्वारा प्रकाशित
मुद्रक: राष्ट्रवाणी मुद्रणालय, केरल हिन्दी प्रचार सभा, तिरुवनन्तपुरम–१४. सम्पादक : के. जी. बालकृष्ण पि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केरल ज्योति

FREE

18-1-83

FREE

ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः

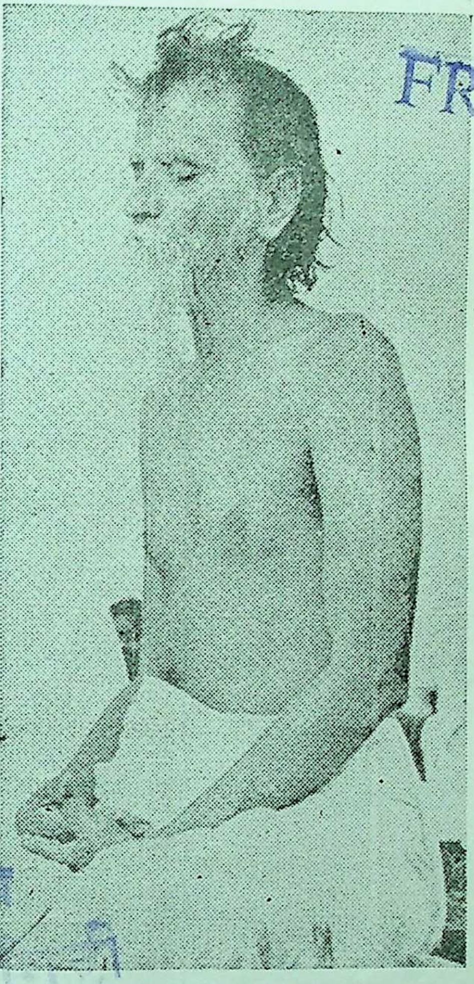

जीवनं सत्यशोधनम्

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी

ब्रह्मलीन संत विनोबाजी

केरल हिन्दी प्रचार सभा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केरल ज्योति

* प्रधान संपादक

प्रो० पी. जे. जोसफ़

* संपादक

श्री० के. जी. बालकृष्ण पिल्लै

* सह संपादक

श्री० आर. सुकुमारन नायर

* संपादक मण्डल

श्री० वी. के. गोपालन नायर

प्रो० एम. जनार्द्दनन पिल्लै

श्री० के. वी. कृष्णनकुट्टी

श्री० एम. के. वेलायुधन नायर

❀

* विज्ञापन दर

		मासिक	वार्षिक
आवरण पृष्ठ ४	रु.	५०० ००	५००० ००
आवरण पृष्ठ २ एवं ३	रु.	४०० ००	४००० ००
साधारण पृष्ठ पूरा	रु.	३०० ००	३००० ००
साधारण पृष्ठ ½	रु.	१७५ ००	१७५० ००
साधारण पृष्ठ ¼	रु.	१०० ००	१००० ००

❀

* पत्र व्यवहार का पता।

मंत्री,

केरल हिन्दी प्रचार सभा

तिरुवनन्तपुरम-६९५ ०१४

केरल

तार:—"जय हिन्दी"

फोन: ६१३७८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केरल ज्योति

पुष्प: १७

दल: १०

जनवरी १९८३

सांस्कृतिक जागरण की मासिक पत्रिका

संपादकीय

जय जगत

पवनार के ऋषि विनोबाजी अब पंच तत्वमय काया के बंधन से मुक्त हो गये हैं। वे सूक्ष्मतम होकर संपूर्ण जगत के हृदय में व्याप्त हो गये हैं। उन के चिन्तन का प्रभाव और भी शीघ्रता से अभिव्यक्त होने लगेगा।

विनोबाजी ने गान्धीजी की विचार धारा की व्याख्या ही नहीं की, उसका विकास भी किया। सत्यान्वेषण का जो सबक आपने गान्धीजी से सीखा उस का अंत तक अनुसन्धान करते रहे।

भारत का गाँव गाँव उनके पाद स्पर्श से परिपूत हो गया है। मैत्री और करुणा की उन्होंने भारतीय हृदय में पुनः प्राण प्रतिष्ठा की।

विनोबाजी स्वयं हिन्दी के प्रचारक भी थे। यद्यपि उन की मातृभाषा मराठी थी तो भी हिन्दी को ही उन्होंने अपनी अभिव्यक्ति का मुख्य माध्यम बनाया था। भूदान यज्ञ में उन्होंने भारत के गाँव गाँव में हिन्दी में ही भाषण दिया। हिन्दी की महानता और उपयोगिता के संबंध में उन्होंने अपने स्पष्ट विचार बार बार व्यक्त किये। हिन्दीवालों से जब उन्होंने कहा कि हिन्दी हिन्दीतर जातियों पर नहीं थोपें तब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस अंक में

विनोबा भावे 3
महात्मा गाँधी
विनोबाजी मनीषियों की दृष्टि में 6
विनोबाजी के जीवन की तीन झलकियाँ 7
ब्रह्मलीन होना विनोबा का 9
दादा धर्माधिकारी
विनोबाजी के जीवन की कुछ प्रमुख घटनायें 10
विनोबाजी की दृष्टि में हिन्दी 12
'बाबा' कुटी से 'बाबाकुटी' में 13
शरत कुमार साधक
अपनी बात 20
एम. के. वेलायुधन नायर
चेहरा कहाँ 27
मूल: विष्णुनारायणन नम्पूतिरी
अनुवाद: वी. के. एस. नम्पूतिरी
कर्ण भूषणम् 29
मूल: महाकवि उल्लूर
अनुवाद: कवियूर शिवराम अय्यर
पुरस्कार वितरणोत्सव 35
भारत की जनता हिन्दी को स्वीकार कर चुकी है 43
एम. पी. गंगाधरन
केरल हिन्दी के पक्ष में है 46
टी. एम. जेकब
हिन्दी प्रचार में व्यवधान न हो 49
पी. के. थुंगन
डॉ० पी. के. नारायण पिल्लै केन्द्र साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत 52

हिन्दीतर प्रान्तियों से उन्होंने यही कहा कि वे प्रेम से हिन्दी को अपनायें और हिन्दी के जरिये भारतीयता का विकास करें ।

दक्षिण की भाषाओं के प्रति उनका बडा स्नेह और आदर था । उन्होंने दक्षिण की भाषायें और लिपियाँ सीखीं और उत्तरवालों से आह्वान किया कि वे दक्षिण की भाषायें भी स्वेच्छापूर्वक सीखें ।

जोडलिपि के रूप में नागरी लिपि के प्रचार केलिए भी आपने भरसक प्रयत्न किया । उन का विश्वास था कि 'हिन्दुस्तान की एकता केलिए हिन्दी भाषा जितना काम देगी उससे बहुत ज़्यादा काम देवनागरी लिपि देगी ।'

दक्षिणवालों पर उन्होंने एक विशेष कार्य सौंपा है वह यही है कि वे हिन्दी सीख कर हिन्दी के द्वारा भारतीयता के विकास में उत्तर का मार्गदर्शन करें । समस्त हिन्दी कार्यकर्ताओं पर आपने जो दायित्व सौंपा है वह इस से भी अधिक भारी है । उनका आदेश है कि हिन्दी प्रचारक विश्व के कोने कोने में हिन्दी के द्वारा सर्वोदय विचार धारा को फैलायें ।

उनकी ब्रह्मलीन आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए हम यह संकल्प दृढ कर लें कि हम नागरी लिपि और हिन्दी के द्वारा भारत की एकता को सुदृढ करने और विश्वबन्धुत्व का मार्ग प्रशस्त करने केलिए अपने को निरन्तर प्रेरित करते रहें । जय जगत ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विनोबा भावे

[अपने आत्मीय उत्तराधिकारी संत विनोबाजी के व्यक्तित्व की विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए ३-३-१९४६ के 'हरिजन सेवक' में महात्मा गाँधी ने जो प्रौढ गंभीर लेख लिखा था वह यहाँ साभार उद्धृत है ।]

श्री० विनोबा भावे कौन हैं ? मैंने उन्हें ही सत्याग्रह के लिए क्यों चुना ? और किसी को क्यों नही ? मेरे हिन्दुस्तान लौटने पर सन् १९१६ में उन्होंने कालिज छोड़ा था। वह संस्कृत के पंडित हैं। उन्होंने आश्रम में शुरू से ही प्रवेश किया था। आश्रम के सबसे पहले सदस्यों में से वह एक हैं। अपने संस्कृत के अध्ययन को बढ़ाने के लिए वह एक वर्ष की छुट्टी लेकर चले गये। एक वर्ष के बाद ठीक उसी घड़ी, जबकि उन्होंने एक वर्ष पहले आश्रम छोड़ा था, चुपचाप आश्रम में आ पहुँचे। मैं तो भूल ही गया था कि उन्हें उस दिन आश्रम में वापस पहुँचना था। वह आश्रम में सब प्रकार की सेवा प्रवृत्तियों—रसोई से लगाकर पाखाना सफाई तक—में हिस्सा ले चुके हैं। उनकी स्मरणशक्ति आश्चर्यजनक है। वह स्वभाव से ही अध्ययनशील हैं। पर अपने समय का ज्यादा-से-ज़्यादा हिस्सा वह कातने में ही लगाते हैं और उसमें ऐसे निष्णात हो गये हैं कि बहुत ही कम लोग उनकी तुलना में रखे जा सकते हैं। उनका विश्वास है कि व्यापक कताई को सारे कार्यक्रम का केन्द्र बनाने से ही गाँवों की गरीबी दूर हो सकती है। स्वभाव से ही शिक्षक होने के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कारण उन्होंने श्रीमती आशादेवी को दस्तकारी के द्वारा बुनियादी तालीम की योजना को विकास करने में बहुत योग दिया है। श्री० विनोबा ने कताई को बुनियादी दस्तकारी मानकर एक पुस्तक भी लिखी है। वह बिल्कुल मौलिक चीज़ है। उन्होंने हँसी उड़ानेवालों को भी यह सिद्ध करके दिखा दिया है कि कताई एक ऐसी अच्छी दस्तकारी है जिसका उपयोग बुनियादी तालीम में बखूबी किया जा सकता है। तकली कातने में तो उन्होंने क्रान्ति ही ला दी है और उसके अन्दर छिपी हुई तमाम शक्तियों को खोज निकाला है। हिन्दुस्तान में हाथ-कताई में इतनी संपूर्णता किसीने प्राप्त नहीं की जितनी कि उन्होंने की है।

उनके हृदय में छुआछूत की गंध तक नहीं है। साम्प्रदायिक एकता में उनका उतना ही विश्वास है जितना कि मेरा। इस्लाम धर्म की खूबियों को समझने केलिए उन्होंने एक वर्ष तक कुरान शरीफ का मूल अरबी में अध्ययन किया। इसके लिए उन्होंने अरबी भी सीखी। अपने पड़ोसी मुसलमान भाइयों से अपना सजीव संपर्क बनाये रखने के लिए उन्होंने इसे आवश्यक समझा।

उनके पास उनके शिष्यों और कार्यकर्ताओं का एक ऐसा दल है जो उनके इशारे पर हर तरह का बलिदान करने को तैयार है। एक युवक ने अपना जीवन कोढ़ियों की सेवा में लगा दिया है। उसे इस काम केलिए तैयार करने का श्रेय श्री० विनोबा को ही है। औषधियों का कुछ भी ज्ञान न होने पर भी अपने कार्य में अटल श्रद्धा होने के कारण उसने कुष्ठ रोग की चिकित्सा को पूरी तरह समझ लिया है। उसने उनकी सेवा के लिए कई चिकित्सा घर खुलवा दिये हैं। उसके परिश्रम से सैकड़ों कोढ़ी अच्छे हो गये हैं। हाल ही में उसने कुष्ठ-रोगियों के इलाज के सम्बन्ध में एक पुस्तिका मराठी में लिखी है।

विनोबा कई वर्षों तक वर्धा के महिला-आश्रम के संचालक भी रहे हैं। दरिद्रनारायण की सेवा का प्रेम उन्हें वर्धा के पास के एक गाँव में खींच ले गया। अब तो वह वर्धा से पाँच मील दूर पौनार नामक गाँव में जा बसे हैं और वहाँ से उन्होंने अपने तैयार किए हुए शिष्यों के द्वारा गाँववालों के साथ सम्पर्क स्थापित कर लिया है। वह मानते हैं कि हिन्दुस्तान केलिए राजनैतिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वतन्त्रता आवश्यक है। वह इतिहास के निष्पक्ष विद्वान हैं। उनका विश्वास है कि गाँववालों को रचनात्मक कार्यक्रम के बगैर सच्ची आज़ादी नहीं मिल सकती और रचनात्मक कार्यक्रम का केन्द्र है खादी। उनका विश्वास है कि चरखा अहिंसा का बहुत ही उपयुक्त बाह्य चिह्न है। उनके जीवन का तो वह एक अंग बन गया है। उन्होंने पिछली सत्याग्रह की लड़ाइयों में सक्रिय भाग लिया था। वह राजनीति के मंच पर कभी लोगों के सामने आये ही नहीं। कई साथियों की तरह उनका यह विश्वास है कि सविनय आज्ञा-भंग के अनुसंधान में शान्त रचनात्मक काम कहीं ज्यादा प्रभावकारी होता है, इसकी अपेक्षा कि जहाँ आगे ही राजनैतिक भाषणों का अखण्ड प्रवाह चल रहा है वहाँ जाकर और भाषण दिये जायें। उनका पूर्ण विश्वास है कि चरखे में हार्दिक श्रद्धा रखे बिना, रचनात्मक कार्य में सक्रिय भाग लिये बगैर अहिंसक प्रतिकार सम्भव नहीं।

श्री० विनोबा युद्ध मात्र के विरोधी हैं। परन्तु वह अपनी अन्तरात्मा की तरह उन दूसरों की अन्तरात्मा का भी उतना ही आदर करते हैं जो युद्ध मात्र के विरोधी तो नहीं हैं, परन्तु जिनकी अन्तरात्मा इस वर्तमान युद्ध में शरीक होने की अनुमति नहीं देती। अगरचे श्री० विनोबा दोनों दलों के प्रतिनिधि के तौर पर हैं यह हो सकता है कि सिर्फ हाल के इस युद्ध में विरोध करनेवाले दल का खास एक और प्रतिनिधि चुनने की मुझे आवश्यकता अनुभव हो।

विनोबा लिख सकते हैं मगर वह कभी न लिखेंगे। शास्त्र रचना के लिए समय निकालना उनकी दृष्टि में अधर्म होगा। मैं भी उसे अधर्म समझूँगा। संसार को शास्त्र की भूख नहीं, सच्चे कर्म की है और हमेशा रहेगी। जो इस भूख को मिटा सकता है, वह शास्त्र-रचना में न पड़े।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विनोबाजी मनीषियों की दृष्टि में

तुम्हारे लिए कौन सा विशेषण काम में लाऊँ, यह मुझे नहीं सूझता। तुम्हारा प्रेम और चरित्र मुझे मोह में डुबो देता है। तुम्हारी परीक्षा करने में मैं असमर्थ हूँ।···तुमने जो पिता का पद दिया है··· उस पद के योग्य बनने का प्रयत्न करूँगा और अब मैं हिरण्यकशुपु होऊँ तो प्रह्लाद भक्त के समान मेरा सादर निरादर करना।

महत्मा गान्धी

प्राचीन काल से इस देश में सन्तों की जो परम्परा चली आयी है, विनोबाजी उस शृंखला के एक अमूल्य रत्न है।··· हमें उनके उपदेशों को ग्रहण कर उन के बताये हुए मार्ग पर चलने का प्रयत्न चाहिए।

बाबू राजेन्द्र प्रसाद

आचार्य विनोबा भावे ने···प्रेम के कानून के ऊपर अपनी श्रद्धा आधारित की है और यह प्रेम का ही कानून सब से ऊँचा है।

डा० सर्वपल्ली राधाकृष्णन

विनोबाजी इस वक्त ज़मीन मांग रहे हैं।...उनका काम एक इन्कलाबी काम है। हम सब की उस में जी जान से हाथ बंटाना है।

डा० ज़ाकिर हुसेन

मैं थोडा बहुत दुनिया के और देशों से परिचित हूँ।...लेकिन जब कभी मैं सोचता हूँ किसी और देश में विनोबा जैसा आदमी है या नहीं, तो मुझे कोई नजर नहीं आता।...

पं० जवाहरलाल नेहरु

श्री विनोबाजी गणितज्ञ हैं। गणितज्ञ होने के कारण ही वह अच्छे अध्यापक बने। गणितज्ञ होने के कारण ही उन्होंने खादी शास्त्र को वेग दिया। गणित-बुद्धि ने ही उन से स्वराज्य शास्त्र लिखवाया। गणित-बुद्धि का विकास हो कर ही उन में दार्शनिकता आ गयी।

काका कलेलकर

अंधेरा और भी सघन हो चला। इतने में विनोबा ने एक ज्योति जलायी। भारत और दुनिया ने पहचान लिया कि यह उसी चिराग की लौ है जो ३० जनवरी १९४८ को हमेशा के लिए बुझ गया, ऐसा लगता था।

जयप्रकाश नारायण

देश का सौभाग्य है कि परम पूज्य बापू के अनन्तर सत प्रवर पूज्य विनोबा उसे नया प्रकाश दे रहे हैं। उनकी परंपरा ज्ञानेश्वर और तुकाराम आदि संतों को है।

मैथिलीशरण गुप्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विनोबाजी के जीवन की तीन झलकियाँ–

एकाग्रता

एक बार नागपुर जेल में विनोबा ने अपनी एकाग्रता का एक संस्मरण सुनाया। उस दिन प्रसंगवश एकाग्रता की ही चर्चा चल पडी थी। उन्होंने कहा, "मेरे लिए एकाग्रता अत्यन्त सहज रही है। उसकेलिए मुझे विशेष प्रयत्न नहीं करना पडता। एक दिन की बात है। मैं पवनार के बंगले की सीढी पर बैठकर कुछ पढ रहा था। बंगला नदी की सतह से २५–३० फुट की ऊँचाई पर बना है। उन दिनों मोटर से ऊदर तक आने लायक रास्ता बन चुका था। कभी कभी स्वर्गीय श्री जमनालालजी बजाज अपनी पुरानी फोर्ड मोटर लेकर मिलने आया करते थे। चढ़ाई चढते समय मोटर से ज़ोर की आवाज़ होना स्वाभाविक ही था। श्री जमनालालजी की मोटर जोर की भर्राहट के साथ ऊपर

दुर्बल अस्वस्थ शरीर विनायक (बिनोबा) के कठोर श्रमशील किंतु शिकायत रहित चर्या और परिचर्चा से प्रभावित हो कर महात्मा गांधी ने एक दिन पूछा—"इतने दुर्बल हो रहे हो फिर भी इतना सारा काम कैसे कर लेते हो ?"

गिने चुने शब्दों में अथाह गहराई लिये उत्तर था—"काम करने की इच्छा शक्ति से।"

माखनलाल चतुर्वेदी

वेदान्त को मानवधर्म की आधार शिला के रूप में संसार के सामने रखने का जो प्रयत्न वर्तमान युग में विवेकानन्द, रामतीर्थ, केशवचन्द्र सेन, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, भगवानदास, राधाकृष्णन प्रभृति संतों और विद्वज्जनों ने प्रारंभ किया उसे एक डग और आगे ले आने का काम विनोबा कर रहे हैं।

बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'

विनोबा भावे ने भूपतियों को बताया है, जैसा कि गांधीजी ने अंग्रेजों को बताया था, कि अपने अन्यास और दमन से उन्हें जितनी हानि पहुँच रही है, उतनी उन व्यक्तियों को नहीं, जो उनके अन्याय और दमन के शिकार हो रहे हैं।

चेस्टर बौल्स

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओर मैं जिस सीढी पर बैठकर पढ रहा था, उससे दो तीन फुट दूर हटकर रुकी । मोटर के दरवाजे खुले, बन्द हुए । इंजन ने जोर की आवाज भी की। पर मैं जिस प्रकार सिर नीचे किए पढ रहा था, उसी प्रकार पढ़ता रहा । श्री जमनालाल जी पाँच मिनट ठिठककर खडे रहे । अन्त में किसी कारण से मैं ने अपना सिर ऊपर उठाया, तो मुझे जमनालालजी खडे दिखाई दिए" । मैंने उनसे कहा, "मुझे पता नहीं चला कि आप आए हैं ।"

नारायणदास जाजू

अनासक्ति

एक बार कई मित्र विनोबाजी के साथ महिलाश्रम, वर्धा के सामने की सडक पर घूमने जा रहे थे । रास्ते में किसी को सोने की अंगूठी पडी दिखाई दी । वह उसने उठायी और विनोबा को देनी चाही । विनोबा इसका उपयोग दरिद्रनारायण की सेवा में कर लेंगे ऐसी सबकी धारणा थी । विनोबा ने उसे छुआ तक नहीं । बोले, "जहाँ" वह पडी थी वहीं डाल दो । वैसा ही किया गया । अनासक्त भाव का कितना अनुपम उदाहरण है यह !

ठाकुरदास बाग

विनोदी विनोबा

विनोबाजी ने दक्षिण भारत में हिन्दी विरोधी आन्दोलन से दुःखी होकर आमरण अनशन शुरू कर दिया था ! उनके अनशन से देश में घबराहट फैल गयी और उनका स्वास्थ्य खराब हो गया । श्री० गुलजारीलाल नन्दा उनको समझाने केलिए दिल्ली से दौडे आये। अनशन समाप्त हुआ । उसके कुछ समय बाद उन्हें टाइफाइड हो गया। कोई कहता, एलोपैथी का इलाज हो कोई, कहता होमियोपैथी का कोई कहता नेचरोपैथी का। मैं पूछ बैठा, 'बाबा, आप कौनसी पैथी पसन्द करते हैं?" उन्होंने उत्तर दिया, "मैं सिम्पैथी में विश्वास करता हूँ।"

उमाशंकर शुक्ल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रह्मलीन होना विनोबा का

दादा धर्माधिकारी

> उनकी देह अपने आप विसर्जित हो गयी—वे परमात्मा में लीन हो गए।

[दिनांक १५ नवंबर १९८२ को पवनार आश्रम में राष्ट्रसंत विनोबाजी ब्रह्मलीन हो गये। उन्होंने शरीर त्याग की जो प्रक्रिया अपनायी उसे जैन परम्परा का संथारा, स्वेच्छा मरण और समाधि लेना आदि कहा जा रहा है। लेकिन विनोबाजी ने अपने महा प्रयाण से पूर्व इस बारे में कुछ भी नहीं कहा है। अतः उनके द्वारा इस प्रकार मरण का वरण आज भी जिज्ञासामय बना हुआ है। सर्वोदय प्रेस सर्वीस प्रतिनिधि द्वारा आचार्य दादा धर्माधिकारी से ली गई भेंट वार्ता में दादा ने जो उद्गार प्रकट किए वे नीचे दिये जा रहे हैं। आशा है पाठकों को समाधान कारक लगेंगे।]

विनोबा की साधना विश्वमानव की थी। वह परिपक्वता हो गयी थी। उसका अगला चरण था परमात्म स्वरूप होना। लोकमान्य तिलक ने भगवत् गीता रहस्य के समर्पण के श्लोक में भगवान के जनतात्म स्वरूप का आह्वान किया है। उनके उत्तराधिकारी गांधी ने विश्वात्मा की आराधना की। अब इससे आगे (ऊपर) परमात्मा ही रह जाता है। हिन्दी व्याकरण में प्रथम पुरुष को उत्तम पुरुष कहा है और गीता के पन्द्रहवें अध्याय में उत्तम पुरुष इनसे अन्य हैं, उसका नाम परमात्मा है। तो प्रथम पुरुष और अन्य पुरुष, प्रथम तथा मध्यम पुरुष अर्थात् मैं, तू और वह तीनों पुरुषों में सायुज्य हो जाता है। तो तीनों पुरुष उत्तम पुरुष बन जाते हैं। विनोबा ने अंत में केवल 'रामहरि' का ही मंत्र दिया। यह मंत्र जयहिन्द, जयजगत और जय चराचर विश्व के संकेत के रूप में दिए। और उसी मंत्र से तादात्म्य की निष्ठा में उनका प्रस्थान हुआ। प्रस्थान के समय साधना पूर्ण हो गई थी। साधना जब परिपूर्ण हो जाती है तो उसमें संकल्प नहीं होता। साधना ही स्वभाव बन जाती है। तो विनोबा के बारे में यह कह सकते हैं कि उनकी देह अपने आप विसर्जित हो गयी—वे परमात्मा में लीन हो गए। उनकी मृत्यु न तो सदेह समाधि है, न संथारा है और न शरीर विसर्जन हीं है। इन तीनों प्रकार के मरणों में संकल्प और प्रयत्न है। परंतु जब पेड़ पर फल परिपक्व हो जाता है तब वह वृक्ष की शाखा से टूटकर गिर पडता है। संयोग से वह फल भगवान के चरणों में भी गिर सकता है, अपने आप समर्पित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विनोबाजी के जीवन की कुछ प्रमुख घटनायें

११-९-१८९५ गागोदा (कुलाबा, महाराष्ट्र) में जन्म

१९०३ ज्ञानेश्वरी का मराठी अनुवाद पढना आरंभ किया।

१९०५ विद्यार्थी मंडल की स्थापना।

१९०७ आजन्म ब्रह्मचारी बनने का नियम।

४-२-१९१६ गान्धीजी के साथ पत्र व्यवहार

७-६-१९१६ गान्धीजी के आश्रम में प्रवेश

१९१७ आश्रम से छुट्टी लेकर दर्शन ग्रंथों का अध्ययन

१९१८ गान्धीजी के आश्रम में पुनःप्रवेश

८-४-१९२१ सत्याग्रह आश्रम की शाखा के संचालन केलिए वर्धा आगमन।

हो जाता है उस तरह से विनोबा का जर्जर नहीं, परिपक्व शरीर अपने आप समर्पित हो गया। परंतु परिपक्व होने की प्रक्रिया भी फल में अपने आप होती होगी तभी वह वृक्ष से नीचे गिरता है। सारा पोषण छोड़ देता है—विश्वात्मा से परमात्मा में विलीन होने की प्रक्रिया भी कुछ इसी प्रकार की है। विनोबा का ब्रह्मलीन होना इसी कोटी का है।

१९२३ जनवरी-अप्रैल 'महाराष्ट्र धर्म' मासिक में उपनिशदों पर लेखमाला

१३-४-१९२३ नागपुर झंडा सत्याग्रह का सचालन-चार मास का कारावास

१९२४ संत तुकाराम के अभंगों पर लेखमाला

१९२५ वैक्कम सत्याग्रह (केरल) का निरीक्षण

१९२६ वर्धा में राष्ट्रीय विद्यामंदिर की स्थापना, उसका संचालन

१९३२, ७ जनवरी से १४ जुलाई धुलिया जेल में निवास, गीताई प्रकाशित

२५-१२-१९३२ हरिजनबस्ती नालवाडी में निवास प्रारंभ

६-५-१९३४ वर्धा में ग्राम सेवा मंडल की स्थापना

१९३५ कुरानशरफका अध्याय 'न आरंभ' बर्धा में महारोगी सेवामंडल की स्थापना की प्रेरणा।

१९३६ मई, सेवाग्राम में स्थायी निवास प्रारभ

७-३-१९३८ स्वास्थ्य सुधार केलिए पवनार आगमन

१९४०-४१ व्यक्तिगत सत्याग्रह केलिए गांधीजी द्वारा प्रथम सत्याग्रही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घोषित । तीन बार सत्याग्रह और जेलयात्रा ।

१९४२-४३ 'भारत छोडो' आन्दोलन में गिरफ्तारी । बीस दिन का उपवास । दक्षिण की चारों भाषाओं का लिपि सहित अध्ययन । स्थित प्रज्ञ दर्शन पर प्रवचन ।

१९४५ पत्र-व्यवहार आदि केलिए लोक-नागरी लिपि का आरंभ

२-४-१९४६ सुरगाँव में भंगी कार्य आरंभ

१९४६-४७ ज्ञानदेव चिन्तनिका लेखन

२९-१०-१९४७ पिता श्री नरहरि भावे का देहांत । पिताजी के नाम पर बैंक में जमा २७ हज़ार की राशि ग्राम सेवा मंडल को दान । जन्म स्थान गागोदा की २५ एकड भूमि भूमिहीनों को वितरित ।

१९४८ लोकनागरी लिपि में 'सेवक' मासिक का प्रकाशन सर्वसेवा संघ की स्थापना ।

१९४९ केरल और दिल्ली का प्रवास । 'सर्वोदय' मासिक का आरंभ तथा संपादन ।

१९५० कांचन मुक्ति का प्रयोग । ऋषि खेती का आरंभ ।

१८-४-१९५१ पोचम पल्ली (तैलंगाना) में श्री रामचन्द्र रेड्डी द्वारा सौ एकड भूमि का प्रथम दान ।

१९-४-१९५१ भूदान यज्ञ का आरंभ

४ जुलाई से ११ सितंबर १९५१ गोस्वामी तुलसीदास तथा विनय पत्रिका पर प्रवचन ।

१९-१२-१९५३ वैद्यनाथधाम (सेथाल बिहार) में मंदिर के पंडों द्वारा प्रहार ।

१९५४ २५ लाख एकड भूदान की संकल्प पूर्ति । अहिंसक क्रान्ति केलिए जीवन समर्पण ।

१९५५ भागवत के एकादश-स्कंध का चयन (भागवत धर्म सार नाम से प्रकाशित) सामूहिक ध्यान का आरंभ ।

१९५७ केरल परिक्रमा । कल्लरा में बिशपों के सम्मेलन में उद्बोधन । वैक्कम में पुनरागमन । कालटी में सर्वोदय सम्मेलन । कोषिकोट में शाति सेना की घोषणा । मंजेश्वरम में शांतिसेना की स्थापना ।

२९-५-१९५८ अखिल भारतीय शांति समिति की स्थापना ।

१५-८-१९६० इन्दौर में विसर्जन आश्रम की स्थापना ।

१२-२-१९६५ भाषा के प्रश्न पर दक्षिण भारत में हिंसा होने पर उपवास आरंभ ।

७-६-१९६६ सूक्ष्म कर्मयोग आरंभ ।

७-६-१९७० ब्राह्मविद्या मंदिर में निवास । सूक्ष्मतर कर्मयोग का आरंभ ।

१५-११-१९८२ पवनार आश्रम में ब्रह्मलीन हो गये ।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विनोबाजी की दृष्टि में हिन्दी

[विनोबाजी हिन्दी की सीमाओं और संभावनाओं के संबंध में कितनी दूरदर्शिता से सोचते थे, उस का संकेत यहां उद्घृत उनके कथनों से स्पष्ट है]

प्रेम से प्रचार हो

गान्धीजी हिन्दी के जरिए भारत की आत्मीय एकता का विकास करना चाहते थे।...जनता प्रेम से हिन्दी पढने लगी। ......मैं आन्ध्र, तमिलनाड और केरल का भ्रमण करते हुए यहाँ पहुँचा हूँ। मैंने देखा कि इन प्रान्तों में लोग प्रेम से हिन्दी पढ रहे हैं। लेकिन आज वे यह सोच कर घबराने लगे हैं कि कानून के बल पर उनपर हिन्दी थोपी जायेगी। यह घबराहट स्वाभाविक है। मैं उन्हें निर्भय बनाना चाहता हूँ। मेरे अधीन न शासन है न अधिकार। तो भी भारत और सर्वोदय के प्रतिनिधि के रूप में और निजी तौर पर मैं उन्हें निडर बनाना चाहता हूँ। दक्षिण में बलपूर्वक हिन्दी थोपना संभव नहीं। और यदि ऐसा करने का विचार हो तो सर्वोदय उसके विरुद्ध रहेगा। यह बात नहीं कि जनता हिन्दी अध्ययन को भला नहीं मानती। बल-पूर्वक थोपने की बात सुन कर लोग घबराते हैं। इसलिए हिन्दी धीरे धीरे प्रेमपूर्वक ही आये।

सर्वोदय का प्रचार हिन्दी द्वारा

भारत में सर्वोदय का प्रचार करने की सुविधा और दायित्व केवल हिन्दी प्रचारकों का है।...हिन्दी प्रचारक जहां भी जायें, वे हिन्दी को सर्वोदय के प्रचार का माध्यम बना सकते हैं।...यदि हिन्दी सर्वोदय विचार के प्रचार का माध्यम बनेगी तो संस्कृत के समान हिन्दी दुनिया भर में फैलेगी और उसे वैसा ही श्रेष्ठ स्थान मिलेगा जैसा संस्कृत को मिला है।...जिस प्रकार संस्कृत अध्यात्मिक विचारों की वाहिनी बनी उसी प्रकार यदि हिन्दी सर्वोदय विचार की वाहिनी बनेगी तो हिन्दी की समस्या कोई बडी समस्या नहीं रहेगी।

विदेशों में भी हिन्दी अपनायी जाये

यह बहुत महत्वपूर्ण बात है कि भारत राष्ट्रमंडल में सम्मिलित हुआ है। केवल प्रेम ही इस बिरादरी की प्रेरणा है। मेरी राय है कि इंग्लैंड जैसे देश द्वितीय भाषा के तौर पर हिन्दी को स्वीकार करें और पारस्परिक स्नेह में इस से लाभ उठायें।...मैं चाहता हूँ अंग्रेजी का जो स्थान इस देश में है वही स्थान इंग्लैंड में हिन्दी को दिया जाये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ाबा' कुटी से ाबा कुटी' में

शरत कुमार साधक

ाबा विनोबा के तेजस्वी मुख ल की झाँकी करनेवालों की तें लग गयीं। हजारों नेत्र अपलक दरवाजों के खुलने के इन्तजार ो रहे, जिनसे बाबा की क्षरकाया ाहर लाया जाना था।

विनोबा जैसे बाबा कुटी में शान्त और मुस्कुराते हुए लेटे थे वैसे ही ब्रह्मविद्या मन्दिर के 'त्यागपथ' पर रखी चौकी पर लेटे नजर आये।

'बोलो मेरी रसना राम हरि' की ध्वनि के साथ ब्रह्मविद्या मन्दिर की बहनें जिस तन्मयता से कीर्तन कर रही थीं, उसे अनसुना कर भला कोई कैसे अश्रु का अर्घ्य देता ? आँखों ही आँखों में १५ नवम्बर को दीपवली के दिन आधुनिक शलाका पुरुष को श्रद्धा अर्पित करनेवाले लोगों ने सब कुछ कह-सुन लिया। क्योंकि, बालभाई ने पहली ही सूचना

ी का विशेष स्थान

द्यपि हिन्दी अधिक समृद्ध भाषा ें है तो भी वह भारत की बुनियादी ा है···वह एक समृद्ध भाषा की पुत्री अन्य कई समर्थ भाषाओं की बहिन सर्वोपरि, स्नेह और धर्म के प्रचार ाध्यम है।

ी का व्याकरण णवाले लिखें

हिन्दी ललित संस्कृत है। सभी शब्द त के हैं। केवल कारक का-के-की ही अन्तर है। अब यदि व्याकरण णवाले रचें तो हिन्दी भाषा सब से र भाषा बनेगी।

अब दक्षिण की बारी है

स्वराज्य प्राप्ति के साथ एक अध्याय समाप्त हुआ। अब दक्षिण की बारी है। आज केन्द्र मंत्रियों के अलावा और कोई उत्तर से यहाँ नहीं आते।··· उत्तर भारत की अपेक्षा दक्षिण अधिक प्रशान्त है। कहा जा सकता है कि शान्तिचिन्तन ही दक्षिण का है। शुद्ध भारतीयता भी यहीं मिलती है। इन सब बातों पर विचार करने पर लगता है कि दक्षिण ही अब उत्तर भारत को राह दिखायेगा। जब दक्षिण वाले हिन्दी सीख लेंगे तो वे यह कर्तव्य तुरन्त निभायेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में बता दिया था कि 'महावीर का अवतार समाप्त।'

श्री जयदेव भाई, कुसुम ताई, महादेवी ताई, बालभाई आदि यों तो बरसों से ही साथ थे पर पिछले कुछ दिनों से वे बाबा की छायावत ही बन गये थे और आश्रम की बहनें हर घड़ी बदल-बदलकर अपनी सेवा देकर समाधान ले रही थीं। वे सब इधर-उधर खड़ी हो गयीं और नवागत भाई-बहन, कार्यकर्ता, चौकी के आस-पास एकत्र होने लगे। कोई हटने का नाम नहीं ले रहा था। तब इशारे से पीछे आनेवालों के लिए रास्ता बनाने का अनुरोध किया गया। एक भावाभिभूत कार्यकर्ता पछाड़ खाकर गिर पड़ा तो दूसरा चौकी की प्रदक्षिणा करने से रोकने के कारण रो पड़ा! बरफ की शिलाओं पर लेटे बाबा की चरण वंदना करने आये स्त्री-पुरुष, बालक-वृद्ध, तरुण-प्रौढ़ सब धीरे-धीरे एक ओर से आते रहे और दूसरी ओर के रास्ते से बाहर जाते रहे। स्वतः प्रेरणावश भीड़ नियन्त्रित हो गयी, जिससे व्यवस्था करनेवालों को सुविधा हुई। बजाज परिवार, कलक्टर परिवार और आश्रमवासियों में तालमेल बना रहा। इससे दर्शनार्थी और बाबाके साथ अपना मोह चाहनेवाले भी आसानी से अपनी मुराद पूरी करते रहे।

दीपावली के दिन महावीर का निर्वाण हुआ। उनके साथ गणधर गौतम का अन्य अनुराग था' पर गौतम की अनुपस्थिति में महावीर ने अन्तिम साँस ली, लेकिन यहाँ गौतम समूह की उपस्थिति में महावीर ने महाप्रयाण किया और महावीर के अन्तेवासी (बालभाई) ने पिछले सात दिनों तक लगातार साँस-साँस का विवरण उजागर रखा। अकम्पित स्वर में वे सुबह-शाम और दोपहर में बताते रहे कि बाबा की हृदय-गति कैसी है? नाड़ी की गति कैसी है? रक्तचाप का क्या हाल है? नींद आयी कि नहीं?

वर्षों से प्रतिदिन मात्र ४५ तोला दूध, ११ तोला छेना और १० तोला शहद पर जीवन टिकाये रहनेवाले बाबा का स्वास्थ्य नवम्बर के प्रारम्भ से ही गड़बड़ाया। ४ नवम्बर को उनकी बीमारी अखबारों की सुर्खियों का विषय बनी। तत्काल अच्छे से अच्छे डाक्टर पवनार पहुँचे। हितचिन्तक और सहयोगी दौड़े। सारी अनुकूलताएँ जुटीं। शीघ्र ही दिल के दौरे की बीमारी नियन्त्रित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो गयी। लोग निश्चिन्त से हो बैठे। अभी ८ नवम्बर को अन्तिम खुराक लेकर विनोबा ने घोषणा कर दी कि अब पथ्य, जल या औषधि आदि समाप्तम्।'

हर दो घंटे पर खुराक लेना जिनके शरीर के लिए अनिवार्य था, उनकी इस घोषणा से सारे देश में सनसनी फैल गयी। चिकित्सक, जननेता, रचनात्मक जगत के साथी आदि बाबा को मनाने का असफल प्रयत्न करने लगे। लेकिन समाप्तम् तो समाप्तम्।

डा० सुशीला नैय्यर ही नहीं, बहन रीता भी यही भ्रम पाले रही कि शायद आग्रह मानकर बाबा पानी लेना स्वीकार कर लेंगे, मगर जिस रस्सी काटनेवाले ने जान बूझकर रस्सी काटी हो वह भला सुनने वाला था? कुछ लोगों ने इस त्याग को संथारा, 'प्रायोपवेशन' आदि कहा और कुछ इसे ज्ञान देव जैसे सन्तों की 'जीवित समाधि का उत्कर्ष' कह उठे।

सात दिनों तक आने जानेवालों का प्रवाह अद्भुत रहा। कोई पूरब से आया तो कोई पश्चिम से, कोई उत्तर से तो कोई दक्षिण से। साइकिल, मोटर, बस, रेल, हवाई-जहाज़ से आनेवालों की कमी नहीं थी। सबसे अधिक चर्चा का विषय वह चौदह वर्षीय किशोर था जो विनोबाजी के अन्न, जल-त्याग की खबर पाते ही नागपुर से दौड़ते हुए पवनार पहुँचा और बाबा का दर्शन कर कुटी से बाहर निकलते ही बेहोश गया। इसी तरह फ्रांस से भागी-भागी आयी रीता भी कहाँ होश में थी? वह जूते पहने-पहने ही बाबा कुटी में घुसी जा रही थी कि लोगों ने उसे सहज करने के लिए झकझोरा और जूता उतारने की याद दिलायी। किस-किस का स्मरण किया जाये! सब भावना में डूबे भक्ति से प्रेरित लोग दूर-दूर से आये। आनेवालों के लिए आश्रम में जगह की कमी पड़ी तो वे दत्तपुर, गोपुरी, वर्धा में रुके, पर वे हर घड़ी बाबा के आस-पास मंडराते रहे। अलग-अलग जातियों के, धर्मों के, संप्रदायों के' पार्टियों के लोग आते रहे, आते रहे और समाचार सुनकर संवेदना में साथ होते रहे। आश्रम के वातावरण में कहीं कोई बोझ नहीं, असहजता नहीं, असमाधि नहीं। हर समय गीताई, रामचरित मानस, विष्णुसहस्रनाम, सर्वधर्म प्रार्थना या भक्ति के गीतों का सिलसिला चलता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहा ; जिससे सभी भाषा-भूषा वाले एक रस,एक मन,एकस्पंदन हो बैठे।

'आकाश वाणी' और अखबारों वाले लोगस्वभावत: समाचार जानने को उत्सुक रहते थे, लेकिन बाबा के संकल्प जन्य योग ने सारे समाचारों को नियन्त्रित कर रखा था। इससे एक ही बात बार-बार दोहरायी जाती 'बाबा की हालत पूर्ववत्'। डा० त्रिवेदी,डा० रविशंकर शर्मा डा० बंग आदि 'पूर्ववत्' का विश्लेषण करने से कतराते रहे। उनके हिसाब से जिस व्यक्ति को पन्द्रह मिनट भी रख पाना सम्भव नहीं था, वहाँ हर १५ मिनट बाद वह अधिक प्रखर और तेजस्वी दीख पड़ता था। कई बार डाक्टरों को अपनी राय बदलने के लिए विवश होना पड़ा।

मानव-मुनि का सुझाव था कि बाबा के अनशन के समय आश्रम में नाश्ता न दिया जाये। इस बारे में निर्णय लेने में देर होती दिखी तो दुबारा हमने सुझाव दिया कि अब दिन में भोजन एक ही बार किया जाय। बाबा को शायद इस प्रकार प्रेमाग्रह से भोजन छोड़ना-छुड़वाना भी मंजूर नहीं था, इसलिए जिस दिन सुबह नाश्ता बन्द करने की घोषणा हुई, उसी दिन प्रात: ... बजे बाबा ने अपनी हृदय गति ... कर दी। योगियों के लिए ... करना असम्भव नहीं।

अन्तिम साँस छोड़ने से पहले ... जाने कितने लोगों को हमने ... सुना कि 'बाबा ने मेरी पीठ ... थपायी।' 'बाबा मुझे देखते ही पहचान गये।' 'बाबा ने मेरे सिर पर हाथ रखकर आशीर्वाद दिया।' 'बाबा मेरी ओर देखकर मुस्कुराये।' ठीक समय पर बाबा ने बहनों को याद किया तो दो-दो के जोड़े में ... हाज़िर हुयीं। कहीं कोई कम दिखी तो उसकी पुकार होने लगी। जब वह सामने आई और अपनी जोड़ी में खड़ी हुई, तभी बाबा की आँखों में कुछ तरलता झलकी। अनेक निकटवर्ती साथी बाबा के पास आने के बजाय दूर खिड़की से ही प्रणाम कर अपनी श्रद्धा निवेदित करते रहे। उनसे कुटिया के अन्दर जाने का आग्रह भी किया गया तो वे यह कहकर टाल गये कि अपनी उपस्थिति से वे बाबा की स्मृति पर नाहक बोझ नहीं बनना चाहते। सगुण-निर्गुण उपासकों का अन्तर स्पष्ट था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीपावली की रात्रि में बरफ़ की शिलाओं के पास बैठे भाई-बहन वैसे ही बाबा को पंखा झलते रहे, जैसे चतुर्दशी को झलते थे। उन्हीं के सामने बैठी बहनों ने फूल-मालाएँ तैयार कीं और भाइयों ने आकर्षक हार बनाने में सहयोग किया। श्रद्धालुओं ने बाबा के आसपास रंग बिरंगे इतने फूल चढ़ाये कि बाबा की शैय्या पुष्प-शैय्या लगने लगी

ठीक चौबीस घंटे बाद १६ नवम्बर को पुष्पों की यह शय्या उठी। बाबा के लिए एक पुष्पयान तैयार हो गया, जो 'त्यागपथ' से 'भरतराम मन्दिर' पहुँचा, जहाँ प्रतिदिन की भाँति ठीक साढ़े दस बजे 'विष्णुसहस्रनाम'-प्रार्थना हुई। प्रधानमंत्री इन्दिरा गांधी ने पुष्पचक्र अर्पित किये। बाबा के सम्मान में पहले दिन राष्ट्रीय शोक मनाने की घोषणा की गयी और राष्ट्र-ध्वज झुका दिया गया, वहीं १६ नवम्बर को रूस यात्रा के कार्यक्रमों में कटौती करके प्रधानमन्त्री पवनार दौड़ी आयीं और राष्ट्र सन्त के प्रति जैसी भक्ति भावना प्रदर्शित की, वह बहुतों के दिलों को छू गयी।

देश-विदेश से प्राप्त संवेदना के तारों फोनों ने आश्रम का वातावरण स्पन्दित कर दिया। आचार्य-कुल इकाइयाँ और सर्वोदय संगठन शोक प्रस्ताव कर रहे हैं, लेकिन बाबा के सहयोगी चाहते हैं कि समवेदना के साथ कार्य के प्रति सक्रियता आये, ताकि बाबा की इच्छा के अनुरूप समाज रचना हो। तब तो इस समवेदना का कोई अर्थ है, वर्ना इससे क्या!

११ बजे भरतराम मन्दिर से पुष्पयान चला। उस समय एक ओर लोकनायक जयप्रकाश नारायण, प्रभावती जी, सन्त शांतिदास (फ्रांस) आदि की याद में उगे वृक्षों में आरोह अवरोह था तो दूसरी ओर सामूहिक समाधि की अविचल शांति। बीच से रास्ता बना। श्री बालविजय, सीताराम केसरी, कलक्टर, वर्धा, रामकृष्ण बजाज, उन बहनों के साथ पुष्पयान के अंग बन गये जिनके आगे 'आबा' (विनोबा जी के अनुज, शिवाजी) चल रहे थे। आकाशवाणी के प्रतिनिधि श्री अनादि मिश्र के शब्दों में 'आश्रम से धामनदी के बीच बाबा सूर्य रथ पर आसीन होकर बढ़े।' उनका पड़ाव गाँधी घाट से कुछ ही पहले रहा, जहाँ धामनदी के बीचों-बीच लाखों की उपस्थिति में महादेवी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ताई के आवाहन पर अग्निदेव प्रकट हुए और सूर्य-रथ को आत्मसात कर लिया। भावनाशील दादा आश्रम के बुर्ज से ही श्रद्धावनत रहे।

"रघुपति राघव राजाराम, पतित पावन सीताराम" की धुन के बीच भजनिकों की लयबद्ध आवाज़ें तीसरे दिन तक आस-पास गूंजती रही, जब प्रातः ६ बजे चयनित फूल वापस बाबा कुटी में आये और बाबा के पलंग की जगह प्रतिष्ठापित हुये।

★

('आचार्य कुल' से साभार)

विश्व हिंदी सम्मेलन अंक

केरल ज्योति का विश्व हिन्दी सम्मेलन अंक मार्च १९८३ में ही निकलेगा। कृपया अपनी रचनायें १ फरवरी १९८३ तक पहुँचा दें।

संपादक
केरल ज्योति
तिरुवनन्तपुरम-६९५ ०१४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आवश्यकता है

दस हज़ार या अधिक की आबादी वाले हर नगर में
शीघ्र ही खुलनेवाले

हमारे

घर-वितरण विभागीय संग्रहागार केलिए

मेट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण विक्रयफलक विक्रयकारों
एव क्षेत्र विक्रयकारों की आवश्यकता है

वेतन 500 और सरकारी नियमानुसार अन्य सुविधायें
आवेदन पत्र अंग्रेजी या हिन्दी में ही भेजें

पंजाब सेविंग्स प्राइवेट लिमिटेट
रोहित हाउस, ग्राउण्ड फ्लोर
3-टालस्टाय मार्ग, नयी दिल्ली-110 001
दूर भाष : 741150, 717827, 385616, 381116
तार: सर्वीस फाइन
टेलेक्स: 5032 एन. डी. ओ. एस. इन.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनी बात

एम. के. वेलायुधन नायर
मंत्री, केरल हिन्दी प्रचार सभा

[१९८१-८२ में केरल हिन्दी प्रचार सभा द्वारा चलायी गयी विभिन्न परीक्षाओं में उच्च स्थान पाये विद्यार्थियों को तथा १९८१-८२ के सर्वश्रेष्ठ प्रचारकों को पुरस्कृत करने केलिए २३-११-१९८२ को सभा भवन में आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह में दिया गया यह स्वागत भाषण केरल हिन्दी प्रचार सभा की गतिविधियों का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत करता है।]

केरल के माननीय मुख्य मंत्री श्री० के. करुणाकरन जी, केन्द्र शिक्षा तथा संस्कृति विभाग के आदरणीय उपमंत्री श्री० पी. के. थुँगन जी, केरल के माननीय शिक्षा मंत्री श्री० टी. एम. जेकब जी, केरल के वरिष्ठ नेता आदरणीय श्री० के. आर. इलंकत्त जी, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान के निदेशक आदरणीय डा० बालगोविन्द मिश्र जी, पुरस्कृत होनेवाले प्रिय छात्रो, प्रचारक बंधुओ, विद्वान सज्जनो, देवियो और मित्रो,

केरल हिन्दी प्रचार सभा का यह सौभाग्य है कि सभा की परीक्षाओं में उन्नत स्थान पाये छात्रों और सभा के सर्वश्रेष्ठ प्रचारक बन्धुओं को पुरस्कृत करने और उनका अभिनन्दन करने के लिये राज्य और केन्द्र सरकारों के कर्णधार और देश के प्रमुख शिक्षाविद आज यहाँ उपस्थित हैं। इस मंच पर इन विशिष्ट विभूतियों की उपस्थिति निश्चय ही हिन्दी के वर्द्धमान देशीय और अन्तर्देशीय महत्व की ओर इंगित करती है।

जब से राष्ट्रपिता गाँधीजी ने भारत के विविध भाषाभाषी जन समूहों की भावात्मक एवं राजनीतिक एकता को सुदृढ करने केलिये उपयुक्त एकमात्र सूत्र के रूप में हिन्दी को चुना तब से दक्षिण ने हिन्दी का स्वागत किया और हिन्दी के प्रचार-प्रसार केलिये जनता का स्वैच्छिक प्रयत्न आरंभ हुआ। ऐसे ही प्रयत्नों के फलस्वरूप इस महान संस्था केरल हिन्दी प्रचार सभा की भी नींव पडी। दक्षिण के तपोनिष्ठ हिन्दी सेवी स्व० के. वासुदेवन पिल्लैजी इसकी स्थापना द्वारा हिन्दी की भागीरथी को भार्गव क्षेत्र केरल की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और वहा ले आये। गत ४८ वर्षों से केरल के जन मानस में हिन्दी के प्रति रुचि, प्रेम और श्रद्धा उत्पन्न करने और औपचारिक एवं अनौपचारिक शैक्षिक कार्यक्रमों द्वारा केरल के बच्चों और प्रौढों को हिन्दी भाषा और साहित्य की शिक्षा देने की दिशा में यह सभा प्रयत्नशील रही है। आज यदि दक्षिण के अन्य प्रान्तों की अपेक्षा केरल हिन्दी का अधिक हार्दिक स्वागत करता है तो उसके पीछे सभा का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

हिन्दी का अध्यापन यद्यपि केरल के सभी स्कूलों में हो रहा है तो भी स्कूली शिक्षा पद्वति की अनेकों सीमाओं और पाबन्दियों के कारण छात्रों को हिन्दी का पर्याप्त ज्ञान मिल नहीं पाता। केरल की मेट्रिक परीक्षा में प्रतिवर्ष हिन्दी का औसत अंक बराबर गिरता जा रहा है। स्कूली अध्यापन के पूरक के रूप में केरल हिन्दी प्रचार सभा के प्रमाणित प्रचारक गाँव गाँव में हिन्दी विद्यालय चलाते हैं। इन में पढनेवाले विद्यार्थियों के लिये सभा विविध स्तरीय परीक्षायें चलाती है। हिन्दी प्रथम, हिन्दी दूसरी और राष्ट्रभाषा (हिन्दी) इन प्रारंभिक परीक्षाओं में बैठनेवालों में अधिकांश स्कूली छात्र ही हैं। हिन्दी प्रवेश, हिन्दी भूषण और साहित्याचार्य को उच्च परीक्षाओं में कुछ स्कूल-कालेजों के छात्र भी बैठते हैं और अनेकों ऐसे भी बैठते हैं जिन्हें मैट्रिक के बाद शिक्षा जारी रखने का और कोई रास्ता नहीं मिल रहा है। सभा की हिन्दी भूषण परीक्षा जो कि इन्टर (हिन्दी) के समकक्ष है उत्तीर्ण होनेवालों को मिडिल स्कूलों में और साहित्याचार्य परीक्षा जो कि बी. ए. (हिन्दी) के समकक्ष है उत्तीर्ण होनेवालों को हाईस्कूलों में हिन्दी अध्यापक का पद मिल सकता है। हिन्दी भूषण उत्तीर्ण होने पर मेट्रिक की परीक्षा में और साहित्याचार्य परीक्षा उत्तीर्ण होने पर बी. ए. की परीक्षा में बैठने की अर्हता मिल जाती है। इस प्रकार से ये परीक्षायें एक ओर अनुस्यूत शिक्षा का किवाड खोल देती हैं और दूसरी ओर जीविकोपार्जन का भी मार्ग प्रशस्त करती हैं। हिन्दी का उपयोग संपर्क भाषा और राजभाषा के रूप में ज्यों ज्यों बढता जायेगा त्यों त्यों इन मार्गों को अपनानेवालों की संख्या भी बढती जायगी।

हिन्दी टंककों की बढती हुई माँग पूरी करने केलिये सभा एक हिन्दी टंकण एवं आशुलिपि विद्यालय भी चलाती है। हिन्दी टंकण और आशुलिपि में निम्नस्तरीय और उच्च स्तरीय परीक्षायें सभा चलाती है। इन परीक्षाओं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
में उत्तीर्ण होनेवालों को केरल के और बाहर के सरकारी और गैर सरकारी कार्यालयों में नौकरी मिलने में अधिक सुविधा मिलती है।

संविधान में हिन्दी को भारत की सामासिक संस्कृति के सब तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बनाने की बात कही गयी है। अष्टम सूची में उल्लिखित अन्य भारतीय भाषाओं के रूप, शैली और पदावली से हिन्दी को समृद्ध करने का संकल्प किया गया है। इस सुन्दर संकल्प को यथार्थ बनाने केलिए हिन्दीतर प्रान्तों में ऐसे विद्वानों को तैयार करना होगा जो अनूदित और मौलिक हिन्दी रचनाओं द्वारा यह कार्य करके दिखाने में सक्षम हों। केरल में ऐसे विद्वान लेखकों और अनुवादकों को तैयार करने केलिये सभा बहुमुखी कार्यक्रम अपना रही है। हिन्दी की उच्च शिक्षा देने केलिये यहाँ एक स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग कार्यरत है। इससे संलग्न स्व० के. वासुदेवन पिल्लै स्मारक हिन्दी ग्रन्थालय केरल विश्वविद्यालय के हिन्दी गवेषण विद्यार्थियों के भी काम आ रहा है। हिन्दी से मलयालम और मलयालम से हिन्दी में अनुवाद करने की क्षमता उत्पन्न करने केलिये हिन्दी एम. ए. उत्तीर्ण एक सौ युवक-युवतियों को एक वर्ष का प्रशिक्षण दिया है। मौलिक और अनूदित हिन्दी रचनाओं की सृजन प्रक्रिया में केरल के नव हिन्दी लेखकों को शिविरों में प्रशिक्षित किया जाता है और उन की रचनाओं को प्रकाश में लाने केलिए सभा 'केरल ज्योति' नामक एक हिन्दी मासिक पत्रिका गत १७ वर्षों से निकाल रही है। केरल की शैक्षिक, साहित्यिक और सांस्कृतिक गतिविधियों का परिचय इसके माध्यम से हिन्दी पाठकों को मिलता है।

हिन्दीतर भाषा भाषियों को हिन्दी सिखाना उतना आसान नहीं है। इसे आसान बनाने केलिये केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा में बहुमूल्य शोध हो रहे हैं। इन शोधों के निष्कर्षों को केरल के हिन्दी प्रचारकों एवं अध्यापकों तक पहुँचाने केलिए संस्थान के सहयोग से सभा समय समय पर ह्रस्वकालीन नवीकरण पाठ्यक्रम चलाती है जिन में संस्थान के अनुभवी शिक्षाविदों का अमूल्य सहयोग बराबर मिलता रहता है। हिन्दी अध्यापकों के प्रशिक्षण केलिए सभा ने एक वर्षीय प्रशिक्षण कोर्स भी चलाया था।

प्रचार में कला का अपना विशिष्ट स्थान है। इस तथ्य को दृष्टि में रखकर सभा समय समय पर हिन्दी के कई कला कार्यक्रम आयोजित करती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। कभी हिन्दुस्तानी संगीत होता है। कभी उत्तर भारत के लोक नृत्य होते हैं। इन में उत्तर से आनेवाली कलामंडलियों तथा यहाँ रहनेवाले उत्तर भारतीयों का हार्दिक सहयोग मिलता है। केरल की नाटक मंडलियों केलिये हिन्दी नाटक प्रतियोगिता भी आयोजित होती है। इससे प्रान्तीयता की विभाजक रेखा मिट जाती है और भारतीयता का भव्य भाव उभर आता है।

सभा की पाठ्यपुस्तकें, केरल ज्योति मासिक पत्रिका तथा अन्य हिन्दी प्रकाशनों के सुन्दर मुद्रण केलिये सभा ने अपना राष्ट्रवाणी मुद्रणालय आरंभ किया है। इस में हिन्दी का ही नहीं संस्कृत, मलयालम, तमिल और अंग्रेजी का भी मुद्रण होता है।

हिन्दी अध्ययन और अध्यापन में विद्यार्थियों और प्रचारकों को प्रोत्साहित करने केलिये सभा विविध प्रकार की पुरस्कार योजनायें कार्यान्वित करती रही है। स्कूली बच्चों को हिन्दी में अधिकाधिक योग्यता उत्पन्न करने की प्रेरणा दिलने केलिये विविध स्तरीय सुगम हिन्दी परीक्षायें चलाकर उनमें उन्नत स्थान पानेवालों को आकर्षक पुरस्कार देती है। उनमें सर्वाधिक परीक्षार्थियों को प्रस्तुत करनेवाले स्कूलों को ट्रॉफ़ी दी जाती है। मेट्रिक परीक्षा में हिन्दी में सर्वाधिक अंक पानेवालों को स्व० 'बी. सरस्वती तंकच्ची स्मारक स्वर्ण पदक' दिया जाता है और उन विद्यार्थियों को प्रस्तुत किये स्कूलों को 'स्व० बी. सरस्वती तंकच्ची स्मारक रोलिंग ट्रॉफी' दी जाती है। स्कूल और कॉलेज के हिन्दी विद्यार्थियों केलिये हिन्दी में विविध साहित्यिक प्रतियोगितायें चलाकर विजेताओं को पुरस्कार दिया जाता है। सभा की हिन्दी प्रथम से लेकर साहित्याचार्य तक की परीक्षाओं में उन्नत स्थान पानेवालों को उचित पुरस्कार दिया जाता है। हिन्दी भूषण में सर्वप्रथम आनेवालों को 'स्व० के. वासुदेवन पिल्लै स्मारक स्वर्ण पदक' तथा साहित्याचार्य में सर्व प्रथम निकलनेवालों को 'डा० के. भास्करन नायर स्मारक स्वर्ण पदक' दिया जाता है। इन परीक्षाओं में सर्वाधिक परीक्षार्थियों को प्रस्तुत करनेवाले हिन्दी प्रचारकों को नकद पुरस्कार और प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया जाता है। यह बताने में हमें अतीव हर्ष है कि सभा की 'हिन्दी प्रथम' से लेकर 'साहित्याचार्य' तक की विविध परीक्षाओं में उन्नत स्थान पानेवाले छात्रों को पुरस्कार देने में तथा श्रेष्ठ प्रचारकों को नकद पुरस्कार देने में केन्द्र सरकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की आर्थिक सहायता हमें मिलती है। सभा के इन बहुमुखी कार्यों में देश के प्रमुख नेताओं और विद्वानों का अनुग्रह रहा है। बाबू पुरुषोत्तम दास टंडन, श्री० उ. न. ढेबर, डा० संपूर्णानन्द श्री० भक्तदर्शन, डा० यशपाल, डा० प्रताप चन्द्र चन्द्र, पं० कमलापति त्रिपाठी जैसे मनीषियों ने सभा के दीक्षान्त समारोहों में भाग लेकर स्नातकों को आशीर्वाद दिया है। इन के अतिरिक्त बाबू राजेन्द्र प्रसाद, सेठ गोविन्द दास, आचार्य कृपलानी, श्री० बाल गंगाधर खेर, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, श्री० रामधारी सिंह 'दिनकर', श्री० हरिभाऊ उपाध्याय, पं० सीताराम चतुर्वेदी, डा० रामकुमार वर्मा, आचार्य नन्द दुलारे वाजपेयी, प्रो० नूरुल हसन जैसे विद्वानों ने भी यहाँ पधार कर हमें अनुगृहीत किया है। यह विशेष उल्लेखनीय है कि करीब पचास वर्ष पहले स्वतंत्रता संग्राम को सुशक्त बनाने का आह्वान करते हुए राष्ट्र शिल्पी पंडित जवाहरलाल नेहरू जब दक्षिण की परिक्रमा कर रहे थे, तब अपनी सहधर्मिणी श्रीमती कमला नेहरू तथा सुपुत्री इन्दिरा प्रियदर्शिनी के साथ सभा में पधारे थे।

१९८१-८२ में सभा द्वारा चलायी गयी 'हिन्दी प्रथम' से लेकर साहित्याचार्य तक की परीक्षाओं में प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान पाये विद्यार्थियों को आज यहाँ पुरस्कृत किया जा रहा है। इन प्रतिभाशाली छात्रों का मैं हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ और आशा करता हूँ कि ये पुरस्कार हिन्दी सीखने का उनका उत्साह बढा देंगे। १९८१-८२ की इन परीक्षाओं में सर्वाधिक परीक्षार्थियों को प्रस्तुत करने में प्रथम तीन स्थान पाये प्रचारक बन्धु यहाँ नकद पुरस्कार और प्रमाण-पत्र पानेवाले हैं। और चार प्रचारक बन्धुओं को प्रोत्साहक पुरस्कार दिया जा रहा है। पुरस्कृत होनेवाले इन तपोनिष्ठ हिन्दी सेवियों का मैं हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ और उन से प्रार्थना करता हूँ कि राष्ट्र-निर्माण के इस त्यागपूर्ण मार्ग पर आगे बढें और यथाशीघ्र ऐसी परिस्थिति उत्पन्न करें जिससे भारत की एकमात्र राजभाषा के रूप में हिन्दी को स्वीकारने में केरल अपनी सहमति दे सके।

आज हमारे विद्यार्थियों को और प्रचारक बन्धुओं को प्रेरणा, आशीर्वाद और मार्गदर्शन देने केलिये जो महारथ यहाँ पधारे हैं उनका हार्दिक स्वागत करना मेरा पवित्र कर्तव्य है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केरल के मुख्य मंत्री श्री० के. करुणाकरन गाँधीजी के पक्के अनुयायी है और राष्ट्रभाषा हिन्दी के पक्के हिमायती हैं। आप केरल हिन्दी प्रचार सभा के बडे हितैषी हैं। अपने अतिव्यस्त कार्यक्रम से समय निकालकर आप समय समय पर सभा में आते हैं और हिन्दी विद्यार्थियों का और हिन्दी कार्यकर्ताओं का उत्साह बढ़ाते रहते हैं। हाल ही में सभा में आयोजित नव हिन्दी लेखक शिविर के प्रतिभागियों का अपने कार्यालय में स्वागत करके आपने हिन्दी के प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट की और हिन्दीतर भाषा भाषियों को चेतावनी दी कि यदि वे हिन्दी में वाँछित क्षमता नहीं पायेंगे तो वे कई क्षेत्रों में पिछड़ जायेंगे। माननीय मुख्य-मंत्री श्री करुणाकरन जी, हम आप का सादर स्वागत करते हैं।

पुरस्कार वितरण करने के लिये केन्द्र शिक्षा एवं संस्कृति विभाग के उपमंत्री श्री० प्रेम खंडु थुंगन जी हमारे बीच पधारे है। अरुणाचल प्रदेश के मंत्रि-मंडल में और केन्द्रीय मंत्रि-मंडल में आप का योगदान महत्वपूर्ण रहा है। आपके मुख्य मंत्रित्व में ही अरुणाचल प्रदेश के स्कूली पाठ्यक्रम में पहली कक्षा से लेकर आठवीं तक हिन्दी को अनिवार्य पाठ्यविषय का स्थान दिलाया गया था। केन्द्रीय मंत्रि-मंडल में रह कर आप भारतीय संस्कृति और विशेष कर भारतीय भाषाओं के उन्नयन के लिये अमूल्य योगदान दे रहे हैं। उत्तर पूर्वांचल राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के अध्यक्ष रहकर आपने सुदूर पूर्वांचल में राष्ट्रभाषा के प्रचार में अमूल्य एवं महत्तर सेवा प्रदान की है। माननीय श्री० थुंगनजी, हम आप का हार्दिक स्वगत करते हैं।

श्री० टी. एम. जेकब, केरल के युवा पीढी के सशक्त नेताओं में प्रमुख हैं। आपने जब से शिक्षा विभाग का कार्य संभाला है, तब से आप केरल की शिक्षा पद्धति में आमूल परिवर्तन लाने के संबन्ध में गंभीर विचार कर रहे हैं। गत महीने में आपने सभा की सुगम हिन्दी परीक्षाओं में उन्नत स्थान पाये विद्यार्थियों को पुरस्कार प्रदान करते हुए घोषणा की थी कि केरल में शिक्षा का जो नया फोर्म्मुला बनेगा उसमें हिन्दी को समुचित स्थान दिया जायेगा। इसी मंच से हाल ही में केन्द्र सरकार की ओर से केरल हिन्दी प्रचार सभा में आयोजित अखिल भारतीय हिन्दीतर नव हिन्दी लेखक शिविर के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतिभागियों को सम्बोधित करते समय आपने केन्द्र सरकार से यह अनुरोध किया था कि हिन्दी प्रचार-प्रसार के क्षेत्र में केरल हिन्दी प्रचार सभा की महत्वपूर्ण सेवाओं को प्रोत्साहित करने के लिये उसे अधिकाधिक सहायता प्रदान करें। माननीय श्री० जेकब जी, हम आप का स्नेहादरपूर्वक स्वागत करते हैं।

इस सम्मेलन में आशीर्वाद भाषण देनेवाले श्री० के. आर. इलंकत्त उमडती जवानी में स्वतंत्रता संग्राम के सुधीर सेनानी बनकर सार्वजनिक क्षेत्र में उतर आये और तब से लेकर आप केरलीय जनता के प्रिय नेता हैं। राजनीति, हिन्दी प्रचार, खादी प्रचार और सहकारिता के क्षेत्र में आप का योगदान महत्वपूर्ण रहा है। तिरुवितांकूर-कोचिन के मंत्री, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा की केरल शाखा के अध्यक्ष और विभिन्न सहकारी संस्थाओं के मार्गदर्शक रह कर आप ने केरल की बहुमूल्य सेवा की है। केरल हिन्दी प्रचार सभा के आप बडे हितैषी हैं। आदरणीय श्री० के. आर. इलंकत्त जी, हम आप का सादर स्वागत करते हैं।

डा० बालगोविन्द मिश्र विश्वविख्यात भाषा शास्त्री है। केन्द्रीय हिन्दी संस्थान के निदेशक रहकर आप समस्त भारत में और विदेशों में भी हिन्दी शिक्षण को सुधारने केलिये नयी नयी योजनायें कार्यान्वित कर रहे हैं। केरल हिन्दी प्रचार सभा के कार्यों में संस्थान का सहयोग दिलाकर आप हमें बडी मदद पहुंचाते रहे हैं। डा० मिश्रजी, हम आप का स्नेहादरपूर्वक स्वागत करते हैं।

उन सभी छात्रों का भी मैं स्वागत करता हूँ जो आज यहाँ पुरस्कार पाने आये हैं। उन प्रचारक बन्धुओं का भी मैं हार्दिक स्वागत करता हूँ जो आज यहाँ सम्मानित हो रहे हैं। उन सभी अभिभावकों का और नगर के विद्वानों और सज्जनों का भी मैं हार्दिक स्वागत करता हूँ जो यहाँ उपस्थित रह कर इस समारोह की शोभा बढा रहे हैं।

जय हिन्द ! जय हिन्द !!

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चेहरा कहाँ ?

विष्णु नारायणन नम्पूतिरी

[श्री० विष्णु नारायणन नम्पूतिरी धुनिक मलयालम कविता की नयी रा के कवि के रूप में ख्याति प्राप्त । आप विशेष प्रतिभा के धनी हैं । १९६० के आसपास ही कविता के त्र में आपका प्रवेश हुआ था । आप की विता के भाव पक्ष और कलापक्ष नों पुष्ट हैं, निखरे हैं । नयी कविता- रा के अग्रणी होते हुए भी आपकी विता न उस घोर विध्वंसात्मकता की मूर्ति के रूप में प्रकट हुई जिससे नाश की गर्जना सुनाई दे न उस दीन षादात्मकता की मूक शिला बनकर ह गयी जिससे जडता का फैलाव हो, युत परंपरा की सारी विशिष्टताओं को अपने में समेटकर नवनिर्माण क शंखनाद बनकर जन चेतना को जगाने वाली ही प्रमाणित हुई है । मलयालम के प्रसिद्ध कवि और आलोचक श्री०एन. वी. कृष्ण वारियर लिखते हैं:—
"विष्णु की कविता-लता की जड यदि संस्कृत और मलयालम की कविताओं की उर्वर मिट्टी में जमी है तो वह फूलती फलती है आधुनिक पाश्चात्य काव्यधारा के वातावरण से वायु और तेज ग्रहणकरके ।"

आपकी अब तक प्रकाशित रचनाएं निम्नलिखित है :—

(१) स्वतन्त्रता पर एक गीत ।
(२) गान्धीजी (अनुवाद)
(३) प्रणयगीत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(४) सस्य जगत् (अनुवाद)
(५) भूमिगीत
(६) इन्ड्या नामक मनो विकार
(७) असाहितीयम् (निबन्ध संग्रह)
(८) ऋतुसंहारम् (अनुवाद)
(९) चेहरा कहाँ ?
(१०) सीमा की ओर एक सफ़र]

चित्र

'पर, चेहरा कहाँ ?'
पूछा मैंने स्तब्ध हो
मित्र रहा मूक, मुनिसदृश
त्योहार में देवी का जुलूस
निकला था, सजधज से ।
उसका चित्र खींचा था जो उसने
उसमें ध्वजाएँ है, हाथी हैं,
छत्र हैं, सज्जित दंड हैं
गाढ़े रंग में रंगे
असंख्य मनुष्य भी ।
लेकिन आश्चर्य !
किसी के भी चेहरा नहीं है !
पागल है यह चित्रकार
था कि बडा दार्शनिक ?

जत्था

दिन का अन्तिम पहर
मैं था खडा फाटक पर
आराम से !
क्या ही आश्चर्य !
एक बडा जत्था आगे बढ़ा
गुज़रकर मेरे निकट से
पैजामा और पतलून पहने
पगडी धरे रमणीय
कदम बढ़ाने में निष्ठावान
असंख्य जन !
नेताओं ने आपस में फ़ुस फ़ुसाया
चेहरा कहाँ तुम्हारा ?
औ' कहाँ चेहरा तुम्हारा ?

छाया

दीपक के गरम तेल में
तड़पते पतंगे के समान
कराहती भोली जनता के प्रति
उमडते सहताप का स्रोत
बाढ़ ही बन गया जब
मेरे प्राणों की गहराई में !
मैंने रूमाल उठाया,
नायन-नीर पोंछने
पर, उस पर कुछ लगता नहीं !
क्या ही शून्यता है यह ?
छटपटा कर, घवडाहट से
काँपता हुआ मैं
झट पहुँचा निज कमरे में
दीवार पर लगे शीशे में
देखा एक बार, बस एक ही बार।
ओ भगवान्, मेरे भी, कॉलर के ऊपर
चेहरा नहीं है क्या ?

अनुवाद : वी. के. एस. नम्पूतिरी
साहित्याचार्य महाविद्यालय
तिरुवनन्तपुरम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मलयालम काव्य

कर्णभूषणम्

महाकवि उन्लूर

अनुवाद: कवियूर शिवरामय्यर

गतांक से आगे

XX

धिक्! धिक्! देशिक, यह क्या
बोले?
जाति-पांति-मद इतना कि बढे!
जाति-व्यक्ति हों तर्कशास्त्र में,
किसने कार्मुकवेद में पढे?

यह अपभाषण आयुधजीवी
काण्डपृष्ठ तुम कैसे बोले?
ये अधर्म्य वच तात सुन रहे,
हैं न कर्णविहीन, क्या भूले?

निज प्रदीप्ति से तारापथ जो
स्वर्णिल करता वह ज्योतिष्मान्
शाक नहीं जो खींचा जाए
वृक्ष न जिसकी जड खोद सकें।

अवलंब बिना नभ में शोभित
स्वतंत्र स्वर्णिक रतन दीप में
फूंक हमारी नहीं पडेगी,
पडने पर भी वह न बुझेगा।

घर्षित हो, या तन खंडित हो,
आग में पडे, या पिट जावे,
जिसकी शोभा बढती जाती
वह स्वर्ण सुतनु शीर्ष चढावें।

मधुकर जो माधुर्य-लालची
फुल्ल कमल से मधु पीता है
कंद पै लगा कीचड उसको
कुछ याद कदापि न आता है।

बाहुज कुल पहले वीरों की
बाहों से रोपित-पोषित थे
बाहें वे कर्ण के न होतीं?
जरठ नेत्र गज देख न पाते?

सूत! सूत! हा! सूतवंश को
क्या है इतना पातित्य लगा?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चतुरानन कल सूत बना था,
नारायण कल सूत बनेगा ।

राजतिलक मैं अभी करूँगा
अक्षत्र कहाए प्रिय सख का
कर्ण भूप है यदि निज साथी
सुत है भारत राज-प्रमुख का ।

XXI

प्रियवर ने यों कहते कहते
मुझे बिठाया भद्रासन पर,
गंगाजल से अभिषिक्त किया
घोषित करते 'अंगमहीश्वर' ।

कनक मुकुट सिर पर पहना कर
छत्र तान, चँवर स्वयं झलते
उसने पूछा कृपाचार्य से
अरे ; कौन ये भूपति लगते ?

"अंगराज, जयजीव ; संग्राम-
रंगविभूषण, मणिमय विग्रह,
साधु ! साधु मैं सूत तुम्हारा"
कातर बोले कृप सानुग्रह ।।

निर्णय में कुछ देरी न लगी,
प्रस्ताव पिता से भी न किये,
और न सोचा नब्बे औ' नौ
सहजों को हर देश चाहिए ।।

मोरपंख का इन्द्रजाल ज्यों
पलक झपकते कार्य हो चुका ;
उस दिन हा ! उस पुरुषसिंह ने
मान कर्ण का अम्लान रखा ।।

भूप बनाकर उसने मेरा
दान-व्रत विघ्न से बचाया ;
प्राणाधिक बंधु वही मेरे ;
उसका मै भुजिष्य हो आया ।।

मनोभित्ति से उस घटना का
चित्र न कोई मिटा सकेगा
जयति ! प्रेम-सौभ्रात्र हमारा
जो कि अमर अन्यून रहेगा ।

उसे देख मैं 'नंदि-'स्वरूप
परमेश्वर का नंदि बनूँगा
जग ही नहीं किंतु खुद को भी
ईश्वर को, सब को विसरूँगा ।

XXII

सुन सुत-भाषण भास्कर बोले
तब तो मेरी जीत हुई,
प्रिय की रक्षा के हित जीवित-
रहना तेरी बात हुई ।

इन कंचुक कुंडल दोनों को
तन से अलग न होने दे
प्रियवर-प्राण बचाने को भी
अपने प्राण न जाने दे ।।

कुमृत्यु काम्य नहीं, ईश्वर हैं
आतिथेय आमंत्रित के ;
यह वर तुझ से माँग रहा हूँ
आग्रह से तेरे हित के ।।

XXIII

अंगमहीपति बोले, 'भगवान् !
कैसी कठिन परीक्षा है !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वेदतनु, जगच्चक्षु तू कर्म-
साक्षी ईश्वर साक्षात् है ।।

स्वपिता हैं मित्र हितैषी मेरे,
कर्ण तो नहीं कर्णविहीन,
बोला कौन ? सुना किसने? यह
कार्य विलक्षण कारणहीन ।

मुख से क्यों दीधितिमाली के
अंधतमस निकल रहा है ?
दूध बहाने वाला स्तन क्यों
हालाहल उगल रहा है ?

नभतल से भूतल जाने को
जब तक तुमने था सोचा
तब तक क्या निज आदर्श, मही
लांघ रसातल में पहुँचा ?

प्राणमित्र दुर्योधन का मैं
अक्रीत दास होता हूँ,
संदेह नहीं निज स्वामी का
पापभाज भी होता हूँ ।।

सौहृद-मदिरा की मस्ती से
सौहृद-उन्मद चेष्टा से
सौहृद-अपस्पार के मारे
च्युत हूँ लोक-प्रतिष्ठा से ।।

जीवन-स्वर्ण-तुला-पलडों में
एक पंक भर गिर जाता
दूजे में भर दान-पुण्य मैं
तौल बराबर कर पाता ।।

नृपति-संग से जो धन मिलता
परार्थ नित्य दिया जाता,
शायद गोघाती का जूता-
दान इसी को कह सकता ।

परंतु लोक स्वभाव यही है
सारग्राही थोडा ही;
औ' मेरा सहज स्वभाव रहा
आत्मत्याग अनूठा ही ।।

जिसने निज पारण भोजन को
श्वपच-शुनों को खिलवाया
धस रंतिदेव की तनया ने
मुझ को सप्रेम झुलाया ।।

अपने संगी किन्नरपति को
जिसने निज सर्वस्व दिया,
शरणागत पर्वतकन्या को
शरीर आधा बांट दिया ।

वरद वही मेरे गुरुजी के
गुरुवर शंभु आत्मयाजी;
केरल रचना लीला विश्रुत
परशुराम मेरे गुरुजी ।।

उसने भुजबल-आर्जित धरणी
दे दी निज आद्य अतिथि को
प्राणाधिक सब शस्त्रास्त्र दिये
पीछे आये अर्थी को ।।

XXIV

दान से कवच-कुंडल के, जो
विपदा हो बस, देखी,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यही न मृत्यु मुझे है ? हा ! यह
धमकी तात, अनोखी ।।

यही न उस से भूजात मुझे
मर्त्य ग्राम है होना ?
ग्रस्तु, मुझे वह काम्य; जो कि ग्रत्र
सुर क्या ? नर भी न बना ।।

मानव जीवन का महत्व निज
ग्रस्थिरता होती है।
कल' कहने से पहले विधिवश
जीभ न हिल पाती है ।।

ग्रायुष्य न ग्रायु के लिए
साधन है पुरुषार्थों को
तूणो में कौन सुला दे
लक्ष्य विदारक शस्त्रों को ।

रंगभूमिगत प्रेक्षक मैं क्यों
नेपथ्य ग्रोर झांकूँ ?
वेष, नाट्य, रस कोई भी हो
सब प्रिय है, कुछ देखूँ ।।

ग्राके निकट भविष्य-देवता
मुख-पट निज टालेगा,
तिलक मसी या रोली का हो
सुन्दर तुल्य लगेगा ।।

सरसिजवदनी वासर-लक्ष्मी,
रजनी तामस-चिकुरा,
दोनों से मैं मिल जुल रहता;
द्युति-छाँहों का दौरा !

सत्पात्र दान से अब मेरा
हो सफल यदि जन्म ही
ग्रर्थ बनाये हुए वाक्य को
फिर क्या हो, विराम ही ।।

XXV

,'दान पात्र में'', तब दाता को
दान-पात्र इन्द्र समान कहाँ ?
जिसके देशज ग्रश्म हीर हैं
लाष्ट सरासर तपनीय वहाँ ।।

सब गायें हैं कामदुहायें,
पानीय भला ग्रमृत सब कहीं,
मुस्तक होते कल्पलतायें
चिंतामणि है ईंट भी वहीं ।।

होता से ग्रध्वर वेदी में
जिसके हित ग्राहुति की जाती'
जिसके वाहन का पीकदान
वन भूमि सस्य-फल सरसाती ।

वह दैवत प्रसन्न हो मुझ से
भीख माँगने कर फैलाये
खुद ग्रावें तो उन से बढिया
भाग्योदय हा ! कोई पाये ? ।।

भारत भूतल दान-शस्य का
क्षेत्र उर्वरा युगों से,
ग्रामूल शीर्ष यह देख रहे हैं
वारिदवाहन सहस दृगों से ।।

करधृत उनका प्रखर कुलिश तो
ऋषि दधीति का ग्रस्थि-खंड है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वृत्रशत्रु का करबल बस. उस
महा त्याग का वीर्य चंड है ।।

गरुड-स्वरूप वृषा को शिवि ने
करवाल उठाकर निज तन से
चीर चीर मांस दिया, केवल
एक कपोत-त्राण की धुन से ।।

लज्जा-भय से उसको नृप की
तुला छोड कर भागना पडा;
वह घटना क्या वज्री भूले ?
भारत अब भी है वहीं खडा ।।

वह मृतसंजीवनी बगीचा
विपिन कंटकी नहीं बना है;
वीर सिंह का वह गिरिकंदर
मूषिक का बिल नहीं बना है ।।

मुझ से मघवा क्या माँगेगा ?
है न कवच-कुंडल ही ? जो हैं
चिथडे जो पूर्व बदलना था,
गहने जो स्त्रीजन लायक है।

पाने केवल हिल्लौरी को
कोई रोहण शैल न जाता;
अगर प्राण ही वांछित हो तो
मुझ से सीधे क्यों न बताता ?

पहले जब मैं रामशिष्य था
वज्रपाणि ने भौंरा बन कर
तनय-प्रेम की प्यास बुझायी
मेरे उरु का शोणित पी कर ।।

अब भी निज प्यास बुझाने को
कंठ-रक्त जब प्रस्तुत होता
कंचुक-कुंडल रूपी द्रावक
शक्र भला क्यों संचित करता ?

सीधे माँगे, देने को जब
मैं खड्गधर खडा हो जाता;
इस भिक्षा से जन्म-भूमि औ
मुझ को शतमख क्यों लजवाता ?

XXVI

कहा कि कवच-दान से मेरी
मृत्यु सुनिश्चय होनी है,
परंतु मैं यह समझ न पाता
भीषण कैसे मरनी है ।।

अंतक मेरे भाई कौन है ?
क्या निज शासन का सीमांत ?
भली भांति वह ज्ञात है मुझे
वह तो मेरे घर की बात ।।

बिना शत्रु को पीठ दिखाये
लडते लडते जो मरता
उस धन्वी की गति क्या होती ?
भार्गव से था मैं सुनता ।।

रणक्षेत्र में गिरे वीर को
पार्षद थामे अपने स्कंध
सूर्यलोक में, निकट तुम्हारे
ले जाते हैं, कहते संत ।।

मृति भी जिस पर मरती होगी
वह पतन, तुंग-पद-दाता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विमान है, जो प्राण वायु से
पुण्य लोक झट पहुँचाता ।।

अपने को धन्य विचारूँगा
सूर्यलोक यदि मुझे मिले,
उस से बढकर धन क्या होता
जो है पैतृक भाग भले ।।

रणभूमि यथोचित देती है,
क्षिति, विजयश्री-लालित को,
वीरलोक, रण-हत वीरों को
नारक, भीरु पलायित को ।।

सूर्यलोक पहुँचाने वाली
रणभूमि वही सुहावनी
कार्मुक धारी शूरवीर का
एक मात्र है लक्ष्य बनी ।।

इतर जीव सब मर जाने पर
जगहित कुछ कर देते हैं
रोम-चर्म औ' शृंग ही नहीं
आमिष भी हम लेते हैं ।।

परंतु मरे हुए मानव की
दशा विलक्षण होती है
वह देह अकेले मरघट की
व्यर्थ खाद बन मिटती है ।

हृदय धडक के मिस अंतरस्थ
'औरों के हित जीओ' कहता,
जहाँ तहाँ हूँ, उस वाणी का
प्रतिनाद सर्वदा मैं सुनता ।।

ऐसा कोई प्राणी होता
जिसको कीर्ति बुरी लगती ?
ईश्वर से भी कीर्ति-स्वर्धुनी
निज शीर्ष चढायी जाती ।।

जिस मणि की प्रसूति से रतन-
गर्भा अवनी कहलाती
जिस कपूर के जलने से ही
वसुधा है सुरभि कहाती,

अमृत काल से जो अम्ल न हो
स्वर्गसून जो शीर्ण न हो
कलात्मक यम को शूली हो
शशि जो राहुनिगीर्ण न हो,

वह कीर्ति, अनंत मूर्ति, भारी
भुवि को जो संभाल लेती
तात, मुझे गर मिलती, अक्षय-
पात्र-स्यमंतक वह देती ।।

(सशेष)

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुरस्कार वितरणोत्सव

केन्द्र शिक्षा एवं संस्कृति विभाग के उपमंत्री श्री० पी०के० थुंगन का हार्दिक स्वागत कर रहे हैं केरल हिन्दी प्रचार सभा के अध्यक्ष श्री० एस. वी. कुक्किकल्लाया और मंत्री श्री० एम. के. वेलायुधन नायर ।

उद्‌घाटन भाषण—श्री० एम. पी. गंगाधरन, सिंचाई मंत्री, केरल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अध्यक्षीय भाषण—श्री० टी. एम. जेकब, शिक्षा मंत्री, केरल

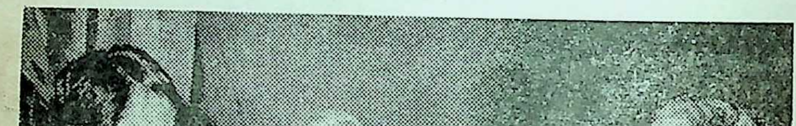

१९८१-८२ के श्रेष्ठतर प्रचारक श्री० के. पी. के. पिषारटी
केन्द्र मंत्री श्री० पी. के. थुंगन से पुरस्कार ग्रहण कर रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

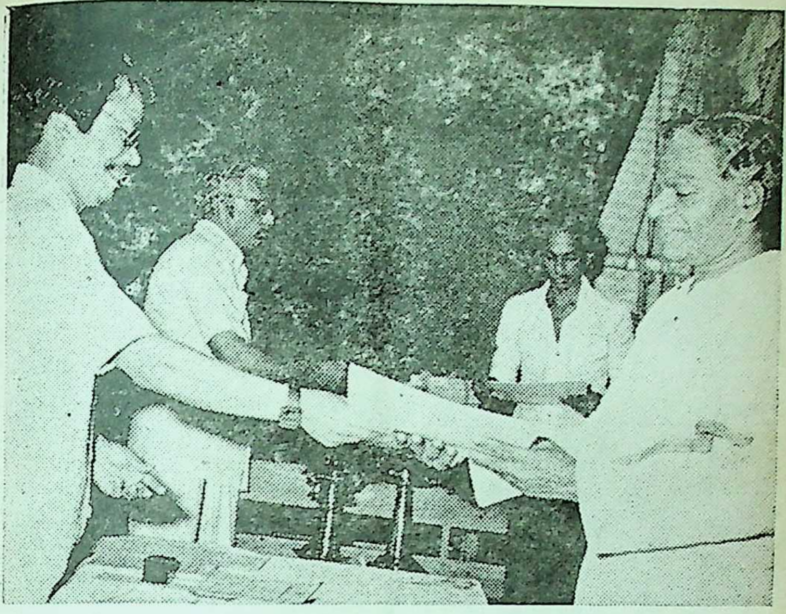

१९८१–८२ के श्रेष्ठ प्रचारक श्री० के. एस. कुमार केन्द्र मंत्री श्री० पी. के. थुंगन से पुरस्कार ग्रहण करते हुए ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

केन्द्र शिक्षा एवं संस्कृति विभाग के उप मंत्री श्री० पी. के. थुंगन का अभिनन्दन भाषण ।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुरस्कृत छात्रों एवं प्रचारकों का अभिनन्दन कर रहे हैं डा० बालगोविन्द मिश्र, निदेशक, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा (ऊपर) और श्री० के. आर इलंकत, भूतपूर्व मंत्री, केरल (नीचे)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केरल हिन्दी प्रचार सभा द्वारा १९८१-८२ में संचालित 'हिन्दी प्रथम' से लेकर 'साहित्याचार्य' तक की परीक्षाओं में प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान पाये विद्यार्थियों को पुरस्कृत करने एवं सर्वाधिक परीक्षार्थियों को प्रस्तुत किये तीन हिन्दी प्रचारकों को नकद पुरस्कार दे कर सम्मानित करने केलिए २३-११-१९८२ को सभा भवन में एक पुरस्कार वितरण संपन्न हुआ।

समारोह का आरंभ कुमारी वी. एस. श्रीलेखा की प्रार्थना से हुआ। सभा के मंत्री श्री० एम. के. वेलायुधन नायर ने सभा की गतिविधियों का परिचय देते हुए स्वागत भाषण दिया। (भाषण अन्यत्र)

समारोह का उद्घाटन करते हुए केरल के सिंचाई मंत्री श्री. एम. पी. गंगाधरन ने कहा कि कालेजीय स्तर पर भी हिन्दी का अध्ययन अनिवार्य रूप से हो। (भाषण अन्यत्र) समारोह की अध्यक्षता करते हुए केरल के शिक्षा मंत्री श्री टी. एम. जेकब ने बताया कि हिन्दी के अध्ययन को केरल सरकार प्रोत्साहित करना चाहती है। (भाषण अन्यत्र) पुरस्कार वितरण करते हुए केन्द्र शिक्षा एवं संस्कृति विभाग के उप मंत्री श्री० पी. के. थुंगन ने बताया कि हिन्दी थोपी जाना या हिन्दी प्रचार में रुकावट

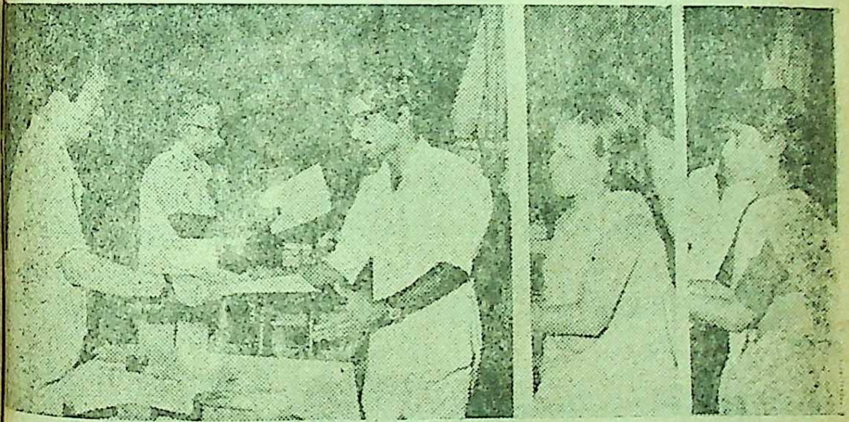

हिन्दी प्रचारकों का प्रोत्साहन।

१९८१-८२ के प्रोत्साहक पुरस्कार केन्द्र शिक्षा एवं संस्कृति विभाग के उपमंत्री श्री० पी. के. थुंगन से पा रहे हैं।

(१) श्री० के. के. गंगाधरन (पुतुकाट) (२) श्रीमती सी. शान्तम्मा (पेरूरकटा) और (३) श्रीमती वी. कृष्ण कुमारी (मुतुकुलम)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परीक्षाओं में उन्नत स्थान पाने के उपलक्ष्य में पुरस्कृत प्रतिभाशालियों में स्कूल कालेज के विद्यार्थी ही नहीं, सेवारत प्रौढ़ भी हैं ।

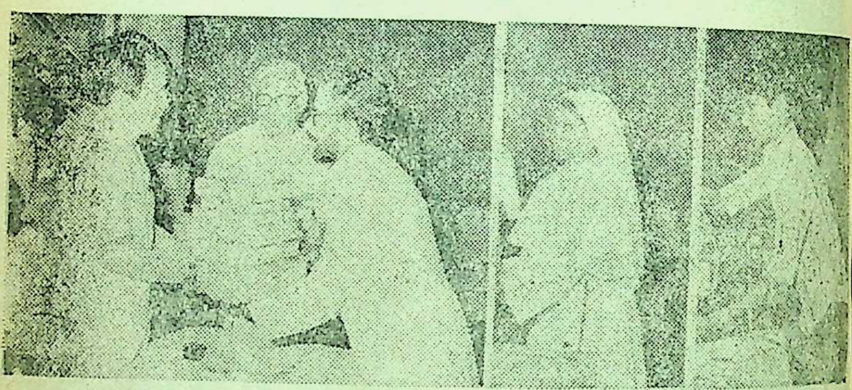

डालना अभिलषणीय नहीं है । (भाषण अन्यत्र)

आशीर्वाद भाषण में केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा के निदेशक डा० बालगोविन्द मिश्र ने बताया-हिन्दी भाषा की महत्ता और उपयोगिता को मैं एक बार पुनः रेखांकित करना चाहूंगा यह कह कर कि भाषा मानसिक अभिव्यक्ति का साधन होने के साथ साथ मानवीय संपर्क का भी अन्यतम साधन है । इस साधन और माध्यम होने के कारण हिन्दी के द्वारा सब से अधिक व्यक्ति इस देश में एक दूसरे से जुड जाते हैं और न केवल आज इस भाषा के माध्यम से जुड जाते हैं बल्कि आशा की जाती है कि भविष्य के कई वर्षों तक रहे सहे व्यक्तियों के माध्यम के रूप में भी यह भाषा विकसित हो सकेगी। इस प्रकार के माध्यम के रूप में भाषा के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

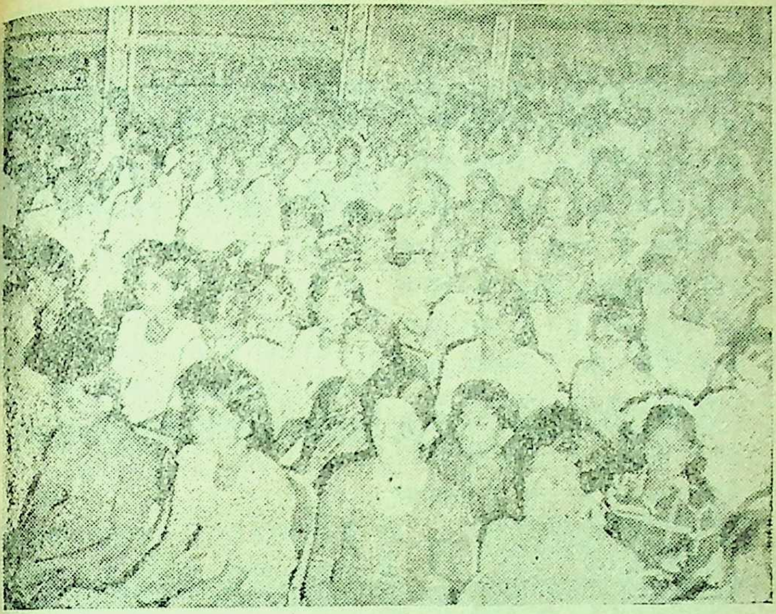

अधिक उत्साह से हिन्दी सीखने की प्रेरणा पा रहा है श्रोता गण।

विकास केलिए यह भी आवश्यक है कि भाषा का अध्ययन अध्यापन केवल स्कूल कालेज के अन्तर्गत सीमित न रहे। जन आन्दोलन के रूप में भाषा के विकास और प्रसार का कार्य किया जाये। केरल हिन्दी प्रचार सभा इसी रूप में इस लक्ष्य को सामने रखकर कार्य कर रही है, यह अत्यन्त स्तुत्य प्रयास है। पिछले पचास वर्षों से यह संस्था हिन्दी के प्रचार और प्रसार के आन्दोलन को आदर्श दिशा दे रही है। इस के साथ साथ भाषा के सरलीकरण की ओर भी ध्यान दिया जाना अत्यन्त आवश्यक है। केन्द्रीय हिन्दी संस्थान इस दिशा में प्रयास करता रहा है जिस से हिन्दी अध्ययन-अध्यापन की विधियों, उस की सामग्री, उस के उद्देश्य, इन सभी का आधुनिकीकरण किया जा सके और उस के द्वारा इस आन्दोलन को और भी अधिक बल दिया जा सके। पुरस्कृत छात्रों को आशीर्वाद देते हुए यह आशा करता हूँ कि हिन्दी प्रचार और प्रसार के सबल माध्यम इस प्रदेश में बनेंगे।"

पुरस्कृत छात्रों और प्रचारकों का अभिनन्दन करते हुए केरल के भूतपूर्व मंत्री श्री० के. आर. इलंकत ने बताया कि हिन्दी भारत की स्वतंत्रता से जुडी हुई है। आपने कहा—"स्वतंत्रता संग्राम के समय हरिजन सेवा, विदेश वस्त्रों का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहिष्कार, हिन्दी प्रचार आदि विभिन्न क्षेत्रों में स्वयंसेवकों ने स्वतंत्रता के एक ही एक लक्ष्य को सामने रख कर काम किया था। अब स्वतंत्रता प्राप्ति के वर्षों बाद भी हिन्दी का उचित स्थान नहीं मिल पाया है। अब तो समय बंधित कार्यक्रम के अनुसार हिन्दी का विकास करना होगा। केरल में हिन्दी का कोई विरोध नहीं है। केरल में हिंदी का जितना प्रचार हुआ है उसका मुख्य श्रेय केरल हिन्दी प्रचार सभा को है।

कृतज्ञता भाषण में केरल हिन्दी प्रचार सभा के अध्यक्ष श्री. एस वी. कुञ्जिकृष्णाया ने बताया कि "हमारे संविधान ने हि[न्दी] को समुचित स्थान दिया है। आप[ने] कहा कि प्रान्तीय भाषा के अतिमोह[ग्र]ग्रस्त पंडितों को बिना विलंब हो [यह] अनुभव होगा कि हिन्दी अध्ययन [के] लाभों से युवा पीढी को वंचित रख[कर] वे नयी पीढी का बड़ा अहित क[र] रहे हैं।

सम्मेलन के बाद डा० गुरु गोपीनाथ [के] विश्व कलाकेन्द्र, तिरुवनन्तपुरम द्वा[रा] 'रामायणम् बाले' प्रस्तुत किया गया।

❀

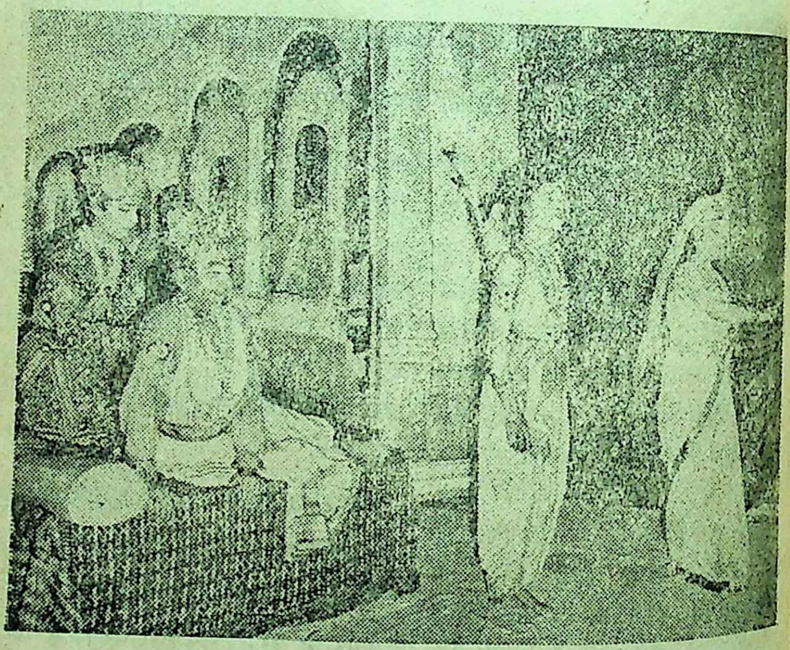

नाट्यकला के आचार्य एवं विश्व कलाकेन्द्र, तिरुवनन्तपुरम के निदेशक डा० गुरु गोपीनाथ द्वारा प्रस्तुत 'रामायणम् बाले' का एक मार्मिक संदर्भ। दशरथ की दुख दग्ध भूमिका में डा० गुरु गोपीनाथ।

CC-0, In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत की जनता हिन्दी को स्वीकार कर चुकी है।

श्री० एम. पी. गंगाधरन
सिंचाई मंत्री, केरल

यद्यपि यह एक हिन्दी सम्मेलन है तो भी मुझे एक विदेशी भाषा अंग्रेजी में बोलने की अनुमति दें। ऐसा नहीं समझें कि मैं अंग्रेजी में बोलना पसन्द करता हूँ। बात यह है कि हिन्दी में भाषण देने की सामर्थ्य मुझ में नहीं है। यदि मैं मलयालम में बोलूँ तो आज के माननीय अतिथि श्री० थुंगन मेरी बात नहीं समझ पायेंगे। इस समारोह के महत्व को देखते हुए मुझे लगता है कि हिन्दी केलिए अपेक्षित सहयोग और संरक्षण पर मैं जो विचार व्यक्त करना चाहूँगा उसे केन्द्र मंत्री अवश्य समझ पाये।

केरल में हिन्दी की स्थिति पडोसी प्रान्तों की सी नहीं है। हिन्दी को हमने राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार किया है। हर राष्ट्र की एक राष्ट्रभाषा होनी ही चाहिए। यदि हम स्वभाषा को और स्वभाषा द्वारा विकसित पोषित संस्कृति को आत्मसात करने को तैयार नहीं हैं तो हम इस देश में जीने योग्य नहीं हैं। बिना राष्ट्रभाषा का ज्ञान पाये राष्ट्र में रहना दुष्कर हो जाता है।

भारत विविध धर्मों, विविध संस्कृतियों और विविध भाषाओं का एक विशाल देश है जहाँ विविधता में एकता पायी जाती है। हिन्दी भारत की करीब ८५% जनता जानती है। उत्तर भारत के विविध प्रान्तों में ही नहीं आन्ध्र में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी हिन्दी फैली हुई है। भारतीयों को एक आम भाषा की बडी आवश्यकता है जिस के माध्यम से विविध भाषा भाषी भारतीय आपस में बात कर सकें। इस केलिए हमने अधिकांश जनता द्वारा समझी जानेवाली हिन्दी को चुना है। चूंकि हिन्दी अधिकांश भारतीयों की भाषा है, इसलिए यह स्वाभाविक है कि हिन्दी भारत की अधिकांश जनता की भावनाओं और विचारों की अभि-व्यक्ति का माध्यम है, उन की संस्कृति की वाहिनी है। हिन्दी में समायी इस संस्कृति का परिचय पाने केलिए भी हिन्दी का अध्ययन आवश्यक हो जाता है।

दक्षिण के चारों प्रान्तों में आन्ध्र, कर्नाटक, तमिलनाड और केरल में जहाँ हिन्दीतर भाषायें बोली जाती हैं हिन्दी सीखने की बडी आवश्यकता है। पर इनमें कहीं कहीं हिन्दी विरोधी आन्दोलन भी चलता है। लेकिन केरल में ऐसा कोई विरोध नहीं है। केरल की जनता हिन्दी से प्रेम करती है। हिन्दी के अध्ययन को जितना प्रोत्साहन केरल में मिलता है उतना शायद दक्षिण के और किसी प्रान्त में नहीं मिलता। यदि भारत सरकार द्वारा हिन्दी थोपी भी जाती तो केरल में इसका विरोध नहीं होता।

केरल हिन्दी प्रचार सभा हिन्दी के प्रचार के लिए जो कुछ कर रही है उससे मैं अतीव संतुष्ट हूँ। यह सब कार्य सभा राज्य सरकार या केन्द्र सरकार की सहायता के बल पर नहीं कर रही है, बल्कि जनता के सहयोग के बल पर कर रही है। यहाँ इस सम्मेलन में बडी संख्या में जो श्रोता उपस्थित हैं वे इसलिए यहाँ एकत्र हुए हैं कि वे हिन्दी के अध्ययन को प्रोत्साहित करना चाहते हैं। हिन्दी भारत की मिट्टी में उगी और यहीं पल्लवित हुई है। हमारा संविधान हिन्दी को भारत की राजभाषा घोषित करता है। हम ने हिन्दी को इन कारणों से ही नहीं स्वीकार किया है। एक कारण यह भी है कि हम भारत की एकता चाहते हैं। राष्ट्रीय भावना से प्रेरित होकर हमने हिन्दी को आपनाया है। केरल में हिन्दी अध्ययन को सरकार ही नहीं, केरल हिन्दी प्रचार सभा जैसी स्वैच्छिक संस्थायें भी प्रोत्साहित कर रही है। यह सभा प्रतिवर्ष ऐसे कई सम्मेलन आयोजित करती है जिस केलिए इसके कार्यकर्ताओं को बहुत परिश्रम करना पडता है। सभा के इन परिश्रमों में केरल की वर्तमान सरकार भरसक सहायता करेगी।

जैसे शिक्षा मंत्री ने सुझाया, हिन्दी का अध्ययन स्कूली स्तर पर ही नही, कालेजीय स्तर पर भी होना चाहिए। हिन्दी अध्ययन को राज्य सरकार ही नहीं केन्द्र सरकार का भी अधिकाधिक प्रोत्सान मिलना है। भारत सरकार की यह नीति होनी चाहिए कि हिन्दी को भारतीय जनता की संस्कृति और अभि-व्यक्ति का माध्यम बनाया जाये। हिन्दी विरोधी आन्दोलनों की कोई गुंजाइश नहीं होनी चाहिए। इस दिशा में केन्द्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरकार को अधिक साहसपूर्ण कदम उठाने होंगे। हिन्दी के विकास केलिए केन्द्र सरकार से अधिक सहायता अपेक्षित है। केरल हिन्दी प्रचार सभा को केन्द्र सरकार से अभी जो आर्थिक सहायता मिलती है वह पर्याप्त नहीं है। मैं श्री शुंगनजी से अनुरोध करूँगा कि वे इस में अवश्य वृद्धि करें। चूँकि केरल हिन्दी प्रचार के क्षेत्र में सदा अग्रणी रहा है, इसलिए मैं अनुरोध करता हूँ कि हिंदी प्रचार केलिए विविध राज्यों को आर्थिक सहायता देते समय केरल को थोडी प्राथमिकता अवश्य दें और केरल हिन्दी प्रचार सभा को पर्याप्त आर्थिक सहायता दें।

मैं केन्द्र सरकार से अनुरोध करता हूँ कि हिन्दी के प्रचार में और अधिक ध्यान दिया जाये। हर प्रान्त में हिन्दी का प्रचार होना है। यदि कुछ राज्य हिन्दी का विरोध भी करें तो भी हम भारतीय जनता हिन्दी को अपना चुकी है। अतः इस भाषा के विकास और प्रचार के लिए भारत सरकार से अधिक सहायता मिलनी ही चाहिए। मेरा यह भी अनुरोध है कि कालेजीय स्तर पर भी हिन्दी के अध्ययन को प्रमुखता दी जाये। आप जानते हैं कि हमारे कई बच्चे केरल के बाहर जाते हैं। उत्तर भारत में जीने के लिए हिन्दी अत्यन्त आवश्यक है। लोक सभा की बात लीजिए। यदि कोई मलयालम में बोले तो लोक सभा पर उसका कोई असर नहीं पड सकता। यदि हिन्दी में बोलें तो लोक सभा के सभी सदस्य हमारी बात समझ जाते हैं। इसलिए मेरी दृष्टि में कालेजीय स्तर पर भी हिन्दी के अनिवार्य अध्ययन का प्रबंध होना ही चाहिए। मैं आशा करता हूँ हमारे शिक्षा मंत्री इस बात पर उचित ध्यान देंगे और केरल में हिन्दी को प्रमुखता दी जायेगी।

बडे हर्ष के साथ मैं इस समारोह का उद्घाटन करता हूँ। ❀

२३–११–१९८२ को केरल हिन्दी प्रचार सभा भवन में आयोजित पुरस्कार वितरणोत्सव में दिया गया उद्घाटन भाषण।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केरल हिन्दी के पक्ष में है

श्री० टी. एम. जेकब

शिक्षा मंत्री, केरल

जैसे श्री० थुंगन ने बातचीत में सुझाया हमारे प्रान्त की त्रिभाषा पद्धति इस सम्मेलन में भी लागू की जा सकती है। श्री० गंगाधरन अंग्रेजी में बोले, श्री० थुंगन हिन्दी में बोलेंगे, मैं अपनी बातें मलयालम में बोलूँगा।

हमारे प्रान्त में शिक्षा के क्षेत्र में हिन्दी के संबन्ध में जो नीति अपनायी गयी है और अपनायी जानेवाली है उसका परिचय मैं ने श्री० थुंगन को दिया। वे इस नीति पर संतृप्त हैं। केन्द्र मंत्री श्रीमती शीला कौल से भी मैं ने इस संबन्ध में बात की है। केरल की हिन्दी संबन्धी नीति पर सबको बडा गर्व है। श्री० थुंगन ही अभी बता रहे थे कि शिक्षा में और भाषा संबन्धी बातों में इतनी तत्परता दिखानेवाला और कोई प्रान्त दक्षिण में नहीं है।

केरल हिन्दी प्रचार सभा के कार्य-कलापों के बारे में और इस संस्था के द्वारा कार्यान्वित विविध योजनाओं के संबन्ध में इस सम्मेलन में उपस्थित अधिकांश लोग जानते हैं। मन्त्रित्व ग्रहण करने के बाद मैं तीसरा बार अब यहां आया हूँ। कुछ सप्ताह पूर्व मैं श्री० गंगाधरन के साथ इस संस्था में आया था और केरल हिन्दी प्रचार सभा द्वारा संचालित सुगम हिन्दी परीक्षाओं में उन्नत स्थान पाये विद्यार्थियों को पुरस्कार वितरण किया था। उसके बाद इस संस्था में आयोजित अखिल भारतीय हिन्दीतर नव हिन्दी लेखक शिविर में आये हुए प्रतिभागियों से थोडी देर तक बात करने का अवसर भी मुझे मिला। केरल हिन्दी प्रचार सभा द्वारा संचालित विविध परीक्षाओं में उन्नत स्थान पाये विद्यार्थियों को पुरस्कार देकर प्रोत्साहित करने और उनका अभिनन्दन करने के लिए हम यहाँ एकत्र हुए हैं।

हमारे प्रान्त और सम्पूर्ण देश की स्थिति पर नजर डालें तो हम समझ सकते हैं कि भाषा की आवश्यकता क्या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है और भाषा को हम कितनी प्रमुखता देते हैं। भावों के संप्रेक्षण के लिए और ज्ञान के व्यापन के लिए हम भाषा का माध्यम अपनाते हैं। भाषा संबन्धी नीति में प्रत्येक प्रान्त की अपनी नीति है। यद्यपि शिक्षा का रूप-निर्धारण प्रान्त स्वयं कर सकते हैं तो भी हमें एक देशीय दृष्टि की आवश्यकता है। भारत की राष्ट्रभाषा के रूप में हम हिन्दी को स्वीकृत कर चुके हैं। हिन्दी पढ़ना और पढ़ाना आवश्यक है। हमारे प्रान्त ने इसे जीवन का एक अंग ही बना लिया है। हाँ, यह बात विचारणीय है कि आरंभ काल में हिन्दी को जो प्रमुखता मिलती थी वह आज मिलती है कि नहीं। इस बात पर हिन्दी प्रचार सभा के कार्यकर्ता और इस समस्या से जुड़े हुए कई अनेक व्यक्ति विशेष कर भाषाध्यापक आपत्ति उठा रहे हैं।

हमारे प्रान्त में विविध स्तरों पर स्कूली और कालेजीय स्तरों पर कई भाषायें सिखाई जाती हैं। भाषाध्यापकों की समस्यायें सुलझाने के लिए सरकार हार्दिक परिश्रम कर रही है। उन्हें प्रधान अध्यापक का पद प्राप्त करने के अवसर प्रदान करने की कार्रवाई की जा रही है।

केरल में त्रिभाषा सूत्र अपनाया गया है। स्कूली स्तर पर अंग्रेजी, मलयालम और हिन्दी सिखाई जा रही हैं। यह आपत्ति उठायी जा रही है कि पहले हिन्दी को जो अन्य भाषाओं के समान स्थान मिलता था वह अब नहीं रहा। इसका प्रमुख कारण मैट्रिक परीक्षा में 'ग्रूप् सिस्टम्' अपनाया जाना है। भाषाओं का एक ग्रूप बना है और और अन्य विषयों का एक ग्रूप बना है। भाषाओं के ग्रूप में अंग्रेज़ी और मलयालम के लिए जितना अंक निर्धारित है उतना अंक हिन्दी के लिए निर्धारित नहीं है। कुछ लोग कहते हैं कि यह पक्षपातपूर्ण नीति है जिसमें हिन्दी को उचित स्थान नहीं मिल रहा है। कुछ लोगों का सन्देह है कि यद्यपि हम शिक्षा के क्षेत्र में काफी आगे बढ चुके हैं तो भी हम ऐसी नीति अपना रहे हैं जिससे हिन्दी के प्रति और अन्य भाषाओं के प्रति बच्चों की रुचि ह्रासोन्मुख हो रही है। इस सन्देह का कारण यह है कि ग्रूप सिस्टम् में हमने प्रत्येक विषय के लिए न्यूनतम उत्तीर्णता अंक निर्धारित नहीं किया है। भाषा ग्रूप में तीनों भाषाओं के लिए कुल २५० में ९० अंक पाने पर विद्यार्थी उत्तीर्ण हो सकते हैं। इस स्थिति में किसी एक भाषा का अध्ययन छोड दिया जा सकता है। यदि स्थिति में परिवर्तन लाना हो तो हर भाषा ठीक तरह से पढने की रुचि जाग्रत करनी होगी। लगता है कि भविष्य के संबन्ध में ठीक तरह से सोचे विचारे बिना हम जो सुधार ला रहे हैं वही ऐसी स्थितियों का कारण है। जो भी हो ऐसी बातों में सरकार कुछ विशेष कदम उठाना चाहती है। भारत में शिक्षा के क्षेत्र में सर्वाधिक धन लगानेवाला प्रान्त केरल है। इस वर्ष हमारी कुल आमदनी का इकतालीस प्रतिशत शिक्षा के लिए लगा रहे हैं। यदि इस लागत से हमारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सांस्कृतिक और शैक्षिक प्रगति होनी है तो उस क्षेत्र में अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है। इस संबंध में गौर से विचार किया जा रहा है। ग्रूप सिस्टम के परिणामों की ओर विद्यार्थियों, अध्यापकों और अभिभावकों ने हमारा ध्यान आकृष्ट किया है। जैसे कुछ दिन पूर्व मैं ने यहाँ सुझाया था, हमें यह भी सोचना है कि उच्च शिक्षा के क्षेत्र में हिन्दी अध्ययन का अधिक अवसर कैसे प्रदान किया जा सकता है। आपको विदित है कि हिन्दी, मलयालम आदि को कालिज में हमने द्वितीय भाषा का स्थान दिया है। यहाँ हिन्दी के संबंध में कोई भेद भाव नहीं रहा है। मातृभाषा मलयालम और हिन्दी के संबंध में समान नीति अपनायी गयी है। तो भी इस बात पर विचार किया जा रहा है कि राष्ट्र-भाषा॰ हिन्दी के अध्ययन के प्रति विद्यार्थियों में अधिक रुचि उत्पन्न करने और उसका अधिक अध्ययन करने का अवसर उच्च शिक्षा के क्षेत्र में प्रदान करने के लिए क्या क्या किया जा सकता है।

जो भी हो राज्य सरकार की नीति हिन्दी को यथासंभव प्रोत्साहित करने की है। इस क्षेत्र में हिन्दी प्रचार सभा को सभी प्रकार का सहयोग देने में सरकार सदा तैयार रहेगी। दक्षिण के कई प्रान्तों में अपनायी गयी निषेधात्मक नीति हमने नहीं अपनायी है। यही केरल की विशेषता भी है। किसी भाषा के अध्ययन का विरोध केरल की जनता नहीं करती।

हमीं यह निर्णय करते हैं कि स्कूली स्तर पर बच्चों को कौन कौन सा विषय पढाना है और कैसे पढाना है। हम इस क्षेत्र में जो सुधार लाते हैं वही भविष्य का निर्धारण करती है। इस बात में बच्चों को उचित ढंग से सोचने का अवसर देने और उनका विकास तदनुसार करने की दिशा में सरकार जो सहायक नीति अपनायगी उस में हर विभाग की जनता का हार्दिक सहयोग हो यही मेरा अनुरोध है।

मैं ने श्री॰ थुंगन से अनुरोध किया है कि केन्द्र सरकार केरल हिन्दी प्रचार सभा को जो सहायता दे रही है उसमें परि-वर्धन किया जाय। आपने मुझे आश्वा-सन दिया है कि इस संबन्ध में अवश्य कार्रवाई की जायगी।

केरल हिन्दी प्रचार सभा जो अमूल्य सेवा कर रही है उसमें हमें भरसक सह-योग देना है। सभा के सभी कार्यों की सफलता केलिए मैं शुभकामना करता हूँ। सभा की परीक्षाओं में उन्नत स्थान पाये जो विद्यार्थी यहाँ पुरस्कार पाने आये हैं उनका मैं हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ। इस प्रकार के समारोहों का और प्रोत्सा-हनों का उद्देश्य यही है कि आपको इस क्षेत्र में अधिक लगन से जुड जाने की प्रेरणा मिले। मेरा अनुरोध है कि आप इसमें प्रेरणा ग्रहण कर तदनुसार काम करें। आपको और हिन्दी प्रचार सभा को सभी प्रकार की शुभकामनाएँ अर्पित करते हुए मैं अपना भाषण समाप्त करताहूँ।

२३–११–१९८२ को केरल हिन्दी प्रचार सभा में आयोजित पुरस्कार वितरणोत्सव में दिया गया अध्यक्षीय भाषण।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी प्रचार में व्यवधान न हो

पी. के. थुंगन, उपमंत्री

केन्द्र शिक्षा एवं संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार

सभा के अध्यक्ष जेकब साहब, केरल प्रदेश के सिंचाई मंत्री एम. पी. गंगाधरन जी, इलंकतु जी, डा० मिश्र जी, भाइयो, बहनो और दोस्तो,

मैं आज यहाँ आप के बीच आकर बहुत ही खुश हूँ। क्योंकि पहले वक्ताओं द्वारा जो हिन्दी के प्रति प्यार और हिन्दी प्रचार-प्रसार के प्रति जो रुचि दिखायी गयी है, बहुत ही सराहनीय है। केरल हिन्दी प्रचार सभा के मंत्री श्री० एम. के. वेलायुधन नायर की लगन और उनकी निष्ठा को देख के मैं बहुत खुश हूँ। साथ ही साथ मैं नायर साहब को और अन्य कार्यकर्ताओं को हार्दिक धन्यवाद देना चाहता हूँ। क्यों कि आप ने मुझे यहाँ आने का मौका दिया। वैसे तो मैं आप से क्षमा चाहूँगा। आप ने तो बहुत दिन पहले से मुझ से यहाँ आने के लिए कहा था। लेकिन और कामों में लगे हुए रहने की वजह से मैं यहाँ पहले नहीं आ पाया। आज यहाँ आ के मैं यह महसूस करता हूँ कि आप कितने प्यारसे और लगन से यह काम कर रहे हैं और क्यों मुझे बुलाया और इतने अच्छे प्रकार से मेरा स्वागत किया। पहले आप ने जो निमंत्रण भेजा या उसका महत्व मैं आज महसूस कर रहा हूँ। आप की लगन के लिए ,आप के कार्य के लिए मैं आप को और अन्य कार्यकर्ताओं को बहुत बहुत धन्यवाद और मुबारकवाद देता हूँ।

वैसे हिन्दी भाषा के बारे में गंगाधरन साहब ने आप को बताया। आज के जो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अध्यक्ष हैं उन्होंने मुझे यह बताया कि आप जो केरल के लोग हैं सभी हिन्दी के प्रति बहुत रुचि ले रहे हैं। यह बहुत ही सराहनीय है। हमारा देश भिन्नता में एकतावाला एक महान देश है। इस में कई भाषायें बोली जाती हैं, कई धर्म हैं, कई किस्म के लोग हैं, लेकिन हम सब एक ही हैं। यह सच बात है कि भावात्मक एकता की दिशा में हम काफी आगे बढ़ चुके हैं। खास प्रकार से बहुत सी भिन्नता होने की वजह से हमारे देश की भावात्मक एकता के निर्माण की प्रक्रिया अभी भी जारी है। तो इसमें राष्ट्रभाषा इसलिए बहुत ज़रूरी है कि जो भिन्न प्रान्त के हैं सभी अपने विचारों का आदान प्रदान इस भाषा के माध्यम से कर सकें। इसलिए ही पं० जवाहरलाल नेहरू जैसे हमारे प्रिय नेताओं और पंडितों ने राष्ट्रभाषा की ऐसी नीति हमें दी है। मेरा मतलब यह है कि मनुष्य एक सामाजिक जाति है। अगर इस जाति के सदस्य किसी भाषा के द्वारा ठीक प्रकार से अपने भावों का पारस्परिक आदान प्रदान नहीं कर पाये तो सामाजिक एकता में और सामाजिक सुधार में व्यवधान आ जाता है। अगर एक आदमी मौन रहेगा तो न तो वह समाज में बहुत ज़्यादा मित्र पा सकता है न ही वह समाज में प्रतिष्ठा पा सकता है। आप को मालूम है कि जिन लोगों को भाषा पर ज़्यादा अधिकार है, जो ठीक तरह से बोल सकते हैं, जो ठीक तरह से अपना विचार व्यक्त कर सकते हैं वे ही समाज में नेतृत्व के स्थान पर पहुँच पाते हैं। समाज को साथ लाने में उन्हीं को सफलता मिलती है। वे ही अपनी विचार धारा को अच्छी तरह से व्यक्त कर सकते हैं।

हमारे देश में भिन्नता में जो एकता है उसे और भी मजबूत बनाने केलिए एक राष्ट्रभाषा की जरूरत है। इस जरूरत को हमारे नेताओं ने समझा और एक राष्ट्रभाषा का प्रावधान रखा गया। इसी भाषा के जरिये हम चाहे कश्मीर से हों, केरल से हों, असम से हों या मध्य-प्रदेश से हों, अपने भावों का आदान प्रदान ठीक प्रकार से कर सकेंगे। अपने देश की इज्जत केलिए भी एक राष्ट्रभाषा का होना बहुत ज़रूरी है। मंगोलिया में हमारे एक बहुत बडे नेता एक अन्तर्देशीय सम्मेलन केलिए गये थे। वहाँ हमारे विदेश मंत्रालय की तरफ से उनका भाषण अंग्रेजी में तैयार किया गया था।

जब सभा शुरू हुई और हमारे नेता बोलनेवाले थे तो एक द्विभाषिणी आयी और हमारे नेता से उन के भाषण की पांडुलिपि मांगी। हमारे नेता ने अंग्रेजी में लिखी पांडुलिपि उन को दे दी। वह महिला उसे देख कर कहने लगी मुझे तो अंग्रेजी नहीं आती। हमारे नेता बडी दुविधा में पड गये। द्विभाषिणी ने बताया—"आप हिन्दुस्तान से पधारे हैं। अत: हिन्दी जाननेवाली मुझ द्विभाषिणी को यहाँ भेजा गया है। मुझे हिन्दी आती है। अंग्रेज़ी नहीं आती।" भाग्यवश हमारे नेता उत्तर भारत से थे। उन को हिन्दी पर पूरा अधिकार था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्होंने द्विभाषिणी से पूछा—आप को हिन्दी अच्छी प्रकार से आती है? द्विभाषिणी ने कहा—हाँ, आती है। हमारे नेता ने कहा—मेरे पास अभी हिन्दी में लिखित पांडुलिपि नहीं है। तो भी मैं हिन्दी में बोलूंगा। धीरे धीरे बोलूंगा। आप अनुवाद कर लेना।" द्विभाषी ने हामी भरी।

इस किस्से से यह व्यक्त होता है कि भावात्मक एकता को सुदृढ करने केलिए ही नहीं, अपितु, विदेशों में हमारे राष्ट्र की इज्जत रखने केलिए भी राष्ट्रभाषा की बडी आवश्यकता है। इन सब बातों को ख्याल में रखते हुए मैं केरल हिन्दी प्रचार सभा की सेवाओं को अधिक महत्वपूर्ण मानता हूं और सभा को मुबारकबाद देता हूँ।

भारत सरकार की नीति हर भारतीय भाषा को प्रोत्साहन देने की रही है। राष्ट्रभाषा के प्रचार और प्रसार को प्रोत्साहन देने की भी नीति भारत सरकार ने अपनायी है। सरकार की यह नीति नहीं है कि हिन्दी भाषा को किसी के ऊपर थोपा जाये। मैं कई जगहों पर यह कहता आया हूँ कि जब कि हम हिन्दी किसी के ऊपर थोपना नहीं चाहते तो वहाँ यह भी बहुत जरूरी बात है कि हिन्दी भाषा के प्रचार प्रसार में रुकावट भी नहीं होनी चाहिए। केरल हिन्दी प्रचार सभा के अनुदान के संबंध में श्री० एम. पी. गंगाधरन जी ने जो कुछ बताया था उसके संदर्भ में मैं यह बताना चाहूँगा कि आप के कार्य को देखते हुए हम उन की बात से बिलकुल सहमत हैं। अनुदान देते समय इस बात का ध्यान रखा जायेगा।

भाषा के विकास संबन्धी कार्यों में भारत सरकार सहायता देती है। पर भारत सरकार स्वयं ऐसी योजनायें कार्यान्वित नहीं करती। कार्यान्वयन प्रान्तीय सरकारों द्वारा होता है।

आज केरल के शिक्षा मंत्री श्री० टी. एम. जेकब से यह सुनकर मुझे बडी खुशी हुई कि त्रिभाषा सूत्र को केरल सरकार बहुत महत्व दे रही है और हिन्दी को और भी ज्यादा प्रोत्साहन देने के संबंध में विचार किया जा रहा है। राष्ट्रभाषा के प्रचार कार्य में प्रान्तीय सरकार की यह लगन बहुत ही सराहनीय है और राष्ट्र भाषा की उन्नति केलिए यह लगन अत्यंत सहायक सिद्ध हो सकती है।

यह भी सच है कि केरल में हिन्दी अध्ययन के मार्ग पर रुकावट डालने की किसी प्रकार की कोशिश नहीं है। इसलिए मैं केरलवासियों को मुबारकबाद देता हूँ। आप सचमुच बधाई के पात्र हैं।

आज इस सभा में आने की जो सुविधा मुझे दी, यहाँ मेरा जो सम्मान हुआ, उस केलिए मैं धन्यवाद अर्पित करता है। जो यहां पुरस्कार पानेवाले हैं उन सब को मैं मुबारकबाद देता हूँ और आयोजकों को धन्यवाद देता हूं।

जय हिन्द

२३–११–१९८२ को केरल हिन्दी प्रचार सभा में आयोजित सम्मेलन में पुरस्कार वितरण करते हुए दिया गया भाषण।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डा० पी. के. नारायण पिल्लै केन्द्र साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत

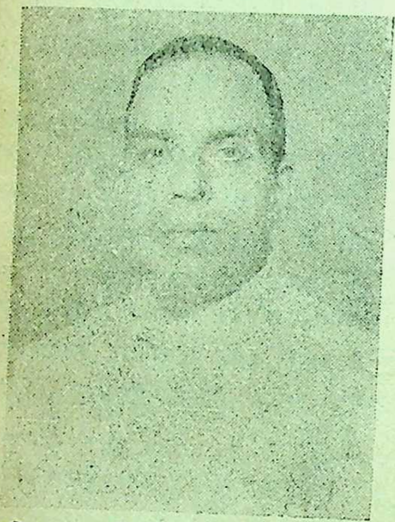

विख्यात विद्वान एवं केरल हिन्दी प्रचार सभा के भूतपूर्व अध्यक्ष डा० पी. के. नारायण पिल्लै संस्कृत भाषा में रचे अपने महाकाव्य 'विश्वभानु' पर १९८२ के केन्द्र साहित्य अकादमी पुरस्कार से विभूषित हुए हैं।

इसी रचना पर उन्हें उत्तर प्रदेश संस्कृत अकादमी का 'कालिदास पुरस्कार' मिल चुका है।

विवेकानन्द के जीवन पर आधारित इस महाकाव्य में ५५५ श्लोक हैं जो २१ सर्गों में विभक्त हैं। इस की भूमिका भूतपूर्व केन्द्र शिक्षा मंत्री डा० प्रताप चन्द्र चन्द्र ने लिखी है।

ऋग्वेद के मंत्रों पर प्रस्तुत शोध प्रबंध पर डाक्टरेट पाये डा० पिल्लै विश्व के मूर्धन्य संस्कृत विद्वानों में अपना विशेष स्थान पा चुके हैं।

मलयालम में उन्होंने कई प्रौढ ग्रंथ रचे हैं जिनसे मलयालम साहित्य का विशेष कर साहित्यालोचन विधा का पोषण हुआ है। 'कैरली ध्वनि' नामक निबंध संकलन पर उन्हें केरल साहित्य अकादमी का पुस्कार मिला है।

केरल हिन्दी प्रचार सभा ने १९८० में उन्हें 'साहित्य कलानिधि' की मानद उपाधि से समानित किया था।

संप्रति आप उल्लूर स्मारक ओपन विश्वविद्यालय, तिरुवनन्तपुरम के निदेशक हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

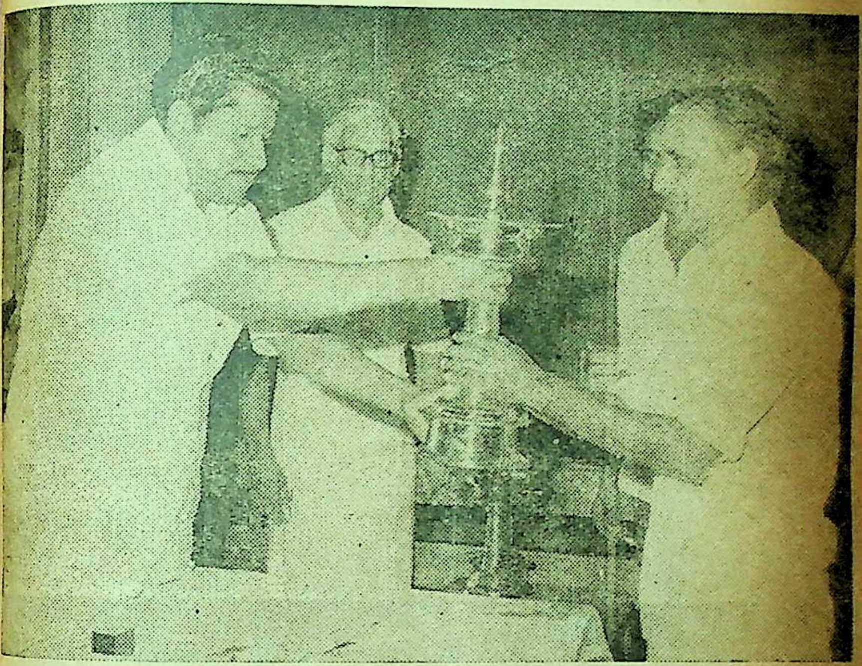

हिन्दी प्रचारक का सम्मान

केरल हिन्दी प्रचार सभा के १९८१–८२ के सर्वश्रेष्ठ हिन्दी प्रचारक श्री० के. कृष्णन कुट्टी नायर को पुरस्कार दे रहे हैं केरल के शिक्षा मंत्री श्री टी. एम. जेकब ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Reg. No. KL/TV(S)/25

January 1983

Keral Jyoti

Vol. XVII-

Price : Rs

A monthly Publication of Kerala Hindi Prachar Sabha

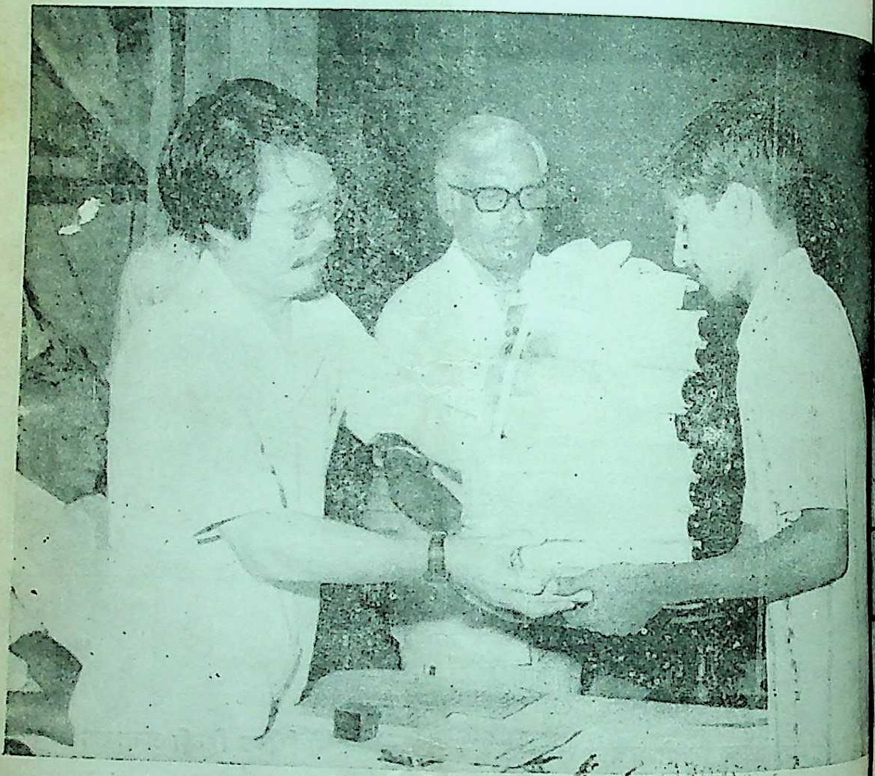

२२-११-११८२ को केरल हिन्दी प्रचार सभा में आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह में पुरस्कार वितरण कर रहे हैं केन्द्र शिक्षा एवं संस्कृति विभाग के उप मंत्री श्री० पी० के० थुंगन।

केरल हिन्दी प्रचार सभा, तिरुवनन्तपुरम-६९५०१४ केलिए श्री० एम. के. वेलायुधन नायर द्वारा प्रकाशित

मुद्रक: राष्ट्रवाणी मुद्रणालय, केरल हिन्दी प्रचार सभा, तिरुवनन्तपुरम-१४. सम्पादक: के. जी. बालकृष्ण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केरल ज्योति

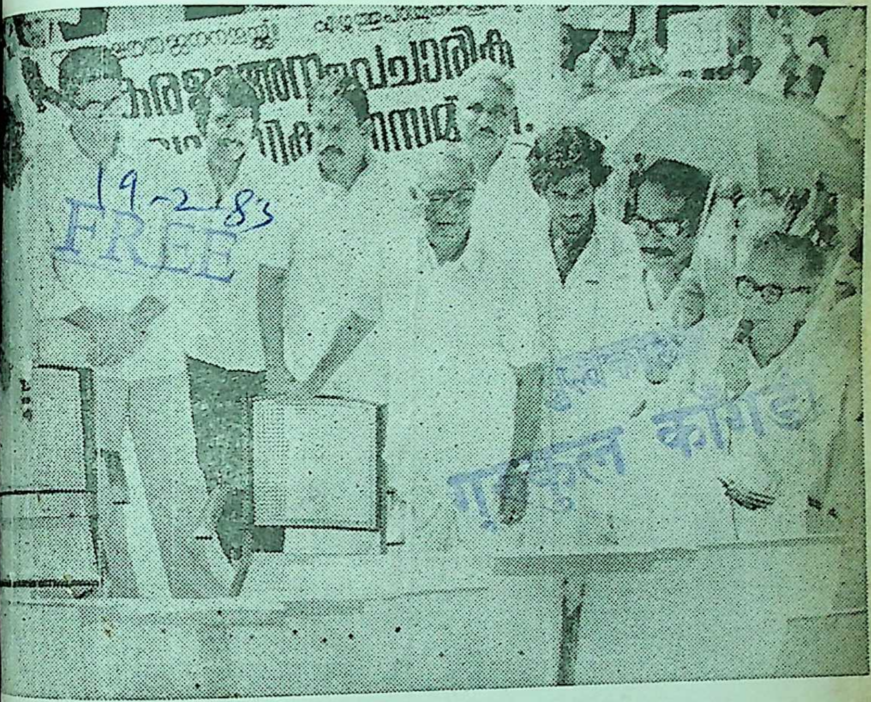

प्रौढ शिक्षा अभियान में केरल का मोर्चा—केरल अनौपचारिक शिक्षा तथा विकास समिति (कान्फेड)—साक्षरता जत्था में श्री० पी. एन. पणिक्कर और अनुचरों के साथ कदम बढा रहे हैं कोल्लम जिलाधीश श्री० गोपाल के. पिल्लै ।

केरल हिन्दी प्रचार सभा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केरल ज्योति

* प्रधान संपादक
प्रो० पी. जे. जोसफ़
* संपादक
श्री० के. जी. बालकृष्ण पिल्लै
* सह संपादक
श्री० आर. सुकुमारन नायर

* संपादक मण्डल
श्री० वी. के. गोपालन नायर
प्रो० एम. जनार्द्दनन पिल्लै
श्री० के. वी. कृष्णनकुट्टी
श्री० एम. के. वेलायुधन नायर

❀

* विज्ञापन दर

		मासिक		वार्षिक	
आवरण पृष्ठ ४	रु.	५००	००	५०००	००
आवरण पृष्ठ २ एवं ३	रु.	४००	००	४०००	००
साधारण पृष्ठ पूरा	रु.	३००	००	३०००	००
साधारण पृष्ठ १/२	रु.	१७५	००	१७५०	००
साधारण पृष्ठ १/४	रु.	१००	००	१०००	००

❀

* पत्र व्यवहार का पता।
मंत्री,
केरल हिन्दी प्रचार सभा
तिरुवनन्तपुरम-६९५ ०१४
केरल

तार:—"जय हिन्दी"
फोन: ६१३७८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केरलज्योति

पुष्प: १७

दल : ११

फरवरी १९८३

सांस्कृतिक जागरण की मासिक पत्रिका

संपादकीय

अखिल भारतीय सम्मेलनों की भाषा

दिसंबर १९८३ में मध्यप्रदेश के मध्य में स्थित महू में अखिल भारतीय प्रौढ शिक्षा संघ का ३५ वां वार्षिक अधिवेश आयोजित हुआ। उस में देश के विभिन्न भागों से करीब डेढ सौ प्रतिनिधियों ने भाग लिया। स्वभावत: अधिकांश उत्तरी प्रान्तों से थे। दक्षिण से जो आये थे वे भी हिन्दी बोलते या समझते थे।

पर इस सम्मेलन का अधिकांश कार्य अंग्रेज़ी में ही चला। दैनिक बुलेटिन अंग्रेज़ी में निकलती थी। प्रमुख प्रबंध अंग्रेज़ी में प्रस्तुत किया गया। चर्चाओं में भाग लेनेवालों ने भी अधिकतर अंग्रेज़ी का ही उपयोग किया। मंतव्य अंग्रेज़ी में तैयार किये गये। यह क्यों?

हिन्दी भाषी क्षेत्रों से आये विद्वानों का जितना अधिकार हिन्दी पर है उससे अधिकार अंग्रेज़ी पर रहा ऐसी बात नहीं। कोई कोई इतना गलत अंग्रेज़ी का प्रयोग कर रहा था कि अंग्रेज़ी स्वयं लज्जित हो जाती थी। चर्चा आरंभ करने के पहले ये सज्जन अपना परिचय यों देते थे—"I belongs to Bihar." या "I comes from U. P." इतने छोटे वाक्य में भी ऐसी गलती आ जाती थी तो बडे बडे वाक्य कैसे रहे होंगे इस का अनुमान आप ही कर लीजिये। सम्मेलन के कई प्रतिनिधि ऐसे थे जो न अंग्रेज़ी ठीक तरह से बोल पाते थे न धारावाह अंग्रेज़ी भाषण ठीक ठीक समझ पाते थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो फिर अंग्रेजी के प्रति इतना मोह क्यों ? या तो इस प्राचीन परम्परा को तोडने के संबंध में हमने अब तक गंभीर विचार नहीं किया है। नहीं तो चाहते हुए भी हम अंग्रेजी की गुलामी से अपने को मुक्त नहीं कर पाते। या हम इस भ्रामक धारणा में पडे हुए हैं कि अंग्रेजी में बोलने से धाक अधिक जमती है। स्थिति कितनी हास्यास्पद है सोच लीजिये।

लेकिन जिन लोगों ने इस समस्या पर सोचा है उन्होंने उक्त सम्मेलन में अपना भाषण हिन्दी में दिया। अपनी कविता हिन्दी में पढी। (दो भाषण और एक कविता इसी अंक में प्रकाशित हैं। (हिन्दी के माध्यम से भावों का संप्रेषण अधिक सहज हो जाता था, अधिक सरल हो जाता था।

महू का यह सम्मेलन हमारे अखिल भारतीय सम्मेलनों का एक दृष्टान्त मात्र है। यदि हमें इन सम्मेलनों को अंग्रेजी परस्त हास्यास्पद स्थिति से बचाना है और सहज सरल भाव संप्रेषण के द्वारा इन्हें सार्थक और लाभदायक बताना है तो इन अखिल भारतीय सम्मेलनों में अंग्रेजी का उपयोग कम करते जाना होगा और हिन्दी का उपयोग बढाते जाना होगा।

★

इस अंक में

समाज के बढने के लिये साक्षरता अनिवार्य — 3
श्री० अर्जुन सिंह

स्वराज्य की गंगा को वहन करने के लिए जनता को सुशक्त बनायें — 6
चुनी भाई र० भट्ट

आम आदमी की बात — 10
सोलह मोहम्मद नायब

डूबता सूरज — 12
डॉ० मृत्युंजय उपाध्याय

दो कवितायें —
१. गंगा तक
२. पार्थ — 17
राजेन्द्र शर्मा

शकुन्तला — 18
डॉ० कृष्णकुमार

दो मुंही जिन्दगी — 23
राजेन्द्र 'राजा'

कर्ण भूषणम् — 24
मूल: महाकवि उल्लूर
अनुवाद: कवियूर शिवराम अय्यर

बधाई — 27

पाठकों के पत्र — 31

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समाज के बढ़ने के लिए साक्षरता अनिवार्य

श्री० अर्जुनसिंह
मुख्य मंत्री, मध्यप्रदेश

हमारे देश को स्वतंत्र हुए आज पैंतीस वर्ष हो गये हैं, फिर भी हमारे देश में केवल ३६ प्रतिशत व्यक्ति ही साक्षर हैं। ६४ प्रतिशत व्यक्ति निरक्षर हैं। इन निरक्षर व्यक्तियों का व्यापक सर्वेक्षण करने से ज्ञात होता है कि पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं में निरक्षरता बहुत अधिक है। शहरी क्षेत्रों की अपेक्षा ग्रामीण क्षेत्रों में निरक्षरता अधिक है और सामान्य जनसंख्या की तुलना में आदिवासी, हरिजन तथा निम्न आमदनी वाले जन-समूहों में निरक्षरता बहुत अधिक हैं। सन् १९८१ में हमारे देश में हुई जनगणना से इस संबंध में जो आंकड़े मिले हैं, उससे हमें पता चलता है कि इस दिशा में हमें अभी बहुत काम करना है। प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने इस स्थिति की पृष्ठ भूमि में बीस सूत्रीय कार्यक्रम के सोलहवें सूत्र में देश से निरक्षरता को मिटाने के लिये आह्वान किया है। हम सबका यह दायित्व है कि इस राष्ट्रीय समस्या के समाधान के लिए हर प्रयत्न करें और इस सम्मेलन की सार्थकता का मूल्यांकन इसी संदर्भ में किया जायेगा।

देश में पिछले चौंतीस वर्षों से प्रौढ़ शिक्षा अभियान चल रहा है और इसने कई उतार-चढ़ाव देखे हैं। पूर्व में तो इसकी आवश्यकता को ही

महू में १९-१२-१९८२ को आयोजित अखिल भारतीय प्रौढ शिक्षा सम्मेलन में दिया गया भाषण।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चुनौती दी गई लेकिन पूर्ण संतोष का विषय है कि समाज के लिये इस अभियान के महत्व को सबका समर्थन मिल रहा है इस व्यापक जन समर्थन का लाभ लेकर सामान्य जन की सक्रिय भागीदारी का मार्ग प्रशस्त करना पहली प्राथमिकता है। आधुनिक युग में ज्ञान केवल व्यक्तिगत उपयोग या हित तक सीमित नहीं रहा है और समाज में उसका सामान्य स्तर संपूर्ण राष्ट्र के पुनरुत्थान के प्रयास पर दूरगामी प्रभाव डालता है। यह निर्विवाद रूप से मान लिया गया है कि गरीबी और निरक्षरता का सीधा संबंध है और इस संदर्भ में भारत के नवनिर्माण के लिये इस अभियान के महत्व को वैसे ही समझा जा सकता है।

किसी भी समाज के बढ़ने के लिये यह नितांत आवश्यक है कि उसका प्रत्येक सदस्य अपने अधिकारों और दायित्वों का सही बोध कर सके जिसके लिये साक्षरता अनिवार्य है।

हमारे प्रदेश के लिये यह संतोष का विषय है कि भारत शासन के प्रौढ़-शिक्षा निदेशालय ने मार्च ८२ का जो त्रैमासिक प्रतिवेदन जारी किया है, उसके अनुसार मध्यप्रदेश ने अधिक से अधिक साक्षरता केन्द्र चलाकर सबसे अधिक प्रौढ़ों को साक्षर बनाने की दिशा में देश में प्रथम स्थान प्राप्त किया है।

मध्यप्रदेश प्रौढ़ शिक्षा के क्षेत्र में अग्रगण्य रहा है क्योंकि स्वतंत्र होते ही सन् १९४८ से समाज शिक्षा आन्दोलन चलाया गया और "तमसो मा ज्योतिर्गमय" का संकल्प लिया गया था। साक्षरता कक्षाओं के संचालन के अतिरिक्त ग्रामीण पुस्तकालयों की स्थापना, नव-साक्षरोपयोगी साहित्य का वितरण, कला पथकों के कार्यक्रम, सामुदायिक श्रवण योजना चलचित्र प्रदर्शन आदि सभी साधनों का उपयोग कर निरक्षरता के विरुद्ध चतुर्मुखी आक्रमण किया गया था। आज के बदले हुए परिप्रेक्ष्य में ये सभी उपक्रम अपने संशोधित स्वरूप में जारी हैं। इनके अलावा राष्ट्रीय प्रौढ़-शिक्षा कार्यक्रम के अतर्गत राज्य में ३४ ग्रामीण क्रियात्मक साक्षरता परियोजनाएं, ५१ नागरिक शिक्षा, परियोजनाएं तथा १५ एकीकृत बाल विकास परियोजनाएं चलायी जा रही हैं। इनमें से ४० परियोजनाएं आदिवासी तथा हरिजन बाहुल्य क्षेत्रों के लिये हैं। अन्य परियोज-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोक-बोलियों में पठन-सामग्री तैयार की जाए और उसे आकर्षक व ज्ञानवर्धक बनाकर शीघ्र उपलब्ध कराया जाये ।

ताओं में भी इस बात का ध्यान रखा गया है कि वे उन क्षेत्रों में केन्द्रित हों जहाँ निम्न आय वर्ग के लोग रहते हैं । मध्यप्रदेश शासन का संकल्प है कि इस दशक के अन्त तक १५ से ३५ वर्ष के आयु वर्ग के राज्य के समस्त ६४ लाख निरक्षर प्रौढ़ व्यक्तियों को साक्षर बना लिया जाये । हम आशान्वित हैं कि इस लक्ष्य को निर्धारित समय से पूर्व ही प्राप्त किया जा सकेगा ।

इस सम्मेलन के समक्ष विचार हेतु मैं दो बातें विशेष रूप से रखना चाहता हूँ । पहली यह कि प्रौढ़-शिक्षा कक्षाओं से जो लोग पढ़-लिखकर निकलते हैं, वे पुनः निरक्षर न हों, इस पर गम्भीरता से विचार किया जावे और उपयोगी सुझाव दिये जाएं । दूसरी बात जिसकी ओर मैं आपका ध्यान आकृष्ट करना चाहता हूँ, वह है, उपयुक्त पठन-पाठन सामग्री की आवश्यकता । सभी राज्यों में अनेक लोक-बोलियां और आदिवासी बोलियां हैं । अभी तक हमने जो पठन सामग्री तैयार की है, वह बोलचाल की हिन्दी बोली में है । इस अभियान को और सार्थक बनाने के लिये अब इस बात पर विशेषज्ञों को विचार करना है कि लोक-बोलियों में पठन-सामग्री तैयार की जाए और उसे आकर्षक व ज्ञानवर्धक बनाकर शीघ्र उपलब्ध कराया जाये ।

मुझे विश्वास है कि इस सम्मेलन में इस राष्ट्रीय महत्व के विषय पर सर्वांगीण दृष्टिकोण से विचार-विमर्श होगा और अंततः आपके निर्णयों व निष्कर्षों से प्रौढ़ साक्षरता अभियान को नई दिशा व स्फूर्ति प्राप्त होगी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वराज्य की गंगा को वहन करने केलिए जनता को सुशक्त बनायें

चुनीभाई र० भट्ट

माननीय मुख्य मंत्री श्री० (मध्यप्रदेश) अखिल भारतीय प्रौढ शिक्षण संघ के प्रमुखश्री, भाइयो एवं बहिनो

मैं आप लोगों का अत्यन्त आभारी हूँ कि, आप लोग मुझे महत्वपूर्ण नेहरू साक्षरता पुरस्कार प्रदान कर मेरा सम्मान कर रहे हैं।

मैं उन सभी लोगों का आभारी हूँ, जिन्होंने मुझे इस पुरस्कार के योग्य समझा।

मैं ऐसा महसूस करता हूँ कि, जो सम्मान मुझे दिया गया है वह केवल प्रतीकात्मक है। वास्तव में इस सम्मान के अधिकारी मेरे वे सहयोगी हैं, जिन्होंने प्रौढशिक्षा के इस दुरुह कार्य में अनेक प्रकार से मुझे सहयोग दिया है। मैं उन सभी की ओर से विनम्रतापूर्वक यह पुरस्कार ग्रहण करता हूँ।

मैं खास तौर से गुजरात राज्य समाज शिक्षण समिति कानजीभाई देसाई समाज शिक्षण भवन ट्रस्ट, तथा सौराष्ट्र सरकार बम्बई सरकार एवं गुजरात सरकार का ऋणी हूँ, क्यों कि जो कुछ भी इस क्षेत्र में उपलब्धि हुई है, वह इन्हीं के सहयोग का फल हैं।

इस अवसर पर गुजरात के सपूत श्री० कल्याणजी महेता को याद करता हूँ और कृतज्ञता प्रकट करता हूँ। मुझे उनकी महान सहायता मिली थी। श्री० कल्याण जी भाई अपने वडे भाई जो वारदोली सत्याग्रह के स्थापक, एवं सरदार पटेल के निकट के साथी थे। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी उन्होंने गरीब आदिवासी क्षेत्रों में सेवाकार्य चालू रखा था। अंतिम श्वास तक वे प्रौढ शिक्षा के कार्य में रत थे। स्वतंत्रता के पूर्व सूरत जिला में सम्पूर्ण निरक्षरता निवारण का सफल आंदोलन चलाया था, किन्तु अनुकार्य के अभाव में वह कार्य निकम्मा सा हो गया।

दिसंबर १९८२ में नेहरु साक्षरता पुरस्कार से विभूषित होने पर अखिल भारतीय प्रौढ शिक्षा संघ के मह सम्मेलन में दिया गया भाषण।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन्होंने अपनी समग्र संपत्ति व जीवन देश के लिए समर्पित की थी और स्वराज्य प्राप्ति से अन्तिम दिनों तक समाज शिक्षा समिति के मानदमंत्री रहे थे। हम सभी के लिए वे प्रेरणास्रोत थे। उनके जीवन से अनेक शिक्षा मिलती थी। उनके साथ रहने से मुझे अनेक प्रेरणा मिली। गांधीजी के साथी मीठुबहन पिटिट व गांधीजी का पुत्र श्री० रामदासजी का निकट संपर्क भी इनके द्वारा ही मिला। मैं इन सभी का कृतज्ञ हूँ।

जब मैं अपने दयनीय जीवन की ओर निहारता हूँ, तो मैं यह स्वीकृत किये बिना नहीं रह सकता कि, एक छोटी सहायता भी किस प्रकार आशादीप प्रज्वलित कर सकती है।

सौराष्ट्र के गीर जंगल का एक वनवासी ब्राह्मण बालक को बोलखा गाँव के आनन्दाश्रम में वेदाध्ययन के लिए, भेजा गया था। मुझे वहाँ की एक स्कूल में भी उम्र होते दाखिल किया गया था।

इस स्कूल में एक बड़ी रात्रिशाला चलती थी। इसमें निरक्षर प्रौढों का वर्ग भी था। स्कूल के प्रधानाचार्यजी ने मुझे वहाँ की बाघरी वसाहत से जाकर प्रौढ़ों को बुलाने का काम सौंपा और मैं ने प्रेम से हर रात को यह काम किया। प्रौढ़ शिक्षा में मेरा यह प्रथम प्रवेश था। अति गंदी वस्ती में रहती, तथाकथित पिछड़ी जाति के घर में प्रतिष्ठित ब्राह्मण लड़के को जाना असंभव सा लगता था। किन्तु १९२९–३० का गांधीयुग का असर ही ऐसा था कि मुझमें यह साहस प्रदान किया। इन लोगों के वर्षों के संपर्क से मेरे मन से उच्च नीच की भावना पूर्णस्वरूपेण तिरोहित हो गई थी।

गीर के वनजीवन से मुझे समाज शिक्षा की प्रेरणा मिली थी।

हमारे वन में सिंह जब स्वभोजनार्थ शिकार करता है, वह भोजन भी एक सामाजिक उदाहरण था। क्यों कि पहले बच्चें फिर सिंहनी और आखिर में सिंह अपना हिस्सा खाता हैं।

गरीब किसान अपने पसीने से पैदा किया हुआ धान सभी पेशेवालों को बांट कर फिर अपने घर में अपना खाद्यान्न ले जाता था।

गाँव का ठाकुर साहब, अपने रहस्यमंत्री का विरोध होते हुए भी, आम की फसल में, आम गाँव के बच्चों को भरपेट खिला देते थे।

एक साधू का लडका अनाथ हुआ लडका बहुत छोटा था। गाँव के ठाकुर ने उनकी सभी व्यवस्था की, और एक कुनबे में रखा गया, इतना ही नहीं सारे गाँव ने मिल कर उनकी शादी करवायी और पुनरुद्धार करके उसको एक मन्दिर का कार्य सौंपा।

वर्षों तक ऐसा निस्वार्थ सेवा कार्य का प्रभाव मुझ पर पड़ा है, और उदारता के इन कार्यों ने मेरे बाल मस्तष्क में अमिट छाप छोड दी थी।

जब मेरा जीवन विकसित हो रहा था गांधी युग के आरंभ के दिन थे। आंदोलन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना, इस तकनीकी क्रांति के युग में विश्व के लिये सर्वोत्तम रसायन है।

का असर सब पर था। वे प्रौढ शिक्षा को बहुत महत्त्व देते थे और गुजरात के ज्ञान शिक्षा शास्त्री वकील श्री गिजुभाई को आज्ञा दी थी कि,

"स्वराज तो अल्प समय में आएगा किन्तु स्वराज का लाभ प्रजा को मिले ऐसा वातावरण जरूरी है। अत: तुम जेल में जाने के बजाय प्रौढ शिक्षा का कार्य करो"। श्री गिजुभाई ने आज्ञा शिरोधार्य की एवं प्रयोग करके प्रौढ़ पोथी, तीन रीडर तथा शिक्षक पोथी की मात्र प्रौढ़ों के लिए १९३० के पहले तैयार की। इसी पोथी का उपयोग करके मैं बिलखा की रात्रिशाला में राजवंश की एक व्यक्ति को सारी प्रायमर पढ़ाने में सहायक हुआ था। वह प्रौढ़ शिक्षा का मेरा प्रथम प्रत्यक्षानुभव था।

समाज शिक्षा और प्रौढ़ शिक्षा शब्द की अनेक चर्चा हुई है। मैं इस सभा में ऐसी चर्चा उपस्थित नहीं करूँगा। किन्तु मैं प्रौढ़ शिक्षा के बदले समाज शिक्षा शब्द को ज्यादा पसंद करता हूँ। क्योंकि "वसुधैव कुटुंबकम्" की भावना, इस में सन्निहित है। वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना, इस तकनीकी क्रांति के युग में विश्व के लिए सर्वोत्तम रसायन है। समाज शिक्षा में परंपरागत लेखन वाचन गणन तो आते ही हैं किन्तु साथ साथ सीखनेवालों में आत्म विश्वास का सर्जन करता है। यह शिक्षा उसे वातावरण की चुनौतियों से लड़ने के लिए उत्प्रेरित करती है तथा सांस्कृतिक एवं उत्पादनशील प्रक्रिया का जनक भी बनती है।

इस मिशन की विशेषता सिखाना नहीं बल्कि सीखने वाले की भाषा, संस्कार, संस्कृति एवं समाजदर्शन को समझकर अपनाने का मुख्य कार्य है। उनकी परिस्थितियों का परिवर्तन करने के लिए उनके स्वयं में परिवर्तन करना जरूरी है। प्रौढ़ शिक्षा के कार्य को हमें मिशन के रूप में न कि आरोपित कार्य के रूप में स्वीकार करना चाहिए। स्वैच्छिक का अर्थ ही स्व निर्भर है। स्वेच्छा से, अपनी पूर्ण शक्ति से अपना दिल लगाकर काम करना ही स्वेच्छा है। इसके लिए लोगों के साथ हमें आत्मीयता प्राप्त करनी होगी एवं लोक संस्कृति से आत्म साक्षात्कार करना होगा।

मैं ने क्या कार्य किया यह जब सोचता हूँ तो समाज शिक्षण कार्यकर्ता के रूप में मैं ने ४ लाख से ज्यादे गुजरात के निरक्षरों को साक्षर बनाया है। हम ने नव शिक्षितों एवं अनुकार्य के लिए संशोधन एवं आयोजन करके संस्थाओं द्वारा ३०० जितनी पुस्तकें प्रसिद्ध की हैं। इसमें मेरा भी बहुत हिस्सा है। और १८ साल से जीवनदीप नामक मासिक मेरे नेतृत्व में आज भी चालू है।

अपने संक्षिप्त कार्यकाल में मुझे व्यायामशाला, युवाशिक्षा, महिलाविकास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गृह, महिला मंडल, राष्ट्रभाषा प्रचार, राष्ट्रीय सेवा योजना के विभिन्न युनिवर्सिटियों के कार्यकर एवं अनेक समाजसेवी संस्थाओं का सहयोग मिला है। इस प्रकार मुझे गुजरात के सामाजिक कार्यकर्ताओं के विशाल परिवार का सदस्य होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। और इसीसे १९६७ से एक दशक तक हमारा अवैतनिक प्रौढशिक्षा कार्यक्रम सफलता से चल सका।

अब तक जो कार्य मैं ने किया है वह लक्ष्य की ओर चलने का प्रयास मात्र ही है। लक्ष्य सिद्धि बहुत दूर है। अभी बहुत करना बाकी है जो आज के नवजवान एवं नूतन कार्यकर्ताओं से अपेक्षित है।

समाज शिक्षण के सुदीर्घ कार्यकाल में जिन लक्ष्य बिंदुओं का मुझे दर्शन हुआ है, और जिस मार्ग को अपनाने से सिद्धि प्राप्त करने की श्रद्धा हुई है वह निम्न प्रकार है।

(१) समाज शिक्षण का कार्य समर्पित स्वैच्छिक संस्थाओं द्वारा किया जाना चाहिए।

(२) समाज शिक्षण के इस कार्य को सही गति देने के लिए धार्मिक कार्यकर्ताओं का प्रेरणास्त्रोत के रूप में उपयोग किया जाना चाहिए।

(३) स्थानीय लेखकों के सहयोग से स्थानीय बोली में लोक संस्कृति व, लोक रुचिका प्रौढ़ साहित्य निर्माण करना चाहिए।

(४) जन संपर्क के माध्यम जैसे समाचार पत्र, रेडियो, दूरदर्शन द्वारा संदेश के साथ साथ कार्य का भी प्रसारण करना चाहिए। सौराष्ट्र में मैं ने १९६५ से तीन साल साक्षरता ड्राईव में सफल प्रयोग किया है। राजकोट के ख्यातनाम स्थानिक सभी दैनिक ड्राइव की प्रायमर के लिटरसी का पाठ हररोज प्रसिद्ध करते थे और पाठ एवं सिद्धि प्रतिदिन आकाशवाणी, राजकोट से प्रसारित होती थी। इसका पुनरावर्तन जरूरी है।

(५) निरक्षरता निवारण युवा वर्ग के सहयोग से ही होगा। १९५६ में कोलेज के हजारों नवयुवक महीनों तक मैं ने निष्ठापूर्वक काम करते देखे है। यह कार्य विश्वविद्यालयों और सही स्वैच्छिक संस्थाओं द्वारा चुने हुए क्षेत्रों में सघन कार्य करके क्रमशः पूर्ण करना चाहिए। अगर यह निर्णय हो जाय तो अति कम खर्च में तीन-चार साल में अपेक्षित निरक्षरता निर्मूलन हो जाय। इसमें मुझे शक नहीं। जो काम क्युबा एक साल में कर सका वह काम हमारे नवयुवक भी जरूर कर सकने की क्षमता रखते हैं। बाकी है निर्णय और अमलीकरण।

(६) क्षेत्रीय प्रशिक्षण की व्यवस्था स्थानिक जरूरत के आधार पर करने से एवं स्थानिक साधन संपत्ति का भी इसमें पूरा उपयोग करने से कार्यक्रम विशेष सफल बनेगा।

इस अवसर पर मुझे अपने विचार प्रकट करने का जो अवसर दिया और आप ने शांति से सुना इसके लिए धन्यवाद। मुझे सम्मानित किया इसके लिए पुनः धन्यवाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आम आदमी की बात

सालेह मोहम्मद नायब

[35 वें अखिल भारतीय प्रौढ़ शिक्षा सम्मेलन में पढ़ी गयी कविता]

हर इलाके से आए हुए रहनुमाओ,
सुनो, दर्स व तदरीस के पेशवाओ।

यह माना कि कोलेज से निकले हुए हो,
बहुत इल्म का बोझ लादे हुए हो।

कहाँ से चले तुम, कहाँ आ गए हो ?
मुरादों को अपनी, कहो, पा गए हो ?

कहा तुमने, "हर रात पढ़ने को आओ,
पढ़ो जो भी, उसको अमल में भी लाओ,
उठो, आगे आओ, ग़रीबी मिटाओ,
नई आरज़ू अपने दिलमें बसाओ,
ज़माने की गर्दिश, न खातिर में लाओ,
जो मुमकिन नहीं, उसको मुमकिन बनाओ।"

मगर हम जहाँ थे, वहीं हैं, अभी तक,
वही आसमाँ-नो ज़मीं है, अभी तक,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न रोटी मिली, आप के शोर-ओ-गुल से,
न घर ही मिला आपके शोर-ओ-गुल से।

बहुत खूब हैं, माना, शहरों की रौनक़,
ये ग़ाज़ा से रंगीन, चहरों की रौनक़।

ये रेलों, टिरामों, बसों की रवानी,
मशीनों की, कम्पूटरों की जवानी।

यही मुस्तनद हैं तरक्की की राहें
यही मो-तँबर हैं तरक्की की राहें।

ज़रा इस तरफ भी नजर तुम उठाओ,
सभी मुस्तनद, मो-तबर रह-नुमाओ।

ये भूखों की, नंगों की आहें, कराहें,
ये इस्मत पे डाके, ये इज़्ज़त पे लातें;

ये हिंसा, ये दंगे, ये मजहब के झगड़े,
ये हैवानियत के हर-इक सू, नज़ारे।

जिधर देखते हैं उधर है अन्धेरा,
कहाँ है, कहाँ है, कहाँ है सबेरा।

19-लुकमान मार्ग, बडी बोहरावाडी,
उदयपुर-313 001

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी

डूबता सूरज

डॉ० मृत्युंजय उपाध्याय

शाम के सात बजे हैं। चारों ओर अंधकार का साया पसर चुका है। राजीव के तीनों बच्चे ड्राइंग रुम में पढ़ रहे हैं। पढ़ क्या रहे हैं—रह रह कर अपने पापा राजीव से पूछ जाते हैं—"साढ़े सात बजने में कितनी देर है पापा! हम लोगों को बुलाना भूलिएगा नहीं पापा!" "जाओं जाओ अपना होमटास्क पूरा करो। मैं ठीक समय पर बुला लूंगा"—राजीव उत्तर देता है। "आप कितने अच्छे हैं पापा!—तीनों बच्चे बोल उठते हैं।

"यह आकाशवाणी है। अभी एक वार्ता सुनेंगें वृद्धों का कल्याण: मानवता का उत्थान, वार्ताकार हैं डॉ० राजीव रंजन।" उद्घोषक की आवाज गूंजती है और फिर वार्ता शुरु हो जाती है"—क्या जमाना आया है। उगते सूरज को प्रणाम करनेवाले सब हैं, पर डूबते सूरज को कौन प्रणाम करना चाहता है। जिस प्रकार सूर्यास्त के समय हमारी छाया लंबी हो जाती हैं, उसी प्रकार वृद्धावस्था तक आते आते उनकी समस्याएँ भी बढ़ जाती हैं। आप जरा सहानुभूति पूर्वक सोचिए तो सही कि जिन्होंने आपके व्यक्तित्व के निर्माण में अपने को तिल तिल जला दिया, होम कर दिया, वे ही अपने अस्तित्व के लिए पग-पग पर संघर्ष करें, तो कैसा लगेगा।......

राजीव अपने शयन कक्ष में रिकार्डेड वार्ता सुन रहा है। सभी बच्चे घेरकर बैठे हैं। वीणा अपना काम निबटाकर आ गई है। बच्चों का ध्यान वार्ता के कथ्य पर कम, पापा की आवाज पर अधिक है। वीणा अपने पति की वार्ता सुनकर अपने को धन्य समझ रही है। गरीब घर में जन्मी पाली पोसी गई वीणा अपने श्रम और सच्ची लगन के बल पर मैट्रिक भर कर पाई थी। पिता की असमय मृत्यु-भाभी की रूक्षता और भैया की उसके साथ सहमति। न दहेज के नाम पर फूटी कौड़ी और न दौड़ धूप के बल पर सुयोग्य बर की तलाश। वीणा ने पार्वती के समान कठोर प्रतिज्ञा की थी कि वह या तो ऊँची शिक्षा प्राप्त सुयोग्य वर से विवाह करेगी या आजीवन कुमारी हो रह जाएगी। संयोगवश वीणा का विवाह सेंतमेंत में हो गया और आज वह एक विख्यात लेखक की धर्मपत्नी है। वह वार्ता पर कम ध्यान दे रही है, अतीत का भूली बिसरी कड़ियों को सहेजने में मशगूल है। बच्चे माँ के कान में होले होले कुछ पूछ रहे हैं और वह टालती जा रही है।

"हम में से प्रत्येक का यह परम पवित्र कर्तव्य है कि वृद्धों के प्रति न केवल सहानुभूति पूर्ण रवैया अपनायें वरन् पग-पग पर उन्हें इसकी अहसास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

…राएँ कि वे आज भी हमारे लिए …निवार्य और अपरिहार्य हैं……"वार्ता …ी पंक्तियाँ गूँज रही हैं। राजीव का …स्तिष्क तेजी से चक्कर काटने लगता …। वह काल और स्थान की सीमाएँ …घता हुआ आगे बढ़ने लगता है। वार्ता …एक एक शब्द वह सुन रहा है, पर …से ही जैसे बाजार की सम्मिलित बेतुकी …आवाज हो, जिसे बहुत चाह कर भी …हीं समझा जा सकता।

'बूढ़ी दादी' बच्चे ठीक ही पूछते हैं। …नका पूछना एकदम वाजिब है। वीणा …ा टाल देना भी उसकी मजबूरी नहीं …रन् राजीव के सतत प्रयास की …फलता का परिणाम है। उसे लगता … कि यह आज की घटना है, अभी अभी …टी है। - वह भाइयों में सबसे छोटा है, …र सबसे अधिक कर्मठ, सबसे अधिक …विवेकी। उसे उसके दोनो भाइयों ने …सको ठुकरा कर दर-दर की ठोकरें …ाने के लिए छोड़ दिया था। पर वह …हिम्मत हारने वाला नहीं था। परिस्थिति …ी विषमता में भी वह अपनी राह …नाता गया। एक एक उपाधि द्वारा …पना तथा कुल का गौरव बढ़ाता गया। …सके भाई उसके प्रति ही इतने निर्मम …हीं हैं, वरन् अपनी माँ को भी उन्होने …ध की मक्खी की तरह निकाल फेंका हैं। …ढ़ी माँ, उस पर वैधव्य का आक्रमण- …पने पास जहर तक खाने को पैसा …हीं। वह भीतर से बिखर रही थीं, …क-एक क्षण उसके लिए कष्टकर हो …या था।

पिता की संपत्ति पर बेटे गुलछर्रे उड़ाते थे और मां को गुलाम से भी बदतर जीवन जीने के लिए बाध्य करते थे। मवेशी की देख रेख भी उन्हें ही करनी पडती थी। गोबर उठाने से लेकर सानी पानी तक वही करती थी।

रात दस बजे का समय था। पूरा गांव खा पीकर सो गया था। श्मशान की शांति विराज रही थी। कभी-कभी कुत्ते के भौंकने की आवाज सन्नाटा भेदती थी। राजीव गर्मी की छुट्टी में घर लौटा था। बरौनी पैसेंजर लेट थी, फिर बस की इंतजारी में भी उसे काफी समय लग गया। वह अपने दरवाजे पर पहुँचा ही था कि आंगन की आवाज से हतप्रभ हो गया—

"निकल जाओ हरामजादी मेरे घर से! तुमने फूल के समान सुकुमार मेरी बेटी को आज घुमाया क्यों नहीं? निकलो अभी निकलो।" माँ फूट फूट कर रो रही थी। निर्बल का बल रोना ही होता है। दिन भर एक पर एक काम, फिर बच्ची को घुमाए कैसे!

नाटक में अचानक प्रवेश की तरह राजीव ने पहुँचकर कहा— "खबरदार, जो आपने माँ को अपशब्द कहा। छिः छिः आपको लज्जा नहीं लगती। अभी तक इस घर को आपने एक भी पैसा दिया है क्या! बाप की जमीन बेच बेच कर खाने के अलावा आप लोगों ने किया ही क्या है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बड़े बनते हो माँ के भक्त ! हम लोग अपने परिवार को दोनों जून खिला ही नहीं पाते, माँ को कहाँ से खिलाएँगे । कान खोलकर सुन लो । यह मेरे मन के मुताबिक चलेगी, तभी खाना पा सकती है ।

कहते शर्म नहीं आती ! आपकी बहू और आपकी राजकुमारियाँ आपका परिवार ! और आपको जिसने जन्म दिया वह बेगानी ।

बड़े श्रवण कुमार बने हो ! जाओ जाओ । मां का अलग इंतजाम करो ।

जी हाँ, माता जी का अभी से अलग इंतजाम होगा । आपके शोषण को हम लोग बर्दाश्त नहीं कर सकते ।

असहाय, अकिंचन राजीव ने जो कुछ प्रतिज्ञा की थी, सिर्फ माँ की दुर्गति देखकर की थी । उसे धन का कोई बल नहीं था, पर आत्म विश्वास और कठोर श्रम पर भरोसा तो था ही । उपवास शुरू किया, इस घर से उस घर ट्यूशन करना स्वीकार किया, पर माँ को प्रतिमाह भेजता रहा । उसकी पढाई लिखाई में इससे कोई बाधा नहीं हुई । धुन का पक्का राजीव अपने कालेज की परीक्षाओं में कीर्तिमान स्थापित करता गया । पता नहीं उस उपलब्धि में कितना उसको मिहनत का योग था और कितना माँ के आशीर्वाद का !

वक्त ने करवट बदली । राजीव स्थानीय बैंक का मैनेजर बन गया । उसके लेखन का काम पूर्ववत चलता रहा । अच्छी तनख्वाह, सुख साधन के आवश्यक सामान थे ही । पत्नी भी सुशील, सुंदरी मिली । उसे उसने अपनी मिहनत और प्रोत्साहन के बल पर एम. ए. कराया । एक ओर राजीव की सुख संपन्नता बढ़ती गई, तो दूसरी ओर माँ को दी जाने वाली राशि में भी वृद्धि होती गई । जब भी वह घर जाता एक बालक के समान माँ के साथ रहता । उसे कहता—" मैं जो कुछ हूँ माँ, बस तुम्हारा हूँ । तुम अपने सुख के लिए जो चाहो, ले लो । वैसे मैं अपनी समझ से भरसक तुम्हें खुश करने की कोशिश कर रहा हूँ" । "मैं खुश ही हूँ बेटा ! जरा बड़े बेटे और मंझले बेटे पर कृपा कर दो बेटा ! भिक्षा में ही उन्हें पाँच सौ हजार दे दिया करो । बस इतनी ही इच्छा है" राजीव का मन तिक्तता से भर जाता । वह माँ को कोई उत्तर नहीं दे पाता और न माँ की इच्छा ही पूरी कर पाता, पर लगातार यही सोचने में लीन हो जाता — "जिन भाइयों ने मुझे खदेड़ कर भगाया, ऐसा इंतजाम कर दिया कि मुझे मांगने से भीख नहीं मिले, माँ को भी दासी से भी बदतर समझा, उन्हीं के लिए माँ में अजस्र करुणा और मुझसे यह पैरवी ।"

कोई गुत्थी स्थाई नहीं होती । वक्त सब स्पष्ट कर देता है । राजीव को समझते देर नहीं लगी कि उसका संरक्षण पाकर माँ जब आत्मावलंबी हुई तो भाइयों ने शाब्दिक करुणा से उसका दिल जीत लिया । उन्हें उनके सुख-दुख से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहीं किसी प्रकार का लगाव नहीं था। वे विदेह के समान विकराहीन थे। उन बेटों और पुत्र बधुओं का स्वार्थ इसी से सधता था कि माँ को शहर के अवगुणों से परिचित कराकर कभी राजीव के पास नहीं जाने दिया। फलतः न हर्रे न फिटकिरी और रंग चोखा। माँ की सुख सुविधा पर पूरा खर्च राजीव करे और वह अन्य बेटों के अंडे सेवती रहे।

राजीव के जब पहला लड़का हुआ, तो वीणा ने सुझाया — आप माँ पर भरोसा नहीं करें। आप मातृ भक्त हैं। पर वे आपके बच्चे के प्रति सदय होंगी तो इसका क्या ठिकाना। कहीं ऐसा नहीं हो कि उन्हें यहाँ आकर रहना रास न आए और आपकी आस्था की दीवर असमय ही धरती नापने लगे।

तुम ऐसा कह कर उस ममतामयी पर प्रश्नचिह्न न डालो। जब मुझे अभी भी बच्चे के समान प्यार करती हैं तो मेरे बच्चे के बारे में पूछना ही क्या है? राजीव ने लगे हाथ उत्तर दिया।

राजीव को वह दिन आजतक याद है चाहकर भी भुला नहीं पाता। उसका बेटा अबग्यारहवीं कक्षा में पढ़ने लगा है। जब वह तीन वर्ष का था तभी की घटना है। माँ तार पाकर आ गई थी। एक सप्ताह उसके परिवार में रम गई थी। सभी लोग प्रसन्न थे। पर एक बात साफ-साफ दिखाई पड़ती थी– जब भी राजीव या वीणा अपने सुख, उपलब्धि की कोई बात बताते, वह उल्लसित होने के वजाए अन्य बेटों के दुःखों का दास्तान ले बैठती थी। वीणा ने दबे शब्दों में पर विनम्रतापूर्वक इसका प्रतिवाद करना चाहा था। पर राजीव ने रोक दिया था। इस पहेली को समझना चाहता था, पर समय न पाता था। वीणा के सामने इस सवाल पर वह हेठा सही बनना नहीं चाहता था। पता नहीं क्या कह बैठे।

बेटी को दस्त पर दस्त आ रहे थे। एक एक दिन में तीस–तीस दस्त डॉक्टर हार मान चुके थे। पति पत्नी उदास रहने लगे थे। इसी बीच माँ ने अपने गाव लौट जाने का निश्चय सुनाया। राजीव की मानों काठ मार गया-पैरों के नीचे की जमीन घूमती नजर आई। वह उसके पांव पकड़ कर रोने लगा, पर माँ अपने फैसले पर दृढ़ थी निश्चल। राजीव उसे रहने लिए वाध्य करे इस आशंका से उसने बच्चे को देखने आए एक मित्र के सामने कह —मुझे नहीं जाने दोगे, तो आत्माघात कर लूँगी। उसे लगा कि कोई उसके कानों में गर्म गर्म पिघला शीशा डाल गया है। मां के प्रति उसके विश्वास इतनी आसानी से परिस्थिति की आंधी में अस्त व्यस्त हो जाएंगे उसने कभी सोचा भी नहीं था।

अपने कर्तव्य के प्रति जागरूकता अपेक्षित है। वृद्ध अपने किसी आचरण या व्यवहार द्वारा अपने आत्मीय या संरक्षक को कष्ट पहुँचाएँ, तो क्षुब्ध और उत्तेजित होने के वजाए उनके प्रति उदारता का बर्ताव हो। जो धारणाएँ विश्वास उनमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बद्धमूल हैं — उन्हें आसानी से हटाना संभव नहीं हैं .... वार्ता चल रही है। राजीव अपना जीवन कुर्बान कर भी माँ का विश्वास जीत सकता है क्या? अन्य बेटों के प्रति उसके प्रेम से अपनी तुलना भी कर सकता है क्या ? वार्ता के शब्द राजीव के हृदय में गहरे और गहरे उतरते गए-वह उसमें डूबता गया और सोचने लगा-जिंदगी में आदमी एक दो उसूलों की भी प्राण पण से रक्षा करे तो वह खुशियों से भर उठेगा । अपने कर्तव्य के प्रति सदा ईमानदार रहे, इतना ही काफी नहीं हैं क्या ? यह सोचकर उसे लगता है सिर से बडा बोझ उतर गया है राह मिल गई है; उसकी आखें छलछला जाती हैं-बच्चे और वीणा एक साथ ही इसकी और मुखातिब होते हैं।

"आप भी कभी बूढ़े होंगे। हर जवान बूढ़ा होगा। यह प्रकृति का नियम हैं, तो फिर अपने बुढ़ापे की तैयारी वर्तमान बूढ़ी जिंदगियों को सहेज कर क्यों न शुरु करें !" दूसरा स्वर उभरता है। यह आकाशवाणी है। अभी आप डा० राजीव रंजन की वार्ता सुन रहे थे वृद्धों का कल्याण: मानवता का उत्थान।

वार्ता की समाप्ति के बाद राजीव उठकर एकांत में चला गया। पता नहीं कौन सी गुत्थी थी जिसे सुलझाने में वह मशगूल हो गया था। वार्ता के बाद सदा यही होता आया था कि सब उस पर अपने विचार देते थे। यहाँ तक कि सबसे छोटी उन्नू भी अपना मत देने से बाज नहीं आती थी। हँसी खुशी का माहौल रहता था। पर यह नाटकीय बदलाव क्यों— यह सोचकर वीणा भी उसके पास चली गई और वाणी में मिश्री का मिठास घोलते हुए बोली —

कह नहीं सकती, किन शब्दों में तुम्हें बधाई दूँ ! में सब सुनकर धन्य हो गयी। सचमुच तुम कितना अच्छा बोलते हो।"

राजीव ने बात काटकर कहा—ओढ़ा गया ज्ञान भले ही भरमाता है पर अनुभूत सत्य सिर पर चढ़कर बोलता है। यह सही है। फिर तुम्हारे उदास होने का राज क्या है ?

तुम नहीं समझोगी वीणा, तुम हर्गिज नहीं समझोगी। माता—पुत्र का वर्षों से चलता विवाद तुम लाख चाहकर भी नहीं समझ पाओगी।

मैं समझती सब कुछ हूँ, पर तुम्हारी उदारता और मातृभक्ति को क्या कहूं! यही तो धर्म संकट हैं, फिर भी मैं बराबर, भीतर के तूफान को झेलता हुआ अपने कर्तव्य के प्रति उनमुख हूं।

अदमी स्वार्थी होता हैं। प्रतिदान पाना उसकी दुर्बलता है वीणा, लेकिन मुझे ऐसा अहसास होता है कि बेटा माँ से आशीर्वाद के अलावा प्रतिदान ही क्यों चाहेगा?

रात में सोते समय राजीव ने निर्णय सुनाया— कल हम लोग सपरिवार माँ को देखने गाँव चलेंगे। बच्चे भी बहुत दिनों से बूढ़ी दादी से मिलने को उत्सुक हैं। वीणा ने हामी भरी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो कवितायें

गंगा तक

कवि के शीघ्र प्रकाश्य
'गवाह चश्मदीद' से

राजेन्द्रशर्मा

बहुमंजिले भवन को
छाया में बनी झोंपड़ी
एक दिन उसके बहुत
समीप आकर बोली-
भाई ! तुम बड़े हो,
तुम्हारे पास अकूत सोना है,
तुम कुछ ऐसा यज्ञ करो
कि मेरा कद चाहे बड़ा न हो.
शरीर तो सोना का हो जाए !

ऊँचे भवन की त्यौरियाँ चढ़ गई,
झोंपड़ी पर लाल-लाल आँखें गढ़ गई,
कर्कश-स्वर में बोला—
'यह द्वापर युग नहीं है,
अपना रास्ता नाप ।
वरना ये लाल-लाल आँखें
तुझे पल भर में जला कर
भस्म कर देंगी ।—
और मेरे शत-शत आँगनों में लगे
कूलरों की ठंडी हवाएं
उस राख का जर्रा-जर्रा
उड़ा कर धर देंगी
झोंपड़ी काँप गई,
उसकी आवाज़ काँपी ही नहीं—
बुझ गई,
बुझे-बुझे मन से उसने कहा—
'नहीं-नहीं, भैया !
मुझे नहीं चाहिए तुम्हारा रुपैया
मैं किसी गंदे नाले पर ही
जा ठहरूँगी,
और उसके सहारे ही एक दिन
गंगा तक पहुँच कर
अपना जर्रा-जर्रा
पवित्र कर लूंगी ।'

पार्थ

अर्थ मेरा साजन है,
अर्थ मेरी प्रिया है,
अर्थ मेरा मित्र, मेरे स्वजन-
मेरा प्राण,
उदान, अपान, व्यान और समान-
सभी कुछ अर्थ तो है ।
लाग कहते हैं—
यही तो अनर्थ है !
पर कहाँ ? उनकी तो स्वार्थ की भाषा है
जब कि मेरा अर्थ निःस्वार्थ है-
परमार्थ है,
हजारों—हजारों कौरवों को
संसार की संघर्ष-भूमि में
सुला देनेवाला
पार्थ है ! ❀

दिल्ली-१६२५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शकुन्तला

डा० कृष्ण कुमार

शकुन्तला की कथा भारतीय साहित्य में बहुत प्रसिद्ध है। इस कथानक को आधार बनाकर बहुत साहित्य लिखा जा चुका है। मूल रूप से महाभारत में वर्णित इस कथा को 'पद्मपुराण' में भी लिखा गया है। इसी कथानक को आधार बना कर महाकवि कालिदास ने अमर कृति 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' नाटक लिखी थी।

वर्तमान समय के परिप्रेक्ष्य में 'शकुन्तला' को पुनः हिन्दी में लिख कर इस कथानक को इस प्रकार प्रस्तुत करना रोचक और उपयोगी होगा। इसके द्वारा हम कथानक का आनन्द तो ले ही सकें, इसके साथ प्राचीन भारतीय तत्कालीन इतिहास, भूगोल और संस्कृति का भी कुछ कुछ ज्ञान प्राप्त हो। इसी लक्ष्य को लेकर इस कृति को हिन्दी में लिखा गया है।

महाराज दुष्यन्त की जय हो, पौरव सम्राट् की जय हो, सहस्रों सैनिकों के समवेत जयकारों से कुरु जनपद की राजधानी हस्तिनापुर के राजमार्ग गूँज उठे। मृदंगो, काहलों और तूर्यों की समवेत ध्वनियाँ राजधानी के वायुमण्डल में प्रसारित होती हुई जन-जन के कर्ण कुहरों में प्रविष्ट होने लगीं। सहसा राजप्रासाद के ऊँचे तोरण के नीचे से शनै शनैः आगे बढती हुई और मन्द पवन से लहराती हुई राजकीय काषाय वर्ण की पताका दृष्टिगोचर हुई। विशाल शरीर वाले चार श्वेत रंग के उच्चजातीय अश्वों द्वारा खींचा जाता हुआ महाराज दुष्यन्त का रथ तोरण से बाहर निकला। आगे के भाग में सारथि के आसन के समीप एक ऊचा दण्ड था। इसके ऊपर स्वतन्त्र क्रीडा करती हुई राजकीय पताका सम्राट् के सार्वभौमत्व की मानो सजीव घोषणा सी कर रही थी।

खुली छत वाले रथ में सम्राट् की आकृति क्रमशः स्पष्ट होती जा रही थी। वे रथ के मध्य में एक ऊँची आसन्दी पर विराजमान थे। ऊँचा सुगठित शरीर, गौर वर्ण, विशाल वक्ष स्थल, चौड़े कन्धे, लम्बी भुजायें, सुपुष्ट जांघे और कसे होंठ सम्राट के शारीरिक पराक्रम और दृढता के अभिव्यंजक थे। तेजस्वी मुख पर मन्दस्मित की मनोहारिणी आभा उनकी तेजस्विता में और भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधिक अभिवृद्धि कर रही थी। सिर पर रखा स्वर्ण-किरीट सूर्य की हल्की रश्मियों में रह रह कर झिलमिला जाता था। इसके पीछे से संवारे गये काले केशों की हल्की सी झांकी सी दिखाई दे रही थी। चौड़े माथे पर पसीने की नन्हीं नन्हीं बूंदे मोतियों के समान चमक जाती थीं।

सम्राट के दायें कन्धे पर लम्बा मजबूत धनुष लटक रहा था और बाये कन्धे के पीछे की ओर बाणों से भरा तरकस ऊपर को उठा दिखाई देता था। उनके चरणों के समीप ही खड्ग, परशु, भाला आदि अनेक प्रकार के अस्त्र-शस्त्रों का एक छोटा सा ढेर था।

सैनिकों के अभिवादन को दाहिनी भुजा उठा कर स्वीकार करते हुए दुष्यन्त का रथ नगर के बाहर की ओर बढने लगा। कुशल सारथि द्वारा अति कुशलता से संचालित किये जाते हुए अश्व रथ को मन्द गति से नगर के बाह्य द्वार की ओर ले जाने लगे।

सम्राट् दुष्यन्त कुरुकुल में एक महान् प्रतापी राजा हुए थे। भुजाओं के पराक्रम से उन्होंने सारी पृथिवी को जीत कर एक महान् एकच्छत्र साम्राज्य की स्थापना की थी, जो तीन ओर समुद्रों तथा उत्तर में हिमालय पर्वत से सीमित होता था। नीति, पराक्रम और उत्साह के गुणों से उन्होंने अपने प्रतापी पूर्व पुरुषों को भी अतिशयित कर दिया था।

कुरु वंश का अभ्युदय महाभारत के युद्ध से सैकड़ों वर्ष पूर्व हो चुका था। ये राजा अपने वंश को चन्द्रमा से उत्पन्न मानते थे और चन्द्र वंशी कहलाते थे। इन्होंने एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की थी। सूर्यवंशी राजाओं के प्रताप का सूर्य अस्त हो चुका था। अब चन्द्रवंशी राजाओं के प्रताप का सूर्य ही भारतवर्ष रूपी आकाश के मध्य में चमक रहा था। इनके राज्य की सीमायें उत्तर में हिमालय की ऊँची पर्वत-शिखायें, दक्षिण में चम्बल नदी और विन्ध्य की पर्वत श्रेणियाँ, पश्चिम में शतद्रु (सतलज) नदी और पूर्व में सरयू नदी द्वारा बाँधी गई थीं।

इस वंश में किसी समय नहुष नाम का एक पराक्रमी राजा हुआ। इन्द्र की अनुपस्थिति में एक बार उसको त्रिविष्टप पर भी राज्य करने का अवसर प्राप्त हुआ था। नहुष का पुत्र ययाति उससे भी अधिक पराक्रमी हुआ। उसने असुरों के गुरु शुक्राचार्य की कन्या देवयानी से विवाह करके उसके बाद असुर सम्राट् वृषपर्वा की पुत्री शर्मिष्ठा को भी अपनी भार्या बनाया। इस प्रकार उसने अपने प्रभाव और प्रताप में बहुत अधिक वृद्धि की।

ययाति को देवयानी से यदु और तुर्वसु नाम के दो पुत्र प्राप्त हुए। यदु से प्रसिद्ध यादव वंश का प्रादुर्भाव हुआ। इस कुल को स्वयं भगवान ने कृष्ण रूप में अवतरित होकर पवित्र किया था। शर्मिष्ठा के तीन पुत्र हुए थे—द्रुह्यु, अनु और पुरु। यद्यपि पुरु छोटा था, तथापि पितृभक्ति के कारण ययाति का उसके प्रति सबसे अधिक स्नेह था। सबसे छोटा होने पर भी उन्होंने उसी को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपना उत्तराधिकारी बनाया। वह एक महान् प्रतापी राजा हुआ। उसने सारे आर्यावर्त को विजय करके एक सूत्र में बाँधा। पुरु के नाम से यह वंश पौरव वंश प्रसिद्ध हुआ।

पुरु के पश्चात् समय के क्रम से इस वंश मे इलल नाम का राजा हुआ। इलल के पाँच पुत्र हुये—दुष्यन्त, शूर, भीम, पुरु और वसु। इनमें दुष्यन्त सबसे बड़े थे। पिता ने इनको युवराज के पद पर अभिषिक्त किया।

समय के क्रम से इलल को वृद्धावस्था ने आक्रान्त कर लिया। कुल की परम्परा के अनुसार उन्होंने दुष्यन्त को सिंहासन पर प्रतिष्ठित करके राजा पद प्रदान कर दिया। तदनन्तर वे वानप्रस्थ आश्रम को स्वीकार करके तपस्या करने के लिये वनों में चले गये।

दुष्यन्त महान् पराक्रमी सम्राट् हुए। उनका शारीरिक बल अतुलनीय था और अस्त्र-शस्त्रों के प्रयोग में वे अद्वितीय थे। रथों, घोड़ों और हाथियों का संचालन करने में उनकी कुशलता सारी पृथ्वी पर प्रसिद्ध थी। राजनीति के वे प्रकाण्ड पण्डित थे। शत्रुओं को वे राजनीतिक प्रयोगों द्वारा ही अपने वश में कर लेते थे। युद्ध का अवसर कम ही आ पाता था।

दुष्यन्त के प्रशासन में प्रजा सुखी और समृद्ध हुई। उन्होंने प्रशासन की प्राचीन परम्पराओं को ही स्वीकार किया तथा इनको और भी अधिक सुदृढ बनाया। उस युग में राजा यद्यपि प्रशासन के संचालन का केन्द्र था, तथापि वह पूर्ण स्वतन्त्र नहीं था और स्वेच्छाचारी नहीं हो सकता था। प्रशासन में राजा की सहायता करने के लिये, उसको मन्त्रणा देने के लिये और उस पर नियन्त्रण रखने के लिये समिति नाम की एक संस्था होती थी। इसके सदस्यों का निर्वाचन प्रजा के विभिन्न वर्गों द्वारा किया जाता था।

समिति की अन्तरंग सभा अमात्य-परिषद् थी। इस परिषद् के ३६ सदस्य होते थे। ये भी समाज के विभिन्न वर्गों से चुने जाते थे। इनमें ब्राह्मणों द्वारा चार, क्षत्रियों द्वारा आठ, वैश्यों द्वारा इक्कीस और शूद्रों द्वारा तीन सदस्य इस आमात्य-परिषद् के लिये चुने जाते थे। राजा द्वारा कोई विशेष तथा महत्वपूर्ण कार्य को प्रारम्भ करने से पहले इस समिति और अमात्य-परिषद् से स्वीकृति लेनी होती थी। राजा के उत्तराधिकारी का अन्तिम निर्णय भी इन्हीं संस्थाओं द्वारा किया जाता था। दुष्यन्त ने इन संस्थाओं के अधिकारों के प्रति आस्था व्यक्त करके इनको मान्य किया तथा प्रशासन को सुदृढ किया।

दुष्यन्त के व्यवस्थित शासन में प्रजा के सुखों में वृद्धि हुई तथा समृद्धि बढ़ी। सुखी प्रजा अपने पूर्ववर्ती राजाओं के गुणों को भूलने लगी। सुदृढ प्रशासन की सरक्षा में अपने अपने धर्मों का पालन करती हुई प्रजा धन-धान्यों से सम्पन्न होकर साहित्य, कलाओं और अन्य आमोदों-प्रमोदों के सुखों का अनुभव करने लगी। साहित्य, ललित कलाओं और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्ञानों के नित्य नये आविष्कार होते ... े ।

दुष्यन्त के इस राज्य में, जो कि धन और धर्म दोनों से समृद्ध था, चोर, डाकू, व्यभिचारी और अन्य किसी भी प्रकार के पाप का आचरण करने वाला नहीं रह गया था। ईश्वरीय और मनुष्यकृत आपत्तियों के भय से मुक्त होकर प्रजायें अपने दैनिक व्यवहारों का पालन करती थीं। समय पर वर्षा होती थी और उर्वरा पृथिवी विविध धान्यों और रत्नों को उत्पन्न करती थी।

कुरु जनपद में आर्य जाति के अतिरिक्त वानर, ऋक्ष, नाग, किन्नर, निषाद, भील, कोल, किरात, यक्ष, गन्धर्व, असुर, राक्षस, यवन आदि अनेक आर्येतर जातियां भी निवास करती थीं। इनमें से कुछ जातियों ने आर्यों के धर्म, परम्पराओं और सभ्यता को स्वीकार कर लिया था। परन्तु कुछ जातियों में अपनी परम्परायें और विश्वास बने हुये थे और उनको इनके अनुसार आचरण करने की पूरी आज़ादी थी। इस राज्य में उनको किसी प्रकार का भय नहीं था। सब जन निर्भय होकर अपने परम्परागत आचार-व्यवहारों का पालन करते हुये आनन्दपूर्वक जीवन-यापन करते थे।

साम्राज्य की सीमाओं को सुदृढ करके और आन्तरिक प्रशासन को सुव्यवस्थित करके दुष्यन्त ने प्रजा को अन्दर की और बाहर की आपत्तियों से, और उनकी सम्भावना तक से भी मुक्त कर दिया था। ... राज्य के सुखों का और विलासों का मजे से उपभोग करते थे। समय समय पर राज्य में आनन्दोत्सव मनाये जाते। विभिन्न ऋतुओं के अनुसार समारोहों का आयोजन किया जाता था। इन उत्सवों में राजा के साथ प्रजा भी भाग लेती थी।

इस प्रकार राज्य के सुखों का अनुभव करते हुये दुष्यन्त को अनेक वर्ष व्यतीत हो गये। एक बार जन-जन को उन्माद से भर देनेवाली वसन्त ऋतु व्यतीत होकर ग्रीष्म ऋतु का प्रादुर्भाव हुआ। रात्रियां सिमटने लगीं। दिवस का आकार बड़ा होने लगा। उषा अपने सुन्दर गुलाबी मुख से अन्धकार के श्याम आवरण को अब पहले की अपेक्षा बहुत सवेरे उतार देने लगी। प्रथम प्रहर के समाप्त होते न होते प्रातः की शीतल पवन सूर्य की प्रतप्त रश्मियों से सन्ताप को ग्रहण कर इस लोक के सभी प्राणियों को सन्तप्त करने लगा। कुछ दिन पहले उपवनों के जो पुष्प और पल्लव रात की ओस की बूदों से भीगे भीगे हो जाते थे, वे अब सूखे-सूखे मुरझाये से लगने लगे। अब आम की डालियों पर लदी हुई मंजरियां छोटे छोटे फलों के रूप का आकार धारण करने लगी। प्रातः काल में चहचहाते पक्षी, जो आहार की खोज मे निकले थे, सूर्य के ऊँचा चढते ही छायादार स्थानों की खोज में भटकने लगे। सूर्य के आकाश के मध्य को अलंकृत करते ही सारा विश्व जैसे निस्तब्ध सा होकर ग्रीष्म का स्वागत करने के लिए सन्नद्ध हो गया था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजा की प्रशंसा के गीत गाती हुई सुन्दरी युवतियां दुष्यन्त परपुष्पों और अक्षतों की वर्षा करती हुई उनसे राजमार्गोंको अच्छादित करने लगीं।

इन्हीं दिनों महाराजा दुष्यन्त के मन में मृगया-बिहार का विचार उत्पन्न हुआ। एक दिन उन्होंने सेनापति रैवतक को बुला कर मृगया का प्रबन्ध करने का आदेश दिया। सम्राट के साथ वनों में जाने के लिये सैनिकों को तैयार होने के आदेश दे दिये गये और शिकारियों को सज्जित होने के लिये कह दिया गया। महाराज के मृगया के लिए जाने की तैयारियाँ धूम-धाम से की जाने लगी।

अगले दिन प्रातः अभी उषा ने क्षितिज से झांका ही था कि राजप्रसाद के द्वार पर राजकीय सेना ने पंक्तियों में सजना प्रारम्भ कर दिया। मृदंग, काहल, तूर्य आदि सैनिक वाद्यों की समवेत तुमुल ध्वनिया चारों और फैलने लगीं और इनके द्वारा अन्य सभी शब्द तिरोहित कर दिये गये। धनुष, बाणा, शक्ति, तोमर, मूसल, भाले आदि आयुधों से सुसज्जित सैनिक महाराज के जयघोषों से आकाश को कांपने लगे। इनके मध्य में अश्वोंकी हिनहिनाहट को विचित्र ध्वनि सैनिकों के मनो में और भी अधिक उत्साह का संचार करने लगी।

तदनन्तर शिकारियों का एक बड़ा दल कन्धो पर लम्बी मजबूत रस्सियों को और जालों को डाले हुये बड़े बड़े शिकारी कुत्तों को साथ लेकर आ पहुंचा। ये कुत्ते आकार में छोटे गधों के समान थे। इनकी ग्रीवाओं में काले मोटे चमड़े की पेटियां लगी हुई थीं पेटियों में बंधी हुई लोहे की पतली जंजीरों से बलपूर्वक खीचे जाते हुये वे शिकारियों के पीछे चले आ रहे थे। मुखों से बाहर लपलपाती हुई लाल-लाल जीभों द्वारा वे कुत्ते यमराज के भयानक दूतो के समान प्रतीत होते थे।

सम्राट् के रथ के राजप्रासाद के तोरण से बाहर निकलते ही जयघोषों का कोलाहल और भी ऊँचा हो गया। दुष्यन्त के पीछे एक ऊँचे लाल रंग के अश्व पर सवार सेनापति रैवतक चल रहे थे। उनके पीछे चार पंक्तियों में कदम से कदम मिला कर पदाति सैनिको की पंक्तियाँ आगे बढ़ रही थी। उनके पीछे दो पंक्तियों में अश्व-सेना थी। अश्वारोही सैनिक लगामो से अश्वों की तीव्र गति को रोकते हुये किसी प्रकार पदाति सैनिकों का अनुकरण कर रहे-थे। अश्वारोहियों के पीछे पीछे जंजीरों से कुत्तों को खींचता हुआ शिकारियों का दल था।

राजराजेश्वर महाराजा दुष्यन्त मृगया के लिये नगर से बाहर वनों की ओर जा रहे हैं, यह समाचार तत्काल ही सारे नगर में फैल गया। बालक-बालिकायें,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युवक-युवतियां और वृद्ध-वृद्धायें अपने प्रिय सम्राट् की एक झलक पाने के लिये घरों से बाहर राजमार्गों पर, घरों के छज्जों पर और छतों के किनारों पर एकत्रित हो गये। राजा की प्रशंसा के गीत गाती हुई सुन्दरी युवतियां दुष्यन्त पर पुष्पों और अक्षतों की वर्षा करती हुई उनसे राजमार्गों को आच्छादित करने लगीं।

स्मित से विकसित मुख को चारों ओर घुमा कर, दोनों हाथों को जोड़े नागरिकों के अभिनन्दन को स्वीकार करते हुये दुष्यन्त नगर-द्वार से बाहर निकल आये। नगर के बाहर उपवनों के प्रदेश में पहुँच कर मृगया की उत्सुकता ने उनकी गति को तीव्र कर दिया। सेना की गति भी तीव्र हो गई। सूर्य के मध्य आकाश में पहुँचने तक सम्राट् अपनी सेना के साथ हिमालय पर्वत की उपत्यकाओं में पहुँच गये।

(संक्षेप)

दो मुंही जिन्दगी

राजेन्द्र 'राजा'

दो मुंही जिन्दगी यह जिन्दगी बिता
रहे हैं लोग।
फिर भी खुद को आदमी बता रहे हैं
लोग।
वंदगी तो कर रहे सूरज के सामने,
और गीत चाँदनी के गा रहे है लोग।
जीभ और हाथ का कमाल देखिये,
प्यार से बुला गला दबा रहे है लोग।
रामनामी डालकर बने है देवता,
पीठ पीछे पर छुरी चला रहे है लोग।
खून कर किसी का स्वयं फैसला करे,
ऐसी भूमिका भी अब निभा रहे हैं लोग।
खा रहे जिस थाल में, मत बात पूछिये,
छेद भी उसी में किये जा रहे है लोग।
झोंपडी का दर्द अब देखा न ही जाता,
इसलिये ही धूल में मिल रहे है लोग।
उनके कान में यह जाकर फूंक डाल दो,
खत्म यह नाटक करते आ रहे है लोग।

चीती-सिकन्द्राबाद
उ. प्र. २०३२०२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर्णभूषणम्

महाकवि उल्लूर

अनुवाद: कवियूर शिवरामय्यर

(गतांक से आगे)

XXVII

प्रह्लाद-पौत्र वैरोचन से
भीख माँगने, वामन-रूप-
धार गया इन्द्रानुज, बाधक
शुक्र बना, आचार्य अनूप ।।

अब दायक मैं, याचक सुरपति,
बाधक तो है खुद ग्रहनाथ;
जाँचे जाते दिव्य गणों से
क्यों हम भूतल-जीव अनाथ ?

भूमि ज़रा धर्मिष्ठ हुई तो
अन्य ग्रहों को क्या खतरा ?
बलि-चक्रों के प्रतिद्वंद्व में
किसने जीता ? को हारा ? ।।

गर्विष्ठ त्रिविक्रम ने अपना
पाद रखा बलि के सिर पर
वह याद वहाँ नव्य स्वराज्य-
मुकुट बना मणिमय सुंदर ।।

विस्मय से वह दृश्य देखते
चित्घन था जब मौन खड़ा
स्वर्लोक गिरा पाताल ओर
स्वर्ग ओर पाताल उठा ।।

मध्य लोक का दीप अनश्वर
सत्यनिष्ठ बलि त्याग-धनेश
पूर्व शक्र था, कल शक्र बने,
आज कीर्ति से शक्र गणेश ।।

अब है अर्जुन-पिता कर्ण को
उस भांति हराने में व्यस्त,
इस भिक्षा से मात्र कर्ण से
निश्चय अर्जुन हुआ परास्त ।।

वांछित कर्ण-पराजय हो तो
क्यों रण और हो एतदर्थ ?
प्राण-देह मैं झट देता, गर
माँगता स्वयं मुझ से पार्थ ।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अर्जुन तब तो दूर-दूर से
यहाँ पिता को क्यों लाये ?
अवरज लाया सत्पात्र, ता कि
सुदान अग्रज कर पाये ॥

सीमा मेरे दान-जलधि की
कभी न दुर्योधन का मोह,
स्नेहमयी वह मोहिनी, नहीं
करती मेरे व्रत का द्रोह ॥

चार पयस्विनियों से पालित
बालक मैं भूपाल बना
चिर जी सकता, किंतु कल्पांत-
जलनिधि में अंत डूबना ॥

बीच पावनी दान रूपिणी
सुरसरिता में डूब सतोष
कीर्ति-स्वरूप पंकज की, मैं
खाद बना तो क्या है दोष ?

XXVIII

आखंडल को दे भिक्षा, मैं
मर्त्य कहाने को तैयार,
हर्षित वृद्धश्रवा इठलाये
खाली कुंडल दोनों धार ॥

मार्गन-रोधी मेरा कंचुक
मार्गन-कर में जा ठहरे;
तात, हे ! गुरो, सुदिनावेदी,
प्रथमागत, प्रणाम मेरे ॥

माँग तुम्हारी यही नहीं है
मघवा को दान न देना ?
यह माँग ज़रूरी यदि होती
अनुमति शंका बिन देना ॥

दायाँ कर करवाल, कंठ, ये
तीनों स्वाधीन तुम्हारे,
बाल-मित्र-रक्तांशु, इसी तम-
वल्लरि को अभी निखारे ।

चिता-कुंड के हव्य बने, ये
कंचुक-कुंडल ले अधुना
हव्यवाह दें आखंडल को,
जिसका घोडा कूर्म बना ॥

XXIX

कर में नंगी तलवार लिये
खडा हुआ है प्यारा
सरूप पौरुष यह कीर्ति-धनी
भारत संतति हीरा ॥

सौ बार उसे लख रवि बोले
मत दे वह भीख मुझे,
दानवीर वैरोचनि ही तू,
यह भाषण उचित तुम्हें ॥

आज हुआ मैं सपुत्र तुझ से
मेरी शोभा बढती,
यद्यपि तेरे चरण धूलि में
सिर पर है शशि-मोती ॥

किस में दाग नहीं ? मुझ में भी
सूक्ष्मदृष्टि लखते हों;
तव कीर्ति बढे, नाम दीप्त हो
दान-धर्म की जय हो ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन कर्णों से बिछुड़े कुंडल
जग-कर्ण-विभूषण हो,
इस छाती से बिछुडा कंचुक
जग-तन का हर्षण हो ।।

यों कह रवि वे सुत को छाती
से लगा लिया फिर से,
तत्क्षण तारापथ से उन पर
मंगलमय सुम बरसे ।।

सुरनाथ-पुरःसर होकर क्या
सुमन अंगभूवि आये ?
या सुरतरु ने उस पुनीत पै
पूजा-पुष्प चढाये ?

XXX

कार्य-विलंबन भय से आगे
तनय-प्रेम से फिर पीछे
चित्रभानु स्थिर चित्र-से डटे
द्विधा बराबर यों खींचे ।।

तारक-पहरी पूरब का मुख
अक्षम हो निहारते हैं,
ऊरुहीन रवि-सूत क्या और
अंग भंग से रुकते हैं ?

या कि पंगु हरिताश्व हुए हैं ?
समय-बद्ध रवि कहाँ गये ?
अब तक निद्रा क्या न खुली है ?
अथवा सुत के यहाँ गये ?"

नभ में पतत्रि यों ही कुछ कुछ
चहक-व्याज कहते कहते
वदन परस्पर लखते, दुख है
यदि पतंग मुख न दिखाते ।

"अर्क आज क्यों देरी करते ?"
शंका से उत्कंठ बने
बारंबार पुकार रहे हैं
मुर्गे, भास्कर ताकि सुने ।।

पुनः स्वसुत को आलिंगित कर
अपने को धन्य बनाये
पीछे चंचल दृष्टि लगाये
दिनमणि नभतल चढ पाये ।।

समाप्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बधाई

१९८१-८२ में केरल हिन्दी प्रचार सभा द्वारा चलायी गयी विभिन्न परीक्षाओं में उन्नत स्थान पाये विद्यार्थियों तथा सभा की विभिन्न परीक्षाओं में सर्वाधिक विद्यार्थियों को शामिल किये प्रचारकों का २३-११-८२ को आयोजित समारोह में पुरस्कृत किया था। समारोह का सचित्र विवरण केरल ज्योति के गतांक में प्रकाशित हो चुका है।

श्रेष्ठ प्रचारक पुरस्कार

सर्वश्रेष्ठ प्रचारक

श्री० के. कृष्णनकुट्टी नायर
बापूजी स्मारक हिन्दी विद्यालय, आट्टिंगल

श्रेष्ठतर प्रचारक

श्री० के. पी. के. पिषारटी
नवभारत हिन्दी कालेज, वेल्लयंपलम, तिरुवनन्तपुरम

श्रेष्ठ प्रचारक

श्री० के. एस. कुमार
आज़ाद हिन्दी कालेज, नेमम

प्रोत्साहक पुरस्कार

श्री० एन. एन. दामोदरन
एम. डी. कालेज, मूवाट्टुपुषा

श्री० के. के. गंगाधरन
विजया हिन्दी कालेज, पुतुक्काड

श्रीमती सी. शान्तम्मा
जयभारत हिन्दी कालेज, पेरूरकटा, तिरुवनन्तपुरम

श्रीमती वी. कृष्णकुमारी
महात्मा हिन्दी विद्यालय, मुतुकुलम

पुरस्कृत छात्र

अगस्त १९८१ की परीक्षायें

हिन्दी प्रथम

प्रथम स्थान :

एम. जया वर्गीस
केन्द्रीय हिन्दी महाविद्यालय, तृशूर

द्वितीय स्थान :

१. एस. सुनिल कुमार
पूजप्पुरा हिन्दी विद्यालय, तिरुवनन्तपुरम

२. के. दीपा नायर
कृष्णप्रिया, तिरुवनन्तपुरम

तृतीय स्थान :

१. बी. प्रसन्नन
आधुनिक हिन्दी विद्यापीठ, चुनक्कटा

२. एम. के. अनिता कुमारी
आज़ाद हिन्दी विद्यालय, वल्लिक्कोड, कोट्टयम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी दूसरी

प्रथम स्थान :

आर. जयश्री
आज़ाद हिन्दी विद्यालय,
वल्लिक्कोट, कोट्टयम

द्वितीय स्थान :

१. जोर्ज जोण
हिन्दी महाविद्यालय, ईस्ट कल्लटा

२. के. गंगाधरन
कार्यवट्टम, तिरुवनन्तपुरम

तृतीय स्थान :

१. वी. जया
हिन्दी विद्यालय, मटवूर,

२. पार्वती नायर
नवभारत हिंन्दी कालेज
वेल्लयम्पलम, तिरुवनन्तपुरम

राष्ट्रभाषा (हिन्दी)

प्रथम स्थान :

पी. विवेक
विद्याभवन, शास्तमंगलम,
तिरुवनन्तपुरम

द्वितीय स्थान :

१. सी. सिन्धु
हिन्दी विद्यालय, पेरुवारम,
उत्तर परवूर

२. पी. कला
आदर्श हिन्दी विद्यालय
नीरमणकरा, तिरुवनन्तपुरम

तृतीय स्थान :

१. एम. पैराज
एन. आर. एम. हिन्दीविद्यालय
पेरूर, कोल्लम

२. एस. राजेष
आदर्श हिन्दी विद्यालय
नीरमणकरा, तिरुवनन्तपुरम

हिन्दी प्रवेश

प्रथम स्थान :

ए. शान्ता
केन्द्रीय हिन्दी महाविद्यालय
कलूर, एरणाकुलम

द्वितीय स्थान :

१. एस. हरिकृष्णन
हिन्दी विद्यालय, दक्षिण परवूर

२. गीता केशवन
नवभारत हिन्दी कालेज,
वेल्लयम्पलम, तिरुवनन्तपुरम

तृतीय स्थान :

१. के. डी. मरियाम्मा
भारत कलालय हिन्दी स्कूल,
आलुवा

२. आर. गिरीष मेनोन
जवाहर हिन्दी विद्यालय,
कवटियार, तिरुवनन्तपुरम

हिन्दी भूषण

प्रथम स्थान :

एस. राजम
केन्द्रीय हिन्दी महाविद्यालय,
केरल हिन्दी प्रचार सभा,
तिरुवनन्तपुरम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वितीय स्थान :

आर. गौरी
आदर्श हिन्दी विद्यालय, नीरमणकरा
तिरुवनन्तपुरम

तृतीय स्थान :

ए. राजेन्द्र कुमार
केन्द्रीय हिन्दी महा विद्यालय,
केरल हिन्दी प्रचार सभा,
तिरुवनन्तपुरम

साहित्याचार्य

प्रथम स्थान :

जी. सन्तोष
वट्टियूरकाव, तिरुवनन्तपुरम

द्वितीय स्थान :

डी. राधामणी
वट्टियूरक्काव, तिरुवनन्तपुरम

फरवरी १९८२ की परीक्षायें

हिन्दी प्रथम

प्रथम स्थान :

सी. शर्मिला
हिन्दी विद्यालय, आर्यनाट

द्वितीय स्थान :

१. वी. बालसरस्वती,
केन्द्रीय हिन्दी महाविद्यालय,
केरल हिन्दी प्रचार सभा,
तिरुवनन्तपुरम

२. ए. डी. विमला देवी
यूनियन हिन्दी विद्यालय,
वेञ्ञारमूट

तृतीय स्थान :

१. वी. मनोज
हिन्दी विद्यालय, मटवूर

१. सी. आर. विजय कुमार
महात्मा गाँधी स्मारक हिन्दी विद्यालय, ओलत्तान्नी,
नेय्याट्टिनकरा

हिन्दी दूसरी

प्रथम स्थान :

एस. राधाकृष्णन
आदर्श हिन्दी विद्यालय, नीरमणकरा
तिरुवनन्तपुरम

द्वितीय स्थान :

१. के. जी .सुरेष
नवीन हिन्दी विद्यालय,
ओट्टशेखरमंगलम

२. एल. बिन्दु
हिन्दी विद्यालय, पूपनाट

तृतीय स्थान :

१. एम. के. पोजा
हिन्दी विद्यालय, वेणपकल;
नेय्याट्टिनकरा

२. के. मणिकण्ठन
आदर्श हिन्दी विद्यालय,
नीरमणकरा, तिरुवनन्तपुरम

राष्ट्रभाषा (हिन्दी)

प्रथम स्थान :

आर. राजेष
केन्द्रीय हिन्दी महा विद्यालय,
केरल हिन्दी प्रचार सभा,
तिरुवनन्तपुरम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वितीय स्थान :

१. मेन. टी. जोर्ज
विषय मूर हिन्दी विद्यालय,
मावेलिक्करा

२. टी. एन. सन्तोष कुमार
केन्द्रीय हिन्दी महा विद्यालय,
तृशूर

तृतीय स्थान :

१. एस. षीला
हिन्दी विद्यालय, चिरयिनकीष

२. ऐ. विन्दु
आदर्श हिन्दी विद्यालय,
नीरमणकरा, तिरुवनन्तपुरम

हिन्दी प्रवेश

प्रथम स्थान :

यू. जी. मात्यु
केन्द्रीय हिन्दी महा विद्यालय, कलूर

द्वितीय स्थान :

पी. वी. आली
केन्द्रीय हिन्दी महा विद्यालय,
कोषिक्कोट

तृतीय स्थान :

१. षमीम अक्बर
एम. डी. कालेज, मूवाट्टुपुषा

२. षीला तोमस
केन्द्रीय हिन्दी महा विद्यालय,
मूत्तकुन्नम

हिन्दी भूषण

प्रथम स्थान :

आर गीता मेनोन
जवाहर हिन्दी विद्यालय, पेरूरकडा
तिरुवनन्तपुरम

द्वितीय स्थान :

एम. जी. गोमती
एम टी. कालेज, मूवाट्टुपुषा

तृतीस स्थान :

पी. एम. विजयलक्ष्मी
केन्द्रीय हिन्दी महा विद्यालय,
केरल हिन्दी प्रचार सभा,
तिरुवनन्तपुरम

साहित्याचार्य

प्रथम स्थान :

ए. ओमनक्कुट्टन
केन्द्रीय हिन्दी महा विद्यालय.
केरल हिन्दी प्रचार सभा,
तिरुवनन्तपुरम

द्वितीय स्थान :

वी. जी. मात्यु
हिन्दी महाविद्यालय, तुम्पमण

तृतीय स्थान :

ट्रोफिया मात्यु
एम. डी. कालेज, मूवाट्टुपुषा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठकों के पत्र

आपकी पत्रिका "केरल ज्योति" हमें नियमित रूप से मिलती रही है। हमारे लिए यह काफी उपयोगी है।

राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति
सी 85 रामदास मार्ग,
तिलक नगर,
जयपुर-302 004

यह बताने में अत्यन्त प्रसन्नता है कि "केरल ज्योति" हिन्दी पत्रिकाओं में उच्चतम स्तर की एक मासिक पत्रिका है। हिन्दी प्रेमियों के लिए अधिक जानकारी प्राप्त करने में यह अत्यन्त सहायक है।

पद्मावती पी. के.
हिन्दी अध्यापिका,
यू. पी. स्कूल,
वाइ एम. सी. ए. क्रोस रोड
कालिकट-1, केरल

'केरल ज्योति' का दिसंबर १९८२ का अंक प्राप्त हुआ। हार्दिक धन्यवाद! एक बार फिर आप ने अपने संपादकीय में एक मार्मिक प्रसंग को छेड़ा है। काश उत्तर के हिन्दी भाषी अधिकारी और नेतागण भी आप की तरह हिन्दी को 'इज्जत की निशानी' समझते! यह अत्यंत दुख की बात है कि राष्ट्रभाषा में बोलने में हम संकोच का अनुभव करते हैं। उस द्विभाषिणी महिला ने अच्छा चाँटा मारा—"मैं तो अंग्रेजी नहीं जानती। सिर्फ मंगोलियन भाषा और हिन्दी जानती हूँ।...... वैसे आप भारत से आये हैं और माना जाता है कि भारत की भाषा हिन्दी है, अंग्रजी नहीं। सारगर्मित विचरोत्तेजक संपादकीय टिप्पणी के लिए बधाई स्वीकार करें। 'नव लेखक शिविर' का सचित्र विवरण पढ़कर प्रसन्नता हुई। केरल के हिन्दी सिक्त वातावरण से नव-लेखकों को अदम्य ही प्रेरणा मिली होगी। आप लोगों की हिन्दी सेवा स्तुत्य है, हम सब के लिए अनुकरणीय है। नव वर्ष की शुभ-कामनाओं के साथ।

आपका

डा० इन्दरराज वैद 'अधीर'
आकाशवाणी, मद्रास

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री० एम. के. वेलायुधन नायर

केरल हिन्दी प्रचार सभा के मंत्री श्री० एम. के. वेलायुधन नायर को भारत सरकार के नागरिक पूर्ति मंत्रालय की हिन्दी सलाहकार समिति का सदस्य मनोनीत किया गया है। समिति के अध्यक्ष श्री० भगवत झा आज़ाद हैं।

हिन्दी साहित्य-कला प्रतियोगितायें

केरल के हिन्दी विद्यार्थियों की साहित्यिक रुचि को विकसित करने के लिए केरल हिन्दी प्रचार सभा प्रतिवर्ष प्रतियोगितायें चलाती है। इसवर्ष की प्रतियोगितायें फरवरी-मार्च में चलेगी। केरल के हिन्दी विद्यालयों/स्कूलों व कालेजों के विद्यार्थी इन में भाग ले सकते हैं।

निबंध रचना, भाषण, कहानी रचना, कविता रचना और नाटक अभिनय में प्रतियोगितायें चलेंगी। जो विद्यार्थी इन में भाग लेना चाहते हैं वे अपने विद्यालय के प्रधान अध्यापक के साक्ष्यपत्र के साथ 15-2-1983 तक अपना आवेदन-पत्र 'मंत्री, केरल हिन्दी प्रचार सभा, तिरुवनन्तपुरम-695 014' को पहुँचा दें।

❀

विश्व हिन्दी सम्मेलन अंक

केरल ज्योति का विश्व हिन्दी सम्मेलन अंक मार्च १९८३ में ही निकलेगा। कृपया अपनी रचनायें २० फरवरी १९८३ तक पहुँचा दें।

संपादक
केरल ज्योति
तिरुवनन्तपुरम-६९५ ०१४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

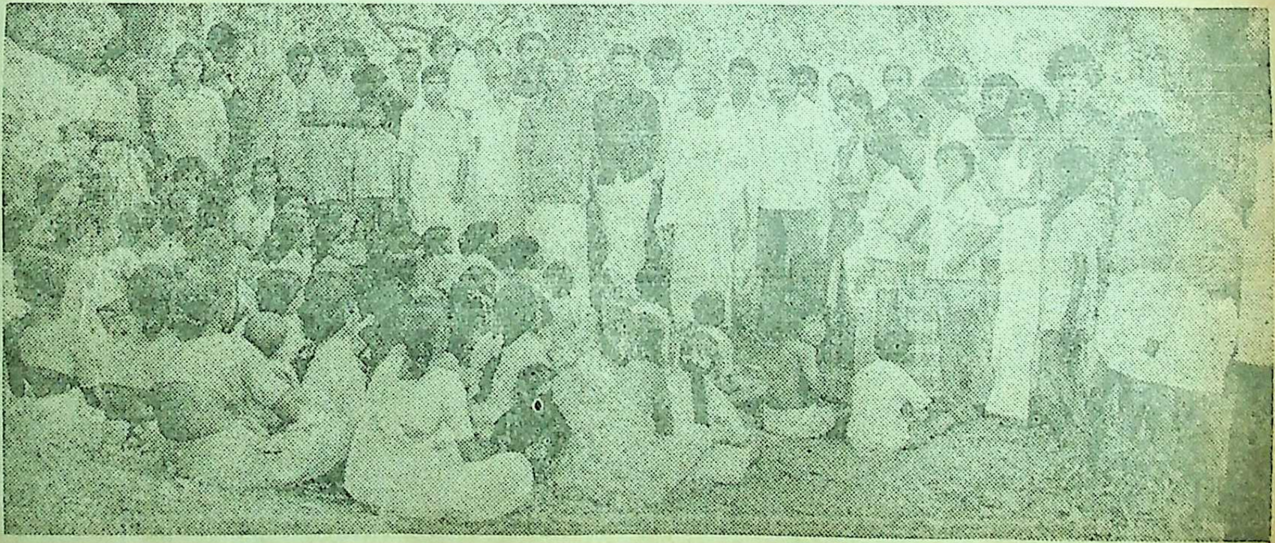

२०-११-१९८२ को कासरगोड खंड में (इटप्पणी महिला समाज) साक्षरता प्रचार जत्था का उद्घाटन कर रहे हैं श्री० पी. एन. पणिक्कर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Reg. No. KL/TV(S)/25

February 1983

Keral Jyoti

Vol. XVII-No. 11

Price : Re. 1.00

A monthly Publication of Kerala Hindi Prachar Sabha

कान्फेड के कार्यकर्ताओं की टोली साइकिल पर गाँवों में भ्रमण करके साक्षरता का प्रचार कर रही है। पीछे हैं श्री० पी. एन. पणिक्कर।

केरल हिन्दी प्रचार सभा, तिरुवनन्तपुरम–६९५ ०१४ केलिए श्री० एम. के वेलायुधन नायर द्वारा प्रकाशित।
मुद्रक : राष्ट्रवाणी मुद्रणालय, केरल हिन्दी प्रचार सभा, तिरुवनन्तपुरम–१४. सम्पादक : के. जी. बालकृष्ण पिल्लै।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केरल ज्योति

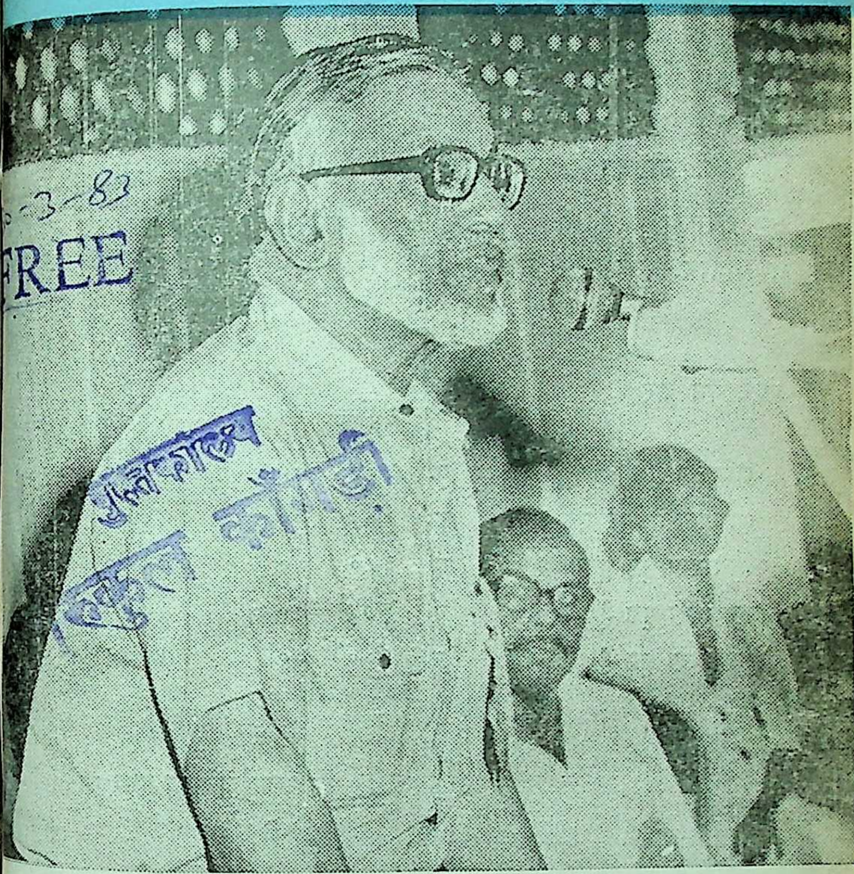

केरल शास्त्र साहित्य परिषद् का बीसवां वार्षिक समारोह—अखिल भारतीय जनकीय विज्ञान अभियान सम्मेलन का उद्घाटन कर रहे हैं विख्यात वैज्ञानिक एवं केन्द्र योजना आयोग के सदस्य प्रो० एम. जी. के. मेनोन ।

केरल हिन्दी प्रचार सभा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केरल ज्योति

* **प्रधान संपादक**

प्रो० पी. जे. जोसफ़

* **संपादक**

श्री० के. जी. बालकृष्ण पिल्लै

* **सह संपादक**

श्री० आर. सुकुमारन नायर

* **संपादक मण्डल**

श्री० वी. के. गोपालन नायर

प्रो० एम. जनार्द्दनन पिल्लै

श्री० के. वी. कृष्णनकुट्टी

श्री० एम. के. वेलायुधन नायर

❀

* विज्ञापन दर

		मासिक	वार्षिक
आवरण पृष्ठ ४	रु.	५०० ००	५००० ००
आवरण पृष्ठ २ एवं ३	रु.	४०० ००	४००० ००
साधारण पृष्ठ पूरा	रु.	३०० ००	३००० ००
साधारण पृष्ठ ½	रु.	१७५ ००	१७५० ००
साधारण पृष्ठ ¼	रु.	१०० ००	१००० ००

❀

* **पत्र व्यवहार का पता।**

मंत्री,

केरल हिन्दी प्रचार सभा

तिरुवनन्तपुरम-६९५ ०१४

केरल

तार:—"जय हिन्दी"

फोन: ६१३७८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केरलज्योति

पुष्प: १७

दल : १२

मार्च १९८३

सांस्कृतिक जागरण की मासिक पत्रिका

संपादकीय

तृतीय विश्व हिन्दी सम्मेलन

यद्यपि भारत के ही चार हज़ार प्रतिनिधियों ने तृतीय विश्व हिन्दी सम्मेलन में भाग लेने की सम्मति प्रकट की है तो भी यह सम्मेलन चार पाँच महीनों के लिए इस विचार से स्थगित कर दिया गया है कि विदेशों से अधिकाधिक प्रतिनिधियों को भाग लेने की सुविधा मिले।

विश्व हिन्दी सम्मेलन में भारतीय प्रतिनिधियों का जितना महत्व है उतना ही या उससे अधिक महत्व विदेशी प्रतिनिधियों का होना ही चाहिए। इस सम्मेलन में समस्त विश्व को दृष्टि में रखकर हिन्दी की क्षमताओं, सीमाओं और संभावनाओं पर विचार मंथन करना है। अत: जितनी अधिक संख्या में विदेशी प्रतिनिधियों को शामिल करा सकें उतना अच्छा।

लेकिन सम्मेलन के प्रतिभागियों की संख्या जितनी बढ़ती जायेगी प्रतिभागियों का योगदान उतना ही कम हो जाने की भी संभावना है। पाँच हज़ार श्रोताओं के सम्मुख कुछ गण्यमान्य नेताओं और विद्वानों के लंबे चौडे भाषण आयोजित करना आसान है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस अंक में

हिन्दी की रागात्मक भूमिका 3
डॉ० एन. ई. विश्वनाथ अय्यर

जय हिन्दी—जय भारतवाणी 9
देव केरलीय

हिन्दी काव्य—साहित्य का नवनीत 11
डॉ० कु. आशा कपूर

विश्व की आदि भाषा कौन-सी थी ? क्या वह डोंगरी, डोगरी, जो पश्चात देवनागरी कहलायी थी ? 16
एच, एल. मिलिंद

थाती 19
राजेन्द्र शर्मा

ओहो री किन्नरिया 20
मूल: कविसम्राट विश्वनाथ सत्यनारायण
अनुवाद: डॉ० जी. सुब्बराव

शकुन्तला 24
डॉ० कृष्णकुमार

पाठकों के पत्र 31

पर इस एक मार्गी संचार से उतना फायदा नहीं हो सकता जितना विभिन्न दायरों से आनेवाले प्रतिभागियों के विचारों और अनुभवों के आदान प्रदान से हो सकता है। ऐसे बौद्धिक आदान प्रदान से ही हिन्दी विश्व को नयी दिशा मिल सकती है, नयी गति मिल सकती है। आशा है सम्मेलन के आयोजक इस बिन्दु को भी नजरन्दाज़ रखेंगे।

विश्व हिन्दी सम्मेलन अंक

चूँकि विश्व हिन्दी सम्मेलन स्थगित किया गया है इसलिये केरल ज्योति का तृतीय विश्व हिन्दी सम्मेलन अंक भी स्थगित करना पड रहा है। अभी चार पाँच महीने का समय है। लेखक बन्धुओं से निवेदन है कि सम्मेलन के महत्व और उपयोगिता को दृष्टि में रख कर अपनी विशिष्ट रचनायें भेज कर उक्त विशेषांक का गौरव बढायें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी की रागात्मक भूमिका

डॉ० एन. ई. विश्वनाथ अय्यर

मुझे सफर करने का शौक है। दूर-दूर की यात्रा के दौरान कई लोग मिल जाते हैं। भिलाई के इस्पात कारखाने का श्रमिक, लेह के फौजी पडाव का सिपाही, श्रीनगर के कान्वेंट की अध्यापिका, अरुणाचल प्रदेश की सरकार का कर्मचारी—विभिन्न प्रान्तों में भिन्न-भिन्न प्रकार का काम करनेवाले अनेक लोग केरल की तरफ़ आते हैं। बातचीत से पता लगता है कि किसी का घर वर्कला में है, किसी का अडूर में, किसी का कोन्नी में तो किसी का हरिप्पाड में।* इन यात्रियों से बातचीत करता हूँ तो घर पहुँचने की इनकी उतावली ज़ाहिर होती है। क्वाँरे जवान को अपनी माँ के हाथ की बनाई चीज खाने की ख्वाहिश है। विवाहित युवकों को बिछुडी पत्नी से मिलने की अधीरता है। पिताओं को बच्चों से मिलने और उनकी तोतली बातें सुनने की जल्दी है। बुजुर्गों को पोते-नाती के मुसकाते गाल चूमने की इच्छा है। सभी अपनों से मिलना चाहते हैं। यह अपनापन की माया बडी अजीब है।

जहाँ अपना मन लगे वहाँ आदमी तन भी देता है। उत्तर भारत के महानगरों में क्या आधुनिक रेस्तराँ या चाट-भंडार नहीं हैं जहाँ सैकडों किस्म के मिठाई-नमकीन मिल सकते हैं? फिर यह कैसी पगली इच्छा है कि केरल के किसी छोटे या बडे गाँव के मामूली घर में माँ या प्रेयसी की बनाई मामूली सब्जी या मछली के साथ मोटा चावल खाऊँ? वही अपनापन। घर पर माँ या पत्नी जो रूखा-सूखा खिलाती है उसमें प्रेम या ममता का अमृत रहता है वह आलीशान होटल के डिन्नर में नहीं मिल सकता।

* ये केरल के कुछ गाँव हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोटि-कोटि कंठों के समवेत स्वर से जब 'जय-हिन्द' का हिन्दी नारा ऊँची आवाज़ में गूँज उठता है, तब हम पुलकित हो उठते हैं।

यह ममता अपने परिवार, अपने गाँव और अपने देश के प्रति भी अनुभव होती है। केरलीय व्यक्ति केरल के बाहर किसी के मुँह से मलयालम सुनकर विशेष हर्ष पाते हैं। यों जो भारत से बाहर जाते हैं वे विशेष में अपने देशवासी लोगों के मुँह से देश की भाषा सुनने अधीर रहते हैं। यह अद्भुत ममता मानव से बड़े से बड़े बलिदान व कष्ट-सहन कराती है।

हिन्दी से प्रत्येक भारतीय का संबन्ध भी ममतापूर्ण या रागात्मक हैं। भारत में अनेक संपन्न भाषाएँ अवश्य हैं। परन्तु हिन्दी अन्य भाषाओं से कुछ भिन्न हैं। भाषा की दृष्टि से इसकी अपनी विशेषताएँ तो हैं ही। साथ ही यह करोड़ों भारत-वासियों को एकता का संदेश देती है। यह अपनी मिठास से सब को मुग्ध भी करती है। कोटि-कोटि कंठों के समवेत स्वर से जब 'जय-हिन्द' का हिन्दी नारा ऊँची आवाज़ में गूँज उठता है, तब हम पुलकित हो उठते हैं।

इतिहास का दर्पण

हिन्दी साहित्य का इतिहास भारतीय इतिहास से जुड़ा हुआ है। हमारी विजय की यशोगाथा और पराजय की दुःख-कहानी भी इस साहित्य में प्रस्तुत हुई है। इसने हमारी महान परंपरा की कथाएँ सुनाई हैं। पृथ्वीराजरासोकार चंदबरदाई ने बताया है कि पृथ्वीराज ने सात-सात बार शहाबुद्दीन गोरी के हाथ में पाकर भी निहत्थे को मारना कायरता समझकर बख्श दिया था। वे कूटनीति की दृष्टि से कच्चे रहे हों, पर वीरता की दृष्टि से सच्चे थे। शब्दभेदी बाण से शत्रु की छाती भेदकर उन्होंने भारत की वीरता का नाम ऊँचा कर दिया। इतिहास हमें उनकी वीरता के साथ अदूरदर्शिता की त्रुटि से भी अवगत कराता है। आग के गोले और कपटी रणनीति का सामना तीर-भाला और हर-हर महादेव से नहीं किया जा सकता था। फिर भी सिर पर कफन बाँधकर दुश्मनों पर टूट पड़नेवाले उन बहादुरों पर हमें गर्व अवश्य है। इसी प्रकार दुश्मनों के शाही हरमों में मलिका बनने की अपेक्षा आग की लपटों से लिपटकर अपने तन को राख में बदल देने के त्याग को श्रेयस्कर माननेवाली वीर क्षत्राणियों की कथा क्या हमें अब भी गर्व-पुलकित नहीं करती? राजपूतों-राजपुतानियों की वीर-गाथाएँ हिन्दी के प्रारंभिक काव्यों में वर्णित हैं।

जनता की भाषा

हिन्दी भाषा के ऐतिहासिक विकास पर नज़र डालने से हम समझ सकते हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि यह जनता-जनार्दन की भाषा के रूप में अंकुरित, पल्लवित और पुष्पित हुई है। संस्कृत उच्च व अभिजात वर्ग की भाषा के रूप में विकसित हुई थी। वह सामान्य कोटि के लोगों की पहुँच से परे था थी। उन साधारण लोगों को अपने दिल के उद्‌गार सुनाने के लिए एक ऐसी भाषा जरूरी थी जो मधुर व कोमल हो। जहाँ एक तरफ़ कुछ लोग संस्कृत को देववाणी के उच्च पीठ पर बिठाने तैयार थे वहीं और कुछ लोग "परुषः संस्कृत बन्धः, प्राकृत बन्धस्तु सुकुमारः" और "देसिय वचना बहुजन मिट्ठा" भी मानते थे। जनता को मीठी लगने से ही कविगण उसी भाषा में काव्य लिखने का साहस करने लगे। संस्कृत की सत्ता को चुनौती देनेवाली देशी भाषा बहुजन हिताय ठोस सेवा करने लगी। तभी तो तुलसीदास ने "भाषा भनिति भूति भलि सोई" कहने का साहस किया। तुलसी के काव्य-सृजन के विषय में जो जन-श्रुतियाँ चलती हैं उनके पीछे संस्कृत के पक्षपातियों की चुनौती और उस चुनौती का विनीत, पर स्पष्ट उत्तर भी निहित है। कविवर केशवदास ने भी अपने को संस्कृत पंडितों के कुल का मंदमति भाषा-कवि बताते हुए अपना विशद वाङ्‌मय रचा और आलोचकों को करारा जवाब दिया।

जनता की भाषा का अभिजात वर्ग के द्वारा तिरस्कार भारत के ही नहीं, प्रत्येक देश के इतिहास में देखा जा सकता है। हिन्दी के विषय में हीनता-ग्रंथि का अनुभव करते हुए इसे आम लोगों की अविकसित भाषा कहनेवाले हम अंग्रेज़ी की झकझक से चौंधियाये हुए हैं। मगर अंग्रेज़ी भाषा का इतिहास पढ़ने पर पता चलता है कि अंग्रेज़ी भी प्रारंभिक युग में अभिजात लोगों से ठुकराई गई थी। रोमन शासन के दिनों में इंगलैंड के अभिजात लोगों की भाषा लैटीन थी। अंग्रेज़ी मामूली लोगों की भाषा रही थी। आगे इंग्लैंड पर फ्रांसीसी राजा और फ्रेंच भाषा का ऐसा रोब जमा कि प्रशासकों में अनेक ऐसे हुए जिन्हें अंग्रेज़ी नहीं आती थी। दूसरों को बहुत कम आती थी। अपने बच्चों की फ्रेंच दुरुस्त करने केलिए अभिजात वर्ग के लोग खास अध्यापक नियुक्त करते और स्वयं बडी मेहनत करते थे। तिस पर भी फ्रांस के विद्वान इंगलैंड में प्रचलित फ्रेंच को घटिया बताते थे। इंगलैंड में फ्रेंच की जो स्थिति उस जमाने में थी उससे हमारे देश में अंग्रेज़ी की वर्तमान स्थिति कुछ बातों में मिलती जुलती है।

इंगलैंड की फ्रेंच का शेष इतिहास भी महत्वपूर्ण है। जब इंगलैंड और फ्रांस की मित्रता टूटी और "एक सौ वर्षों का युद्ध" फ्रांस-इंगलैंड में चला तब दोनों

इंगलैंड में फ्रेंच की जो स्थिति उस जमाने में थी उससे हमारे देश में अंग्रेज़ी की वर्तमान स्थिति कुछ बातों में मिलती जुलती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देशों की मानसिक दरार बढती गई। जब फ्रांसीसी सत्ता इंगलैंड में हमेशा केलिए समाप्त हुई तब फ्रेंच भाषा को भी अंग्रेज़ों ने अपने देश से बिदा कर दिया। यह तो ज़रूर हुआ कि अंग्रेज़ी में हजारों फ्रेंच शब्द स्वीकार किये गये। हर क्षेत्र में ऐसे शब्द—संज्ञा, विशेषण, क्रिया और मुहावरे तक — अंग्रेज़ी में आये और अंग्रेज़ीवत् हो गये। फिर भी अंग्रेज़ों ने फ्रेंच के मोह में पड़कर अंग्रेज़ी को नहीं छोडा। उन्हें यह भय नहीं रहा कि हमारी संस्कृति एवं सभ्यता फ्रेंच को छोडने से एकदम डूब जाएगी। उलटे उनका दृढ विश्वास था कि पराई भाषा की प्रभुता हमारे मन को गुलाम बनाएगी। इस गुलामी से वे बचना चाहते थे।

लाखों को भक्ति व ज्ञान सुलभ करानेवाला माध्यम

वाणी के डिक्टेटर कबीर ने जनता की भाषा में अपने युग के कट्टरपंथी पंडितों और मौलवियों का भंडा फोड दिया :—

हिन्दू कहै मोहि राम पियारा तुरक कहे रहिमाना।
आपस में दोऊ लरि लरि मूवे मरम न काहू जाना॥

बडे दिग्गज विद्वान जिन दार्शनिक बातों को शास्त्रार्थ के वाग्जाल में उलझाये देते थे उन्हें कबीर ने बड़े सरल व सीधे शब्दों में समझाकर मामूली आदमी केलिए भी सुलभ बना दिया। कबीर की वाणी ने ज्ञान व भक्ति को लाखों केलिए सुलभ बनाया।

पीया चाहै प्रेम-रस राखा चाहै मान
एक म्यान में दोऊ खडग, देखा सुना न कान॥
लाली मेरे लाल की जित देखौं तित लाल
लाली देखन मैं गई मैं भी हो गई लाल॥

कबीर हठयोग व रहस्यवाद जैसे गहरे विषयों को भी हिन्दी के माध्यम से प्रस्तुत कर सके थे।

इस प्रसंग पर यह बताना ज़रूरी है कि भारत के विभिन्न प्रान्तों में उन प्रान्तों की जन-भाषाओं के माध्यम से काव्य-सृजन करनेवाले भक्त कवियों की गौरवशाली परंपरा रही है। उनमें भी दो प्रकार के लोग हुए (१) मुख्यतः भक्त और गौणतः कवि, (२) कवि और भक्त। संत तुकाराम ने हज़ारों अभंगों में पांडुरंग विट्ठल की महिमा गाई थी। पांडुरंग उनकी पुकार सुनने हमेशा तैयार रहते थे। लाखों अब भी उनके रचे भजन के गीत गाते हैं। तुकाराम जाति से कुनबी (कृषक) रहे। उनकी भाषा आम लोगों की मराठी थी। फिर भी उन्होंने मराठी के गीतों से संस्कृत ज्ञानियों की भी आँखें खोल दीं। ऐसे उदाहरण हर भारतीय भाषा में मिलेंगे। फिर भी यहाँ हिन्दी के और एक उदाहरण से संतुष्ट होना पडता है। प्रज्ञाचक्षु सूरदासजी प्रभु के सामने व्रज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

> इसीलिए दु:ख कष्ट के गुलाम जीवन में भी प्रवासी भारतीयों ने रामचरितमानस से शांति का संदेश पाया।

भाषा में ही कृष्णलीलाएँ पदों में गाते थे। वे अपना दु:ख अपनी प्रार्थना सब ब्रजभाषा में ही सुनाते थे—"प्रभु! मोरे अवगुन चित न धरो।...मो सम कौन कुटिल खल कामी" आदि। भगवान कृष्ण भी उनकी वाणी सुनकर प्रसन्न होते थे। लाखों लोगों के मन सूरसगर में भक्ति के अमृतरस का पान कर सके। इसी प्रकार तुलसीदास ने जन-भाषा हिन्दी में जो रामचरितमानस रचा वह आम को प्रिय लगा। करोडों भारतीयों के लिए वह कोश काव्य ग्रन्थ नहीं है। वह तो उन्हें मानसिक दु:ख में शांति, शंका में समाधान, अनिश्चय में निर्णय और सर्व-सुलभ आनन्द दे सका है। इसीलिए दु:ख कष्ट के गुलाम जीवन में भी प्रवासी भारतीयों ने रामचरितमानस से शांति का संदेश पाया। हिन्दी के प्रेमियों को मानस की लोकप्रियता के बारे में अधिक अिस्तार से बताने की जरूरत नहीं है।

यथा युग तथा कवि

हिन्दी भारत के विलासी एवं अवनतिशील मध्ययुग की भी गवाही देती है। यथा युग हुआ तथा ही कवि हुए थे। वे काव्यांग-विवेचन के बहाने और राधा कृष्ण के प्रेमवर्णन के बहाने वात्स्यायन के शिष्य एवं भाष्यकार बने। ऐसी वाणी जनता की आत्मा को जगा नहीं सकती थी; उनकी वीरता को उत्तेजित नहीं कर सकती थी। समाज का दर्पण बनी हुई इस भाषा में एकाध सपूतों ने फिर से तलवारों की झनझनकार अवश्य सुनाई थी। भूषण की ललकारती वाणी और प्रोत्साहन के छंद सुनकर छोटे-नाटे वीर मराठे शिवाजी ने दिल्लीश्वर को कँपा दिया और मुगल सलतनत की जड हिला दी थी।

निजभाषा उन्नीत चहै

जब मन में बडी व्यथा होती है तब हम अपनी ही भाषा में उसे सफलतापूर्वक प्रकट कर पाते हैं। अपनी भाषा लोगों पर जितना प्रभाव डाल सकती है उतना प्रभाव पराई भाषा जमा नहीं पाती। आधुनिक युग के प्रवर्तक भारतेन्दु हरिश्चन्द्र एवं उनके मित्रों ने यह मर्म पहचान लिया था। उन्होंने ही संभवत: कविता में यह संदेश सर्वप्रथम दिया कि निज भाषा उन्नति चहै, यह उन्नति को मूल। भौतिक-सुख शांति के साथ-साथ पराधीनता का जुआँ कंधे पर जमा देनेबाले विदेशी शासन के विरुद्ध भारतीय जनता को सचेत करने का काम हिन्दी ने किया था—

> पढि विद्या परदेश की बुद्धि विदेसी पाय
> चाल चलन परदेस की गई इन्हें अति भाय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भौतिक सुख शान्ति के साथ-साथ पराधीनता का जुआँ कंधे पर जमा देनेवाले विदेशी शासन के विरुद्ध भारतीय जनता को सचेत करने का काम हिन्दी ने किया था—

ठेट विदेसी ठाठ सब बनायो देश विदेस
सपने हूँ जिनमें न कहूँ भारतीयता लेस ।
हिन्दुस्तानी नाम सुनि अब ये सकुचि लजात
भारतीय वस्तु ही सों ये हाय घिनात ।।

विदेशी-प्रेमियों को कठोर शब्दों से लताडने का साहसपूर्वक प्रयास हिन्दी के माध्यम से हो सका था । हिन्दी के द्वारा जनता के मन में गुलामी के खिलाफ एक नई चुनौती जगाने का कार्य भी संपन्न हो सका । इसी के फलस्वरूप हिन्दी कवि बारबार भारत-गरिमा गाते चले । श्रीधर पाठक की पंक्तियाँ उदाहरण केलिए प्रस्तुत हैं—

स्वर्गिक शीशफूल पृथिवी का
प्रेममूल प्रिय-लोकत्रयी का
सललित प्रकृति-नटी का टीका
ज्यों निशि का राकेश
जय-जय प्यारा भारत देश ।

विदेशी शासन की निठुरता और अंग्रेजी के हाथ हिन्दी का अपमान आदि भाव हिन्दी क्षेत्र में प्रत्यक्ष देखने को मिलते थे । इसीलिए हिन्दी लेखन में अंग्रेज और अंग्रेजी के प्रति घोर-विरोध की भावना विशेष रूप से प्रकट होती आई है । इस विरोध के पीछे भारत की मानसिक स्वाधीनता की सुरक्षा का विचार भी रहता है । इसीलिए भारतीयों को अपनी अन्य भाषाओं के व्यवहार पर आपत्ति नहीं उठाई जाती । उनके अंग्रेजी—व्यवहार पर आपत्ति उठाई जाती है ।

प्रासंगिक रूप से कहना पडता है कि इसके व्यावहारिक पक्ष में नई समस्याएँ उठती हैं । भारत के अंग्रेज़ीदाँ बंधु—खास कर हिन्दीतर भाषी बंधु—हिन्दी के कठोर आग्रह को अपना अपमान एवं हिन्दी पक्षपात का विकृत रूप समझते हैं । दूसरे, ऐसे प्रसंग पर हिन्दी में तुरंत अनुवाद की सुविधा होना जरूरी होता है । उस सुविधा के अभाव में वार्तालाप सफल नहीं हो पाता । तीसरे, व्यक्तियों की वक्तृत्वकला और भाषा का संबन्ध भी मानना पडता है । यह एक कमज़ोर दलील जरूर है क्योंकि वक्ताओं को अपनी भाषा में या देश भाषा में कच्चा रहना और विदेशी भाषा में सशक्त रहना शोभा नहीं देता । फिर भी व्यावहारिक दृष्टि से ऐसा होता है । प्रायः बडे सम्मेलन में जो मानसिक वृत्ति होती है, वह भीड की मानसिक वृत्ति है जिसमें आवेग और आक्रोश अधिक रहता है, विवेक

(शेष पृष्ठ २२ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जय हिन्दी — जय भारतवाणी

देव, केरलीय

भूकंडल का सभ्य देश है, विश्रुत भारत देश,
कोई नहीं है, सानी इसका, ऐसा सुन्दर देश।
शीर्ष-मुकुट सम अखिल विश्व में शोभित पावन देश,
सागर-वीचि-विचुंबित भासुर प्यारा भारत देश।
यह विश्वोत्तर संस्कृति संयुत सुरनर वर्णित देश,
जन-तंत्रात्मक शासन द्वारा विश्व विदित वर देश।
जग हित जीवन अर्पित करना भारत-धर्म सनातन,
पावन-मंत्रों से मुखरित हों, घर घर शाँति निकेतन।
अनुदिन गाता उच्च हिमालय, भासुर भारत गरिमा,
नित गाती सुर सरिता भी आर्ष भूमि की महिमा।
हिन्दू, मुसलिम, सिक्ख, ईसाई सभी परस्पर भ्राता,
मिलकर कहते एक हृदय हो, जय, जय, भारत माता,
जननी सम हम सब भी पूज्या, पावन भारत भूमि,
शत शत वन्दन तव चरणों पर मेरी भारत भूमि।
एक ही अंबर, एक ही पृथ्वी, एक ही मानव जाति,
जड़ता छोड़ चलें हम अविरत, फैले अग जग ख्याति।
रैन बसेरा है जग जीवन, भूल न इस को मानव,
छोड़ न मन की करुणा वरुणा, प्रिय नर, बन मत दानव।
एक दूसरे का पूरक बन, बढे मानव-परिवार,
जननी वसुधा एक हमारी, उसका कितना विस्तार!
तुलसी, सूर, कबीर आदि ने धन्य बनाया जिसको,
पंत, निराला, प्रेमचन्द ने सरस बनाया जिस को,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वही हम सब की वरदा वाणी, पावन भारत वाणी,
मेल कराती जन जन में वह, हिन्दी भारत वाणी।
गूँज उठे अब अखिल विश्व में 'जय हिन्दी' यह नारा,
कोटि कोटि जन बोल उठे अब जय, जय, भारत प्यारा॥
एक मन्त्र है, परहित साधन, निर्भर जिस पर जीवन,
विश्व राज्य का स्वप्न सत्य हो, धन्य बने जग-जीवन।
वन्दनीय हे माता धरणी, कैसे तव गुण गाऊँ,
प्रत्युपकार नहीं हो सकता, कैसे उऋण होऊँ ?
अमर-गिरा सी सब की पूज्या राष्ट्र-वाणी, कल्याणी,
भारत मान बढ़ाने वाली तेरी जय हो, भारत वाणी।

हिन्दी संस्कृत विद्याभवन
कोट्टयम-६८६००४

विशेषांक केलिए विज्ञापन

चूँकि तृतीय विश्व हिन्दी सम्मेलन की तिथियों में परिवर्तन आ गया है। इसलिए केरल ज्योति का विश्व हिन्दी सम्मेलन विशेषांक जो कि मार्च १९८३ में निकलने वाला था, चार पाँच महीने बाद तृतीय विश्व हिन्दी सम्मेलन के अवसर पर ही निकाला जायेगा।

प्रकाशकों और अन्य उद्योगपतियों से अनुरोध है कि अपने बहुमूल्य विज्ञापन की सामग्री यथा शीघ्र पहुँचा दें और इस उद्यम को सफल बनावें।

मंत्री
केरल हिन्दी प्रचार सभा
तिरुवनन्तपुरम-६९५ ०१४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी काव्य-साहित्य का नवनीत

डॉ० कु. आशा कपूर

हिन्दी छायावादी काव्य, जिसे स्वच्छन्दतावादी काव्य कहना अधिक उपयुक्त होगा, पाश्चात्य काव्य-धारा रोमांटिसिज़्म की कुछ विशेषताएँ अनायास ग्रहण कर उनको निज मौलिक विशिष्टताओं से सज्जित करता हुआ नितान्त नवीन रूप से हिन्दी काव्य जगत में उपस्थित हुआ। इस नवीनता में काव्य के आत्मभूत तत्व रस एवं ध्वनि का पूर्ण समादर करते हुए शास्त्रीय मान्यता की रक्षा का पूर्ण प्रयत्न है।

इस प्रकार इस युग ने बीस वर्ष की ल्पावधि में हिन्दी काव्य जगत को र शब्दकोश तथा कोमल मनोरम नुभूतियों का अप्रतिम भण्डार प्रदान या। भारतेन्दु युग से लेकर द्विवेदी तक की खडी-बोली जो प्रायोगिक वस्था में ही था, इस युग के काव्य युगानुकूल राष्ट्रीय भूमिका पर उसे वस्थित किया। लाक्षणिकता तथा जना के द्वारा भाव सत्य की व्यापकता महत्व दिया गया। इसका अर्थ यह नहीं कि कलात्मकता के अतिरेक में भाषा-ज्जा की ओर विशेष ध्यान दिया गया ल्कि तत्कालीन कवियों का भावलोक द्विवेदी युगीन सीधी सरल भाषा के उपयुक्त न था। आंतरिक गूढ़ अभिव्यक्ति के लिए भाषा में असाधारण क्षमता का विकास किया गया, दूसरे शब्दों में ध्वनि सिद्धान्त की विजय-घोषणा की गई। इस युग में रीतिकालीन ब्रजभाषा के समान केवल माधुर्य एवं प्रसाद गुण नहीं था बल्कि ओज का मुखर निनाद भी था। भाषा में एक साथ तीनों गुणों के समायोग द्वारा एकरसता का दोष नहीं आ सका है, इस प्रकार जीवन में व्याप्त विरसता को कलात्मक सरसता प्रदान करने का प्रयत्न किया गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाव चित्रण एवं रस-व्यंजना के क्षेत्र में हिन्दी स्वच्छन्दतावादी काव्य ने नवयुग का द्वार खोला । भक्तिकाल के बाद उदात्त तथा गम्भीर रसों का दर्शन इसी युग के काव्य में प्राप्त होता है ।

रीतियुग में अलंकृत संगीत से युक्त शुद्ध काव्य को भूमि पर जिस काव्यानन्द का अनुभव हुआ वह उतना प्रभावपूर्ण न था । इस युग ने उन पावनकारी भावों एवं तृप्तिकर रसों की सृष्टि की जिसे हिन्दी पाठक विस्मृत कर चुका था ।

भक्ति काल, जिसे स्वर्णकाल की अभिधा प्रदान की गई है उसमें अनुभूति की गहनता और उदात्तता तो अवश्य है किन्तु अभिव्यक्ति की सूक्ष्मता एवं कलात्मक पराकाष्ठा नहीं है । इसी भांति रीतिकाल जिसका प्रणयन कला कला के लिए, सिद्धान्त के आधार पर हुआ प्रतीत होता है उसमें केवल अभिव्यक्ति ही है अनुभूति नहीं । किन्तु इस स्वच्छन्दतावादी काव्य में विषय एवं अभिव्यक्ति परस्पर अनुविद्ध, अनुस्यूत तथा एकाकार होकर प्रकट हुए हैं इसी कारण एकपक्षीय न होने के कारण यह काव्य श्रेष्ठ कहा जा सकता है । उत्तम काव्य के अनिवार्य उपादान रस-तत्व एवं ध्वनि-तत्व का परिष्कृत एवं उत्कृष्ट रूप जो इस युग के काव्य में उपलब्ध है, उसकी कुछ अलग विशिष्टताएँ है । यहाँ रसोदभावना संचारी भावों के माध्यम से संवर्द्धित हुई है । युग प्रवर्तक प्रसाद, पन्त, निराला तथा महावीर आदि की कृतियों में प्रतीकों तथा रूपकों के द्वारा रस की प्रतिष्ठा की गई है । किन्तु कविवर प्रसाद जी की काव्य-कृतियों में रस के समस्त प्रकारों की उत्तम व्यंजना इस तथ्य का उद्घोष करती है कि संकीर्ण अर्थ में अथवा प्रकार भेद के आधार पर प्राचीन रूप में रस-व्यंजना भी इस युग में समादृत हुई । ध्वन्यात्मकता व लाक्षणिकता की रसात्मक परिणति इस काव्य का चरमोत्कर्ष है । काव्य का यह रसात्मक रूप किसी भी दशा में पलायनवादी या वायवी व्यंजना की अनुभूति नहीं कराता है, बल्कि रससिक्त आनन्दात्मक अनुभूति की व्यक्त प्रक्रिया है ।

रस की प्रतीकात्मक प्रतीति के समान व्यंजनात्मक प्रतीकों की भी बहुलता है, जिसमें सूक्ष्मता व्यंग्य वक्रता एवं सांकेतिकता व्यक्त करने की प्रबल चेष्टा है । हिन्दी काव्य शास्त्र युग (रीतिकाल) के समान इस युग में लक्षण एवं लक्ष्य ग्रन्थों की रचना नहीं की गई है, अपितु, उच्चकोटि के निवन्धों तथा उत्कृष्ट काव्य रचनाओं के माध्यम से इन आत्मभूत तत्वों की मौलिक एवं नवीन व्याख्या प्रस्तुत की गई है जससे एक ओर प्राचीनता का व्यामोह तथा दूसरी ओर नवीनता का आग्रह व्यक्त होता है ।

स्वच्छन्दतावादी काव्य के प्रणेता जयशंकर प्रसाद तथा अन्य समीक्षक आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी, डा० नगेन्द्र आदि ने रस चिन्तना के क्षेत्र में भरत सूत्र के व्याख्याकारों की परम्परा को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विकसित करते हुए अपना विशिष्ट योगदान दिया । एक ओर प्रसाद ने अभिनवगुप्तीय परम्परा को समरसताजन्य आनन्द की स्थिति रूप में स्वीकार करते हुए मौलिकता का परिचय दिया, दूसरी ओर आचार्य वाजपेयी तथा डा० नगेन्द्र ने प्राचीन व्याख्या का आधुनिक परिप्रेक्ष्य में मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करते हुए आधारभूत अनिवार्यता प्रतिपादित की । अतः भरतसूत्र के व्याख्याकारों के मतों को धरोहर रूप में स्वीकार करते हुए अधिक स्पष्ट सरस एवं युगानुरूप बनाने का श्रेय इस युग को दिया जा सकता है ।

रस के अलौकिक तत्व पूर्ण आनन्दात्मक रूप की उत्तम अभिव्यंजना जो स्वच्छन्दतावादी काव्य में मिलती है वह ब्रह्मानन्द सहोदर रूप में दिव्य चमत्कारी रूप में न होकर असीम आनन्द भावों की तल्लीनता एवं तन्मयता का पर्याय बनकर निरूपित हुई है जिसमें हृदय की मुक्तावस्था के लिए पूर्ण स्थान है ।

रस एवं ध्वनि के उत्कृष्ट समायोजन के कारण ही इस युग का काव्य रमणीय चित्तवृत्तियों को रमाने वाला अर्थात् तल्लीन करने की सामर्थ्य रखनेवाला है । काव्यास्वाद अर्थ के उत्कर्ष की व्यंजकताजन्य उत्कृष्टता है । अतएव स्वच्छन्दतावादी काव्य का लावण्य व सौन्दर्य रसभिषिक्त किंवा रसभिषिंचित होकर प्रस्फुटित हुआ है जिसमें तरलता, सरसता एवं प्रवहणशीलता है ।

व्यक्तिगत अनुभूति की अतिशयता से परिपूर्ण इस काव्य की अभिव्यक्ति यदि इतनी आकर्षक न होती तो स्वच्छन्दतावादी काव्य उत्तम काव्य की श्रेणी में नहीं आ सकता था । इस काव्य की लाक्षणिकता और ध्वन्यात्मकता सहृदयों की कल्पना उत्तेजित कर रस विभोर कर देती है यह रस एवं ध्वनि के उत्कृष्ट निरूपण द्वारा संभव हो सका है ।

रस और ध्वनि तत्व रूप में तथा रस-ध्वनि काव्य भेद के रूप में भी निरूपित हुआ है । स्वच्छन्दतावादी काव्य में रस ध्वनि आधार अधेय अथवा साध्य-साधन रूप में नहीं अपितु तदाकार होकर एकात्म रूप में प्रतिष्ठित हुए हैं । उल्लेखनीय यह है कि ध्वनि सदैव सरस बनकर तथा रस सर्वत्र ध्वनित होकर ही प्रकाशित हुआ है । कोरी भावुकता अथवा विशुद्ध बौद्धिकता का अतिरेक कहीं नहीं प्राप्त होता है ।

आधुनिक युग में रस के स्थान पर विज्ञान या नये जीवन के प्रभाव से अन्य अनेक मूल्यों की प्रतिष्ठा की जा रही है जिनमें बौद्धिक व्यंग्य, बिम्ब, प्रतीक, क्षण, शिल्प आदि प्रमुख हैं । किन्तु काव्य के नवीन मूल्यों द्वारा जीवन के सौन्दर्य एवं चिन्तन व्यवस्था की तृप्ति नहीं प्राप्त हो सकती है । क्योंकि, काव्य का चरम मूल्य रसध्वनि है । स्वच्छन्दतावादी काव्य में इस प्रतिमान का अत्यन्त विशद रूप प्रस्तुत किया गया है जिसके अन्तर्गत आधुनिक प्रतिमान भी सम्मिलित हो जाते हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रस ध्वनि का मनोरम गठबंधन इस स्वच्छन्दतावादी काव्य की अप्रतिम विशेषता है जो रस रूपी पुरुष तथा ध्वनि रूपी रमणी के लिए स्वाभाविक है ।

इस युग के काव्य द्वारा मानों रस और ध्वनि की श्रेष्ठता संबंधी दीर्घकालीन विवाद की इतिश्री हो जाती है । रस-ध्वनि का यह युगपत रूप काव्य केलिए अत्यन्त आवश्यक, अनिवार्य उपादान बनकर प्रस्तुत हुआ है । दूसरे शब्दों में, इसके एकात्म में यदि एक ओर रस एवं ध्वनि तत्व की वाँछनीयता, आवश्यकता, अनिवार्यता तथा शाश्वतता सिद्ध होती है तो दूसरी ओर, हिन्दी स्वच्छन्दतावादी काव्य की सर्वोत्कृष्टता, रसात्मकता, आनन्दमयता तथा लोकप्रियता भी प्रकट होती है । परस्पर अनुस्यूत रस ध्वनि एक ही तत्व है जिनका संतुलित संयोजन आवश्यक है, काव्य की श्रेष्ठता एवं चिन्तनता का यही निकष है । यद्यपि अन्य युगों के काव्य—साहित्य में इन तत्वों का निरूपण प्राप्त होता है, परन्तु रस ध्वनि का मनोरम गठबंधन इस स्वच्छन्दतावादी काव्य की अप्रतिम विशेषता है जो रस रूपी पुरुष तथा ध्वनि रूपी रमणी के लिए स्वाभाविक है । यह अन्तरंग और सुन्दर सन्तुलन तथा समायोजन रसध्वनि तत्व की निर्भ्रान्त स्थापना करता है ।

अनुभूति एवं अभिव्यक्ति, भाव एवं कला, विषय तथा वर्णन आदि सभी दृष्टियों से यह हिन्दी काव्य साहित्य का सर्वश्रेष्ठ काल सिद्ध होता है । अनुभूति की आन्तरिक गरिमा और उसकी संपूर्ण अभिव्यक्ति के लिए इस युग के कवियों ने भाषा, शब्द, शिल्प संयोजन तथा जिन नए अर्थ प्रतीकों की उद्भावना की है वे इतने उपयुक्त सिद्ध हुए हैं कि हिन्दी कविता के विकास-क्रम में यह काव्य-धारा सर्वोत्कृष्ट कहा जा सकती है । उत्कृष्टता के शिखर पर पहुँचने का श्रेय कवि चतुष्टय को है जिनके भावों की विविधता अत्यन्त वैयक्तिक होने पर भी आकर्षक अभिव्यक्ति के कारण पाठक या सहृदय को विभोर कर परितृप्त कर देती है ।

खड़ी-बोली को परिमार्जित कर नवीन अर्थ दीप्ति प्रदान करते हुए अनुभूति को अभिव्यक्त करने योग्य बनाने का गौरव भी इस विवक्षित युग को प्राप्त है । इस काव्य सागर में अवगाहन करते समय सहृदय पाठक यह भूल जाता है कि, अनुभूति सम्प्रेरित अभिव्यक्ति है, अथवा अभिव्यक्ति संपोषित अनुभूति । यह सत्य है कि काव्य में भाव अथवा अनुभूति प्रथम है तदुपरांत, कला अथवा अभिव्यक्ति । किन्तु, प्रायः कलात्मक अभिव्यक्ति के लोभ के कारण भाव पर नियंत्रण रखना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पड़ता है जैसे रीतिकालीन काव्य में अनुभूति पक्ष, अभिव्यक्ति पक्ष से आच्छादित हो गया है। इसके विपरीत भक्तिकाल में केवल भाव पक्ष की ही प्रबलता है तथा कला का सामान्य साधारण रूप दृष्टिगत होता है। आशय यह नहीं है, कि अभिव्यक्ति भ वानुर्वातिनी नहीं है, अपितु कला की उत्कृष्टता का चरम रूप दृष्टिगत नहीं होता है।

स्वच्छन्दताव दी (छायावादी) काव्य में अनुभूति एवम् अभिव्यक्ति, या भाव और कला का दर्शनीय संगम है। जितनी गहन एवं तीव्र अनुभूति है उतनी ही मार्मिक तथा सशक्त अभिव्यंजना भी है। इस प्रकार श्रेष्ठ काव्य-शैली के लगभग सभी गुण इस युग के काव्य में विद्यमान है। यदि एक ओर, बौद्धिकता पर रागात्मकता एवं कल्पना का आवरण डाल कर सूक्ष्मता का समावेश किया गया है तो दूसरी ओर, नवीन प्रतीक विधान तथा अलंकार प्रणालियों का उपयोग करके कलात्मकता प्रदान करने का प्रयत्न भी है, अत: पांडित्यपूर्ण विमुग्धता आकर्षण का कारण बन गई है।

संभवत: इन्हीं गुणों के कारण स्वच्छन्दतावादी काव्य-कला की श्रेष्ठता एवं रमणीयता से वर्तमान युग का कवि भी प्रभावित हुए बिना न रह सका, इसका उत्तम निदर्शन कवि सेवक वीरस्थायन द्वारा रचित विरह-काव्य अर्घी से उपलब्ध होता है।

स्वच्छन्दतावादी कवि अनुभूति की अभिव्यक्ति में इतना तन्मय हो गया है कि काव्य-साधना प्रगीतिमय हो गई है। यह नूतन रूप आकर्षक होने के साथ साथ सौन्दर्य बोध को परिष्कृत करने वाला है। नवीन अनुभूति की अभिव्यंजना के लिए अभिव्यक्ति का नवीन माध्यम भी अपेक्षित था अन्यथा अनुभूति केवल भावुकता बनकर रह जाती, तथा कला-पक्ष प्रबल हो जाता।

रस और ध्वनि तत्व की कसौटी पर परीक्षण किया गया हिन्दी स्वच्छन्दतावादी काव्य अनुभूति और अभिव्यक्ति का ऐसा मधुर तारतम्य प्रस्तुत करता है जिससे दोनों पक्ष उभर कर उपस्थित हुए हैं। भावना एवं कला की समृद्धि का यह गौरव अक्षय है — जो इस काव्य को सार्वदेशिकता, सार्वजनीनता एवं चिरन्तनता प्रदान करता है। इस दृष्टि से यह युग हिन्दी काव्य-साहित्य का नवनीत है, स्वर्णिम युग है।

रुडकी विश्व विद्यालय
रुडकी, उत्तर प्रदेश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राचीन सभ्यताओं को खोजने के लिये जहां विज्ञान उत्खनन को प्रमुखता देता है, वहीं पहाड़ियों के जीवाश्म भी इसमें विशेषभूमिका प्रदान कर रहे हैं। क्योंकि कालांतर में ज्यों ज्यों पृथ्वी शीतल हुई उसका उथला भाग पत्थर रूप में परिवर्तित होता गया। इस माध्यम से पुरातत्व वेत्ताओं को इस ओर जो प्रमाण मिले, उनके अनुसार आदि मनुष्य का होना शिवालिक पहाड़ियों में पाया गया,

... में कई छोटे समूह निवास करते थे, उनको एक मेना (मैनस) नाम के व्यक्ति ने आकर संगठित किया था क्यों कि वे परस्पर लड़ते थे। बेबीलोनिया और असीरिया के इतिहास में भी ऐसी ही अनिश्चितता है। यूनानी के संबध में उसकी भोगोलिक स्थिति अनुकूल होने के कारण उसका संबंध एशिया से बतलाया गया है। रोमी यूनानी की व्यवहारिक सभ्यता कही गयी है। चीनी

विश्व की आदि भाषा कौन सी थी? क्या वह डोंगरी (वन्य ग्राम की भाषा) डोगरी, जो पश्चात देवनागरी (हिन्दी) कहलायी थी?

इसको पश्चिम ने भी स्वीकार किया है। इस भांति, मनुष्य कालाँतर में यहीं से अन्य स्थानों को गया। आदि सभ्यताओं में मिश्री, बेबीलोनी, असीरिया, यूनानी, रोमी, चीनी और भारतीय मुख्य हैं। इनके विवरणों को देखने से प्रतीत होता है कि सभी के आदि मानव किसी अज्ञात स्थान की ओर से आये थे। मिश्री के लिखित इतिहास में इस संबंध में कहा गया है कि नील नदी के उत्तर और

को तिब्बती, हूण, मंगोल. मंचू और मियाओ जातियों का मिश्रण बतलाया गया है। भारत की आदि सभ्यता संधव कही गयी है। ये इनके विस्तृत इतिहास नहीं है। इस खोजबीन में भाग्य से संसार को एक अति प्राचीन पुस्तक प्राप्त हुई, जिसका शीर्षक ऋग्वेद संहिता था।

एच. एल. मिलिंद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत कालांतर में अपनी अच्छाइयों के कारण अधिक परतंत्र रहा इस कारण पश्चिम ने उस पर खोज की, परिणाम-स्वरूप तत्कालीन विद्वान मैक्समूलर ने इसको संसार की प्रथम पुस्तक घोषित किया। उसमें एक श्लोक है जो इस पर अधिक प्रकाश डालता है "यत्ते पराः परावतो मनो जगामदूरकम् । तत् आ वर्तयामसि इह क्षमाय जीवसे ।। १०: ५८: १२मनु दूरदेशों को गये हैं इस कारण हम भी अपनी कुशल क्षेम हेतु वहां उचित समझें, बसें! इससे यह प्रमाण अवश्य मिलता है कि पृथ्वी का आदि मानव यहीं उत्पन्न हुआ था और तदत्तर सब ओर फैला किंतु मनु पूर्व थे—इसमें क्या रहस्य था—इस पर खोज करते हैं। उसी अनुसार यहां विश्व के संचालन हेतु विश्व-देवा नाम से एक सभा का होना मिलता है, उसके सदस्य पुरुषोतम होते थे, वे मनुष्य की उच्च व्यवस्था हेतु उत्तरदायी होने के कारण मनु नाम से जाने जाते थे। उनका क्षेत्र पृथ्वी होने के कारण वे समय समय पर दूर देशों को यात्रा करते थे। आने विश्वे आस्का गमंतु देवा मित्रो अर्यमा वरुणा सजोषाः। १: १८६ २ मित्र मैत्री के प्रचारक), अर्यमा (श्रद्धा—सम्मान, सुश्रूषा के दूत) और वरुण प्रत्येक बात को रीति अनुसार वरण करने की शिक्षा देनेवाले) आस्का—अलास्का अमेरिका) को गये।'

यहाँ प्रश्न उठता है कि उनकी ऐसी कौन सीं भाषा थी जो सब लोगों द्वारा जाती जाती थी? वह वन्य-ग्राम की भाषा थी क्योंकि उस काल सभी स्थानों का यही रूप था। उसको यहाँ डोंगरी (वन्यकी) भाषा कहा जाता था, अन्य स्थानों पर लेटिन (अतिप्राचीन)। ऋग्वेद को भी जब उन लोगों द्वारा संग्रह रूप दिया गया तो उसकी भी वही भाषा थी। अंग्रेजी, जो लेटिन का ही सुधारा रूप है, के शब्द उससे किस भाँति मिलते हैं, उदाहरण देखिये।

आंग्ल शब्द	ऋग्वेदिक शब्द	आंग्ल शब्द	ऋग्वेदिक शब्द
सुपीरियर	सुपर	डोर	द्वार
आई एम	अहम्	नाईट	नक्त
बुल	बैल	ऐगो	आगो
सर पेंट	सर्प	इंटर	अंतर
ऐरो	अरा	रीडिंग	रीड़िह
सेंट	शत	वूमन	यामनि
पाथ	पथ	स्टे	स्थित
ईग्नाइट	अग्नि	डेंट	दंत
सेंट	संत	स्टेंड	स्थान
माइंड	मन	एड्रेस	आद दर्श

इसका नाम डोगरी पश्चात इस कारण हुआ। क्योंकि वह देवनागर की भाषा थी, इस कारण देवनागरी भी कहलायी। हिन्दी उसे तब कहा गया, जब वह फारस के लोगों द्वारा स का उच्चारण न कर पाने के कारण सिंधु वासियों के नाम पर सिंधी न कही जा कर हिन्दी कही गयी। यही कारण है कि उसमें हिन्दी के शब्दों का भी मेल है; प्रमाण देखिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऋग्वेदिक शब्द	हिन्दी शब्द	ऋग्वेदिक शब्द	हिन्दी शब्द
केन	किसने	समेति	सहित
इत्थ	इस तरफ	ऊर्ध्व	ऊपर
अंत्राणि	आंत	अस्मा	इसमें
मानुष	मनुष्य	पर्चो	परिचय
जीवसे	जिह्वा से	रीति	रिक्त
कति	कितना	तमि	तुम

संस्कृत इसी का सुधरा रूप था, इस कारण उसके शब्द भी इस में हैं, देखिये।

ऋग्वेदिक शब्द	संस्कृत शब्द	ऋग्वेदिक शब्द	संस्कृत शब्द
रित	रिक्त	युत	युक्त
आदश	आदर्श	गामि	ग्राम
सुचि	स्वच्छ	पूयमान	पूज्यमान
अर्षति	आकर्षति	स्वादस	स्वादिष्ट
ऋतव	कर्तव्य	जानते	जानंति
विदथ	विद्यास्थान	सुषमा	सुखमान
प्रत्यंङ्	प्रत्येक	अमुत	अमुक्त
अनून	अन्यून	अनीकं	अनेक
अधिवांस	आदिवासी	सूर	सूर्य
चित्रे	चित्र	वेतु	व्यतीत

सारांश यह, कि हिन्दी, आदिकालीन विश्व संपर्क भाषा थी।

पो. बा. नं २८
भोपाल-४६२ ००१
मध्य प्रदेश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थाती

राजेन्द्र शर्मा

[तिरुवनन्तपुरम से कन्याकुमारी जाते हुए]

हरा-यहां परिधान धरा का
हरा नील आकाश,
केला और नारियल देते
सुख-स्वागत वातास !
धान-खेत में तेज हवा से
उठता जैसे ज्वार—
यहाँ प्रकृति का मुक्त हृदय है,
बिन सांकल का द्वार !
है, अनन्त हरियाली जैसे
भूलीं दिशा दिशाएँ—
पगडंडी, पथ सर्पीले सब
पग-पग पलक बिछाएँ !
सुषमा का विस्तार जहाँ तक
सूर्य-चन्द्र की गति है।
लोचन थकित, मुदित मन—
लेकिन, चकित-चकित सी मति है।
पग-पग पर पोखर, लघु सरिता
बहता जीवन-नीर,
ताड़ वृक्ष की नौकाओं पर
मल्लाह-लघुतम चीर !
शिला शृङ्खलाएँ उन्नत कर
मस्तक नभ छूती हैं।
शीतल बहती मंद हवाएँ
यहाँ स्वर्ग दूती है !
केला, केरल* गर्वोन्नत हैं,
धरा फुलाती छाती।
केरल का शृङ्गार सत्य ही
भारत मा की थाती !

* नारियल

बधाई

केरल विश्वविद्यालय की एम. ए. हिन्दी परीक्षा (1982) में प्रथम स्थान कुमारी टी. के. सुषमा को मिला।

1978 में केरल हिन्दी प्रचार सभा द्वारा संचालित हिन्दी भूषण परीक्षा में भी कुमारी टी. के. सुषमा ने प्रथम स्थान पाया था। केरल हिन्दी प्रचार सभा द्वारा तिरुवनन्त-पुरम में संचालित केन्द्रीय हिन्दी महा विद्यालय की छात्रा रही हैं कुमारी टी. के. सुषमा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओहो री किन्नरिया

मूल : कविसम्राट विश्वनाथ
सत्यनारायण
अनुवाद : डा० जी. सुब्बाराव

ओहो री किन्नरिया ।
ओहो री किन्नरिया ।
ऊहातल ही में पिया
क्यों न बनो जोबनिया
पिघल पडी तनभर तुम
बढा चली जीवन मम
उबल उबल दिल मेरा
उफन चला री अरी ओ
माना यह
मेरी ही भूल अहे ।
पति के प्रति
परुषा मन तुम जैसे
योषा तो लाखों में भी न मिले
इतना क्यों रोष तुम्हें
इतना क्यों होड तुम्हें
सतियाँ जगतल पति को
इतना कब कर बैठीं
ओढी थी इस गले में
अब ही तव शोक मूर्ति
पल भर में जल बन तुम
कब ऐसे कह कैसे
बह तुम कल कल आयी
इतना प्रतिशोध अहो
तुम उतना कुपित क्यों हो
वनिता हे सजा देने
था कोई मार्ग नहीं
पहले तो पल भर भी
मृदुला तुम शिलातली
पग न धरी पाती थी
प्रस्तरतल, पर्वतथल
कैसे कह बह चलोगी
तू है महापतिशीला
नहीं कहा क्या मैं ने
यूँ कहने पर कंठ को
कटार से काट न दूँ !
ज्योत्स्ना ज्यों विमल अमल
पतली तनु रूप-प्रभा
लघु लहरी की लेखा
सी तुम सम्मुख आयी
इठलाती चाल तेरी
आह ! मुझे भासित हुई
बिछलन बन प्रवहित इस
झरने की तव मूर्ति में
तव स्मित ही झाग अहो !
तनु वलियाँ ही तरंग
नयनद्वय ही शफरी
मानो बन बह उठे हैं ।
तव जघनों पुलिनतल से
देखे मेरे नैनन
क्यों न फटे जाते अब
क्यों न पबे जाते ये
भगीरथ के पीछे पड
कल कल कर बह उठी सो
स्वर्गंगा की धारा
सम न तव प्रवाह-पथ । ★

एस. जी. आर. एस. कालेज,
जगयापेट, आ० प्र०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम। इसलिए भी समस्याएँ उठती हैं। उन्हें सार्वत्रिक नहीं मानना चाहिए। ऐसे अप्रिय प्रसंगों को यथा संभव बचाना ही उचित है।

इस लेख के प्रारंभ में हिन्दी को विशिष्ट जो कहा था उसका एक प्रमाण यह भी है कि बहुत सारे हिन्दी कवि केवल बातों के शूर ही नहीं, बलिदानी सिपाही भी थे। वे अपने परिवार को दुःख व अभाव की ज्वाला में झुलसते छोडकर जेल की चिडिया बनने हमेशा तैयार रहते थे। माखनलाल चतुर्वेदीजी की वाणी इन्हीं वीरों की वाणी थी—

बहुत सारे हिन्दी कवि केवल बातों के शूर ही नहीं बलिदानी सिपाही भी थे।

मुझे तोड लेना वनमाली !
उस पथ में देना तुम फेंक
मातृभूमि पर शीश चढाने
जिस पथ जावें वीर अनेक
* * * *

गिरे हुए राष्ट्रों को-मेरा
मत है—शीघ्र उठाने को
उनकी मुरझी हुई नसों में
जीवन-ज्योति जगाने को

ये बातें हो याद ! प्रथम
भारत है हृदय दुलारा देश,
मेरे मरने जीने का धन
प्यारा पूज्य हमारा देश ।।

सत्याग्रह और असहयोग की यात्राओं में वीर देश-प्रेमी-हिन्दी में रचे झंडागान गाते थे 'झंडा ऊचा रहे हमारा'। खुद लाठियों की चाट से लहुलुहान होने पर भी अपने तिरंगे झंडे को ऊँचा रखने में वे दत्तचित्त रहे।

भारत की राष्ट्रभाषा

हमने हिन्दी को एक साधारण भाषा के रूप में स्वीकार नहीं किया था। उसे हम गुलाम भारत की कोटि-कोटि जनता की भाषा के रूप मे देखा था। वह भारतीय राष्ट्रभाषा के रूप में देखी गई। इसीलिए केशवचन्द्र सेन और उनके अनुरोध से स्वामी दयानंद सरस्वती ने इसे अखिल भारतीय आर्य-भाषा के रूप में प्रस्तुत किया। बापूजी ने इसी अखिल भारतीय परिप्रेक्ष्य में इसे भारत की अपनी राष्ट्र-भाषा माना था। वे हिन्दी की कमियों कमजोरियों से परिचित थे। उन्हें मालूम था कि दरिद्र नारायण भी हिन्दी बोलते थे। किन्तु भारत में उन सब को समाविष्ट कर लेते थे। बे उन सब को तरफ से भारत की राष्ट्रीय सपस्याओं का हल ढूंढते थे। इसलिए उन्हें हिन्दी को भारत की भारती स्वीकार करने में संकोच नहीं रहा। वे स्वयं गुजरात के थे। फिर भी गुजराती के मोह से उनकी दृष्टि राष्ट्र की समस्या से अनदेखा करने तैयार नहीं थी।

अंग्रेज़ सरकार एवं हिन्दी

हिन्दी भाषी प्रदेश ने भी हिन्दी को विशेष ममता की दृष्टि से इसलिए देखा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यहां यह साभार मानना चाहिए कि वैयक्तिक रूप से अंग्रेज़ों ने हिन्दी की अमूल्य सेवाएँ की हैं

कि हिन्दी को न्यायोचित स्थान अंग्रेज सरकार से दिलाने केलिए लोगों को संघर्ष करना पडा था। चतुर अंग्रेज सरकार उर्दू की हिमायती रही थी। इसमें उनकी जो साजिश थी वह इतिहास के छात्रों से छिपी नहीं है। ऐसी विपरीत परिस्थिति में देशप्रेमी सम्मिलित एवं सतत परिश्रम से ही देवनागरी में लिखित हिन्दी को पाठशाला, कचहरी आदि में स्थान दिला सके थे। जो वस्तु संघर्ष से प्राप्त की जाती है वह अधिक प्रिय होती है। देवनागरी लिपि की हिन्दी को मान्यता देने के बाद स्वयं अंग्रेज सरकार भी इसकी सेवा में लग गई। यहाँ यह साभार मानना चाहिए कि वैयक्तिक रूप से कई अंग्रेज़ों ने हिन्दी की अमूल्य सेवाएँ की हैं।

दक्षिण की प्रथम दृष्टि

दक्षिण में हम लोगों ने चालीस पैंतालीस वर्ष पहले जब हिन्दी सीखना शुरू किया था तब हिन्दी पढने में एक अनोखा गर्व अनुभव करते थे। स्कूलों में अंग्रेज़ी भाषा की पाठ्यपुस्तकों से छात्रों की जो मनोदशा होती थी उसके विरुद्ध नव-जागरण की चेतना हिन्दी की छोटी-छोटी पुस्तकों से भी मन में उदय होती थी। इस रागात्मक संबन्ध को कभी भुलाया नहीं जा सकता। स्कूल में पहले हम इंगलैंड के राजा या रानी के मंगल केलिए ईश्वर से प्रार्थना करने विवश थे। अंग्रेज़ी की पुस्तकों से हमें सिखाया जाता था कि वीरता का आदर्श नेलसन है और सच्चाई का वाशिंगटन। अंग्रेज कवियों, नाटककारों को ही संसार के सर्वश्रेष्ठ कलाकार मानने की तैयारी हम से कराई जाती थी। भारतीयों के जीवन को काफी धुँधले और काले रूप में चित्रित करना अंग्रेज इतिहासकारों को प्रिय था। हिन्दी की पाठ्यपुस्तकों में राणा प्रताप की वीरता, कर्ण की दानशीलता और शिवाजी का साहस वर्णित होता था। भारत के विभिन्न प्रांतों की कथाएँ हमें हिन्दी के माध्यम से पढने को मिलने लगीं। आल्प्स पहाड़ और नैल नदी का विस्तृत वर्णन पहले पढते थे। वहाँ अब गंगा, जमुना एव कावेरी का भी परिचय पाने लगे। इस नवजागरण तथा देशप्रेम की चेतना देनेवाली भाषा के रूप में हिन्दी की जो भूमिका है वह विशेष आदरणीय है।

विशाल धर्मेतर भारतीयपरिप्रेक्ष्य

हिन्दी की आधुनिक व्यापक भूमिका पर विशेष दृष्टिपात करना आवश्यक

इस नवजागरण तथा देशप्रेम की चेतना देनेवाली भाषा के रूप में हिन्दी की जो भूमिका है वह विशेष आदरणीय है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है । हिन्दी की रागात्मक भूमिका की चर्चा में यह विशेष महत्व रखता है । हिन्दी भाषा-भाषी प्रदेशों की मातृभाषा के रूप में उसका जो संबन्ध उन प्रदेशों के हिन्दी-भाषी निवासियों से है उसको स्वीकार करना ही पडेगा । परन्तु उस सीमित भूमिका के अलावा राष्ट्रव्यापी भारतीय भाषा का जो विराट आयाम है उसे अधिक महत्व देना पडेगा । जो लोग अंग्रेजी को अन्तर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में विशेष रूप से प्रस्तुत करते हैं वे यह भी जानते ही हैं कि मूलतः अंग्रेजी इंग्लैंड की भाषा है, वह आगे चलकर विभिन्न देशों में—उपनिवेशों में फैल गई ।

अब तो देशी-विदेशी सभी भाषाओं के उपवनों से सुन्दर और सुगन्धी फूल चुन-चुनकर राष्ट्रवाणी के मंदिर को सजाना होगा ।

उन नये देशों-उपनिवेशों के लोगों ने अंग्रेजी को व्यापक परिप्रेक्ष्य में देखा—स्वीकार किया । इसी से मिलती दृष्टि भारतीय भाषा हिन्दी के प्रति भी स्वीकार करनी चाहिए ।

हिन्दी का जो स्वरूप आधुनिक युग में राष्ट्रभाषा के रूप में प्रचार पा सका है वह सांप्रदायिक दृष्टि से दूर होना चाहिए । राष्ट्रभाषा के उन्नायक गाँधीजी जैसे दूरदर्शियों ने यही पथ दिखाया है । हिन्दी का यह सौभाग्य रहा है कि उसमें कमल बेला की ही नहीं, गुलाब की भी सुगंध है । अरबी-फारसी के शब्दकोश से काफी संपन्नता प्राप्त करने से हिन्दी का कोष धनी बन सकता है । हिन्दू-मुसलमान दोनों ने हिन्दी के चरणों पर अपने रचना-सुमन चढ़ाये हैं । अब तो देशी-विदेशी सभी भाषाओं के उपवनों से सुन्दर और सुगन्धी फूल चुन-चुनकर राष्ट्रवाणी के मंदिर को सजाना होगा । देश की वाणी में इसकी सक्रियता और गरिमा झलकती हैं । हमारे विशाल और गरिमामय भारत की वाणी की समाहार-शक्ति और अभिव्यंजना शक्ति की वृद्धि होनी चाहिए । हिन्दी के प्रति हमारा रागात्मक दृष्टिकोण विशाल एवं उदात्त हो कि भारत के सोलहों या सत्रहों भाषाओं के प्रदेशों को हिन्दी-प्रदेश ही मानें तथा हिन्दी को इन सब की भाषा स्वीकार करें । तब किसी में यह कहने की हिम्मत न रहेगी कि हिन्दी अब विश्वभाषा होने योग्य नहीं है ।

२६/२०३५ कालेज लेन,
तिरुवनन्तपुरम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपन्यास

शकुन्तला

डा० कृष्णकुमार

(गतांक से आगे)

(२)

पर्वतराज हिमालय की उपत्यकाओं में जंगली पशुओं से भरे हुए घने वन थे। इन वनों की प्राकृतिक शोभा अद्‌भुत थी। उसकी कोई उपमा नहीं थी। घने वृक्षों की छाया शीतल और सुखद थी। सूर्य की प्रचण्ड किरणें घने वृक्षों के पत्तों में से छन कर मन्द प्रकाश को तो भूमि तक पहुँचा पाती थीं, परन्तु उनकी उष्णता ऊपर ही रह जाती थी। घनी झाड़ियों, छोटे पौधों और भूमि पर दूर दूर तक फैलती हुई वल्लरियों ने यहाँ मार्ग के चिह्नों तक को मिटा डाला था तथा इनके मध्य में से यात्रा करना अति दुष्कर था।

वनों के मध्य प्रचण्ड घर-घर ध्वनि करते दुष्यन्त के रथ ने भूमि पर फैली वनस्पतियों को रौंदना प्रारम्भ कर दिया। परन्तु वनदेवता ने अपने धर्म को नहीं छोड़ा। उसने अपने अतिथि सम्राट् का वन्य साधनों से स्वागत करना प्रारम्भ कर दिया। वृक्षों के सुदृढ़ तनों से लपटी हुई लताओं ने कोमल पल्लवों और पुष्पों को उस पर बरसाया, घनी छाया में विश्राम करते अलसाते पक्षियों ने मधुर कलरवों द्वारा सम्राट् का यशोगान किया और बांसों के छिद्रों में से मार्ग को बनाने वाले पवन ने इस समय बांसुरी बजाने का कार्य किया। वन के नैसर्गिक सौन्दर्य ने दुष्यन्त के हृदय को अभिभूत कर लिया। उस समय एक शाकवृक्ष की ऊँची चोटी पर मयूर बैठा था। दुष्यन्त के रथ की गड़-गड़ाहट को मेघों की गर्जना समझ कर उस मयूर ने नाचने के लिये पंखों को फैला लिया। वह मृगया-व्यसनी सम्राट् मृगों का पीछा करना भूल कर इस सौन्दर्य को देखने में एकाग्रमन हो गया।

पीछे पीछे तीव्र गति से आती हुई सम्राट् दुष्यन्त की सेना तत्क्षण वन में फैल गई और उसने वन्य पशुओं को खोज खोज कर उनका वध करना प्रारम्भ कर दिया। यह वन अनेक प्रकार के पशुओं—हरिण, खरगोश,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोमड़ी, भेड़िया, गीदड़, बाघ, सिंह, हाथी, सूअर, भैंसा आदि से भरा हुआ था। उस समय कुछ पशु वृक्षों की शीतल छाया में निश्चिन्त भाव से बैठे ऊँघ रहे थे और कुछ परिवारों के मध्य किलोल कर रहे थे। कुछ वन्य जलाशयों में जल-विहार करते हुए आनन्द मना रहे थे। रात्रि में विचरण से परिश्रान्त सिंह, बाघ, आदि हिंस्रजन्तु अपनी मांदों में निश्चिन्त निर्भय निद्रा देवी के अंक में सोये पड़े थे।

सेना के कोलाहल और उपद्रव ने शान्त वन में हलचल और उपद्रव मचा दिया। सैनिकों द्वारा मारे जाते हुए हरिणों, सुअरों और भैंसों के आर्तनाद ने मांदों में सोये सिंहों की निद्रा भंग कर दी। हमारे राज्य में उपद्रव मचाने के लिये ये कौन आ गये हैं, यह देखने के लिये वे मांदों से बाहर तो निकलते, परन्तु वन के अन्दर फैले सैनिकों की दृष्टि में पड़कर वन के आधिपत्य के साथ ही अपने प्राणों से भी वञ्चित कर दिये जाते।

प्रकृति के रमणीय अनूठे सौन्दर्य के रसपान में विभोर दुष्यन्त एकाएक चौंक गये। रथ के घोड़े एकाएक उच्च स्वर से घुरघुराते हुए भागने का प्रयत्न करने लगे। लगाम खींच कर सारथि उनको रोकने का प्रयत्न कर रहा था। दुष्यन्त ने सामने की ओर देखा तो एक गहरे श्याम वर्ण का भीमकाय भैंसा रथ के आगे कुछ ही दूरी पर खड़ा हाँफ रहा था। उसके लाल रंग के नेत्र जलते अंगारों के समान चमक रहे थे। सम्राट् ने तुरन्त ही धनुष पर बाण चढाकर आक्रमण करने के लिये उद्यत उस भैंसे पर छोड़ दिया। भैंसे के कन्धे में घुस कर वह बाण वहीं सीधा होकर अटक गया। भैंसे ने एक झटका दिया तो वह नीचे आ गिरा। पीडा से चीत्कार करता हुआ भैंसा रुधिर की धारा को बहाता हुआ वन में एक ओर को भाग लिया। दुष्यन्त ने भी रथ से उसका पीछा किया। परन्तु वन के घने वृक्षों और झाड़ियों के मध्य वह ऐसा अदृश्य हुआ कि दुष्यन्त उसको किसी प्रकार पा नहीं सके।

परन्तु सारथि ने भैंसे के मार्ग का अनुमान करके तीव्र गति से रथ को हाँक दिया था। दुष्यन्त अपनी सेना से अलग होकर बहुत दूर निकल गये। इस समय सूर्य यद्यपि मध्य आकाश में चढकर यात्रा से थक कर पश्चिमोन्मुख होने लगा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था, तथापि उसके उत्साह में कुछ भी कमी नहीं हुई थी। थकावट, गर्मी और प्यास से व्याकुल दुष्यन्त जल की खोज में चारों ओर भटकने लगे।

भैंसा शिकारी की दृष्टि से ओझल हो चुका था। बहुत देर तक भटकने के पश्चात् सारथि ने माथे पर बहते हुए श्रम-बिन्दुओं को हाथों से पोंछा और ऊपर की ओर दृष्टि उठाई। उसने देखा कि पूर्व दिशा में समीप ही बगुलों की पंक्ति उड़ रही है। निश्चित ही उस स्थान पर जल होगा, ऐसा अनुमान करके उसने रथ के घोड़ों को उस ओर चलने का संकेत दिया। कुछ दूर जाने पर जल की एक स्वस्छ धारा दृष्टिगोचर होने लगी।

दोनों ओर दूर-दूर तक विस्तृत रेती के मध्य बहती हुई यह क्षीण जल-धारा सूर्य के प्रखर आलोक में इस प्रकार चमक रही थी, जैसे चाँदी के विशाल आवरण पर बहती हुई नीलम मणियों के समूह की पंक्ति हो। उसी समय जल के कणों का अपहरण करनेवाले शीतल मन्द पवन ने आगे बढ कर दुष्यन्त का स्वागत किया। उसकी सारी थकावट और क्लान्ति तुरन्त ही दूर भाग गयी। सारथि ने रथ को आगे बढ़ा-कर धारा के समीप लाकर खड़ा कर दिया। थके हुये प्यासे घोड़े बड़ी-बड़ी घूँट भर कर जल-पान करने लगे। दुष्यन्त और सारथि भी रथ से नीचे उतर कर धारा के किनारे जाकर अंजलि भर-कर जल पीने लगे।

धारा के किनारे एक विशाल शिला थी। जल पीकर दुष्यन्त उस पर बैठकर चारों ओर के वन प्रान्त का दृश्य देखने लगे। अभी उनको कुछ ही क्षण बीते होंगे कि एकाएक उनकी दृष्टि दूर धारा के नीचे चली गई। चितकबरे रंग का बड़े-बड़े सींगों वाला एक ऊँचा बारासिंगा धारा के किनारे खड़ा मुख में घास को चबा रहा था। घास चबाता वह मस्ती भरी दृष्टि से चारों ओर देख लेता था। मृगया के लिये राजधानी से निकले सम्राट् ने अभी तक किसी पशु को नहीं पाया था। उस पुष्ट विशाल काय बारासिंगे को देखकर उनका मन मचल गया। उन्होंने तुरन्त ही सारथि को आदेश दिया कि रथ को उधर ले चलो।

रथ में दुष्यन्त के आसन ग्रहण करते ही सारथि ने बैठकर लगाम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हाथों में लेकर घोड़ों को संकेत दिया तथा वे त्वरित गति से हिरण की ओर दौड़ गये। रथ के पहियों की ध्वनि ने दिशाओं के प्रान्तों को आच्छन्न कर दिया। शिकारी को अपनी ओर आता देखकर चौकन्ना हरिण तुरन्त कूदता हुआ भाग निकला। उसके खुले मुख से घास के आधे चबाये हुए टुकड़े बाहर निकल कर रेती पर विखर गये। वह बार-बार मुड़ कर पीछे की ओर देख लेता और तुरन्त ऊँची कुदानें भरता हुआ तीव्र गति से दौड़ जाता। इस प्रकार दुष्यन्त का रथ बहुत दूर निकल गया। तेज़ी से पीछा करने पर भी वह उसको अब कठिनता से ही देख पाता था।

धारा के किनारे रेती होने के कारण रथ की गति अधिक त्वरित नहीं हो पा रही थी। परन्तु रेती के पार होते ही कठोर भूमि आ गई। सारथि ने लगामों को ढीला किया। उस समय घोड़े भी मानों हिरण की गति को सहन न कर सके। वे कानों को निष्कंप ऊपर उठाकर अति तीव्र गति से दौडने लगे। उनके वेग से वायु भी मानों पराजित हो रही थी। कुछ ही क्षणों में रथ बारासिंगे के समीप पहुँच गया। दुष्यन्त ने उसको मारने के लिये धनुष पर बाण चढाकर कानों तक खींच लिया।

धनुष से बाण निकलने हीवाला था कि सारथि ने लगाम खींच कर रथ को रोक लिया। दौड़ते हुए घोड़ों के अगले दोनों पैर क्षण भर के लिये आकाश में ही उठे रह गये। कुछ महान् अनर्थ घटित हो इससे पहले ही सारथि ने सम्राट् का हाथ पकड़ कर नीचे कर दिया और कहा—महाराज! रुकिये, रुकिये। बारासिंगे और रथ के मध्य में दो तपस्वी खड़े हैं।

रथ के समक्ष तपस्वियों को खड़े देखकर हकबकाये दुष्यन्त ने धनुष से बाण को उतार कर नीचे रख दिया और हाथ जोड़ कर प्रणाम किया। तपस्वियों ने कुछ कदम आगे बढाकर तथा हाथों को उठा कर कहा—

"राजन्! यह आश्रम का मृग है। आप के द्वारा यह मारे जाने के योग्य नहीं है। बेचारे निरपराध इस मृग का वध न कीजिये। आप का धनुष आततायियों से प्रजा की रक्षा करने के लिये हैं। इस मृग के प्रति आपको दयालु होना चाहिये।"

लज्जा से विगलित दुष्यन्त हाथों को जोड़े हुये ही रथ से नीचे उतर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आये और तपस्वियों के चरणों में झुक गये । तपस्वियों ने भी आगे बढ़ कर सम्राट् को आशीर्वाद दिया । उन्होंने राजा से कहा—

"राजन् ! समीप ही कुछ दूरी पर इस मालिनी नदी के किनारे महर्षि कुलपति कण्व का आश्रम और गुरुकुल है । हम उनके शिष्य हैं । समिधाओं को लाने के लिये वन में निकले हैं । आप आज निमन्त्रित हैं । आश्रम में आकर आतिथ्य को स्वीकार करने की कृपा करें । हम भी समिधाओं को एकत्रित करके अभी आते हैं । कुलपति तो इस समय किसी कार्य से बाहर गये हुए हैं, परन्तु उनकी पुत्री शकुन्तला आश्रम में ही है । वह आप का सत्कार करेगी ।"

महर्षि कण्व उस युग के महान् आचार्यों में से थे । वे कुलपति थे । उनके आश्रम गुरुकुल में दस हज़ार से भी अधिक विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करते थे । इन विद्यार्थियों के भरण-पोषण, आवास, शिक्षा आदि का सम्पूर्ण प्रबन्ध और उत्तरदायित्व कुलपति का ही होता था । विद्यार्थियों से इसके लिये किसी प्रकार का शुल्क नहीं लिया जाता था । शिक्षा प्राप्त करके समावर्तन संस्कार के समय आचार्य द्वारा निर्दिष्ट गुरु-दक्षिणा अर्पित करना विद्यार्थी का कर्तव्य और धर्म था । कुलपति कण्व के गुरुकुल में विविध विषयों—वेद, वेदाङ्ग, ब्राह्मण, उपनिषद्, व्याकरण, काव्य, साहित्य, ज्योतिष, कृषि, उद्योग वाणिज्य, अर्थशास्त्र, राजनीति, धनुर्वेद, आयुर्वेद, पशुविज्ञान, वनस्पति विज्ञान, विविध कला आदि सभी के अध्यापन का प्रबन्ध था ।

महर्षि कण्व का नाम सुनकर दुष्यन्त का मस्तक आदर से झुक गया । आश्रम को देखने और महर्षि को प्रणाम करने के लिये उनका मन उत्कण्ठित होने लगा । तपस्वियों द्वारा बताये गये मार्ग से उनका रथ आश्रम की ओर तीव्र गति से दौड़ गया ।

कुछ ही क्षणों में वन की सीमाओं को पार करके मालिनी का तट दृष्टिगोचर होने लगा । शान्त भाव से बहती सरिता के दोनों ओर दूर तक श्वेत सिकता बिछी हुई थी । इसके मध्य में मालिनी की शान्त स्निग्ध नीली धारा बह रह थी । जल की गहराई अधिक होने पर भी वह स्वच्छ और पारदर्शक था । उसकी तलहटी के सुन्दर छोटे छोटे पत्थर नील जल की गहराई में डूबे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुए बहुमूल्य मणियों के समान अलङ्कृत प्रतीत होते थे। दुष्यन्त ने दृष्टि ऊपर करके देखा तो सरिता के पार आम के घने उद्यान दृष्टि-गोचर हुए। वृक्षों पर छोटे-छोटे कच्चे फ़ल लदे पड़े थे तथा उनके मध्य में से आश्रम के कुटीरों की पंक्तियों की झलक दिखाई दे रही थी।

दुष्यन्त का रथ कुछ ही क्षणों में नदी के तट पर पहुँच गया। धारा के अधिक गहरी न होने के कारण सारथि ने रथ को नदी में ही चला दिया। घोड़े सरलता से नदी को पार कर गये। इस समय तक भी पश्चिम की ओर ढुलके सूर्य की ऊष्मा कुछ कम नहीं हो पई थी। यहाँ चारों ओर ध्यान से देखने पर भी दुष्यन्त को कोई व्यक्ति दिखाई नहीं दिया, जिससे कि वह महर्षि और उनके आश्रम के सम्बन्ध में कुछ पूछ सके। दुष्यन्त ने आश्रम के अन्दर प्रवेश करने का निश्चय किया और सारथि से कहा—

"सारथि! महर्षि के आश्रम गुरुकुल में हमको विनीत भाव से जाना चाहिये। रथ पर आरूढ होकर जाना कुछ उचित प्रतीत नहीं होता। तुम यहीं रुको। रथ से घोड़ों को खोल कर उनको जल पिलाकर विश्राम कराओ। उनको चरने के लिये खुले छोड़ दो। महर्षि के आश्रम का अवलोकन करके, महान् आचार्यों को प्रणाम करके और महर्षि की पुत्री का आतिथ्य ग्रहण करके मैं कुछ ही समय में वापिस आ जाता हूँ।"

यह कह कर सम्राट् ने राजकीय चिह्नों को उतार कर रथ पर रख दिया। वे नीचे उतर गये और आश्रम की ओर चलदिये।

नदी की जल-धारा से कुछ हटकर सिकता के फैलाव से परे भूमि को ऊँचा कर आश्रम के उद्यान की सीमायें बनाई गई थीं। इन पर कंटीली झाड़ियों पर नवमल्लिकाओं की लतायें फैली थीं जिनके सुन्दर-श्वेत-सुगन्धित नन्हे-नन्हे पुष्प दूर से बहुत सुहावने लग रहे थे। एक ओर उद्यान में जाने का मार्ग बना था। इसको लाँध कर दुष्यन्त उद्यान में पहुच गये। उद्यान की मनोरम शोभा ने दुष्यन्त के चित्त को बाँध लिया। आम्र, जामुन, बिल्व, कटहल, नीबू-अमरूद आदि फल–वृक्षों के साथ ही अशोक, सहजन तिलक, सकुल आदि सुन्दर पुष्पों को विकसित करने वाले वृक्षों की पंक्तियाँ आगन्तुक के चित्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

को आह्लाद से भर देती थीं। तथापि यहां अधिक संख्या आम्र वृक्षों की ही थी।

कच्चे आमों की सुगन्धि चारों ओर फैल रही थी। उस सुगन्धि को गहण कर धीरे से चुपक से आकर पवन ने दुष्यन्त को आलिङ्गन में ले लिया। दुष्यन्त ने देखा कि पंक्तियों में लगे आम आदि वृक्षों पर ऊँचाई तक पुष्पित लतायें लिपटी हैं। पतली-पतली शाखाओं वाली आकाश वेलें वृक्षों के शिखरों को भी लाँधकर ऊपर निकल गई हैं। वृक्षों के तनों के चारों ओर भूमि पर गोल घेरे में थोवले बनाये गये हैं। सिंचाई के जल से वे आधे भरे हैं। बहता मन्द पवन इस जल को कंपित करके नन्हीं लहरियाँ सी उत्पन्न कर देता है। जल को लाने केलिये वृक्षों की पंक्तियों के मध्य में से छोटी-छोटी कुल्यायें बनाई गई हैं और उनके दोनों ओर चलने के लिये पगडण्डियां वांध दी गई है। स्थान-स्थान पर वृक्षों से गिरी आँवियों पर लताओं ने पुष्पोंको वखेर रखा है। यदा-कदा वृक्षों के शिखरों पर आसीन मद-मत्त कोयलों की मीठी कुहक आकाश के विस्तार को लाँध कर कानों में अमृत सा घोल देती हैं।

उद्यान के उस पार दुष्यन्त को दूरी पर कुटीरों की एक पंक्ति दृष्टिगोचर हुई। निश्चय ही ये गुरुकुल के निवास हैं। यहाँ कोई विद्यार्थी होगा, जिससे आचार्य महानुभावों के सम्बन्ध में पूछा जा सकेगा, यह विचार करके वे एक कुल्या के किनारे बनी पगडण्डी पर चलने लगे। सहसा शीतल वायु का एक झोंका आया, लताओं से कुछ पुष्प दुष्यन्त पर बिखरे, वृक्षों से कुछ कच्चे आम नीचे टपके और कोयल की मीठी कुहक दिगन्तों में फैल गई। दुष्यन्त की दाहिनी भुजा में कुछ फड़कन हुई।

शुभ शकुनों से प्रसन्न मन वाले दुष्यन्त थोड़ा सा आगे बढ़े ही थे कि उनको दाहिनी ओर एक छोटा सा कुंज दिखाई दिया। कुतूहल में भर कर उन्होंने उस ओर ध्यान से देखा तो उधर से युवतियों की मधुर हास्य ध्वनियाँ सुनाई देने लगीं। अवश से दुष्यन्त के पैर उस ओर बढ गये। कुंज निकट पहुँचकर झाड़ियों की ओर से झाँक कर उन्होंने देखा कि एक छोटी सी पुष्प-वाटिका है। इसके मध्य में एक कुटीर है। कुटीर के आंगन में एक ऊँचा छायादार सप्तपर्ण का वृक्ष हैं। उसके चारों ओर ऊँची पक्की वेदी

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठकों के पत्र

'केरल ज्योति' का स्तर उत्तरोत्तर अच्छा हो रहा है। इसके माध्यम से केरल की संस्कृतिक, सामाजिक व्यवस्था, साहित्य कला के उत्कर्ष की अभिव्यक्ति द्वारा भावात्मक एकता की समन्वयात्मक भावनाओं को बल मिल रहा है और नई दिशाएँ प्राप्त हो रही हैं। केन्द्र शिक्षा एवं संस्कृति विभाग के उप मंत्री श्री प्रेम खण्डु थुँगन का यह प्रेरणाप्रद उद्घोष—"जैसे तिरंगा झंडा हमारी इज्जत की निशानी हैं वैसे ही हिन्दी भी हमारी इज्जत की निशानी है" हमारे लिए एक चुनौती है। हिन्दी को ऊँचा स्थान देना देश को ऊँचा उठाना है।

डा० तेजनारायण लाल
56 मौर्य विजयी नगर कॉलोनी
आगरा २८२००४

केरल हिन्दी प्रचार सभा के माध्यम से केरल ज्योति का प्रकाशन एक महान राष्ट्रीय कार्य है और राष्ट्रीय एकीकरण के इस कार्य के लिए आप वास्तविक रूप से धन्यवाद के पात्र हैं। और इसी भांति चलकर मुझे पूरा विश्वास है कि हम सम्पूर्ण भारत को अपने प्राचीन गौरव से भी आगे ले चलने में समर्थ होंगे।

गोरे लाल शाक्य एडवोकेट
विधायक
भरथना (इटावा) उ० प्र०

बनी है। वेदी के एक ओर सुन्दर श्वेत-लाल रंग की गौ छाया में बैठी जुगाली कर रही है तथा उसके समीप ही छोटा सा मृग-शावक उछल-कूद कर रहा है। वेदी पर तीन तपस्वी-कन्यायें बैठी हैं। उनके पास ताम्र के छोटे-छोटे कलश हैं। कलशों की ग्रीवाओं को इन कन्याओं ने अपनी सुन्दर, सुकोमल, लम्बी गौर वर्ण की भुजाओं से लपेटा हुआ है। ये कन्यायें परस्पर हँस-हँस कर परिहास-वार्ताओं में निमग्नचित्त हैं।

(संशेष)

अध्यक्ष, संस्कृत विभाग
गढवाल विश्व विद्यालय,
श्रीनगर, गढवाल

❀

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

110385

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पत्रिका सम्बन्धी घोषणा पत्र

फार्म 4

1. प्रकाशन स्थान	:	तिरुवनन्तपुरम
2. प्रकाशन अवधि	:	मासिक
3. मुद्रक का नाम	:	एम. के. वेलायुधन नायर
क्या, भारत का नागरिक है	:	हाँ, भारतीय
पता	:	मंत्री, केरल हिन्दी प्रचार सभा, तिरुवनन्तपुरम-१४
4. प्रकाशक का नाम	:	एम. के. वेलायुधन नायर
क्या, भारत का नागरिक है	:	हाँ, भारतीय
पता	:	मंत्री, केरल हिन्दी प्रचार सभा, तिरुवनन्तपुरम-१४
5. संपादक का नाम	:	के. जी. बालकृष्ण पिल्लै
क्या, भारत का नागरिक है	:	हाँ, भारतीय
पता	:	के. जी. बालकृष्णपिल्लै, केरल हिन्दी प्रचार सभा, तिरुवनन्तपुरम-१४
6. उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार-पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों		केरल हिन्दी प्रचार सभा, तिरुवनन्तपुरम-१४

मैं, एम. के. वेलायुधन नायर, एतद्द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य हैं ।

ता० 1-3-1983 (ह०)

प्रकाशक का हस्ताक्षर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

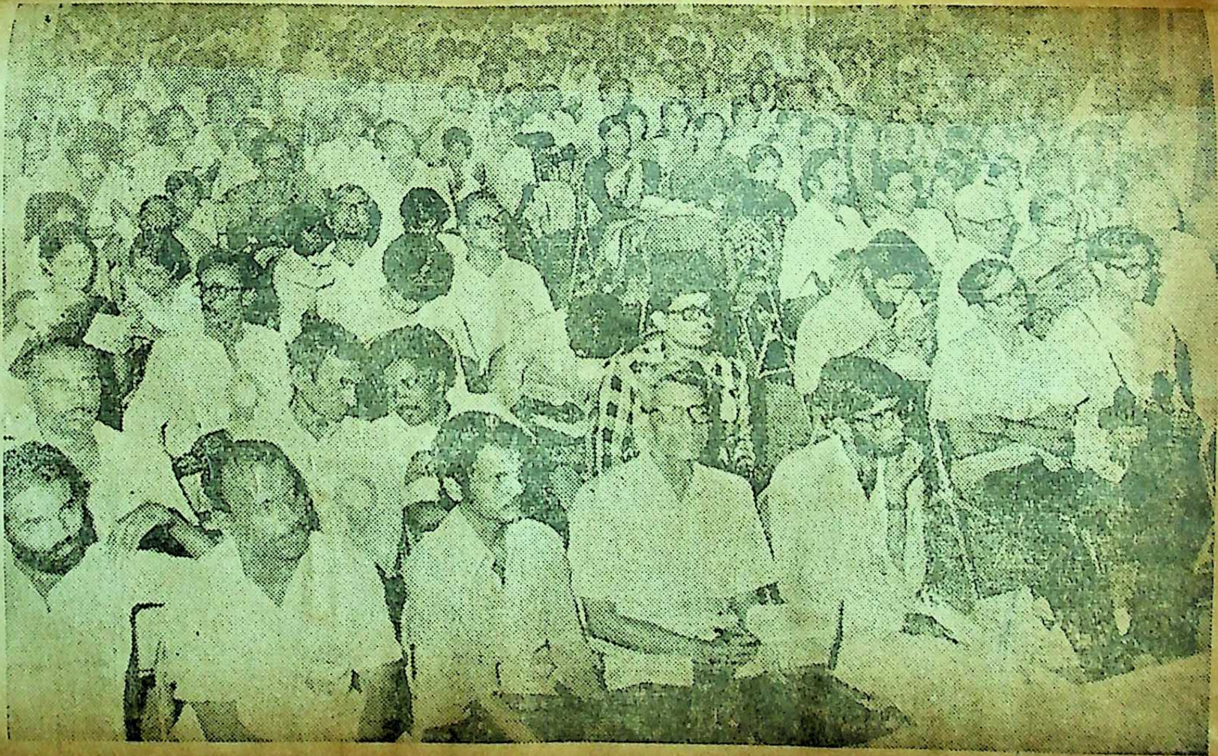

केरल शास्त्र साहित्य परिषद् का बीसवां वार्षिक समारोह १९८३ फरवरी ९ से १२ तक तिरुवनन्तपुरम में संपन्न हुआ। इस अवसर पर आयोजित अखिल भारतीय विज्ञान अभियान सम्मेलन में भारत के विभिन्न प्रान्तों के वैज्ञानिक साहित्यकारों ने भाग लिया। सम्मेलन का एक दृश्य।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Reg. No. KL/TV(S)/25

March 1983

Keral Jyoti

Vol. XVII-No

Price : Re.

A monthly Publication of Kerala Hindi Prachar Sabha

यह किसी कालेज का वार्षिकोत्सव नहीं है । फरवरी १९८३ में तिरुवनन्तपुरम में आयोजि
अखिल भारतीय जनकीय विज्ञान अभियान सम्मेलन में संघगान प्रस्तुत कर रहे हैं
अलमोडा के चिपको अभियान के कार्यकर्ता ।

केरल हिन्दी प्रचार सभा, तिरुवनन्तपुरम–६९५ ०१४ केलिए श्री० एम. के. वेलायुधन नायर द्वारा प्र
मुद्रक : राष्ट्रवाणी मुद्रणालय, केरल हिन्दी प्रचार सभा, तिरुवनन्तपुरम–१४. सम्पादक : के. जी. बालकृ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Compiled
1999-2000

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar